[राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा डी लिट उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध]

जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य

[जम्भवाणी के पाठ-सम्पादन सहित]

(दो भागों में)

पहला भाग

लेखक

डॉ० हीरालाल माहेश्वरी

एम ए एल् एल बी , डी फिल (कलकत्ता), डी लिट (राजस्थान)

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रस्तावना

आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी



बी० आर० पब्लिकेशन्स,

६, प्रिटोरिया स्ट्रीट, कलकत्ता-१६

मुद्रक
महेन्द्र प्रिन्टर्स,
मनिहारों का रास्ता,
जयपुर-३



श्री जाम्भोजी महाराज (विक्रम सवत् १५०८—१५९३)

समर्पण

राजस्थानी साहित्य की सिद्ध काव्यधारा के आदि स्रोत

जाम्भोजी

तथा

विष्णोई साहित्यकारों

को

सादर

प्रस्तावना

आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी

१

जाम्भोजी का जन्म संवत् १५०८ की भादो बदि ८ को सोमवार के दिन कृत्तिका नक्षत्र में जोधपुर राज्य के अन्तर्गत नागोर नामक परगने के पीपासर गांव में हुआ था और इनकी जाति पवार (परमार) वंशी राजपूतों की थी। इनके पिता एक सम्पन्न व्यक्ति थे और उनका नाम लोहटजी रहा तथा इनकी माता हांसा देवी भाटी कुल की थी। प्रसिद्ध है कि ये अपने माता पिता की इकलौती संतान थे और सम्भवतः उनकी अधेड़ी अवस्था में उत्पन्न भी हुए थे। इस कारण इनके प्रति उनकी और अन्य आत्मियों की भी ओर से यथेष्ट स्नेह भाव प्रदर्शित किया जाना स्वाभाविक रहा। अपनी बाल्यावस्था के समय इनकी एक विशेषता यह रही कि ये, कदाचित् कम बोलते थे, और इसलिए लोग इन्हें 'गूंगा' अथवा कम से कम 'गहला' तक भी कहने लगे थे। परन्तु उन दिनों कभी कभी ये कुछ ऐसे भी कार्य कर देते दीख पड़ते थे जिनसे सभी कोई चकित हो जाते थे और इसके आधार पर कुछ लोगों ने अनुमान किया है कि इसी कारण ये 'जाम्भा' (अचम्भा) भी कहे जाने लगे थे। जो हो, जब ये ७ वर्ष से अधिक अवस्था के हुए, इन्हें पशुचारण के काम में लगा दिया गया जिसके लिए ये आसपास के जंगलों में भी जाने लगे।

कहते हैं कि ऐसी ही दशा में जब ये लगभग १६ वर्ष के थे इनकी भेंट वहां गुरु गोरखनाथ से हो गई जिस बात को विशुद्ध ऐतिहासिक तथ्य के रूप में स्वीकार कर लेना सब किसी के लिए संभव नहीं कहला सकता। इस सम्बन्ध में इतना और कहा जा सकता है कि ऐसी किसी न किसी घटना की चर्चा इनके समसामयिक हरिदास निरंजनी (संवत १५१२-९५) एवं जसनाथजी (संवत १५३९-६३) के विषय में भी की जाती है, जो संभवतः इन सभी के ऊपर पड़ने वाले गुरु गोरखनाथ अथवा उनके नाथ पंथ के न्यूनाधिक प्रभाव मात्र को ही सूचित करती है। जाम्भोजी का "गोरख गुरु अपारा" [१] कह देना, हरिदास निरंजनी द्वारा 'गोरख हमारा गुर बोलिये' [२] वा "सिरी गोरख का हाथ" [३] तक भी कह दिया जाना कुछ अधिक महत्त्व नहीं रखता और न जसनाथजी की ओर से "सील सेज में ईसर गोरख भेटया, मलकत दीदारू" जैसे किये गए किसी कथन का कोई वैसा ऐतिहासिक मूल्य ही ठहराया जा सकता है। वास्तव में इस प्रकार की बातें हमें संत किनाराम संत चरणदास एवं संत गरीबदास जैसे लोगों की उपलब्ध रचनाओं के भी अन्तर्गत देखने को मिलती हैं जो सभी विक्रम की अठारहवीं शताब्दी में उत्पन्न हुये थे, किन्तु जिनमें से

१ सबदवाणी, सबद ६३, पंक्ति १०।
२ श्री महाराज हरिदासजी की वाणी, साखी ४, पृष्ठ ३५६।
३ वही, साखी ५, पृष्ठ ३५७।

प्रथम और द्वितीय द्वारा क्रमशः गुरु दत्तात्रेय एवं शुकदेव मुनि जैसे पौराणिक महापुरुषों के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आना तथा इसी प्रकार तृतीय का उन संत कबीर का शिष्य होना सूचित करता है[१] जिनका आविर्भाव पन्द्रहवीं शताब्दी में ही हो चुका था। 'जम्भदेव चरित भानु' के रचयिता स्वामी ब्रह्मानन्द के अनुसार तो जाम्भोजी से उपयुक्त प्रकार मिलने वाले महात्मा कोई बाला गोरख यतीन्द्र नामक महापुरुष रहे, किन्तु उनका ऐसा भी कथन कदाचित् प्रसिद्ध गुरु गोरखनाथ की ही ओर संकेत करता जान पड़ता है और इसका निर्णय तब तक नहीं किया जा सकता जब तक इस विषय में किसी ऐतिहासिक प्रमाण द्वारा पुष्टि न हो जाय।

जाम्भोजी ने कोई विवाह नहीं किया, प्रत्युत कहा जाता है कि इन्होंने आजीवन ब्रह्मचारी बने रहने का संकल्प कर लिया था जिसके सामने इनके माता पिता को भी झुकना पड़ गया। इनके पिता लोहटजी का देहान्त संवत् १५४० में हुआ तथा इनकी माता हांसादेवी भी उनके कुछ ही दिनों पीछे चल बसी। तत्पश्चात् वैसी दशा में इन्होंने अपने गृह तथा अपनी सारी सम्पत्ति का परित्याग कर दिया और वे 'समराथळ' नामक स्थान पर रहने लग गये। समराथळ पर ही रहते समय इन्होंने, संवत् १५४२ की कार्तिक बदि ८ को विश्नोई (वा विष्णोई) सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया तथा उन दिनों वाले अकाल पीड़ितों की सहायता करने के साथ साथ अपने मत का प्रचार कार्य भी आरम्भ कर दिया। ये बहुधा जन समाज में उपस्थित होकर सर्वसाधारण को ज्ञानोपदेश देते तथा कभी कभी उनकी शंकाओं का समाधान कर देने का प्रयत्न करते और इसके साथ ही प्राय विविध वाणियों की रचना भी किया करते थे जो इस समय 'सबदवाणी' नामक रचना-संग्रह के अन्तर्गत संगृहीत समझी जाती हैं। अंत में संवत् १५९३ की मार्गशीर्ष बदि ९ को संभवतः 'समराथळ' पर ही रहते समय इनका देहान्त हो गया।

जाम्भोजी के जीवन काल अर्थात् संवत् १५०८-१५९३ के समय इनके प्रमुख कार्यक्षेत्र राजस्थान की दशा कुछ विचित्र सी थी और वह कम से कम उनके प्रारम्भिक दिनों में, क्रमशः बिगड़ती जाती हुई ही जान पड़ती थी। वहाँ वाले विभिन्न राज्यों के बीच, बहुधा साधारण सी बातों को भी लेकर पारस्परिक युद्ध आरम्भ हो जाया करते थे। उनमें से एक दूसरे के ऊपर, कभी अपने आत्मसम्मान की रक्षा के कारणवश धावा बोल देता, तो कभी किसी वचन-पालन के व्याज से, अपने से अधिक शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध भी हथियार उठा लेता। महत्वाकांक्षा से बढ़कर उन्हें अधिकतर ऐसी अनेक बातें ही प्रेरित कर दिया करती जिन पर किसी न किसी प्रकार के काल्पनिक कर्त्तव्य का रंग चढ़ा हुआ रहता, जिसका एक स्पष्ट परिणाम इस रूप में दीखता था कि उनमें से छोटे या बड़े सभी राज्य सदा युद्ध के लिए जागरूक बने रहते थे। इसी प्रकार जहाँ तक साधारण सामाजिक स्थिति के विषय में कहा जा सकता है, खेतिहर, व्यापारी, कारीगर एवं कलाकार जैसे वर्गों की

---

१ देखें—'कमल विवेकसार' पृष्ठ २, 'भक्तिसागर,' पृष्ठ ७९, ३२३, ४९३, ५१८ आदि तथा गरीबदासजी की बानी, पृष्ठ १४८।

आर्थिक दशा एक समान नहीं थी और न उनके अथवा धनी मानी एवं साधु वर्ग तक के लिये ही कहा जा सकता था कि उनमें खान पान तथा अन्धविश्वास विषयक त्रुटियों का समावेश नहीं था। एक ओर जहां मादक एवं निषिद्ध वस्तुओं का खुला व्यवहार होता दीख पडता था, वहां दूसरी ओर उन लोगों के ऊपर ऐसी कुप्रथाओं एवं कुरीतियों का भूत भी सवार हो चुका था जिनके रहते किसी समाज का कभी कोई नैतिक विकास हो ही नहीं सकता। इसके सिवाय यदि उस काल की धार्मिक स्थिति के लिए कहा जाय तो यहां पर भी धर्म के वास्तविक रूप का ज्ञान लगभग लुप्त सा हो चला था और उसका स्थान साधारण मान्यताओं ने ग्रहण कर लिया था। बाह्य साधनाओं को आवश्यकता से अधिक महत्त्व प्रदान किया जाता था और साम्प्रदायिक संकीर्णता का सर्वत्र बोलबाला हो गया था।

इस प्रकार की अनेक बातें सामान्यतः उस काल के पूरे राजस्थान क्षेत्र के लिए कही जा सकती थीं। उसके जिस भाग विशेष में जाम्भोजी का आविर्भाव हुआ था उसकी दशा इससे कुछ और गिरी ही समझी जा सकती थी। जिस प्रदेश के अन्तर्गत इन्होंने जन्म ग्रहण किया था, उसे भौगोलिक दृष्टि से साधारणतः 'वागड' कहा जाता था। यह सारा का सारा भूभाग प्रायः रेतीले मैदानों से पूर्ण था जिनमें टीले बन गये थे और अन्यत्र छोटे-बडे जंगल भी पाये जाते थे जिनमें पशुओं के झुंड चरा करते थे तथा जहां ऊंचे स्थानों पर कहीं-कहीं बस्तियां भी बन गई थीं। इन छोटे छोटे गावों में से अधिकांश जाट जाति के लोगों द्वारा आबाद थे। जाट लोग स्वभावतः सीधे-सादे और अक्खड हुआ करते थे तथा उनकी जीविका प्रमुख रूप में भोले भाले किसानों की जैसी ही रहा करती थी। ये प्रायः अपने ऊपर शासन करने वाले राजपूत राजा महाराजाओं की ओर से विभिन्न युद्धों में भाग भी लिया करते थे तथा अपने सामाजिक एवं धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं की दृष्टि से, बहुत कुछ उनसे मिलते जुलते भी जान पडते थे। इनकी विशेषताएं बहुधा इस बात में देखी जाती रही कि उनके जैसे पढे लिखे एवं सुसंस्कृत न होने के कारण, ये लोग बहुत अधिक अन्धविश्वासी और परम्परा-पालक बन गये थे तथा इनमें मद्यसेवन एवं स्त्री अपहरण जैसे बहुत से दुर्व्यसनों वाले अनेक ऐसे दोष भी आ गये थे जिनके कारण इनकी जीवन पद्धति को 'नैतिक' मानना कभी उचित नहीं कहा जा सकता था।

यहां पर यह उल्लेखनीय है कि उस काल वाले 'वागड-देस' की प्राकृतिक दशा तथा वहां के निवासियों की मनोवृत्ति आदि की ओर किया गया एक स्पष्ट संकेत, हमें संत कबीर की कतिपय पंक्तियों में भी मिलता जान पडता है। उन्होंने अपने एक पद के द्वारा बहिर्जगत एवं अन्तर्जगत की तुलना करते समय, प्रथम के लिए जहां 'वागड देस' का रूपक बांधा है वहां द्वितीय को 'देस मालवा' कहा है और इस प्रसंग में बतलाया है— 'वागड देश में बराबर लुऐं चलती रहती हैं इसलिए तू वहां मत जा, क्योंकि वहां जाने पर जल जाने का भय है। वहां के पूरे समाज को ही मैं धर्म-विहीन पाता हूँ। जब उनके सिर पर धूल उठकर पडा करती है तो वे उस अबीर की संज्ञा दिया करते हैं। यहां न तो कोई सरोवर है और

न पानी ही है। वहाँ पर न तो सद्गुरु हैं, न साधुवाणी है, न वहाँ कोकिल है और न कोई सोता ही है। वहाँ पर हंस (जीव) ऊँचे उड़ते हुए भी, मरा करते हैं।" वहाँ पर, वहाँ वाले तत्कालीन जन साधारण के नैतिक स्तर की तो कोई चर्चा की गई नहीं दीख पड़ती किन्तु जो निम्न कथ कुछ बातों का हमारे समक्ष उपस्थित होता है उससे पता चलता है कि वस्तुस्थिति कुछ ऐसी ही रही होगी। अतएव हम कह सकते हैं कि जिस 'बागड़ प्रदेश' वाले भूखंड में जाम्भोजी का जन्म हुआ था उसे कई दृष्टियों से अच्छा नहीं ठहराया जा सकता था तथा वह एक ऐसा क्षेत्र रहा जहाँ पर समुचित सुधार का किया जाना आवश्यक समझा जा सकता था। वहाँ के लिए इस बात की आवश्यकता थी कि कोई न कोई सच्चा पथ-प्रदर्शक (सद्गुरु) सच्चे मार्ग का अनुसंधान करे तथा वहाँ किए गए सदुपदेशों (साधुवाणी) द्वारा उक्त स्थिति में उपयुक्त सुधार लाया जाय और तभी यह संभव था कि अपने को उच्च मानते हुए, मिथ्याभिमान के कारण अपने प्राण निछावर करने वालों तक का भी कल्याण हो सके।

जाम्भोजी के उपर्युक्त जीवनवृत्त, उनसे सम्बन्धित प्रमुख घटनाओं तथा उनके स्वभाव के ऊपर विचार करने से यह स्पष्ट होते देर नहीं लगती कि इनमें अनेक ऐसे गुण थे जिनके आधार पर इन्होंने उस ओर बहुत कुछ किया होगा। ये अपने बचपन से ही मित-भाषी रहे तथा पशुचारण के अवसरों पर जंगलों में भ्रमण करते समय इन्हें एकान्तवास एवं आत्म चिंतन का कुछ न कुछ अभ्यास भी पड़ गया होगा। इनके विषय में लिखने वालों का कहना है कि जिन दिनों ये उक्त कार्य में लगे रहे, इनके यहाँ संयोगवश अनेक ऐसे व्यक्ति भी समय समय पर आ जाते रहे जिनके ऊपर विविध कठिनाइयाँ पड़ी रहा करती थीं तथा जिनकी सहायता ये सदा किसी न किसी रूप में करते रहे। इसके सिवाय, न केवल इन्होंने अपने माता पिता का देहावसान हो जाने के अनन्तर अपनी सारी सम्पत्ति का परि-त्याग कर दिया, अपितु जिस समय संवत १५४२ में वहाँ अकाल पड़ा, इन्होंने कष्ट में पड़े लोगों की सेवा-सहायता भी की। इस प्रकार, ज्ञान की गंभीरता, आत्मत्याग की भावना, हृदय की उदारता सहृदयता एवं कर्मठता जैसी अनेक बातें इनके जीवन की चिरसंगिनी बन कर काम देती आई थीं जिसका एक सुन्दर परिणाम यह हुआ कि न केवल इनका व्यक्तित्व क्रमशः निखरता चला गया, प्रत्युत इसके साथ ही इनकी लोकप्रियता भी बढ़ती चली गई तथा जो कोई इनके सम्पर्क में आये अथवा जिन्हें इन्होंने पूर्णतः प्रभावित किया उनके ये सभी कुछ हो गए। फलतः यह स्वाभाविक था कि इनके कार्य क्षेत्र वाले इन्हें एक आदर्श महापुरुष तथा कभी कभी अपने इष्टदेव के रूप तक में भी स्वीकार करते, और इस प्रकार

---

१ बागड देस लूवन का घर है।
तहा जिनि जाइ दाझन का डर है॥ टेक॥
सब जग देखौं कोइ न धीरा। परत धूरि सिरि कहत अबीरा॥
न तहा सरवर न तहां पाणी। न तहा सतगुर साधू बांणी॥
न तहा कोकिल न तहा सूवा। ऊंचे चढ़ि चढ़ि हंसा मूवा॥ इत्यादि
—कबीर ग्रंथावली, का ना प्र सभा, संवत २०१३, पद ६८, पृष्ठ १०९।

इनके द्वारा सुझाये माग के अनुसार एक सम्प्रदाय भी चल पडा।

जाम्भोजी द्वारा रचे गये किसी ग्र थ का पता नही चलता और न यही विदित हो पाता कि इ होने ऐसा करने का कोई प्रयास भी कभी किया था अथवा नही। हमे तो इनके विषय मे इतना तक भी ज्ञात नही कि इ होने कभी कोई शिक्षा भी प्राप्त की थी और न हम यही कह सकते हैं कि इनका कोई दीक्षा गुरु भी रहा था। इनकी जो रचनाएँ इस समय हमे उपल ध हैं, उनके अ तगत भी हम ऐसा कोई स्पष्ट सकेत नही मिलता जिसे सूत्र-वत पकडकर उसके आधार पर हम कोइ तक सगत अनुमान कर सकें। इनका गुरु गोरख नाथ के लिए 'गोरख गरू अपारा" कह डालना इस सदभ म कोई महत्त्व नही रखता और जसा इसके पूव हम देख चुके हैं, यह किसी प्रकार ऐतिहासिक दष्टि से कभी सिद्ध भी नही किया जा सकता, प्रत्युत इसके विषय मे केवल यह अनुमान किया जा सकता है कि वसी कोई प्रचलित कथन पद्धति ही रही होगी अथवा यह भी हो सकता है कि नाथ पथ का विशेष प्रचार रहते आने के कारण उक्त प्रकार, उसके प्रभाव विषयक एक अभिव्यक्ति मात्र कर दी गई होगी। इसके सिवाय, इनकी रचनाओ मे लक्षित होने वाली वेदा त, योग शास्त्र अथवा अ य इस प्रकार की बातो के विषय म भी कहा जा सकता है कि वे भी बहुत अ शो तक इनके उन अनुभवो का परिणाम हो सकती हैं जि ह इ होंने स्वभावत अपने चि तन-शील एव सभवत बहुश्रुत भी होने के कारण, क्रमश अर्जित कर लिया होगा। यदि हम चाह तो इनके प्रमाण म इनकी उपलब्ध रचनाओ म से अनक ऐसे अ श भी उद्ध त किय जा सकत ह, जहा पर इ होने अपने श द चयन, वाक्य प्रयोग, कथन शली आदि तक म प्रचलित परम्पराओ का अनुसरण किया है। हा, इतना अवश्य है कि इनकी पक्तियो को पढते समय जो हम इनके व्यक्तित्व की झलक दीख पडती है यह अपूव है।

जाम्भोजी के दाशनिक मत पर विचार करते समय हम, सवप्रथम, उन विभिन नामा के ऊपर अपनी दृष्टि डालनी पड जाती है जिनका इ होने परमतत्त्व अथवा परमात्म-तत्त्व के लिए, अपनी रचनाओं के अ तगत प्रयोग किया है। वे न केवल अनेक हैं, प्रत्युत वे अपन विविध रूपो मे, अनेक स्रोतो से उपलब्ध किये गये स भी जान पडते हैं। इ होने उसके लिए प्रधा त विसन (विष्णु) शब्द का ही प्रयोग किया है, कि तु केवल इसे ही इन्होने कदाचित पर्याप्त नही माना है और इस सम्ब ध मे, इ होने यह भी कह दिया है कि उस "मेरे साईं के 'सहसनाम' (सभवत असख्य नाम) हैं, वह वस्तुत 'सिंमू' (स्वयभू) है, कि तु वह कभी पहले पहल 'आदि मुरारी' के रूप मे उत्पन्न हुआ था"।

इस प्रकार, उसके नामो म, इ होने 'विसन' के अतिरिक्त 'ओम', 'पारब्रह्म', 'परमेसर' 'नारायण', 'हरि', 'राम', 'सतगुरु', 'कृष्ण', 'स्याम' 'लक्ष्मण', 'परसराम', 'रहीम', 'रहमान', 'करीम 'खुदाव द', 'अल्लाह' आदि के भी विभिन्न प्रयोग यथास्थल, मनमाने रूप म किये हैं। ये उसे किसी मत मता तर अथवा दृष्टि विशेष के प्रभाव मे आकर सीमित नही कर देना चाहते। ये उमे प्राय अनादिवत समझते जान पडते हैं, किन्तु फिर भी इ होने उसके द्वारा सारी सृष्टि का सृजन किया जाना तथा इस प्रकार, उसका अपने निरजन

निराकार के रूप में, अथवा साकारवत् प्रकट हो जाता भी बतलाया है, जो उनकी एकमात्र सत्ता का द्योतक भी ठहराया जा सकता है। इस प्रसंग में इन्होंने स्वयं अपने विषय में कहा है कि "उस समय, जबकि 'आदि मुरारी' का आविर्भाव हुआ मैं 'निरालम्ब' रूप में भी था, मेरे, माँ-बाप कोई नहीं थे और मैंने अपनी काया का निर्माण स्वयं किया था मैंने ही स्वयं, समय समय पर, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन जैसे अवतार धारण किये तथा विविध लीलाएँ तक भी कीं"। अतएव, काजी, मुल्ला, पण्डित आदि से वे स्पष्ट शब्दों में कहते दीख पड़ते हैं कि, "यदि तुम लोग 'दोजख' की अपेक्षा मुक्ति चाहते हो तो मेरा कहना करो, तुम्हारे लिए इन्द्रपुरी, वैकुण्ठ धाम अथवा मोक्ष सभी सुप्राप्य हो सकेगा"[1]। इस प्रकार, ये उस परमतत्त्व को, एक ओर जहाँ रूपरेखा एवं वर्णादि से 'विवर्जित'[2] बतलाते हैं, वहीं दूसरी ओर उस एक मात्र को सर्वत्र प्रत्यक्ष रूप में अनुभूत होता हुआ भी ठहराते हैं जो इनके अद्वैतवाद का सूचक भी समझा जा सकता है।

जाम्भोजी का आत्मा के विषय में यह कहना है कि "जिस प्रकार तिल के भीतर तेल रहता है अथवा फूल में गंध होती है, उसी प्रकार उसका प्रकाश पाँचों तत्वों में अन्तर्गत हुआ करता है"[3]। संसार के प्राणी सभी उत्सवों में रत जान पड़ते हैं किन्तु उन्हें यह पता नहीं चलता है कि यह सारा जगत बाजरे की भूसी के समान थोथा और निस्सार है[4]। इसी प्रकार यदि विचार किया जाय, तो अन्त में 'माता पिता, भाई बहन परिवार, सगे सम्बन्धी कोई भी वास्तविक साथी नहीं है'[5]। 'इस कलियुग के भीतर तत्त्व का ज्ञान न हो पाने के कारण, सभी भ्रम में पड़े दीखते हैं। ब्राह्मण वेदों को काजी कुरान को और जोगी जोग को भुला बैठे हैं, तथा मुण्डियों के पास तो 'अकल' ही नहीं रह गई है और माता पिता तक भी, केवल भ्रम में पड़े रहने के ही कारण, अपनी सन्तानों के लिए, अनेक प्रकार की कामनाएँ करते रहा करते हैं'[6]। इनका यह भी कहना है कि "जैसी खेती की जाती है, वैसी ही फसल भी तयार हुआ करती है'। 'वर्षा होती है उस दशा में भी जैसा बीज रहा करता है, वैसे ही पौधे भी उगा करते हैं, अथवा उसमें अन्न पैदा हुआ करता है, इसमें पानी का कोई दोष नहीं है। उसी प्रकार, सर्वत्र अपनी करनी का ही दोष हो सकता है, क्योंकि उसी के अनुसार फल मिला करता है"[7]। ओछी करनी वाले बराबर आवागमन के चक्र में पड़े रहा करते हैं और उनका कभी छुटकारा नहीं हो पाता। आवागमन से छुटकारा पा जाना ही मुक्ति है जिसके लिए इन्होंने स्वर्ग में जाना, वैकुण्ठ पहुँचना अथवा देवों के साथ रहना जैसे भी कथन किये हैं तथा इन्होंने उसका स्पष्टीकरण, 'भिस्त'

१ सबदवाणी सबद ६३, पृष्ठ ३९८।
२ वही सबद २६, पृष्ठ ३३१।
३ वही सबद १०७ पंक्ति १३-१४।
४ वही, सबद ६६, पंक्ति १२-१३।
५ वही, सबद ३१ पंक्ति ९-११।
६ वही, सबद ८३, पंक्ति १५-१७।
७ वही, सबद २८, पंक्ति १५-१८।

कर घूमा करना और फिर घरबारी की ही भांति सुई-तागे से 'करड' एवं 'मेखले' की सिलाई करना तथा झोली और कंथे का बोझ कंधे पर ढोना और वीर बतालो का जप करना अथवा मोह त्याग की बातें करना आदि सभी कुछ दिखावा मात्र है"[1]। इसी प्रकार, हम उन हिन्दुओं के लिए भी कह सकते हैं, जो 'पाहन' की पूजा किया करते हैं और चेले बन कर अपने गुरुओं के पैरों पर गिरा करते हैं, भूत प्रेतादि में विश्वास करते हैं, उनके लिए बलि चढ़ाते हैं तथा ऐसे अनेक पाखंड किया करते हैं। ऐसे लोग इनकी दृष्टि में उन कुत्तों से भी बुरे कहे जा सकते हैं जो चोरों के आ जाने पर भौंका करते हैं और सभी को सजग कर देते हैं"[2]।

जाम्भोजी की उपलब्ध रचनाओं में हम कहीं पर उन प्रसिद्ध २९ नियमों को एकत्र गिनाया गया नहीं दीख पड़ता, जिनका पालन उनके द्वारा प्रवर्तित विष्णोई संप्रदाय के अनुयायियों के लिए परम कर्त्तव्य समझा जाता है। परन्तु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय, तो वे अथवा उनसे कुछ अधिक नियम तक भी यहां पर यथास्थल बतलाये गये मिलते हैं। ऐसे नियमों में केवल वे ही नहीं आते जिनकी आवश्यकता साधारण दैनिक आचरण के अवसरों पर पड़ सकती है तथा जिनमें इसी कारण, विधि निषेध के रूपों में, अनेक बातों का समावेश कर दिया जा सकता है, इनमें बहुत से ऐसे भी पाये जाते हैं, जिन्हें हम मुक्ति प्राप्ति के हेतु किन्हीं साधनों के रूप में भी स्वीकार कर सकते हैं। इसके सिवाय, इनमें कई ऐसे भी आ गये हैं जिनका उपयोग किन्हीं अवसर विशेष पर ही किया जा सकता है। जहां तक ऐसे सभी नियमों के निर्दिष्ट करने की बात है, हमें पता चलता है कि इसका अनुसरण जाम्भोजी के समसामयिक जसनाथजी द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय के अन्तर्गत भी किया गया पाया जाता है और वहां पर ३६ नियम प्रचलित हैं। इसके सिवाय हमें 'साध संप्रदाय' के अनुयायियों द्वारा स्वीकृत वे १२ नियम भी मिलते हैं जिन्हें वे सर्वाधिक महत्त्व दिया करते हैं तथा जिनके पालन में किसी प्रकार की कमी का आ जाना उनके यहां कभी क्षम्य नहीं माना जाता। इन सभी विभिन्न नियमावलियों का यदि कोई सूक्ष्म तुलनात्मक अध्ययन किया जाय, तो यह स्पष्ट होते देर नहीं लगती कि इनमें से बहुत से तो वे ही हैं जिनकी गणना सामान्य नैतिक आचरण के सम्बन्ध में की जाती है। परन्तु इनमें अनेक ऐसे भी मिल जाते हैं जो केवल अपने पालन वालों के ही लिए विशेष रूप से निर्धारित प्रतीत होते हैं। ये उनकी विशेषताएं सूचित करते हैं तथा इनकी दृष्टि से हम उनकी विशिष्ट मनोवृत्ति के समझने में भी सहायता मिलती है तथा इनके सहारे हम उनके विभिन्न संप्रदायों का समुचित मूल्यांकन भी कर सकते हैं। इनके द्वारा हम उनकी उन वास्तविक देनों का भी पता लगाने में कुछ सहायता मिल सकती है जिनकी दृष्टि में वे कभी प्रवर्तित किये गये थे।

जाम्भोजी आजीवन अविवाहित रहे और उन्होंने न तो किसी साधारण गृहस्थ का ही जीवन व्यतीत किया और न किसी संन्यासी की भांति सम्पत्ति का त्याग करके उसके

१ सबदवाणी सबद ८० पंक्ति १६।
२ वही सबद ७१, पंक्ति १-७।

आधार पर कभी ऐश्वयशाली बन जाने का ही कोई प्रयत्न किया। उन्होने, अपने गृहादि का परित्याग करके, आध्यात्मिक साधना एव लोक सग्रह की वृत्ति अपनायी तथा तदनुसार ही वे बराबर जन कल्याण के काय मे लगे रहे और सब साधारण को एक आदश सात्विक जीवन यापन करने का सदुपदेश भी देते रहे। उनके विचार अत्यन्त व्यापक थे और उनम सब कहो उनकी समन्वयात्मक दृष्टि का प्रभाव लक्षित हो रहा था और यही कारण था कि उनके अनुसार निर्मित की गई 'नियमावली' मे, कतिपय साम्प्रदायिक सी दीख पडने वाली बातो के आ जाने पर भी, उसमे किसी प्रकार की सकीर्णता के ढूढने का प्रयास बहुत कम किया गया है। उनके द्वारा प्रवर्तित बिष्णोई सम्प्रदाय भी आरम्भ से ही, जनसाधारण के उपयुक्त धार्मिक जीवन का ही प्रतिपादन करता आया और इस सम्बन्ध मे यह उल्लेखनीय है कि इसके प्रारम्भिक अनुयायियो मे भी अधिकाश वे ही लोग थे जो गृहस्थ जाटो वाले समाज के थे। जाम्भोजी ने कदाचित उन्ही के लिए सब प्रथम किसी 'अवजूवाट' अर्थात सीधे वा सहज माग के आदश की कल्पना भी की थी और उन्हें बतलाया था कि "जो कोई इस 'अवजूवाट' को अपना लेगा वह, देहावसान के अनन्तर, स्वग पहुच जायगा[1]।" उन्होने यही बात फिर अन्यत्र, राजन्यवग को भी सम्बोधित करके कही और उन्हें चेताया कि "हे राजेन्द्र, कूड माया-जाल मे न भूलो, प्रत्युत उससे पथक 'ओजू की बाट' को अपनाओ"[2]। इस माग मे न तो किसी प्रकार के प्रपच का प्रलोभन आ सकता है और न किसी पाखड के कारण, विपथगामी बन जाने का भय ही बाधा डाल सकता है। इसके दोनो पाश्व, क्रमश 'विचार' एव 'आचार' के द्वारा सुरक्षित हैं, जिस कारण यह ठीक सीधी ओर ही जाता है। "वाग्विवाद के भ्रम जाल म पडे हुए लोग, आचार विचार के स्वाद को नही जान पाते,"[3] तथा जो सदाचारी आचार म लीन है और जिसकी सयम शील एव सहज म पूरी आस्था है, उसे कभी आवागमन की आशका भी नही हो सकती[4]।"

२

जाम्भोजी का जीवन काल सवत १५०८ से लेकर सवत १५९३ तक ठहरता है, जिस कारण, जहा तक पता है राजस्थान के क्षेत्र वाले हिन्दी के प्रमुख सत-कवियो म ये सबसे प्राचीन कहे जा सकते हैं। परन्तु आश्चय की बात है कि इनके विषय में, अभी तक हम पूरी जानकारी नही हो पाई थी और न इनकी यथेष्ट रचनाएँ ही उपलब्ध हो सकी थी। इनके द्वारा प्रवर्तित 'विष्णोई सम्प्रदाय' के प्रचार और प्रसार का, राजस्थान मध्य

१ 'अवजूवाट जे नर अया, काची काया छोडि कवलासे गया।'
—सबदवाणी, सबद २२ पक्ति ३ ४।

२ 'कूड माया जाल न भूलि रे राजिंद्र, अलगी रही ओजू की वाट्ट।'
—वही, सबद १०४, पक्ति ३ ४।

३ 'भरमी भूला वाद विवाद, आचार विचार न जाणत स्वाद।'
—वही, सबद २८, पक्ति ६६ ६७।

४ 'जो आचारी आचारे लीणो, सजमे सीले सहज पतीना।
तिहि आचारी नै चीन्हत कौण, जिहि की चूक सहज आवागौण॥
—वही सबद ५२, पक्ति १२-१५।

प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में होना बतलाया जाता है तथा यहाँ तक भी कहा गया मिलता है, कि उसके कुछ न कुछ अनुयायी बिहार एवं नेपाल राज्य में भी पाये जाते हैं। इस कारण, उनकी संख्या भी कदाचित्, नगण्य नहीं हो सकती और न, बिना उनके विषय में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किये, उनके महत्त्व को किसी प्रकार कम ही माना जा सकता है। इसके सिवाय, इधर ज्ञात हुआ है कि विष्णोई सम्प्रदाय के अनुयायियों में बहुत से ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने अनेक प्रकार के साहित्य की रचना की है तथा उसका बहुत सा अंश स्वयं इनकी जीवनी आदि से सम्बन्ध रखता है। किन्तु फिर भी न तो इनका कोई उल्लेखनीय परिचय अभी तक दिया जा सका था और न, वैसे ग्रन्थों के आधार पर, इनकी विचारधारा अथवा इनके किसी प्रभाव की चर्चा ही हो पाई थी जिसके द्वारा इनकी ओर हमारा ध्यान जा पाता। हो सकता है कि यह उक्त प्रकार के साहित्य के प्रकाश में न आने से अथवा, इस कारण से भी, नहीं हो सका था कि उसके प्रति कोई न कोई साम्प्रदायिक भावना मात्र बना ली गई थी और उसे उतना महत्त्व प्रदान नहीं किया गया था जिसके फलस्वरूप हम आज तक जाम्भोजी की उन सुन्दर बानियों के अध्ययन से भी वंचित रहते चले आये जिनकी रचना उन्होंने अपने चिन्तनशील एवं कर्मठ जीवन में प्राप्त अनुभवों के आधार पर की है।

डॉ० हीरालालजी माहेश्वरी द्वारा प्रस्तुत किए गए ग्रन्थ 'जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य' के प्रथम अध्याय के देखने से पता चलता है कि उन्हें इस विषय से सम्बन्धित एक विशाल साहित्य का परिचय प्राप्त हो गया है। उन्होंने यहाँ पर इसके अन्तर्गत ऐसी ४०० से भी अधिक रचनाओं का नामोल्लेख किया है तथा उनके वर्ण्य विषयों की ओर संकेत करते समय, कभी कभी, उनका कोई न कोई आलोचनात्मक विवरण तक भी दे दिया है जिसके आधार पर हमें इस बात के स्पष्ट हो जाते देर नहीं लगती कि हम, उन्हें तदनुसार, कई विभिन्न कोटियों में स्थान दे सकते हैं। उनमें बहुत सी ऐसी रचनाएँ हैं जिनका विषय प्रमुखतः जाम्भोजी का जीवन चरित कहा जा सकता है, किन्तु फिर भी, उनमें से सभी के अन्तर्गत उसका पूरा परिचय दिया गया नहीं पाया जाता और न उन्हें, किसी ऐतिहासिक दृष्टि से लिखा गया ही कहा जा सकता है। उनमें से कई में या तो जाम्भोजी के बचपन जैसे विषयों की चर्चा कर दी गई मिलती है अथवा कतिपय घटनाओं का वर्णन कर दिया गया दीखता है। इसी प्रकार, उनके भीतर वर्णित अन्य विषयों में, अनेक ऐसी कथाएँ आती हैं जिन्हें प्रासंगिक मात्र कहा जा सकता है अथवा स्वयं जाम्भोजी के विविध चमत्कारों वा लीलाओं के भी नाम लिये जा सकते हैं। इसके सिवाय, उनमें कभी कभी बहुत सी उन बानियों को भी स्थान दिया गया दीख पड़ता है जो उनकी अपनी रचनाएँ कही जा सकती हैं तथा जो वहाँ संगृहीत कर ली गई हैं अथवा वहाँ पर केवल वैसे पद्य ही रखे गये हैं जो उनके सम्बन्ध में प्रशंसात्मक शैली में रचे गये हैं। इस प्रकार एकत्र की गई सभी रचनाएँ विभिन्न छन्दों वा काव्य रूपों में हैं और उन्हें पदों, साखियों व साधारण भजनों की श्रेणी अथवा कवित्तादि जैसे विविध

छन्दों की कोटि में भी रखा जा सकता है। बहुत से ग्रन्थों के विषय तो निरे साम्प्रदायिक से भी लगते हैं।

परन्तु यहाँ पर केवल उक्त अध्ययन सामग्री का ही विवरण देकर नहीं छोड़ दिया गया है। इसके लेखक ने इसके द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत, इस ओर किये गये उस कार्य का भी संक्षिप्त परिचय दिया है, जो इस समय तक 'विश्नोई सम्प्रदाय' वाले लेखकों अथवा इतर लेखकों द्वारा सम्पन्न किया जा चुका है, और उस पर अपनी ओर से टिप्पणी लगाते समय, यहाँ उसका मूल्यांकन भी कर दिया गया है जिसके द्वारा ऐसे प्रयत्नों की उपलब्धियों पर प्रकाश भी पड़ जाता है। इनमें से प्रथम वर्ग की पुस्तकों में से कई ऐसी हैं जो हमारे सामने लगभग वे ही चित्र उपस्थित करती हैं जो उक्त प्रथम अध्याय वाले ग्रन्थों में पाये जाते हैं किन्तु थोड़ी सी ऐसी भी हैं जिन्हें किसी रूप में विवेचनात्मक भी ठहरा सकते हैं तथा जिनके लिए कहा जा सकता है कि वे आधुनिक प्रवृत्तियों द्वारा कुछ न कुछ प्रभावित होकर भी लिखी गई हैं। इस प्रकार की पुस्तकों की विशेषता अधिकतर इस बात में देखी जा सकती है कि ये किन्हीं 'जानकारों' द्वारा लिखित कही जा सकती हैं तथा इसी कारण इन्हें कुछ दृष्टियों से प्रामाणिक भी समझा जा सकता है। इनमें उतना अनुमान का ध दा काम करता नहीं कहा जा सकता जितना किसी न किसी आग्रह का भाव आ गया माना जा सकता है। इसके विपरीत, जिन लोगों को इसके पहले 'इतर लेखक' नाम से सूचित किया गया है उनके विषय में, कहा जा सकता है कि यद्यपि उन्होंने अपनी कोई बात उक्त प्रकार से साधिकार नहीं कही है, फिर भी उनके ऊपर किसी प्रकार के आग्रह का दोष भी नहीं मढ़ा जा सकता।

पुस्तक के तृतीय अध्याय के अनन्तर इसका खण्ड १ समाप्त हो जाता है और फिर चतुर्थ अध्याय से लेकर इसके सप्तम अध्याय तक, जाम्भोजी उनकी वाणी, विचार धारा एवं सम्प्रदाय के प्रसंग आते हैं, जो इसके खण्ड २ के विषय हैं। इसके उक्त तृतीय अध्याय में उस काल वाली युगीन परिस्थिति का एक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है जिसके परिप्रेक्ष्य में उन्होंने न केवल अपना जन्म ग्रहण किया था अपितु जिसमें रह कर उन्होंने अपना सारा कार्य भी सम्पन्न किया था। यहाँ पर उनके 'बागड़ देश' का भौगोलिक परिचय दिया गया है उनके आविर्भाव-काल की राजनीतिक स्थिति का दिग्दर्शन करा दिया गया है तथा इसके साथ ही, उन तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक परिवेशों का भी एक चित्र उपस्थित कर दिया गया है जिनकी वस्तु स्थिति की ओर ध्यान देते हुए, उन्होंने उनमें समुचित सुधार लाने का प्रयास किया था। उस समय वाले जन समाज का स्वरूप कैसा था, उसकी नैतिक दशा कैसी थी तथा किस प्रकार के धार्मिक जीवन को उन दिनों महत्त्व दिया जा रहा था अथवा इन सारी बातों के फलस्वरूप, उस काल के लोग कहाँ तक पतनशील बनते जा रहे थे, इस बात का सूक्ष्म निरीक्षण कर लेने पर ही, उन्होंने उसके सुधार हेतु अपना कर्तव्य निर्धारित किया था। हमने इसका न्यूनाधिक उल्लेख, इसके पहले ही कर दिया है और यहाँ पर हम केवल इतना ही कह देना है कि इस पुस्तक के विद्वान लेखक ने यहाँ पर इस प्रसंग

की विवेचना बड़े ही अच्छे ढंग से की है तथा उसे इस प्रकार हमारे सामने रखा है, जिससे हम जाम्भोजी के द्वारा निश्चित किये जाने वाले आदर्श तथा उसकी उपलब्धि के लिए नियोजित भावी कार्य क्रम की एक रूपरेखा भी समझ पड़ने लगे।

पुस्तक के चतुर्थ अध्याय में जाम्भोजी के जीवन-वृत्त की चर्चा की गई है और इसका परिचय देते समय भरसक उन्हें ऐसे ऐतिहासिक परिवेश में ही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है, जिसे आजकल की दृष्टि से यथासम्भव विश्वसनीय ठहराया जा सके तथा जिसके प्रति कम से कम आपत्ति की गुंजायश भी पायी जा सके। यह साधारणतः देखा जाता है कि जाम्भोजी जैसे धार्मिक महापुरुषों के जीवन वाली विविध घटनाओं का उल्लेख करते समय, उनके जीवनी-लेखक उनके सम्प्रदाय में प्रचलित अनेक चमत्कारों वाली किम्वदन्तियों का वर्णन किये बिना नहीं रह पाते। प्रस्तुत पुस्तक की यह एक विशेषता जान पड़ती है कि यहां पर, जाम्भोजी के जीवन-वृत्त का परिचय देते समय—इसके लिए प्रायः सदा केवल विष्णोई लेखकों की ही रचनाओं से सहायता ली गई दीख पड़ती है किन्तु ऐसा करते समय भी, उन चमत्कारपूर्ण घटनाओं के उल्लेख का लोभ संवरण करने की ही चेष्टा की गई है, जिनसे वे आधार ग्रन्थ अधिकतर भरे पाये जाते हैं। उनकी ओर कहीं-कहीं संकेत अवश्य कर दिया गया है किन्तु इसके साथ ही कभी-कभी, उनमें से कुछ के निरसन का भी प्रयास किया गया है। हां, इस सम्बन्ध में हमारा ध्यान, एक अन्य बात की ओर भी गये बिना नहीं रहता और वह जाम्भोजी एवं जसनाथजी के मिलन-प्रसंग की है जिसका वर्णन जसनाथी सम्प्रदाय वाले साहित्य के अन्तर्गत कहीं कहीं बड़े विस्तार के साथ किया गया पाया जाता है। ये दोनों ही महापुरुष समकालीन थे तथा इनके निवास स्थान भी एक दूसरे से बहुत अधिक दूर न थे, जिस कारण इन दोनों के बीच कभी न कभी, भेंट हो जाने की बात प्रायः असम्भव नहीं कहला सकती थी। इसके अतिरिक्त, जसनाथी सिद्ध रामनाथ ने इस प्रकार की घटना का वर्णन स्पष्ट शब्दों में किया है तथा वहां इनका परिचय देते समय दोनों के पारस्परिक संवाद की चर्चा तक भी दी गई मिलती है, जिसे देखते हुए इसका कोई न कोई समीक्षात्मक निराकरण कर देना आवश्यक था, परन्तु जहां तक हम जान पड़ता है, इस विषय की ओर यहां पर कोई संकेत नहीं किया गया है।

इस पुस्तक वाले पंचम अध्याय के अन्तर्गत संत जाम्भोजी के दर्शन एवं अध्यात्म का विवेचन किया गया है। इसके लेखक ने, ऐसा करते समय अपने प्रत्येक कथन के लिए, किसी न किसी उपयुक्त आधार की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है तथा इस संबंध में उस महापुरुष की उपलब्ध 'सबदवाणी' की पंक्तियों का हवाला तक भी दिया है। यहां पर न केवल उनकी प्रमुख विचारधारा तथा उनकी दृष्टि में उसके लिए सर्वथा उपयुक्त पाई जाने वाली साधना विशेष का ही उल्लेख किया गया है, अपितु कतिपय उन बातों का भी प्रसंग दिया गया है जो उनके द्वारा प्रवर्तित विष्णोई सम्प्रदाय के अन्तर्गत, साम्प्रदायिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। इसके सिवाय, इसी प्रसंग में यहां पर उन कई 'पाखंडों' की जाम्भोजी द्वारा की गई आलोचना का भी परिचय करा दिया गया है, जो

उस काल में प्रचलित योग था इस्लाम-धर्म एवं हिन्दू धर्म के भीतर आ गये थे तथा जिनके ऊपर, समय समय पर, संत कबीर जैसे कुछ धार्मिक महापुरुष भी, उसके पहले से ही, प्रहार करते आ रहे थे। जाम्भोजी ने भी अधिकतर उन्हीं की आलोचना शैली अपनायी तथा ऐसा करते समय, इन्होंने भी बहुत स्पष्ट शब्दों के प्रयोग किये।

पुस्तक का षष्ठ अध्याय, कदाचित सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझा जा सकता है क्योंकि इसी के अन्तर्गत उपलब्ध 'जम्भवाणी' संगृहीत की गई है तथा उसके पाठों से सम्बन्धित विषयों पर प्रकाश भी डाला गया है। इसके लेखक ने उसका संपादन करने से पूर्व उन कई प्रतियों की बहिरंग परीक्षा की है जो उसे विभिन्न स्थानों से मिल सकी हैं तथा जिन्हें उसने अपने विचार से अधिक विश्वसनीय एवं प्रामाणिक माना है। उसने उनमें से केवल ७ को चुनते हुए शेष ४१ के लिए कहा है कि ये भी सम्भवतः उन्हीं की 'शाखा' वाली ठहरायी जा सकती हैं तथा फिर उन्हीं की उसने अंतरंग परीक्षा भी विस्तार के साथ की है। इसके सिवाय उसने उनके प्रतिलिपि-सम्बन्ध की चर्चा की है, तथा सबद प्रतीकानुसार' उनकी एक संख्या सूची भी दे दी है जिससे सारा चित्र सम्यक् रूप से सामने आ जाता है। अन्त में अपने सम्पादन - सिद्धांतों की एक संक्षिप्त रूपरेखा तथा कतिपय अपवादों का भी उल्लेख करके, उक्त 'पाठ संपादन - भूमिका' समाप्त की है, और इसके आगे उन १२३ बानियों का पाठ प्रकाशित किया गया है जो वास्तव में जाम्भोजी द्वारा रचित मानी जानी योग्य समझी गई हैं तथा उनमें पाये जाने वाले प्रमुख पाठभेदों की ओर संकेत कर देने के उद्देश्य से, उनके नीचे आवश्यक टिप्पणियाँ भी जोड़ दी गई हैं, जिससे यह सारा कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न किया गया कहला सकता है और इसके लिए पुस्तक का लेखक हार्दिक बधाई का पात्र है। जम्भवाणी' वाले प्रस्तुत पाठ के देखने से पता चलता है कि यहां पर एकाध ऐसे 'सबद' अथवा उनकी पंक्तियां का समावेश हो गया है जिन्हें हम अन्यत्र दूसरे कवियों की भी रचनाओं में संगृहीत पा सकते हैं। इसके संपादक ने इस बात की ओर भी संकेत कर दिए हैं तथा कम से कम नाथों की कतिपय बानियों के साथ, वैसे स्थलों की तुलना भी की है।

इस पुस्तक के सप्तम अध्याय में 'विष्णोई सम्प्रदाय' का शीर्षक देकर उसका विवरण दिया गया है। इसके अंतर्गत जाम्भोजी के विशिष्ट व्यक्तित्व, उनकी सबदवाणी, उसके छन्द विधान, आदि के विषय में चर्चा की गई है, तथा 'साखी' एवं 'हरजस' में पाये जाने वाले अंतर का उल्लेख करते हुए ऐसी अन्य जाम्भोजी की (जाम्भाणी) रचनाओं के विषय में भी कुछ विचार प्रकट किये गये हैं जिनकी ओर समुचित ध्यान दिया जा सकता है। इस अध्याय के पाँचवें प्रकरण अर्थात् 'सम्प्रदाय का स्वरूप' नामक उप शीर्षक से आगे जाम्भोजी द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय की विस्तृत चर्चा का आरम्भ किया गया है और इसमें उसके क्रमिक विकास एवं वर्तमान रूप का एक दिग्दर्शन भी करा दिया गया है। इसमें उसके विभिन्न नाम और उसके 'विष्णोई' या 'बिश्नोई' नाम के 'मूल कारण' पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है तथा इसके अतिरिक्त, यहां पर उन विशिष्ट कार्यों की ओर भी हमारा

स्थान प्राप्त कर लिया गया है जिसके लिए वील्होजी एवं केसोजी जैसे प्रमुख विष्णोई कवियों को बराबर श्रेय दिया जाता आया है। इसी प्रकार इस प्रसंग में ... सम्प्रदाय की मान्यताएँ, उसके पवित्र स्थान, उसके मन्दिर, उसके मेले और उसमें स्वीकृत २६ नियमों आदि का भी परिचय दिया गया है तथा इसके प्रचार में उसका योग ... उसके प्रभाव को यथासम्भव भी स्पष्ट किया गया है। इस प्रसंग में ... विवरण पर्याप्त रोचक जान पड़ते हैं और उनके आधार पर ऐसा अनुमान भी किया जा सकता है कि जाम्भोजी तथा उनके उक्त सम्प्रदाय का महत्त्व भी कुछ कम स्पष्ट न होगा।

'विष्णोई साहित्य' का योगदान तो इस ग्रन्थ में और भी अधिक उल्लेखनीय ठहराया जा सकता है जिसके विषय में, इस पुस्तक भाग में दो प्रमुख अध्यायों अर्थात् षष्ठम एवं सप्तम के भीतर, कुछ विस्तृत वर्णन किया गया है। षष्ठम अध्याय में १६ विष्णोई साहित्यकारों तथा उनकी रचनाओं का परिचय और विवेचन किया गया है जिनमें से कुछ के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट संकेत न मिलने के कारण, उन्हें 'अज्ञात' कहा गया है। इन उक्त कवियों एवं लेखकों में से कई लोग ऐसे हैं जिन्होंने विस्तृत साहित्य की रचना की है तथा जिनके विषय में कहा जा सकता है कि ये कतिपय प्रसिद्ध साहित्यकारों में भी स्थान पाने योग्य रहे होंगे। उनके द्वारा रचे गए ग्रन्थों के विविध विषय, उनकी रचना शैली एवं काव्य रूपों के ऊपर एक साधारण सी दृष्टि डालने पर भी हमें इस बात का पता चलते देर नहीं लगती कि ऐसे क्षेत्र में उनमें से कुछ की योग्यता बहुत अच्छी रही होगी तथा वे कलाकार तक भी कहला सकते होंगे और इसके आधार पर, हमें इस बात की आवश्यकता का भी अनुभव होने लग जाता है कि उन्हें शीघ्र प्रकाश में लाना चाहिए। ऐसे लोगों में विल्होजी नाम (संवत १५०५ ९४), महोजी गोदारा (संवत् १५४० १६०१) वील्होजी (संवत १५८९ १६७३) केसोजी गोदारा (संवत१६३० १७३६) सुरजनदासजी पूनिया (संवत१६४० १७४८) तथा हरजी वणियाळ (संवत १७४५ १८३५) जैसे साहित्यकारों के नाम लिए जा सकते हैं जिन्होंने कुछ उल्लेखनीय रचनाओं का निर्माण किया है। इनके विषय में दिये गये परिचयों के द्वारा जान पड़ता है कि इनका कार्य अपनी ओर विशेष लोकप्रिय भी रहा होगा। यों तो यदि देखा जाय, तो कुछ अन्य ऐसे लोग भी मिल सकते हैं जिनकी कृतियों को अपने अपने ढंग से बहुत कुछ महत्त्व प्रदान किया जा सकता है तथा वे उपयोगी भी सिद्ध की जा सकती हैं।

इस सम्बन्ध में यहाँ पर यह भी ध्यान देने योग्य है कि पुस्तक के अष्टम अध्याय में दो चार ऐसे साहित्यकारों की भी चर्चा आ गयी पाई जाती है जिनके नाम-साम्य के आधार पर कुछ भ्रान्ति भी उत्पन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए इसके अन्तर्गत किसी वाजिदजी (संवत १५३० १६००) का परिचय आया है जिन्हें हम उन प्रसिद्ध दादूपंथी वाजिदजी से अभिन्न ठहराने लग सकते हैं जिनकी गणना संत दादूदयाल के १५२ शिष्यों में की गई मिलती है तथा इसी प्रकार यहां किसी रदास धत्तरवाळ (संवत् १५३० १६००) का भी वर्णन किया गया मिलता है जिन्हें प्रसिद्ध संत रदास मान लेने की प्रवृत्ति होती है। लेखक ने इन दोनों के विषय में लिखते समय, इन्हें उक्त नाम साम्य वालों से भिन्न बतला

देने का प्रयत्न किया है किन्तु जब तक इनकी सारी रचनाएँ प्रकाश में नहीं आ जातीं और ऐसे नामों वाले इनसे भिन्न कवियों की उपलब्ध रचनाओं के साथ, उनकी ठीक ठीक तुलना नहीं कर ली जाती तब तक अंतिम निर्णय नहीं हो सकता। अभी कुछ दिनों पूर्व जिस समय श्री मंगलदासजी स्वामी द्वारा सम्पादित 'श्री महाराज हरिदासजी की वाणी' का प्रकाशन हुआ था, और उसके उत्तर भाग में, परिचित कराये गये निरंजनी संत कवियों में से, पीपादास का भी उल्लेख किया गया था, उन दिनों इस प्रश्न के ऊपर एक विवाद भी खड़ा हो गया कि क्या यह कवि प्रसिद्ध संत पीपाजी से कहीं अभिन्न तो नहीं ठहराया जा सकता? तथा कभी कभी किसी एक रचना में ऐसे नाम के आ जाने के कारण, उसके विषय में यह समस्या उठायी जाने लगी कि वह, उनमें से किस की कही जा सकती है, जिसका समाधान कदाचित् अभी तक नहीं हो पाया है। अतएव, ऐसे नाम साम्य वाले कवियों के सम्बन्ध में कुछ निश्चय कर पाने के लिए, उनकी विशेषताओं का पता लगा लेना भी उचित होगा।

इस पुस्तक वाले अन्तिम अर्थात् नवम अध्याय के अन्तर्गत विश्णोई-साहित्य के महत्त्व उसकी देन तथा उसके मूल्यांकन का प्रयास किया गया है और, ऐसा करते समय सर्व प्रथम, राजस्थानी-साहित्य की उन विशिष्ट प्रवृत्तियों एवं रचना शैलियों के ऊपर विचार किया गया है, जो उस क्षेत्र में, जाम्भोजी के आविर्भाव काल के पहले से ही पायी जाती आ रही थीं और उन्हें यहां पर उनके विभिन्न नामों के अनुसार निर्दिष्ट भी किया गया है। इसके लेखक की अपनी मान्यता यह जान पड़ती है कि जिस प्रवृत्ति विशेष का पता हम जाम्भोजी की उपलब्ध रचनाओं में चलता है तथा जिस रचना शैली का उनके द्वारा प्रयोग में लाया जाना कहा जा सकता है, उनके आधार पर निर्मित किये गये साहित्य के विषय में हम किसी एक नवीन प्रकार की काव्य धारा की भी कल्पना कर सकते हैं। लेखक ने उसका 'सिद्ध काव्य धारा' जैसा नामकरण किया है तथा उसका अनुमान है कि इसके कारण राजस्थानी साहित्य के इतिहास में, एक नया मोड़ आ गया दीखता है और वह, सर्वप्रथम, जाम्भोजी की रचनाओं में ही स्पष्ट होता है। लेखक ने ऐसे नाम की सार्थकता प्रतिपादित करते हुए हमें बतलाया है कि इसका एक लक्षण वैसी किसी अभिव्यक्ति में मिल सकता है जो सिद्ध विचार के साथ सम्बन्धित हो और वह यहां अध्यात्म के क्षेत्र में पायी जाती है जो सर्वथा नवीन है। इसके सिवाय यहां पर इस बात की ओर भी हमारा ध्यान दिलाया गया है कि जाम्भोजी, उनके अनुयायी तथा स्वयं जसनाथजी भी उन दिनों सिद्ध कहे जाते रहे जिस कारण उनकी रचनाओं को भी 'सिद्ध काव्य' ही कहना चाहिए। इस प्रकार, जहां तक राजस्थानी साहित्य के इतिहास की चर्चा का सम्बन्ध है, उस दशा में, इस पर कोई आपत्ति नहीं की जा सकती।

परन्तु इस प्रकार की धारणा को उक्त सीमा के बाहर की भी दृष्टि से प्रश्रय देने लगने पर यह प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि 'क्या तब हम संत जाम्भोजी की वाणी को किसी ऐसी कोटि विशेष में रख सकते हैं जो संत कबीरादि की रचनाओं के विचार से कुछ सीमित, अथवा उक्त प्रकार से किंचित् विलक्षण सी भी कही जा सकती है? इसके अतिरिक्त, 'आचार विचार प्रधान संयमय जीवन' क्या संत कबीरादि के भी साहित्य की आधारभूमि

नहीं ठहराया जा सकता ?" यह एक अन्य भी ऐसा प्रश्न है जिसका समाधान होता साधारणतः उक्त प्रकार की धारणा के बल पर सम्भव नहीं प्रतीत होता तथा ऐसी दशा में 'संत' एवं 'सिद्ध' शब्दों के अर्थ की आपेक्षिक व्यापकता भी बाधा उपस्थित कर सकती है। वास्तव में इस प्रकार की धारणा बनाने की आवश्यकता हमें केवल तभी जान पड़ती है जब हम संत कबीरादि को किसी निर्गुणिया मात्र के नाम विशेष द्वारा अभिहित करने लग जाते हैं तथा इस प्रकार, हमें जाम्भोजी जैसे कतिपय संत जो प्रत्यक्षतः सगुणवादपरक बातें भी करते दीख पड़ते हैं, उनसे बहुत कुछ भिन्न से लगने लगते हैं। यदि हम ऐसा न करके संत काव्य की उस विशिष्ट धारा की ओर भी ध्यान दें जो कभी महाराष्ट्र की ओर ज्ञानेश्वरादि संतों के युग में प्रवाहित हो रही थी तथा जिसका प्रमुख स्वर किसी परात्पर परमात्म तत्त्व के साथ संलग्न रहने के कारण उसे केवल निर्गुण अथवा सगुण परक मात्र ही नहीं कहा जा सकता था, तो हमारी उक्त भ्रांति दूर हो जा सके। हमें तो ऐसा लगता है कि वस्तुतः उक्त प्रकार की प्रवृत्ति ही पीछे, उत्तरी भारत वाले संतों तक की रचनाओं के अंतर्गत भी लक्षित होती आई तथा संत कबीर की वाणी में उसके, निर्गुण पक्ष की ओर, अपेक्षाकृत कुछ अधिक उन्मुख प्रतीत होने के कारण उन्हें 'निर्गुणवादी' मात्र समझ लिया गया, जो कदाचित् उसके प्रति अन्याय भी कहा जा सकता है। ऐसी दशा में 'तथ्य' यह हो सकता है कि मूलतः एक ही संत काव्य में एक ओर जहाँ संत कबीर, संत दादू, संत गुरु नानक जैसे कई संत कवियों की रचनाओं का समावेश किया जाता है जिनमें निर्गुणवादी स्वर कुछ अधिक मुखरित प्रतीत होता है, वहाँ दूसरी ओर, उसमें संत जाम्भोजी, संत हरिदास निरंजनी, संत साधुराम एवं संत चरणदास जैसे अनेक संत कवियों वाली कृतियों को भी समान भाव के साथ, उचित स्थान दिया जाता है। इस दूसरे वर्ग वाले संत कवि भी उसी परम तत्त्व को ही लक्ष्य करके अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं, किंतु इनके यहाँ निर्गुण पक्ष अथवा सगुण पक्ष में से किसी ओर भी अपेक्षाकृत अधिक झुकाव नहीं जान पड़ता। इस बात की ओर समुचित ध्यान न दे सकने के ही कारण सम्भवतः स्व० डा० बड़थ्वाल को इस प्रकार अनुमान करना पड़ा था कि, यदि हरिदास निरंजनी की सभी रचनाओं का पूरा पता चल सके, तो हम इनके आधार पर नाथपंथियों तथा संतों के बीच की किसी एक ऐसी कड़ी विशेष का भी परिचय पा सकते हैं जिसमें निर्गुण एवं सगुण दोनों पक्षों को एक साथ स्थान दिया गया हो (Preface to the Nirgun School of Hindi poetry pp II & III)

जो हो, इतना स्पष्ट है कि 'जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य' नामक प्रस्तुत पुस्तक बड़े परिश्रम एवं मनोयोग के साथ लिखी गई है तथा इसे एक सर्वथा सुव्यवस्थित रूप दिया गया है। हिन्दी वाले संत साहित्य के गम्भीर अध्ययन की ओर यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है जो सराहनीय एवं अनुकरणीय है। मुझे आशा है कि संत साहित्य के सभी प्रेमियों द्वारा इसका यथेष्ट स्वागत किया जायगा तथा हमारे वाङ्मय के भण्डार में इसे एक चिरस्थायी स्थान प्रदान किया जायगा।

—परशुराम चतुर्वेदी

बलिया (उत्तर प्रदेश)
तारीख ३१ १२ ६९

मुखबन्ध

१

जाम्भोजी का जन्म संवत् १५०८ में पीपासर (नागौर राजस्थान) नामक गांव के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित राजपूत परिवार में हुआ था। इनके पिता लोहटजी ऊमट शाखा के पंवार तथा माता हाँसा (अपरनाम-केसर) छापर (बीकानेर राजस्थान) के मोहकमसिंह भाटी की बेटी थी। जाम्भोजी आजन्म ब्रह्मचारी रहे थे। संवत् १५४२ में इन्होंने पीपासर से चार कोस दूर स्थित सम्मराथळ नामक रेत के बहुत बड़े और ऊँचे टीले (धोरे) पर विश्नोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और संवत् १५९३ में वे यहीं पर वैकुण्ठवासी हुए थे। जाम्भोजी का भ्रमण व्यापक था किन्तु उनका विशेष कार्यक्षेत्र राजस्थान रहा था। ठेठ मरुभाषा में उन्होंने वाणी-कथन किया था। सम्प्रदाय में जम्भवाणी "सबदवाणी" नाम से प्रसिद्ध है तथा यह अत्यन्त पवित्र, स्वतः और अंतिम प्रमाण मानी जाती है। विश्नोई सम्प्रदाय उत्तरी भारत के संत सिद्ध सम्प्रदायों में पहला सम्प्रदाय है। विश्नोइयों ने साम्प्रदायिक मान्यताओं और वैचारिक परम्पराओं को एक जीवन पद्धति के रूप में स्वीकार किया है। अतः विश्नोई समाज का सांस्कृतिक धरातल कुछ भिन्न और विशिष्ट है। इस सम्प्रदाय में अनेक महान कवि हुए हैं, जिन्होंने अनेक प्रकार की उत्कृष्ट रचनाएँ साहित्य संसार को प्रदान की हैं। इन रचनाओं की विषयवस्तु का फलक व्यापक रहा है। स्वानुभूति की अभिव्यक्ति के अतिरिक्त, वक्तव्य वस्तु का चयन सम्प्रदाय, इतिहास, पुराण और लोक चार क्षेत्रों से विशेष रूप से किया गया है। बहुत सी रचनाएँ रूप, प्रवृत्ति और गुण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। उल्लेखनीय है कि साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट कोटि की सभी रचनाएँ साम्प्रदायिक और धार्मिक वातावरण एवं आग्रह से सर्वथा मुक्त हैं।

प्रायः सभी रचनाएँ मरुभाषा में हैं कुछ पिंगल और खड़ी बोली में भी हैं। कवियों ने समय विशेष में लोगों में प्रचलित मरुवाणी में भावाभिव्यक्ति की है। इसी प्रकार, मरुप्रदेश में प्रचलित पिंगल (ब्रजभाषा) और खड़ी बोली को अपनाया गया है।

२

हिन्दी और राजस्थानी भाषा, इनके साहित्यों, साहित्यिक प्रवृत्तियां वैचारिक परम्पराओं, काव्यरूपों तथा सम्प्रदाय, संस्कृति, समाज और इतिहास आदि क्षेत्रों में जाम्भोजी, विश्नोई सम्प्रदाय और उसके साहित्य की बहुत ही महत्त्वपूर्ण और महान्य देन है। स्वतन्त्र रूप में भी राजस्थानी और हिन्दी की प्रमुख काव्यधाराओं के समानान्तर प्रवहमान विश्नोई काव्यधारा और सम्प्रदाय की वैचारिक परम्परा का विशिष्ट स्थान है। राजस्थानी और हिन्दी काव्य तथा राजस्थान और अन्य क्षेत्रों के भी, बहुत से संत सम्प्रदायों की पूर्ववर्ती और परवर्ती अनेक प्रकार की परम्पराओं को सम्यक् रूप में समझने, उनके समुचित मूल्या-

यन करने एव बोलचाल की मरुभाषा के समय विशेष के ज्ञान और क्रम विकास के लिए, यह साहित्य और सम्प्रदाय, महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक साधन है। साहित्य, चिंतन और संस्कृति के क्षेत्र में इनसे अनेक नई दिशाओं का बोध और संकेत, लुप्त और टूटी हुई कड़ियों का संधान, कतिपय समस्याओं का समाधान और अद्यावधि अनुपलब्ध प्रमाण मिलते हैं। आख्यान काव्य, लोगों की बोली के शुद्धाशुद्ध सप्रमाण प्रयोग विषयक रचनाओं का प्रणयन आदि कतिपय क्षेत्रों में तो इस साहित्य की देन अनुपम है। आख्यान काव्य-परम्परा का सूत्रपात विष्णोई कवियों की रचनाओं से होता है। यहां देशी भाषा में नाटकों का बीज वपन आख्यान काव्यों की मनोभूमि में हुआ है। विष्णोई समाज गतिशील और प्राणवान समाज है। इस सम्प्रदाय, प्रवर्तक की वाणी और साहित्य सम्बन्धी विवेचन और प्रामाणिक जानकारी, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन के लिए परम उपयोगी है। सिद्ध संतों और उनकी वाणी परम्परा में विष्णोई साहित्य, जाम्भोजी और विष्णोई सिद्धों का गौरवपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत प्रबन्ध में यथास्थान उपर्युक्त सभी का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संकेत-उल्लेख किया गया है।

३

अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां, देन और वैशिष्ट्य होते हुए भी अभी तक जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और इसके साहित्य का स्थूल रूप से परिचय मात्र भी साहित्य संसार को नहीं है। और तो और, राजस्थानी भाषा और साहित्य पर कार्य करने वाले विद्वानों के लिए भी यह विषय अद्यावधि सर्वथा अपरिचित और ओझल ही रहा है। इसके कतिपय प्रधान कारण ये हैं—१-सम्बन्धित सामग्री का प्रकाश में न आना २-यत्किंचित प्रकाशित सामग्री का भी सामान्यत उपलब्ध न होना तथा उनमें अध्ययन-स्रोतों का उल्लेख न होने के कारण प्रामाणिकता पर सन्देह ३-पर्याप्त लगन और शोध का अभाव, ४-मूलभूत सामग्री के प्राप्ति स्रोतों विषयक अज्ञता तथा उसकी उपलब्धि में अनेकश कठिनाइयाँ ५-भाषा-दुरूहता ६-पूर्वग्रह और पिष्टपेषण प्रवृत्ति ७-चारण, जैन और लौकिक साहित्य की ओर विशेष ध्यान फलत इस ओर उपेक्षा भाव, ८-साहित्येतिहास विषयक खण्ड दृष्टिकोण, आदि।

४

विभिन्न गजेटियरों, जनगणना, भू-व्यवस्था और प्रशासन सम्बन्धी रिपोर्टों में ही सर्व प्रथम एक विशिष्ट धर्ममत और उसको मानने वाली जाति के रूप में विष्णोई समाज, सम्प्रदाय तथा उसके प्रवर्तक के नाते जाम्भोजी का परिचय दिया जाना आरम्भ हुआ था। स्पष्ट ही उनके मूल में सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण प्रधान था। इस परिचय के निद क्षेत्र और समय विशेष में विभिन्न लोगों में प्रचलित बातें और किंवदन्तियाँ इनके लेखकों का आधार रही थीं। राजस्थान के इतिहास विषयक ग्रन्थों में भी इन्हीं आधारों पर एतद्-विषयक नामोल्लेख मात्र किया गया। विष्णोई साहित्य का तो परिचय मात्र भी इनमें नहीं मिलता। साहित्य के विद्वानों ने भी इन्हीं आधारों को अपनाया। सम्प्रदाय के व्यक्तियों द्वारा किए गए यत्किंचित कार्यों में साम्प्रदायिक दृष्टिकोण का ही प्राधान्य रहा। यही नहीं,

जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय विषयक मोटी मोटी बातों में भी इनमें परस्पर मतभेद मिलता है। अपने अपने संस्कार, रुचि और सामयिक वातावरण के अनुसार इन लेखकों ने बातें कही हैं जिनमें भावना मुख्य है, तथ्य, प्रमाण और तर्क संगति सर्वथा गौण। यह सामग्री सामान्यतः सुलभ भी नहीं है। प्रमाण और तर्क संगत विचारणा का अभाव तो उपर्युक्त दोनों ही प्रकार के कार्यों में है। हिन्दी में केवल दो ही उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं जिनमें जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय सम्बन्धी उल्लेख मिलता है—(१) आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी कृत उत्तरी भारत की सन्त परम्परा तथा (२) प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक का राजस्थानी भाषा और साहित्य (संवत १५००-१६५०)। इनमें भी विष्णोई कवियों और उनकी रचनाओं का कोई उल्लेख नहीं है। पर्याप्त सामग्री के अभाव और अप्रामाणिक सामग्री के आधार से लिखे जाने के कारण, इनमें प्राप्त यत्किंचित उल्लेख भी संशोधन की अपेक्षा रखते हैं।

५

यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि इस सम्बन्ध में सभी श्रेणी के परवर्ती लेखकों ने, यहां तक कि सन्त साहित्य से किसी न किसी प्रकार सम्बन्धित शोध ग्रन्थ लेखकों ने भी अपने पूर्ववर्ती लेखकों के कथनों का अन्धानुकरण किया है। फलस्वरूप एतद्विषयक अनेक प्रकार की भूलों की उद्धरणी होती रही। इससे एक ओर जहां शोध ग्रन्थों की गरिमा को आघात पहुँचा है, वहां दूसरी ओर साहित्येतिहास के प्रवाह को समग्रता में न देख सकने की दृष्टि भी धूमिल हुई है। अब तक इनसे केवल इतनी ही जानकारी हो सकी है कि जाम्भोजी मरुप्रदेश में उत्पन्न हुए एक सन्त थे और उन्होंने संवत १५४२ में विष्णोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया था। दूसरे अध्याय के अन्तर्गत दिये गये विभिन्न सन्दर्भों और उनके सार से इस कथन की सच्चाई सिद्ध होगी।

६

अनेक प्रकार की मूलभूत हस्तलिखित सामग्री और प्रमाणों के आधार पर व्यवस्थित रूप में लिखित प्रस्तुत प्रबन्ध के द्वारा इस अभाव की पूर्ति हो रही है। इसमें न केवल जाम्भोजी, उनके दर्शन, अध्यात्म विषयक विचार और विष्णोई सम्प्रदाय का ही, प्रत्युत सात महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर जम्भवाणी का वैज्ञानिक सम्पादन और उसके विशाल साहित्य का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत प्रबन्ध में अध्ययन के चार विशिष्ट पहलू हैं—१-जाम्भोजी, २-जम्भवाणी, ३-विष्णोई सम्प्रदाय तथा ४-साहित्य। इन सबको समाविष्ट करने कारण, समग्रता में एतद्विषयक प्रामाणिक और वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना है, क्योंकि चारों ही पहलू अन्योन्याश्रित, परस्पर सम्बद्ध और अखण्ड इकाई के रूप में हैं। इस प्रकार, यह अपने ढंग का प्रथम तथा सर्वथा मौलिक कार्य है।

७

एतद्विषयक आधारभूत सामग्री केवल हस्तलिखित रूप में ही है और वह भी— १-सम्प्रदाय के संकोचशील विभिन्न पीठों (साथरियों और मंदिरों) और २-अनेक स्थानों के विष्णोई

व्यक्तियों के पास, अस्त-व्यस्त, अनेक इतर रचनाओं के बीच असम्बद्ध और विशृंखल रूप में प्राप्त हुई है। ये सबदियाँ भी मरुप्रदेश में स्थित अनेक छोटे छोटे गांवों में कुछ दूर, जन शून्य स्थानों में अवस्थित हैं जहां आवागमन की विशेष सुविधा नहीं है। दोनों प्रकार के स्रोतों और उनसे सम्बन्धित सामग्री का पता लगाना तथा किसी प्रकार प्राप्त कर अध्ययन करना बहुत कठिन कार्य है। यह कार्य पर्याप्त समय, श्रम, धन, साधन तथा सम्बन्धित व्यक्तियों से निकट परिचय और उनके विश्वास की अपेक्षा रखता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। इस हेतु राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश क्षेत्रों के अनेक गांवों की, जहां विष्णोइयों की विशेष आबादी है समय समय पर मुझे अनेक बार यात्राएँ करनी पड़ी हैं। मेरे जन्मजात विष्णोई न होने और सम्बन्धित हस्तलिखित सामग्री के प्रति उनके स्वामियों की विशिष्ट धर्म भावना निहित होने के कारण, उसे देखने और अध्ययन करने में अनेकशः कठिनाइयों और बाधाओं का सामना करना पड़ा है। फिर, अस्तव्यस्त और अनेक इतर रचनाओं में मिली होने के कारण, सम्बन्धित सामग्री को छाँटने, छँटी हुई को सम्यक रूप से जोड़ने और व्यवस्थित करने में भी बहुत समय लगा। एक स्रोत की समस्त सामग्री एक साथ तो कभी मिल ही नहीं सकी, इसके लिए सतत और अनेक बार प्रयास करने पड़े। फिर, यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह सम्पूर्ण उपलब्ध हो ही गई है। यही नहीं ज्यों ज्यों अध्ययन में प्रगति हुई, त्यों त्यों बहुत से हस्तलेखों की तो पुनर्परीक्षा भी करनी पड़ी। इसके उपरान्त ही उनका सम्यक् अध्ययन करना सम्भव हो सका।

८

भविष्य में इस विषय से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बन्धित किसी प्रकार के कार्य करने वाले शोधार्थी को एक आधारभूमि प्राप्त हो सके इस हेतु इस अध्ययन सामग्री का यथासम्भव व्यवस्थित, पूर्ण किन्तु संक्षिप्त परिचय दिया गया है (—द्रष्टव्य-अध्याय १, अध्ययन-सामग्री)। प्रस्तुत प्रबन्ध के लिए भी ऐसा करना आवश्यक था। यह सामग्री यदि प्रकाशित या अप्रकाशित किन्तु सामान्यतः सुलभ अथवा संस्था विशेष में व्यवस्थित रूप में सुरक्षित और सहज सुलभ होती तो इस अध्ययन में अनेक स्थलों पर उसका हवाला देकर ही काम चलाया जा सकता था। किन्तु इस अध्ययन-सामग्री के सम्बन्ध में ऐसी कोई सुविधा न होने से इसके सम्यक परिचय के लिए एक पृथक 'अध्याय' रखना पड़ा, जिसे परिशिष्ट की संज्ञा भी दी जा सकती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रस्तुत अध्ययन विषयक उल्लेख विवेचन तो दूर राजस्थानी साहित्य का मोटे रूप में भी परिचय अभी तक साहित्य संसार को नहीं दिया जा सका है। इस कारण, इस अध्ययन से सम्बन्धित अनेक विचार बिन्दुओं धारणाओं निर्णय निष्कर्षों और बातों के स्पष्टीकरण हेतु सभी स्थलों पर उल्लेख-विवेचन इस दृष्टि से किया गया है कि तद्विषयक सम्यक् और पूर्ण चित्र, समुचित पीठिका सहित सुधी पाठकों के समक्ष उपस्थित हो सके। विष्णोई काव्य विवेचन में उसके समुचित मूल्यांकन और प्रस्तुत की गई मान्यताओं के प्रमाणस्वरूप सम्बन्धित उद्धरण तथा अद्यावधि सर्वथा अज्ञात नवीन, रचयिता विशेष की संस्कार भिन्नता और प्रादेशिक रंग में रंगी होने

के कारण रचनाओं का सार देना भी आवश्यक था। प्रमाणस्वरूप महत्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियों, ताम्रपत्र, लिखत और पट्टे परवाना आदि के एक सौ बारह चित्र भी दिए जा रहे हैं। शोध की गरिमा, मर्यादा, प्रामाणिकता और विषय के साथ सम्यक् न्याय करने के लिए यह आवश्यक था। इन कारणों से प्रबन्ध आकार में बड़ा अवश्य लगता है किन्तु मेरी दृष्टि में इसमें अनावश्यक, परिहार्य और भरती की कोई सामग्री नहीं है और न ही कहीं ऐसी कोई चेष्टा की गई है। बड़ा होने के कारण यह दो भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

६

सुविधा के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध तीन खण्डों में विभाजित किया गया है जिनमें नौ अध्याय हैं। साथ ही उल्लिखित चित्रसूची सहित ग्यारह परिशिष्ट हैं। इनमें, दो खण्डों के प्रथम सात अध्याय तथा प्रथम परिशिष्ट के ११२ चित्र (जाम्भोजी का आदि में दिया गया चित्र इनके अतिरिक्त है) तो प्रथम भाग में और तीसरे खण्ड के शेष दो अध्याय, १० परिशिष्ट, सदर्भ ग्रन्थसूची और नामानुक्रमणिका दूसरे भाग में हैं। इनकी सूची इस प्रकार है —

पहला भाग खंड १ पृष्ठभूमि

अध्याय १–अध्ययन सामग्री

अध्याय २–जाम्भोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य विषयक किया गया अब तक का काय—

१–विष्णोई लेखकों द्वारा किया गया काय

२–इतर लेखकों द्वारा किया गया काय

अध्याय ३–तत्कालीन स्थिति –क– राजनीतिक स्थिति, ख– सामाजिक स्थिति ग–धार्मिक स्थिति

खंड २ प्रवतक, वाणी और सम्प्रदाय

अध्याय ४–जाम्भोजी का जीवनवृत्त

अध्याय ५–जाम्भोजी दशन और अध्यात्म

अध्याय ६–जम्भवाणी पाठ सम्पादन— क– भूमिका, ख– सम्पादित पाठ और पाठांतर (१२३ सबद)

अध्याय ७–विष्णोई सम्प्रदाय

परिशिष्ट १ चित्रसूची (कुल चित्र संख्या–११२)।

दूसरा भाग खंड ३ साहित्य

अध्याय ८– विष्णोई साहित्य (काल क्रमानुसार १२९ साहित्यकारों तथा उनकी रचनाओं का परिचय और विवेचन)

अध्याय ९– विष्णोई साहित्य महत्त्व देन और मूल्यांकन

परिशिष्ट २ से ११, कुल संख्या १०, सन्दर्भग्रन्थ-सूची तथा नामानुक्रमणिका।

१०

पहले अध्याय में आधारभूत हस्तलिखित सामग्री का परिचय दिया गया है। इसमें ३८३ हस्तलिखित प्रतियाँ, १८ परवाने, ३, विगत, १ ताम्रपत्र, १ रुक्का और ६ लिखत–कुल ४०८ संदर्भ सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त, जम्भवाणी के सम्पादन में प्रयुक्त ४ और प्रतियाँ तथा १ ताम्रपत्र (चित्र संख्या ८३) का परिचय यहाँ न देकर सम्बंधित स्थलों पर दिया गया है। उल्लिखित कारणों के अतिरिक्त प्रस्तुत विषय के संदर्भ में इस सामग्री को इस रूप में देने के ये कारण भी हैं —१–इनसे विभिन्न रचनाओं के मूल पाठ निर्धारण और सम्पादन में सहायता मिलती है। २–अनेक कवियों और रचनाओं के काल का पता चलता है— (क)– लिपिकाल से, (ख)– स्वयं कवि की लिखावट में होने से, (ग)–प्रति विशेष में रचना विशेष के लिपिबद्ध होने से। ३–मुख्यतः प्रस्तुत विषय से और गौणतः बहुत से इतर कवियों और रचनाओं की महत्त्वपूर्ण जानकारी के लिए। ४–इतिहास के अंधेरे और अर्द्ध अंधेरे क्षेत्रों पर प्रकाश के लिए। अध्येताओं के लिए इस सूची का महत्त्व स्वयं स्पष्ट है। साहित्य संसार को इस सामग्री का परिचय पहली बार इसी प्रबन्ध में मिल रहा है।

११

लगभग संवत् १९०० तक की हिन्दी और राजस्थानी (तथा अन्य वर्तमान देशी भाषाओं की भी) रचनाएँ, हस्तलेखों के रूप में ही हैं। अनेक गण्यमान्य विद्वानों ने विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों (ताडपत्रीय, भोजपत्रीय की गणना भी इसी में है) के आधार पर अनेक रचनाओं का संकलन-संपादन किया और उनका परिचय दिया है। नवीन, महत्त्वपूर्ण और प्राचीन प्रतियों की उपलब्धि से अनेक ज्ञात सम्पादित रचनाओं में परिष्कार संशोधन-सुधार किया गया है तथा साथ ही सर्वथा नवीन रचनाओं की प्राप्ति भी हुई है। इनसे निस्संदेह इतिहास के क्षेत्र का विस्तार हुआ है। किन्तु हस्तलेखों के अध्ययन में जरा सी असावधानी और प्रमाद से बहुत बड़ी हानि होने की संभावना भी रहती है। यह हानि और भी बड़ी होती है जब किसी प्रतिष्ठित विद्वान अथवा पूर्व निर्धारित योजनानुसार, संगठित रूप में या संस्था द्वारा हस्तलेखों के नाम पर, बिना उनका प्रमाण दिए ऐसा कार्य होता है। इसके तीन उदाहरण पर्याप्त होंगे।

पुरातन प्रबन्ध संग्रह[1] में मुनि जिनविजयजी ने चन्द के नाम से प्राप्त चार छप्पय दिए हैं, जिनमें से तीन नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित पृथ्वीराज रासो में मिलते हैं। इनके आधार पर मुनिजी रासो को अपभ्रंश की रचना मानते हुए, चन्द को महाराजा पृथ्वीराज चौहान का दरबारी कवि सिद्ध करने का प्रयास करते हैं[2]। रासो को हिन्दी के तथाकथित 'आदिकाल' की रचना मानने और चन्द को इस बात का कवि घोषित करने के मूल में कल्पित अन्य मनगढ़न्त कारणों के साथ मुनिजी द्वारा उद्धृत उल्लिखित छन्द और

१–प्रकाशक- सिंघी जैन ज्ञानपीठ, कलकत्ता, सन १९३६।
२–वही, पृष्ठ ९, १०

उनका वक्तव्य, विशेष रूप से रहे हैं। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने मुनिजी के ही उक्त आधार पर प्रकारान्तर से अपनी बात कुछ विस्तार से कही है[१]। इसी को डॉ० विपिनविहारी त्रिवेदी ने दोहराया है[२]। इस सम्बन्ध में ध्यातव्य है कि पुरातन प्रबन्ध संग्रह की कथा में पृथ्वीराज का देहान्त संवत् १२४६ में होना बताया गया है और ग्रन्थ के पृष्ठ ८७ पर यही तिथि छपी है, किन्तु जिस हस्तलेख (P संग्रह पत्र १२) के आधार पर जो अंश प्रकाशित हुआ है उसमें पृथ्वीराज का मृत्यु संवत् १४४६ लिखा है, यह 'प्रास्ताविक वक्तव्य' से पूर्व दिए हुए मूल प्रति के फोटो से स्पष्ट है। रचना और प्रति को इस प्रकार, २०० साल (१४४६-१२४६=२००) पुरानी बताने के प्रयास के मूल में क्या कारण रहे हैं, उनकी मीमांसा यहाँ उचित नहीं है। किन्तु इससे भलीभाँति सिद्ध होता है कि इससे 'हिन्दी' के 'आदिकाल', पृथ्वीराज रासो, रासो नामधारी अन्य रचनाओं आदि आदि को वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने और सम्यक्रूपेण समझने में हिन्दी के छात्रों, शोध-कर्ताओं तथा विद्वानों की मेधा और शक्ति का दुरुपयोग ही हुआ है। इस ओर इंगित भी किया गया है[३] तथा अब तो अनुसंधान शाला में विद्युत्चालित एपिडाइस्कोप (Epidiascope नामक यंत्र से देखकर निश्चय किया गया है कि उक्त पी० संज्ञक प्रति बहुत बाद की है और उसकी पुष्पिका का संवत जाली है[४]।

दूसरा उदाहरण बंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता से प्रकाशित मीरा स्मृति ग्रन्थ (प्रकाशन काल संवत २००६) में छपी मीरा पदावली का है। इसके सम्पादक स्वर्गीय प्रोफेसर ललिताप्रसाद सुकुल ने डाकोर और काशी की जिन प्रतियों के आधार पर पदावली के पाठ देने का उल्लेख किया है, उनका न तो उन्होंने कोई परिचय दिया है और न ही कोई प्रमाण। डॉ० मोतीलाल मेनारिया[५] तथा प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने काफी पहले— सुकुलजी के स्वस्थ जीवन काल में ही इन शिथिलताओं का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया था, जिनका कोई भी स्पष्टीकरण उन्होंने नहीं किया था। वस्तुतः उनकी सत्ता ही संदिग्ध है। आश्चर्य की बात है कि पदावली की अप्रामाणिकता सिद्ध हो जाने के बावजूद भी, उसको प्रमुख आधार बना कर, एकांगी दृष्टिकोण से मीरा पर शोध प्रबन्ध भी लिख डाला गया है[६], यही कारण है कि इसके लेखक के मीरा की भाषा विषयक तथा अन्य अनेक निष्कर्ष और मान्यताएँ भ्रामक एवं गलत हैं।

१-हिन्दी साहित्य का आदिकाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, सन १९५२
२-(क) चन्द वरदायी और उनका काव्य, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् १९५२।
(ख) रेवातट हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, सन-१९५३
३-डा० भोलाशंकर व्यास, प्राकृत पैंगलम्, भाग २, पृष्ठ ४६-४७, वाराणसी, सन् १९६२
४-द्रष्टव्य-मानस मयूख (त्रैमासिक शोधपत्रिका) वर्ष ३, प्रकाश ३, दिसम्बर, १९६६ (सम्पादकीय कार्यालय- दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-५) में डा० वटेकृष्ण का 'पुरातन प्रबन्ध संग्रह के पृथ्वीराज रासो विषयक विवरण की प्रामाणिकता' नामक निबन्ध।
५-राजस्थान का पिंगल साहित्य पृष्ठ ६४ हितैषी पुस्तक भण्डार, उदयपुर, सन १९५२
६-डॉ० प्रभात मीरांबाई, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई सन् १९६५

तीसरा उदाहरण नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस से प्रकाशित कबीर ग्रंथावली का है[1]। बताया गया है कि इसका मूल आधार संवत् १५६१ की लिखी हस्तलिखित प्रति है। प्रकाशित पुस्तक में उक्त प्रति के अंतिम पृष्ठ का फोटो दिया गया है। उसमें जो संवत् लिखा हुआ है वह भिन्न हस्तलिपि में है और बाद की लिखावट है। अतः यह प्रति उतनी पुरानी सिद्ध नहीं होती। यद्यपि आचार्य क्षितिमोहन सेन,[2] डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी,[3] डॉ० रामकुमार वर्मा,[4] डॉ० माताप्रसाद गुप्त[5] इस ओर संकेत भी कर चुके हैं तथापि बिना किन्हीं ठोस तर्कों के, उक्त प्रति और उसमें के पाठ को पुराना मानने का आग्रह किया जाता है। अध्ययन की वैज्ञानिक सरणियों में ऐसी बातें बाधक हैं। इसका एक मात्र निर्णय पाठ-सम्पादन के द्वारा ही किया जा सकता है। प्रति विशेष का लिपिकार,' भिन्न हाथ की लिखावट, उसमें का परम्परा विशेष का पाठ आदि तथ्यपरक बातें हैं जिनको भावुकता या किसी प्रकार के आग्रह से अन्यथा सिद्ध नहीं किया जा सकता।

सुधी पाठकों के अवलोकनार्थ इस कारण, मैंने विभिन्न महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियों, पट्टे परवानों आदि के अनेक चित्र दिए हैं। जो कथन या बात कही गई है, उसके प्रमाण स्वरूप उद्धरणों और उनके मूल स्रोतों का हवाला यथास्थान दिया गया है।

१२

प्रस्तुत अध्ययन की पूर्व पीठिका, महत्त्व दिग्दर्शन तथा एतद्विषयक अनेक प्रचलित भ्रान्त धारणाओं के निराकरण स्वरूप, इस विषय पर अब तक किए गए कार्य को बताना आवश्यक था। दूसरे अध्याय में इसका उल्लेख किया गया है। इससे स्पष्ट होगा कि विष्णोई साहित्य का तो नामोल्लेख ही अब तक नहीं हुआ है। जाम्भोजी और सम्प्रदाय सम्बन्धी अधिकांश सूचनाएँ भी गलत हैं।

मेरी समझ में प्रत्येक शोधकर्ता को यह बताना आवश्यक है कि जिस अध्ययन को वह प्रस्तुत कर रहा है उससे सम्बन्धित उससे पूर्व कितना और कैसा कार्य विभिन्न लेखकों द्वारा प्रस्तुत किया जा चुका है तथा उसका अध्ययन किस बिन्दु से आरंभ होता है। यह अध्याय इस बात को ध्यान में रखकर ही लिखा गया है।

१३

तीसरे अध्याय में जाम्भोजी के समय– विक्रम की सोलहवीं शताब्दी तक, मरुप्रदेश या 'वागड़' देश की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का परिचय दिया गया है। जाम्भोजी ने सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में युगान्तर और क्रांतिकारी काम किया था। उस समय राजनीति, समाज और धर्म एक प्रकार से अन्योन्याश्रित ही थे। जाम्भोजी

१–सम्पादक–डॉ० श्यामसुंदर दास, संवत् २००९
२–मिडिएवल मिस्टिसिज्म ऑफ इंडिया, पृष्ठ ८८, लंदन, सन् १९३५
३–कबीर पृष्ठ १९-२०, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, सन् १९४७
४–संत कबीर पृष्ठ ६-७, साहित्य भवन (प्राइवेट) लिमिटेड इलाहाबाद, सन् १९५७
५–कबीर-ग्रंथावली, पृष्ठ २६ ३०, प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा, सन् १९६९

के व्यक्तित्व और कृतित्व, सम्प्रदाय प्रवर्तन की पीठिका और स्वरूप, चिन्तन और विचारो के पूर्वापर सम्बन्धो को सम्यक्रूपेण जानने-समझने के लिए इनका निदर्शन कराना आवश्यक था। राजनीतिक स्थिति परिचय के लिए अनेक ग्रन्थों का सहारा लिया गया है। सामाजिक और धार्मिक स्थिति का परिचय गौणत अनेक इतर रचनाओ और विशेषत विष्णोई रचनाओ के सदर्भ से दिया गया है। विष्णोई रचनाओं को विशेष आधार बनाने के कुछ मुख्य कारण ये हैं — १—वे प्रामाणिक रूप मे उपलब्ध हैं। २—वे सम्पूर्ण समाज मे सम्पृक्त और तद्युगीन समष्टिगत मानव चेतना का पता देती हैं। ३—उनके रचयिता साधारण जना मे से—विशेषत खेतिहर वर्ग मे से थे और इस कारण उनमे लोकजीवन सहज रूप से मुखरित हुआ है। ४—अनेक रचयिता अन्य धर्म मतो को त्याग कर विष्णोई सम्प्रदाय के अनुयायी हुए थे, उनकी वाणी मे दोनो प्रकार के संस्कारो की झलक मिलती है, जो सामूहिक रूप से इन स्थितियो की जानकारी के लिए बहुत उपयोगी है। उल्लेखनीय है कि विष्णोई रचनाओ से मरुप्रदेश मे स्थित और प्रचलित नाथ-पथ सम्बन्धी तो बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है जो अन्यत्र उपलब्ध नही है। इनसे पता चलता है कि नाथ पथ सर्वथा लोक विमुख, सामान्य और सहज जीवन से दूर तथा लोगो मे कौतूहल और भय का प्रतीक बन गया था। जाम्भोजी और विष्णोई सिद्धो ने एक ओर लोक को उनके इस कुप्रभाव से मुक्त किया तथा दूसरी ओर नाथ पथ का शोधन और उसको लोकोन्मुख करने का प्रयास किया था।

१४

वर्तमान मे प्रचलित नाथो की अधिकाश वाणियाँ उन नाथो की रचना नही हैं जिनकी वे बताई जाती हैं। ऐसी सामग्री पर किया गया कार्य भी प्रामाणिकता के अभाव मे सर्वथा महत्वहीन होगा। यहा प्रसगवश, नाथो के नाम से प्रचलित विभिन्न हिन्दी वाणियो के सम्बन्ध मे, प्राप्त नवीन सामग्री के आधार पर, विचारार्थ एक बात कहना चाहता हूँ। ऐसी अधिकाश वाणियो का सकलन-सग्रह पृथ्वीनाथ (देहावसान समय-लगभग संवत १६००) के पश्चात्-विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी से आरम्भ हुआ लगता है। अन्य कई कारणों के अतिरिक्त, इसका एक मुख्य कारण अनेक सिद्ध सतों द्वारा हुई नाथो के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी जिसके फलस्वरूप, आधार भूमि के रूप मे देशभाषा मे नाथ वाणियो का सयोजन और आकलन किया गया। इस प्रतिक्रिया का प्रधान कारण नाथो का सहज जीवन से दूर लोकविमुख होना था। प्रबन्ध मे यथास्थान इसका सकेत-उल्लेख किया गया है। एक और रोचक उदाहरण इस सम्बन्ध मे दिया जा सकता है। १८ वी शताब्दी और उसके बाद मे लिपिबद्ध पृथ्वीनाथ की रचनाओ की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ[1] उपलब्ध हुई हैं। इनसे पृथ्वीनाथ की छोटी

---

१ द्रष्टव्य-अध्ययन और अन्वेषण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, सन् १९६६ में प्रस्तुत लेखक के 'पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएं', नामक निबन्ध मे इनका परिचय तथा प्रो० कृपाशंकरजी तिवारी, जयपुर के पास सुरक्षित, सवत १७१० मे लिपिबद्ध, एक हस्तलिखित प्रति, सख्या २०५।

बड़ी २६ रचनाओं का पता चलता है। सभी प्रतियों में रचना विशेष का जो पाठ प्राप्त पाठ मूल का माना जाना चाहिए। उनमें "युक्ति रहस्य लिख सकेत जोग ग्रन्थ" में पचास छन्द हैं। प्राप्त सभी प्रतियों में ग्रन्थ का पाठ और छन्द संख्या समान है। इनमें ४ छन्दों के अतिरिक्त, यह सारा का सारा ग्रन्थ उसी रूप में गोरखबानी[1] में 'ग्यान तिलक' नाम से गोरखनाथ की रचना मानकर छापा गया है (पृष्ठ २०७–२१८ पर)।

पृथ्वीनाथ की अन्य रचनाओं के अनेक छन्द भी गोरखबानी में गोरख के नाम से मिलते हैं। अन्य अनेक सिद्धों द्वारा रचित छन्द गोरख के नाम से इसमें प्रकाशित हैं ही, सातवें अध्याय में इनका उल्लेख किया गया है। यही कारण है कि अब गोरखनाथ के दर्शन और साधना विषयक ग्रन्थों में ऐसी सामग्री को आधार न बनाकर उनके नाम से प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थों का सहारा लिया जाने लगा है[2] जो उचित ही है।

धार्मिक स्थिति के अध्ययनोपरान्त यह पता लगता है कि मध्ययुग के चार प्रसिद्ध वैष्णवाचार्यों के प्रभाव से मरुप्रदेश प्रभावित नहीं हुआ था। दर्शन के क्षेत्र में यहाँ तो शंकराचार्य से भी पूर्व प्रचलित उपनिषदों और गीता की विचार धारा ही मान्य रही थी तथा सभी स्मार्त मतानुयायी थे। गलदश्रु भक्ति, स्वयं को अधम पतित और तुच्छ मानने की भावना यहाँ के सिद्ध-संतों और भक्तों की वाणी में नहीं मिलती। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में–"कबीरदास की वाणी वह लता है जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई थी"। "कबीर की भक्ति साधना का केन्द्र बिन्दु प्रेमलीला है[3]।" "यह प्रेम ज्ञान द्वारा गीत और श्रद्धा द्वारा अनुगमित था[4]।" इन तथा उल्लिखित बातों में जाम्भोजी और विश्नोई सिद्धों की वाणियों में कबीर आदि की वाणियों से मौलिक भेद है।

१५

चौथे अध्याय में प्रामाणिक हस्तलिखित सामग्री के आधार पर कालक्रमानुसार जाम्भोजी का जीवनवृत्त दिया गया है। अब तक राजस्थानी और हिन्दी साहित्य में जीवनियों को प्रस्तुत करने का कार्य बहुत कुछ एकांगी रहा है। हिन्दी साहित्य में प्रायः सभी सिद्ध संतों का जीवनवृत्त अनिर्णीत है। संतों में कबीर पर अपेक्षाकृत अधिक कार्य हुआ है। किन्तु उनके जन्म और स्वर्गवास काल तक का पता भी शोधकर्ता निश्चित रूप से नहीं लगा पाये हैं उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का आकलन तो दूर की बात है। कबीर और अन्य कुछ प्रसिद्ध संतों के जीवनवृत्त विषयक उस सामग्री की ओर ध्यान ही नहीं गया है जो राजस्थान में उपलब्ध है। राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में स्थित, विभिन्न धर्मावलम्बियों के मान्य

---

१ संपादक—डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, संवत २००३
२ अक्षयकुमार बनर्जी फिलॉसफी ऑफ गोरखनाथ, महन्त दिग्विजयनाथ ट्रस्ट, गोरखपुर
३ कबीर, पृष्ठ १५२ १८७, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, सन १६४७
४ हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृष्ठ १०५, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई, सन १६५१

और पवित्र स्थानों में प्राप्त, अनेक हस्तलिखित प्रतियों में अनेक उल्लेख और याददाश्त के लिए रखे पत्रा, बहियों आदि में लिखित अनेक संतों के जीवन विषयक महत्त्वपूर्ण बातें और उनके संकेतों के उल्लेख मिलते हैं। इसी प्रकार, राजस्थानी की अनेक रचनाओं में भी प्रसंगानुसार अनेक संकेत-उल्लेख मिलते हैं, जो इस दिशा में सहायक हो सकते हैं। इन शनैः शनैः नष्ट होती जा रही इस सामग्री की ओर हमारा ध्यान प्रेरित होना चाहिए। रचयिता विशेष के जीवनवृत्त और काल निर्धारण के बिना साहित्येतिहास-लेखन का कार्य सुकर नहीं हो सकता। कवि का जीवनवृत्त, उसकी क्षेत्रीय सामाजिक पृष्ठभूमि, उसकी कृतियों का विकास क्रम, उसकी चेतना, चिन्तन, विचार और दृष्टिकोण का सामूहिक रूप से प्रामाणिक आकलन-संचयन हमारे शोधकार्य और साहित्येतिहास की नींव है। जाम्भोजी के इस जीवनवृत्त में मैंने यथासंभव इनका ध्यान रक्खा है।

यहाँ मैंने सन्देहास्पद, मुखश्रुति से प्राप्त और अपेक्षाकृत आधुनिक और एकांगी सामग्री में प्राप्त जाम्भोजी विषयक कथनों का कोई उल्लेख नहीं किया है। उदाहरण के लिए, जैसलमेर और फलौदी क्षेत्र में जाम्भोजी और प्रसिद्ध पाँच पीरों में से एक-रामदेवजी तँवर के मिलन, दोनों के संवाद और एक दूसरे के प्रति किये गये कार्यों का प्रवाद प्रचलित है। बिश्नोई सिद्धों में कवि सुरजनजी (कवि संख्या ६६) ने अपनी दो रचनाओं-कथा औतार की[1] और कथा परसिध[2] में तथा परमानन्दजी वणियाळ (कवि संख्या ८८) ने एक साखी[3] में, बादशाह बाबर और जाम्भोजी के मिलने का उल्लेख किया है। जसनाथी साहित्य में भी इसी प्रकार जाम्भोजी और जसनाथजी की भेंट का उल्लेख मिलता है। किन्तु उल्लिखित कारणों से इन कथनों की प्रामाणिकता संदिग्ध है, अतः इस जीवनवृत्त में इन पर विचार नहीं किया गया है।

१६

पाँचवें अध्याय में स्व-सम्पादित जम्भवाणी (सबदवाणी) के आधार पर जाम्भोजी के दर्शन और अध्यात्म विषयक विचारों को स्पष्ट किया गया है। जाम्भोजी न केवल एक सम्प्रदाय प्रवर्तक ही थे, प्रत्युत वे मरुभाषा में अपने विचार व्यक्त करने वाले दार्शनिक भी थे। सबदवाणी में उनके एतद्विषयक विचार असम्बद्ध और विशृंखल रूप में हैं इन सबको सुनियोजित करके ही कोई विचार शृंखला मिलाई जा सकती है। इस अध्याय में इनसे सम्बन्धित सभी विचार बिन्दुओं का सम्यक्‌रूपेण स्पष्टीकरण करने का प्रयास किया गया है। जाम्भोजी के विचारों का बिश्नोई कवियों और तत्कालीन समाज पर गहरा और

---

१ जदि आए बाबर पतिसाह। रतो होय मिल्यो तिण्य राह।
सेप सदो करणाटक माहि। परचा दे वकसाई गाय ॥ १९० ॥
२ जैतला पीर समार जाग लाप लेया मही पाय लाग।
भजियो काढ बाबर भाई, आवियो वय फुर अयाई ॥ ८७ ॥
३ जैसाण रावळ जतसी, अजमेर करमसी पुवार।
महमदखा हारणखाँ सेष सदो, इसकदर बाबर पतिसाह ॥ ३ ॥

-धारक प्रभाव पड़ा था। तत्कालीन एतद्‌विषयक विचारों को पूर्वापर सम्बन्ध से जानने के लिये भी इस अध्याय का महत्त्व है। इस सम्बन्ध में मेरा नम्र निवेदन है कि संस्कृत के पुराने आचार्यों के दार्शनिक, आध्यात्मिक मतों का पिष्टपेषण कर, उनके आलोक में ही मध्ययुगीन सिद्ध संतों और भक्तों को समझने का प्रयास न किया जाय, प्रत्युत उनकी स्वयं की दार्शनिक, आध्यात्मिक विचारधारा का स्वतन्त्र तथा तुलनात्मक रूप से अध्ययन भी किया जाय। यह समझना गलत है कि संस्कृत ग्रन्थों में निबद्ध दार्शनिक विचारधारा या धाराओं से किसी न किसी प्रकार के सीधे प्रभाव से मध्ययुगीन सिद्धों, संतों और भक्तों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की थी। उन्होंने तो समय और क्षेत्र विशेष के विशिष्ट संदर्भ में अपनी बातें कही थी। प्राप्त अनुभवों, अनेक क्षेत्रीय और युगीन परम्पराओं तथा तत्कालीन सामाजिक परिपार्श्व में वे स्वतन्त्रचेता और दार्शनिक भी थे। हमारे अनेक सिद्ध मतों के इस पहलू की गवेषणा अभी बाकी है।

१७

छठे अध्याय में चुनी हुई सात हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर जम्भवाणी का वैज्ञानिक सम्पादन किया गया है। इसकी भूमिका में सम्पादन सम्बन्धी समस्त ज्ञातव्य प्रतियों की बहिरंग और विस्तृत रूप से अंतरंग परीक्षा, उनकी प्रतिलिपि परम्परा, सम्पादन सिद्धान्त आदि देकर पश्चात्, सम्पादित पाठ पाठान्तर और महत्त्वपूर्ण रूपान्तर दिये गये हैं। कहा जा चुका है कि जाम्भोजी, उनकी वाणी और विचार अनेक प्रकार से विष्णोई कवियों के प्रेरणा स्रोत, आधार और प्रभावक तत्त्व रहे हैं। तत्कालीन समाज के प्रायः सभी वर्गों के लोग भी इनके प्रकाश में, किसी न किसी रूप में आलोकित हुए हैं। सबदवाणी इनका मूलाधार है। अद्यावधि सबदवाणी का प्रकाशन सम्प्रदाय के विद्वानों ने ही किया है सभी का पाठ रा०गो०पी० मा/और म०ब० प्रतियों की परम्परा का है। समय समय पर प्रकाशनकर्ता भी अपनी ओर से सुधार संशोधन करते रहे हैं। वर्ण विपर्यय, विराम चिह्न, शब्द रूप परिवर्तन तथा मुद्रण आदि की अनेक अशुद्धियाँ तो इनमें हैं ही। वाणी के प्रचलित पाठ का आधार मानने के कारण तो अध्येता की कठिनाइयाँ घटने की अपेक्षा बढ़ जाती हैं। इसका पता स्वीकृत पाठ के लिए गये विभिन्न पाठान्तरों से चल सकेगा। ऐसे कार्य में नवीन महत्त्वपूर्ण प्रति प्राप्त होने पर यत्किंचित सुधार-संशोधन की गुंजाइश रहती ही है, अतः अंतिम निर्णय दिया जाना कठिन है। सबदवाणी विषयक निष्ठावान सुप्रसिद्ध विष्णोई सिद्धों के कथनों के आलोक में भी उक्त सम्पादन को मैंने भली भाँति परखा है और मुझे प्रसन्नता है कि इस दृष्टि से भी स्वीकृत पाठ सगत लगता है।

१८

वर्तमान में वैज्ञानिक रूप से सम्पादित रचनाओं की महत्ता दिन पर दिन बढ़ रही है। कृति-विशेष का वैज्ञानिक पाठ-सम्पादन ही वह नींव है जिस पर साहित्यिक भाषा-शास्त्रीय, साहित्येतिहासिक तथा तुलनात्मक अध्ययन अनुशीलन का महल खड़ा होता है। सुधार और वैज्ञानिक रूप से सम्पादित पाठ को आधार न बनाने के कारण, उल्लिखित किसी

भी प्रकार का अध्ययन केवल आंशिक रूप से ही किसी सत्य या तथ्य का उद्घाटन करेगा। यह भी असम्भव नहीं कि कालान्तर में ऐसे अध्ययनों का महत्त्व केवल नाम गिनाने के लिए और ऐतिहासिक दृष्टि से ही रह जाय। राजस्थानी और हिन्दी की अनेक मध्ययुगीन रचनाओं के वर्तमान में प्रचलित पाठों के सम्बन्ध में ये बातें कही जा सकती हैं—( ) अधिकांश में उनकी एक परम्परा का पाठ है, (२) मिश्रित पाठ है, (३) जिस समय रचना-विशेष लिपिबद्ध की गई थी उस समय तक लोकरुचि के अनुसार उसमें पाठ मिश्रण हो गया था, (४) श्रुतश्रुति से प्राप्त पाठ ही लिपिबद्ध किया गया था। इन चारों प्रकार के दोषों से युक्त पाठ ही अधिकांश में आज चालू हैं। जहाँ तक उत्तरी भारत के सन्तों की वाणियों का सम्बन्ध है, कबीर, नानक और दरिया जैसे दो तीन सन्तों की वाणियों के अतिरिक्त किसी भी मुख्य या गौण सन्त की वाणी का वैज्ञानिक सम्पादन नहीं हुआ है। राजस्थानी और हिन्दी साहित्य के पिछले सैकड़ों वर्षों के अनेक काव्य ग्रन्थों के बारे में भी यही बात कही जा सकती है। जब सिद्ध सन्त विशेष की वाणी का पाठ ही संदिग्ध है तो उस पर किया गया कोई भी कार्य और दिए गए निर्णय निष्कर्ष इन पाठों के अनुपात से संदिग्ध ही रहेंगे। पृथ्वीराज रासो, कबीर, सूर (तीनों के नागरी प्रचारिणी सभा वाले संस्करण), मीराँ आदि पर जो शोध कार्य अद्यावधि किए गए हैं, उनका महत्त्व, बावजूद इसके कि इनके अध्येताओं ने, खूब सूझबूझ निष्ठा और लगन का परिचय दिया है, उनके विषय में आंशिक सत्य ही कहते हैं और कालान्तर में, यह निश्चित है कि उनका महत्त्व केवल ऐतिहासिक रह जायगा। अनेक स्रोतों से प्राप्त विभिन्न प्रकार की सामग्री के आधार पर जब इनका और ऐसे अनेक कवियों का सुसम्पादित वैज्ञानिक पाठ प्रस्तुत किया जायगा, तो इन अध्येताओं के निर्णय और निष्कर्षों की पुनर्परीक्षा आवश्यक होगी।

यह आश्चर्य है कि बहुत से कवियों की रचनाओं के वैज्ञानिक पद्धति पर सुसम्पादित संस्करणों के प्रकाश में आ जाने पर भी हमारे शोधकर्ता उनको आधार न बनाकर, बिना कोई मान्य और तर्कसंगत कारण दिए, उन्हीं संस्करणों के आधार पर शोधकार्य करते हैं, जिनमें उल्लिखित चार प्रकारों में से एक या अधिक या सभी दोष पाये जाते हैं। एम० ए० के पाठ्यक्रम में भी अधिकांशतः ऐसे ही ग्रन्थ निर्धारित हैं। संस्करण विशेष के पाठ की मान्यता या अमान्यता का उत्तर, केवल वैज्ञानिक पाठ सम्पादन ही हो सकता है, उसके लिए कोई अन्य कारण विशेष महत्त्व नहीं रखते। इसका किंचित पता डा० पारसनाथ तिवारी[1] और डा० माताप्रसाद गुप्त द्वारा सम्पादित कबीर ग्रन्थावलियों की भूमिकाओं से लग सकता है। डा० तिवारी का पाठ जहाँ कबीर वाणी का निर्णायक पाठ देने का प्रयास है, वहाँ डा० माताप्रसाद गुप्त का पाठ उन्हीं के शब्दों में-'उसकी एक परम्परा राजस्थानी परम्परा में सर्वाधिक प्राचीन है[2]। कबीर विषयक किसी भी प्रकार के अध्ययन में, एक परम्परा का होने से डा० माताप्रसाद गुप्त द्वारा प्रस्तुत किया गया पाठ मान्य नहीं हो सकता।

१-कबीर ग्रन्थावली, हिन्दी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय सन १९६१
२-कबीर ग्रन्थावली, पृष्ठ ३१, प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा, सन १९६६

प्रकारान्तर से यह उन्होंने स्वीकार भी किया है। फिर डा० श्यामसुन्दर दास द्वारा सम्पादित कबीर-ग्रन्थावली का पाठ, जो एक परम्परा का ही नहीं अनेक प्रकार के मिश्रणों से भी युक्त है, ऐसे किसी अध्ययन का आधार बन ही कैसे सकता है? ढोला मारू के अनेक दोहों का इसमें पाया जाना उक्त मिश्रण का बहुत बड़ा प्रमाण है। यह तो केवल एक उदाहरण है।

प्रस्तुत प्रसंग में एक और शिथिलता की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। वह है—शोध विषयक कठिनाइयों से पलायन वृत्ति, प्राप्त प्रकाशित पाठ विषयक शोधकर्ता की मनमानी और पूर्वग्रह तथा भावुकता। अनेक उदाहरणों में से एक यहां प्रस्तुत है। डा० गोविन्द त्रिगुणायत ने अपने पी-एच० डी० के शोध-ग्रन्थ 'कबीर की विचारधारा'[1] में पृष्ठ ५१ पर लिखा है—'जहां तक वेलवेडियर प्रेस के संग्रह ग्रन्थों का सम्बन्ध है, उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध कही जा सकती है', विद्वान् लेखक ने इसके तीन कारण भी बताये हैं। किन्तु इसी प्रेस के संग्रह ग्रन्थ उनके डी० लिट० के शोध प्रबन्ध—'हिन्दी की निर्गुण काव्य धारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि'[2] में एकाएक सर्वथा प्रामाणिक बन जाते हैं। उनके शब्दों में—"मेरी भी अपनी धारणा यही है कि संतों की बानियों का यदि कोई प्रामाणिक संस्करण उपलब्ध है तो वे वेलवेडियर प्रेस के ही हैं ... इसलिए हमने अपने आधार इन्हीं ग्रन्थों को बनाया है" (पृष्ठ ५६)। ऐसे विरोधी वक्तव्यों का कारण स्पष्ट है। कबीर पर कार्य करते समय उस समय में अपेक्षाकृत प्रामाणिक समझी जाने वाली कबीर-ग्रन्थावली मौजूद थी। किन्तु डी० लिट० विषयक कार्य में, इसके अतिरिक्त अन्य अनेक संतों की वाणियों की भी आवश्यकता थी। इनकी वाणियों के हस्तलेखों की खोज दुष्कर कार्य था, अतः जो वाणी जिस संत के नाम से छपी हुई सुलभ हो सकी, उसी को श्रद्धा और भावावेश में प्रामाणिक करने का प्रयास किया गया। इसका कारण केवल उनकी 'धारणा' ही है, किन्तु आज का शोधकर्ता इस 'धारणा' का कारण भी जानना चाहता है। निवेदन है कि इन बातों को गम्भीरता से समझने की आवश्यकता है। प्रस्तुत वाणी-सम्पादन के मूल में उसका निर्णायक पाठ देने का प्रयास इन कारणों से भी रहा है।

१९

सातवें अध्याय में विष्णोई सम्प्रदाय का बहुविध परिचय और स्वरूप विवेचन किया गया है। समग्र विष्णोई साहित्य के अध्ययनोपरान्त तथा प्रचलित परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए सभी मान्य विष्णोई स्थानों पर जाकर समझने के पश्चात् ही यह लिखा गया है। इस अध्याय का विशेष महत्व सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से है, इसके अतिरिक्त विष्णोई साहित्य को भली भाँति समझने में भी इससे पर्याप्त सहायता मिलती है।

विभिन्न सम्प्रदायों, उनके स्वरूपों और उनमें स्वीकृत विशिष्ट धर्म नियमों का तुलनात्मक अध्ययन हमारी सांस्कृतिक विरासत और चिन्ताधारा को स्पष्ट करने में सहायक हो सकते हैं।

१-प्रकाशक—साहित्य निकेतन, कानपुर, सम्वत् २०१४
२-प्रकाशक—साहित्य निकेतन, कानपुर, सन् १९६१

२०

आठवें अध्याय मे विष्णोई कवियो और साहित्य का विस्तृत परिचय तथा विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसके अन्तर्गत विक्रम की १५-१६ वी शताब्दी से लेकर २० वी शताब्दी तक के, अद्यावधि १२९ अज्ञात कवियो और उनकी छोटी-बडी, विभिन्न प्रकार, रूप, रस और विषयो की लगभग पौने तीन सौ रचनाओ का परिचय और विवेचन किया गया है। इनमे ऊदोजी नैण, अल्लूजी कविया, आलमजी, मेहोजी, वील्होजी, केसोदासजी गोदारा, सुरजनदासजी पूनिया, गोकलजी, सेवादास, परमानन्दजी बणियाळ, रामलला, ऊदोजी अडीग और साहबरामजी राहड तो अनेक कोणो से, स्वतन्त्र रूप से अध्ययन के विषय हैं।

इन ज्ञात कवियो और इनकी अज्ञात कृतियो का विवेचन और तत्संबधी अनेक नवीन तथ्यो का उद्घाटन यहा किया गया है। सभी रचयिताओ के परिचयोपरान्त प्रत्येक रचयिता और रचना का महत्त्व-दिग्दर्शन और मूल्याकन किया गया है। इन १२९ रचयिताओ और उनकी रचनाओ सम्बन्धी जो नवीन तथ्य और सामग्री प्रकाश मे आई है सामूहिक रूप से वह राजस्थानी साहित्य के इतिहास को नवीन रूपरेखा प्रदान करेगी। यह काव्य धारा साहित्येतिहास की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कडी है। साहित्य सम्बन्धी यह प्रस्तुत प्रबन्ध की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। रचयिताओ और उनकी रचनाओ की खोज, विवेचन, मूल्याकन, महत्त्व-दिग्दर्शन तथा प्रस्तुतीकरण मेरा मौलिक प्रयास है। इनमे पदम भगत कृत 'हरजी री ब्यावलो और मेहोजी कृत 'रामायण' के, महत्त्वपूर्ण होने के कारण, इनकी विभिन्न प्रतियो मे प्राप्त पाठो के आधार पर, मूल पाठ विषयक निष्कर्ष भी प्रस्तुत किए गए हैं, जो पाठ-सम्पादन के अध्येताओं के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे। इनमे, मेरी दृष्टि मे, डेल्हजी, पदम भगत, ऊदोजी नैण, अल्लूजी कविया, आलमजी, मेहोजी, वील्होजी, केसोदासजी गोदारा, सुरजनदासजी पूनिया, गोकलजी, सेवादास, परमानन्दजी बणियाळ, रामलला, ऊदोजी अडीग और साहबरामजी राहड तो अनेक कोणो से, स्वतन्त्र रूप से अध्ययन के विषय हैं। इस अध्याय की महत्ता इसी से स्पष्ट है। प्रत्येक कवि के जीवनवृत्त-निर्धारण मे निम्नलिखित स्रोतो से प्राप्त सामग्री को परीक्षणोपरान्त आधार बनाया गया है —

१—कवि विशेष के निवास स्थान मे परम्परा से प्रचलित मान्यता,

२—अनेक कवियो के वशजो और सम्बन्धियो से,

३—महलाणा (जोधपुर), दरीवा (भीलवाडा) के विष्णोई भाटो की बहियों और लिखतो से,

४—विभिन्न साम्प्रदायिक स्थानों और साथरियो के मेलो में एकत्र हुए अनेक क्षेत्रो के लोगो से,

५—विभिन्न विष्णोई क्षेत्र के लोगो से,

६—विष्णोई साधुओ, महन्तों, थापनों और गायणो से,

७—शिलालेखो और भित्तिलेखो से,

८—विभिन्न स्थानो से प्राप्त विष्णोई साहित्येतर हस्तलिखित प्रतियो से,

९—अध्याय १ के अन्तर्गत दी गई अध्ययन-सामग्री से,

१०—विभिन्न लिपिकारों द्वारा प्रति विशेष में लिपिबद्ध-रचना विशेष से या विवेचित कवि के सम्बन्ध में कवि-विशेष के कथन से।

२१

साहित्य के इतिहास में अभी तक महान कवियों पर विशेष ध्यान दिया गया है और गौण कवियों की उपेक्षा की गई है। वास्तव में गौण कवियों की परम्परा में और उनकी पीठिका पर ही महान कवियों का प्रादुर्भाव होता है, उनका महत्त्व भी इसी कारण है। अतः गौण कवि भी इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। साहित्येतिहास में उनकी उपेक्षा, एक परम्परा विशेष को खण्डित रूप में ही प्रस्तुत करती है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में, रामकाव्य-परम्परा में इसके एक मात्र महान कवि तुलसी का ही विवेचन विस्तृत मिलता है। परम्परा है किन्तु कवि प्रमुखतः एक ही है। यह स्थिति इन गौण कवियों की उपेक्षा करने के कारण ही अधिक है।

इस कारण मैंने महान कवियों के साथ गौण कवियों को भी लिया है। अनेक कवि तो उच्च कोटि के कलाकार हैं।

कवि या रचना विशेष से सम्बन्धित एवं क्षेत्र में प्रचलित तथ्यों, घटनाओं, सूचनाओं और विवरणों को मैंने तभी स्वीकार किया है जब ऐसे उल्लेख अनेक अन्य क्षेत्रों में प्रचलित उल्लेखों से तथ्यात्मक दृष्टि से समान पाए गए या मिले हैं। इस स्रोत से प्राप्त सूचनाओं और तथ्यों को मैंने प्रबन्ध में यथास्थान—"प्रसिद्ध है, बताया जाता है, कहा जाता है, प्रवाद प्रचलित है' इत्यादि शब्दावली से प्रकट किया है। प्रबन्ध में कई स्थलों पर अनुमान से भी बात कही गई है। इस अनुमान का प्रमुख आधार उपर्युक्त दसों स्रोतों के अतिरिक्त, स्वयं कवि का अन्तर्साक्ष्य भी रहा है। मेरा यह दावा नहीं है कि कवियों से सम्बन्धित काल निर्धारण में रद्दोबदल सम्भव नहीं है। उपर्युक्त स्रोतों के अतिरिक्त, तद्विषयक यदि कोई और प्रामाणिक प्राचीन और महत्त्वपूर्ण हस्तलेख प्राप्त हों तो उन पर पुनर्विचार भी सम्भव है।

आठवें अध्याय में जिन साहित्यकारों को बिश्नोई कवि माना गया है, उनको ऐसा मानने में मेरा कोई अनुराग, आग्रह, पूर्वग्रह या दुराग्रह नहीं है। अनेक स्रोतों से मुझे जो अनेकविध प्रमाण मिले हैं, उन पर समुचित विचार करने के पश्चात् ही मैंने उनको ऐसा माना है। अध्येताओं को यदि किसी या किन्हीं कवियों के बारे में और अधिक पुष्ट प्रमाण मिलें तो उनको ऐसा नहीं भी माना जा सकेगा।

२२

नवें अध्याय में राजस्थानी साहित्येतिहास के विशिष्ट सन्दर्भ में बिश्नोई साहित्य का महत्त्वांकन और उसका सामूहिक रूप से मूल्यांकन किया गया है। इस विषय में सुधी पाठकों से इस अध्याय के अवलोकन का भी विशेष अनुरोध करता हूँ। ध्यातव्य है कि पृथक रूप से तो प्रत्येक कवि और रचना का विवेचन और मूल्यांकन 'बिश्नोई साहित्य' नामक सातवें अध्याय के अन्तर्गत यथास्थान किया ही गया है। इस अध्याय में तो प्रस्तुत साहित्य

की समग्रता में महत्त्व-निर्धारण, उसकी देन और उसका मूल्यांकन किया गया है। ऐसा करने में मेरा दृष्टिकोण ऐतिहासिक रहा है। ऐतिहासिक पीठिका और पूर्व प्रवहमान काव्य परम्पराओं और प्रवृत्तियों के विशिष्ट सन्दर्भ में प्रत्येक कवि और रचना का विवेचन-मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। मेरा विश्वास है कि साहित्येतिहास-लेखन में मेरे इस प्रयास से कुछ न कुछ सहायता अवश्य मिलेगी। दोनों भागों में कुल ११ परिशिष्ट दिए गये हैं जो प्रस्तुत अध्ययन से किसी न किसी प्रकार से सम्बन्धित हैं।

२३

ऐतिहासिक दृष्टि से–(१) उपासक सम्प्रदायों और सिद्ध संतों की परम्परा में (२) राजस्थानी साहित्य के इतिहास में तथा (३) यदि राजस्थानी साहित्य को हिन्दी साहित्य का अंग माना जाय, तो हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रस्तुत अध्ययन अनेक दृष्टियों से उसके कतिपय अँधेरे क्षेत्रों को आलोकित करता है।

२४

जहाँ तक देश के उपासक सम्प्रदायों तथा सिद्ध संत-'परम्परा' का प्रश्न है स्पष्ट है कि इनके अध्ययन में अभिव्यक्ति का माध्यम-भाषा का महत्त्व गौण है। मुख्य बात सम्प्रदायों के स्वरूप तथा अनेक धारा-अन्तर्धाराओं और रूपवाली सिद्ध संत परम्परा की है। यही कारण है कि विद्वानों ने इनसे सम्बन्धित अध्ययनों में प्रान्त, क्षेत्र और भाषा-विशेष का प्रश्न गौण रखकर इनमें निहित अन्तश्चेतना, मूलतत्त्व स्वरूप-स्पष्टीकरण और उनकी सांस्कृतिक देनों का ध्यान रखा है।

प्रस्तुत अध्ययन का इस क्षेत्र में यत्किंचित योगदान है। कितना, क्या और कैसा है, इसका निर्णय तो विद्वान् करेंगे किन्तु इस सम्बन्ध में एक दो-बातों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ, और मूल प्रबन्ध में इनका थोड़ा-बहुत उल्लेख यथास्थान किया भी गया है। यह स्पष्ट है कि अभी तक अनेक छोटे मोटे उपासक सम्प्रदायों और संतों विषयक हमारी जानकारी बहुत ही कम है और अनेक सिद्ध-संतों के बारे में लोक प्रवादों, अनुश्रुतियों तथा उनकी वाणियों के नाम पर लोक में उनके नाम से प्रसिद्ध और प्रचलित वाणियों का ही सहारा लिया गया है। तथ्यों की अपेक्षा प्रवाद को और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की अपेक्षा भावना को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसका सोदाहरण स्पष्टीकरण पहले किया जा चुका है। इस अध्ययन के सन्दर्भ में पाठ सम्बन्धी एक अत्यन्त रोचक तथ्य का पता लगा है। अनेक सिद्ध-संतों की वाणी-संग्रह की प्रतियों में, उनके अन्त में लिपिकारों ने यह भी उल्लेख किया है कि लिपिबद्ध की जाने वाली वाणी का प्राप्ति-स्रोत और आधार क्या है? यह बताते समय, उन्होंने जहाँ विभिन्न प्रतियों से पाठ लेने का उल्लेख किया है वहीं यह भी कहा है कि उनमें की अधिकांश वाणियाँ उस समय के अनेक साधुओं के मुख से सुनकर उन्होंने लिपिबद्ध की हैं। इस प्रकार, ऐसी प्रतियों में– (१) लिखित और (२) मुखश्रुति से प्राप्त पाठ लिपिबद्ध किया गया मिलता है। अभी तक पाठ सम्पादन के विद्वान प्रति-विशेष को सम्पादन-कार्य में एक आधार बनाते समय मुखश्रुति से इस प्रकार प्राप्त

रूप का साथी ऐसा नहीं करते थे। नामदेव, कबीर, रैदास, पीपा, जगजीवन [illegible] और यहाँ तक कि दादूदयाल आदि प्रसिद्ध संतों की वाणियों के अध्ययन से [illegible] है कि [illegible] रूप से कह सकता है। इस तथ्य ऐसे और सिद्ध संतों की [illegible] के वैज्ञानिक [illegible] परम्परा को उपेक्षित किया है, मुख्यतः ये [illegible] का भी [illegible]। किसी भी निष्कर्ष पर पहुँच [illegible] संतों के अतिरिक्त [illegible] उनके सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की धारणा बना के [illegible] देते हैं [illegible] आवश्यक होता कि उनके लिए [illegible] का आधार क्या है ? इस तथ्य [illegible] संतों के सम्बन्ध में प्रचलित धारणाएँ यदि शोध के आधार हों, तो [illegible] की ओर देखकर [illegible] मापदंड से वाणी का सम्यक् करना चाहिए। जब साथ प्रसंग [illegible] की [illegible] कर जाता है तो न तो वे [illegible] का [illegible] है और न [illegible] कथन की प्रामाणिक [illegible] करता है। न यहाँ पर कबीर आदि [illegible] 'शोध' या विद्यार्थियों के लिए [illegible] गुत्थी [illegible] रहा है, क्योंकि उनका उद्देश्य शोध न होकर महत्त्व और स्पष्टीकरण [illegible] रूप से होता है।

दूसरी बात यह है कि सिद्ध संत परम्परा विशेषतः उत्तर भारत की, के अध्ययन के सम्बन्ध में सामान्यीकरण (generalisation) की प्रवृत्ति अभी तक किसी रूप में रही है। निश्चय ही इस प्रवृत्ति के मूल में पूर्वग्रह या आग्रह होता है। आधुनिक युग में सामूहिक रूप से सिद्ध संतों विषयक अध्ययन का सूत्रपात, में जहाँ तक मुझे ज्ञात है आचार्य क्षिति-मोहन सेन ने सर्व प्रथम मध्ययुगीन धर्म साधना (बंगला, जिसका अनुवाद अंग्रेजी में Medieval Mysticism नाम से हुआ) में अनेक संतों के अनेक मतों और उनकी साधना का संक्षेप में एक साथ ही सारपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया था। तदनन्तर डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल (हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय) ने संतों की परम्परा और पद्धति का ग्रहण है, इसी को अपनाया। आचार्य श्री परशुराम चतुर्वेदी ने लगभग इसी पद्धति पर लिखित अपने ग्रन्थ (उत्तरी भारत की संत परम्परा) में अपने ढंग से महत्त्व योग दिया, उत्तरी भारत के अनेक संतों और उनकी परम्परा के सम्बन्ध में यह ग्रन्थ प्रामाणिक रहा है। डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत का शोध प्रबन्ध- निर्गुण सम्प्रदाय की दार्शनिक पृष्ठभूमि इसी ढंग का ग्रन्थ है। ये प्रयास अपने आप में महत्त्वपूर्ण कहे जा सकते हैं और सामूहिक रूप से उत्तरी भारत के संतों की वाणियों में व्याप्त अनुभव, साधना और सुधार सांस्कृतिक स्वरूप को भी स्पष्ट करते हैं। किन्तु इन तथा कबीर विषयक ग्रन्थों के अध्ययनोपरान्त सामान्य पाठक की दो धारणाएँ विशेष रूप से बनती हैं —१-कि उत्तरी भारत की संत-परम्परा के आद्य संत कबीर हैं, २-कि परवर्ती सिद्ध संतों ने कबीर और उनकी साधना और विचार-धारा को परम्परा के प्रभाव में अपनी वाणी कही। इसका स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि यदि कबीर के व्यक्तित्व और कृतित्व को सम्यक्रूपेण समझ लिया जाय तो बाकी सिद्ध संतों के कार्यों, साधना, उद्देश्य और वाणी आदि विषयक अधिक समझने लायक कोई चीज नहीं है। कबीर विषयक विभिन्न अध्ययनों से जहाँ उनका अनेकविध

व्यक्तित्व कृतित्व, स्वरूप विश्लेषण और स्पष्टीकरण हुआ है वहां उपयुक्त धारणा को भी अनजाने ही बढ़ावा मिला है। मेरी समझ में सामान्यीकरण की यह प्रवृत्ति तथा कबीर विषयक उल्लिखित दोनों बातों में केवल आंशिक सच्चाई ही है। विशिष्ट धर्ममत, सम्प्रदाय उसके प्रवर्तक और उसकी वाणियों का पृथक् रूप से किया गया अध्ययन भी उतना ही उपादेय है। वह हमारी विश्रृंखल सांस्कृतिक विरासत, चिन्तन प्रवाह और अनेक कोणों से उसकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि और देन का कहीं अधिक संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत कर सकता है, उसमें व्यापकता के स्थान पर गहराई अधिक होती है।

जैसा कि अन्य विद्वानों ने भी कहा है, हिन्दी में उत्तरी भारत की संत परम्परा के आद्य संत नामदेव हैं, कबीर नहीं। यद्यपि नामदेव दक्षिण के थे तथापि उनकी हिन्दी वाणी, तथा परवर्ती काल में उत्तरी भारत में प्रचलित और प्रवहमान उसकी परम्परा का अध्ययन करने पर यह बात प्रमाणित होती है। सिद्ध-संतों की यह परम्परा उत्तरी भारत में दो रूपों में चली। परवर्ती काल में एक के प्रमुख संत कबीर हुए तथा दूसरी के मरु-अंचल में जाम्भोजी। उत्तरी भारत में मोटे रूप से, इस प्रकार सिद्ध-संतों की दो परम्पराएँ समानान्तर रूप से प्रायः कुछ आगे-पीछे चलती रहीं। इनमें जो समानताएँ मिलती हैं उनका प्रधान कारण क्षेत्र-विशेष में कबीर से पूर्व प्रचलित एतद्विषयक विचारधारा को अपने-अपने ढंग से अपनाना है, अथवा समानता है दोनों के अनुभवों की। विद्वानों से मैं इस बात पर अनेक संदर्भों में तटस्थता पूर्वक विचार करने का अनुरोध करता हूं।

२५

राजस्थानी साहित्येतिहास के सन्दर्भ में इस काव्यधारा का, जिसे मैं सिद्ध काव्यधारा कहना चाहता हूं (जसनाथी काव्य के साथ) महत्त्वपूर्ण योगदान है, स्वतन्त्र रूप में तो है ही। इस पूरे साहित्य के प्रकाश में आ जाने पर ही हम राजस्थानी साहित्य के इतिहास में उसका यथायोग्य मूल्यांकन और स्थान निर्धारण सम्यक्रूपेण कर सकेंगे। किन्तु एतद्विषयक प्रस्तुत किए गए परिचय और विवेचन से इसका महत्त्व आंकने में एक सुदृढ़ भूमिका इस प्रबन्ध में मिलती है। ग्रन्थ में यथास्थान मैंने ऐसी सभी सम्बन्धित बातों की ओर सप्रमाण ध्यान दिलाया है। अभी तक राजस्थानी के चारण, जैन और लौकिक साहित्य की चर्चा अपेक्षाकृत अधिक हुई है, अब सिद्ध संतों के साहित्य की भी विशेष रूप से होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त सिद्ध काव्य का महत्त्व इन पाँच दृष्टियों से भी है - १ युगयुगीन लोकभाषा के स्वरूप परिचय के लिए, २ लोक और जन-जीवन को समग्रता में समझने के लिए, ३ सामाजिक - धार्मिक चिन्ताधारा और सांस्कृतिक स्वरूप- निदर्शन के लिए ४ अनेक काव्य परम्पराओं के ज्ञान और उनके पूर्वापर सम्बन्ध - निर्धारण के लिए, ५ अनेक काव्य रूढ़ियों, लोक कथाओं रचनाओं और कवियों विषयक जानकारी के लिए।

२६

इस सम्बन्ध में यह प्रश्न उठना भी स्वाभाविक है कि ऐसे प्रयासों का 'हिन्दी' साहि-

---

१ द्रष्टव्य संत नामदेव की हिन्दी पदावली, पूना विश्वविद्यालय, सन १९६४

त्य के इतिहास में क्या, कहाँ और कितना महत्त्व है। यह प्रश्न दो बातों के उत्तर की अपेक्षा रखता है — १ हिन्दी और राजस्थानी का सम्बन्ध, २ राजस्थानी साहित्य की विशिष्ट परम्पराओं अर्थात् जातीय विशिष्टताओं की हिन्दी साहित्येतिहास में उपलब्धि और प्रवहमानता।

यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि 'हिन्दी' एकरूप भाषा नहीं है, यह कई बोलियों का समूह है। मध्यदेश के पश्चिमी हिन्दी और पूर्वी हिन्दी प्रभाग की आठ बोलियों के समुदाय को 'हिन्दी' कहा जाता है। बांगरू, खड़ी बोली, ब्रज, कन्नौजी तथा बुन्देली— पश्चिमी हिन्दी समुदाय की हैं और अवधी या कोसली, बघेली और छत्तीसगढ़ी - पूर्वी हिन्दी की[1]। अतः हिन्दी साहित्य का इतिहास उसकी इन बोलियों के साहित्य का इतिहास ही है। भाषाशास्त्रीय दृष्टि से जहाँ तक राजस्थानी या मरुभाषा और हिन्दी का सम्बन्ध है, यह सर्वमान्य है कि दोनों पृथक पृथक भाषाएँ हैं। अतः इनमें लिखित साहित्य भी एक दूसरे से पृथक माना जाना चाहिए। इधर कुछ समय से कतिपय 'उत्साही हिन्दीवादी' राजस्थानी भाषा की मान्यता के प्रश्न को लेकर, हिन्दी और राजस्थानी (मरुभाषा) विषयक भाषाशास्त्रियों के उक्त सर्वमान्य निर्णय को ताक पर रखकर राजनीति की भाषा और शैली में बात करने लगे हैं। वे मरुभाषा की विभिन्न बोलियों के नाम पर उसकी सत्ता से भी इन्कार करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि बोलियों का अस्तित्व तो मरुभाषा की सत्ता और व्यापकता का निस्सन्दिग्ध प्रमाण है। मध्ययुग और वर्तमान में भी साहित्य निर्माण के समय यहाँ के साहित्यकार एक केन्द्रीय भाषा की ओर उन्मुख होते थे और होते हैं। उनकी इस केन्द्राभिमुखी प्रवृत्ति से मरुभाषा में आश्चर्यजनक एकरूपता रही है। नागौर और मेड़ता तथा इनके चारों ओर के क्षेत्र की भाषा ही अधिकांशतः कवियों की केन्द्रीय भाषा रही है। राजस्थान के दूर दूर और विभिन्न क्षेत्रों के अनेक कवियों की भाषा में कोई अन्तर नहीं है उनकी रचनाओं को सभी क्षेत्रों के निवासी समझते आए और समझते हैं। इन प्रयासों के मूल में यही केन्द्राभिमुखी प्रवृत्ति है।

ऐसे 'हिन्दीवादी' राजस्थान को भी हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्र मानते हैं जो सर्वथा भ्रामक है। किस प्रान्त या प्रदेश में कौनसी भाषा बोली जाती है इसका निर्णायक तत्त्व क्या है ? इसका एकमात्र निर्णायक तत्त्व वहाँ के किसान, किसानों से सम्बन्धित लोग और इतर साधारण जन की भाषा है, क्योंकि सर्वाधिक संख्या इन्हीं लोगों की है। कुछ शहरों में रहने वाले कतिपय पढ़े-लिखे लोगों ने यदि किसी न किसी कारणवश 'हिन्दी' को अपना लिया है तो इस आधार पर हिन्दी यहाँ के निवासियों की मातृभाषा नहीं हो गई। इसी प्रकार राजनीतिक दृष्टि से व्यापक राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए और राष्ट्रभाषा के रूप में सम्मानार्थ राजस्थान ने यदि 'हिन्दी' (खड़ी बोली) को स्वीकार किया है, तो हिन्दी यहाँ के लोगों की मातृभाषा कैसे हो गई ? राजस्थानी या मरुभाषा को भाषा के रूप में यहाँ किन्हीं कारणों से सत्ता न मानने या एकबारगी अस्वीकार करने के मूल में ऐसे 'हिन्दी-

१—डा० सुकुमार सेन : भाषा का इतिवृत्त, साहित्य सभा वर्द्धमान

वादियों' की संकुचित, और स्वार्थी मनोवृत्ति प्रतीत होती है। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में पिछले आठ-दस सालों से हो रही एतद्विषयक यत्किंचित् चर्चा से इस बात की पुष्टि होती है। यहा मैं इस प्रश्न की गहराई में तो नहीं जाना चाहता किन्तु प्रणतिपूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि वर्तमान संदर्भों में राजस्थानी भाषा की मान्यता का प्रश्न यहां के निवासियों की रोजी-रोटी का प्रश्न है। फिर, यदि स्वतंत्रता का फल, हिन्दी को राष्ट्रभाषा मान लिए जाने के कारण, 'हिन्दी' व्यवहार करने वालों को विशेष रूप से मिला है, तो उसका किंचित् लाभ तो ढाई करोड लोगों को भी मिलना चाहिए, जिनकी मातृभाषा मरुभाषा है। केवल भाषा-शास्त्रीय दृष्टि से ही नहीं, प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली में औचित्य के आधार पर भी इतने बड़े भूभाग और उसके निवासियों की भाषा को भी उचित महत्व, गौरव और सम्मान प्रदान किया जाना चाहिए।

यहाँ राजस्थानी साहित्य की विशालता, विविधता, गुणवत्ता, प्राणवत्ता, महत्व आदि तथा पिछले लगभग एक हजार सालों से चली आ रही निर्विच्छिन्न परम्परा का उल्लेख करना अनावश्यक है। सभी विद्वान प्रकारान्तर से इस अतुल और अनुपम साहित्य-सम्पदा पर गर्व अनुभव करते हैं। राजस्थानी प्रत्येक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध और स्वयं आत्म-निर्भर है। वह खड़ी बोली की अबोध बेटी नहीं, प्रत्युत उसकी बड़ी बहन है, अब उसने स्वयं आत्म-निर्भर होने का निश्चय किया है। फलस्वरूप, यहां खड़ी बोली सम्बन्ध भाषा के रूप में ही रहे तो अच्छा है। ध्यान में रखना चाहिए कि 'हिन्दी' का हित और राजस्थानी का हित दो विरोधी बातें नहीं हैं। राजस्थानी का हित अन्ततोगत्वा व्यापक रूप से 'हिन्दी' का ही हित है। अब मैं उल्लिखित दूसरे प्रश्न को लेता हूँ। कतिपय विद्वान सारस्वत दृष्टि से तो राजस्थानी को हिन्दी से पृथक मानते हैं किन्तु राजस्थानी साहित्य को हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत लेने की बात कहते हैं। इस सम्बन्ध में मुझे दो बातें कहनी हैं - राजस्थानी साहित्य की कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो, हिन्दी' की किसी बोली के साहित्य में उस रूप में उपलब्ध नहीं है, इसके अनेक छन्द भी पृथक् हैं और शब्दावली भी। अर्थात जिन साहित्यिक परम्पराओं और काव्य-रूपों का प्रवाह राजस्थानी साहित्य में हुआ उसका प्रायः 'हिन्दी में नहीं'[1]। इस प्रकार, भाषा, साहित्य, औचित्य-सभी दृष्टियों से राजस्थानी का स्वतन्त्र भाषा के रूप में महत्व है।

फिर भी, यदि राजस्थानी साहित्य को हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत लेने की बात कही जाती है, तो मैं आज से लगभग दस वर्ष पूर्व इस सम्बन्ध में कहे गए अपने शब्दों को दोहराना ही उचित समझता हूँ - "हिन्दी बनाम राजस्थानी के सम्बन्ध में प्रश्न दो हैं- (१) क्या राजस्थानी साहित्य का मूल्यांकन हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत किया जाय अथवा (२) अन्य प्रमुख भारतीय आर्यभाषाओं की भांति स्वतंत्र रूप से। पूर्वग्रह को यदि छोड दें, तो सब प्रकार से दूसरी बात ही ठीक है। यदि पुरानी राजस्थानी या जूनी गुजराती के साहि-

१ द्रष्टव्य- लेखक का 'राजस्थानी साहित्य कतिपय विशेषताएँ' नामक निबन्ध, विश्वभारती पत्रिका, शान्ति निकेतन, जुलाई-सितम्बर, सन १९६७

स्य को आदि काल मे विवेचनीय समझा जाय, तो कोई कारण नहीं कि गद्य और पद्य की अनेक रचनाओं म उसके केवल बीसलदेव रास का ही उल्लेख किया जाय। जब सिद्धात रूप म एक बार यह मान लिया गया कि राजस्थानी साहित्य हिन्दी साहित्य के अन्तगत विवेचनीय है, तब हिन्दी साहित्य के इतिहास की दीघ परम्परा म उसका समुचित उल्लेख न करना दुराग्रह ही कहा जायगा"[1]।

राजस्थानी का मामला ठीक मैथिली की भाँति ही है। मैथिली एक स्वतन्त्र भाषा है किन्तु हिन्दी के तथाकथित आदिकाल की सत्ता बनाए रखने के लिए विद्वान इसी प्रकार, विद्यापति का तो उल्लेख-विवेचन करते हैं किन्तु परवर्ती काल म एक भी मैथिली कवि या रचयिता का नहीं। यह कहना अनावश्यक है कि लगभग ।ात गो गाना ग नी मा रही मैथिली की भी गौरवपूर्ण साहित्य परम्परा है[2]।

हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन अत्यन्त ही कठिन काय है। यहा मैं इस बात के विस्तार मे नही जाना चाहता कि क्या साहित्य का इतिहास लेखन अपने उचित अथ और सदभ मे सम्भव है भी या नही यहा तो अद्यपयन्त लिखे गए ऐसे ग्रन्थो को ध्यान म रखकर ही बात कह रहा हूँ। इनमे कतिपय ऐसी शिथिलताएँ दृष्टिगोचर होती है जिनके कारण न केवल हिन्दी साहित्य सम्बन्धी ही, प्रत्युत उल्लिखित अनेक ज्वलन्त समस्याओं का सम्यक समाधान और तदविषयक उठे हुए अनेक प्रश्नो का उत्तर नही मिल पाता। कुछ ये हैं— १ हिन्दी की परिभाषा न करना, २ सामान्यीकरण की प्रवत्ति, ३ महान् रचयिताओं का महत्त्व और गौण रचयिताओं की सवथा अपेक्षा ४ तटस्थ व मानविक दृष्टिकोण का अभाव तथा एकागी खण्डित और मनमाना दृष्टिकोण अपनाना, ५ इतिहास के अनेक अन्धेरे और अद्ध-अन्धेरे कोनो की ओर बिल्कुल ही ध्यान न देना, ६ अप्रामाणिक सामग्री को भी आधार बनाना, ७ विशिष्ट सदर्भों मे वाछित क्षेत्रीय परम्पराओ की उपेक्षा आदि।

२७

यह एक शोधप्रब ध है। शोध का लक्ष्य सत्या वषण और उसकी प्रामाणिक स्थापना है। इसकी प्रक्रिया मूलत वज्ञानिक है। ज्ञान क्षेत्र का सीमा विस्तार इसका प्राणतत्त्व है। इसके प्रस्तुत करने म मैंने शोध-तत्र की सीमा-मर्यादा और तत्त्वो का भरसक ध्यान रखा है। शोध प्रबन्ध के रूप मे इसके विषय म मेरा कुछ भी कहना अनुचित होगा इसका निणय शोधकर्ताओ पर है।

२८

इसम मने जो मत व्यक्त किए हैं वे सम्यक अध्ययनोपरा त ही किए गए हैं। जसा कि मैं निवेदन कर चुका हूँ, अपने निणय- निष्कर्षों, धारणाओ और विचारो के प्रति मेरा, किसी प्रकार का कोई आग्रह, पूवग्रह या दुराग्रह नहा है अन्यथा महत्त्वपूर्ण प्रमाण मिलने पर उनम परिवतन भी समव है। इस मुखब ध और प्रब ध म जिन विद्वानो की मा यताओ

१ राजस्थानी भाषा और साहित्य पष्ठ ३७२, कलकत्ता सन १९६०
२ द्रष्टव्य डॉ० जयकान्त मिश्र ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, वाल्यूम १, सन १९४९— तथा २, सन १९६६ तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद

और धारणाओं से मैंने असहमति प्रकट की है, उनके प्रति मेरी श्रद्धा और निष्ठा भावना है। इस सम्बन्ध में मैंने सिद्ध कवि परमानन्दजी वणियाळ (कवि संख्या ८८) के इस कथन को सदा ध्यान में रखा है —

आपणपौ न सराहियै, पर निंदिय न कोय।
मात सराहै पूत कूं, लोक न मानै सोय॥

फिर भी यदि कोई अन्यथा ध्वनि निकलती प्रतीत हो, तो उसको मेरी जडता, प्रमाद और अज्ञता समझ कर विद्वान क्षमा करें।

२९

इस अध्ययन का शुभारम्भ संयोगवश हुई एक छोटी सी घटना से है। ९ अगस्त, सन् १९६१ को राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में मेरी नियुक्ति हुई थी। तब मेरा अनुज चि० सोहनलाल और उसके मित्र श्री ओमप्रकाश गोदारा यहाँ एम० ए० (अर्थशास्त्र) में अध्ययन कर रहे थे। मैं अपने लिए मकान देखने हेतु श्री गोदारा के यहाँ गया। वहाँ सौभाग्य से मेरी भेंट श्री गोदारा के पिताजी श्री सोहनलालजी, अग्रज श्री अमरचन्दजी तथा सर्वश्री महीरामजी धारणिया, कृष्णचन्द्रजी, राजारामजी और रायसाहब कडवासरा से हुई एवं बात ही बात में बात जाम्भोजी, विश्नोई सम्प्रदाय और साहित्य पर चल पड़ी। इस विषय के अध्ययन का सर्वथा अभाव मेरी भाँति उनको भी बहुत खटक रहा था। इन सब सज्जनों ने मुझे इस अध्ययन की ओर प्रेरित ही नहीं किया, एतद्विषयक सभी प्रकार की सहायता करने का आश्वासन भी दिया। फलस्वरूप मैं इस ओर प्रवृत्त हुआ। पिछले नौ सालों से ये लोग अपना बहुमूल्य समय लगाकर अनेक प्रकार से मेरी सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहे हैं। सर्वश्री महीरामजी, सोहनलालजी और अमरचन्दजी ने स्वयं अनेक असुविधाओं का सामना कर मुझे सुविधाएँ प्रदान की हैं। इनके सतत सहयोग से ही यह कार्य इस रूप में सम्पन्न हो सका है। इसका बदला तो मैं किसी प्रकार चुका ही नहीं सकता था किन्तु सर्वश्री महीरामजी और सोहनलालजी को, अपने हृदय की कृतज्ञता ज्ञापन स्वरूप यह ग्रन्थ समर्पण कर, कुछ सन्तोष अवश्य अनुभव करना चाहता था। इन्होंने सदा मेरी भावनाओं का ध्यान रखा है किन्तु यह अनुरोध स्वीकार नहीं किया। ऐसी स्थिति में इनके प्रति यहाँ कुछ भी कहना कोई अर्थ नहीं रखता।

अध्ययन और तदसम्बन्धी भ्रमण में, इन नौ वर्षों में, अनेक व्यक्तियों से मुझे समय-समय पर अनेक प्रकार की सहायता मिली है, उन सबका नामोल्लेख करना यहाँ सम्भव नहीं है। सबसे अधिक मैं उन लोगों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे हस्तलिखित प्रतियाँ आदि दिखाकर अध्ययन का अवसर प्रदान किया। मैंने इस सन्दर्भ में अनेक लोगों से विचार विमर्श किया है। खेद है कि उनमें कई तो इस संसार में नहीं रहे, उनमें से मुकाम के सा गोपालदासजी लालासर के महन्त ननूरामजी, जागलू के महन्त केवलदासजी, पीपासर के साधु उम्मेदरामजी, दुनारावाली के धोकलरामजी का नाम मैं श्रद्धापूर्वक स्मरण करता हूँ। जम्भवाणी के पाठ सम्पादन में सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ० माताप्रसादजी गुप्त से मुझे महत्वपूर्ण

सुझाव मिले थे। दुःख की बात है कि वे स्वर्गवासी हो चुके हैं। मैं दिवंगत आत्मा को प्रणाम करता हूँ।

रामड़ावास के महन्त श्री रामनारायणजी ने इस अध्ययन विषयक अनेक तरह से मेरी सहायता की है। इनसे विचार-परामर्श कर मैं बहुत ही लाभान्वित हुआ हूँ। सर्वश्री महन्त रणछोड़दासजी, कोशलदासजी, जाम्भा लक्ष्मणरामजी, रणछोड़दासजी, रूड़कली, रामप्रकाशजी, चन्द्रप्रकाशजी, सम्भराथल, ब्रह्मानन्दजी, पीपा (महाराणा), वीरमरामजी तथा अन्य थापन बन्धु, मुकाम, हरिराम गायणा, रामड़ावास, भागीरथ गायणा, २६ वीं बी, (श्री गंगानगर) से भी मुझे सूचनाएँ मिली हैं।

श्री पूनमचन्दजी विष्णोई उपाध्यक्ष, राजस्थान विधान सभा, जयपुर तथा श्री रामनारायणजी, एडवोकेट, जोधपुर ने समय-समय पर इस काम में विशेष रुचि लेकर मेरा उत्साह वर्द्धन किया है।

श्रद्धेय डा० सुनीतिकुमार चटर्जी, डॉ० सुकुमार सेन, डा० सत्येन्द्र, डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित, डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय, डा० गोपीनाथ शर्मा, डा० ब्रह्मदत्त शर्मा जसलसर व श्री हरिदत्त गोविन्द व्यास से मुझे अनेक सुझाव मिले हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक सहयोगियों— विशेषत विज्ञान संकाय (महाराजा कालेज) के सभी प्राध्यापकों से तो विचार विमर्श करता ही रहा हूँ। सर्वश्री कृपाशंकरजी तिवारी, शम्भुसिंह मनोहर, डा० जगदीशचन्द्र जोशी, डॉ० रामकुमार गुप्त, डा० मूलचन्द सेठिया को तो इस सम्बन्ध में मैंने काफी कष्ट दिया है।

मैं इन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

अनेक विष्णोई बहनों ने मुझे लोकगीत लिखाए और इस सम्बन्ध में सहायता की है, इनमें से श्रीमती तुलसीदेवी गोदारा, परमेश्वरी देवी भादू, चूनी सारण और छोटी गोदारी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों के चित्र आदि लेने में सर्वश्री सुमेरजी माथुर, रूद्रपालजी और आर० बी० गौतम ने अपना बहुमूल्य समय लगाया है। टोंक के श्री मौलवी मोहम्मद इमरान साहब ने उर्दू फारसी के बहुत से ताम्रपत्र, पट्टे-परवाने आदि पढ़कर उनका हिन्दी रूपान्तर करने में सहायता दी है।

सर्वश्री हरिरामजी बोला, रामजसजी जेलदार, रामरखजी भादू, रामचन्द्रजी कालड, शंकररामजी धारणिया, गजलालजी डेलू, भालारामजी राव, हरीरामजी ढाका, बीरबलजी धारणिया, पृथ्वीराजजी कड़वासरा, पुर के सोहनलालजी गोदारा, रामचन्द्रजी ठेकेदार ने भी अपना सहयोग प्रदान किया है।

मैं इनको तथा उन सभी विष्णोई बन्धुओं और बहनों को जिनका नामोल्लेख यहाँ नहीं कर पा रहा हूँ उनकी सहायता के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मेरे शोध छात्रों-सर्वश्री भँवरसिंह सामौर, शंकरलाल गुप्त, गोपालसिंह राजावत और ओमप्रकाश ने इस कार्य हेतु अपना बहुमूल्य समय लगाया है। नामानुक्रमणिका सर्वश्री राजावत और ओमप्रकाश ने तयार की है। मैं इनके सुखी जीवन की कामना करता हूँ।

सर्वश्री रतनलालजी पचीसिया, नन्दलालजी राठी, मदनगोपालजी सारडा, हरिप्रसादजी माहेश्वरी, ऊधोदासजी मूँधड़ा, भाई मूलचन्दजी बाहेती ने कलकत्ता, बम्बई, अहमदाबाद, दिल्ली आदि स्थानों से मेरे लिए सन्दर्भ-ग्रन्थ तत्परता से सुलभ किए हैं। श्रीमती डॉ० सन्तोष मुकुल, एम०बी०बी०एस० और श्री डॉ० रामकुमार गोन्दारा, एम०बी०बी०एस० ने इस दीर्घ काल में मेरे और परिवार के सभी सदस्यों की शारीरिक व्याधियों के उपचार की ओर से मुझे सर्वथा निश्चिंत कर दिया था। सर्वश्री मुकुलजी, डा० के०सी० गुप्ता, ज्ञानप्रकाशजी पिलानिया और हनुमानप्रसादजी शर्मा सदा प्रोत्साहित करते रहे हैं। मेरी सुपुत्री चि० वीणा निरन्तर रूप से मेरे अनेक छोटे मोटे कार्य घर में करती रही है। इसी प्रकार, कलकत्ता में चि० राज राठी और चि० अशोक सारडा तथा दिल्ली में चि० जगमोहन पचीसिया ने मेरी खूब सेवा की है। अपने आत्मीयों और परिजनों को धन्यवाद समर्पण करने में मुझे सदा संकोच का अनुभव होता है, जो यहां भी है।

सन्त साहित्य के ममज्ञ आचार्य श्री परशुरामजी चतुर्वेदी ने बिना किसी व्यक्तिगत परिचय के, मेरे जरा से अनुरोध पर प्रस्तुत प्रबन्ध की प्रस्तावना लिखकर मुझे गौरवान्वित किया है। अत्यन्त कार्यव्यस्त रहते हुए भी उन्होंने थोड़े समय में ही अपनी सारगर्भित प्रस्तावना लिख भेजी है। इस सम्बन्ध में वे लिखते हैं (ता० ३१-१२-६६ के पत्र में) —"इसके प्रस्तावना मात्र होने के कारण, मैंने इसे भरसक परिचयात्मक रूप ही दिया है तथा प्रसंगवश, कहीं कहीं एकाध बार कुछ सुझाव तक भी दे डाले हैं। आपकी यह पुस्तक बहुत अच्छी है और मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपा करके केवल जाम्भोजी वाली रचनाओं का एक पृथक् संस्करण भी आवश्यक शब्दार्थ के साथ निकाल दें, जिससे उनका उपयोग अधिक से अधिक पाठकों द्वारा किया जा सके"।

मैं श्री चतुर्वेदीजी के बहुमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत करता हूँ। ऐसी रचनाओं में पाँच के सम्पादित संस्करण तयार हैं और शीघ्र ही पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किए जाएँगे, शेष पर कार्य चालू है। मैं श्री चतुर्वेदीजी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

अनेक मित्रों एवं शुभैषियों ने पुस्तक की अग्रिम प्रतियाँ खरीद और इस हेतु सहयोग प्रदान कर प्रकाशन कार्य को बहुत सुलभ बना दिया है। मैं उन सबको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

प्रबन्ध में कतिपय राजस्थानी शब्दों का प्रयोग जानबूझ कर ही किया गया है। उपयुक्त अर्थ और भाव बोध की दृष्टि से उनके पर्यायवाची शब्दों का खड़ी बोली में अभाव भी एक मुख्य कारण है।

यदि पाठकों ने इसको कुछ भी उपयोगी समझा, तो मैं अपने श्रम को सार्थक मानूँगा। इस सम्बन्ध में मैं विद्वानों के सुझावों का सदा स्वागत करूँगा। अन्त में जाम्भोजी के शब्दों में यही निवेदन करना चाहता हूँ —

तउवा बाग न हुसा टोळी, बुगला टोळी भी बागू ॥८७ ११-१२
तउवा साग न मागर वेली, कूकर बगरा भी सागू ॥८७ १५-१६

सी- ९८ ए, मोती मार्ग,
बापूनगर, जयपुर-४
शनिवार, ३१ जनवरी, १९७०

-हीरालाल माहेश्वरी

विषय-सूची

पहला भाग

कानपुर।-२९ जन्मेश्वरीय सवत ।

परिशिष्ट १-चित्र-सूची (कुल चित्र-सख्या-११२) पृष्ठ-१-४९

(उसम प्रति सख्या (अध्याय १, अध्ययन-सामग्री) सामग्र—१६, २३, ४८, ५२, ६५, ६६, ६८, ८१, १०८, १४२, १५९, १६०, १९३, २०१, २०४, २०७, २११, २२७ २६१, ३६२ ३६३, ३७५ से ३८५ और ४०६ के ९२ चित्र तथा शेष २०, ताम्रपत्र एव विभिन्न स्थानो के हैं)

इस सूची की दो तालिकाएँ प्रस्तुत की गई हैं—एक वह, जिसमे पृष्ठ-सख्या-क्रम से चित्र और प्रति सख्या तथा दूसरी वह, जिसम चित्र-सख्या-क्रम से पृष्ठ सख्या का विवरण दिया गया है।

तालिका-१ : पृष्ठ सख्या-क्रम :

पृष्ठ सख्या	चित्र सख्या	प्रति सख्या
३	१, ३१	२०१
४	२	२०१
५	३, २२	२०१, १६
६	४ ७	२०१
७	५, १३, १९	२०१, पी० प्रति, १६
८	६	२०१
९	८	२०१
१०	९, १०, ११, १२	जा०, रा० प्रतियाँ
११	१४, २३, ६७	पी० प्रति, ६८, ५२
१२	१५, १६, ७६	६५, ३८०
१३	१७, १८, २°	८१, २०१
१४	२०, ३७, ३८	१६ २३
१५	२१, २४	१६, ६८
१६	२५, २६, २७	६८, २०१
१७	२८	२०१
१८	३०	२०१
१९	३३, ७१	४८, १६०
२०	३२, ३६	४८
२१	३५ ३४	४८
२२	३९, ४०	२०१
२३	४१, ४२	२०१
२४	४३, ४४, ४५	१९३

पृष्ठ संख्या	चित्र संख्या	प्रति संख्या
२५	४६, ६०, ६१	१९३, १०८
२६	४७	२०१
२७	४८, ४९	२०१
२८	५०, ५२	२०७, २०१
२९	५१, ५३	२०७, ४०६
३०	५४, ५८	४०६, २२७
३१	५५, ५६	२०४, २११
३२	५७, ७४	२२७, ३८१
३३	५९, ६६	२२७, ५२
३४	६२, ६३, ६४	भक्तमाल की प्रति, २६१
३५	६५, ६८	१५९, १६०
३६	६९ ७० ९०	१६०, १४२
३७	७२, ७३	३८४, ३८५
३८	७५, ७६	३८३, ३७७
३९	७८, ८३, ८४, ८५	३७९, ताम्रपत्र, ३०२, ३६३
४०	८०	३८२
४१	८१ ७७	३७६, ३७८
४२	८२	३७५
४३	८६, ९२, ८७, ९३	२०१, ६६
४४	८८ ९१, ८९	१४२
४५	९८, १००, ९९, १०४, १०७ १११	लोहावट साथरी, विष्णोई मंदिर समेला, रुडकली, वरीगमाळी नाडो, विष्णोई मंदिर, बींट वरीसाल नगाडा
४६	१०१	जाम्भोळाव
४७	१०२ १०३, १०५ ९६ ९७	समाधि मंदिर मुकाम, पीपासर साथरी, पिड छियो वरो' रुडकली, जागळू साथरी, पिछोवडो'- जागळू ।
४८	१०८, १०६, ९५	विष्णोई मंदिर हिसार, लोदीपुर साथरी, समराथळ
४९	९४, ११०, १०९, ११२	पीपासर साथरी, विष्णोई मंदिर, टीबा (महराणा) विष्णोई मंदिर, रायसिंहनगर, सवथी महंत रामनारायणजी, महात्मा श्रीरामदासजी ।

तालिका–२ : चित्र सख्या–क्रम :

चित्र सख्या	पृष्ठ सख्या	चित्र सख्या	पृष्ठ सख्या
१	३	४६	२५
२	४	४७	२६
३	५	४८–४९	२७
४	६	५०	२८
५	७	५१	२९
६	८	५२	२८
७	६	५३	२९
८	९	५४	३०
९ से १२	१०	५५–५६	३१
१३	७	५७	३२
१४	११	५८	३०
१५–१६	१२	५९	३३
१७–१८	१३	६०–६१	२५
१९	७	६२ से ६४	३४
२०	१४	६५	३५
२१	१५	६६	३३
२२	५	६७	११
२३	११	६८	३५
२४	१५	६९–७०	३६
२५ से २७	१६	७१	१९
२८	१७	७२–७३	३७
२९	१३	७४	३२
३०	१८	७५–७६	३८
३१	३	७७	४१
३२	२०	७८	३९
३३	१९	७९	१२
३४–३५	२१	८०	४०
३६	२०	८१	४१
३७–३८	१४	८२	४२
३९–४०	२२	८३ से ८५	३९
४१–४२	२३	८६–८७	४३
४३ से ४५	२४	८८–८९	४४

विषय-सूची

दूसरा भाग

खण्ड ३ बिश्णोई साहित्य पृष्ठ ४७१-१०५१

अध्याय ८ बिश्णोई साहित्य पृष्ठ ४७१-९५८

(कालक्रमानुसार प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं का परिचय और विवेचन)

राजस्थानी साहित्य का काल विभाजन— तीन धाराएँ और शैलियाँ १ जैन शैली, २ चारण शैली ३ लौकिक शैली,-सिद्ध काव्यधारा- नामकरण। सिद्ध काव्यधारा महत्त्व, देन- (१) साहित्य के क्षेत्र मे-

(क) काव्य रूप और शैली की दृष्टि से १ साखी, २ हरजस, ३ भजन, ४ गीत (डिंगल गीत), ५ छंद, ६ विभिन्न छंद परक रचनाएँ, ७ स्तुति-स्तोत्र, आरती, ८ बारहमासा, ९ माहात्म्य, महिमा, १० ब्यावलो (विवाहलो), ११ मंगल, १२ बावनी, बारहखडी, छत्तीसी (ककको काव्य), १३ कथा काव्य, १४ चरित काव्य, १५ आख्यान, इसके उपादान, १६ नेतन, चितावणी (प्रतिबोध परक), १७ संवाद, १८ रासो १९ तिलक, २० करी (आचार-विचार), २१ लोक प्रचलित विशिष्ट गीत-झूमखो, रंगीलो, मधुकर, लूर, जखडी, ग्रावेलो, हिंडोलणो, धुन लावनी, २२ लघु कथा परक और मुक्तक रचनाएँ, २३ सार, २४ लक्खण (लक्षण), २५ अंग, २६ परची, २७ परसग (प्रसंग), २८ दृष्टिकूट, गूढार्थ, २९ परवाना, ३० संख्यापरक काव्य ३१ माळ (माला), ३२ परगास (प्रकाश), ३३ चौजुगी (विवाह पाटी), ३४ मगटो, ३५ रूपक और प्रतीक का य तथा ३६ गुण।

(ख) प्रवृत्ति और वर्ण्य विषय की दृष्टि से-(१) जाम्भाणी रचनाएँ- (क) जाम्भोजी विषयक, (ख) सम्प्रदाय विषयक,- (२) पौराणिक रचनाएँ- (३) धर्म, ज्ञान, नीति और लोकोत्थान विषयक रचनाएँ- (४) अध्यात्म परक रचनाएँ- (५) ऐतिहासिक- अर्द्ध-ऐतिहासिक रचनाएँ- गद्य म, पद्य मे- मरसिया या पीछोला- इसकी प्रमुख विशेषताएँ-अर्द्ध एतिहासिक- (६) लोक कथा और लोक जीवन विषयक रचनाएँ- (७) लोकभाषा विषयक

सतगुर मिलियो सतपथ बतायो भ्रांति चुकाई
अवर न बूझिबा कोई ॥ ४३ ५, ६ ।
घड़े ऊंध बोह वरसत मेहा, नीर थियो पणि ठालू ॥ ५५ ४ ।
दुनिया राच गान बाज ताह मा कणी न दाणी ॥ ६६ १३
दुनिया क रगि सोह कोई राच, दीन रच सो जाणी ॥ ६६ १४

—जम्भवाणी (सबदवाणी) से

खबर पडी रिण मा बिडया, जदि हो बूही सार।
लागी सोई जाणसी, का जाणे वाहणहार॥
गलै मा मोती पडया, मणा निकस्या माय।
जोति विना जगदीस की, जगत उलाड जाय॥

—परमानन्दजी वणियाळ

हाथ पाव कर कूबडी, नीचे मुख अरु नन।
हम कष्टा पोथी लिखी, तुम नीके रखियो सन॥

—साहबरामजी राहड

पहला भाग

खण्ड १ तथा २

खण्ड १

पृष्ठभूमि

अध्याय १

अध्ययन–सामग्री

यह सामग्री अद्यावधि सर्वथा अज्ञात और अप्रकाशित है तथा प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों, पट्टे–परवाना, ताम्रपत्र, 'लिखत' और 'बिगत' आदि के रूप में अनेक स्थानों से प्राप्त हुई है। नीचे इसकी तालिका दी जा रही है —

स्थान–नाम	कुल सामग्री संख्या	अध्ययन–सामग्री (प्रस्तुत अध्याय) की क्रम संख्या
१	२	३
१–ऋषिकेश	१	१३२
२–काट (मुरादाबाद)	१	१८६
३–कोलायत (बीकानेर)	१	७८
४–गुढा (जोधपुर)	२	१९१, ३४०
५–चक २९ बी० बी० (श्री गंगानगर)	७	२९४, ३९६, ३९७, ४०४, ४०५, ४०७, ४०८
६–जांगलू साथरी (बीकानेर)	४६	४९ से ५३, १२९, १४०, १७२ से १८०, १८३, १९०, २७०, २७२, २७३, २७४, २७७, २७८, २८१, २८६, २९२, २९३, २९९, ३१०, ३१४, ३२०, ३२५, ३२६, ३३१, ३३४, ३३५, ३३८, ३३९, ३५०, ३८४, ३८५, ३९१, ३९२, ३९३ तथा गो० प्रति (जम्भवाणी-सम्पादन में प्रयुक्त)
७–जाम्भा (आथणी और आगूणी जागा) (फलौदी)	५१	६९ से ७४, ७६, ७७, ११८, १३५, १६७, १७०, २१०, २३४ से २६५, २८२, ३०४, ३०५, ३२१, ३५७ तथा जा० प्रति (जम्भवाणी-सम्पादन में प्रयुक्त)
८–जैसला (फलौदी)	१	३४१
९–भूलनिया (नाढोडी, हिसार)	७	३५६, ३९८ से ४०३
१०–डोली (जोधपुर)	२	३२८, ४०६
११–ढाणी सासा (महाजनान) (फतहाबाद, हिसार)	१	३३३
१२–दरीबा (भीलवाड़ा)	१	३६६

१३–दुतारांवाली (फीरोजपुर)	५०	३८ से ४८, ६८, ८८ से ९२, ९४, ९५, १८१, १८२, १८४ से १८८, १९२, १९३, १९८ से २००, २०२, २११, २७९, २९६ से २९८, ३००, ३०१, ३०६, ३२४, ३६७ से ३७४, ३९०
१४–पीपासर साथरी (नागोर)	५५	१६ से १९, ५४ से ६४, ७९, ८२ से ८५, १२७, १३६ से १३८, १४७ से १५१, १५७, १६२, १६३, १९८, १९९, २८४, २८५, २८७, २८८, २९०, २९१, ३०७, ३०८, ३१२, ३१३, ३२३ ३३२, ३४७, ३४९, ३५०, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९ तथा टा० और पी० प्रतियाँ (जम्भवाणी सम्पादन में प्रयुक्त)
१५–पुर (भीलवाड़ा)	४	२१३, २१४, ३६४, ३६५
१६–पोलास (मड़ता)	१	३९५
१७–भीयासर (जोधपुर)	५	२९९, ३४२, ३४३, ३४५, ३४६
१८–मुकाम (बीकानेर)	१७	२६, ६५, ६७, ८१, ८६, १२५, १२६, १४३, ३७५ से ३८३
१९–गोड़ा (भीनमाल)	१	२०३
२०–रामड़ावास (जोधपुर)	१९	१२४, १६० २०१, २१५ से २२६, ३१५, ३१६ ३६२, ३६३
२१–[illegible] (हिसार)	२७	९६ से १०८, ११३, १३०, १३६, १५२, १५५ १५६ १७१, २७३, २७५, २८०, ३११, ३०३ ३४४, ३५१
२२–[illegible] (जोधपुर)	११	२२७ से २३३ ३०९, ३१८, ३१९, ३५९
२३–[illegible] (नागोर)	१	२०९
२४–[illegible] (जोधपुर)	६	२०४ से २०८ ३४८
–[illegible] (बीकानेर)	२०	७० से ७५ ८०, १०९, ११०, ११२, ११६ से १२ १३१ १४१ २७१, २८९, २९५, ३१७ ३५४
[illegible] (जोधपुर)	५९	१ से १०, २७ से ३३, ६६, १२८, १४२ से १४६ १५८, १५९, १६१, १६४ से १६६, १८४ से १९३ २१२, २६६ से २६८, २८३, ३०२, ३०३, ३०७, ३५२, ३५३, ३५५, ३६० ३६१

२७–सगरिया मडी (श्रीगगानगर)	६	७५, १५४, ३२१, ३३०, ३३६, ३६४
२८–मदलपुर (हिसार)	५	८७, ६३, १३३, १३४, ३२७

कुल योग—४१२। इनमे ४ प्रतियो का परिचय अध्याय ६ (जम्भ वाणी पाठ–सम्पादन) की 'भूमिका' म दिया गया है। शेष सामग्री (कुल सख्या–४०८) का परिचय आगे दिया जा रहा है—

१ कथा बाल चिरत, केसोदास कृत, छन्द सख्या–६१। पत्र सख्या–४, देशी कागज। आकार–९×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–आधा इच। पक्ति–प्रति पृष्ठ–१०–११। अक्षर–प्रतिपक्ति–३३–४०। लिपिकार–अज्ञात, अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि–सुवाच्य। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।
आदि–राग आशा ॥ श्री गणेशाय नम ॥ लिषते कथा बाल चिरत ॥
दोहा–॥ लोहट लोका न कहै। सुत धन कर सभाल।
मो सुत साईना सहु। परिखि चराव पाल ॥१॥
अन्त–दिधि दई परचो दियो बिसम बिसोवा बीस।
कहे केसो पेल पुली। जपल यल जगदीस ॥६१॥ कथा बाल चिरत सपूरण ॥

२ पत्र सख्या–३। देशी कागज। आकार–६×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–डेढ इच। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–६। अक्षर–प्रति पक्ति–३२। लिपिकार–अज्ञात, अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि–सुवाच्य। इसमे ये रचनाएँ हैं—(क) उमाहो, वील्होजी कृत। २१ दोहे। (ख) पतवो, आलमजी कृत, १० दोहे तथा (ग) हरजस, १, ऊदोजी नण कृत, ८ दोहे। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।
आदि–श्री विष्णु जी ॥ सत्य ऊ लिष्यते उमाहो
बाबो जाबू दीपे प्रगट्यो चौहूचकि कीयो उजास।
अप दीठो केवल कथ, जिह गुर की हम आस ॥१॥
अन्त नाव दीरावो देवजी जा ये ऊतरीय पारि।
ऊदोजी बोल बीनती आवागवणि निवारी ॥९१॥ श्री

३ पत्र सख्या–१०, देशी कागज। आकार–६×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इच। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१२। अक्षर–प्रति पक्ति–३२–३४। लिपिकार–अज्ञात, अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि–सुवाच्य। इसमे ये रचनाएँ हैं—(क) उदे अतली की कथा, केसोदास कृत, छन्द–७७। आदि से ५ वें पत्र तक। (इसम रचयिता का नाम भूल से सुरजनदास बताया गया है)। (ख) कथा सस जोपाणी की, केसोदास कृत, छ द सख्या–१०६। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।
आदि–श्री गणेशाय नम राग हसा ॥ दोहा ॥
श्री पति पहली सिवरीये आदि गरु आदेस।
सुभ गुरु सदा जिहि स्यवर सुर सेस ॥१॥

अन्त—जोपांणी सत तणी कथा सुणी चित लाय ।
केसा कहै ससार म मोप मुकति पद पाय ॥१०६॥
इति श्री सत जोपाणी की कथा सम्पूर्ण २ ॥

४ उमाहो, वील्होजी कृत । छ द सख्या—२२ । पत्र सख्या—२ । पतला देशी कागज । आकार—८ ५ × ४ इन्च । हाशिया दाए, बाए—आधा इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ—१० । अक्षर-प्रति पक्ति—२८ । लिपिकार—अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० म लगभग लिपिबद्ध । लिपि—स्पष्ट । प्राप्तिस्थान—लोहावट साथरी ।

आदि—श्री गणेशाय नम लिप । उमाहो
जबू दीपे परगट्यो थोरुधरि कीयो उजास
अपरछो केवल कथ निर् गुर की बलिहार १

अन्त—कांहीं र मन को धणी कांहीं र गुर पीर
वील्हे कहे विसनोइयो आपा माय विसन क सीर २२ इति उमाहो सपूर्ण ।

५. अवतार पारस जांभाजी का, वील्होजी कृत । छन्द सख्या—१४० । पत्र सख्या—६ । देशी कागज । आकार—६ × ४ इन्च । हाशिया—दाए, बाए—पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ—८—६ । अक्षर-प्रति पक्ति—३२—३३ । लिपिकार—अज्ञात । लिपि—स्पष्ट । अनुमानत सवत १८५० क लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान—लोहावट साथरी ।

आदि—श्री विसनजी सिपरू अवतार पारस जांभाजी का
दोहा—नयनि कर गुर आपन मऊ निरमल भाय ।
कर जोड़े सद्गुरु चरन सीस नवा नवाय ॥१॥

अन्त—धनि विहाड़ो रण धनि गुर परगट ससार ।
वील्ह कहै जो ओल्ख्यो । त उतरिस पार ॥१४०॥ कथा सपूर्ण समापत ।

६ परची, गोकलजी कृत । छन्द सख्या—२७ तथा अत म इनक २ कवित्त और हैं । पत्र सख्या—३ । देशी कागज । आकार—६ × ४ इन्च । हाशिया—दाए, बाए—आधा इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ—११ । अक्षर-प्रति पक्ति—३१—३२ । सवत् १८६६ म रामदासजी के शिष्य द्वारा लिपिबद्ध । लिपि—स्पष्ट । प्राप्तिस्थान—लोहावट साथरी ।

आदि—श्री विसनायनम अथ परची लिपत ।
सुपेस्यो स्वामी सोवन धार नमो निजनाथ जको निराकार ।
नरापति निरख कर मन राव विछाण्यो दृढ परस्या पाव ॥१॥

अन्त—जम जुरा जीव जोपू नहा कोई ताक न भिक अयर अरि ।
अमर आनुपम आत्मा राप जासी जित आप हरि ॥२॥ समत १८६६ मिति मीगसर सुध ॥ वा मगल ॥ ४ ॥ सीध श्री साध १८ बावाजी रामदासजी रा सि ।

७ लोहापागल की कथा, केसोदास कृत । छन्द सख्या—१८७ । पत्र सख्या—६, गहरे भूरे देशी कागज, जीर्ण । आकार—६×४ इन्च । हाशिया—दाए, बाए पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ—१० । अक्षर-प्रति पक्ति—३०—३३ । लिपिकार—अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि—पाठ्य । प्राप्तिस्थान—लोहावट साथरी ।

आदि–श्री विष्णजी सत्य सही ॥ राग हसो ॥
दोहा–॥चरण वाद चरचा करू ॥ अवगति अकल अलेप ॥
छह दरसण सेवा करू ॥ रुद्र ब्रह्मा सुर सेष ॥१॥
अत–मिली जुति गुर आपो जोय ॥ जुगति मकति हरि तूठा होय ॥
केस कथा कही कर जोडि ॥ आवागुवणि चुकावौ चौडि ॥८७॥
इति श्री लोहापगल की कथा सपूरण ॥ समापत ग्र ॥ ग्रर ॥ग्र ॥श्री॥श्री॥

८ जभ स्तुति, रचयिता–गोकलजी तथा जभाष्टक (सस्कृत मे) केवल ५ श्लोक। छन्द सख्या–४५। पत्र सख्या–५। देशी कागज। आकार–९×४ इन्च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इन्च। पक्ति–प्रति पृष्ठ–९। अक्षर–प्रति पक्ति–२८–२६। लिपि–स्पष्ट और सुवाच्य। लिपिकार–अज्ञात। अनुमानत सवत १८७५-१६०० मे लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।
आदि–ग्र स्वस्ति ॥ श्री गणेशायनम ॥ श्री जभ गुरव नम ॥ श्री विष्णव नम
दोहा–॥अ॥ रिधिपति सिधिपति शीलपति सुरपति सदा सहाय ॥
गति दासा गोवद सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गा॰ ॥१॥
अत–गत क्रोध काम गत पद्धिकार ॥ परब्रह्म रूप भजे जभमीश ५ दयाशा

६ नुगरी सुगरी को झगडो, रचयिता–पोहकर। छन्द सख्या–१६। पत्र सख्या–१। आकार–२४×४ इन्च। देशी कागज। हाशिया–नगण्य। रचना की कुल पक्तिया–८१ (७३+८)। अक्षर–प्रति पक्ति–१५–१६। लिपिकार–अज्ञात। अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। लिपि–पाठ्य। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।
आदि–श्री विष्णुजी अथ झगडा लिपत
हरिजन साकट नारि बाता बहोत अडी।
कूप चडी पणीयार दोनो झगड पडी ॥
अत–सुर चीतो मेला भया पोहकर ज्ञान विचार।
राम नाम प्रताप त ए जीती हरिजन नार ॥१६॥
एती नुगरी सुगरी को झगडो सपुरण ॥

१० दूणपुर की कथा, रचयिता–वील्होजी। छन्द सख्या–६०। पत्र सख्या ४, देशी कागज। आकार–६×४ इन्च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इन्च। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–८। अक्षर–प्रति पक्ति–३६। लिपिकार–अज्ञात। लगभग सवत १८५०–७१ मे लिपिबद्ध। लिपि–पाठ्य। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।
आदि–लिपत दूणपर की कथा ॥ राग आसा ॥
दुहा–नवण्य करू गुर आपणे। सद्गु चरन सुभाव
भगता तारण भव हरण। तीन लोक रो राव ॥१॥
अत–सतगुर सेती बाद करि। जीतो सुण्यो न कोय।
वील्ह कहै सेवा कारे। नय नय निज मयो होय ॥६०॥
दूणपुर की कथा सपूरणम् ॥

११ विष्णु चिरत, ऊदोजी अडींग कृत। छ द सख्या–१०६। पत्र सख्या–११। देशी कागज। आकार–६×४ इन्च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इन्च। पक्ति–प्रति पृष्ठ–१०। अक्षर–प्रति पक्ति–२८। फरसरामजी द्वारा सवत् १८८७ म लिपिबद्ध। लिपि–स्पष्ट और सुवाच्य। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।

आदि–श्री श्री गणेशाय'म ॥ विष्णु चिरत लिष्यते ॥

श्री गुर सत चरण सिर नाउ। अज्ञा होय विष्ण जस गाउ ॥

महा विष्ण क चिरत अपारा। सुर नर मुनो जन लहै न पारा।१।

अ त–गाव मुनि जन सत ॥ विमल जस भव जल तरण ॥ १०६॥ इति श्री विष्णु चिरत सपूरण ॥ समत १८८७ ॥ वर्षेति आसाड वद तीज मिन्म श्री री। १०८। गगाविसनजी का चेलो फरसराम ॥ लिष्यतू गी ग्रामी सिसवाल माई ॥

१२ कथा बाल चिरत, रचयिता–केसोजी। छन्द सख्या–६१। पत्र सख्या–१०। देशी कागज। आकार–६ ५×३ २५ इन्च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इन्च। पक्ति–प्रति पृष्ठ–७। अक्षर–प्रति पक्ति–१८। पीताबरदास द्वारा सवत १८७७, द्वितीय ज्येष्ठ कृष्णा नवमी को लिपिबद्ध। लिपि–सुवाच्य। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी।

आदि–श्री वायुसूनवेनम श्रथ बालचित लिषते राग आसा

दूहा–लोहट लोका न कहै सुत धन कर सभाल।

मो सुत साईना सहु परिपि चराव पाल।१।

अ त–देपि दई अचौ दीयौ विसन विसोवा वीस ॥

कहै केसो येलों पुसी अगल थल जगदीस ॥ ६१ ॥ इति श्री कथा बाल चित सपूरण ॥१॥ सवत १८७७ रा वर्षे मिती द्वितीय जेष्ठ कृष्ण पखे ९ लिपीकृत पीताबरदास ॥ पत्र १० छ ॥

१३ पत्र सख्या–२५, देशी कागज। आकार–६ ५×३ २५ इन्च। हाशिया–दाएँ, बाए–पौन इन्च। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–७। अक्षर–प्रति पक्ति–१४–१८। लिपिकार–प्रभात। लिपिकाल–सवत् १८८८, जेठ सुदि ४। लिपि–सुवाच्य(वद पर हरताल फिराकर सुद किया गया है)। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी। इसमे ये रचनाएँ हैं —

(क) तलाव की कथा, केसोजी कृत। आदि से पत्र १२ तक। दोहा समूह–१२, प्रत्यक के बीच प्राय ५–६ चोपइयाँ हैं, जिन पर सख्या नही दी गई है।

(ख) उद अतली की कथा, केसोजी कृत। छ द सख्या–७६। पत्र १२ स २५ तक।

आदि–श्री गणेशायनम। लिषते तलाव की जत। राग सोरठ ॥

पारब्रह्म पहली नऊ ॥ जग मडण जगदीस ॥

रुप चोरासी दे चुगो तिण साम नवाऊ सीस ॥

अ त–सतरास र छिहोतर। वद भादवो वर्षाण ॥

उदा अर अतली तणो। कथा चडी प्रवाण ॥७७॥ इति श्री उद अतली की कथा सपूरण समत १८८८ वर्षे मिति जेठ सुद ॥ ४ सोम ॥

१४ ऊदजी का कवित, रचयिता–ऊदोजी नण। सख्या–४५। अपूर्ण, पत्र सख्या–६।

आठवा और अंतिम पत्र अप्राप्य । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३१-३३ । लिपिकार-अज्ञात । संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट, सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री विसनजी सत्य ॥ लिषते कवित ऊदजी का ॥ छप छंद ॥

सासि ग्रास दातार ॥ तास विनि ओर न जाणौं ।
ज्यों दिवस ओर राति ॥ सदा बोनऊ बषाणौं ।

अंत-कुण जाण तीनि त्रिलोक ॥ भाजे घड रोप ठव ॥
धनि धनि स्वामी को नाव ऊदा ॥ असनो मैं सब सारवँ ॥५२॥
अचल विसन क आथि ॥ अरथ साप धन लिछमीं ॥ लिहच पाणीं पवण ॥

१५ बोल्हैजी का कवित्त, रचयिता-बोल्होजो । संख्या ४४ । अपूर्ण । प्राप्त पत्र संख्या-५ (१ से ४ तथा ८ वां) । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३१-३४ । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । साध गुमानीराम द्वारा संवत् १८८८ में लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-लिक्षत कवित बोल्हैजी का ॥

धम क्रिया सुष होय । लाछ लिछमी धन पाव ।
धम उतिम कुल अवतर । जनमि दालद नहीं आव ।

अंत-आप सवारथ मन मुधि । कीया कुवधी पापड़ा ।

बील्ह कहै भव सागरां । बहुरी जाहि रे बापड़ा ॥४४॥ इति श्री बोल्हैजी का कवत संपूरण ॥ संवत १०८८८ (१८८८) रा मीति भादवा सुद १४ लिषत साध गुमानीराम श्री १०८ गगारामजी का चेला । गव रासेसर मधे । वार मगल ॥

१६ शब्द वाणी श्री जाभजी की । सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । पत्र संख्या-८५ । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पंक्ति २७-३० । लिपिकार-अज्ञात । संवत १६०४ में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-६॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ शब्द वाणी श्री जाभजी की लिषते ॥

उ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुषि धम बषाणी ।

अंत-भलीयो होय तो भल बुधि आव बुरीयो बुरी कमाव । १२० ॥ शब्द वाणी श्री जाभजी संपूर्ण ॥ संवत् १६०४ रा वृषे मिती कातो सुदि ८ ।

१७ तलाव की कथा, रचयिता-केसोदास । दोहा-समूह संख्या-१२, प्रत्येक के बीच कई चौपाइयाँ हैं जिन पर संख्या नहीं दी गई है । पत्र संख्या-२० । मशीन के बने कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च । अक्षर मोटे और छोटे दो प्रकार के । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२२-२३ । श्री संतोषदास द्वारा संवत् १६३८ में लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-

पीपासर साथरी।

आदि-श्री जभेश्वराय नम लिषते कथा तलाव की राग सोरठ
दोहा-पारब्रह्म पहली नउ जग मडण जगदीस।
    लष चौरासी दे घणो तिण स्याम नवाउ सीस ॥१॥
अन्त-तीय आभेलाव जो कलि कल्याण निवास।
    जो जन मन इछा कर सब की पुर आस ॥ इति श्री केशवदास विचित तलाव की कथा सपूरणम शुभभूयात्करयाणरस्तु पठणाथ मुक्तिदनृणम सवत १६३८ रा वर्षे मिति आश्विन सुद १३ वार बुधवार लिपिकृतम् साध श्री १०८। बालक्दासजी का शिष्य सतोषदासेन पठणार्थे स्वय शुभमस्तु कल्याण रस्तु उ सत्यम् विष्णु सत्य हरी श्रोनम शातायतेजसे।

१८ अमावस्या री कथा, मयाराम कृत। छन्द सख्या-१४५। पत्र सख्या-१६। देशी कागज। आकार-१०×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-लगभग एक इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रति पक्ति-२६-२८। श्री मोतीराम द्वारा सवत १६०७ में लिपिबद्ध। काली स्याही से मोटे अक्षर, लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री जमेस्वरायनम लिष्यते अमावस्या री कथा
कुडलीया-प्रथम वदु गुरदेव कू दुतिये वदू सब साध।
    विष्णु वदू पुन तीसरे जाते मिटे जु व्याघ ॥
अन्त-सीस धरण धर करत हू निमस्कार सो वार।
    ईष्ट देव मम जभ गुरु लीला हित अवतार। ४५। इति श्री महाभारते श्री कृष्णार्जुन सवादे अमावस्या महातमे कथा मयाराम विरचनया समाप्तोय सवत् १६०७ मिती जेठ सुदी ७ (?) वार इतवार लिषते साध श्री १०८ पीतवरदासजी का शिष्य मोतीरामजी गाव धोरू मध्ये कुमला गोदारे के लिषी।

१६ गोकलजी के छन्द आदि। अपूर्ण। पत्र सख्या-११। पतला देशी कागज। आकार-१०×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-प्राय एक इ च। पक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-३६-३८। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८५० के लग भग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी। इसमे ये रचनाएँ हैं —
(क) अवतार की स्तुति, छन्द-४७ (४५+२), (ख) परची, छन्द-२७। दोनों के रचयिता-गोकलजी। लिपिकार न दोनो को ८२ छन्दो की एक कृति माना है। (ग) स्तुति अवतार की, केसोदास कृत, सोरठे-१३। (घ) इदव छन्द, गोकलजी कृत। ३० छन्द और २ कवित, म तिम कवित्त अपूर्ण।

आदि-श्री विसनु सत्य। लिषत स्तुत अवतार की। छन्द मोतीदाम।
दोहा-रिधपति सिधपति सोलपति। सुरपति इदा सहाय।
    गति दाता गोविंद सुमरि। गोकल हरि गुण गाय ॥१॥

अन्त-लाज त्रिलोक मा राखि पूरा घर्णी विपम भ जल र्घो वाट भारी।
सब सासो मिट प्रव पाया इसो सदा राखो सरण गदाधारी ॥ आदि अ-।

२० गोकलजी के छन्द, सख्या-३२। अपूर्ण। १५ पत्रो की प्रति, जिसके पहले ५ पत्र अप्राप्य। देशी कागज। आकार-८५×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-९। अक्षर-प्रति पक्ति-३१। लिपि-स्पष्ट। लिपिकार-अज्ञात, लगभग सवत् १८५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।
आदि-न यसु ॥ तदि हुतो तुहो त्रिकम अगम अगाध अजोनी सिभू अलख निरजण
अकल कलु ॥ आकार करण वटवरणि निवाजण भगत उधारण भाव कीयो ॥
अन्त-रह्या थाकी सका वचन पालो किसन किसन किरपा करो काज सारी ॥
दास गोकल कहै आस पूरो अलख अवरु आदि पुरुष ओट थारी ॥२॥
इति श्री गोकलजी का छन्द सपूर्ण समाप्ता ॥श्री॥श्री॥श्री॥

२१ परची, गोकलजी कृत। छन्द सख्या-३७। पत्र सख्या-३। देशी कागज। आकार-८७५×८ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ पौन इच। पक्ति-प्रति पत्र-९। अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८२५ के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।
आदि-श्री विष्णु जी अथ परची लिषत ॥
सुपेख्यौ सामी सोवन धार नमो निज नाथ जको निराकार ॥
नरापति निरप कर मन राव पिछ्याणौं बुध परस्या पाव ॥१॥
अन्त-जपीयो जदि जाप रिव हरि एक आयो अघ मोचण आप अरेष ॥
भण वड भूप सुध्यो ससार निरजणनाथ उतारण पार ॥३७॥ श्री विष्णुजी

२२ बारपडी, ऊधवदास कृत। (अपर नाम-ककका छतीसी)। छन्द सख्या ३७। पत्र सख्या-६। जीर्ण। देशी कागज। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। पत्र सख्या-३, ४ तथा ६ अपेक्षाकृत मोटे अक्षरो म लिखे गये हैं। पक्ति-प्रति पृष्ठ ११। छोटे अक्षरो वाले पत्रो में, अक्षर-प्रति पक्ति-३१ ३४। शेष म २४-२७। लिपिकार-रतनदास। रचनाकाल-सवत १८८८ है और इसी के आसपास इसका लिपिकाल भी होना चाहिये। लिपि-विशेष स्पष्ट नहीं है किन्तु पाठ्य है। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।
आदि-श्री विष्णजी सतगुरु ॥ अवत कुडलीया ॥
कका केवल विष्ण भजो हृद घर विसवा (स) ॥
आन भरोसो छाड दो राव राम की आस ॥
अन्त-जा दिन में सपुरण भइ तिथ तीज बुधवार।
उधव वरस चोरासीयो कहीय समत अठार ॥३७॥ इति श्री वारपरी सपूरण १ गाव सारगपु मधे लिषत साध परसरामजी का सिष रतनदास की। जे कोइ वाच विच तो नुण मान लिजोजी।

२३ तेजाजी के छन्द। रचयिता-तेजा चारण। छन्द सख्या-१६२। पत्र सख्या-७। देशी

कागज । आकार-१०×५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । छूटे हुए अक्षर हाशिया म लिखे गए है । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१३-१४ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३७ ४० । लिपिकर-अज्ञात । संवत १८७६ म लोहावट गाव मे लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री विसनु जी सत्य छ । लिषत तेजजी का छद ॥

गाथा-अवगत्य सु प्रगट आजू कोडयां तारण काजू ।

महि मडण माहराजू ॥ सोह सांम्य सुभराजू ॥१॥

अंत-पच वरस न बल्ले पच दिन पथ पसलाद को । ता सत धोर तप तेजा ॥

ताह तत्य तसकरा नारि मायोजसे । अलह नवो ताज के भया म हेजा ॥६॥ १६२ ॥ इति श्री तेजजी का छद सवत गीत गुण सपूरणम् ॥ समत १८७६ रा मिती माघ सुद ५ वार बमवार ग्राम लोहावट मध्य लि० ॥

२४ सत जोपांणी की कथा, रचयिता-केसोजी । छद सख्या-१०५ । पत्र सख्या-६, देशी कागज । पत्र जरा से मुडन पर सूखे पत्ते की तरह टूटते है । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ १० । अक्षर-प्रति पंक्ति-३६-४२ । पीताम्बरदास द्वारा स० १८८१ म लिपिबद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी कथा सत जोपाणी की राग हुसा ।

दोहा-निरहारी पहली नउ सतगुर साम सुजाण ।

एक सत निवाज्यो सामजी वाइ कहू वषाण ॥१॥

अंत-इण करणी कैसी कही आवागवणि न होय ।

जसी जाणी तसी कही जोडी कथा सपूण होय ॥१०५॥ इति श्री सत जोपाणी की कथा सपूरण लि० पीताम्बरदासेण स० १८८१ मिगसर सुदि ११ ॥

२५ उदै अतली की कथा, रचयिता-केसोजी । (इसम भूल से इसके रचयिता सुरजनजी बताए गए हैं) । छद सख्या-७७ । पत्र सख्या-५, देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १० । अक्षर-प्रति पंक्ति-३२-३६ । लिपि-स्पष्ट और पाठ्य । लिपिकर्ता एव काल-पीताम्बरदास द्वारा संवत् १८८१ म लिपिबद्ध । प्रारम्भ म पहले पत्र के प्रथम पृष्ठ पर ॥ अथ उदाजी की कथा ॥ श्री ॥ लिखा है । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी कथा उदा अतला की राग हसो ।

दोहा-औरत पहली सिवरीय आदि गुरु आदेस ॥

हम गुरु सिवरू सदा जहि सवरै सुर सेस ॥१॥

अंत-निष दसमो पुरवा नषत मगलवार विचार ।

जन सुजन की वीनता आवागवण निवार ॥७७॥ इति श्री कथा सपूरण लि पीताम्बरदासेण स० १८८१ मिगसर सु० १०

२६ पाथों । इन कागजों को मान्कर बाद म सिलाई की गई है । आकार-६×८ ७५

इन्च। हाशिया दाएँ, बाएँ-साधारणत पौन इन्च । १२८ फोलियो तक लिपिबद्ध, बाद के बहुत से पन्ने खाली हैं। तीन चार भिन्न हाथो की लिखावट मे। लिपिकारो के नाम कही कही दिए गए है जिनका उल्लेख यथास्थान आगे है। सवत १८७६-१८६७ के बीच लिपिबद्ध। लिपि-सामान्य पाठ्य। लिपिकार अलग अलग होने से प्रति पृष्ठ मे पक्तिया की सख्या भी भिन्न भिन्न है। प्राप्तिस्थान-श्री रामचन्द्र थापन, गाव मुकाम। इसमे ये रचनायें हैं —(क) विष्णू पजर स्तोत्र मन्त्र, ध्यानम, विष्णु मन्त्र, ध्यान, २८ नाम आदि सस्कृत मे। २८ श्लोक। लिपत ताजा अतीत वडे तकिए का लिपावत सुदराजी का चेला। (ख) सबद जाभजी का प्रसग समेत। १२२ सबद। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२२। अक्षर-प्रति पक्ति-१६-२४। प्रसग और प्रश्न लाल स्याही मे।

आदि-श्री विष्णजी सत्य ॥ लिपतु सबद भाभजी का आदि सबद वाणी

बाभण न प्रश्नो दीया ॥ त समै को सबद श्री वायक ॥

गुर चीन्हो गुर चीन्ह पिरोहित ॥ गुर मुखि धरम वषाणी ॥

अन्त-बिसन बिसन तौं भणि रे प्राणी। प क लाप उपज।

रतन काया बकु ठे वासो। जुरा मरण भव भाज ॥१२२॥

इतिश्री सबद श्री वायक सपूरण॥

दोहा-अनत सबद सतुगुर कह्या। बरस चोरासी बाणि ॥

मायजी के कठ रह्या। लिख्या बील्है सुजाणि ॥१॥

(ग) धू चिरत, जन गोपाल कृत। छद सख्या-२१६। (घ) गोकलजी के छन्द। गोकलजी कृत। छन्द सख्या-३२। इनकी लिपि विशेष सुन्दर नही है। (ङ) मावस्या री कथा, मयाराम कृत। छन्द सख्या-१४४। कई हाथो की लिखावट मे। लिपिकाल-स० १८७६ चत सुदि १० वार सोमवार। (च) प्रह्लाद चौरत, केसोजी कृत। छन्द-५६६। स० १८६७ माघ सुदि ५, बुधवार को थापन तेजा मोटाणी द्वारा गाव बगला म लिपिबद्ध। (छ) पाडवगीता, शकराचार्य कृत (सस्कृत मे) ११७ श्लोक। (ज) हरिनाम माला (सस्कृत) १६ श्लोक। (झ) विष्णुलहरी-शकराचार्य कृत (सस्कृत) ५ श्लोक। (ञ) गगाष्टक, शकराचार्य कृत (सस्कृत) श्लोक ८। (ट) देवाष्टक, शकराचार्य कृत (सस्कृत) श्लोक ८।

आदि-श्री विष्णजी सत्य ॥ श्री गणेशायन ॥ उ अस श्री विष्णुपञ्जर मतोत्र मन्त्रस्य ॥ नारद ऋषिरनुष्टप छद। श्री विष्णु परमात्मा देवता अह बीज मोह शक्ति। अन्त-नमो देव देवाय कमल निवासी नमो देव देवाय बकु ठवासी इति श्री शकराचार्य विरचिताया देवाद्विदेव स्तोत्र सपूरण।

२७ जांभजी का अवतार चित कथा, रचयिता-वील्होजी। छद सख्या-१४०। पत्र सख्या २६, देशीकागज। आकार-६ ५"×३ २५"। हाशिया-दाएँ बाएँ-पौन इन्च। प्रथम और द्वितीय पत्र पर बीच मे ६ पखुडियो वाले २ चक्र बनाये गये हैं। लिपिकार-पीतावरजी, सवत १८८० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-स्पष्ट। प्राप्तिस्थान-

लोहावट साथरी ।

आदि-श्री हनुमत नम ॥ दोहा ॥ नमनि करूं गुर आपन नऊं निरमल भाव ॥
कर जोडे वंदूं चरण सीस नवाइ सभाय ॥१॥

अंत-लिपीकृत पीताम्बर थी १०८ विष्णुदासजी तच्छिष्यश निवाश्रे ग्वा जपुर मध्ये ॥

२८ पत्र संख्या-२ । देशी कागज । आकार-६ ५X³ २५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२१-२४ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) पुंह पतीस, (ख) लुरा, (ग) सती लुगाइयां री पुंह, (घ) राजवीयारी वीगत्य ।

आदि-श्री विसनजी ॥ लिप्यतु पु ह पतीस हू में भाद की पुंह बूढ धीलहरी की पुंह
रावल जाणी की पुंह ॥

अन्त राजवीयारी वीगत्य निकदर लोदी १ महमदपा लोनी २ दुदो राठोड ३ सातन राठोड ४ जनसी भाटी ५ सागा सीमानीयो ६ या की पुंह राजवीया मगाई एती लुरा पुंह सपुरणम् ॥

२९ गोकलजी का छद, रचयिता-गोकलजी । पत्र संख्या-१०, देशी कागज । आकार-६X४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३४-३८ । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-संवत १८६२ । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसम कवि की दो रचनाएँ है —(क) अवतार विगति छंद, संख्या-४५, पत्र ४ के आरम्भ तक । (ख) इंदव छंद संख्या-३२ ।

आदि-श्री विसनजी सत्य हाय छंद ।

दोहा-रिमपति सिधिपति सिलपत सुरपति सदा सहाय ॥
गत दाता गोविंद सुमरि गोकल हरि गुन गाय ॥१॥

अंत-रहता वाको तका वचन पाल्यो बिसन किसन किरपा करो काज सारो ॥
दास गोकल कहै आत पूरो अलप ऊवर आदि पुरष ओट थारो ॥३२॥ इतिश्री गोकलजी का छंद सपूर्ण संवत १८६२ मिती भादवा वद ३ वार मगल ॥

३० अमावस्या कथा, मयाराम रचित । छंद संख्या-१४४ । पत्र संख्या-१०, देशी कागज । आकार-६X४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पंक्ति-२६-२८ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री गणेशायनम था विष्णजयति अथ मावस्यारी कथा लिख्यत

कुण्डलाया-प्रथम वदू गुरदेव कू दुतिये वदू सब साध
विष्णु वदू पुन तोसर जात मिटत जु ब्याध ।

अंत-साता धरणि धरि करत ■ नमसकार सो बार
इष्ट देव मम आभ गुर सोला हित अवतार १४४ इति श्री महाभारत श्री कृष्णार्जुन संवाद अमावस्या माहात्म कथा मयाराम विरचनायां सपूर्ण भवत ।

३१ तलाव की कथा, रचयिता-केसौजी। दोहा समूह सख्या-१२, बीच मे आई चौपइया की सख्या नही दी गई है। पत्र सख्या-४। देशी कागज। पत्र-जीएा, जरा सा मोडने पर टूटते हैं। आकार-१०×४ इ च। हाशिया-दाएँ, वाएँ-पौन इ च। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पक्ति-३५-३६। लिपिकर्ता-अज्ञात। लिपिकाल-सवत् १८७६। लिपि-सामान्यत पाठ्य। प्राप्तिस्था -लोहावट साथरी।

आदि-श्री विसनजी स्यत्य सही लिपते तलाव की क्था राग मोरठ

पारब्रह्म पहलो नऊ जग मडण जगदीस

ल्प चोरासी दें चुगो तिण साम नवाऊ सीस ॥

अ त-यह तीरथ को गुण यो केस गुण गु यि सुणायो

दिल अ तर बूजि न आणी जत माहि क्ह्यो सत जाणी ॥१२॥

तलाव की कथा सपूरण १ सवत १८७६ रा मिती भादवा सुदी ४ वार मगल ।१।। विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु श्री।

३२ अमावसरी क्था, रचयिता-मयाराम। छ द सख्या-१४५। पत्र सख्या-१०। देशी कागज। आकार-६×४ इ च। हाशिया-दाएँ, वाएँ-सामान्यत पौन इ च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३६। प्रथम पत्र पर बीच म एक ६ पखु-न्यिा वाला (सफेद, पीला, काला व लाल रगो मे) चक्र बनाया हुआ है। परसराम न जाभा म सवत १८८७ म लिपिबद्ध की। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री ऋभेस्वरायनम ।।। अथ अमावसरी क्था लिपते ।।

।। कु डलिया ।। प्रथम वदों गुरदव कू ।। दूतिये वदू सब साध ।।

विष्णु वदु पुन तीसर ।। जात मिट सु व्याघ ।।२।।

अ त-इति श्री महाभारते श्री कृष्ण अजु न सवाद अमावस महात्म क्था मयाराम विरचिताया समापताय ।। सवत १८८७ रा वृषे मिती असा श्रु दि १० बुधवार लिपत साधश्री १०८ हरक्मिनदास महतजी का सिप्य परमराम तीथ जाभा मध्ये १

३३ विष्णु चरित्र, ऊधोदास कृत। छ द सख्या-११०। पत्र सख्या-१२, देशी कागज। आकार-६×४ इ च। हाशिया-दाएँ, वाएँ-१ इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२६। लिपि-सुवाच्य। लिपिकार-अज्ञात। लिपिकाल-सवत १६२५। प्राप्तिस्थान- लोहावट साथरी।

आदि-श्री श्री गणेशायनम अथ विष्णु चरत लिप्यते ।।

।। चौपाई ।। श्री गुर सत चरण सिर नाऊ ।। अज्ञा होय विष्णु जस गाऊ ।।

महा विष्णु के चरित अपारा ।। सुर नर मुनि जन लहे न पारा ।।

अ त-। सोरठा। हरि अवतार अनत ।। अनत चरित अवगत तणा ।।

गाव मुनि जन सत ।। विमल जस भव जल तरण ।।११०।। इति श्री विष्णु चरित्र सपूरण सवत १६२५ ।। वार सोमवार मिती असाजो वदि ६ ।। उ हरि तत सत ।।

३४ विष्णु चरित, ऊधोदास कृत। छ द सख्या-११०। पत्र सख्या-६, देशी कागज।

आकार-६ × ४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इन्च तक। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-३४-३६। सवत् १८८५ में साधु गोविंदराम द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री स्वस्ति श्री गणेशायनम ॥

चौपई-श्री गुर सत चरण सिर नाऊं आज्ञा होय विष्ण जस गाऊं

महाविष्णु के चरित अपारा सुर नर मुनि जन लहै न पारा

अंत-दुहा सोरठा-हरि अवतार अनंत अनंत चरित अवगत तणा

गाव मुनि जन सत विमल जस भव जल तरण ॥११०॥

इति श्री विष्णु चरित सपूरणम् १॥ सवतसर १८८५ रा मिति काति सुदि ५ लि० साधु गोविंदरामेण ग्राम जाभो जभ मदिर

३५ कका छतीसी, रचयिता-ऊधोदास। छन्द संख्या-३७। पत्र संख्या-६, देशी कागज। आकार-६ × ४ इन्च। हाशिया-दाए, बाएँ-पौन इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पंक्ति-२५-२६। फरसराम द्वारा संवत १८६७ मे लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी॥

आदि-श्री विष्णुजी। अथ कका छतीसी लिषते॥

कका केवल कृष्ण भज हृद धर विसवास

आन भरोसो छाड दे। राष राम की आस ॥२॥

अन्त-अपर पतीस उपर कवत सती विचार॥

उगुण वरस चोरासीयो कहीय समत अठार ॥३॥ (३७)

इति श्री वापडी सपूरण १ सवत ॥ १८६७। रा वर्षे मिती असाढ वदी ॥६॥ श्री री लिपी कृत साध्य श्री री ॥१०८। गगाविसनजी को शिष्य ॥ फरसराम लिष्यतु। ग्राम सोसवाल। श्री री लिषतु बीच तार रारामम

३६ पहलाद चरित, रचयिता-केसौदास। छन्द संख्या-५६४। पत्र संख्या-३५, देशी कागज। आकार-६ × ४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-३०-३४। साधु गोविंदराम द्वारा संवत १८८५ मे लिपिबद्ध। (८५ पर हरताल फिराई गई प्रतीत होती है) लिपि-सुवाच्य। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम रागमारू-दोहा-

नारायण पहलो नऊं स्वामी सब सुजाण

आदि भगत कहसु कथा प्रहलाद चरित प्रमाण १

अन्त-मैं दावण पकड्यो दीन को सतगुरु कर सहाय

पांच सात नव बाहरा अब क मोहि मिलाय ५९४ इति श्री पहलाद चरित सपूरण सवतसर १८८९ रा मिती मधु वदि (३ ?) दनोवारे (?) एकादशी लिपिकृत साधु गोविन्दरामेण ग्राम मोरया मध्ये

३७ मगलाष्टक, केसौदास कृत। छन्द संख्या-४३। पत्र संख्या-३, मोटा देशी कागज।

आकार–११ × ५ इन्च । पंक्ति–प्रति पृष्ठ–११ । अक्षर–प्रति पंक्ति–३३–३७ । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणतः आधा इन्च । लिखावट–मोटे अक्षरों में, जो एकाध स्थल पर स्याही फैल जाने से अपाठ्य, अन्यथा समान्यतः पाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानतः संवत् १६५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि–श्री गणेशायनम अथ मंगलाअष्टक लिषते

दुहो–श्री गुरन पति वृहस्पति कहे देवन पति गोविंद

देवन पति ब्रह्मा वद सावन पति पति अ व १

अंत–विघन हरण मंगल कर ब्रह्मंड थभण विण थंभ

अनड चित केया विधु नमो उधव पत गुरु जंभ ४३

इसके पश्चात् धरती के ३० नाम हैं, जिनकी अंतिम पंक्ति यह है—

कव अप हो कव पणी तीस नाम धरती तणा १

३८ विष्ण छतीसी, छन्द–३७ तथा छप्पय, छन्द ४१ । दोनों के रचयिता–वील्होजी । पत्र संख्या–१०, देशी कागज । आकार–१० × ५ इन्च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इन्च । पहले तीन पत्रों में पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–१० । अक्षर–प्रति पंक्ति ३०–३२ । पत्र संख्या ४ से १० तक पंक्ति प्रति पृष्ठ–१३ । अक्षर–प्रति पंक्ति–३०–३२ । साधु हरिकृष्णदास द्वारा संवत् १८९३ में लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–श्री धान्नलराम विष्णुदत्त बिश्नोई, दुतारावाली ।

आदि–श्री विसनु सत्यायनम विष्णु छतीसी लिषते

कुंडलीया–ऊकारे आद गुर निरंजण निरकार

आकारे सुंय जोगीयौ आप रह्यौ निराकार

अंत–छ राज्यद्र के के अवर आचारे ओलपीयो

वील्ह कहै मानु पु यह जा मुक्त न हायो दीयौ इती वील्हजी के छपइए संपूरण संवत् १८९२ मिती माघ वद २ लिषते साध हरिविष्णदास

३९ पत्र संख्या–९, देशी कागज । आकार–१० × ५ इन्च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणतः १ इन्च । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–१२ । अक्षर–प्रति पंक्ति–३८–४१ । लिपिकार–अज्ञात, अनुमानतः संवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि–स्पष्ट । प्राप्तिस्थान–श्री धान्नलराम विष्णुदत्त बिश्नोई, दुतारावाली । इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) कथा गुगलिये की, वील्होजी कृत । छन्द संख्या–८६ । (ख) कथा झोरड़ा की, वील्होजी कृत । छन्द संख्या–३३ । (ग) बाल लीला केसोजी कृत । छन्द संख्या–६१ ।

आदि–श्री विसनु जी लिषते कथा गुगलिए की राग आसा

दोहा–जगत गुरु जंगल बस वासो मह्र वणाह

भेद प्रकास भाव करि गुर तारसी घणाह १

अंत–देवि दई परचो दीयौ विसन विसोवा विस

कहै केसो पेल पुसी जगल थल जगदीस ॥६१॥ एती श्री बाल लीला केसोदास विरचता संपुरण ॥३॥ (९वें पत्र का प्रथम पृष्ठ) इसके पश्चात् ९वें पत्र के

दूसरे पृष्ठ पर संवतसरी है-अथ साठ संवतसर लिखते इति श्री संवतसरी संपूर्ण १

४०. पत्र संख्या ७। आकार-१०×५ इंच। देशी कागज। हाशिया-दाएँ, बाएँ १ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४, किन्तु अंतिम पृष्ठ पर १५ है। अक्षर-प्रति पंक्ति-३४-३८। लिपिकार-अज्ञात। लिपिकाल-संवत् १८८४। लिपि-पाठ्य, किन्तु जगह जगह हरताल फिराई हुई है। प्राप्तिस्थान-श्री थानसराम, विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारां वाली। इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) कथा जैसलमेर की, वील्होजी कृत। इस कथा ८८ दोहे-चौपइयां में इसके पश्चात् २१ कवित्त और भी लिखे हैं। लिपिकार के अनुसार ९० दोहे-चौपई तथा २१ कवित्त-मय इस कथा में छन्द हैं, जो भूल है। (ख) फुटकर सवइये-संख्या ८। इनमें ७ केसोजी के और १ किसोर का है।

आदि-॥ श्री विसनजी सत सही लिखते कथा जैसलमेर की राव आगा

दोहा-सतगुर आगे विनती कर विलगु पाए

रह कारण गुण वरणउ आपर हो समजाए १

अन्त-प्रगटे जद रूप निरंजण वस्तु जांभथ मांय वहांयण हूं

भगवां कपडा करि आप जप सभरथल आग जगायण हूं

बाऐं हाशिए में-गुर ध्यान ही ध्यान को ध्यांन धर बहु लोकन को समझायण हू

धरणी उर जध पाव न धरहू बल हों २ इन पावन सों ८ इति संपूर्ण

४१. हरि प्रहलाद चिरत (अपरनाम-लघु प्रहलाद चिरत), रचयिता-हरचंदजी। अपूर्ण। केवल अंतिम-३४ वां पत्र नही है। प्राप्य छन्द-१६९। पत्र संख्या-३३, मोटा देशी कागज। आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१८-२०। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-स्पष्ट और सुंदर। प्राप्तिस्थान-श्री थोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।

आदि-श्री हरयेनम ॥ श्री गुरुभ्योनम ॥ श्री अनंत कोट वंदयायनम ॥ हरये ॥

अथ ग्रंथ हरि प्रहलाद चिरत लिखते

दुहा-जम गरु अब ग्रवहू ॥ मम देहु बुध वि २ साल

गायें चहु प्रहलाद गुन ॥ पुनि हरि चरित रसाल ॥१॥

अंत-॥ दुहा ॥ श्रीमती श्री भागोत में। वरणे चिरत अपार।

तिनकी आस देप के। कछु एक किये उचार ॥१६९॥

नारद कहे युधिष्टर हो। सुपहु परीष्ति ।

४२ हरि प्रहलाद चिरत, रचयिता-हरचंदजी। छन्द संख्या-१७२। पत्र संख्या-२६, देशी कागज। आकार-८.७५×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२२-२५। लिपिकर्ता-अज्ञात, संवत १९०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री थाकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।

आदि-अथ ग्रंथ हरि प्रहलाद चिरत लिखते

॥ दुहा ॥ जभ गुरु अब द्रबहु ॥ मम देहु बुध विसाल ॥
गाये चहु प्रहलाद गुन पुनि हरि चरित रसाल ॥१॥
अन्त–आस पास की साप से ॥ कीए ग्रंथ प्रकास ॥
दया सब सत रापियो ॥ हरचद तुमरे दास ॥१७२॥
इति श्री लघु हरि प्रहलाद चिरत सपूरण ॥ शुभमसतु किलाण रमतु ॥ ररररर

४३ (क) अमावसरी कथा, मयाराम रचित । छन्द सख्या–१४४ । तथा (ख) वील्हेजी कृत १० फुटकर कवित्त । पत्र सख्या–७ । देशी कागज । आकार–११.५×५ इन्च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इन्च । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–१४ । अक्षर–प्रति पंक्ति ४०–४३ । लिपिकार–अज्ञात । लिपिकाल–सवत १८६७ । लिपि–सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान–श्री धान्नलराम विष्णुदत्त विष्णाई, दुतारावाली ।
आदि–श्री गणेशायनम ॥ श्री विष्णो जयति ॥ अथ अमावसरी कथा लिषते ॥
॥ कुडलीया छन्द ॥ प्रथम बदू गुरदेव कों ॥ दुतिये बदू सब साध ॥
बिष्णु बदु पुनि तीसर जात मिटस जु ब्याधि ॥
अन्त–डुगर कुकरणीं दपब अवलि हौंण उवत हिये
वीह्ल कहै जो पारयो डुगर कुपात न वधिये १० । राम राम ।

४४ प्रहलाद चिरत, केसोजी कृत । छन्द सख्या–५६४ । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या–२० । कुल पत्र सख्या ३९ है, जिनमे सख्या–७ से २५ तक, १९ पत्र अप्राप्य हैं । प्रतिजीर्ण । देशी कागज । आकार–९ २५×४ २५ इन्च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इन्च । पंक्ति प्रति पृष्ठ–११ । अक्षर–प्रति पंक्ति–२९ से ३१ । सवत १८८४ मे साधु श्री हरकिसनदासजी के शिष्य परसराम द्वारा लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–श्री धान्नलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि–श्री भभेरवराय नम ॥ श्री परमात्मनेनम ॥ अथ प्रहलाद चिरत लिषत ॥
राग मारू ॥ दोहा ॥ नारायण पहली नऊ ॥ सामी सरब सुजाण ।
आदि भगति कहिय्यों कथा ॥ पहलाद चिरत परवाण ॥१॥
अन्त–मैं वावण पकड्यौ दीन कौ ॥ सतगुर कर सहाय ॥
पाच सत नव वाहरा । अबक मोहि मिलाय ॥९४॥ इति श्री प्रहलाद चिरत केस्वदास विरचिताया सपूरण ॥ भवेत ॥ सवत १८८४ रा वर्षे मिती श्रावण सुदि ११ गुरुवार ॥ लिपते साध श्री १०८ महत हरकिसनदासजी रा शिष्य परसराम ॥ तीरथ जाभोलाव मधे ॥ पोथी साध मायावराम की

४५ अवतार कथा, सुरजनदासजी रचित । छद सख्या–२३६ । पत्र सख्या–२० । बीसवें पत्र म केसोजी के ३ और किसोर का १ छन्द ओर लिखे गए हैं । देशी कागज । आकार–९ ७५×५ इन्च । हाशिया–साधारणत –दाएँ, बाएँ–एक इन्च । लिपिकार साहबरामजी के ज्येष्ठ पुत्र गणेशरामजी । अनुमानत सवत १९४० मे लिपिबद्ध । लिपि–स्पष्ट । अक्षर–प्रति पंक्ति २७–२८ । पंक्ति–प्रति पृष्ठ–१०–१२ । (प्रथम पृष्ठ म ९ ही पंक्तियाँ हैं) । प्राप्तिस्थान–श्री धान्नलराम विष्णुदत्त विष्णोद, दुतारावाली ।

आदि-॥ *लिषते अवतार कथा* ॥

॥ दा० ॥ वेद कतेब जे पुली गढ मढ किवी तयार

जोव पढ जोयों टला सतगुर ले अवतार १

अन्त-(पत्र १९ से) सतगुर सेती वोनती अरज करे लिव लाय

पांच सात नव बारहाँ अबके मोह मिलाय २३६ ईति श्री सुरजन-दास विरचतायां श्री अवतार कथा सपूर्ण लिषतु साध साहबराम जी का शिष्य गणेसरामेण हरी हर

(पत्र २० से) गुर ध्यांन हो ध्यांन को ध्यांन घर वेह लोकन कों समझावण

परणो उर जप पाव न धरहु अलहू २ ३ न पावन हू १

४६ छप्पय, ऊधोजी कृत । छन्द सख्या-५५ । पत्र सख्या-७ । मशीन के बने कागज । आकार-१०×५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पक्ति-प्रति पृष्ठ १३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३४-३६ । हरिकृष्णदास द्वारा सवत १८९१ म लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाला ।

आदि-श्री विष्णु जयती श्री अभेश्वराय नम अथ छपईया ऊधजी का

सास ग्रास दातार सास बिण अवर न जाणों

जपू रात अरु दिवस सदा वोनऊ वषाणों

अन्त-अलष अछेव अजोनी सिंभू पार तिह को कोण लहे

हलत पलत तिह सरण बिसन भक्त ऊधो कहै-५५ इति श्री ऊदजी रा कव्यत सपुरण १ लिषते साध श्री सरूपदासजी रा सिष्य हरिकृष्णदास समत १८९१ रा मिती माघ सुदी ४

४७ पत्र सख्या-३ । मोटा देशी कागज । आकार-१२×६ इच । हाशिया-दाएँ, बाए-एक से सवा इच तक । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१२-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-१४ । दो हाथों की लिखावट है । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसमे ये २२ छन्द है —(क) सुरजनजी के कवित्त । छन्द सख्या-१८ । (ख) वील्होजी के कवित्त छन्द सख्या-४ ।

आदि-श्री विष्णुजी सतसहा छ जी लीपते कवत सुजन जी का कह्या दुरगदासजी न

मन राजा नेहरीयों उप दीय रोपो अवर

जडो मेष धारज पाव दे सास सघर

अन्त-सैसार जुगत आगें मुक्त लाभ घणो छ दहू पहोर

वील कहे आलस न कर जो गुर कह्यो सो धरमे कर २२

४८ हरजस, सख्या १११, विभिन्न कवियों के । राग-रागिनियों मे गेय । पत्र सख्या-२७ । देशी कागज । जाग। मोटे और पतले दो प्रकार के । आकार-१०×५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पत्र यत्र-तत्र चारो ओर से खडित । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रति पक्ति-३३-३४ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत

१८२५ के लगभग लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री घोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसमे इन कवियो के हरजस हैं —

(क) वील्होजी के-सख्या १९ । (ख) सुरजनजी के-सख्या ४८ । (ग) फुटकर-११ । ये इन कवियों के हैं —

(१) ऊधोजी (ऊदोजी) के-२, (२) वील्होजी का-१,
(३) कान्होजी का-१, (४) तेजोजी के-२,
(५) आसानन्द का-१, (६) दुरगदास के-२,
(७) पदम के-२ ।

(घ) केसोजी के-सख्या १२ । (ङ) आल्मजी के-सख्या १२ । (च) फुटकर हरजस-सख्या ७ । ये क्रमश इन कवियों के हैं —

(१) केसोजी का-१, (२) मावनजी का-१,
(३) मिठुदास-१, (४) देवो-१,
(५) ऊदोजी के-२, (६) हरिनद-१,

(छ) हीरानन्द कृत हिंडोलणो, १० पद । (ज) रहमत कृत-१ ।

आदि-श्री जभेस्वरायनम लिपते हरिजस विल्हजी का राग आसावरी

दिल दुरमत दुजा साध कहाव ताका मोह अचभा आव टेक
पढ गु ण गत परमोध रात दिवस विपीया कुँ सोध
वस सभा मा ग्यान विचार भीतर लयण विली का धारे १

अन्त-इन्द्र सहत सब देवता आए करण जुहार रे हेली
चरण प्रस्याजी स्याम का गाव मगलचार ४
प्रहराजा के कारण रे हेली सभरथल अवतार
जन रहमत की वीनती जभ तद अवतार ५ ११

४९ विष्णु चरित, ऊधोदास रचित । छन्द सख्या-११० । पत्र सख्या-२०, मशीन के बने कागज । आकार-९"×४" । हाशिया-दाएँ, वाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२३-२५ । नृसिहदास द्वारा सवत १९३७ म लिपिवद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ अथ विष्णु चरित लिष्यते ॥ + + + ई
श्री गुर सत चरण सिर नाऊ ॥ आज्ञा होय विष्णु जस गाऊ

अन्त-इति श्री विष्णु चरित सपूरणम् ॥ मासोतममासे कातिकमासे कृष्ण पक्षे जीव वासरे मया लिष्यत नृसिग दास श्री । १०८ । श्री मोतिरामजी का शिष्य रहने वाला रणी वासे पपुर पदर का ॥ सवत् १९३७ ॥ पठनाथ साधु वुधरामजी श्री सावलदासजी का शिष्य सहर नगीने मदिरे विष्णु ॥ श्री वुधरामजी श्री ॥ श्री जभाय नमोनम श्री गुरुचरणकमलेभ्योनम ॥ श्री रामजी राम राम ॥

५० अमावस की कथा, सथाराम रचित । छन्द सख्या-१५० । पत्र सख्या-२६, मशीन के वने कागज । आकार-९×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, वाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति

पृष्ठ–६। अक्षर-प्रति पंक्ति–२२–२५। नृसिंहदास द्वारा संवत १९३७ में लिपिबद्ध। अक्षर-मोटे, लिपि-स्पष्ट। प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी।

आदि–ॐ श्री गणेशायनम ॥ अथ भावसारी कथा लिख्यते ॥

कुण्डलीया–प्रथम वदू गुरुदेव कों ॥ द्रुतीय वदू सब साध

विष्णु वदू पुन्य सीतार ॥ जात मिट जु व्याध्य ॥२॥

अन्त–इति श्री महाभारत श्री कृष्णार्जुन सवादे प्रभावम महातम मयाराम विरचिताया सम्पूरणम् ॥ संवत १९३७ मासोतम मासे अस्वीन मासे ॥ शुक्ल पक्षे पुण्य मासे शुभ तिथो ॥ चद्रावारे व मुकाम नगान मन्दिर म ॥ लिपि कृत साधु नृसिंगदास श्री १०८ मोतिरामजी का शिष्य साध विष्णोई ॥ पठनार्थ साधु भूमराम जी चेल श्री सावलदासजी क मन्दिर रनी के ॥

गी कहते सुण क्रपा ॥ ता कहते तम नास

नृसिंगदास गीता जो कहै ॥ सहज मुक्त हो जात ॥१॥

राम राम राम राम राम श्री राम श्रीराम श्रीराम श्रीराम जभायनमोनम ॥ श्री गुरवनम ॥ श्री मगलम्तु ॥ श्री ॥

५१ गोकलजी क छन्द आदि। कुल छन्द संख्या–१३५। पत्र संख्या–१८। देशी कागज। आकार–९×४ इंच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इंच। पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–११। अक्षर-प्रति पंक्ति–२५–२६। परसराम द्वारा संवत १८८९ में लिपिबद्ध। लिपि–पाठ्य। प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी। इसमें ये रचनाएँ हैं —

(क) अवतार विनति–४५ छन्द, (ख) परची–३७ छन्द, (ग) स्तुति अवतार की–१३ दोहे–केसोजी कृत। लिपिकार के अनुसार ये तीनों 'अस्तुति अवतार का' के अन्तर्गत हैं। (घ) इन्दव छन्द–३२ छन्द। (ङ) स्तुति होम की–८ छन्द।

आदि–श्री क्रमेस्वरायनम ॥ लिषत अस्तुति अवतार का छद मोतीदाम

दोहा–रिघपति सिघपति सीलपति सुरपति सदा सहाय

गतिदाता गोविंद सुमरि गोकलि हरि गुण गाय १

अन्त–आभ थभा किम ऊधरे जिण रहै गिर सातार ओट तर

श्रीकमजी ताहरी तणु अधर विराज्यो ईश्वर ८

इति श्री गोकलजी का कह्या छन्द कवत संपूरण ॥१॥ संवत १८८९ रा वर्षे मिति असाढ सुदि ८ वसपतवार लिषत साध श्री १०८ श्री हर किसनदास महतजी का सिष्य परसराम गाव फतपुर मध्ये ॥१॥

५२ उणतीस धर्म की आकडी, पत्र–१ जिसको बीच में मोडकर २ बनाए गए हैं। देशी कागज। १ पत्र के दोनो ओर (९+२) कुल ११ पंक्तियों में यह रचना है। दूसरा मुडा हुआ पत्र एकदम खाली है। लिपिकार–अज्ञात अनुमानतः संवत १८५० में लिपिबद्ध। लिपि–पाठ्य। आकार–एक पत्र का ९×४ इंच ॥ प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी।

आदि–श्री गणेशायनम अथ उणतीस धम की आकडी लिपते ॥
तीस दिन सूतक पाच रुतवती न्यारो
सेरो करो स्नान सील सतोष सुच प्यारो
अन्त–उणतीस धम को आकडो हृदे धरियो जोय
जाभेजी कृपा करी नाम विष्णोई होय
श्री ६ उणतीस धम सपूण १ ॥ शुभम् इति

५३ लघु हरि प्रहलाद चरित्र, हरचदजी कृत ॥ छद सख्या–१७२ ॥ पत्र सख्या–११, मशीन के बने कागज । आकार–९ ७५×५ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणत पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३४–३६, आदि और अत म दो पृष्ठ खडित हैं । सतापदास द्वारा सवत् १६४१ म लिपिबद्ध । लिपि–सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी ।
आदि–श्री गणेशायनम अथ ग्र थ प्रहलाद चिरत लिपते ॥
दोहा–जभ गुरु अथ ह्वहु अम देहु बुधि विशाल
गाये चहु पहलाद गुन पुन हरि चरित रसाल १
अन्त–आस पास की साख ले कीये ग्रथ प्रकास
दया सर्व सत रावियो हरचद तुमरो दास १७२ ॥
इति श्री भक्त हरचद कृतया लघु (हरि प्र) हलाद चरित्र सम्पूरणम् ॥
दोहा–सृष्टी कारण जभ गुरु व्यापक है घट माह
सतोपदा (स स) रण परयो रायो चरणा माह १ ॥
समत्तानीसेक्तालीसे मासोत्तम्मासे मार्गसीष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ चर्थीम् शुक्रवासरे लिपिकृतम् सत श्री १०८ स्वामी जी बालकदासस्य तस्य शिष्य सतोपदासेन ग्राम नीवग्राम विष्णु मदिर मध्ये श्री रस्तु कल्य ।

५४ तलाव की कथा, रचयिता–केसोजी । रुपक–सख्या–१२, दोहो के अतगत आई हुई चौपइयो की सख्या नही दी गई है । पत्र सख्या–३, देशी पतला कागज । पुराना होन के कारण चारो ओर के किनारे खण्डित हैं । आकार–९ २५×४ ७५ इच । हाशिया दाएँ–बाएँ–साधारणत –आधा इन्च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१४ । अक्षर–प्रति पक्ति–३४–३६ । सवत १८८२ म परसरामजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–पीपासर साथरी ।
आदि–श्री विष्णु जीनम ॥ लिपते कथा तलाव की ॥ राग सोरठ ॥
पारब्रह्म पहली नऊ ॥ जग मडण जगदीस ॥
लप चोरासी दें चुगो तिण साम नवाऊ सीस ॥
अन्त– ॥चो०॥ बड तीथ को गुण गायो ॥ केसजी गुण बु धि सुणायो ॥
दिल अ तर दूज न आणों ॥ जत माहि कह्यो सत जाणों ॥१२॥
इति श्री तलाव की कथा सपूरण ॥१॥ सवत १८८२ रा वृषे मिति प्रथम श्रावण सुदि तिरोदसी बुधवारे ॥ लिखत साध श्री १०८ हर किसनदास जी

का शिष्य परसराम ॥ सहर नगीना मधे ॥ श्री ॥ श्री मगलमस्तु ॥

५५ कलस, पाहल और बालक मत्र, पत्र सख्या–४ ॥ मोटा देशी कागज । आकार–९×४ इच । हाशिया–दाएँ–बाएँ–पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–९ । अक्षर–प्रति पक्ति–२५–२८ । परसरामजी द्वारा लिपिबद्ध । अनुमानत सवत् १८७५ के आस पास । अक्षर–मोटे, लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–पीपासर साथरी ।

आदि—अथ कलस लिख्यते ॥

उँ अकल रुप मनसा उपराजी ॥ ता मा पांच तत्त होइ राजी ॥
आकाश वाय तेज जल धरणी ॥ ता मा सकल सिष्ट की करणी ॥

अन्त—जल स हाथे स्याम भल विष्णु नाम सदा निरमल ॥

विष्णु मत्र कान जल छुवा ॥ गुर फुरमाण विष्णोई हुवा ॥ इति बालक को मत्र सपूरण ॥१॥ श्री जभायनम श्री विसवे नमो जय विष्णो । गगाबिसनजी को सीष परसरामजी ॥

५६ प्रहलाद चिरत, ऊधोदास कृत । छन्द सख्या—३४५ (३४४ छन्द के पश्चात इसमे ३४८ की सख्या भूल से लिखी गई है) । पत्र सख्या—३४ । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार–साधारणत ९ ५×४ २५ । हाशिया दाएँ बाएँ—१ इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१०, किन्तु किसी पृष्ठ मे ९ भी हैं । अक्षर–प्रतिपक्ति २४–२८ । गायणे हरणवतराम द्वारा सवत् १९३४ मे लिपिबद्ध । अक्षर मोटे हैं किन्तु लिपि विशेष स्पष्ट नही है । प्राप्तिस्थान—पीपासर साथरी । पुष्पिका के पश्चात ३४ वें पत्र के प्रथम पृष्ठ पर, 'गीतामाहात्म', 'सूय जलचढाव' मत्र लिखे गए हैं ।

आदि—॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ प्रहलादि चिरत लिख्यते ॥

दोहा—प्रथम बदु गरू देव ▒ दुतीऐ बदु सब साध ।
त्रिती षदु ब्रह्मा विष्णु कु कहु चिरत प्रहलाद । १

अन्त—समत १८६८ । अठातरा स अडसठा माघ सुक्ल पक्ष जान
तिथी तीज सपूरण भयो प्रहलाद चिरत आखन ॥३४८॥ ईति श्री प्रहलाद चिरत सपूरण सवत १९३४ ॥ मीती श्रावण सुल्काया तीथी १५ वार बृहसपतवार लिप्यते गायणा हरणवतरामेण पठनारथ गीला नथुरामेण गाव भाणा । मध्ये । श्रा तिमो भगवतेवासदेवायनम ॥ श्री राम

५७ श्री गोविन्द स्वामी कृत सस्कृत जम्भाष्टक की विष्णोदासविलास टीका । टीकाकार विष्णुदास । टीका गद्य म है, आदि अन्त म टीकाकार न स्वरचित दोहे भी दिए हैं । पत्र सख्या–२८ । मशीन के बने कागज । आकार–साधारणत ८ २५×३ ५ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–नाममात्र को । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–५ । अक्षर–प्रतिपक्ति–(टीका मे) २३–२५ । सस्कृत श्लोक की अर्द्धाली पहले देकर टीका चलती है और क्रम भग नही होता । श्री नमिदास द्वारा सवत १९४८ म लिपिबद्ध । मोटे अक्षर । लिपि–स्पष्ट । प्राप्तिस्थान—पीपासर साथरी ।

आदि—प्रथम पत्र के पहले पृष्ठ पर–अथ जमाष्टक सटीक लिख्यते । श्री श्री गणे

शायनम ॥
मायातीत त्रिगुण रहित ॥ श्री गुरु जभनतोस्मी ॥
सकल भुवन प्रकाश ॥ सच्चिदानद रुप ॥१॥
दो० ॥ श्री गुरु पदरज आन कै ॥ सव सतन के पाय ॥
मौली ऊपर धार क ॥ टीका करु सुहाय ॥२॥
॥ अथ टीका ॥ श्री जभेश्वर कु नमस्कार करु ॥ ॥ कैसे है सबके इश्वर है ॥
परमब्रह्म रूप है ॥ परे स परे है सत सत सरुप है सव के भजने योग है ॥
अ त—॥दो०॥ श्री गुरु सत सरोज पद वसे हृदे मम आय
जभाष्टक प्रवध को दोनो तिलक बनाय ॥३॥
प्रतद्वित पठन्तित्य सव पाप प्रमुच्यते १०
दाहा शुद्ध की गम नहीं अक्षर का नहीं बोध
विष्णोदास अस्तुति कर सत जु लीजो सोध ४

इति श्री गोविन्द स्वामी कृत विष्णोदास विलास टीकाया जभाष्टक सपूरणम् ॥ लिष्यत साधु श्री १०८ महाराज श्री मोत्तिराम जी का शिष्य नृसिंगदास मासोतम—मासे प्रस्व मासे सुल्क पक्षे तिथि सप्तम्या शनिवासरे साल १९४८ ॥ पठन्नाथ विहारीदास साधु विस्नोई ॥ श्री जभेश्वरायनमोन श्री विष्णु

५८ चितावणी, सुन्दरदासजी की तथा सुरजनदासजी की । पत्र सख्या—७, देशी कागज । आकार—६×४ इ च । हाशिया—दाएँ, बाएँ—पौन इ च । पक्ति—प्रतिपृष्ठ साधारणत —१०, कि तु किसी किसी मे ११ पक्तिया भी हैं। अक्षर—प्रतिपक्ति—४१—४६ । सु दरदासजी की तीसरी रचना—तक चितावणी के पश्चात पत्र ६ के प्रथम पृष्ठ पर पुष्पिका इस प्रकार है—सवत १८५४ । मिति माह सुदि नौमी वार शुनवार लिषते साघ गगाराम ताजजी का चेला गाव अलाय मधे किसन सीहागर घरे । मगल मस्तु ॥ तत्पश्चात सुरजनजी कृत ग्र थ चित्रामणी का आदि अ श इस प्रकार है —
श्री परमात्मनेन्म लिषते चित्रामणी सुरजनजी की
दोहा—कहा कम जर कोथली कहां तिसना कहा तीर
रे मन कित पित मात तु सपति बध्यो सरीर १

इस रचना के पश्चात पुष्पिका नही है, पर लिपिकाल सवत १८५४ ही मानना चाहिए क्योकि पत्र, लिखावट, स्याही या प्राचीनता म किसी प्रकार का भेद नहीं है । लिपि—सुवाच्य । प्राप्तिस्थान—पीपासर सायरी । इसम चार चितावणी ग्रन्थो का सकलन है पहली तीन सु दरदासजी की और चौथी सुरजनजी की —(क) विवेक चितावणी—छ द सख्या—५३ । (ख) हरिबोल चितावणी—छ द सख्या—३० । (ग) तक चितावणी—छद सख्या—४० । (घ) ग्रथ चित्रामणी—छद सख्या—२५ ।
आदि—अथ सु दरदासजी की विवेक चितावणी ॥
पूरनहार निरजन राया जिनि यहु नख सख साज बनाया
ताकों भूलि गयो बिभचारी अईया मनिषहु बूझि तुम्हारी १

कृष्ण कमल नयन नारायन स्वामी ॥ सब द्वारका अंतरजामी ॥
वासुदेव सकर्षण छाज ॥ प्रद्युम्न अनिरुद्ध विराज ॥
अग्र-वारायदी आनद गुन गाऊ ॥ सब सतन को सीस नवावू ॥
दीन परतीते है दासु सुदामा ॥ नमसकार गुरुदेव समाना ॥ इति श्री सुदामा की बारयडी समाप्ता मीता वसाष व्दी १४ वार ब्रमपतीवार ?

६२ प्रहलाद चिरत, ऊधोजी कृत । अपूर्ण । उपलब्ध-पत्रसख्या-२७, (१ से २५ तक तथा २८वा और ३०वा) । देसी कागज । जीर्ण, खडित । आकार-९×४ २५ इच । हासिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पत्र २५ तक २७२, २८ म २९६ से ३०५ और ३०वें मे ३१८ म ३२८ तक छन्द हैं । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८८० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३० । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी ।
आदि-॥ दो० ॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ प्रहलाद चिरत लिप्यत ॥ दोहा ॥
प्रथम बदू गुरदेव कौं ॥ दुतीयँ बदू सब साव ॥
त्रितीय बदू महा विष्ण कौं ॥ कहौं चिरत प्रहलाद ॥१॥
अन्त-(३०वें पत्र का दूसरा पृष्ठ)
अजर जरे अरत नहीं भावे ॥ कृष्ण अशा सिर उपर रावे ॥२८॥
जाका कारज हरजी करया ॥ नव कोडी ले सहके त + + ॥

६३ आदि बसावली, पच्चीस नाम (विष्णु के), कलस और पाहल । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या-३ (सख्या-३, ४ तथा ५) । पत्रो के बाएँ हासिए म हो० लिखा है जिमस विदित होता है कि होम पाठ है । देसी कागज । आकार-९×४ इन्च । हासिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-२५-२८ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) आदि बसावली, (ख) पचीस नाम, (ग) कलस, (घ) पाहल (अपूर्ण)
आदि-सिनान सुभाइया चौथो सिनान तो पिता रूपी पवन् सिनान जल सागरा, विसन अभे विसन वते
अन्त-(पाहल मत्र)-नेम सलाई नेम जल नेमे क जी पाहली
कायम राजा आईयो वे + + + ॥

६४ होम पाठ आदि । पत्र सख्या-५, देसी कागज । जीर्ण, खण्डित । आकार-९×४ इच । हासिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । लिपि-सुपाठ्य । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३४-३६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी । इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) पारवती इसवर सवादे गोत्राचार, (ख) बसदर के २५ नाम, (ग) ईश्वर का पारवती को उपदेस-विष्णु-महत्ता के सबध म । (घ) आदि बसावली, (ङ) विष्णु के पच्चीस नाम, (च) त्रिवरस, (छ) अस्तुति, (ज) कलस, (झ) पाहल, (ञ) फुटकर कवित्त-३, (ट)

बालक को मत्र (यह बाद म लिखा गया प्रतीत होता है क्योंकि भिन्न हाथ की लिखावट म है)।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री महादेव उवाच ॥ उ जदू वास रूपू ॥ पूज्यनुस्याम निधु ॥ गुणे निधु ॥ आकास पुत्र ॥ सता रामु ॥

अत-जदि कान पडया सूवा तवि वदा विसनोई हूवा इति बालक को मत्र १

६५ (म०-प्रति)। १४ इच लम्बाई के दशी कागजो को मोडकर बीच से सिली, पतले गत्ते की जिल्द बधी हुई पोथी। जीर्ण। आकार-प्रति पत्र-७×७ इच। गहरे बादामी पत्र। हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत पौन से एक इच तक। तीन-चार हाथो की लिखावट म, अत प्रति पृष्ठ मे पक्तियाँ समान नही हैं। सवत १८४८-१८५३ के बीच लिपिबद्ध। यत्र तत्र स्याही फली हुई है। लिपि-सामान्यत -पाठ्य। मुकाम गाँव के श्री मल्लूराम थापन से प्राप्त होने के कारण इसका नाम म०-प्रति रखा गया है। इसम ये रचनाएँ हैं —

(क) ध्रूचरित्र, रचयिता-जन गोपाल। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४-१५। बीच मे कई पत्रो के एक ओर ही लिखा गया है। अत-विकसत सुत अपराध को। ज माप पल पितमात ॥२१६॥ गाथा ॥ चौपई ॥३००॥ इति श्री ध्रू चरित्र सपूरण ॥ थापन मदा वाचनाथ ॥ स० १८४८ चत्र सुदि ७ लि। भगवानदास विनचद तारा भीमा लिपत हेमटसर मधे ॥ (ख) सबद, पहला। प्रसग समेत। (भिन्न हाथ की लिखावट म)। (ग) सबद वाणी, प्रसग समेत। प्रसग पद्य म हैं। सबद सख्या-११७। सबद ६७ स पूव के पत्र सिलाई की ओर स फट कर अलग हो गए है तथा चारो ओर से खडित है। लिपिकार-अनाम। मोट अक्षर। लिपि-स्पष्ट। सार सबद एक हाथ की लिखावट म।

आदि-"द० ॥ श्री गणेशायनम ॥ लिषते श्री वायक झाभजी रा ॥

काच करव हल रया। सबद जगाया दीप।
बाभण को प्रचा दिया। अ सा अचरज कीय।१।
जो बूझा सोइ कहा। अल्प ल्याया भेव।
थोपा सब गमाइया। अवि सवद कह्या क्षम देव।२। गुर चीन्हों गुर चीन्ह "।

अन्त-भल कीयाँ तो भल बुधि पाव वुरीया वुरी कमाव ११७ इति श्री झभजी री बाणी साप्या सपूरण समाप्ता ॥ श्री रस्तु कल्याणमस्तु सभवस्तु ॥ पक्ति-प्रति पृष्ठ-१८। अक्षर-प्रति पक्ति-२०-२१। लिपिकाल-सवत १८४८ और १८५३ के बाच किसी समय, क्योंकि इसक पश्चात् भिन्न हाथ का लिखावट म वडीनवण है जो सवत १८५३ मे लिपिबद्ध की गई थी। (घ) वडी नवण।-इति श्री वडी नुणि सपूरण भवन सम १८५३। (ड) श्री कृष्णा अर्जुन सवादे श्री विष्णु अठाईस नाम। (च) गोव्राचार (पावता ईश्वर सवाद)। आदि म-लिखत मदा थापन पम थापन का वेटा। (छ) वसद का नाम,-अन्त म-लापतू थापन वीसरा समत १८५२ मिना वमाके ब° ८। (ज) फुटकर छन्द, दादू के चार दोहे तथा सुरजनजी की यह ए

साखी–पनारास आतार लीया गुर आठम सोम अठोतर। (भ) फुटकर भजन, सख्या–३। कबीर, मीरा तथा अज्ञात कवि कृत। (ञ) दस अवतार, रचयिता–अज्ञात। (ट) गुगलिय की कथा, वील्होजी कृत, छन्द सख्या–८६। (ठ) सच अखरी विगतावली, वील्होजी कृत, छन्द सख्या–४८। स्याही फल जाने और कही कही पत्र भीग जाने से अक्षर सुवाच्य नही हैं, दो पत्र एक ओर ही लिखे गए हैं। (ड) कथा दूणपुर की, वील्होजी कृत, छन्द सख्या–६०। ८ पत्रों म एक ओर ही लिखी हुई है। लिपि कही कही अस्पष्ट। (ढ) कथा जैसलमेर की, वील्होजी कृत, छन्द सख्या १११। २२ पत्रों म सम्पूर्ण, जिनम केवल ९वा पत्र ही दोना ओर लिखा गया है, शेष सब एक ओर लिखे हुए हैं। लिपि–अस्पष्ट। (ण) कथा ओरडां की, वील्होजी कृत, छन्द सख्या–३३। ६ पत्रों म, जो सभी एक ओर लिखे हुए है। (त) कथा चित्तौड की, केसौजी कृत, छन्द सख्या–१३०। यह १९ पत्रों मे समाप्त हुई हैं जो सभी एक ओर लिखे गए है। कही कही स्याही फलन से लिपि–अस्पष्ट।

आदि–॥ द० ॥ श्री गणेशनायम । अथ धूचिरत्र ग्र थ लिख्यते ।

गुरु गोविंद प्रणाम करीजै। मन वच क्रम चरण चित दीजै।
राम भगति की प्रारम्भ होई। गुपति बात समझाव सोई ।१।
सतयुग तेत्रा द्वापरि गईयो। तब कलियुग को आगम भईयो।
पडवा राज परीछत दीनो। कलि प्रवेस प्रथवी परि कीनो ।२।

अत–बारा सोला सम करि घर ॥ गुर फुरमाई करणी कर ॥
पाच पचीसू रहे समोय ॥ जीवत पाक पलक में होय ॥१२९॥
सुध श्रवन सतगुर का गहो ॥ कारण क्रिया गुर मुखि कहो ॥
सतरा स छिहोत्र सही कथा विचारि केसवो कही ॥ १३० ॥ ॥ कथा सपूरण समापिता ॥ तत्पश्चात भिन्न लिखावट म, फीकी स्याही म अस्पष्ट रूप मे यह लिखा है—समाध ॥ बिसनु ॥ अठाईस नव ॥ सतो सरम पुरण ॥ समापीता ॥

६६ पोथी। १२ इन्च लम्बे देशी कागजों को मोडकर बीच से सिली हुई। सिलाई टूट जाने से पन्ने पृथक हो गए हैं। बीच म एकाध स्थल पर पत्र अप्राप्य। आकार–६×९ इन्च। जीर्ण और खडित। हाशिया–दाएँ, बाएँ–आधे से पौन इन्च तक। अतिम दस पत्र और जिल्द दीमक के खाये हुए है। चार भिन्न हाथो की लिखावट म। पक्ति–प्रतिपृष्ट–२० से २८ तक। सवत १८२० से १८२५ तक लिपिबद्ध। आदि से बीच की सिलाई तक ११५ और पश्चात ११७ फोलियो हैं। प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी। इसम क्रमश ये रचनाएँ हैं—(क) कबीर का रेखता–१। इस पर फोलियो सख्या नही है। (ख) पहलाद चरित, केसौजी कृत, छन्द सख्या–५९५। लिपिकाल–सवत १८२०। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–२७। अक्षर–प्रतिपक्ति–२०–२१। अत–पाच सात नव बारहा ॥ इवक मोहि मिलाय ॥५९५॥ कथा सपुरण समापता लिपतु हरजी दामैजी का चेला वचनारथी सम्पो वरषे म्यती असाढ दुतीय वदि ॥ तिथ ५। वार विसपति ॥ समत १८२० गाव गुना मधे लिपत पहराज सीहाग न

घरे। (ग) ध्रू चिरत, जन गोपाल कृत, छन्द सख्या–२०८। प्रति पृष्ठ म २४ पक्तियाँ। अन्त–मैं अज्ञान मत आपनी। कपि कहि कुछ बात ॥ बकसत गुत अपराध कू। जन गोपाल पित मात ॥ २०८॥ एती ध्रू चिर सपूर समापिता ॥ लिपतु का हा नाथाजी का स्यप सुपलास दूधाधारी का पोता स्यप वचनारथी सरूपा ॥ लिपतु गाव गुढा मधे पहराज सोहाग र घरू ॥ समत ॥ ॥ १८२० ’। (घ) मोहमरद राजा की कथा, रचयिता–जन जगनाथ। छद सख्या–११७। प्रति पृष्ठ म २१–२२ पक्तियाँ। अन्त– ॥ लिपतु प्रेमदास नाथाजी का स्यप ॥ सुपलाल दूधाधारी का पोता स्यप। पठनारथी सरूपा ॥ समत १८२० ॥ वृषे मिती दुतीय असाढ सुद तिथ ६ ॥ वार थावरवार ॥ गाव गुढा मधे पहराज सोहाग रे घरू ॥ ।
(ङ) कथा सुरगारोहणी, केसौजी कृत, छन्द सख्या–(२१६ + १)=२१७। "लिपतु हरजी ॥ दामजी का चेला ॥ वाचनारथी सरूपो ॥ समत १८२० ॥ वषे म्यती ॥ आसाढ दुतीय सुदि ॥ ८ ॥ वार सोमवार। लिपतु गांव गुढा मधे ॥ पहरा सोहागर घरे।" (च) घडाबध, वोल्हैजी का। छद सख्या–५३। प्रति पृष्ठ म २५ पक्तियाँ। (छ) अवतार कथा, सुरजनजी कृत। छन्द सख्या–२४०। प्रति पृष्ठ म २६ पक्तियाँ। (ज) चिन्तामणी, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या–२७। (झ) धरमचरी, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या–८०। (ञ) चेतन कथा, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या–३०। लिपिकार के अनुसार (झ) और (ञ) एक ही रचना है। दोनों की छन्द सख्या का अलग अलग उल्लेख नही है। केवल ८० व छन्द के बाद 'अथ चेतन कथा लीयते' नाम दिया है। पुष्पिका म दोनों का उल्लेख ऐसे है—एती चतन कथा धमचरी सपुरण समापिता ॥ (ट) ग्यान महातम, सुरजनजी कृत, छन्द सख्या–२३६ (भूल से २३५ के बाद ३३६ लिखी गई है)। (ठ) छपइया उदजी का। छप्पय सख्या–५४। उदजी का छपइया सपुरण समापेता। लिपतु परमाणद वणहाल ॥ (च) से (ठ) रचनाएँ परमानन्दजी वणिहाल की लिखी हुई हैं। (ड) बहुलोवन की कथा, केसौजी कृत। छद सख्या–५२०। लिपते हरजी दामजी को चलो ॥ पोथी लाल जाणी की की उतारी कीयो ॥ समत १८२१ ॥ वषे मिती चत वदि १० ॥ वार थावर ॥ गाव जाभोलाव मध ॥ (ढ) बसावली, रचयिता–अज्ञात। फोलियो ११५ व के दाएँ पत्र तक। प्रति पृष्ठ–२२ पक्तियाँ। इससे आगे की फोलियो सख्या अलग से आरम्भ होती है, आदि के दो पत्र नहीं हैं। (ण) वाहन नाम–२८। (त) सुत नाम–२७। (थ) रिपु नाम–२८। (द) गुणाय–८१ + १ सवइया। (ध) होरावेधो–छन्द–१०। (न) पदमिनी–हस्तनी–चित्रणी–सषणी–वणन–सस्कृत म–छन्द ५। (प) गोत्राचार ७ छन्द। (फ) ससवर क नाम। (ब) ईश्वर-पारबती सवाद। (भ) आदि बसावली। (म) पच्चीस नाम (विष्णु के)। (य) विवरस। (र) स्तुति। (ल) कलस। (व) पाहल। (श) बालक की मत्र। (ष) ग्यांन तिलक–सुरजनदास कृत। छद सख्या–१०५। (स) गज मोष, सुरजनदासजी कृत। छन्द सख्या–७०। (ह) कवित्त राम रास का भापन सुरजनजी का कह्या। छन्द सख्या–२६४। फोलियो–२१ स ३३ वें के दाएँ पत्र

तक । इसमे सुरजनजी को थापन बनाया गया है जो भूल है । (ख) छौंकारी आरजा (ग) सतरज री विगत । (ञ) हीरावेधो (१ छप्पय)–चव पदम श्री राम पह ये मदोवरि उचरह १ । (अ) कथा अपार्दासिघ की, कनकदास कृत । छन्द सख्या ११२ । लिखावट अत्यन्त घसीटी लिपि मे है । अक्षर बहुत मोटे । लेपतु येता थापन लेपावतु सरुपा प्रतीत ॥ (आ) कथा चोलौड की, रचयिता–केसौजी, छन्द सख्या–१२८ । लीपतु थापन अमरा पेतारा ('दोरा छ' लिखकर काटा गया है) पस दसक्त दोय जणा रा छ ॥ समत् १८२४ मीति आसाढ सुद ११ देव पोढणी एकादसी गाव चौडी + + + + ॥ (इ) साखियां । सख्या–१०१, तीन हाथो की लिखावट मे । कुल १०१ साखिया इस प्रकार हैं—(१) साखी कणाकी–सख्या ८ । (२) साखी छया की–सख्या ९ से ५६ । (३) साखी कणाकी स०–५७ से ८५ तक । (५) साखी छया की–सख्या ८६ से ९५ तक । पन चारो ओर से खडित । दीमक खा जाने के कारण अनेक पत्रो म छेद हो गए हैं । (५) रसीलो (९६), (५५ छन्दो का) । (६) साखी सेजडली की (९७), (१२ छन्दो मे) । (७) साखी गोपीचद की (९८), (३८ छन्दो मे) । (८) आविलो (९९), (१७ छन्दों की बीच म सस्कृत श्लोक हैं) । (९) रामो की बीनती (१००), (११ छन्द) । (१०) उमाही–(१०१), (२१ छन्दो मे)–फो० १०७ के बाएँ पृष्ठ तक) । पुष्पिका–मापी सपूरणो स० १८२६ व्रिपे म्यती भादवा सुदि ।२।। वार थावरवार लिपतु हरजी वणिहास ॥ वाच जिक न नवण । (ई) फुटकर भजन आदि । दीमक खा जाने के कारण पत्रो मे छेद हो गए हैं । जन रहमत–१, तुलसीदास–१, सुरसीदास–४ । कबीर–१ । अज्ञात–१, जन हरीदास–१, हीरानव की हिडोलणो, २४ अवतारो के नाम आदि हैं । लिपि–स्पष्ट नही है । (उ) पूल्हैजी की कथा, रचयिता–बील्होजी, छन्द सख्या–२३ । लिपि–पाठ्य नही है । (ऊ) साखियां–फोलियो १११ व क बाएँ पत्र से । इसके पश्चात १११ वें के दायें पत्र से फोलियो ११५ तक–पन्ने अप्राप्य । फो० ११६ वें का दाया पत्र उपलब्ध है, जिसमे किसी रचना का कुछ अ न तथा आडा आदि है । (ए) गोरख गणेस की गुसटि, रचयिता अज्ञात । छन्द–३५ । फोलियो–११७–११८ व के दाएँ पृष्ठ तक । लिपि–पाठ्य नही है । पूरी रचना नही पढी जा सकती । छन्द ३३ के पश्चात का अ श एव पुष्पिका नीचे उद्धृत है –

आदि–श्री विसनजी सत सही ॥ लिपते रेपता कविरजी का

सति कबीर सबग गुर स्येले । दया के तपत पवठ भाई ॥
ग्यांन के महल मै सकल सुप साहबि ॥ साध सतसग मिल भेद पाई ॥
भेद पाये जिना भरम भाज नहीं भरम जजाल घर काल पाई
देप दिव्य दिष्टि सब सिष्टि जहुड ॥ गई मड रहा दुप सब घट छाई ॥

अन्त–आकास ग्रसते अवगति ३३ एता + + । प्रकृति का भेद पवन का थभा अ + + + । पानो ज माया प्रान पुरसि तहा उतपति हूवा सुरति निरति लें सुनि समानां ३४ सोई प्यडे सोई ब्रहमडे ३५ इती गोरष

गणेस को गुटकि सपूरण समत १८२५ मती फागण बद ७ लखत हरजी ॥ पोथी जीवण हार की मांस गांव रासीसर मधे । ( )

६७ गुटका, बीच से सिला हुआ जिल्द यथा । जीर्ण, पत्र-तत्र खंडित, बीच में कई पत्र अप्राप्य । देशी कागज, मोटा और पतला दो प्रकार का । आकार-५ ५ ४ ४ २५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सामान्यतः आधा इंच । तीन भिन्न हाथों की लिखावट म । फोलियो संख्या – १४८ (७८ से ९५ और ९६ स ११३ तथा १ स ५६ और ८० से १३५) । यह संख्या क्रमानुसार न होकर पृथक् पृथक है । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-साधारणतः –८-१० । लिपिकाल-संवत् १८२७ स १८९९ तक । लिपि-प्राय पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री बदरीराम थापन, मुकाम । इसमें क्रमश य रचनाएँ हैं – (क) मातृका सगुन (अपूर्ण) । --लिपिकृत वीन्हा जाणी वचनायतु हिरमि सहर समत १८२७ । (ख) गण । (ग) नौव पत्तरी । (घ) अजय्या जाप । (ङ) पारबती ईसर सवाद । (च) फुटकर सालियां-(१) मेलो बरि मोख चली गिए तेतीसा नाव, केसोजी कृत, २७ छन्द । (२) पनरास प्रवतार सीयो गुर आदिम सोम अठोतर, सुरजनजी कृत, छंदा की, छन्द-४ । (छ) आरतियां-२, साखी-१ । क्रमश पीताम्बर-दास, ऊधोदास, और अज्ञात कृत । (ज) गोकलजी के छन्द संख्या-३३ । इ दव छन्द संख्या-३२ (३० + २), तथा एक छन्द अस्तुति होम की । (झ) गोत्राचार (महादेव पार्वती-संवाद-रूप म) । (ञ) आदि शतावली । (ट) बसदर के पच्चीस नाम । (ठ) महादेव का पार्वती को ज्ञानोपदेश (स्नान आदि सम्बन्धी) । (ड) पच्चीस नाम (विष्णु के), (ढ) विचरस्य, (ण) अस्तुति, (त) कलस, (थ) पाहल, (द) बालक-मंत्र, (ध) होमपाठ, (१ कवित्त), (न) चौजुगी, (प) द्व [redacted] चौजुगी, (फ) मंगलाष्टक-केसोजी कृत, (२९ छन्द), (ब) दस अवतार (१० छन्द, अज्ञात कृत), (भ) सप्त श्लोकी गीता, (म) एक श्लोकी भागवत, (य) एक श्लोकी रामायण, (र) सूर्य स्तोत्र--समत १८९९ रा मि । (ल) उमाहो, वील्होजी कृत, छन्द संख्या-२२, (व) पतयो, आलमजी कृत, छन्द स०-११, (श) हिंडोलणों-हीरानंद कृत, छन्द संख्या-८, (ष) साखी १-केसोजी की-साधो मोम्यणो कीयो अलोच जमु रवायोयो (फो० ५५ से ५६ तक) । इसके पश्चात ५७ फोलियो से ७९ फोलियो तक के पत्र अप्राप्य हैं क्योंकि ८० वें फोलिए के दाईं ओर के पृष्ठ पर, प्रहलाद चिरत का अंतिमांश और यह पुष्पिका है-"इति श्री प्रहलाद चिरतर सपूरणम ॥ समत १८९९ मिती चत दुती व सुदि ८ लिपि कृत साध श्री १०८ श्री श्री वीरमदासजी रो चेलो दयारामेण पठनारथी राज्जों" । (स) अमावस्या कथा, मयाराम कृत, छन्द संख्या-१४५ । (ह) तलाव की कथा केसौदास रचित । रूपक संख्या-१२ । (क्ष) अस्तुति अवतार की, गोकलजी कृत, ४१ छन्द । (त्र) परची-३७ छन्द, गोकलजी कृत तथा अस्तुति केसोजी-१३ दोह, केसोजी कृत । (ज्ञ) जांबडो-केसोजी कृत-५ दोहले । (अ) फुटकर भजन-(१) आये म्हार जम गुर जगदीस, गंगादास कृत, (२) आरती हो जी द्वारिका रो राव किसन हरि आरती तेरी-कबीर कृत । (आ) महादेवजी रो नरोवो-दा हाथा की लिखावट म ।

आदि–ऋकारे असुभ ॥ ८ ॥ लृकारे सुभ ॥ ९ ॥ लृकारे असुभ ॥ १० ॥
एकारे सुभ ॥ ११ ॥ ऐकारे असुभ ॥ १२ ॥ ओकारे सुभ ॥ १३ ॥
अन्त–(सरोदो से) सुरज सुर न चलतो ॥ वेज एक जीव ॥ १ ॥ श्री माहादेव पारवती सेवादो सरोदो सपुरण समोपेता समत १८४८ मत वसाष वद ५

६८ पोथी । १४, १३, १२ और ११ इच लम्बे देशी कागजो को मोडकर बीच से सिली हुई, जिल्द युक्त । फोलियो स०–५७२ । पत्राकार–७×१२ इच, ६ ५×१२ इच, ६×१२ इच तथा ५ ५×१२ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणत –१ इच, किन्तु ५ ५×१२ इन्च आकार के पन्नो का दाएँ–१ इच, बाएँ–आधा इच । तीन भिन्न हाथो की लिखावट मे जिनमे एक लिपिकार हरजी वणियाल हैं। लिपिकाल–विष्णोई रचनाओ का–सवत १७८८ तक, रामरासो का सम्भवत इससे पूव ही तथा शेष का सवत १८२८ तक । लिपि–स्पष्ट । रामरासो तो बहुत ही सुन्दर लिपि मे है । पोथी के पूर्वार्द्ध भाग के फोलियो ३५ की साखो उत्तरार्द्ध भाग के फोलियो ५५० से पुन प्रारम्भ होती है । आदि के ३५ तथा अन्त के २३ (५५० से ५७२) फोलियो का अ श एक हाथ की लिखावट मे है । पक्ति सामान्यत –प्रति पृष्ठ ३५–३७ । अक्षर–प्रति पक्ति १५–१९ । प्राप्तिस्थान–श्री घोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । इसम क्रमश ये रचनाए हैं—(क) पहलाद चिरत, केसोजी कृत । छन्द सख्या–५९६ । (फो० १ से २२ तक) । (ख) साखिया–(फो० २२ से ३५ तक), पुन इसी क्रम म इनसे आगे की छन्द सख्या देकर फो० ५५० से ५५५ तक और साखिया लिखी गई है, जिनका विवरण आगे है । इस प्रकार फो० ३५ तक २४ और ५५० से ५५५ तक १५ साखियाँ–कुल मिलाकर ३९ साखियाँ है । प्रस्तुत २४ साखियो का विवरण इस प्रकार है—साधी कणाकी–६ साखिया । (अन्त म सख्या ७ भूल से लिखी गई है), (फो० २२–२४) । (१) साधो मामणो कीयो छ मलोच कुमो रचावीयो, उदोजी कृत ४१ पक्तियाँ । (२) आवो मिलो जमल जुलो । सिवरी सिरजणहार, केसोजी कृत, १३ पक्तियाँ । (३) जुमल आवो गुर आइयो ॥ सुपही करो जे भाय, सुरजनजी कृत, १३ पक्तियाँ । (४) आवो मिलो साधो मोमिणो ॥ गुर मिलि कुमो रचाय, वील्होजी कृत, १२ पक्तियाँ । (५) आवो रलो साधो मोमिणों ॥ रल करि जुमु रचाय, आलमजी कृत, १३ पक्तियाँ । (६) दिवलो दीन दयाला मा ध्याइय ॥ होइय सुरा सरीपा गुर आइयो, अज्ञात कृत, १० पक्तियाँ । (ग) होम को पाठ गोत्राचार–फो० २४ । (घ) बसद्र का नाव, साथ ही विष्णु–महिमा आदि है । फो० २५, (ड) आदि वसावली । (च) पच्चीस नाम, विष्णु के । (छ) विवरस–फो० २५–२६ । इति विवरसि होम को पाठ सपुरण । (स्पष्ट है कि ऊपर की सभी कृतियाँ–(ग) से (छ) तक होम पाठ से सबधित हैं) । (ज) व्याह सुरत–फो०–२६ । (झ) चौजुगी होंदगी, फो०–२६–२७ । (ञ) गुरमत्र–फो०–२७–२८ । (ट) परम तत मन्त्र फो०–२८ । (ठ) बाल्क को मत्र, फो०–२८ । (ड) गुणेस गायत्री, फो०–२८ । (ढ) निरजण गायत्री, फो०–२८ । (ण) गाइत्री, फो० २८–२९ । (त) साखी

जांभाणी, (२९ से ३५ फो० तक)—वाणी—(१) दिलमां दामम थीणो मायो मोमिणो ॥ प्रदेसी सगारी, अज्ञात कृत–१० पक्तियां, (२) जीव क काज जमल जाइय ॥ बीज गुर फुरमाइ मरो माइयो, केसोजी कृत, १२ पक्तियां, (३) मर्गो गुणों गुणयतो देव ॥ जद्द गुण न लाभ छव, वील्होजी कृत, २२ पक्तियां, (४) साइयां जुगदातार ॥ पाणी मु पीड करणां–सिवदास कृत, २० पक्तियां, (५) सिवरौ श्रीमति को राव ॥ माइ राजा मय जपिय, समसदीन कृत–१९ पक्तियां। साखी छंदा की—(६) रे मन मीठा लोभ पइठा–अज्ञात कृत–४ छन्द, (७) रे मन मरा न करि मुकेरा–केसोजी कृत, ८ छन्द, (८) रे गुर भाइ मातु बिमन सगाइ–सुरजनजी कृत–छन्द ८, (९) रे विणजारा न करि पमारा, भीवराज–छन्द ४। (१०) कलियुग तीरथ थापियो। भाग परापति पावीयो, रायचंद कृत–४ छन्द। (११) भौ तिज तीरथ तालयो, केसोजी कृत–छन्द संख्या–४। (१२) गुर क कमय पुरषा मेरा बाबा ॥ जाहु का हरिया भाग, ऊदोजी कृत, छन्द ४। (१३) गुर पुरी दातार ॥ म्हे छा थारा मगता–ऊदोजी कृत, छन्द ५। (१४) मैं तु मांहरो सांमैं स पीहर सिव रिया–ऊदोजी कृत, छन्द ७। (१५) ओह गुर आया जामराजदव, ऊदोजी कृत, छन्द ५। (१६) बाज बाज रे मदनिया–ऊदोजी कृत–छन्द–४। (१७) काया तो मोमिणी रतन सरीखी, ऊदोजी कृत–छन्द–५। (१८) बाबा सामत्य ज बागड देस, वील्होजी कृत, छन्द–५। यह फो० ५५० पर पुन आरम्भ होकर पूरी हुई है (यहां केवल ऊपर की पक्ति मात्र ही लिखी गई है)। फोलियो ३५ का दायां पत्र खाली है। यहां तक की रचनाएँ एक हाथ की लिखावट म हैं। (ख) गुण श्री रामरासो–माधोदास दधवाडिया कृत–फो० ३६ से ७०। (विशेष–३६ वें फोलियो के बाएँ पृष्ठ पर इसके १९ छन्द हैं, पश्चात दाएँ पृष्ठ पर छन्द संख्या ३ से आरम्भ होती है। इन १९ छन्दों और दूसरे पृष्ठ के ३ छन्दों के बीच सीधा कोई सम्बन्ध या तारतम्य नहीं बठता प्रतीत होता। हो सकता है जिल्द बधवाते समय एकाध पत्र या फोलियो भूल से छूट गए हो)। इती श्री रामरासो माधवदास दधवाडीयारो कहीयो सपूरण समाप्ता ॥ रासो जस श्री राम रस ॥ वदियो निगम वखाण ॥ कथित माधवदास कवि ॥ लिखित सुपात्र सुजाण ॥३॥ ग्रथाग्रथ सहस दोइ २००० ॥ (ग) श्री मद भगवदगीता का संस्कृत श्लोकों सहित दोहे छन्द में भावानुवाद। अनुवादक–नाजर आनन्दराम। हरजी वणिहाल द्वारा सवत १८२८ म लिपिबद्ध। फोलियो ७० से ११० तक। पहले संस्कृत श्लोक और बाद म उसी का भावानुवाद दोहा म किया है।

अन्त–करत कहू चूक्यो जु कवि। लेखक लिख्यो जु मूल।

नाजर आनदराम सब। कीयो सोध लय मूल ॥ १ ॥ समत १८२८ रा वर्षे शाके १६९३ प्रवतमान। मासोत्तममास कृष्णा पक्ष आसाढ दुतीय चन्द्र वार शनीश्चर ॥ लिपीकृत हरजी वणिहाल ग्राम कूडासास मध्य वाल्हा जाणी घर ॥ ग्रथ गीता पुस्तक जोइसी अनोपराम र मायू लिखीसी ॥ ॥ (घ) गोपीचंद

चरित्र बगग बोध ग्रथ, रचयिता रज्जवजी के शिष्य पेमदास। छन्द सख्या–१५३। (फोलियो–११० स ११७), पक्ति प्रतिपृष्ठ ३०–३२। (न) भगवत भाषा हरिवल्लभ कृत। भागवत के दोहे चौपाइया म हिन्दी मे भावानुवाद। (फोलियो ११७ स ५५० तक) यह तीन भिन्न हाथा की लिखावट म है। कुन दशम् स्कध के ३९ व अध्याय तक का अनुवाद है। अन्त हरिवल्लभ हू सग हूतो प्रभू सेवा के हेत ॥ राजा कछु समभी नहीं मन म भयो अचेत ॥ ४६ ॥ २५५८ ॥ इति श्री भागवते दशम स्कधे हरिवलभ भाषाकृते एकोन पचामतमोध्याय ॥ ४९ ॥ २५५८ ॥ पुरवार्द्ध सपूरण समाप्त पुरण॥ (प) साखिया (फोलियो ५५० से ५५५)–१५ साखिया। (पहले की २४ तथा १५ ये, कुल ३९ साखिया है) प्रतिपृष्ठ म ३४ से ३६ पक्तिया। (१) बावो माभल्य ज छ वागड देस, बील्होजी कृत, छन्द–५। (२) वाव आपि लियो अवतार।। माम्य सभरियलि आवियो, केसोजी कृत–छन्द–५। (३) बावो मिलीयो छ ल मुवण तार जोति विराज निज थला–सुरजनजी कृत, छन्द–५ । (३) बावो विसनो विसन भणित, दामोजी कृत, छन्द–५। (५) साधो सिवरो नीरजण हार। पारब्रम्भ पहली नऊ, केसोजी कृत छन्द–५। (६) सभरि आयो साम्य। सु चीयारा माचो धणी, लखमणदास कृत–छन्द–५। (७) बावो तेतीसा प्रतपाल, गोकल कृत, छन्द–५। (८) सिवरा निरजण हार–॥ भाभेसर जवा धणी–केसोजी कृत,–छन्द–४। (९) जवडा जम्य जगदीस। भाभेसर जीवा धणी–केसोजी कृत–छन्द–४। (१०) मील पछम र देसि। हीवर तुरी पलाहिमी–केसोजी कृत–छन्द–४। (११) पनराम अवतार लीयो। आठम्य मोम अठोतर–सुरजनजी कृत–छन्द–४। (१२) साम्य सिधाग्यो चीनत कीयो। पनरासरि तिरायवें–रायचद कृत– छन्द–४। राग धनासी साषी कणाकी–(१३) दीने जागो दीन जागो। ओह गुर परगट आयो, ऊदोजी कृत–१६ पक्तिया। (१४) जीवलाजी धन्य महुरति धन्य सुवेला। गुर भाभेसर आयो–नाथ कृत, १६ पक्तिया। (१५) हम र दसीया होजी। ओ दमडो वीडाणी (अपूर्ण), ऊदोजी कृत। (फ) सच अखरी वीगतावली, वील्होजी कृत, छन्द सख्या–८७। (फो०–५५५–५५६)। (व) कथा डूगपुर की, वील्होजी कृत छन्द–६०। (फो० ५५६–५५८)। (भ) कथा उदा अतली की, केसोजी कृत–७७ छन्द–(फो०–५५८–५६१)। (म) कथा सहसा जोयाणी की, केसोजी कृत, छ० स०–१०५। (फो० ५६१–५६४)। (य) कथा पुल्हाजी की, वील्होजी कृत–छन्द सख्या–२५ (फो०–५६४–५६५)। (र) कथा बाललीला की, केसोजी कृत, छन्द सख्या–६१। (फो०–५६५–५६७)। (ल) कथा ब्रमचरी (तथा कथा चेतन), सुरजनजी कृत–छन्द सख्या–११५। (फो०–५६७–५७१)। (फो० ५७१ से) —

जन सुरजन की बीनती ॥ अज्या तिष सहाय ॥
पुर गुर की पुहैले ॥ सरण वठा आय ॥ ११४
मनसा वाचा करमना ॥ सुणो आतम साय
जन सुरजन की बीनती ॥ वाने की पत राय॥ ११५ ॥

कथा सपूरण समापिता ॥ ॥ सवत ॥ १७८८ ॥ ॥

(ब) विष्णु पजर स्तोत्र (फो० ५७१-५७२) (मस्कृत म)

आदि-श्री विष्णजी सत्य ॥ तिपतु पहलाद चिरत ॥ । राग मारू ॥

दोहा ॥ नारायण पहली नऊ स्वामी सरब सुजांण ॥

आदि भगति कहस्यों कथा पहलाद चिरत परवांण ॥ १ ॥

॥ चोपई ॥ पहलाद चिरत परवांण पयपू ॥ विधि सु बात बर्याणों ॥

बात कहु सांभलियो स्वामी ॥ मो मति सारे जाणों ॥ २ ॥

अन्त-इति श्री ब्रह्माड पुराणे इद्र नारद सवाद विष्णु पजर स्तोत्र सपुण । । श्री हरे नम ॥ श्री मगलमस्तु ॥

६९ कथा ससे जोपाणी की, केसोजी कृत । छन्द सख्या-१०५ । पत्र सख्या-५ । देशी कागज । आकार-९ × ४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३४-३६ । साधु हरकिसनजी के शिष्य परसराम द्वारा सवत् १८७९ म लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, धायूणी जागा, जाभा ।

आदि-श्री विष्णजी ॥ सरब सहा लिष्यते कथा सस जोपाणी की । राग हुसो ॥

॥ दोहा ॥ निरहारी पहली नऊ । सतगुर स्याम सुजांण ॥

येक सत निवाज्यो सांमजो । बाइक करू बर्यांण ॥ १ ॥

अन्त—इ ॥ करणी केसो कहै ॥ आवागवण न होय ॥

जसी जाणी तसी कही ॥ जोडी कथा सपूण होय ॥ १०५ ॥ इति श्री कथा सस जोपाणी की सपुण भवत् ॥ लिष्यत साध श्री हरिकिसनजी का सिष्य परसराम ॥ समत १८७९ वष मिति कातिग वदि । १४ वार मगलवार ॥ गाव लोहावट मधे ॥ श्री ॥

७० गोकलजी के छन्द । पत्र सख्या ८ । देशी कागज । पत्र तन खडित । आकार-९ × ४ इन्च । हाशिया दाए बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति- साधारणत ३४-३६ । श्री परसराम द्वारा सवत् १८७९ म लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, धायूणी जागा, जाभा । इसम गोकलजी की ये दो रचनाए है -(क) औतार की अस्तुति-छन्द सख्या-४५ । (ख) इदव छद, छन्द सख्या-३२ ।

आदि -श्री विष्णजी सत्य ॥ लिष्यतें औतार की अस्तुति ॥ गोकलजी क कहे छद ॥

॥ दोहा ॥ रिधपति सिधपति सोलपति ॥ सुरपति सदा सहाय ॥

मति दाता गोविन्द सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अन्त-रह्या थाको तका बचन पालो बिसन किरपा करो काज सारो ।

दास गोकल कहै आस पूरो अलप ॥ ऊबरू आदि पुरष ओट थारी ॥ २ ॥

इति श्री गोकलजी का छद सपूण ॥ सवत १८७९ मिति कातिग सुदि १५ वार

वसप्त ॥ लिपते साध श्री हरिकिसनजी रा सिष परसराम ॥ गाव लोहाट मधे ॥ १ ॥

७१ पत्र सख्या–३६ । देशी कागज । आकार–९×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाए–पौन इच । पक्ति–प्रति पृष्ठ–१३ । अक्षर–प्रति पक्ति–३४–३६ । साधु श्री हरकिसनजी के चेले फरसरामजी द्वारा सवत १८७८ म लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा । इसम क्रमश निम्नलिखित ९ रचनाएँ हैं —

(क) कथा डूणपुर की, वील्होजी कृत, छन्द सख्या–६० । **(ख) कथा चित्तौड की, केसोजी कृत,** छन्द सख्या–१२८ । **(ग) कथा उदा अतली की, केसोजी कृत ।** छन्द सख्या–७७ । (घ) कथा परमचरी, सुरजनजी कृत–छन्द सख्या–८० । **(ङ) कथा झोरडा की, वील्होजी कृत,** छन्द सख्या–३२ । **(च) बाल लीला, केसौजी कृत,** छन्द सख्या–६१ । **(छ) कथा गुगलीए की, वील्होजी कृत ।** छन्द सख्या–८६ । **(ज) कथा लोहापागल की, केसोजी कृत ।** छन्द सख्या–११८ । **(झ) कथा मेडत की, केसोजी कृत ।** छन्द सख्या–१६३ ।

आदि–श्री विष्णु जी ॥ सत्य सही । लिपते कथा डूणपुर की ॥ राग आसा ॥
॥ दोहा ॥ **सवणि करू गुर आपण ॥ बदू चरण सुभाव ॥**
भगता तारण भो हरण ॥ तीन लोक को राव ॥१॥

अन्त–॥ दोहा ॥ **सतरासै अर छिडोतर ॥ तिथि नव मगलवार ॥**
जिन केस की बीनती ॥ सत्गुर पार उतार ॥१६३॥ इति श्री मेडत की कथा सपूरण ॥ सवत अठार म अठतरा मिति कार्तिक सुदि ७ वार वसपतवार ॥। लिपत साध श्री हरकिसनजी रा चेला फरसराम ॥ गाव लोहाट मधे ॥१॥

७२ **कथा इसकन्दर की, केसोजी कृत,** छन्द सख्या–१९२ । पत्र सख्या–१०, देशी कागज । आकार–९×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इच । अक्षर–प्रति पक्ति–३३–३६ । फरसरामजी द्वारा अनुमानत सवत १८७८ म लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–॥ श्री गणेशायनम लिपत कथा इसकन्दर की ॥ राग सोठि ॥ दोहा ॥
श्री पति पहली सिवरिय ॥ अलप अपार अनत ॥
श्रम गुरु जल थल रहै ॥ भव भाजण भगवत ॥१॥

अन्त–**केस कथा कही कर जोडि ॥ आवागवणि चुकावौ षोडि ॥**
जो यह कथा सुण चित लाय ॥ सत कर मान सुरगे जाय ॥ १९२ ॥ इति श्री इसकन्दर की कथा सपूरण ॥ लिपत साध परसराम ॥

७३ **विष्णु चरित, ऊधोदास कृत ।** छन्द सख्या–११० । पत्र सख्या–१०, मशीन के बने पतले कागज । चारो ओर से खडित । आकार–६ ५×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–८ । अक्षर–प्रति पक्ति–३२–३६ । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि–स्पष्ट । प्राप्ति-

स्थान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-॥ श्री विष्णुजी ॥ अथ विष्णु चरित लिष्यते ॥

चोपई॥ श्री गुर सत चण सिर्नाऊ । अज्ञा होइ विष्णु जस गाऊ ॥

महा विष्णु के चरित अपारा। सुर नर मुनि जन लहे न पारा ॥१॥

अन्त-सोरठा। हरि अवतार अनत ॥ अनत चिरत अवगत तणा

गाव मुनि जन सत। विमल जस भव जल तिरण ॥१०॥ इति श्री विष्णु

चरित्र सपूरण ॥ ॥ ॥ श्री ॥ श्री श्री श्री

७४ परची, गोकलजी कृत, छन्द सख्या-३७, अन्त म २ कवित्त और हैं। पत्र सख्या-३। आकार-९×४ इन्च। हाशिया-दाऐं, बाऐं-पौन इन्च। देशी कागज। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-३३-३६। लिपिकार-अज्ञात। लिपिकाल-सवत १८९८। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, आथूणी जागा, गाव जाभा।

आदि-श्री विष्णव नम अथ परची लिषते ॥

सुषेध्यो स्वामो सोवनधार नमो निज नाथ अको निराकार

मरापत्ति निरष कर मन राव पिछाण्यो दुव परस्या पाव १

अन्त-जपीयो जदि जाप रिद हरि एक क आयो अघ मोचण आप अलेप

भण वड भूप सुण्यो ससार निरजण नाथ उतारण पार ३७ इति परची सपूरण॥

जम जुरा जीव जोपू नहो कोई ताक न सिक अवर अगि

अमर आनुपम आतमा राय असो जित आप हरि २॥ (कवित्त)। समत् १८९८

रा मिति दुतिक मासो वद १ सुकर

७५ गुटका। जिल्द बधा। १२ इन्च लम्बे देशी कागजो को मोडकर बीच से सिला हुआ जिसके कई पत्र पृथक है। जीर्ण। आकार-६×४५ इन्च। हाशिया-साधारणत-दाऐं, बाऐं-पौन इन्च। पानी गिरने से अनेक पत्रो पर स्याही फैल गई है। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२। अक्षर-प्रति पंक्ति-सामान्यत -२०। सवत १७७९ से १८५२ तक लिपिबद्ध। फोलियो या पृष्ठ सख्या नही है। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री महीरामजी धारणिया, मगरिया मडी। इसमे निम्न ये रचनाऐं हैं —(क) ध्रुव चिरत जन गोपाल कृत (अपूर्ण)। इति श्री ध्रुव चिरत सपूरण ॥ समत १८ ॥ ५२ ॥ तिथ ॥ ११ वार सुकरवार ॥ लिषतु ॥ अजबो पूराणी ॥ चेलो गगारामजी को ॥ (ख) श्री मायोदासजी के सबोये। छन्द सख्या-५। (ग) पहेलाद चरित, केसोजी कृत-अपूर्ण, छन्द सख्या १-१७। (घ) पहलाद चित केसौजी कृत-छन्द सख्या-५९६ ॥ पुष्पिका-इति श्री पहलाद चिरत समापिता ॥ समत १८५२ ॥ विरषे मिती-असाढ वद तीज ३ ॥ वार सुकरवार ॥ लिषतु अजबो पूराणी चेलो, गगारामजी को गाव जाभा माह भनन्याव सभ नीपी छ्द जा ॥ श्री भिसनजी सत्य सही श्री रामजी सत्य सत्य ॥ (ङ) अथ जडभरथ, जन गोपाल कृत। छन्द सख्या-१०३। (च) हरिरस, ईसरदास कृत। छन्द सख्या-१६९। समत १८५२ ॥ विरषे मिती असाढ वद तेरस

१३ ।। वार सोमवार । (छ) छमछरी (मईकी) (सवत्सरी) (सवत १७०० से १०० साल) । (ज) गुराचार । समत १७७९ । श्र पे मती असाढ सुध १२ वार सोमवार । (झ) राह को विचार । (ञ) कथा भ्रमचरी तथा कथा चेतन, सुरजनजी कृत । छद सख्या-१०९ । (ट) गोत्राचार । (ठ) वसदर के नाम । अंतिम पृष्ठ मूल से उलटा चिपका दिया गया है । (ड) ईश्वर-पार्वती सवाद रूप म-स्नान आदि का महत्व । (ढ) आदि वसावली (अपूर्ण)

आदि-।। नीसान द्वारा बाजही हय हींसे हाथी गाजही
अमराव् सीस नावही वीस माथ पावही ।।
कनक थार झारीया गडई कटोरी भारीया ।।
रूपाय हेमता थरू रसोईदार सरप रू ।।३।।

अंत-(ड)-से झाल माला कुले विसन ।। विसन थांन थनतरे ।।
विसन सरवा सरव तरे ।। आवो देवो सरवा सरवी को धर्णी ।१।

।। आदि वसावली ।। आदु अन + + + सिसटे न भवणे ।। भव

७९ गुटका, फोलियो सख्या-६६९ । १२ इच लम्बे देशी कागजों को मोडकर वीच से सिला और जिल्द वधा हुआ । पत्राकार-६×४ इच । हाशिया-दाएँ, वाएँ- साधारणत -पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्ति-सामान्यत -१३ । विभिन्न लिपिकारो द्वारा सवत् १८३५ से १९०१ के बीच लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त कौशलदासजी, आमूणी जागा, जाभा । इसम ये रचनाएँ हैं - (क) आवाहन, (सस्कृत २ श्लोक) । (ख) विसरजन-(सस्कृत) छद-४ । (ग) रामाष्टक स्तोत्र, शकराचार्य विरचित (सस्कृत) छद-८ । (घ) नव ग्रह पूजा, पुष्पिका मे रक्षा नाम दिया गया है । (सस्कृत), छद सख्या-६ । इति रक्षा समाप्त समत ।। १९०१ सुदि ७ श्री हरेनम (इस रचना के पश्चात फोलियो सख्या पुन १ से प्रारम्भ होती है) । (ङ) हरिभक्त जस रचयिता अग्रदास के शिष्य नरहरिदास । छद सख्या (४ दोहे + ३ छप्पय)=७ । (च) श्री राधे किष्ण री सगाई री महमा । छद सख्या-५२ । रचयिता भिवानीदास (?) रचनाकाल-(१८३५) काती सुदि ५ । (छ) नरसी मुहता री हु डी री महमा, रचयिता-जेठमल कायस्थ, छद सख्या-८४ । रचना काल, सवत १८२०, जेठ शुक्ल पक्ष-पचमी, बृस्पतिवार । (ज) गीता का हरिबल्लभ कृत हिंदी म पद्यानुवाद । (झ) सनेह लीला (अपरनाम सनह लीला भवर गीता), रचयिता जगमोहन, छद सख्या-१४१ । (ञ) प्रहलाद चिरत, केसौजी कृत । छद सख्या-५९२ । (ट) ऊमाहो, वील्होजी कृत । छद स०-२२ । (ठ) पतवो-आलमजी कृत । छ० स०-११ । (ड) हिंडोलणो-हीरानद कृत । छ० स०-८ । (ढ) साखिया-विभिन्न विष्णोई कवियो द्वारा रचित । (फोलियो-४४४ से ५८४) । साखी सख्या-५८ । (ण) श्री नृसिंह स्तुति, ध्यान, नृसिंह मत्र, कवच आदि (सस्कृत मे) । (त) विष्णु शत नाम (विष्णु पुराण से) (सस्कृत मे) । (थ) विष्णु अठाईस नाम (सस्कृत म) । (द) सप्त श्लोकी गीता (सस्कृत म) । (ध) चतुर श्लोकी भागवत (सस्कृत म)

(न) श्री शङ्कराचार्य विरचित–श्री कृष्णाष्टक (संस्कृत में)। (प) हरिनाम माला (संस्कृत में)। (फ) विष्णु पंजर स्तोत्र (ब्रह्माण्ड पुराण से) (संस्कृत में)। (ब) विष्णु लहरी–शंकराचार्य कृत (संस्कृत में) (फोलियो ६११ तक)। (भ) उषाचरित्र–छन्द १२८। रचयिता–अज्ञात। (म) ज्ञान राय लीला, गोसाई माधोदास रचित। छन्द ११७। (य,विवाह, गणेशस्तोत्र, रक्षा (संस्कृत में)। (र) विप्ररस्य आदि। (ल)अस्तुति, (व) दशअवतार। (श) मंगलाष्टक, (२९ छन्द)। (ष) चौगुजो, (स) छन्द चौजुगी (फो० ६६६ तक)।

आदि श्री गणेशायनम। वृष वाहन स्मा रूढो सप्तजिह्वा हुतासन ॥

सातिक पणक चव अग्नि आवाह्याम्यहं ॥ १ ॥

केशव पुंडरीकाक्ष माधव मधुसूदन ॥

लक्ष्मी सहितो देव विष्णु आवाहयाम्यहं ॥ २ ॥

इति प्रावाहन ॥ अन्त–(फो० ६६६) अनेक अनेक नर योजि योजि रहीलो तो पणि पारि किणी न पाईलो वर मंयकावरदायक स्वामी सरण सुभदायक इति छंद चोजुगी सुमद २ समत १६०१ रा मिती असाढ सुदि ६ लिपी कृत्य श्री १०८ श्री धीरमदास रो चेला दयाराम पठनारथी साधु श्री मावतरामजी

७७ गुटका। जीर्ण। कई पत्र अप्राप्य। देशी कागज। आकार–६×४½ इंच। हाशिया–दायें, बायें–आधा इंच। दो हाथों की लिखावट में। लिपिकाल–संवत १८२०। लिपि–सामान्यतः पाठ्य। बीच की सिलाई तक पूर्वार्द्ध के फोलियों की संख्या १२६ दी हुई है। इतनी संख्या उत्तरार्द्ध की भी होनी चाहिए किन्तु नहीं है। पंक्ति–प्रति पृष्ठ–१३,१४ तथा १०–११। अक्षर–प्रति पंक्ति–क्रमशः २१–२२ तथा १७–२०। प्राप्तिस्थान–महंत–गोकलदासजी, आगूणी जागा, जाम्भा। इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) नामदेवजी की वांणी। पद संख्या–७५। राग टोडी, गुंड और गोरडि में गेय। (ख) फुटकर पद–६, रामरसिक–१, हरिवंस–१, हरिदास–१, हितहरिवंस–१, कबीर–२। (ग) हरचंद सत ग्रंथ–रचयिता–ध्यानदास। छं॰ संख्या–२६२। संमत १८२० वर्षे मिती वैसाष वदि तिथि १४ वार मंगल गाव गुन मधि लिपतं दसवत दोय जगा रा छ वा हा हरजी रा चेला नाथाजी का दासजी का ६, जी ॥ (घ) कवि गह क कवित–संख्या–११। (ङ) नासकेत पुराण बालावोध–१८ अध्याय। गद्य में। (च) फुटकर छन्द–सवइये–७ केसोजी कृत, तथा दोहे ८, अज्ञात रचित। (छ) मूम माया सवाद–केसोजी कृत–१२ छन्द। (ज) फुटकर छप्पय–५, केसोजी कृत–(झ) कवित को विगतय। सुरजनजी कृत। कवित–संख्या–२६। समत १८२० ॥ वर्षे मिती असाढ सुदि निथ ॥ ७ ॥ वार मनीसरवार। लिषतं प्रेमदास नाथाजी का स्वयं गुनाव रुपावाही का पाठार्थ ॥ गाव गुरा मध सुरजा गाजण र घर विषा ॥ स्वहस्त हरजी प्रेमदास दोयाराश। (ञ) राम रक्षा–रामानन्दजी कृत–(हिन्दी में)। (ट) छन्द संख्या–८, सुरजनजी कृत। (ठ) सुरजनजी के कवित संख्या–१५। (ड) नरहरजी का शिलोक मूलो का समये का (मारून–

हिन्दी दोना म)। (ढ) सवइये, सख्या-६, सुदरदासजी कृत। (ए) एकादसी माहा-तम कथा-(गद्य म)

आदि-ग्रथ नामदेवजी की वाणी माडी प्रथम राग टोडी ॥

हरि नाम हीरा हरि नाव हीरा। हरि नाव लेत कटें सब पीरा के टेक

हरि नाव जातो हरि नाव पातो। हरि नाव सकल जीवनि मे क्राती ॥ १ ॥

हरि नाव सकल सुपन की रासी ॥ हर्नांव काटे जम की पासी ॥ २ ॥

हरि नाव सकल भवन ततसार ॥ हरि नाव नामदेव उतरे पार ॥ ३ ॥ १ ॥

अन्त-अजोध्या नगर परस चीत्रकुट श्रीपती रामेस्वर को दरसण कर श्री लीछमनजी को दरसण कर भौर सब तीथ कीया पुन होय कन्या दान कीया पुन्य होय श्री सालगराम सेवन कर ॥ ११ के व्रत पुन्य सब तीथ कीया पुन्य होय ११ सु ईसको पुन्य है मुक्ति को सामो कोहो ११।

७८ गुटका। जीर्ण, दीमक खाया हुआ। कतिपय पत्र अप्राप्य तथा बीच म खाली भी हैं। देशी कागज। आकार-४×३ तथा ४ ५ × ३ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इन्च। फोलियो सख्या एक क्रम मे न होकर अलग अलग रूप से (क्रमश ६५, १२, २१८, और ८६) ४११ तक है। अधिकाश गुटका एक ही हाथ की लिखावट मे, किन्तु अन्तिम कई रचनाएँ दो भिन्न हस्तलिपियो मे हैं। लिपिकाल-सवत् १८६६ से १६०५ तक, अत की (त्र) से (ड) तक रचनाओ का स० १६२३। लिपि-प्राय पाठ्य। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-५-६। अक्षर-प्रतिपक्ति-८-१०। प्राप्तिस्थान-श्री विष्णोई मन्दिर, कोलायत। इसमे ये रचनाएँ हैं-(क) हरजस, सख्या-४। अज्ञात कृत-३ तथा अतिम काल्हू कृत। कई पत्र अप्राप्य। (ख) सोल सुपना री विवरो-रचयिता-अज्ञात। (ग) हरजस १, अ सा गुर हमारा अवधु हांदू तुरक दोया स न्यारा। छद-५। सुरजनजी कृत। (घ) क्का छत्तीसी-ऊधोदास कृत। छद सख्या-३७। (ङ) मगलाष्टक-केसोजी कृत। छद सख्या-२६। (च) भाडली पुराण-गद्य म। रच०-अज्ञात। इति श्री भाडली पुराणे बार मास तीन स साठ दिनारा प्रारिय सपूर्णम्। (छ) धुज पु थो री विचार-असाढ उतता सावण लागता पुन्यों जिण रो नाम धु पुपू कहीज। ये सब फोलियो-६५ तक हैं। इसके पश्चात ४० पत्र खाली हैं तथा आगे की फोलियो सख्या पुन १ से आरम्भ हुई है। (ज) दस अवतार, छन्द-१०। रचयिता-अज्ञात। (झ) कवित्त-१। (ञ) गोत्राचार। (ट) आदि वसावली, (ठ) वसदर के २५ नाम, (ड) जभ स्तुति, गोकलजी रचित। छन्द सख्या ४५। (ढ) जम्भाष्टक, गोविन्दरामजी कृत, सस्कृत म। (ण) इदव छद-सख्या-३२, गोकलजी रचित। फो०-४३ से ४५ अप्राप्य। (त) गायत्री, सस्कृत म, सख्या-२५। नाम ये हैं-ब्रह्म, राम, विष्णु, रुद्र, लक्ष्मी, नृसिंह, लक्ष्मण, कृष्ण, गोपाल, परशुराम, तुलसी, हनुमान, गरुड, अग्नि, पृथ्वी, जल, आकाश, सूर्य, चन्द्र, गुर, पवन, हस, गौरी, देवी एव अनग। समत् १८६६ रा मिती फाल्गुण वदि ११ पठनार्थी श्री वीर-मदासजी लिपीकृत्वा दयाराम। आगे (थ) से (य) तक सभी रचनाएँ सस्कृत म हैं-

(य) श्री विष्णु पुराणे शत नाम। (द) विष्णु अठाईस नाम स्तोत्र। (घ) एक श्लोकी रामायण। (न) एक श्लोकी भागवत। (प) एक श्लोकी महाभारत। (फ) सप्त श्लोकी गीता। (व) चतुश्लोकी भागवत। (भ) हरिनाम माला। (म) सूय दग-नाम। (य) श्रमबेपाक गीता। (र) राम रक्षा। (ल) सनेह लीला भवर गीता, जन मोहन रचित। छ० स०-१३०। समत १८९९ रा मिती ज्येष्ट सुदि १४। (व) अमावस्या महात्म कथा-मयाराम रचित। छ० स०-१४५ (फो० सख्या-१९० से २१८ तक, रचना के ७२ छद पूरे होते हैं, पश्चात फोलियो सख्या नही दी हुई है)। (श) एकादसी महात्म (गद्य म)। (ष) ध्रु चरित्र-जन गोपाल कृत। छ० स०-२२२। (स) एक श्लोकी गीता, (सस्कृत)। (ह) विष्णु पजर स्तोत्र (सस्कृत)। सवत १९०६ रा मिती महा सुदि ३ वार शनिसर। (क्ष) विष्णु सहस्त्र नाम (सस्कृत) (फो० १५-८६, पश्चात् सख्या नही दी गई है)। (त्र) मन चेतावणी-रामचरण कृत-छ० स० १२३। समत १९२३ रा मिती श्रावण सुद १४ वार सनीस। (ण) दीन दरवेस का एक छप्पय-तथा राम रामेति रामेति-श्लोक। (अ) २९ धम की आखडी-तीस दिन सूतक पाच रतवती न्यारो। (आ) अवतारों की महिमा-१ छप्पय, अग्रदास कृत। (इ) फुटकर छद, प्रनात कृत। (लिपि-पाठ्य नही है)

आदि-कौं चल्या सीता लीनी लार
 य धन में हम रणवास में कौन सहे सिर भार ३
 रामधदर त्यागी नही हम लीयो बराग
 जो तुमकौं सग ल चल पड जोग में दाग ४
 कर डोवो गल गूदडी धरयो भिषारी भेष
 नाम निरजन कारण गुरु गोरष दीया उपदेस ५ ॥ ३ ॥ (फोलियो-२)

अन्त-ज ज मीन वाराह कमठ नरहर बल बावन।
 परसराम रघुबीर कृष्ण कित जु पावन।
 बुध नौकलकी व्यास पिरथुय रहस मन्न।
 ध्रम रस हृयीव इवरषेन धनत्र।
 बदरी पतत पल वत सनकादिक करणा करो।
 चोविस रूप लिला रची श्री अगरदास उर पद धरो। (आ-रचना से)

७९ प्रह्लाद चिरत, ऊधोजी कृत। छन्द सख्या-३४६। गुटका। ऊपर स भिला हुआ। पत्र सख्या-४८ (फोलिया ८७)। देशी कागज। चिकनाई लगा हुआ, गहरा बादामी। आकार-५ ५×८ ५ इच। हाशिया-सिलाई की ओर पौन इच, किनारा की ओर १ इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-१६। सवत १८४१ म प्रागमुर किनारा, नगीनदास द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-पापासर मायगे।

आदि-श्री श्री गणेशायनम अथ प्रह्लाद चिरत लिखत
॥ दोहा ॥ प्रथम बदू गुर देव कू ॥ दुनियें बदु सब साद ॥
 किसनै बदु मद्दा विष्णु कु ॥ कहू चिरत प्रह्लाद ॥१॥

अन्त-सोरठा-अघवणा सवत् जाण ठार से अडसठ भए

सत करो परमाण प्रहलाद चिरत वणन करयो ३४७ (३४६) इति श्री ऊधोजी कृत भाषाया प्रहलाद चिरत मपूरणम् १ सवत १६४१ मिती चत सुदि ८ वार वस्यपत के दिन लिप्यत प्राणगुन विष्णोई दिनदार का वेटा नगीन मध्ये रहन वाला उँ हरि तत सत १ ॰ ।

८० रुकमणी मगल रचयिता-रामलला। विभिन्न राग-रागिनिया के अ तगत छन्द सख्या पृथक् पृथक् है। पत्र सख्या-१७, देशी कागज। आकार-९×४ इ च। हाशिया-दाऍ, वाऍ-पौन इ च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३०। लिपि-कार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्ति स्थान-लालासर साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम राग देवगरी

निगम जाकों नित्य गाव ध्यान शिव उर आनहीं

आदि अनादि परिब्रह्मजु के भक्त मोक्ष जानही १

अन्त-राज करौ नागरी द्वारिका भक्त वछल श्री गोपाल

रामलला जन गाव मगल कृष्ण भज जन होय निहाल ८ इति श्री रामलला कृत रुकमणी मगल सपूरणम् ।११।

८१ पोथी, जिल्द बधी (ब०-प्रति)। पत्र-तन खडित। एकाध पत्र-अप्राप्य। अपेक्षा-कृत मोटा देशी कागज। पत्र सख्या-१५२। आकार-१०×७ इ च। हाशिया-दाऍ, वाऍ-पौन इ च। तीन लिपिकारो द्वारा सवत १८३२ से १८३६ तक लिपिबद्ध। लिपि-सामा यत -पाठ्य। पक्ति-प्रति पृष्ठ-(क) हरजी लिखित रचनाओ म २३-२९, (ख) तुलछीदास लिखित सबदवाणी म-३१ तथा (ग) ध्यानदास लिखित रचनाओ म-२४-२५। अक्षर-प्रति पक्ति-क्रमश (क) १८-२०, (ख) २४-२५ तथा (ग) २३-२५। गाव मुकाम के श्री बदरीराम थापन की प्रति होने से इसका नाम ब०-प्रति रखा गया है। इसम ये रचनाएँ हैं —(क) औतार पात का बखाण, वील्होजी कृत। छन्द सख्या-१४०। (ख) गूगलीय की कथा, वील्होजी कृत। छन्द सख्या-८६। (प्रथम रचना का अ तिम और दूसरी का आरम्भ का एक पत्ता भूल से शायद जिल्द बाधते समय, कथा जेसलमेर की के बीच म लगा हुआ है)। (ग) सच अखरी विगतावली, वील्होजी कृत। छन्द सख्या-४८। (घ) कथा डू गपुर की, वील्होजी कृत। छन्द सख्या-६०। (ङ) कथा जेसलमेर की, वील्होजी कृत। छन्द सख्या-८६। (च) कथा झोरडा की, वील्होजी कृत। छन्द सख्या-३३। (छ) कथा ऊदा अतली की, केसोजी कृत। छन्द सख्या ७७। (ज) कथा सस जोखाणी की, केसौ-दासजी कृत। छन्द सख्या-१०६। (झ) कथा चीतोड की, केसौदासजी कृत। छन्द सख्या-१३०। (ञ) कथा पुल्हेजी की, वील्होजी कृत। छन्द सख्या-२५। (ट) कथा असक्दर पातिसाह की, केसौदासजी कृत। छन्द सख्या-१६१। (ठ) कथा बाल लीला, केसौदासजी कृत। छन्द सख्या-६१। (ड) कथा भ्रमचरी तथा कथा चेतन,

गुरजनदासजी कृत । पद संख्या-११ । (ङ) ध्यान माहात्म्य, गुरजनदासजी कृत । छन्द संख्या-१६६ । समत १८३० मिती जेठ सुद १३ लिखते बलिदास हरजी लिख पर प्रति गंगाजी मानाजी का चेला पोथा गांव आसालीवास मधे लिखी ।। शुभ ममतु कल्याण ।।

कथा मधुरदास मैं लियो अरज कर कर धारि ।
पढ़े सुणे अगर जो हुवे । सभी कबीर गुपाली ।।१।।

(ग) पहलाद चिरत, वणीदासजी कृत । छंद संख्या- ६० । (घ) श्री वावन आंभोजी का (सबदवाणी) पद प्रसंग सहित । सबद संख्या-११३ ।

आदि-श्री परमातम राम । श्री गणपत राम ।। लिखते श्री बावन आंभोजी का ।।

गाव कदम अल रहया ।। सबद अगाया पीर ।।
बांभण हू पत्या लिया ।। अ ता अगा अमरत्र पीर ।। १ ।।
जो पूछ्या सोई कह्या ।। अलख लखाया भेव ।।
पीवा सब समाईया ।। जदि सबद कह्या सभदेव ।। २ ।।

सबद ।। गुरु चीन्हो गुरु चीन्ह पिरोहित । गुरु मुख धरम वखाणी ।।

अन्त-भलीया होइ त भल बुधि आव ।। बुरिया बुरी कमावै ।। ११७ ।। सबद । १८३३ ।। लिख ताज भाष्यो मति ।। गढ़ नार मध्य लिखत । सदा सागर हे । लिखायतू राणा प्रताप भाभारथा ।। सबद आंभेजी का सपूरण ।। लिखतू तुलसी दास ।। भाभारथा वणीरामजी का चेला ।। वणीरामजी कासलाज ।। बाबाजी सूर जी का शिष ।। सूरजी परसजी का शिष । परसजी अगारणी । साग बाबा आंभाजी ताई पाट छ सू हम जाणत भा नाहा । जिणी सुसालियजी की निरति या लिखी लिखी छ यथाथ प्रति उतारी है ।। सबद । दोहा ।। कवित्त । चरित्र जो बुध या सोई ।। (च) कथत सुरजनजी रा कह्या, संख्या-३२९ । समत १८३९ रा कमाव माम तिथौ ५ देवा गुरवार लिखत बछनाथ ।। थ्यानरगस दुरासी मध्य जथा प्रति तथा लिखत ।। वाच विचार लिखनु राम राम । (छ) होम को पाठ । (ज) आदि वसावली । (झ) चिवरस । (ञ) कलस थापन । (ट) पाहल । (ठ) चौजुगी चौपाहली । (ड) पाहलि (पुन)

आदि-श्री गणेसाय नम श्री सारदाय नम श्री जिमनजी सत सही ।। लिखतु प्रोहार पात का वपोल

।। दुहा ।। नमणि करु गुर आपण ।। नउ निरमल भाय ।
कर जोड़े बदू चरण ।। सीस नवाय नवाय ।। १ ।।

अंत-मछ की पाहलि ।। कछ की पाहली ।। वारा की पाहली ।। नारसिंघ की पाहलि ।। बावन की पाहलि फरसराम की पाहलि राम लक्षमण की पाहलि । कनकी पाहलि बुध की पाहलि निकलकी पाहलि ।।

८२ सबद वाणी । सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । गुटका, फोलियो संख्या-६६ । मशीन के बने कागज । आकार-६ २५ × ४ इञ्च । हाशिया-दाएँ बाएँ-आधे से

पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१९-२० । लिपि-सुवाच्य । बिहारीदास द्वारा संवत १९३० में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री जम्भगुरवे नमः । अथ शब्द वाणी श्री जाम्भजी की लिखते ॥

गुरु चीन्हो गुरु चीन्ह पिरोहित । गुरु मुख धर्म बखाणी ।

अंत-भलीयां होय तो भल बुध आवै ॥ बुरीया बुरो कमाव ॥ १२० इति श्री शब्द वाणी जाम्भजी की सपूर्णम् भवत ॥ १९३० मिति फागन वदि २ वार मंगल कु लिपिकृत साधु विष्णुदासजी का शिष्य बिहारीदास न ॥

८३ सबदवाणी । सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । गुटका । फोलियो संख्या-७६ । मशीन के बने कागज । आकार-६×३ ७५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर- प्रति पंक्ति-१६ । संवत १९४१ में प्राणसुख बिश्नोई द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री श्री गणेशायनम ॥ अथ शब्दवाणी श्री जाम्भजी लिख्यते ।

ओं गुरु चीन्हों गुरचीन्हि पिरोहित । गुरु मुखि धर्म बखाणीं ॥

अंत-भलीयो होय सो ॥ भल बुद्धि आव ॥ बुरीयो बुरी कमाव १२० ॥ इति श्री शब्द वाणी श्री जाम्भजी की सपूर्णम् ॥ १ ॥ सवत१९४१ मिती जेष्ट वदी २ वार मंगलवार नू लिख्यत प्राणसुख बिश्नोई नगीन वासा । बेटा दिलदार का ॥ श्रो० हरि तत सत

८४ सबदवाणी । सबद-संख्या-१२० । बिना प्रसंग । गुटका । फोलियो संख्या १०५ । मशीन के बने कागज । आकार-६ २५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१४-१५ । लिपि-सुवाच्य । संवत १९६७ में स्वामी साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री श्री जम्भगुरुभ्योनमः ॥ ० ॥ अथ शब्द वाणी श्री जाम्भजी की लिषते ॥ ओं गुरु चीन्हों गुरु चीन्हि पिरोहित गुरु मुख धरम बखाणीं ।

अंत-भलीया होय सो भली बुधि आव बुरिया बुरी कमाव ॥१२०॥ इति श्री सज्जम्भ प्रणीता शब्द वाणी सम्पूर्णम् ॥ संवत् १९६७ मिती फाल्गुण वदि ६ रविवार को नगीना बटा मन्दिर श्री १०८ श्री स्वामी रामानन्दजी का शिष्य स्वामी साहबराम लिखतम

दोहा-हाथ पाव कर कूबडी नीचे मुख अरु नैन

इन कष्टां पोथी लिखी तुम नीके रखियो सैन १

८५ प्रहलाद चिरत-ऊदोजी कृत । छंद संख्या-३५० । गुटका । फोलियो संख्या-३८ । मशीन के बने हल्के पीले रंग के कागज । आकार-६ २५×४ ५० इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पंक्ति-२०-२२ । संवत १९५८ में संतोषदासजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ प्रहलाद चिरत लिषते ॥

दोहा–प्रथम बदु गुरुदेव कु दुतिये वदु सब साथ
त्रितिये बदु महा विष्ण [illegible] कहु चरित प्रहलाद
अंत–समत अठारे स अडसठा माघ सुकल पक्ष जान
तियो तीज सम्पूण भयो प्रहलाद चरित आख्या ३५० इति श्री ३० पा० प्रहलाद चरित्र समाप्तोय समत १९५८ मीती माघ वदी १३ लिपीकृत साध श्री १०८ बालकदासजी का शिष्य सतोषदास प० स्वय ॥

८६ गुटका। फोलियो सख्या–८२। मशीन के बने कागज । आकार–६ २५×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इ च, पक्ति–प्रतिपृष्ठ–८। अक्षर–प्रति पक्ति १८–१६। सवत १९३९ म प्राणसुख विष्णोई द्वारा नगीने म लिपिबद्ध। लिपि–सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान–श्री जीरमरामजी थापन, मुकाम। इसमे दो रचनाएँ हैं —(क) विष्णु सहस्र नाम। (ख) सबदवाणी। सबद सख्या–१२०, विना प्रसग।
आदि–उ श्री गणेशायनम ॥ उ यस्य स्मरण मात्रेण जन्म ससार बधनात ॥
अन्त–भलीयो होय सो भल बुधि भाव ॥ बुरीया बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री "सब" बाणी भाबजी की सपूरणम् ॥ सवत ॥ १९३९ ॥ मिती श्राव शुदि ३ वार सोमर क दिन लिपते पिरानसुप विष्णोई ॥ नगीन मध्ये ॥ ओं तत सत् ॥

८७ प्रहलाद चिरत, केसोदासजी कृत। छन्द सख्या–५६५। पत्र सख्या–१६ । पत्र तत्र खडित और जीर्ण। देशी कागज। आकार–६ ५×३ २५ । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इ च, पक्ति–प्रति पृष्ठ–७। अक्षर–प्रति पक्ति–१८–१६। सवत १८८७ म श्री दयाराम द्वारा लिपिबद्ध। लिपि–सुवाच्य। प्राप्तिस्थान–श्री भीयाराम गायणा, सदलपुर।
आदि–श्री गणेशायनम श्री गुरभ्यानम अथ प्रहलाद चिरत ॥ राग मार ॥
दोहा–नारायण पहली नऊ । सांमी सब सुजाण।
आद भक्त कहसु कथा। पहलाद चिरत परवाण १ ॥
अन्त–मैं बाधण पकड्यो दीन को ॥ सतगुरु करे सहाय
पाच सात नव बाहरी ॥ अवक मोह मिलाय ॥ ५९५ ॥ इति श्री पहलाद चिरत सम्पूरणम् ॥ १ समत ॥ १ १८८७ ॥ रा वर्षे मिती पोह बदि। ३ ॥ वार गुरुवश्रे ॥ लिपी कृत साध श्री बाबाजी श्री बाबाजी १०८ श्री केसोदासजी रा तत्शिष दायाराम लिपत गाव सावणऊ मध्ये ढाणी घतरवाला री बगिची मध।

८८ (हरि) प्रहलाद चिरत, साहबरामजी राहड कृत। छन्द सख्या ६८। पत्र सख्या–१७। देशी कागज। आकार–१२×६ इ च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ २५ इ च, पक्ति–प्रति पृष्ठ–११। अक्षर–प्रतिपक्ति–२७–२८। सवत १९४४ मे साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध। लिपि–पाठ्य। प्राप्तिस्थान–श्री धोकलराम विष्णुभक्त विष्णोई, दुतारा वाली।
आदि–अब गुर कृपा करो ॥ मम बुधि गुन गन देहु ॥
मार भक्ति गुन अमित अति ॥ हूवे परे रहु सेहु ॥ १ ॥

अन्त-शाहबराम हो पुत्र है। पत्र दाखिन के दान
जाभ उपास्क मय कथा। सुन हिय करहिं विलास ॥ ६८ ॥ समत १६४४ रा वर्षे मीती फागण वदी ११ लिपी कृत दारी शाहबरामेण ।१। (पत्र के बीच में)—इति श्री मत शाह रामेण विरचतेयां ॥ हरि प्रहलाद चिरत । सपूरण भवेत । उ तत सत् उँ हरियेन्म)

८९ पत्र सख्या—७ । देशी कागज । आकार—११ ५X५ २५ इ च । हाशिया—दाएँ, बाएँ—१ इ च । पक्ति—प्रतिपृष्ठ—१६ । अक्षर—प्रति पक्ति—४१—४३ । लिपिकार—भगवानदास तथा अज्ञात । लिपिकाल—सवत १८६४ । लिपि—सुवाच्य । इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) धम सवाद, धेमदास कृत । छ द सख्या—१७८ । लिपत साध भगवान । समत १८६४ रा मि भादवा सुदि ७ बार मगल्वार लिपि । चसरकठा मधे ॥ प्राप्ति-स्थान—श्री धावलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली । (ख) ३ कवित्त अल्लूजी के, तुही सान सधीर, जिणि गोवल रायीयो, तथा जठ नदी जल विमल । (ग) २ सवइए, अज्ञात कृत ।
आदि—श्री गणेशाय नम श्री विष्णुजी सत्य ॥ अथ ग्र थ धम सवाद लिपते । श्लोक ॥ प्रथमेंवु विल्वयुं
अन्त—अस बड मैं परि विपता । तब सिंधु को काज तो काहू न कीनां ॥२॥

९० रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग रागिनिया के अ तगत लिखित छ दो की स० पृथक पृथक् है । पत्र सख्या—५३ । देशी कागज । आकार—६ ७५X४ ७५ इ च । हाशिया—दाएँ—बाएँ—पौन इ च । पक्ति—प्रतिपृष्ठ—१३ । अक्षर—प्रति पक्ति—४२—४६ । लिपि—स्पष्ट एव सुवाच्य । लिपिकार—अज्ञात, सवत १६२४ मे लिपिबद्ध ।
प्राप्तिस्थान—श्री स तकुमारजी विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ पदमईया कृत रुक्मणि मगल लिख्यते
॥ दोहा ॥ गौरीनदन वीनवा । सुरपति सुरति सुजान ।
कृष्ण तणो र विवाहलो । रिध सिध परमाण । १ ॥
अन्त—राग सोरठ ॥ जो मगल कु गाव आक पाप परा हो जाव ।
जो मगल सु है काने जाके कोट जन्म के पुन है । १ ।
द्वारामति आनद भयो है । सुर नर देत आसीस ।
भणे पदमैयो वष्णव सु । सिघासण जगदीस । २ । इति श्री पदमया कृत रुक्मणी मगल सपूरण ॥ सवत १६२४ स रा मीती चत सुद एकम ॥ मार सुकरवार ॥

९१ रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग—रागिनियो के अ तगत लिखित छ दो की सख्या पृथक पृथक् है । पत्र सख्या—७० । देशी कागज किन्तु पत्र ४७ से ५८ तक, १२ पत्र मशीन के बने । आकार—१२X६ इ च । हाशिया—दाएँ, बाएँ—१.२५ इन्च । पक्ति—प्रतिपृष्ठ—११ । अक्षर—प्रति पक्ति २८-३५ । सवत १९३९मे साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि—सुवाच्य । प्राप्तिस्थान—श्री सतकुमार विष्णोई,

दुतारावाली।

आदि ॥ ६ ॥ श्री गणेशायनम

॥ दो० ॥ ससार सागर अथाह जल ॥ सुझत वार न पार ॥
गुर गोबिद कृपा करो ॥ मै गाऊं मगलचार ॥ १ ॥

अन्त-जो मगल कु सुन गाय गुन है। याने अधिक बजाय।
पूरण ब्रह्म पदम के स्वामी। मुक्त भक्ति फल पाय ५ इति श्री पदमइया कृत रुकमणी मगल सपूरण स्मत १६३६ मीती म्हा ७ ६ लिपिकृत नारी साहबराम

९२ गनेशजी सुरसती के भजन, साहबरामजी कृत। भजन सख्या-५। पत्र सख्या-२। मशीन के बने कागज। आकार-१२×६ इच। हाशिया-दाएँ-बाएँ-१ इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ म १२। अक्षर-प्रति पक्ति-३३-३६। लिपि-स्पष्ट एव सुवाच्य। साहबरामजी द्वारा अनुमानत सवत् १६३६-४० म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री सन्तकुमारजी बिश्नोई, दुतारावाली।

आदि-अथ गनेशजी सुरसती के भजन लिषते
नाचत गवरी नन्द आऐ क सम सिम २ छिब छाऐ देर ०

अन्त-सुरसत गनपत जो नर गाव जीवत हो मुक्ति पद पावे
साहब सत भव सख्या म्ह ७

९३ गुटका, किनारा से दीमक खाया हुआ। कतिपय पत्र-अप्राप्य। देशी कागज। आकार-५ ७५×४ २५ इच। हाशिया दाएँ, बाएँ-पौन इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-१०-१२। सवत् १८८७ म श्री रतनदासजी द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री रामरिख गायणा, सदलपुर। इसमे ये रचनाए हैं-(क) बारपड़ी, ऊदोदास रचित। छ्द सख्या-३७। न्ती श्री बारपड़ी उदोदास विषते सपूरण लिपत साध भभणा श्री १०८ परमरामजी का सिष्य रतनदास का जे कोई बाच विचार तो नुवण वावजोजी समत १८८७ मिती भादव सुदि १२ मगलवार। (ख) लूर-१, छ्द सख्या-६। हरजस-१, छ्द सख्या-६। क्रमश ऊदोजी अडीग और ऊदोजी नण कृत। (ग) साखी-सख्या-१८। इन कवियो द्वारा रचित - रायचद-२, केसोजी-५, ऊदोजी नण-३, वील्होजी-१, सुरजनजी-२, रामोजी-१, गुणदास-१, रविदास-१ तथा अज्ञात-२। (घ) कथा सलाव की, केसोजी कृत। छद सख्या नही दी है। (ङ) बिहारी के दोहे। सख्या-१३०। (च) भ्रमर गीत-नन्ददास कृत। छद सख्या ७४। (छ) ध्रुवचरित, जनगोपाल कृत। अपूर्ण। प्राप्त छ्द सख्या-२७०।

आदि-श्री विष्णजी सत नही श्री गणेशायनम अथ लिपते वारपडी
कवत कुडलिया ॥ कका केवल क्रिष्ण भजो। छुद धर विसवास।
आन भरोसो छाडदो। राष राम की आस।

अन्त-उलटी मीन चल जल माही हरि भगति मिल हरि माही
जसे सीप समुद ■ न्यारो स्वांत बूद वरिष सुष भारी २७०

जसे चद कमोदनि भावं जल में बसे सप्रेम (अंतिम डेढ पक्ति अस्पष्ट है)

६४ साखी । सख्या-६४ (लिपिकार ने मूल से सख्या ६३ दी है) । विभिन्न विष्णोई कवियों द्वारा रचित । पत्र सख्या-३३ । देशी कागज । आकार-१२×६ इन्च । हाशिया-दाएं, बाएं-सवा इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति- ३५-३७ । सवत १९१० म श्री साहबराम द्वारा लिपिकृत । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान श्री सन्तकुमार विष्णोई, दुतारावाली । आदि-श्री जभायनम राग सुहब ।। कणाकी ।।
साधे मोमणे कीयो अलोच जसु रचावीयो ॥ १ ॥
इ हि जमल पूजली करोडि गुर फुरमाइयो ॥ २ ॥
अन्त-अत ही सुहायो म्हारो सायबो । पीयो म्हारो प्रमें दयाल ।
आलम प्रभुजी रो लाडलो । गोरघर लाल गवाल । १० । ६३ इति श्री साषी माभजी की सपूरण लिपते नाथ श्री गोविंदरामजी रा सिष सायबराम सवत् १९१० रा वर्षे मिती पोह वद १४ वारे गरुवार गाव रामडास (म) घे श्री म्हाराज विलजि रि जाग्या ह वठी ता सम मा स्व थ ।

६५ हरजस, सख्या-१०५ । पत्र सख्या-४० । देशी कागज । आकार-१२×६ इच । हाशिया-दाएं, बाएं-सवा इच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३७ । सवत १९०८ म साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध (१९०८ मीती पो सुध १ लिपते माघ श्री गोविंदरामजी रो सिस सायबराम-पत्र १९ वें पर) । लिपि-स्पष्ट । प्राप्ति-स्थान-श्री सन्तकुमार विष्णोई, दुतारावाली । इसमे सुरतराम, सूरदास, लाल्दास, चन्द्रसखी, बिसनदास, शीतल, अली, तुलसीदास, अगरदास, नानक, कबीर, सुन्दरदास, नरसी, मीराबाई, पुरसीदास, माधोदास, आनीनाथ, रामदास, बख्तावर, देवादास, नामदेव, रदास, केसोजी, मिठुदास, सुरजनजी, पदम आदि के हरजस सग्रहीत हैं । आदि-श्री बीसनजी रा गोडी । श्री भागोत उधारा अग में । टेक

श्री भागोत सुनि सिनकादिक इमृत पीये एक धारा
ध्रु प्रहैलाद भभीषन नारद सिमृत बारमबारा १

अन्त-तुलछीदास सिवरी फल पाऐ दसरत नद कीसोर हो ३
भइया जो आज के सवाद मीठे बोर हो लछमेंना ईति हरजस १०५

६६ सबदवाणी । सवद सख्या-१२३ । गद्य प्रसग समेत । गुटका । जीर्ण और खडित । फोलियो-८० । आकार-६×४ इच । हाशिया-दाएं, बाएं-पौन इच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पक्ति-१२-१६ । अनुमानत सवत् १८२२ मे लिपिबद्ध । (इसी लिखावट मे रावतखेडा से सुन्दरदासजी के सवइयो का एक गुटका और प्राप्त हुआ है, जिनके अन्त मे लिखा है-"इति श्री सुन्दरदास जी के सवईये सपूरण मवेन पठनर्थे साधू महाराज प्रमहम केसोदासजी सवत १८२२" । लिपि-पत्र भीग जाने से यत्र तत्र अस्पष्ट, पर सामान्यत -पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा । इसम स्वीकृत सवद सख्या १०३ के दो सबद (सख्या १०४, १०५) मान हैं तथा स्वीकृत सवद सख्या १०२ भी इसमें १०३ वी सख्या पर है ।

आदि-श्री गणेशायनम श्री विष्णवेनम श्रथ श्री जाभजीरा शब्द लिख्यते । वाच
वरय नीर राख्यो वाचो माटी का दीवटीया भराया जा माहि पाणी धनाय हुक्म
सू दीया जगाया वामण न परचो दिखाल्यो
अन्त-रतन कया थकू ठे वासो तेरा जुरा मरण भय भाज १२३ इति श्री शब्द श्री

९७ प्रहलाद चिरत, ऊदोजी कृत । छन्द सख्या-३५६ । पत्र सख्या-४१ । जीर्ण और
खंडित । मशीन से बने कागज । आकार-९X४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा
इच । पक्ति-प्रति पृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-२४-२६ । सवत् १९२८ म प्रानसुख
विष्णोई द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-स्पष्ट एव सुवाच्य । प्राप्तिस्थान- महन्त भोला-
रामजी, विष्णोई मन्दिर, रावतखेडा ।
आदि-ओ श्री गणेशायन अथ प्रहलाद चिरत लिख्यते
दोहा-प्रथम वदु गुरदेव कु दुतिये वदु सब साद
त्रितीये वदु महा विष्णु कु कहु चित प्रहलाद १
अन्त- सोठों आयवणा स बत जाण ठार से अडसठ भए
सत करो परवाण प्रहलाद चिरत बणन करयो ३५६ इति श्री ऊधोदासजी
कृत भाषाया प्रहलाद चित सपूरणम् १ सम्वत् १९२८ मिति भादु दुजा वदी १ लिपि
कृत प्रानसुख विष्णोई नगानेवाला श्री तत सत श्री राम राम ॥

९८ परची, गोकलजी कृत । छन्द सख्या-३७ । पत्र सख्या-४ । देशी कागज । आकार-
९X४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन से १ इच तक । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ ।
अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२६ । लिपिकाल-अज्ञात, अनुमानत स० १८५० के लगभग
लिपिबद्ध । लिपि-पाठय । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावत
खेडा ।
आदि- श्री गणेशायनम अथ लिषते परची
सुषेच्यो सामी सोवन धार नमो निजनाथ जको निराकार
अन्त-भर्ण वद भूप सुण्यो ससार निरजणनाथ उतारण पार ३७ इति श्री गोकलजी
की परची सपूरणम् १

९९ अमावस्या री कथा, मयाराम कृत । अपूर्ण । प्राप्त छद सख्या-१२९ । पत्र सख्या-
१२ । देशी कागज । आकार-९X४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ- १ स सवा इच ।
पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-पति पक्ति-२० से २५ । लिपिकार-अज्ञात । लिपि
काल-अनुमानत विक्रम उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध । लिपि-पाठय । प्राप्तिस्थान-
महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।
आदि-श्री गणेशायनम लिषतु अमावस्या री कथा कु डलीया ॥
प्रथम बदु गुर देवकू दुतिये बदु सब साध
विष्णु बदु पुत्र तीसर जात मिट जु व्याध्य २
अन्त-कतक दिन विते गुजरि आई ॥ कदली वन म बटत बधाई ॥
बधू आय पाय सब लागी ॥ आसिस दई हाहु सुभागी ॥

१०० कथा वहसोवनी, केसौजी कृत। छंद सख्या-५३८। पत्र मख्या-४४। देशी कागज। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन से १ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रति पंक्ति-२५-२६। साधु तुलसीदास द्वारा सवत १८९२ म लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा।
आदि-॥ श्री जभेस्वरायनम श्री गुरुभ्यनम अथ कथा वह्मोवनी लिपत राग गवडा
दोहा-आदि व्यसन साभलि अरज नवपड नाव नरेस
सु णीया वण सुणाइ सु आप दीयो उपदेस १
अन्त-केसो कथा कही कर जोडि आवागवणि मिटावो पोरि ॥५३८॥ इति श्री वह सोनो की कथा सपूरण समाप्त ॥ समत १८९२ रा प्रवे मिती आसोज वदि तिथ १२ वार सनीसर ॥ लिपते साध श्री १०८ श्री महाराजजी श्री मनरुपदासजी रा सिप्य साध तुलसीदास ॥ सर नगीना मध्ये श्री जामजी र मिदर मा लिपी छ जी ॥ श्री विष्णु जी सत सही छ जी।

१०१ प्रहलाद चिरत, ऊदोजी कृत। छन्द सख्या-३४८। पत्र सख्या-२७ (पत्र सख्या २ अप्राप्य)। देशी कागज। आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-नाम मात्र को। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-९। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३४-३६। ठाकर थापन द्वारा सवत १९३९ म लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा।
आदि-श्री विष्णजी ॥ अथ प्रहलाद चिरत लिप्यते दुहा ॥
प्रथम बदु गुरदेव कु। दुतीय बदु सव साध
अन्त-सम अठारै अडसटा माघ सुक्ल पख्य आनि
तियी तीन सुपुरण भयो प्रहलाद चिरत अखान ३४८ इति श्री प्रहलाद चिरत सपुरण समापत ॥ लिपते ठाकर थापन गाव वटोपल माही समत १९३९ मीति फागण वदी १० वार मगलवार ॥ श्री राम।

१०२ प्रहलाद चिरत, ऊदोजी कृत। छन्द सख्या-३४६। मशीन के बने कागजो की सिली हुई प्रति। फोलियो-४९। आकार-९×५.२५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-९-१०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२२-२३। रामानन्दजी के शिष्य साहबरामजी द्वारा सवत १९५६ म लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा।
आदि-श्री विष्णुवेनम

दोहा-प्रथम बदु गुरदेव कु दुतीये बदु सव साध।
अन्त-इति श्री वसनवी धर्मावलम्बी ऊदोदास कृत भाषाया प्रह्लाद_चरित सपूरणम् सवत् १९५६ पोप वदि १२ शनि लिखत श्री १०८ महाराज श्री रामानन्दजी का तच्छिष्य साहबराम स्वपठनार्थम् नगीना हरी भवन लाला शिवलालजी के मकान प।

१०३ रुकमणी मगल, पदम भगत कृत। विभिन्न राग-रागिनियो के अन्तर्गत छन्द सख्या पृथक् पृथक् है। पत्र सख्या-७३। यत्र तत्र खण्डित। देशी कागज। आकार-११.५×

६ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२७-३० । संवत १९४७ में विहारीदास द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुवाच्य । प्राप्ति-स्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेड़ा ।

आदि-श्री जंभ गुरवेनम + + + रुकमणी मंगल लिषते ॥ दोहा ॥

सु डाला बुध भजना सदा जो बालक भेस ॥

सारां पैलो सिवरीये गोरी पुत्र गणेस ॥ १ ॥

अन्त-जो मंगल सुण और गाव बाजा इधक बजाव ॥

पुण ब्रह्म परम के स्वामी भगत मुकत फल पाव ॥५॥ इति श्री ब्यावलो संपूर्ण ॥ सं० १९४७ ॥ मी० ॥ कातिक वदी ९ लि० विहारीदास

१०४ पूल्हेजी री कथा, वील्होजी कृत । छंद संख्या-२३ । आकार-१०×५ इन्च । कुल पंक्तियाँ-२८ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३७-३८ । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । लिपि-सुवाच्य । संवत १८८७ में साधु हरिविष्णदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेड़ा ।

आदि-श्री विसनु नरायनम अथ पूल्हेजी री कथा लिषत दूहा

भीयाणो भाइ क जण परीयावट पुवार

अन्त-छहा जणांसों पूल्हैजी दिठो गयो पुलाय २३ इति श्री वील्ह विरचतायां पूल्हैजी री प्रथा समापत १ लिषितं साध हरिविष्णदास चीय जामो डेरा मधे समत १८८७ रा मिता जेठ वद ८ वार शनिवार मगऊमस्तू कल्याणरस्तु ॥

१०५ पुन्य, अज्ञात कृत । पत्र-१, देशी । आकार-९×४ इन्च । कुल पंक्तियाँ-२१ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२९-३० । हाशिया-आध से पौन इन्च । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-अनुमानतः संवत १८५० के लगभग । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावतखेड़ा ।

आदि-श्री विसनु जयति लिषत पुन्य पतीत

डम भाइ को पुन १ वड पोल्हरो को २

अन्त-लिषते विगत बार बाड का पुन आणा मुणी १००००००० सायर गोसारो मुणी १००००००० मनसा कन्याणी मुणी १००००००० ॥

१०६ आरती आंमातणी । संख्या-५ । (ऊदोजी की-४, ओतम की-१) । देशी कागज । आकार-६.७५×४.५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च । कुल पंक्तियाँ-२५ । अक्षर-प्रति पंक्ति-३२-३६ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । लिपिकाल-अनुमानतः १९वां शताब्दी उत्तरार्द्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावतखेड़ा ।

आदि-श्री गणेशायनम लिषत आरती

आरती कास गुर भ्रम जनी की हर हर भगत उधारण प्रांणपती की टेर

अन्त-पांचमी आरती ओतम गाव महाविसनु क सीस नवाव ५

१०७ कथा चौरोड़ की, केसौजी कृत । छन्द संख्या-१२८ । पत्र संख्या-८ । देशी कागज ।

आकार-९X४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३४ । लिपि-सुवाच्य । सवत् १८८६ में रामदासजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-मह त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।
आदि-श्री जभेश्वराय नम ॥ श्री विष्णुजी लिपते क्था चीतोड की ।
राग हसो दोहा-प्रम गुरु सिवरों सदा सकल वियापी सोइ
दुख मेटण दालद हरण जिह सिवरयां सुष होइ १
अन्त-सुष बचन सतगुर का गहे कारण किरीया गुरमुष बहे
सतरासै छोडोतर सही क्था जोडि केसजी कही १२८ इति श्री चीतोड की क्था सपूरण ॥ समत् १८८६ मिती श्रावण शुद २ वार थावरवार । लिपते साध श्री १०८ कनीरामजी रो सिष्य रामदासजी ॥ गाव झलाय मध्ये ॥ श्री विष्णु ॥

१०८ रुक्मणी मगल, रामलला कृत । छद सख्या-३६५ । पत्र सख्या-१६ । देशी कागज । आकार-९X४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२ । लिपि-सुवाच्य । सवत १८६४ म साधु तुलसीदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-मह त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।
आदि-॥ श्री गणेशायनम ॥ अथ लिपते रुक मगल ॥ रागनी देवगीरी ॥
निगम आर्को नित गाव ॥ ध्यांन सिव उर आनीय ॥
आद अ त प्रबह्म कु के ॥ भगत नीके जानिय ॥
अन्त-राज करो नग्र द्वारका को ॥ भगत वछल श्री गोपाल ॥
रामलला जन गाव मगल ॥ कृष्ण भजन जन होय नीहाल ॥ सरव जोड ॥ ३६५ ॥ इति श्री ग्र थ रुक्मणी मगल पूर्ण समापत्ति लिपते साध श्री १००८ श्री मह तजी श्री मनरूपजी का शिष साध तुलसीदास ॥ सवत १८६४ रा मिती फागण सुदि तिथ १० वार मगलवार श्री विष्णु जी सत सही छ जी ॥ १ ॥ लिपते सहर नगीना मध्ये ।

१०९ विवाह क्रम (जाभाणी) । रचयिता-अज्ञात । पत्र सख्या-१५ । देशी कागज । आकार-९ २५X४ २५ इ च । हाशिया—साधारणत —दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२९-३० । लिपि-सुवाच्य । सवत् १८६१ म केसो दास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं — (क) आवाहन (सस्कृत में) । (ख) गोत्राचार । (ग) बसदर के नाम । (घ) आद वसावली । (ड) नाम (सस्कृत) । (च) विवरस । (छ) अस्तुति । (ज) विष्णु रक्षा (सस्कृत) । (झ) नवग्रहरक्षा (सस्कृत) । (ञ) पोढो पालटण (सस्कृत) । (ट) वैश्वानर पूजा (सस्कृत) । (ठ) कन्या लक्षण (सस्कृत) । (ड) चोजुगी । (ढ) मगलाष्टक । (ण) देवता विदा करण ।
आदि-श्री गणेशायनम । मगल भगवान विष्णु मगल गरुडध्वज
अन्त-इति श्री व्याहक्रम सपूर्णम् समत १८६१ रा मिती माघ सुध पूरणवासी वार सुक्रवार लिषत साध श्री १०८ रावलजी का सिष्य केसोदास ॥ लिपिकृतम् ॥ श्री

विष्णु ॥

११० बारे मासो, रचयिता-खरातो मेरठो। अमवार छन्द सख्या नही दी है। पत्र स०-४। देशी कागज। आकार-१०×५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ १४-१५। अक्षर-प्रतिपक्ति ३७-४७। लिपि-सुवाच्य। लिपिकार-अज्ञात। सवत् १८७६ म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।

आदि-श्री विस्नु सत्यायम

दोहा-आसाद सम विनती कर येरासाह अधीन

तुम विन व्याकुल मन हैं जस जल विन मीन १

अन्त-दोहा-कहै येरातो मेरठी सुनीया बार मास

आस बरस लागी रहो जब लग घट म साम १२ इति बार मासी सपूरण॥ १॥ सवत् १८७६ मिति चत सुदि १३ वार शुक्रवार॥ गाव लोहावट मभे।

१११ सबदवाणी। सवद सख्या-१२०। बिना प्रसग। पत्र सख्या-५८। देशी कागज। आकार-६×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन से एक इन्च। पक्ति-प्रति पृष्ठ-६। अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२७। साधु माधोदासजी द्वारा सवत १८८२ म लिपिबद्ध। लिपि-सुवाच्य। प्राप्तिस्थान-महन्त कौशलदासजी, अगूणी जागा, जाभा।

आदि-श्री गणेशाय नम श्री विष्णुजी सत्य लिषत सब्द श्री जाभजी का श्री वायक

उ गुर चो हीं गुर चीं ह विरोहित गुर मुषि धम वर्षाणी

अन्त-भलीयो होय तो भली बुधि आव बुरियो बुरी कमाव १२० इति श्री सब्द वाणी श्री जाभजी की समाप्त लिषत साध माधोदास श्री तिलोकदासजी का शिस्य आप पठनाथ सवत १८८२ रा मिती भाद्रवा सुदि ४ वार भृगुवारे वाच विचार जिना कू नू गि प्रणाम श्री विष्णु

११२ पद्य प्रसग, सबदवाणी के। १२० सबदो पर। पत्र सख्या-१६। देशी कागज। आकार-६×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रतिपक्ति ३०-३४। लिपि-सुवाच्य। सवत १८७७ म पीताम्बरदासजी द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी

आदि-श्री विसनजी अथ सब्द का प्रसग

दोहा-हांसा लोहट न कहै सुणो बात चित लाय

बालक प्रोढ बोल नहीं कोई जतन कराय १

अन्त-दोहा विसनोई न तवही हरिसों बूझी बात

विष्णु भजन में करों मोह सुनावो तात १

शब्द विसन विसन तो भणि रे प्राणीं इस जोवणि ० १२० इति श्री प्रसग सहत शब्द सपूरणम॥१॥ समत १८७७ मिती असउजे मासे शुक्ल पखे असुरा आचार्यवार्य तिष्य नाम्य लिपि कृत पीताम्बरदास श्री १०८ विसनुदासजी रा शिष्य पठनाथ रावलजी श्री १०८ गगारामजी रा शिस्य। सख्या श्लोक वतीमा ४४०।

११३ सबदवाणी, सबद सख्या—११७, बिना प्रसग। पत्र सख्या-४१। देशी कागज।

आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत पौन इन्च। पक्ति-प्रति पृष्ठ-९। अक्षर-प्रति पक्ति-२९-३६। लिपि-सुवाच्य। सवत् १८५८ मे सुरतराम जी द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महत भोलारामजी, बिश्णोई मदिर, रावतखेडा।
आदि-श्री विसनजो सत्य। लिषते सबद झाभजी का श्री वायक।

गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुखि धम बखांणीं।

अन्त-भलीया होय तो भल बुधि आव। बुरिया बुरी कमावं।११७। इति श्री सबद वाणी झाभजी की सपूण समाप्त। सवत १८५८ मीती आसोज वदि ५ वार दीतवार। लिपत गगारामजी के चेल सुरतराम। गाव झाझोलाव मध्ये॥

११४ सबदवाणी। सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग। किनारो से खडित। पत्र सख्या-३१। देशी कागज। आकार-१०×४ ७५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१२। अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२। लिपि-सुवाच्य। सवत् १८८४ म परसरामजी द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।
आदि-श्री भाभेस्वराय नम॥ श्री सरस्वत्य नम॥ अथ लिष्यते शबद बाणी

झाभजी की गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित॥ गुर मुख धम बखांणं॥

अन्त-भलीया होय तो भलि बुद्धि आव॥ बुरीया बुरी कमाव॥ १२० इति श्री शब्द बाणी श्री झाभजी की सपूरण॥१॥ सवत १८८४ मिती असाढ वदि ६ सोमवार॥ लिषते साध श्री १०८ हरिकिसनदास महतजी रा सिष्य परसराम विसनोई साध॥ गाव धवा मध्ये॥ श्री कल्याणमस्तु श्री मगलमस्तु॥ श्री सुभर०।

११५ पुन्य। पत्र-१, देशी। आकार-१०×५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच। कुल पक्तिया-२७। अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३७। लिपि-सुवाच्य। लिपिकार-अज्ञात। लिपिकाल-अनुमानत उन्नीसवा शताब्दी उत्तरार्द्ध। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।
आदि-श्री विष्णुजी सत्य सही लिषतु पुन्य पतीस की

मा भाइ की ० १ बूढ धोल्हरी की ० २

अन्त-सब्द नीहच आप लागा फल बेठा छाया तात निरीकार नाव कहाया निराकार मा विसन १

११६ इसक्दर की कथा, केसौजी कृत। छन्द सख्या-१६२। पत्र सख्या-१३। देशी कागज। आकार-६ २५×४ २५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३५। लिपि-साधारणत पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। लिपिकाल-सवत १८८४। प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी।
आदि-श्री गणेशाय नम॥ अथ असक्दर की कथा लिषते॥ राग सोरठि॥
दोहा-श्रीपति पहली स्यवरियै अलष अपार अनत

प्रभ गुरू जल थल रहै भव भाजण भगवत १

अन्त-कसे कथा कही कर जोडि आवागवणि चुकावो षोडि

जो यहै कथा सुण चित लाइ सत करि मान सुरगे जाइ १९२।

इति श्री इसकदर की कथा सपूण॥

२१७ सस जोपाणी की कथा, केसोजी कृत। छन्द सख्या–१०६। पत्र सख्या–६। देशी कागज। आकार–८ ५×४ इ च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इ च। पक्ति–प्रति पृष्ठ–११। अक्षर–प्रतिपक्ति–३२–३६। लिपि–सुवाच्य। लिपिकार–अज्ञात। अनुमानत उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध मे लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी।

आदि–श्री गणेशाय'न ॥

दोहा–निरहारो प्रथम नऊ सतगुर साम सुजांण

एक सत लिवाज्यौं सांमजो यायक करू वर्णाण १

अन्त–जोपांणी सस तणी कथा सुणों चित लाइ

केसो कहै ससा में मोष मुकति फल पाइ १०६।

इति श्री सस जोपाणी की कथा सपूरणम ॥ १ ॥

२१८ उद अतली की कथा, केसोजी कृत। किनारो से खडित। (इसमे यह रचना सुरजन दासजी की बताई गई है, जो भूल है) छन्द सख्या–८९। पत्र सख्या–६। देशी कागज। आकार–९×४ इ च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणत –पौन इ च। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११। अक्षर–प्रतिपक्ति–३०–३२। लिपि–सुवाच्य। लिपिकार–अज्ञात। अनुमानत उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध मे लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी।

आदि–श्री गणेशाय'न राग हसो।

दोहा–श्री पति पहली सिमरीये आदि गुरु आदेस

जमगुर सिवरू सदा जिहि सिवर सुर शेस १

अन्त–पवत पढ प्रीत सहित श्रोता सुन सुजान

ताकै मनकी वासना सुफल कर भगवान ८९। इति श्री उद अतली की कथा सपूरणम् १

२१९ विष्णु चिरत, ऊधोदास कृत। छन्द सख्या–१०५। किनारो से खडित। पत्र सख्या–१०। देशी कागज। आकार–९×४ इ च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इ च। पक्ति प्रतिपृष्ठ–९। अक्षर–प्रतिपक्ति–२६–३०। लिपि–सुपाठ्य। लिपिकार–अज्ञात। अनुमानत सवत् १९०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी।

आदि–श्री विष्णाय नम ॥ श्री प्रमात्मनेनम श्री गुरुभ्योनम

श्री गुर सत सि नाऊ अप्या होय विष्णु जस गोज

अन्त–सोरठा–हरि अवतार अ नत अनत चिरत अवगत तणा

गाय मुनि जन सत विमल जस भवजल तरणां १०५

इति श्री विष्णु चिरत उधवदास कृत सपूरण

२२० धरमचरी, सुरजनजी कृत। छन्द सख्या–८०। पत्र सख्या–४। देशी कागज। आकार–१०×५ इ च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इ च। पक्ति–प्रतिपृष्ठ १४। अक्षर–प्रतिपक्ति–३२–३५। लिपि–सुपाठ्य। लिपिकार–अज्ञात। सवत१८७७ म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी।

आदि-।। श्री विसनजी सत्य [redacted] जी ॥ लिपते धरमचरी ॥

दुहा ॥ चोरासी वुष देषि क भुगतया कम अधार

मोह ओसर मिनषा जलम मिल न वारोवार ॥ १ ॥

अन्त-दोहा ॥ चोरी पकडी चोहट । झूतो पुगो दाव ॥

सुगति विदर क पूत नं । विदर न सिर पाव ॥८०॥ इति श्री धमचिरी सपूरण ॥ समापतोय ॥ भवत । समत १८७७ रा वर्षे मिती बसाष सुदि १० वार थावरि

१२१ सुरजनदासजी के कवित्त । सख्या-३२९ । पत्र सख्या-३५ । देशी कागज । आकार-१०×५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-३६ । लिपिकार-अज्ञात । सवत १८८४ मे लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री जामेस्वरायन म धरम अप धारणा ग्यान भारी गुण सागर ।

सहज सील सतोष कीयो पथ माँहि उजागर ।

अन्त-राग दोष लज्या रतण । माया मोह अकार भणि ॥

अकीर कीय तिण प्यजर । गुर तत भेद आकास गण ॥ ३२९ ॥

इति श्री सुरजनदास विरचिताया कवित सपूरणम् ॥ समत १८८४ वर्षे मिती भाद्रवा सुदि अष्टमी वसपतवार ॥ लिपते तीरथ भामोलाव मध्ये ॥ १ ॥

१२२ गोकलजी के छन्द आदि । पत्र सख्या-११ । देशी कागज । आकार-१०×५ इच हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३३-३६ । लिपि-सुवाच्य । परसरामजे द्वारा सवत १८७८ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं -

(क) अस्तुति अवतार की । छद-१३ । (अपूर्ण) ।

(ख) इ दव छन्द । छद-३२ । (ग) अस्तुति होम की । छद-१० ।

इति श्री गोकलजी का कह्या कवत सपूरण १ ॥ लिषते साध श्री हरकिसनदासजी रा सिप्य परसराम ॥ सवत् १८७८ रा मिती चत सुदि १२ वार रवि । गाव लोहावट मध्ये ॥ थी । (घ) कवित्त (जाम्भाणी)-३ । अपूर्ण । रचयिता-अज्ञात ।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ लिष्यते असतुत अवतार की छद मोतीदाम ।

दोहा-रिधपति सिधपति सीलपति ॥ सुरपति सदा सहाय ॥

गतिदाता गोविंद सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गाय ॥१॥

अन्त-रहत पचो कृत देह परगट बप पु हमो धारयो

जीव ऊपम बहु कुटल अंच अत मारग आनें

१२३ ग्यान महात्म, सुरजनदासजी कृत । छद सख्या-१९६ तथा अज्ञात कृत ४ कवित्त । पत्र सख्या-१० । देशी कागज । आकार-१०×५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-४० । लिपि-सुवाच्य । साधु हरिकृष्णदास द्वारा सवत् १८८७ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री जाभेस्वरायनम अथ ग्यान महातम लिपते
दोहा-माया ब्रह्म मिलाय कै हस बसोयो माँहि
गुर बिन ग्यान न पाईए ग्यान बिना सच नाँहि १
अत-परहर थाट आग यह वास वहे ज वाहरा
कायरां वियो हाल नहीं वियो नरदां नाहरा ॥ ४ ॥
इति श्री सुरजनदास विरचन ग्यान महातम सपूरण गमापतोनम १ लिपत माघ हरि किष्णदास तिरथ तलाव मध्य समत १८८७ रा मिति जठ सुद १५ ।

१२४ सबदवाणी तथा विष्णुसहस्र नाम । सबद सख्या-१२० । बिना प्रसग । गुटका । देशी कागज । फोलियो-१४३ । आकार-५X४ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-१३-१४ । हाशिया-आध से पौन इच । लिपि-सुवाच्य । सवत १६३८ में वष्णव रामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त रामनारायणजी, रामद्वावाम।
आदि-श्रीमते रामानुजाय नम ॥ अथ सब्द वाणी श्री जाभजी की लिपत ॥
उँ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुषि धम बषाणीं ॥
अत-श्री विष्णोनाम सहस्र सपूर्ण ॥ सवत् १६३८ मीगर वदि ११ लि० वष्णव रामदास नग्र राहेण मध्ये ।

१२५ सबदवाणी, सबद सख्या-१२० । बिना प्रसग । गुटका । फोलियो-८० । मशीन के बने कागज । आकार-६ २५X४ इच । हाशिया-पौन से एक इच । लिपि-सुपाठ्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१८ । सवत् १६४० म प्राणसुख विष्णोई द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री बद्रीराम थापन, मुकाम ।
आदि-उो श्री गणेशायनम । गुर चीन्हों गुर चीन्ह पिरोहित । गुर मुष धम बषाणी।
अन्त-भलीयो होय सो ॥ भल बुद्धि आव । बुरीयो बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री नाद वाणी श्री जाभजी की सम्पूरण ॥ १ ॥ सवत १६४० रा वर्षे मिती माघ बदी ८ लिपत प्राणसुष विष्णोई बेटा दिलदार का नगीनेवाला उो हरि सत मत ॥

१२६ गुटका । फोलियो-१७५ । मशीन के बने हल्के नीले रग के कागज । आकार-६ ५X४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पक्ति-१७ १६ । सवत १६२५ म साधु नृसिंहदास द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री बदरीराम थापन, मुकाम । इसमे ये रचनाएँ हैं -(क) सबदवाणी, सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग । (ख) प्रल्हाद चरित, ऊधोजी कृत । छन्द सख्या-३४८ । इति श्री ऊधो भक्त कृत प्रहलाद चरित्र सम्पूरणम् ॥ ३४८ ॥ सम्वत १६२५ लिख्यत मया साधु नसिंघदासेण श्री मोतीरामस्य शिष्य पठनाथ साधु श्री मया रामदासजी चेला श्री गु मानिरामजी का लिपि कृत्त गाव रणी मध्ये ॥ (ग) सप्त श्लोकी गीता (मूल और टीका ससेत), (घ) ८ छन्द केसौजी के । (ङ) ४ भजन तुलसीदासजी के । (च) ३ हरजस, साखियां (जामाणी)
आदि-उा श्री गणेशायनम ॥ श्री जभाय नमो नम अथ लिख्यते नाद वाणी जाभजी की गर चीन्हों गर चीन्हि पिरोहित ॥ गुर मुष धम बषाणी ॥

अन्त-क्स म कट कह जन केशो बिष्णु सिंवर मन भाई ॥४॥ ३ मूठो भोजन उलटो इसत्री गवन बीज छूट जाणा नपठो छूटणो नाड री छोत विसा जावणो अ सात छोत टाल ॥

१२७ सबदवाणी, अपूर्ण। पद्य प्रसग समेत। पत्र सख्या-५१। देशी कागज। (सख्या-३,२० तथा ५१ के पश्चात के पत्र नही हैं)। आकार-९×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति ३२ ३६। लिपि-सुवाच्य। लिपिकार अज्ञात। अनुमानत उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-(४ था पत्र) राय न ते पणि रुप हमारा थीयों ॥ जती तपी तक पीर रखेसर ॥ काय अपीज ॥ ते पणि आया जीयों ॥

अन्त-विसन विसन तू भणि रे प्राणी ॥ इस जीवणीं क हाव ॥ तिल तिल आव घटती जाव ॥ मरण वि ॥

१२८ सबदवाणी। सबद सख्या-१२०, विना प्रसग। पत्र-सख्या-४४। देशी कागज। आकार-९×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९। अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-३०। लिपि-पाठ्य। गोविन्द द्वारा स० १८८५ म लिपिबद्ध। प्राप्ति स्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री विष्णजी ॥ लिख्यते शब्द जाभजी का श्री वायक ॥

गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुखि धम बखाणीं

अन्त-भलीया होय त भलि बुद्धि आवै बुरीया बुरी कमाव १२० इति श्री शब्द वाणी श्री जाभजी की सपूरणम ॥ १ ॥ जे च द्रवातु को वसुदेव वसु महा भूता यब्दे कार्तिक तृतीया गोविदनतल्लिखित १

१२९ सबदवाणी-सबद-सख्या-१२०, बिना प्रसग। पत्र सख्या-३०। देशी कागज। आकार ११ ५×५ ५ इच। हाशिया-साधारणत -दाएँ, बाएँ-एक इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ १२। अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३७। लिपि-सुपाठ्य। सवत १९२५ म साधु लक्ष्मणदास द्वारा लिपिबद्ध। सबदवाणी के पश्चात स यामन्त्र ह। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम। श्री जभेसुरायनम।

ओं गुर चीन्हो गुर चीन्ह पिरोहित। गुर मुख धम बखाणीं ॥

अन्त-रतन काया वैकुठे वासो। तेरा जरा मरण भव भागू ॥ १२०। इति श्री सबद वाणी। जाभजी सम्पूर्णम्। मिति वसाष सुद १५। समत १९२५ लिषत साधु लक्ष्मण दास शिष्य बुधरामजी के ॥ श्री गणेशायनम अथ सध्या मत्र लिखते। ओं विष्णु विष्णु तु भण रे प्राणी। साध भवते ऊद्धरणो। इति श्री जभ तातु सवाद। सध्या मत्र ।

१३० सबदवाणी,सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग। पत्र सख्या-३४। किनारो से खडित। देशी कागज। आकार-९×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ

११ । अक्षर-प्रति पंक्ति ३४-३६ । लिपि-सुवाच्य । संवत् १८८७ में रामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महंत भोलारामजी, विश्नोई मन्दिर, रायसनगर ।

आदि-श्री जंभस्वराय नमः श्री प्रमात्मा नमः लिषत सबद जाभजी का श्री वायक ॥

गुर चीन्हों गुर चीन्ह पिरोहित ॥ गुर मुखि धरम बखांणीं ॥

अंत-भलीया होय तो भला बुधि आव ॥ बुराया बुरी कमाय ॥ १२० ॥ इति श्री सबद बाणी जाभजी का सपूरण ॥ समाप्त ॥ संवत ॥ १८८७ रा वरस मिती भादवा वद ६ ॥ वार विरसपतवार ॥ लिषत साध श्री १०८ मनोरामजी रा सिष्य रामदास ॥ गाव रायसनगर मध्य ॥ श्री जंभस्वराय नम ॥ श्री गणेसाय नम ॥ १ ॥

१३१ सबदवाणी, सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । पत्र संख्या-३२ । जीर्ण, खंडित । देशी कागज । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दायें, बाएं-१ इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३२-३६ । लिपि-सुवाच्य । संवत १८९१ में रामदासजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-श्री जंभस्वराय नमः लिषत सबद जाभजी का श्री वायक

गुर चीन्हों गुर चीन्हो पिरोहित गुर मुखि धरम बखांणीं

अंत-रतन काया बहू ठ बासो तेरा जरा मरण भव भाजों १ १२० इति श्री सबद वाणी जाभजी का सपूरण ॥ संमत १८९१ रा मिती काती बद ६ वार विरसपतवार लिषत साध श्री १०८ मनारामजी रा सिष्य रामदासजी गावें लालासरा मध्य ॥

१३२ गुटका । खंडित । फोलिया संख्या-१८२ (१४२+४०) । देशी कागज । आकार-५×३.२५ इन्च । हाशिया-दायें, बाएं-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१२-१६ । लिपि-सुवाच्य । साधु दिलराम द्वारा संवत १९१२ में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-स्वामी शिवानन्दजी महाराज, मुक्तिधाम, ऋषिकेश । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क)सबदवाणी, सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । (ख) विष्णु सहस्र नाम ।

आदि-श्री गणेशायनम उँ गुरु चीन्हीं गुरु चीन्हि पिरोहित । गुरमुखि धरम बखांणीं ।

अंत-संवत १९१२ रा वष मिति आसाढ सुदि तिथि ६ वार बुधवार । लिपीकृत साधु दिलरामरा ॥ ग्राम ब्राह्मनवाला मध्य ॥ वैष्णव भगवानदास की दुकान मध्य ।

१३३ गुटका । फोलियो संख्या-११२ (८६+२६) । मशीन का बना कागज । आकार-६×३.७५ इंच । हाशिया-दायें बाएं-एक इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१२-१६ । लिपि-सुपाठ्य । संवत् १९२६ में अज्ञात लिपिकार द्वारा लिपि कृत । प्राप्तिस्थान-श्री मोयाराम विश्नोई, मदनपुर । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) सबदवाणी, सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग । इति श्री सबद वाणी जाभजी की सपूरणम समाप्त १ संवत १९२६ मानी वैसाष सुदी २ वार बृसपतिवार के दिन ॥१॥ उ तत सत । (ख) विष्णु सहस्र नाम । (ग) विष्णु पंजर स्तोत्र

आदि-श्री श्री गणेशायनम ॥ ओ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुखि धम

अन्त-इति श्री ब्रह्माड पुराणे इन्द्र नारद सवाद विष्णु पजर स्तोत्र सपूर्ण १ उँ तत् सत ।

१३४ सबदवाणी (अपूर्ण) सबद-सख्या-११७ । पद्य प्रसग सहित । पत्र सख्या-५४ । जीर्ण, खडित । देशी कागज । आकार-८ २५×३ ५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-लगभग १ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३३ । लिपि-सुपाठ्य । अनुमानत सवत १८०० के लगभग अज्ञात लिपिकार द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री भीयाराम विश्नोई, सन्तपुर ।

आदि-(दूसरे पत्र से) का साला सतगुर है तू सहज पिछाणीं किसन चिरत विन काच कर्वे रह्यो न रहिसी पाणीं १

अन्त-भलीयो होय तो भल वुध्य आव दुरीयो वुरी कमावै ११७ इति श्री सिधात वाणी सतगुर भभेसर विरचनाया सपूरण ।।

१३५ सबदवाणी । सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग । गुटका । देशी कागज । आकार-६ ७५×५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२३ । लिपि-सुपाठ्य । सवत् १६३६ म अज्ञात लिपिकार द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त कौशलदासजी, सागूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ शब्द वाणी श्री जाभजी की लिपते ।।

उ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुखि धम बखाणीं

अन्त-भलीयो होय तो भल बुधि आव वुरीयो वुरी कमावै ।। १२० ।। इति श्री शब्द वाणी श्री जाभजी सपूरण ।। सवत ।। १६३६ ।। मिति माह वदि अष्टमी ।। राम राम

१३६ सबदवाणी, सबद-सख्या-१२० । बिना प्रसग (केवल पहले सबद का पद्य म प्रसग ह) । पत्र सख्या-३६ । मशीन के बने हल्के नीले रग के कागज । आकार-११ ५×६ इच । हाशिया-साधारणत -दाएँ, बाएँ-१ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-३४-३६ । लिपि-सुवाच्य । सवत १६११ म गोपालराय द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री जभेस्वरायेनम ।। अथ लिप्यते सबद ।। जाभेजी का ।।

काच करवो जल रह्यो ।। सबद जगाया दीप ।।

बांभण को परच्यो दयो ।। अैसो अचरज कीय ।।

अन्त-भलियो होय तो भल बुध आव वुरियो वुरी कमावै ।। १२० ।। इति श्री सबद वाणी श्री जाभेजी की सपूरणमस्तु ।। श्री जभेस्वरायनम ।। श्री रामचद्रायनम ।। सवत् १६११ वरषे मीती फालगुन सुद्ध १३ गुरवासरे प्रथम प्रहरे ता दिने समाप्त ।। हस्ताक्षर गोपालराय ब्राम्हन सनोडिया वस्ती हरदा ग्राम मध्ये ।। श्री कृष्णायनम सवत १५६३ मागसीर वद ८ आगली को पालठिया रूप रह्यो रिधु अधिक जोत समराथने ।। ६ ।।

१३७ प्रहलाद चिरत, केसोजी कृत । छन्द सख्या-५४६ । पत्र सख्या-३४ । देशी कागज । आकार-१२ ७५×६ ५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत सवा इच ।

पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२-१३। अक्षर-प्रतिपक्ति २६-३२। लिपि-पाठ्य। सवत् १६६२ मे साधु विहारीदास द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम प्रहलाद चिरत ॥

दो० ॥ नारायण पली निऊ स्वामी सरव सुजाण ॥
आव भगत कहस्यु कथा प्रहलाद चिरत परवाण ॥ १ ॥

अन्त-मै दायण पकड्यो वीन को सतगर करी सहाय पाच सात नव बाहरा अवक मोय मिलाय ५४६ इति श्री प्रहलाद चिरत बथोजी कृत सपूरण लिपते साध विहारीदास चेला विष्णुदासजी का स्व पठनारथ १६६२ मिती असाड वदी ९ सुक्रवार गाव भगतासणी मैं।

१३८ रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत। विभिन्न राग-रागिनियो के अन्तर्गत छन्द सख्या पृथक पृथक दी हुई है। पत्र सख्या-१३९। देशी कागज। आकार-१३×६ ५ इच। हाशिया-साधारणत -दाएँ, बाएँ-सवा इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पक्ति-२१-२४। लिपि-सुपाठ्य। सवत् १९४८ म केवलदासजी द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री गणेशायनम ॥ अथ रुकमनी मगल लिप्यत ॥

दोहा-सू दयाला दुख भजणा ॥ सदा जो बाल्ह वेण ॥
सारा पहली सुमरिय ॥ गवरी पुत्र गनेश ॥ १ ॥

अन्त-सुमरन भजन कछु ना जानू ॥ लीज्यो आप सुधारी ॥ ५ ॥ पदम० कीज्यो कृपा मुरारी ॥ ६ ॥ इति श्री पदमदास कृत रुकमनी मगल समाप्त ॥ समत १९ ॥ ४८ श्रवण सुदी ६ वार मगलवार लिपित विष्णु पथी रुपरामजी के सिस्य केवलदासजी ग्राम अलाय मध्ये।

१३९ ग्यानचरी, वील्होजी कृत, छन्द सख्या-१३० तथा सुरजनजी कृत धरमचिरी और चेतन कथा-छन्द सख्या-१०९। अपूर्ण। चारो ओर से खडित। प्राप्त पत्र सख्या-८ (९ से १६)। देशी कागज। आकार-८×३ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणत पौन इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पक्ति-३१ से ३४। सवत १८७० म साधु भगवानदास द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा।

आदि-णि ॥ साचो करि हिरद मा आणि ॥
मति प्रमाणी बरणी सही ॥ ग्यान चिरी वील्हैजो कही ॥ १२९ ॥

अन्त-मनसा वाचा क्रमना ॥ सुनु पुरातम साखि।
जन सुरजन की वीनती ॥ बांन की पति राखि ॥ १०९ ॥ इति श्री धरमचिरी जन सुरजन कथत ॥ समाप्तोय ॥ लिपते साध भगवानदास पठनार्थी आप हेतारथ ॥ समत १८७० रा मिता जेठ सुदि। १३। इसके पश्चात ३ दोहो की एक साखी है।

भवसागर कू देव क ॥ डरयौ जो मेरो चित ॥
सतन को त्रिपा हुव ॥ दरसन पावौं नित ॥ ३ ॥

१४० हरजस । संख्या–१६४ (विभिन्न राग रागिनियो मे) । पत्र सख्या–३० । देशी कागज । आकार–१२ ५×६ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणत –सवा इ च । पक्ति–सामान्यत –प्रति पृष्ठ–१५ । अक्षर– प्रतिपक्ति–२९–३४ । लिपिकार–अज्ञात । लिपि–सुपाठ्य । सवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी । इसमे सूर, ऋषिकेश, कबीर, मनसुखदास, रज्जब, ध्यानदास, सु दरदास, अग्रदास, श्री भट्ट, तुलसीदास, नामदेव, मीरा, अनायदास, परमानन्द, माधोदास, तुरसो, नरसी, जन हरिदास, रामदास, दादू, भीव, अमरदास, अन तदास, वाजिदवास, तानसेन, दीपराम, सुधानन्द, विष्णुदास, खेमदास, सुरतराम, रामलला, मीठूदास, जन रीवदास, सुरजनदास, गगादास आदि के हरजस हैं।
आदि–॥ श्री विष्णु जिसहाय अथराग रागनि मे हजस लिखत ॥ प्रथम राग गवडी ॥ माधौ मन मरजाद तजी ॥ प्रभू गजमत जानि हरि तुम सौं ॥ वात विचार सजी ॥
अ त–नवका रूप बण्यो सत सगत जामें बठो सब कोई आई
घोर उपाय नही तिरवा को सु द काढो रांम ववाई २ । १६४

१४१ साखी सग्रह (जाभाणी) । साखी सख्या–६६ । अपूर्ण । विभिन्न कवियो द्वारा रचित । प्राप्त पत्र सख्या–२२ (कुल पत्र सख्या–२६ है, जिनमे से प्रथम दो तथा २३–२४, ४ पत्र नहा हैं) । किनारा से खडित । देशी कागज । आकार–९×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–एक इ च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१६ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३९–४३ । लिपि–पाठ्य । सवत १८९० मे पीतावरदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी ।
आदि–लीज जिंहि मन मोटा तिंहि सब तोटा न करि पराई निंदा
हृद जो हरखे हरि जपो तो सत सीधे वदा ४१ (केसोजी कृत)
अन्त–(पत्र २६, प्रथम पृष्ठ, चौथी पक्ति)—
अत ही सुहायो मेरो साहिबो पीव मेरो प्रमदयाल
आलम प्रभुजी रो लाडलो गिरधरलाल गवाल १० २ (आलमजी कृत) ।
(द्वितीय पृष्ठ, दसवी पक्ति) लिपीकृत पीतावरदास पठनाय स्वय स० १८९० ।

१४२ साखी सग्रह । साखी सख्या–६३ । पत्र सख्या–४३ । देशी कागज । आकार–९×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–एक इ च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३१–३५ । लिपि–स्पष्ट । सवत १८८९ म रामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।
आदि–॥श्री जमायनम श्री विष्णवेनम लिपते साषी ॥ राग सुहव ॥ वणाको ॥
साषे मोमणो कीयो अलोच जमु रचावीयो । १ ।
इ हि जमलें पुजलो करोडि गुर फुरमाईयो ॥ २ ॥
अन्त–करि सुकरत सुरगे गया ॥ से जन पुहता पारि ॥
धोनतजी रांमो कहै ॥ म्हारो आवागवणि निवारि ॥ १ ॥ ६३ ॥ इति श्री साषी

भाभजी री सपूर्ण लिपते साध श्री क्नीरामजी रो सिष्य रामदास ॥ समत ॥ १८८६ रा वर्ष मिती आसाढ सुद ॥ १० वार शनीसरवार ॥ गाव अलाय मध्ये ॥ १ ॥ सपूरण श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥ श्री मग । श्री गणेशायनम श्री जभस्वरामनम ॥ श्री विष्णजी ॥ –

१४३ साखी सग्रह । साखी सख्या–१४ । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या–११ । देशी कागज । आकार–६×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणत पौन इ च से एक इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–२७–३२ । लिपि–पाठ्य । लिपिकाल–अनुमानत सवत १८५० के लगभग । लिपिकार–अज्ञात । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी ।

आदि–श्री गणेशायनम ॥ लिपतु साषी जमल री ॥ राग सूव ॥

साधे मोमणे कीयो अलोच ॥ जमलो रचावीयो ॥
इण जमल पूजेलो विरोड ॥ गुर फुरमायीयो । १ ।

अ त–जुग दवापुर रे मोमणो पाडु । वीर में सगि राणीं द्रोपती ॥
सतवादणि रे मोमणो कूतां दे माय न गति म ले तरी ॥
सतवादणि रे माय में कू ता तरी गति न तारि न सति ॥ ता घड्या वेडे ॥

१४४ हरजस, सख्या–१७३ । पत्र सख्या–५५ । देशी कागज । आकार–६×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इ च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–६ । अक्षर–प्रतिपक्ति–२८–३२ । लिपि–सुपाठ्य । सवत् १८६१ म कसोल्नास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी । इसम तुलसीदास, सूरदास, मीरां, जन हरिदास, नामदेव, रामदास, कबीर, माधोदास, अग्रदास, श्री भट्ट, अनाथदास, मनसुपदास, दादू, ध्यानदास, व्यासदेव, परमानन्द, वाजिददास, रज्जब, षेमदास, अमरदास, दीपराम, नरसी, तानसेन, तुरसीदास, काजी महमूद, लालदास, विष्णुदास, सु दरदास, गगादास, रामलला, मिठु दास, सुरतराम, सुरजनदास, जन रविदास, गोविंददास आदि के हरजस हैं ।

आदि–श्री विष्णुजी सत सही ॥ लिपते हरजस ॥ राग परज ॥

निरषत बात जटाई रथ पर ॥ टेक
सुरजवस राजा नप जसरथ ॥ उनके सुत दधराई ॥

अ त–इति श्री हरजस सपुरणम् लिपतु साध विसनोई ॥ गाव भवानीपुर ॥ समत ॥ १८६१ रा मिती भाद्रा वदि नाम ५ । वार रवि ॥ साध श्री रावलजी का शिष्य कसोल्नास ॥

१४५ होमपाठ । अपूर्ण । पत्र सख्या–६ । देशी कागज । आकार–६×४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इ च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–६–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–२७–२८ । लिपि–पाठ्य । लिपिकाल अनुमानत उन्नीसवी शताब्दी पूर्वार्द्ध । लिपिकार अज्ञात । प्राप्तिस्थान–लोहावट साथरी । इसम इन रचनाओं का सग्रह है –(क) विष्णु अठाईस नाम स्तोत्र । (ख) एक श्लोकी रामायण । (ग) विष्णु शतनाम । (घ) देवाधिदेव स्तोत्र । (ङ) पारब्रह्मी ईश्वर सभार गोताचार । (च) बसवर के २५ नाम । (छ) आदि

वसावली । (ज) पचीस नाम । (झ) विवरस्य (अपूर्ण) ।'
आदि-श्री गणेशायनम ॥ अर्जुन उवाच किंतु नाम सहस्राणि जपत च पुन पुन
अन्त-हूलिन को मारग छाडि क पल्ति चौं ले जाहि तेरवों गुर पापी पाखंडी ठग चोर
चोइसा को सायो साइँ राजा हेत कीयो

१४६ बालक मत्र तथा वडी सुवण । पत्र सख्या २ । देशी कागज । आकार-८ ७५×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच । कुल २३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति २७-३० । लिपि-पाठ्य । लिपिकाल-अनुमानत सवत १८५० के लगभग । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।
आदि-॥ बालक को मत्र ॥ ॐ सबद देव निरजन ताह इछया त भए अ जन
अन्त-विष्णु भणियों विष्णु मन रहोयो तेतीस कोडि पार पहुता साच सतगुर को
मत्र कह्यो इति श्री वडी सुवण सपूरण १

१४७ जाभजी की आरती, विष्णुदास रचित । छद-६ । पत्र सख्या-२ । देशी कागज । आकार-६×४ २५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ ६-७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२४-२५ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-श्री गणेसायेनम अथ आरती जय जय श्री जभेश्वर देवा—।
अन्त-सुद्ध सच्चिदानद घन जभ लीन अवतार
विष्णु नाम उपदेस कर जीव किये सब पार १

१४८ हिंडोलणो, हीरानद कृत । छद-८ । पत्र-१ । आकार-६×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच । कुल २० पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३६-३९ । लिपि-सुवाच्य । अनुमानत सवत् १८५० के आसपास लिपिबद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-॥ श्री विष्णुजी ॥ लिपत हिंडोलणु
बूठो देसोटे गयो मन म घणों सधीर ।
अन्त-चानण रायचद असा पचायण सबद का आचार
हीरानद की अरज ऐती सगत पार उतार ८ । हिंडोलणा सपूण ॥ १ ॥

१४९ भवरो, रामो कृत, छद-११ तथा बत्तीस लक्षण । देशी पत्र-१ । आकार-६×४ इच । हाशिया-नाम मात्र को । कुल १९ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति ३३-३६ । लिपि-पाठ्य । सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-श्री विसनजी लिपते भवरो राग मलार ॥
जा पलीया देवजी भवरो अवतरह्यो
अन्त-सुद्धि प्रनासवत ३१ परखेदन लषन हार ३२ इति बतीस लछन सपूरण

१५० सध्या वदन मत्र । देशी पत्र-१ । आकार-९×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । कुल १० पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३३ । लिपि-सुवाच्य । लिपिकार-

अज्ञात । अनुमानतः संवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पाणासर सायरी ।

आदि-श्री विष्णवेनम अथ संध्या यदन मंत्र उँ विष्णु विष्णु ■ भण रे प्राणि

अन्त-साच सतगुरु को मंत्र कहियु १ । इति श्री जंभ सांतु संध्या मंत्र संपूर्ण ।।१।।

१५१ उमाहो, वील्होजी कृत । छन्द-२१ तथा पतवो, आलमजी कृत, छन्द संख्या-१० । पत्र संख्या-२ । देशी कागज । आकार-६X४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२८ ३१ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकाल-अनुमानतः संवत १८५० के लगभग । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-पाणासर सायरी ।

आदि-श्री विष्णजी सत्य छः लिप्यते उमाहो

आवो जांबू दीपे प्रगटयो चौहुचकि कीयो उजास ।

अन्त-अतहो सुहायो मेरो साहियो पीव मेरो प्रम दयाल

आलिम प्रभूजी रो लाडिलो गिरधरलाल गुवाल १०

१५२ पोथी, जिल्द बंधी । देशी कागज । आकार-६, ५ ५X६ २५ इंच । हाशिया आधा इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-२१-३१ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१६-२२ । परमानन्दजी,प्रेमदास और हरजी बणिहाल द्वारा संवत् १८१७ से १८३३ के बीच लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेड़ा । इसमें ये रचनाएँ हैं —

(क) पहलाद चिरत, केसोजी कृत । छन्द संख्या-५६६ । लेपतु परमाणन्द ॥ पठनारथी देवजी रा चेला तालाका ॥ समत १८१७ ॥ वर्षे मीती भादवा व० ४ । (ख) ग्यान महातम, सुरजनजी कृत । छन्द संख्या-२३४ । (ग) कथा मोहमदी, जन अभाय कृत । छन्द संख्या-११४ । (घ) कथा ग्यानचरी, वील्होजी कृत । छन्द-संख्या-१३३ । (ङ) ब्याहलो किष्णजी को । पद्म कृत । छन्द संख्या-२४१ । (च) आरती, पदम कृत, छन्द-६ । नवरंग लाल विहारी । १ । टेक । (छ)कथा अहदावणी अहमनी, ऊदो कृत । छन्द संख्या-७१७ । (ज)कथा वहसोवनों, केसोजी कृत । छन्द संख्या-५३८ (झ) ध्रुचीरत, जनगोपाल कृत । छन्द संख्या २१४ । (ञ)कथा इसकंदर पातिसाह की, केसोजी कृत । छन्द संख्या-२१४ । लीपतु परमाणंद बचनारथी देवजी का चेला तलाका समत १८३३ मगसर वद १३ । (ट) साषी-संख्या-६० । (ठ) ग्रंथ रामायण मेहोजी कृत । छन्द संख्या-२७१ । (ड) राम चीरत, थापन सुरजनजी को कह्यो कवत ९१ ॥ दुवाला ५९ ॥ सवदका १० ॥ दुहा १९ ॥ कु ॥ ३६१ ॥ धड चौपइ ॥ (ढ) गोत्राचार आदि ।

आदि-श्री विसनजी मति सही ॥ लषतु पहल्लाद चीरत राग मारू

दुहा ॥ नारायण पहलो नउ ॥ सामी सरब सुजाण ॥

अन्त-हणवतजी अ जनी का पूत पवन का नाती वजर की काछ वजर का लगोटा
या चल ज्यू हणवत जती की गिजा चल ज्यू ॥

१५३ गुटका । फोलियो-१०६ । देशी कागज । आकार-६ ७५×४ ५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१९-२१ । थापन रासा द्वारा स० १९०७-०८ मे लिपिबद्ध । लिपि-कही कही अस्पष्ट पर साधारणत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री कन्तीराम थापन, मुकाम । इसम ये रचनाएँ हैं – (क) हिंडोलणो,होरानन्द कृत, अपूर्ण । छन्द स०-५ । (ख) असतुती अवतार की गोकलजी कृत । समत १९०७ मीती तृतीय वसाख सुद ७ दसक्त थापन राम रा छ । (ग) छन्द गोकलजी के । सख्या-३२ । (घ) प्रहलाद चिरित, केसौजी कृत । अपूर्ण । छन्द सख्या-४७९ । (ङ) वायक श्री आभजी का (सबदवाणी)-प्रसग समत । अपूर्ण । केवल ४४ सबद ।

आदि-श्री गणेशायनम दुहो देहोट गयो मन म घणो सधीर ।
कु व ऊपर नोरयोयो ओ जुग तारण पीर १ ॥
अन्त-उडत उडो मुडत मुडो ॥ मुडीन माया मोही कीतो ॥
अमी वाही वादे भुला ॥ काय म पालो जीव दयो ४४

१५४ पोथी । खडित और त्रुटित । देशी कागज । आकार-८ ५×३ ७५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९-१६ । अक्षर-प्रति पक्ति-१६-२४ । सवत् १९४० म अमेद थापन द्वारा लिपिबद्ध । पत्रो के आपस म चिपके होन और पानी गिरन से लिपि यत्र तत्र अस्पष्ट । प्राप्तिस्थान-श्री महीरामजी धारणिया, सगरिया । इसम ये रचनाएँ है –(क) कथा जसलमेर की, वील्होजी कृत । छन्द सख्या-१५४ । (ख) कथा चितौड की, केसौजी कृत । अपूर्ण । बीच के दो पत्र निकले हुए है । (ग) कथा मेडत की (अपूर्ण) । (घ) ओतार कथा, वील्होजी कृत । (ङ) बाल लीला, केसौजी कृत । (च) कथा गुगलिये की, वील्होजी कृत । (छ) कथा पुलजी की, वील्होजी कृत । समत १९४० मीती सावण सुद ११ लीपी वार सोमवार थापन सोभजी रा सीष्य सुत अमेन । (ज) भेटवालों के नाम । (झ) इसकदर की कथा, केसौजी कृत । (ञ) कथा द्रोणपुर की, वील्होजी कृत ।

आदि-श्री वीसनजी सत सही ॥ लीपनु कथा जसलमेर कि राग आसा दुहा ॥
सतगुर आगल्य वीनती करे वेल गु पाय ॥
राह कारण्य गुर वीनऊ ॥ आवर दयो समझाय ॥ १ ॥
अन्त-सतगुरु सेती वाद करि ॥ कदे न जीतो कोय ॥
वीहल कह सेवा करो ॥ नवे नवे नेजम होय ॥ ६३ ॥ दुणपुर की कथा सपुरण समापना गाव धाम मुकाम मधे लीपी पोथी ।

१५५ कथा इसकदर की, केसौजी कृत । छन्द सख्या-१९२ । खडित । पत्र सख्या-१३ । देशी कागज । आकार-८ २५×३ ७५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-३१-३३ । लिपि-पाठ्य । सवत १८७० म भग

वानदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावतखेडा ।

आदि–श्री विसन जा ॥ लिषतु कथा इसकन्दर की ॥ राग सारठि ।
दाहा– श्री पति पहलो स्ववरिये ॥ अलप अपार अनत ॥
प्रभ गुरु जल थल रहै ॥ सब भाजण भगवत ॥ १ ॥
अन्त–ऐस कथा कही कर जोडि । आवागवणि चुकावो षोडि ।
जो यह कथा सुण चित लाइ ॥ सत करि मान सुरगे जाइ । १९२ ।

इसकन्दर की कथा सपूरण समापिता ॥ लिषत साघ थी हरकीसन सा जी का चला भगवनदास ॥ समत । १८७० । वार म तवा मोती जेठ सुदी सातू ७ ॥

५६ अमावस्या महात्म्य कथा, मयाराम कृत । छन्द सख्या–१४४ । खडित और फटा हुई । पत्र सख्या–१० । देशा कागज । आकार–६×४ इच । हाशिया–दाए, बाए एक इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१० । अक्षर–प्रतिपक्ति–३५–३८ । लिपि–पाठ्य । सवत १८८४ म सूरतराम द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।

आदि–श्री गणेशायनम अथ मावसरी कथा लिषत
कुडलिया–प्रथम बदू गुरदेव कू दूतिये बदू सब साध
विष्णु बदु पुन तीसर जात मिटत जु व्याध २
अन्त–सीस धरणि धरि करत हू नमसकार सौ बार
इष्ट देव मम प्रभ गुरु लीला हित अवतार १४४ । इति श्री महाभारथ श्री कृष्णार्जुन सवादे अमावस्या महात्म्य कथा मयाराम विरचताया सपूरणम् १ लिषत साध थी गगारामजी का चेला सूरतराम सवत १८८४ रा मिती मिगश्र वदि ५ वार गनामर ॥

१५७ दस अवतार, रचयिता–अज्ञात । छन्द–१० । पत्र सख्या–२ । देशी कागज । आकार–६×४ इच । हाशिया–नाम, बाएँ–पान इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–२८–३६ । लिपि–सुपाठ्य । लिपिकाल–अनुमानत सवत १८५० के लगभग । लिपिकार–अज्ञात । प्रथम १० छन्दों के पश्चात एक श्लोक सस्कृत मे है । प्राप्तिस्थान पीताम्बर मायरा ।

आदि–श्री जभेश्वरायनम अथ दस अवतार लेषते आदू अनादू सिस्टे न भवण
अन्त–इति दस अवतार पढत सुणते गगा सनान फल लभते सब पाप मुचते मुग मोष गच्छे । इस अवतार स्म सपूरण ॥ १० ॥

१५८ प्रमर, ऊदोराम कृत तथा एक कवित । स्या पत्र–१ । आकार–७×४ इच । हाशिया नहीं है । कुल २० पक्तियाँ । अक्षर–प्रति पक्ति–१२–१७ । लिपि–पाठ्य । अनुमानत सवत् १९०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपिकार–अज्ञात । प्राप्तिस्थान–नागर मायरा ।

आदि–अथ ऊदे सर लिष्यत साथ गुर दरसन रह जास्या नित पूरब प्रीत विछोणी ये मा।

अन्त-पाप न कर रे विरांणोय्यां आखर तो दिन उगसी ॥ १ ॥

१५९ १ देशी पत्र। आकार-१० २५×४ २१ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। कुल २४ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-३१ से ४१। लिपि-पाठ्य। लिपिकाल-अनुमानत सवत् १८५० के लगभग। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी। इसमे ये रचनाएँ हैं —(क) विश्णोई धम, ऊदोजो कृत। छद-३। (ख) साखी उ डारय की, रायचद कृत। छद-४।

आदि-श्री विश्णजी ॥ कवत ॥ प्रथम प्रभाते उठ जल छाण र लीज ॥

अत-कय रायचद हरि नाव लीज अ त चित रहोजोय
जीवड सहारण विश्ण मिलीयो मुधि धीरज कीजोय ४ ॥

१६० आदि वशावली, लेखक-अज्ञात। देशी पत्र। सख्या-२। आकार-६×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन से एक इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३। अक्षर-प्रतिपक्ति-३६-४०। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकाल-उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध। प्राप्तिस्थान-मह त रामनारायणजी, रामडावास।

आदि-श्री विश्णवे नम अथ आदि वशावली लिख्यते प्रथम आदि विष्णु १

अ त-भुवनजी क जगनाथजी जगनाथजी क कुमलोजी कुमलजी क घवुजी घवुजी के दलोजी

१६१ बडी नवण। देशी पत्र-१। आकार-८×४ २५ इच। हाशिया-नाम मात्र को। कुल ११ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-३०। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री विश्णजी ॥ अथ निवण ॥ विश्णु विश्ण तू भण रे प्राणी ॥

अत-साच सतगुर मत्र कहीयो ॥ १ ॥ इति श्री वडी निवण।

१६२ पतीस पु'ह, सूर एव मोट्टदास कृत १ हरजस। देशी पत्र-१। आकार-९ ७५×३ ७५ इच। जीर्ण। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इच। कुल २७ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-३५-३७। लिपि-पाठ्य। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री विसष्णुजी मत छ अथ पु'ह पतीस की ॥ कुम वाडे द की पु'ह थुड पीलरी की पु'ह।

अ'त-अनत कोड आक दावन वोल्यै दास मोटु + + + +।

१६३ सध्यावदन मत्र, तारक मत्र तथा अ त म २ श्लोक। देशी पत्र-१। आकार-६×४ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच। कुल २३ पक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-२७-२८। लिपि-पाठ्य। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-श्री विश्णवेनम अथ सध्या वन्दन मत्र उ विश्णु विश्णु तु भण रे प्राणि।

अ त-सकला सुर वस भूवणे जनित त्व विमले कुले मया ॥ १ ॥

१६४ पत्र सख्या-३। देशी कागज। आकार-६ २५×३ इच। हाशिया-दाएँ बाएँ-आध

मात्र का। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-८। अक्षर-प्रति पंक्ति-२३-२६। लिपि-पाठ्य। लिपि काल-अनुमानत संवत १८७५ के लगभग। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-लाहावट साथरी। इसमें ये रचनाएँ है—(क) गुरु महिमा, मुरली कृत। (ख) धनि, गंगादास कृत। (ग) भजन-२।

आदि-श्री गणेशाय नम लिषतु गुर महमा-उ कारा सब संतन मिलि कीन बिचारा॥

अंत-दास तेरो पीर मुरीद तू जाका अस्तुति कीर॥ ३॥

१६५ आरती, ऊदोदास कृत। संख्या-२। देशी पत्र-१। आकार-६.५×३.२५ इंच। हाशिया-दाएं, बाएँ- पौन इंच। कुल-१५ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२०-२२। लिपि-पाठ्य। अनुमानत सं० १९०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-लाहावट साथरी।

आदि-आरती कीज श्री जंभ गुर देवा॥ पार न पावै गुर अलष अभेवा॥ टेक॥

अंत-पाचमी आरती घट घट वासा। हरि गुन गावै ऊधोदासा॥ २॥

१६६ नुक्ष। देशी पत्र-१। आकार-६.५×६.५ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल १६ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२४-२८। लिपि-पाठ्य। लिपिकाल-अनुमानत उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-श्री बीसीनीजी उ सबद गुरु सुर चेला पाव सत में रह्या अकेला।

अंत-साव सतगुर का मंत्र कहीयो। एतो श्री नुक्ष संपूरण।

१६७ देशी पत्र-१। आकार-८.२५×४ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल २३ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२४-२६। लिपि-पाठ्य। लगभग सं० १९०० में लिपिबद्ध। लिपि कर्ता-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-महंत रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जांभा। इसमें ये रचनाएँ है-(क) हरजस-१। सुषराम कृत। छंद-६। (ख) जाभजी की आरती, ऊधोजी कृत। छंद ५। (ग) भजन-१ कबीर कृत।

आदि- ॥ श्री विसन जी॥ लिषत हरजस राग त्रिलावल॥ ज गंगा जुग पांवती। भागीरथ आणी॥

अंत-दास कबीर जुगत कर जोडी उर की उर में चीनी। ३।

१६८ वंशावली, रचना-अज्ञात। देशी पत्र संख्या-२। आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएं, बाएँ-पाव इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १३। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३२-३६। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकाल-अनुमानत संवत् १९०० के आसपास।

प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-अथ आदि वंसावली लिख्यत प्रथम आदि विष्णु १ विष्णु के ब्रह्मा सुत २

अंत-अठार शत निनाणव वद पाव मधु मास

हरिकृष्णजी हरिसरण भयो समाप वास ४ थी

१६९ वंशावली (सिद्धों की परम्परा), तथा बालक मंत्र। देशी पत्र-१। आकार- ९×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इंच। कुल १७ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२६-३०। रामदास द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकाल-अनुमानत सं

१९०० के आसपास। प्राप्तिस्थान–पीपासर सायरी।
आदि–॥श्री विष्णुजी॥ अथ प्रथम कामाजी कि आदि वशावली लिपत॥ प्रथम आदि विष्णु १।
अत–विष्णु मत्र कान जले छुवा गुर फुरमाण विष्णोई हूवा॥ १ इति सपूर्णम्॥

१७० केसोजी कृत १ गीत तथा वशावली (वील्होजी की परम्परा)। देशी पत्र–१। अपूर्ण। इस पर पत्र सख्या ४ लिखी हुई है, आरम्भ के ३ पत्र अप्राप्य हैं। आकार–८×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इच। कुल १९ पक्तियाँ। अक्षर–प्रति पक्ति–२२–३०। लिपि–पाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा स० १६०० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–मह त रणछोडदासजी महाराज, आयूणी जागा, जाम्भा।
आदि–तिरथ बडो कीयो वल डीकम जन तारण जामेसर जाइ
अत–ध्यानजी का चेला अ मरदासजी॥ १॥ फतोजी। २।

१७१ पत्र सख्या–३। (४ पत्रो मे से दूसरा अप्राप्य) अपूर्ण। मशीन के बन कागज। जीर्ण और खडित। आकार–९×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–एक इच। लिपि–सुपाठ्य लिपिकार–सभवत स्वामी ब्रह्मानदजी। लिपिकाल–अनुमानत सवत १९५०। पक्ति प्रति पृष्ठ ६–१०। अक्षर–प्रति पक्ति–२८–२६।
प्राप्तिस्थान–मह त भोलारामजी, रावतखेडा। इसमे ये रचनाएँ हैं –
(क) धम अ ग, ब्रह्मानदजी कृत–अपूर्ण। (ख) भजन–१, ब्रह्मानदजी कृत। छद–६। (ग) भजन–१, पदम भगत कृत। पक्ति–४।
आदि–६॥ श्री गणेशायनम श्री जभेस्वरायनम कृष्णाय गोविंदाय नमोनम
प०–मत (विश्नोई पथ) के होने का निमित
उ०–सतजुग में प्रहलाद कु वचन दिया था
अत–पदम भण पडवा पाय लागु बदेरी मु बाग लगायसी॥ ४॥

१७२ स ध्या–वदन मत्र तथा तारक मत्र। देशी पत्र–१। आकार–८ ७५×४ इच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–एक इच। कुल १९ पक्तिया। अक्षर–प्रति पक्ति–३८–३७। लिपि–सुपाठ्य। सवत १९३८ म स तोषदास द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी।
आदि–श्री विष्णवे नम अथ स ध्या वदन मत्र उ विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी
अत–सवत १६३८ मिति श्रावण श्रु द ४ लिपिकृत म्स तोषदासन लालासर श्री सायरी मध्ये श्री रस्तु पठणार्थं स्वयम् विष्णुवनम उ तत्सत

१७३ आरती–१, भजन–४, साहबरामजी कृत। मशीन का बना पत्र–१। जीर्ण, खन्डित। आकार–१६×५ इच। हाशिया–नही है। कुल ७५ पक्तिया। अक्षर–प्रतिपक्ति १६–२१। लिपिकार–अज्ञात। लिपिकाल–अनुमानत सवत १९५० के आसपास। प्राप्तिस्थान–जागलू सायरी।
आदि–ओ रामजी लीपते आरती कु कु म रा पगल्या पधारो गुरु जभे देव

अन्त–पाहाडराम सरन सतगुरु की थारे चरना में हु मांरो सीस ५

१७४ साखी–१, रचयिता–अज्ञात। अपूर्ण। मशीन का बना पत्र–१। आकार–१२×६.७ इंच। हाशिया–नगण्य। कुल २८ पंक्तियाँ। अक्षर–प्रतिपंक्ति १०–१५। लिपि पाठ्य। लिपिकार–अज्ञात। अनुमानतः संवत् १९५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–जागनू साथरी।

आदि–श्री जम्भ गुरुवे नमः लिख्यतु साखी
दोहा सतनाराण सिंवरीये सिंवरां सदा सहाय
ब्रह्म सुता सु बिनती अक्षर द्यो समझाय

अन्त–अहो जोर न देस्यां जाणो ब मारां किया बताणो। टेर

१७५ छप्पय ६, गोविन्दरामजी कृत। मशीन का बना पत्र–१। आकार–१०×६.५ इंच हाशिया नगण्य। कुल पंक्तियाँ–३८। अक्षर–प्रतिपंक्ति १६–१९। लिपि–पाठ्य लिपिकार–अज्ञात। अनुमानतः संवत् १९५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान जागलू साथरी।

आदि–श्री रामजी अख्यात अलष अ मदा मांय मुकुट अपब जोत जांहां राजीय
अन्त–गोविंदराम कहै जम कु सीवरो होय चीत लाय भरम न भुलो भाईयो ६

१७६ पद–४, सुरतराम कृत। अपूर्ण (आदि के २ पद नहीं हैं, कुल पद संख्या ६ है) प्राप्त–पत्र संख्या–२। देशी कागज। आकार–६.२५×४.२५ इंच। हाशिया नगण्य। पंक्ति–प्रति पृष्ठ ६। अक्षर–प्रति पंक्ति २०। लिपि–सुपाठ्य। लिपिकार अज्ञात। अनुमानतः संवत १९०० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी।

आदि टेक॥ दरस करत दिल को अ भाग॥ मन में हू मगन भई॥ १॥
अन्त–मन सुरतराम ऐ हिरद धारो॥ ऐहीं ध्यान सतगुर का बिचारो ६॥ पद॥ ६

१७७ हिंडोल्णो, हीरानंद कृत। पद ८। १ देशी पत्र। आकार–६×५ इंच। हाशिया नगण्य। कुल ३८ पंक्तियाँ। अक्षर–प्रतिपंक्ति–१६–१६। लिपि–पाठ्य। लिपिकार अज्ञात। अनुमानतः सं० १९०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–जागनू साथरी

आदि–श्री विसनजी सत सही॥ लीषते हीडोलणो
दोय सील सजम पय रोपे नाव बेंसी पारि।

अन्त होडोलणो सभरथल कूल साघ ८ इती हिंडोरणो

१७८ देशी पत्र–१। जाम्भ, सहित। आकार–१०.७५×५.७५ इन्च। हाशिया–नगण्य कुल ५७ पंक्तियाँ। अक्षर–प्रति पंक्ति–१६ २२। लिपि पाठ्य। अनुमानतः सं० १८५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपिकार–अज्ञात। दो भिन्न हाथों की लिखावट से प्रतीत होता है किसी बड़ी प्रति का यह एक पत्र है। प्राप्तिस्थान–जागलू साथरी। इसमें ये रचनाएं हैं —(क) साखी १। ४ पद, केसोजी कृत। (ख) साखियां–४, बणियाल कृत। (ग) कवित्त २, वील्होजी कृत।

आदि– + + जामेसर जीवां धणी दातार भव भाजण जीवां धणी २

अन्त-केई २ कुपर कुयाव ॥ व निरताह न जाण ।
घोरी लाव चित्त साह सू परचो ।

१७९ भजन-१ तथा लावनी-१ । रचयिता-शीतल । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-१३ × ४ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ३५ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१५-१८ । लिपि-सुपाठ्य । सभवत रचयिता ही लिपिकार है । अनुमानत सवत् १६५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । (पत्र यत्र तत्र फटा हुआ है)।
आदि-ओ३म् भजन न० १ ज जै गुरु जभे स्वामी कलि कलुप विनाशन हारे ॥
अन्त-सच्चा प्यारा विशनोई धम सिखाया शीतल कह फिर से वेद माग विस्तारे

१८० जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह द्वारा जारी किए गए, विष्णोई धम सबधी सवत् १९२३ के आज्ञा-पत्र की नकल । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-२०×६ ५ इंच । ३५ पंक्तियाँ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

१८१ गुरुदेव महिमा, साहबरामजी कृत । अपूर्ण । आदि के ५ पत्र हैं । मशीन के बने कागज । आकार-६ २५ × ४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१२-१३ । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि-॥ श्री गणेशाय नम ॥ दो० ॥ गुरु गरवा सुमेर स्म ॥ गहरा समद समान ॥
मीठा इमृत उदिघ इव ॥ शाशव नैना भान १
अन्त-छिपा छिपा ॥ सजन नैना ॥ पर्सा श्रुति देव गुरु रत ॥
विद्र उधा ॥ घना कुवा " ।

१८२ हरजस-१, साहबरामजी कृत । अपूर्ण । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-६ २५× ४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-७ । अक्षर-प्रति पंक्ति—१७-१८ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-साहबरामजी । अनुमानत सवत १९२५ के लगभग लिपिबद्ध । यह २७ वा पत्र है । इसके पहले के २६ और पश्चात् के पत्र अनुपलब्ध हैं । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।
आदि-ज ज जभ गुरु जग जाना मुक्ति सोई मुकामा टेक
अन्त-साहबरामा भक्ति अकामा पायो पद निरवांना ६

१८३ कवित्त-१, साहबरामजी कृत । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-६ ५ × ४ २५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ८ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रति पंक्ति-१४-१६ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १९५० के लगभग लिपिकृत । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।
आदि-॥ श्री रामजी कवत काहां गनपत को ग्रेह कहो काहा ब्रह्म नारायण
अन्त-साहब पुछ पंडितां काहां तेज पुंज अस्थांन १

१८४ प्रवाना (परवाना) तथा पाना, साहबरामजी कृत । पत्र सख्या-४ । देशी कागज । आकार-६ २५×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रति पृष्ठ-

७। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१५-१६। लिपिकार-साहबरामजी। लिपिकाल-संवत् १६५० से पूर्व। प्राप्तिस्थान-श्री घोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारांवाली।
आदि-प्रथ श्री ग्रवाना प्रारभन उ हुग॥ निरंजन देहा सोह श्रुति माण है॥
अन्त-सब्दों शब्द समाय॥ प्रयापों होत है॥ विष्णु॥ इति श्री गतपांन समाप्त॥

१८५ सार (सार) बत्तीसी, साहबरामजी कृत। छन्द संख्या नहीं है। मशीन के बने कागज। पत्र संख्या-१८। आकार-६ २५×४ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१३-१५। लिपि-सुपाठ्य। साहबरामजी द्वारा लिपिकृत। अनुमानतः संवत् १६५० से पूर्व लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री घोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारांवाली।
आदि-॥ ६॥ प्रमातमप्रलोक सें आतम दोनों ड्डार
भव न्याय में साहबराम सतगुर भये अपार १
अन्त-लिपीकृत साध सारी॥ गोविंदरामजी का सीष्य॥ साहबरामेण॥ १॥
सारबतीसी यहे कृताया साहबराम॥

१८६ अमर चालीसी, साहबरामजी कृत। कुल छन्द संख्या नहीं दी है। देशी कागज। पत्र संख्या-१३। आकार-६ २५×४ इंच। हासिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-६-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-१८-२१। श्री गणेशराम द्वारा अनुमानतः संवत् १६५० से पूर्व लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री घोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारांवाली।
आदि-॥ ई॥ श्री गणेशायनम॥ अमर चालिसि प्रारभते॥ श्री अपइकाराय नम उ बावन अ गुर युद हैं॥ गई दमब द्वार॥
अन्त-साहब मोला ग्यान का सार करै मदान ईती श्री अमर चालिसि साध साह बरामेण विरचतेया॥ लिपिकृत साध साहबरामजी का शीष्य गणेशरामण लिपत सपुरणम् अवेत॥ ॐ तत सत।

१८७ सार शब्द गुंजार, साहबरामजी कृत। छन्द संख्या-१८७। मशीन के बने कागज। पत्र संख्या-५६। आकार-६ ५×४ इंच। हासिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-६। अक्षर-प्रति पंक्ति-१४-१६। लिपि-सुपाठ्य। संवत् १६३६ में साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध। (बीच में कई पत्र गणेशरामजी के हाथ के लिखे हुए हैं)। प्राप्तिस्थान-श्री घोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारांवाली।
आदि-अथ श्री सार शब्द गुंजार प्रारभे श्री अपइकाराय नम॥ श्री गुरुभ्योनम॥
पावर बिनाई अस्त मत निदक जड अज्ञान
अन्त-संमत १६३६ रा मीति चत सुदि ११ वार बृस्तवार सपूरणम। कृताया साध श्री महंतजी श्री १०८ गोविंदरामजी का शिष्य साधी श्री साहबरामण ग्राम मान्डी मध्ये---

१८८ आरतो मोर भजन। देशी पत्र-१। आकार-१२×६ इंच। हासिया-दाए, बाए-सवा इन्च। कुल २३ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रति पंक्ति ३०-३५। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकाल-अनुमानतः सं० १६५० के आसपास। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-

श्री धाकलराम विष्णुदत्त विष्णोई दुनारावाली। इसमें ये रचनाएँ हैं-(क) आरती-२ (दूसरी ऊदोजी कृत है)। (ख) भजन-३ कबीर, रविदास तथा नामदेव कृत।
आदि-श्री गणेशायनम लीपत आरती आरती कीज श्री जभ गुर देवा—
अन्त-रामजी का हर गु ण नामदेजी गाव ५ ॥

१८९ पुस्तिका। हरजस और आरतिया। मशीन के बने कागज। पत्र संख्या-१७। खडित, जीर्ण। आकार-५ ५×४ ५ इ च। हाशिया-नगण्य। पक्ति-प्रति पृष्ठ-७। अक्षर-प्रतिपक्ति-१३-१५। लिपि-सुपाठ्य। लगभग सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-विष्णोई मदिर, काट। इसम माखनजी, मीठुदास, ऊदोजी, मुरारी और मोतीराम की आरतिया, तथा कबीर, रविदास और परमानन्दजी के हरजस हैं।
आदि-उाम् श्री गणेशायनम श्री विष्णु जी सहाय जिभीया जप ले जभ सवेरा ॥
अन्त-इति श्री ठाकुरजी की आरती समपूरण ॥ १ ॥ १७ ॥ आरती हुई समाप्त।

१९० पोथी। फोलियो संख्या-१०१। देशी तथा मशीन के बने कागज। खडित और फटे हुए। आकार-१०×६ ५ इ च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ १६। अक्षर-प्रतिपक्ति-१६-१८। लिपि-पाठ्य। सवत १९४५ म प० कृपाराम द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लिपिकार के पौत्र से, जागलू। इसमें ये रचनाएँ हैं-(क) राग-रागिनी वर्णन, (ख) रुक्मणी मगल। विभिन्न राग-रागिनियो के अ तगत छद संख्या-पृथक पृथक दी गई है।
आदि-अथ राग रागनी वरणन ॥ कवत छप
+ + भर घटका च्यार ४ रात रहिया सु सोव
अन्त-सवत १९४५ वर्षे शाके १८१० चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्थी ४ भृगुवारे पृथम पहैर जगलगढ मध्ये लिपीकृत प्रोहित कृपाराम स्वपठनाय—।

१९१ पुस्तक। मशीन के बने कागज। फोलियो संख्या-१२८। आकार-६ ५×६ २५ इ च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च। लिपि-सुपाठ्य। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६। अक्षर-प्रतिपक्ति-११-१४। बिहारीदास द्वारा सवत १९७२ मे लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री साधु भिह्वारामजी महाराज, गुढा। इसम ये रचनाएँ हैं-(क) साखिया, संख्या-८० १ विभिन्न कवियों द्वारा रचित। (ख) प्रह्लाद चरित्र, ऊदोजी। छद संख्या-४०१।
आदि-श्री रामगुरुवे नम ॥ अथ साखी लिख्यते॥ राग सुहव ॥
साधे भोमणो कियो अलोच। जमो रचावीयो १ ॥
अन्त-इति श्री प्रहलाद चरित्र ऊधवदास कृत समाप्तम् लिखित साध बिहारीदास चेला विष्णु दासजी का १९७२ असाढ सुदी १४ गाव भगतासणी में चौधरी लाभू वणियाल के घरा १ ।

१९२ रजिस्टर। पृष्ठ संख्या-१४०। मशीन के बने कागज। आकार-१३ ५×८ इ च। श्री गणेशरामजी तथा श्री लक्ष्मीनारायणजी का सवत् १९४६ स १९५० के बीच

लिखा हुआ। इसमें श्री साहबरामजी के संग्रह की प्रकाशित और हस्तलिखित पुस्तकों की सूची है। साथ ही साहबरामजी, ब्रह्मानंदजी तथा जम्भसार संबंधी महत्वपूर्ण सूचनाएँ भी है। प्राप्तिस्थान-श्री घोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारांवाली।

१६३ जम्भसार आदि। साहबरामजी कृत। देशी कागज। आकार-१२×६ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इन्च। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-२४-२७। साहबरामजी द्वारा संवत १६४४ से १६४७ के बीच लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। अपेक्षाकृत मोटे अक्षर। प्राप्तिस्थान-श्री घोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारांवाली। इसमें ये रचनाएँ हैं—(क) सतलोक पहुँचने का परवाना। (ख) सार शब्द गुजार, ५ प्रकरण। पत्र १-२८। (ग) सार बत्तीसी-छन्द ४१। पत्र २६-३४। (घ) अमर चालीसी-छंद ४४। पत्र ३५-४१। (ङ) महामाया की स्तुति। छन्द-३७। पत्र ४१-४७। संवत १६४४ मिती आसोज बदि ६ को साहबरामजी द्वारा स्वपठनार्थ गाँव नादडी में लिपिबद्ध। (च) जम्भसार। २४ प्रकरण, जिनकी सूची अग्रलिखित है -

प्रकरण	प्रकरण – नाम	रूपक-संख्या	कुल पत्र-संख्या
१	२	३	४
—	(विषय-सूची)	—	६
१	वंशावली वर्णन नाम	४२	१०
२	प्रल्हाद चरित्र आख्यान	५०	२४
३	सनतकुवार चरित्र कथा	२०	१२
४	अवतार स्तुति	४०	१८
५	अवतार चरित्र ग्रंथ	५७	१५
६	बाल चरित्र कथा	६८	२७
७	सिकंदरशाह पातस्याह परच्या नाम	१७२	५४
८	विश्नोई स्थापना	५६	२७
९	भवन विडदावली	७८	३६
१०	राज उपदेश	८६	३०
११	जोगी उपदेश	१२७	२६
१२	रावन प्रबोध	१४६	४७
१३	नव राजिंद्र उपदेश	१४४	२७
१४	जम्भ सागर महातम वर्णन	१६७	५७
१५	भूत पलटणी-दव वक्तव्य	१३६	४६
१६	महाप्रलय	६६	३६
१७	जोगीशाख्यानो	७८	५६
१८	वर्ण-विभाग	२००	५८

१९	जाम रसणेवो -	७८	४०
२०	भक्तगिणत प्रकास	४३	२०
२१	जमीं महात्म्य वरणन	५७	२९
२२	जमचलरण मद्र अस्यानो	५१	७८
२३	(कोई नाम नहीं)	२८२	७१
२४	नीत धरम महारम सयुक्त	१६८	६७

आदि-॥ ६ ॥ श्री प्रमात्मने नम ॥ श्री गुरुभ्योनम ॥ श्लोक ॥ प्रणम्य प्रभात-मान ॥ प्रणम्य पुरुणोरम ॥ प्रणम्य प्र ब्रिह्म प्रणम्य परापर ॥ १ ॥
अन्त-इति श्री जम धारेण ॥ शाय श्री साहबरामेण ॥ वृरचतेया ॥ नीत धरम-म्हारम सजुक्तो नाम चत्रुवीसो प्रक्रण सवत १९४७ रा मीती जेष्ट सुदी १२ लिपि कृत शारी साहबरामेण ।

१९४ देशी पत्र-१ । अपूर्ण । खंडित । आकार-८.५×४ इंच । हाशिया-नाम मात्र को । कुल १२ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३१-३२ । लिपि-पाठ्य । सवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपिकार-अज्ञात । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसमें किशोर और केसोजी के ८ छन्द हैं ।
आदि-हूं त कोई दोर करत सयांनी सोर चाहू नें कहत कहा तेरो के गयो (केसोजी)
अन्त-धरणीं उच जय पाव न धरहू बरुहू बरुहू इन पांवन कूं ॥ ८ ॥

१९५ देशी पत्र-१ । फटा हुआ । आकार-११.७५×८ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १७ । अक्षर-प्रतिपंक्ति १८-१९ । लिपिकाल-अनुमानत सवत १९०० के आसपास । लिपिकार-अज्ञात । लिपि-पाठ्य । इसमें लालदास का बारह माला तथा पीतांबरदासजी का एक भजन है । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।
आदि-प्रे सो मैं न जीऊ री अरी अरी उ न स्यांम सु दर बिन
अन्त-जन पितांबरदास जीवन जन को जस बढाव ॥ ५ ॥

१९६ देशी पत्र-१ । अपूर्ण । आदि के १० पत्र अप्राप्य हैं । आकार-९×४.२५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । कुल ९ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति ३३-३४ । लिपिकार-अज्ञात । लिपि-पाठ्य । लिपिकाल-अनुमानत सवत् १८५० के लगभग । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी । इसमें ऊदोजी के २ भजन हैं —
आदि-राग काफी ॥ घर आवोजी मीठा बोला ॥ प्यारी तमारी वातोंया ॥
अंत-ऊधवदास क रहो प्रभु पास ॥ नित नवला पावणा ॥ ६ ॥

१९७ देशी पत्र १ । आकार-६×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । कुल ६ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रति पंक्ति २७-२८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १९०० के आसपास लिपिबद्ध । इसमें मीठूदास के दो छंद हैं । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।
आदि-श्री विष्णुजी ॥ होता एक धोरी पापन का धोरी अंत का अघोरी
अन्त-कहै दास मिठु जब खोलदी किंवारी है ॥ २ ॥

१९८ इसकंदर पातस्या री कथा–वसीवानजी कृत । छंद संख्या–२०४ (१९२+१२)। अपेक्षाकृत पतला देशी कागज । पत्र संख्या–१० । आकार–१०×५ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएं–आध इंच । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–१८ । अक्षर–प्रतिपंक्ति २८–३५ । लिपि–पाठ्य । संवत् १८७८ में परसराम द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–श्री धोकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली । १९२ छंदों के पश्चात् पुष्पिका है–"इति श्री कथा विस्वतारण पातसाह इसकंदर की कथा संपूर्ण ॥ समाप्त ॥ लिषतं साध श्री हर-किसनदासजी रा सिष्य परसराम ॥ संवत १८७८ रा मिती चैत सुदि १५ ॥ वार मंगल ॥ श्रीरस्तु ॥ मंगलमस्तु ॥ १ ॥" इसके पश्चात् पुनः इसके छूटे हुए १२-छंद और हैं ।

आदि–अथ इसकंदर साह पातस्या री कथा ॥ श्री गणेशायनम लिषतं कथा इसकंदर की ॥ राग मारू ॥

दोहा–॥ श्रीपति पहली सिवरिये । अलख अपार अनंत । सम गुरु जल थल रहै । भव-भांजण भगवंत ॥ १ ॥

अन्त–लेण वण उपज संसार विसन जप्यां तो मोष दवार ।
जैसी चाहे तसो सुण वेद कतेब भगत गुर भण ॥ ८६ । दोहा सोनी ५ पानो ६.

१९९ चेतन कथा, सुरजनदासजी कृत । अपूर्ण । अंतिम दो पत्र–१३ और १४ उपलब्ध हैं। अपेक्षाकृत पतला देशी कागज । आकार–१०×५ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएं–१ इंच । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ १४ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–३८–४५ । लिपि–पाठ्य । संवत १८८६ में हरिकिसनजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–धोकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली । इसमें सुरजनदासजी कृत ज्ञान चितावणी के अंतिम १९ से २७ छंद हैं । पश्चात चेतन कथा है, जिसमें ३१ छंद हैं, जो पूर्ण है ।

आदि–हरि कू भज हरि का होय ॥ १८ ॥ दुहा

अंत–इति श्री सुरजनजी की चेतन कथा संपूर्ण ४ लिषतं साध हरिकिसन संवत १८८६ मिति जेष्ट सु० ८ ॥

२०० कवित्त, गोविंदरामजी कृत । संख्या–१८ । पत्र संख्या–२ । देशी कागज । आकार–१२×६ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएं–१ इंच । लिपि–सुपाठ्य । अक्षर–अपेक्षाकृत मोटे । पंक्ति–प्रति पृष्ठ–१३ । अक्षर–प्रतिपंक्ति ३२–४० । लिपिकार–अज्ञात । लिपिकाल–अनुमानतः संवत १९२५ के लगभग । प्राप्तिस्थान–श्री धोकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाला ।

आदि–॥ ६ ॥ श्री गणेशायनम श्री जंभेस्वरायनम
पूरण गुरु परमात्मा जंभेसर जगदीस ।
आदि पुरष अवचल तु हि तोहि नवाऊं सीस ।

अन्त–सरणागत सुष करन कु तुमरो विड्द विराज ।
अपनो ही जन जान क कृपा करो महाराज ॥ १४ ॥

२०१ पोथी । ला० प्रति । फोलियो संख्या–५९० (२५+५६५) । बीच से मिली हुई । देशी

कागज, गहरा बादामी रंग। प्राचीन, जीर्ण, यत्र-तत्र किनारों से खंडित। कहीं कहीं आपस में चिपके हुए पत्र पृथक करने से फट गए हैं, ऐसे स्थान अपाठ्य है। आकार-९.५×१२ इंच। हाशिया-सिलाई की ओर-आधे से एक इंच। किनारों पर आधा इंच। श्री परमानदजी वणिहाल द्वारा संवत १७९६ से १८१० के बीच लिपिबद्ध। लिपि-साधारणत पाठ्य। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-सामान्यत --३० (कहीं कहीं ३६ तक)। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२५-२६ (कहीं कहीं ३३ तक)। कतिपय पत्र अपेक्षाकृत मोटे अक्षरों में। इनमें पंक्ति-प्रति पृष्ठ-२५-२८ और अक्षर-प्रतिपंक्ति-२५-२६। लिपिकार ने पोथी की रचनाओं का सूचीपत्र दिया है, जिसमें इससे पूर्व की, सं० १८ तक की (आदि के फोलियो १ से २५) रचनाएँ सम्मिलित नहीं हैं। फोलियो ५३६ से सूचीपत्र में लिखित रचनाओं के नाम और फोलियो संख्या में कुछ व्यतिक्रम है जो सम्भवत सिलाई करते समय पन्नों के इधर-उधर लगा देने से हो गया है। आदि अंत के कुछ पन्ने निकले हुए प्रतीत होते हैं। लालासर साथरी की प्रति होने से इसका नाम ला० प्रति रखा गया है। प्राप्तिस्थान-श्री महंत रामनारायणजी, रामड़ावास।

यह अत्यन्त प्रामाणिक और विश्वसनीय प्रति है। इस बृहद संकलन ग्रंथ में निम्नलिखित रचनाएँ हैं --१ छत्तीसी बारपड़ी-छंद-३६। २ चौपई, छंद-९ (बारपडी)। ३ जपडी, छंद-१०, ऊदोजी कृत। ४ कम भ्रम संवाद, छंद-९५। ५ गुणतानाम, छंद-४३, खेमदास कृत। ६ नाम मजरी, छंद-२६४, नवदास कृत। ७ फुटकर श्लोक, ३०। ८ श्लोक-२४। ९ छुटक साखी, दोहा-३६। १० दुहा-दोसट कूट, २२। ११ उदराज का दुहा-१२२। १२ दुहा-१६। १३ फुटकर दुहा-२६। १४ जोग समाध्य, छंद ४०, जन हरिदास कृत। १५ साखी (छदा की), केसोजी-१, परमानदजी-३। १६ सोहल, छंद ५, ऊदोजी कृत। १७ हरजस, परमानदजी-४, जनरसुल-१। १८ दस अवतार का छंद, संख्या-११, केसोजी कृत। ये रचनाएँ फोलियो १ से २५ तक है, इसके पश्चात सूची पत्र है। १९ चौढालियो, छंद-१००। २० समन की साख्य, दोहा-२०। सूची पत्र सहित ये रचनाएँ (१९-२०) पुन आरम्भ किए गए फोलियो १ से ५ तक है। २१ पाटी पाट की, ८। २२ पाडी की वेगते। २३ पाडा, एकावली-६। २४ पाटो एकाकी-४। २५ चरणायक-८। २६ गोत्राचार। २७ आदे वखा वली। २८ पचीस नाम। २९ विसन पजर। ३० वेसन सते नाम। ३१. विवरिस। ३२ कलस, पाहल। ३३ बालक को मंत्र। ३४ व्याह की पीढीया की सुरति। ३५ कलमा नोवज। ३६ फातेमा। ३७ मछली को दवा। ३८ पजनाम। ३९ हरफ। ४० नवण्य। ४१ (संख्या २१ से ४० रचनाएँ-फोलियो २१ तक)। सबद श्री वायक (सवदवाणी), सवद संख्या-१२१। गद्य प्रसंग सहित। पुष्पिका के पश्चात २ सबद अतिरिक्त।

आदि-श्री वेसनजी सति सही लेषतु सवद श्री झांभजी रा वायक ॥ काच करव नीर रापी काची माटी का दीवटीया कराए जा जाहि पाणी घतायो हुकम [illegible] दीया जगाया

बांभण म परचो बीवाल्यो आदि सबद वांणी सतगुर की श्री सतगुर वाच ॥ गुर चौहू गुर चौहि पेरोहित गुर मुंपि भ्रम बर्षांणी ॥ जो गुर होयबा सहजे सीले ॥ नादे विदे ॥ तिह गुर का आलीवार पिछांणी ।
अन्न-धोसन वोसन तु भण रे प्राणी । पक लाव उज । रतन कया बकुठ वासो । जुरा मरणभोव भाज ॥ १२१ ॥ एती सबद श्री वायक सपूरणो समत १७९६ । सब दवाएी फोलियो म० २१ मे ४३ तक है ।
४२ सावी—(१) राग सुहब को-१८१ (२) राग धनासी को-२८ । (३) राग आसा को-१० । (४) राग माड को-१५ । (५) राग भु वरी को-१ । (६) राग हुस को-२ । (७) राग मलार को-३ । (८) राग सोरठि को-३ । (९) राग गवड़ि को-१० । (१०) राग रामगीरी को-९ । (११) राग सोधु को ८ । (१२) राग जतसीरी को ३ । (१३) उमाहो-१ । (१४) असतोतर-१ । (१५) रगीलो-१ । (१६) आंबेलो-१ । (१७) बारामासो-१ । (१८) बुध परगास-१ । (फो० ४४ – ८१) ।
"॥ एक सौ तेरा प्राय सावो सपुर समापिता समत १७९७ परमांणव वणिहाल लीवो छ सही श्री विसनजी सति सहि ॥"
कुल सालिया ११६ हैं किन्तु लिपिकार ने भूल से ११३ बताई हैं । ३ सालियों का अन्तर,५४ वीं पर सख्या न लगाने तथा ५६ के स्थान पर ५३ लिखने के कारण है । (आगे छन्द-सख्या लिपिकार के अनुसार दी गई है, तत्पश्चात कोष्ठक म रचना-विशेष के आरम्भ होने की 'पाना' (फोलियो) सख्या है) ।
४३ हरजस वोल्हजी का-२० । (८१) । ४४ हरजस सुरेजनजी का-४८ । (८४) । ४५ हरजस केसजी का-११ । (९१) । ४६ सोहलो मुकनजी को-११ । (९२) । ४७ हरजस और फुटगर-१० । (९३) । आलमजी कृत । ४८ हरजस रासजी का-२२ । (९४) । ४९ दुहा वोल्हजी का-२६ । (९८) । ५० दुहा केसजी का-४१ । (९९) । ५१ साख्य केसजी को-४५ । (१००) । ५२, साख्य माडारम की-३० । (१०१) । ५३ साखि सुरजजी की-११२ । (१०१) । ५४ असमेध की साखे-४५ । (१०६) । ५५ पद्रायणो केसोजी का-८९ । (१०७) । ५६ छन्द सुरेजनजी का-१३६ । (११०) । ५७ छन्द मुकनजी का-५५ । (११४) । ५८ छन्द काहू चारण का-५४ । (११६) । ५९ छन्द तेज चारण का-१६२ । (११८) । ६० गीत सुरेजनजी का-१७ । (१२३) । ६१ कवत असु चारण का-१६ । (१२५) । ६२ छपइया उदजी का-५७ । (१२६) । ६३ छपइया वोल्हजी का-४५ । (१३१) । ६४ कुड सीया वीमत छत्तीमी-३६ । (१३४) । ६५ कवत परसग का-१३ । (१३६) । ६६ कवत सुरजनजी का-८६१ । (१३७) । ६७ कवत गोपाल का-७ कुडलिया । (१५५) । ६८ सवइया फुटगर १६ । (१७७) । ६९ कवत रामजी का १४ । (१७०) । ७० कवत उधोदास का-११ । (१८०) । ७१ कवत केसजी का-८० । (१८१) । इनम गोपाल,वोल्हो ओर गह के छन्द भी हैं । ७२ कवत वोल्हजी का २६ । (१८८) । ७३ कवत फुटगर-२० । (१८९) । ७४ कवत वराठ का-१० । (१९१) । ७५

कवत महाभारत का-१० । (१६२) । ७६ कु डलीया-६ । (१६२) । ७७ सवइया पनर तीय का-१५ । (१६३) । ७८ सगीत (के सवइये)-४ । (१९४) । ७६ सवइया कोसनजी का-१२ । (१६४) । ८० सवइया सुरजनजी का-२६ । (१६५) । ८१ सवइया केसजी का-३६ । (१९७) । ८२ मत्र सात सीघ काज-७ । (२००) । ८३ कथा प्राय घडावघ दुहा-५३ । (२०१) । वील्होजी कृत । ८४ कथा औतार-पात १४२ । (२०२) । वील्होजी कृत । ८५ कथा बाललीला ६१ । (२०६) । केसौजी कृत । ८६ कथा गुगलीय की-८६ । (२०८) । वील्होजी कृत । ८७ कथा पुल्हजी की-२५ । (२११) । वील्होजी कृत । ८८ कथा सचअपरी वेगतावली-५४ । (२११) वील्होजी कृत । ८६ कथा लोहापागल की-१८७ । (२१३) । केसौजी कृत । ६०. कथा इसकदर की-२१२ । (२१८) । केसौजी कृत । ९१ कथा दु णपुर की-६३ । (२२५) । वील्होजी कृत । ९२ कथा जैसलमेर की-१५४ । (२२७) । वील्होजी कृत । ६३ कथा चीतोड की-१६८ । (२३१) । केसौजी कृत । ६४ कथा मेडत की-१७२ । (२३६) । केसौजी कृत । ६५ कथा सस जोपांणी की-१४४ । (२४०) । केसौजी कृत । ६६ कथा ओरछा की-३२ । (२४५) । वील्होजी कृत । ९७ कथा उद अतली की-७७ । (२४५) । केसौजी कृत । ६८ कथा जति तलाव की-८० । (२४७) । केसौजी कृत । ६६ कथा ग्यानचरी-१३० । (२५०) । वील्होजी कृत । १०० कथा प्रथ भोगल प्राण-३०७ । (२५२) । सुरजनजी कृत । १०१ कथा औतार की-२३७ । (२६३) । सुरजनजी कृत । १०२ कथा सेठ सुदरसण की-२८ । (२७०) । १०३ कथा घन्नामणी-२५ । (२७१) । सुरजनजी कृत । १०४ कथा धरमचरी-१११ । (२७२) । सुरजनजी कृत । १०५ कथा ग्यांन तलक-१०४ । (२७५) । सुरजनजी कृत । १०६ कथा ग्यांन माहातम-२२८ । (२७८) । सुरजनजी कृत । १०७ कथा गजमोव-७१ । (२८५) । सुरजनजी कृत । १०८ कथा हरे गु ण-१९७ । (२८७) । सुरजनजी कृत । १०६. कथा परसीघ-२०१ । (२६३) । सुरजनजी कृत । ११०. नाव भेटवाला का-६२ । (२६६) । १११ कथा उपा पुराण-२३२ । (३०१) । सुरजनजी कृत । ११२ कथा पहलाद चीलत-५९६ । (३०७) । केसौजी कृत । ११३ कथा रांमायण-२६१ । (३२३) । मेहोजी कृत । ११४ कथा बहसोवन की-५५६ । (३२६) । केसौजी कृत । ११५ कथा भीव दुसासणी-६६ । (३४५) । केसौजी कृत । ११६ कथा अहमनी-७१७ । (३४७) । ऊदोजी कृत । ११७ कथा सुरगारोहणी-२१६ । (३६३) । केसौजी कृत । ११८ कथा विगतावली-३७७ । (३७०) । केसौजी कृत । ११६ कथा प्रथलेपा की १३८ । (३८३) । केसौजी कृत । १२०, कथा पच इ द्री की वेल-३८ । (३९०) । १२१ कथा अथाइसीघ की-११६ । (३९१) । कीनकदास कृत । १२२ कथा सतकवार की-५५ । (३९४) । १२३ कथा नेमकवार की-६४ । (३९५) । १२४ कथा व्याहलो कोसन-२५५ । (३९७) । पदम कृत । १२५ 'छम-छरी सहको-१०० । (सवत् १८००-१९००) गद्य । (४०५) । १२६ भाप्या छम-छरी दुहा-७७ । (सवत् १७००-१८००) । (४१३) । १२७ भाइलो पु राण-गद्य ।

(४१४) । १२८ बुधचार–गद्य । (४१८) । १२९ सुकर असत सेचार–गद्य । (४१९) । १३० ग्रहणचार–पद्य । (४१९) । १३१ इधक मास बोचार–गद्य । (४१९) । १३२ बार सक्रायत रो भाव–गद्य । (४१९) । १३३ गुराचार–गद्य । (४२०) । १३४ सप्तचार–गद्य । (४२१) । १३५ भोगल पुराण–गद्य पद्य मिश्रित । (४२२) । १३६ अठाइस कुण्ड–गद्य । (४३०) । १३७ वराह पुराण–पद्य, ६ पटल, शंकर–पार्वती सवाद रूप म । (४३१) । १३८ सरोदो, आरेजा फुटकर । गद्य । (४३९) । १३९ बार भुवन–गद्य । (४४३) । १४० अभीच स्नान, बाल लगन, मूल लगन । गद्य । (४४६) । १४१ होडचक्र–गद्य । (४४६) । १४२ काश्यप ध्यान–कम वेपाक–गद्य । (४४७) । १४३ आरेजा फुटकर (चद्र आरेजा)–पद्य । (४५०) । १४४ कम वेपाक–गद्य । (४५३) । १४५ कवत फुटकर–८ । (४५६) । १४६ कथा हुरेचद पुराण–३०७ । (४५७) । ध्यानदास कृत । अपर नाम–कथा हरचद की, हरचद सत कथा । १४७ कथा गोपीचद की–१३६ । (४६७) । खेम कृत । १४८ कथा प्रमताव माल–२१६ श्लोक, दोहा, चोपई । (४७१) । १४९ जम गीता–सस्कृत, प्रहलाद, ग्रह ग्रए घट । (४८५) । १५० नासकेत पुराण–६७०, दोहा, चोपई । १८ अध्याय । (४८५) । १५१ क्रम वीपाक–२२, कृष्ण अर्जुन सवाद रूप म । (५०१) । १५२ महादेव का श्लोक २० सस्कृत । (५०२) । १५३ भरथरी का श्लोक ४७ सस्कृत । (५०२) । १५४ निरजन अग, नकराचार्य रचित–११४ श्लोक । (५०४) । १५५ कवत फुटकर–४ । (५०६) । १५६ अरेजन पुराण–७५ । (५०७) । १५७ सात पताल को वेचार–२५ । (५०९) । १५८ भ्रम समाधे–३०१ सस्कृत, हिन्दी । (५०९) । १५९ उतेम कवार का श्लोक–१५ । (५१६) । १६० जड भरथ नल घोप पडवां का श्लोक–२४ । (५१६) । १६१ गोरखनाथ की सबदी–२६९ । (५१७) । १६२ बतीस लषण–५ । (५२५) । १६३ कवित–७ । (५२६) । १६४ गुडा गाह दुहा–११२ । (५२६) । १६५ ग्रन्थ चेरत–२२५ । (५२९) । जन गोपाल कृत । १६६ सुगन आठ दिसा, सम भाव की आरेजा । (५३५) । १६७ फुटकर कवित्त । (५३५) । १६८ बार सक्रांयतां रो बार विचार । (५३७) । १६९ बार सक्रांयतां री भाव । (५३७) । १७० कथा जडभरथ की–८९ । (५३८) । जन गोपाल कृत । १७१ कवत गोपीचद का । (५४१) । १७२ फुटकर कवित्त–१७ । (५४२) । १७३ गोत–१ । (५४४) । १७४ साढा पचीस आय देस रा नांम । (५४४) । १७५ साख । (५४५) । १७६ चोलायत री वारता । (५४७) । १७७ आदि विसन के नाम । (५४८) । १७८ फुटकर छद–कवित, कुडली, दोहा आदि । (५४९) । १७९ मोह जीव की कथा–११७ । (५५५) । १८० भगत भागवती भागोत सगुण ३१६ । दोहा, चोपई, नाराय्ण आदि । (५५८–५६४) । लालदास कृत । पुष्पिका–(५६०) ।

आदि–श्री विसनजी सति सही श्रीगुरु छत्तीसो बारयडी दुहा ॥

ॐ विसन विसनु अच्यो विसनु ॥ तत पुरेष वासदेवाय धामही ॥

तनो वास परचो दया ॥ १ ॥ दूहा
अआ आदि विसन ओउ कार सु ॥ सोह सौरज्यौ ससार ॥
ओर सकल भ्र म आन तज्य ॥ कारि सीवरण करतार ॥ १ ॥
अ १- श्रीविसनजी रा ग्रथ ग्यान सासत्र पुसतग नाम पोथो सपुरण
समापीता लीपतु परमाणद सत जात्य वणहाल थापन
सुरताणजी रा सुत रामजी रा चेला दामजी रा पोता सीष
मारवाडे नव कोटी रा थापना अतीता म गापार रा अतीता
रा जुना पुसतक देख्य महता री पोथी देखि ओह ग्रथ
ग्यान लीप्यो छ समत १७९८ पोथी कीयो समत १८१०
चत्र सुदे १ पोथो सपुरण लोप्यो छ वार बुधवारि वचनारयी
कान्हा गाव रासीसर सुभ सुथाने दामजी री थापनां ।

२०२ सबदवाणी । सबद सख्या-१२० । पद्य प्रसग समेत । पत्र सख्या-७४ । कतिपय पत्र खडित । देशी तथा मशीन के बने कागज । आकार-१२×६ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति २२-२५ । श्री साहब-रामजी द्वारा सवत १९३७ मे लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । अपेक्षाकृत मोटे अक्षर । प्राप्तिस्थान-श्री धाकलराम विष्णुदत्त बिश्नोई, दुतारावाली ।
आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री प्रमात्म नम ॥ श्री गूरूभ्या नम -
नाद प्रसग चौ० छत्रीय जात लोहट तेहि नांमा ।
जात पु वार पींपासर धामां ॥
अन्त-भलीयो होय तो भल बुधि आव बुरियो बुरी कमाव ॥ १२० ॥
इति श्री शब्दवाणी श्री जाभजी की प्रसगा समेत समाप्त भवेत श्री वाक्य सख्या ८०० ग्रथ श्री म्हाराज री बाणी रो म्हात्म प्रारभते ० जो सब्दनि सीष सुन ॥ बाच कर बिचार ॥ साहबराम एक पलक म होत पवित भव पार ॥ १ ॥ लिपिकृत शाध श्री गोबिंदराजी का सिष साहबराम ॥ सारी ॥ गाव नादडी म्धे । स्मत । १९३७ । मीती जेठ सुद ॥ १ ॥

०३. विवाह पद्धति बिश्नोई समाज । गुटका । फोनियो-सख्या-८० । खडित । देशी कागज । आकार-६×४ २५ इ च । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१९ । लिपि-पाठ्य । श्री सतोषदास द्वारा सवत १९५२ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री पन्नालाल गायणा, गाव मोढा, पो० गु दाऊ, (भीनमाल से), जिला-जालोर । इसमे ये रचनाए है —
(क) गाठ रो मत्र । (ख) हथलेव रो मत्र । (ग) अगनी साप रो मत्र । (घ) भूमी देव साप मत्र । (ङ) मगल मत्र । (पाचा सस्कृत म) । (च) कलस । (छ) पावती ईश्वर सवादे गोत्राचार । (ज) वासदर के पचीस नाम । (झ) विष्णु अठाईस नाम । (ञ) सव्याण । (ट) आदि वसावली । (ठ) दस अवतार । (ड) विश्वरस । (ढ) अस्तुति । (ण) हरी नाम माला (सस्कृत) । (त) दस अवतार । शकराचाय विरचित

(संस्कृत)। (थ) रतनमाला, ४१ दोहे–ऊद्धवदास रचित। (द) किष्णजी र ब्याव रो सायोचार। (ध) चौजुगी। (न) पोढा वदलण रो मत्र (संस्कृत)। (प) देवता विदा करण मत्र (संस्कृत)। (फ) पाहल मत्र। (ब) बालक मत्र। इती व्याय री पाटीया घडा वध सपूरण। (भ) अमावस्या री कथा–मयाराम रचित। (म) कवित्त–१३। सुरजनजी–३। सत्ववेत्ता–२, वील्होजी–७, अल्लूजी–१।

आदि–उ श्री गणेशायनम अथ गाठ बाधण रो मतर लिख्यते ॥

उँ एक दतो महाबुद्धि सब गुणो गणनायक

सब सिद्धि करो दव गवरा पुर विनायक

अन्त–समत १९५२ रा मिती आसाज सुदी १० पोथी गायण रामचन्द धीराणी री छ लिप० सा० स० दा० काम र पातर लिपी छ दुज री दावो नहा छ ॥

दोहा ॥ नारी क्यारो मित्र कू वेद ग्यान हुसान (?)

यता वग सभालीय धान पान भगवान १

सुमन सपत पाय कै बडो न कीज चित

ये कबहु न विसारीये हरी अरो अपनो मित २

हरी सुमरया पातक झर मितर मिटाव पीर

अरी सुमरया एता वध युद्ध प्राक्रम अरु धीर ३

२०४ पोथी। फोलियो संख्या १३६। अपूर्ण, जीर्ण, खंडित, दीमक खाई हुई। देशी कागज। आकार–८×५ ५ इंच। हाशिया–प्राय आधे से पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०–१३। अक्षर–प्रतिपंक्ति–१४–१९। थापन तेजै तथा अज्ञात लिपिकार द्वारा सं० १९०१–०२ में लिपिबद्ध। लिपि–पाठ्य। प्राप्तिस्थान–श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा (बिलाड़ा, जोधपुर)। इसमें ये रचनाएँ हैं —

(क) प्रहलाद चरित, केसोजी कृत। लिपते थापन तेजा मौनाजी सुत जात बीणीयार ॥ वाम लाव मधे पोथी लीपी भूल चुक तो बीसनजि जाणे। समत १९०१ मीना अगाडू कृ २। (ख) विष्णू चिरत––ऊधवदास रचित। (लिपिकाल-संख्या १९०२)। (ग) पाटीया पढण री–मिथो वरणा। (घ) जमेस्वर स्तोत्र, सुरजनदास रचित। (ङ) नासकत भाषा। (च) सबदवाणी जाभजी की। ६३ वें सबद तक, ६४ वां अपूर्ण है। गवन्याणा नं ४६ व छन्द के पश्चात। (छ) सेवाराम कृत २० छन्द हैं।

पुन सबद लिखे गये हैं।

आदि–विरतो सनत्स भयो विरोध ॥ एकण मन मां कीयो विरोध ॥४९॥

दरसीना न पहुतो पाप। सनकादिक कहे ये लीयो सराप।

सनकादिक विधि कहै विचार ॥ असरा घर पावो अवतार ॥५०॥

अन्त–ब्रह्मा ईस महेसर धरप्या। दोनो करामत कनो धारी

धर सुर दोय साखी धरप्या। पवण पनेसर पवन ॥

२०५ रुक्मणी मंगल, रामदास कृत। अपूर्ण। किनारों से त्रुटित। अपना कृत मोरा

कागज। प्राप्त पत्र संख्या-८। आकार-९ ७५×५ २५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२३-२४। अज्ञात लिपिकार द्वारा संवत् १८७५ के आसपास लिपिबद्ध। लिपि पाठ्य। प्राप्तिस्थान श्री सिमरथा राम थापन, लाम्बा।

आदि-श्री विष्णजी सत छ जी लिपते हरी रम श्री विष्णु प्रमातमाऐ नम लिपते

रुपमणी मगल राग देवगरी

निगम जाको नित्य गाव ध्यान शिव उर आन हीं

आदि अनादि परिव्रह्म जु के भवत नीक जान ही १

अन्त-जुवत सों पत्रो जु लिख करि विप्र के हाथन दई

माय छुवाय जु लई दिज न ।

२०६ गुटका। अपूर्ण। किनारा से खण्डित। देशी कागज। आकार-६×४ इंच। हाशिया-सिलाई की ओर पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १०, ११। अक्षर प्रतिपंक्ति-१६ १६। थापना तेजा तथा अज्ञात लिपिकार द्वारा संवत १८७८-१८८१ के बीच लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा। इसमें ये रचनाएँ हैं - (क) विश्णोई धर्म-२ कवित्त, ऊधोजी कृत। (ख) प्रह्लाद चिरत केसोजी कृत, छन्द २२३ तक (अपूर्ण)। (ग) गीता का दसवा अध्याय (संस्कृत)। (घ) गणपति स्तोत्र (संस्कृत)। (ङ) इंदव छन्द-गोकलजी कृत। (च) विष्णु सहस्र नाम (अपूर्ण)। (छ) विष्णु चिरत-उदोजी कृत। संमत १८७८ विरषे मीती फागण वद ६ लिपते थापन तेजा मोटावत " पोथी गाव डावर री ढाणी मा लीपी छ वास लाव मधे। (ज) ३ श्लोक (संस्कृत)। (झ) हरजस-१। (ञ) गीताजी की भाषा। (ट) वेमाहो श्री किसनजी रो पदम भगत कृत, विभिन्न राग रागिनियों के अन्तगत छन्द संख्या पृथक पृथक है।

आदि-श्री विष्णु जी सत छ जी १। लिपते कवत ॥२॥

प्रथम परभाते उठ जल छाण र लीज ॥

सत्यम सु च सिनान। सुद हुय नाव जपीज

अन्त-आरती कीज भगत लीज। चवर ढोल देवता ॥

सु र नारी गीत गावें ॥ का हु जुव खेलता ॥

धण राधे मोरी ॥ गहर गाज ॥ सकल सुर नर मडली ॥

पदम गाव भुगत पावें ॥ अहे मन पुगी रली ॥३३॥

व्यावलो किसनजी रो सपूरण ॥ १ ॥ संमत १८८१ वीरषे मीती स्वाग सुद १ ॥ वार मल ॥ दसक्त थापन तेज मोटावत रा छें।

२०७ पोथी। अपूर्ण। आदि से बीच की सिलाई तक फोलियो संख्या-९३ जिनमें आदि के २० अप्राप्य। खण्डित, जीर्ण। अपेक्षाकृत मोटे देशी कागज। आकार ६×८ इंच। हाशिया-सिलाई की ओर-१ तथा किनारा पर पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६-१६। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-२४। दलाजी तथा परमानन्ददास वणिहाल द्वारा संवत्

१७८६–१७६१ म लिपिबद्ध। लिपि–सामान्यत पाठ्य, कहा कहा पत्र भीग जान स अपाठ्य। प्राप्तिस्थान–सिमरथाराम थापन, लाम्बा। इसम ये रचनाए हैं–(क) कथा औतार पात, छन्द सख्या–१४०। वील्होजी कृत (अपूर्ण)। लेपनु दला लीधी पोथी परमाणन्द की मा मु।

(ख) रामायण, छन्द सख्या–२७५, मेहोजी कृत। समत १७८६ ॥ म ॥ पौह वदै १० वार व्रिसपति ॥ लीपत दला छजुजी का सीप। लीषावतु प्रमाणन्द वहीणीवाल सुरताण सुत। (ग) छन्द–२, राम–युद्ध सम्बधी। (घ) हरिजस–सख्या–१२, वील्होजी कृत। (ङ) कथा घडावध–वील्होजी कृत। (च) दोहे–१५, केसोजी कृत। (छ) भोगल प्रांण ग्रथ–सुरजनजी कृत। (ज) कथा सुरगारोहणी–केसोजी कृत। (झ) कथा चीतोड की–केसोजी कृत। (ञ) कथा इसकन्द्र की–केसोजी कृत। लिपतु परमाणन्द वणीहाल लपावतु दला चोहाण पठनारथी समत १७६१ प्रवे मती जेठ सुदि २ (३ ?) वार व्रसपतिवार गाव परटीप मधे। (ट) कथा अहदांवणी–ऊदेह कृत। (ठ) दांन सील तप भाव री चौढालीयो–वाचक समैसुदर कृत। (ड) तुम परगास–ऊदेह कृत। (ढ) कथा कुणपुर की, वील्होजी कृत। लेपतु परमाणन्दास समत १७६१। (ण) नाहरपांन का छन्द–सख्या–१३। (त) वसावली। (थ) कवित्त–सुरजनजी क स०–८। (द) कथा जेसलमेर की–वील्होजी कृत। (ध) कथा मेडता की, केसोजी कृत। (न) वेसन पीजर, श्री सकरा चाचार प्रसतोतर। (प) पग्रामणी–सुरजनजी कृत। (फ) साषी गोपीचन्द की, हरियो कृत।

आदि–रोग मांन दोस नही ॥ दोस घणो सपोस ॥
गड सुती पाव नही ॥ कहो कुणां को दोस ॥ ३९ ॥
चौपई ॥ मीठ पोढायो सुपवासाणि। फिरि हुवो इसकी क तांणि ॥
वासी भमै न देइ देव ॥ कुण जांण सतगुर को भेव ॥
अन्त–गोपीचन्दजी हेत करे मोलीयो ॥ बाइ भुजा पसारी जी ॥ ६४ ॥
रो री हे म्हारी जामण जाई ॥ हु गोपीचन्द भीपीयारी जो ॥ ६५ ॥
लीध दीयं गोपीचद राजा ॥ मेलीया बहण अर भाइ।
जामणि जाया को दुप दोहेरो ॥ बहनड चले न आइ जी ॥ ६७ ॥ ॥

२०८ पोथी। त्रुटित। देशी कागज। आकार–८×७ इन्च। हासिया–नाम मात्र को। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१३–१६। अक्षर–प्रतिपक्ति–१७–२०। थापन बसता द्वारा सवत् १८८१–१९०७ मे लिपिबद्ध। लिखावट भद्दी और कई स्थलो पर अपाठ्य। प्राप्तिस्थान–श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा। इसमे ये रचनाएँ हैं — (क) विष्णुचिरत–ऊदोजी कृत। (ख) सूरदास का १ भजन। (ग) किसनजी रो ब्याहलो–पदम भगत कृत। १८८१ वोरपे मीती आसाड सूद ४ वार सनीसरवार दसकत थापन बेसता रा। (घ) गोपाचन्दजी को साषी–हरियो कृत। (ङ) कथा मगलेपा की–केसोजी कृत। (च) कवित्त–२, तेजोजी और वील्होजी के। (छ) ऊमावस कथा–मयाराम रचित। (ज) सनेह लीला–जगमोहन कृत। समत १८६५ का मती जेठ बद ६ सुकरवार। (झ) दांणलीला–रचयिता अज्ञात। (ञ) गोकलजी की असतुत। (ट) छद

मोतीदास-गोकलजी कृत। (ञ) और (ट) एक ही रचना है। (ठ) धुप परगास-ईल्ह कृत। (ड) कथा अहवावणी-ईल्ह कृत। (अपूर्ण)। (ढ) सिवदास कृत साषी-१। (ण) पहलव चिलत कथा-केसोजी कृत।

आदि-श्री विष्णजी ॥ श्री गुरभ्योनम ॥ विष्णु चिरत लिप्यते ॥

चोपई ॥ श्री गुर सत चरण सिर नाउ। अज्ञा होय विष्ण जस गाउ ॥

अन्त-ईती श्री ग्रथाग्र थ कथा पहलाद चरित अपूरण ... थापन वसता वेट मोट जी र जात रा वणीवला मधे मतो असड वदे आठ ८ समत १६ सात र ७ वर (म)।

२०९ पोथी। ग्रथित। फोलियो सख्या-१००। मशीन के बने कागज। आकार-८×६ इच। हाशिया-आधे से पौन इच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-१६। साधु विहारीदास द्वारा सवत् १६४६ म लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री रामकिशन साधु, रोट्ट (तहसील-जायल, नागौर)। इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) शब्द जाम्भजी का-मय प्रसग समेत (आदि-म त अपूर्ण)। सबद सख्या-१२३। इसमे स्वीकृत सबद सख्या १०३ के दो सबद (सख्या १०३, १०४) माने हैं। स्वीकृत सबद सख्या १०२ भी इसी सख्या का सबद है। (ख) विष्णु चिरत-ऊधोदास कृत। आदि-ऊपर मगला असवार हुयज्यो। बालक असवार हुआ। सगलाई ललकार कीवी ॥ पाडवीयां र निजर कटक आयो। सांढ छोड र नाठा ॥ रबारी माठा लारे था तका मार धाती ॥ जीं मोरें छाया न माया लोही न मासू (सबद-२) -- (सबदवाणी का अन्त-बिसन बिसन तू भण रे प्राणी पक लाय उपाजू ॥

रतन काया बकुठे बासो। तेरा जरा मरण भो भाजू। १२३)

अन्त-इती श्री विष्णु चिरत ऊधोदास कृत समापत ॥ सवत १६४६ मिती आसोज सुदी ४ लिप्यते साधू श्री बीसनुदासजी रा शिष्य बीहारीदास विष्णु विष्णु विष्णू ॥

२१० पिसण-सिंघार, सेवादास कृत। छन्द सख्या ८९। देशी कागज। किनारा से खडित। पत्र सख्या-४। आकार-६ २५×४ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३३-३७। लिपि-सुपाठ्य। भगवानदास द्वारा सवत १६१२ म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, मायूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री प्रमात्मनेनम ॥ अथ ग्रथ पिसण सिंघार लिप्यते ॥

दोहा ॥ उनमन नेजा फरहर ॥ नहदा घुर निसांन ॥

इन विधि भोम्यां ऊपरें ॥ चडियो सबद दीवांन ॥ १ ॥

अन्त-जहां काल तणां चारा नहीं ॥ फिरी राम की आण ॥

सेवादास जग जीपिया ॥ परस्या पद निरबाण ॥ ८९ ॥ इति श्री पिसण सिंघार ग्रथ समाप्ता। सवत १६१२ मिति पो सुध १३ वार शनिसर। लिपिकृत भगवानदास रामदासजी का चेला ॥ गाव तिलवासणि मधे ॥

२११ पिसण सघारण, सेवादास कृत। छन्द सख्या-१०२। देशी कागज। किनारो से खडित। पत्र सख्या-४। आकार-१२×६ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इन्च।

१७८६–१७६१ में लिपिबद्ध । लिपि–सामान्यतः पाठ्य, कहीं कहीं पत्र भाग जाने से अपाठ्य । प्राप्तिस्थान–सिमरथाराम थापन, लाम्बा । इसमें ये रचनाएँ हैं –(क) कथा औतार पात, छन्द संख्या–१४० । वील्होजी कृत (अपूर्ण) । लिपतु दसा साधा पोथी परमाणन्द की मा गु ।
(ख) रामायण, छन्द संख्या–२२५, केसोजी कृत । समत १७८६ ॥ म ॥ पोह वदे १० वार ब्रिसपति ॥ लीपत दसा छंतुजी का गोप । सापावतु प्रमाणन्द बहोगीवाल गुरताण गुत । (ग) छप्पय–२, राम–युद्ध सम्बन्धी । (घ) हरिजस–संख्या–१२, वील्होजी कृत । (ङ) कथा पडावंध–वील्होजी कृत । (च) दोहे–१५, केसोजी कृत । (छ) भोगल प्रांण प्रंथ–सुरजनजी कृत । (ज) कथा सुरगारोहणी–केसोजी कृत । (झ) कथा चीतोड़ की–केसोजी कृत । (ञ) कथा इसकन्द्र की–केसोजी कृत । लिपतु परमाणन्द वणीहाल लिपावतु दसा चोहांण पठनारथी समत १७६१ प्रवे मती चेत सुदि २ (३ ?) वार बसपतिवार गांव भरटीय मधे । (ट) कथा अहुठांवणो–ऊदै कृत । (ठ) बांम सील तप भाव री चोढालीयो–चारण समैसुदर कृत । (ड) ध्रुव परगास–ऊदै कृत । (ढ) कथा दुनपुर की, वील्होजी कृत । लिपतु परमाणन्द दास समत १७६१ । (ण) नाहरखान का छन्द–संख्या–१३ । (त) वंसावली । (थ) कवित्त–सुरजनजी के सं०–८ । (द) कथा जैसलमेर की–वील्होजी कृत । (ध) कथा मेड़ता की, केसोजी कृत । (न) वैसन पोजर, थी सकरा आचार मसतोतर । (प) घडामणी–सुरजनजी कृत । (फ) साखी गोपीचन्द की, हरियो कृत ।
आदि–रोग मांन दोस नहो ॥ दोस घणो सपोस ॥
गड पुती पाय नहो ॥ कहो कुणां को दोस ॥ ३९ ॥
चौपई ॥ पीठ पोढायो सुपवासांणि । फिरि हुवो इसकी क तांणि ॥
वासो भमै न देइ देव ॥ कुण जांण सतगुर को भेव ॥
अन्त–गोपीचन्दजी हेत करे मीलीयो ॥ बांह भुजा पसररी जी ॥ ६४ ॥
रो रो हे म्हारी जांमण जाई ॥ हु गोपीचन्द भीयीयारी जी ॥ ६५ ॥
सीय दीयें गोपीचन्द राजा ॥ मेलीया बहण अर भाइ ।
जांमणि जाया को दुख दाहेरो ॥ बहनड वलें न आइ जो ॥ ६७ ॥ ॥
२०८ पोथी । त्रुटित । देशी कागज । आकार–८×७ इन्च । हाशिया–नाम मात्र को । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–१२–१६ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–१७–२० । थापन बसता द्वारा संवत १८८१–१६०७ में लिपिबद्ध । लिखावट भद्दी और कई स्थलों पर अपाठ्य । प्राप्तिस्थान–श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा । इसमें ये रचनाएँ हैं — (क) विष्णुचिरत–ऊदोजी कृत । (ख) सूरदास का १ भजन । (ग) किसनजी रो ब्यावलो–पदम भगत कृत । १८८१ वीरष मीती आसाड सुदि ४ वार सनीसरवार दसकत थापन बेसता रा । (घ) गोपीचन्दजी की साखी–हरियो कृत । (ङ) कथा मगलेया की–केसोजी कृत । (च) कवित्त–२, तेजोजी और वील्होजी के । (छ) क्रमावस कथा–मयाराम रचित । (ज) सनेह लीला–जगमोहन कृत । समत १८६५ का मती जेठ वद ■ सुकरवार । (झ) दांणलीला–रचयिता अज्ञात । (ञ) गोकलजी की असतुत । (ट) छंद

मोतीदाम-गोकलजी कृत । (ञ) और (ट) एक ही रचना है । (ठ) बुध परगास-ऊेल्ह कृत । (ड) कथा अहवावणी-ऊेल्ह कृत । (अपूर्ण) । (ढ) सिवदास कृत साखी-१ । (ण) पहलद चिलत कथा-केसोजी कृत ।

आदि-श्री विश्णुजी ॥ श्री गुरुभ्यो नम ॥ विष्णु चिरत लिष्यते ॥

चोपई ॥ श्री गुर सत चरण सिर नाउ । अना होय विष्ण जस गाउ ॥

अन्त-ईती श्री ग्र थाग्र थ कथा पहलाद चरित सपूरण थापन वसता वेट मोट जी र आत रा वणीवल्ला ग्रवे मती असड वदे आठ ८ समत १६ सात र ७ वर (स) ।

२०९ पोथी । न दित । फोलियो सख्या-१०० । मशीन के बने कागज । आकार-८×६ इच । हाशिया-चारो से पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-१७-१६ । साधु विहारीदास द्वारा सवत् १६४६ मे लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्ति स्थान-श्री रामकिशन साहू, रोटू (तहसील-जायल, नागौर) । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) शब्द जांभजी का-गद्य प्रसग समेत (आदि-अश अपूर्ण) । सबद सख्या-१२३ । इसमे स्वीकृत सबद सख्या १०३ के दो सबद (सख्या १०३, १०४) माने हैं । स्वीकृत सबद सख्या १०२ भी इसी सख्या का सवद है । (ख) विष्णु चिरत-ऊधोदास कृत । आदि-ऊपर सगला असवार हुयज्यो । बालक असवार हुया । सगलाई ललकार कीवी ॥ घाडवीया र निजर कटक आयो । साड छोड र नाठा ॥ रबारी साढा लारे था तका बार घाती ॥ ओं मोर छाया न माया लोही न मासू (सबद-२)

(सबदवाणी का अन्त -बिसन बिसन तू भण रे प्राणी पक लाय उपाजू ॥

रतन काया बकुंठे बासो । तेरा जरा मरण भी भाजू । १२३)

अन्त-इती श्री विष्णु चिरत ऊधोदास कृत समापत ॥ सवत १६४६ मिती आसाज सुदी ४ लिष्यते साधु श्री बीसनुदासजी रा शिष्य वीहारीदास विष्णु विष्णु विष्णू ॥

२१० पिसण-सिंघार, सेवादास कृत । छन्द सख्या ८६ । देशी कागज । किनारों से खडित । पत्र सख्या-४ । आकार-६ २५×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ- एक इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३३-३७ । लिपि-सुपाठ्य । भगवानदास द्वारा सवत् १६१२ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोडदासजी, अथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री प्रमात्मनेनम ॥ अथ ग्रथ पिसण सिंघार लिख्यते ॥

दोहा ॥ उनमन नेजा फरहर ॥ नहदा घुर निसान ॥

इन विधि मोम्यां ऊपर ॥ चडियो सबद दीवान ॥ १ ॥

अन्त-जहा काल तणां चारा नहीं ॥ फिरी राम की आण ॥

सेवादास जग जोपिया ॥ परस्या पद निरबाण ॥ ८९ ॥ इति श्री पिसण सिंघार ग्र थ समाप्ता । सबत १६१२ मिति पो सुध १३ बार शनिसर । लिपिकृत भगवान-दास रामदासजी का चेला ॥ गाव तिलवासणि मधे ॥

२११ पिसण सघारण, सेवादास कृत । छन्द सख्या-१०२ । देशी कागज । किनारों मे खडित । पत्र सख्या-४ । आकार-१२×६ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इन्च ।

पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३३-३६ । लिपि-सुपाठ्य । सवत १६०८ म साहबरामजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धानराम विष्णु-त बिश्नोई, दुतारावाली ।

आदि-पथ पथ ॥ पिगल सेवार नियने ॥

दुहा-उ नमुन नेजा फरहर ॥ अनहद घुर निसांन ।

महो तो भोम्यां ऊपर थडीयो सबद दिवांन ॥ १ ॥

अन्त-काल तणो सारो नहीं ॥ सिरगा रांमराय की आंण ।

सेवादास जग जीत कर । परस्या पद निरवांण । १०२ । इति श्री पिंगल सपा रण ग थ सपूरण १ सवत । १६०८ । रा वप मिति भाद्व सु" । १० । लिषतु साघ साहिबराम ॥

२१२ गीता-माहात्म्य, दोहे-चौपइयो म, तथा कबीजी कृत १ बोहा और १ छप्पय । देश कागज । पत्र-सख्या-४२ । आकार-६×४ इ च । हासिया-दाएं, बाएं-एक इ च । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२८-३० । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री कृष्णायनम ॥ चौपई ॥ गीता की महिमा पुनि गाऊं । ब्यास कहि सो कहि समझाऊ । पदम पुरांन मांहि विस्तार ॥ सो कछु बर्नें मति अनुसार ॥ इति श्री पदम पुराणे उतर षडे सता ईश्वर सवादे जतराम कृत भाषाया अष्टा"-शोध्याय । १८ सवत १८८९ मिती माहा सुद १४ वार दितवार लिपते विसनाई साध श्री गगारामजी का चेला गुमानीरा गाव वावड मधे लिषत ।

अन्त-बद राख्यो भरत लोक म आवीत कु असव कीयो ।

रतन चवद उदवा बाद विसनु सुर कारज कीयो ॥ २ ॥

२१३. गुटका । फोटोतियो स०-२१३ । अपूर्ण, किनारों से खडित । देशी कागज । आकार-६×४ इ च । हासिया-दाएं, बाएं-पौन इ च । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-१८ । साधु गोविंदराम द्वारा सवत १६०७ म लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री भगवतीलाल चौहान (सुपुत्र, श्री आकारलालजी), पुर (भीलवाड़ा) । इसम य रचनाएं हैं -(क) शब्द बाणी श्री जांभजी की । सबद सख्या १२० । बिना प्रसग ।

अन्त-बिसन बिसन तु भणि रे प्रांणी प क लाष उपाजों

रतन काया मकू ठे बासो तेरा जरा मरण भव भाजों १२० । (ख) प्रहलाद चिरत-केसोजी कृत । छन्द सख्या-५९४ । इति श्री पहलाद चिरत सपूरण समत १९०७ रा वृषे मिती फागुण वदि अमावस्या १ लिपीकृत साध गोविन्दराम । (ग) अमावस्या री कथा-मयाराम कृत । छन्द सख्या-१४५ । (घ) पाणिग्रहण-सस्कृत श्लोक १० । (ड) महादेव-पार्वती सवाद आदि (गोत्राचार) । (च) बसदर के २५ नाम (सस्कृत) । (छ) सत्याण तथा ईश्वर पावती सवाद । (ज) आदि दशावतरी दस अव तार वणन, छद १० । (झ) पच्चीस नाम विष्णु के । (ञ) खिवरस । (ट) स्तुति ।

(ठ) विष्णु रक्षा–८ श्लोक । (ड) नवग्रह रक्षा–६ श्लोक । (ढ) पीढी पालटण ३ श्लोक । (ण) वश्वानर पूजा–(सस्कृत) । (त) कन्या वर लक्षण–(सस्कृत) । (थ) चोजुगी–४ छन्द । (द) स्तुति जाम्भोजी की । (ध) मगलाष्टक–केसव कृत । (न) देवता विदा करण, अग्नि बिसजन–२ श्लोक । (प) सापिया–केसोजी, सुरजनजी, रायचन्द, ऊदोजी, गुणदास तथा अज्ञात रचित । (फ) छपईया–वील्होजी कृत । अपूर्ण ।
आदि–॥ ६ ॥ श्री जभगुरवे नम

उँ गुर वील्हों गुर वील्हि पिरोहित गुर मुनि धरम बखाणीं
जो गुर हूवा सहजे सीले शब्दे नादे वेदे तिहिं गुरका आलींकार पिछाणीं ।

अन्त–सुगर सीलवत होय सुगर मन्य सदा सतोषी
सुगर सहज्य सुध लोल सुगर पर जीवा पोषी
सुगर सुमारग दापव जण तारण आयो तरण (–वील्होजी कृत)

२१४ सबदवाणी । अपूर्ण । सबद–सख्या–११७ । बिना प्रसग । किनारा से खडित । देशी कागज । प्राप्त पत्र सख्या–२८ । (कुल ४२ पत्रो मे से सख्या १, ११, २८, २९,३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३८, ३९, ४० और ४२ अप्राप्य) । आकार–९X४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इन्च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१० । अक्षर–प्रतिपक्ति–२८–३० । लिपि–पाठ्य । साधु कनीरामजी द्वारा सवत १८८६ म, पुर मे लिपिबद्ध । प्राप्ति–स्थान–श्री गापीलालजी सीमोदिया विष्णोई (सुपुत्र–श्री नारायणजी), पुर (भीलवाडा)
आदि–न रहिसी पांणी ॥ १ ॥ उँ न मोर छाया न माया ॥ लोही न

मासु रगतु न धातु ॥ मोर माई न बाप ॥ आपेण आपु ॥

अन्त–भलीयो होई तो भल बुधि आवै ॥ बुरीयो बुरी कमावै ॥ ११७ ॥ ईति श्री सबद वाणी भाभजी की सपूरण समापता ॥ लिपत पुर मधे माथरी जाभजी की लीपते साध श्री ॥ १०८ ॥ वलुजी का सीष कनीरामजी ॥ श्री विसनजी ॥ समत ॥ १८८६ ॥ रा मिती श्री असाढ सुध ॥ १४ ॥ बार बुधवार श्री विस्न ।

२१५ साखी, सख्या–५२ । विभिन्न विष्णोई कवियो द्वारा रचित । अपूर्ण, खडित । देशी कागज । प्राप्त पत्र सख्या–३५ । (कुल ४१ पत्रो म से सख्या १, २, ३, ४, ६, और २८ अप्राप्य) । आकार–६X४ इ च । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इन्च । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–६ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३०–३२ । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत १८०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि–प्राय पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री राम–नारायणजी, रामडावास ।
आदि–सुरबांणी २ माया मोह निवारी

अजप्यो जाप जपे मन मेरा करि उनमन सु यारी
गरज गिगन इधक धुर सुणींये उपज अनहद वाणी
जिहिं डोरी सिष साध बिलब्या सा जीवडा सत्य जाणी ॥ ३ ॥ (–केसोजी)

अन्त–कहै रायचन्द हरि नाव लीज अति चित रहीजीय
जीवडा कारण विसन मिलीयो मुख्य धीरज कीजीयै ॥ ४ ॥ ५२ ॥

२१६ जांभजी र भक्तां री भक्तमाल, छन्द संख्या–२४ (२५ वां त्रुटित)। अपूर्ण। देशी कागज। पत्र-संख्या-२। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दाएं, बाएं-एक इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति २६-२८। लिपि-पाठ्य। रचयिता, लिपिकार एवं काल-अज्ञात अनुमानतः संवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान महन्त श्री रामनारायणजी, रामड़ावास।

आदि–श्री विष्णु प्रमात्मने नमः ॥ अथ श्री जांभजी रै भक्ता री भक्तमाल लीखते ॥
दोहा–विष्णु को अवतार है ॥ श्री जांभेस्वरराय ॥
सिव ब्रह्मा ईद्रादि देव ॥ नित दिन ध्यांन धराय ॥ १ ॥
अन्त–पचायण जसा रायचंद ॥ जिन ध्यायो विष्णु गोविंद ॥
हीरानन्द मिठूजी जोय ॥ ध्यायो विसन जमे गु ॥

२१७ सवए, केसोजी कृत–७ तथा किसोर कृत–१। मशीन के बने दो पत्र। आकार-६.५×४ इंच। हाशिया-दाएं, बाएं-१ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-७। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३०-३५। लिपि-सुपाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा संवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामड़ावास।

आदि–ॐ श्रीगणेशायनमः आदि अनादि जुगादि को जोगी लोहट घर अवतार लीयो है
धन हो धन भाग बडो जिण हांसल कों हरिमात कह्यो है–
अन्त–धरणि उर अध पाव न धरहू बलहू २ इन पावन कु ॥ ८ ॥ इति श्री केसा
दास कृत छन्द सम्माप्तम्

२१८ तारक मंत्र तथा विष्णु मंत्र। देशी पत्र–१। आकार–८.७५×४.२५ इंच। हाशिया-दाएं, बाएं–सवा इंच। कुल ८ पंक्तियां। अक्षर-प्रतिपंक्ति–२५–२६। लिपि-पाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानतः संवत १६०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामड़ावास।

आदि–श्री विसनु जी उ सबद गरु सुरत चेला पाच तत मै रहु अकेला
सहज जोगी सुन मा वास पाच तत मा लीया प्रकास
अन्त–विष्णु मंत्र प्राण अधरि जो जप सो उतर पार
ॐ विष्णु आद विष्णु तत रुपी तारक विष्णु ॥ २ ॥

२१९, साखी, जन हरजी कृत। देशी पत्र–१। आकार–९.२५×४ इंच। हाशिया-दाएं, बाएं-एक इंच। कुल (११+६) १७ पंक्तियां। अक्षर-प्रतिपंक्ति–३१–३३। लिपि–पाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानतः संवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामड़ावास।

आदि–श्री वोष्णजी अथ सापी लीपते–म्हो वोसोवा वीस सांचो गुर सभलायले
कान कवर नदलाल कीरपा कर आय भन रे
अन्त–वोसन भजो वोसनोइयो धरो सीसु ध्यान
साच सील सचील चालो मानो हक हलाल
जोन हरजी री वीनती कीया गुर नीपट नीहाल पाप करता पापीया ५

२२० सबदवाणी । सबद सख्या–११७ । पद्य प्रसग समेत । जीर्ण, खण्डित । अपूर्ण । अनेकाकृत पतले देशी कागज । पत्र सख्या–५४ । प्रथम पत्र नहा है । आकार–९×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–साधारणत पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–९ । अक्षर–प्रतिपक्ति–३४–३६ । लिपि–सुपाठय । प्रीतम द्वारा सवत १८७५ म लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि–सन चिरत विन काचै करव रह्यो न रहिसी पार्णी १

दोहा–उपण का हावत बूझीयो देवजी किसू आचार

पेट पूठि शीस नहीं ताका कहो विचार १ जो बूझयो सोई कह्यो

ग द–मोर छाया न माया लोही नु मासौ रगतो न धातो मोरे माई न वापो–

अन्त–ज्यू ज्यू लाज दुनी की लाज त्यू त्यू दा यो दावै

भलीयो होय तो भल वुध्य आव बुरियो बुरी कमाव ११७ इति श्री सिधात वाणी सतगुर सपूरण १ स० १८७५ लि० प्रीतम

२२१ साखी खडाणे की, केसोजी कृत । अपूर्ण, २७ छन्दा म से १६ छन्द । देशी पत्र–१ । आकार–२१ ५×४ २५ इच । हाशिया–नहीं है । कुल ४४ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति–११–१८ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९०० के आसपास लिपिवद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि–साषी षडाण की १ मेलो क र मोटा धणी गीण तेतीसु ग्यान

दरसण बीज देवजी बीसन बीसोहा भान १

अन्त–हापू अर नापू मौरखी वसधा कीमत सहाय

चलण कियो चिलत मुहता सुरगि पुलाय १६ हरीजन हरी बीन ।

२२२ साखी, सख्या–२ । केसोजी तथा अज्ञात रचित । देशी पत्र-सख्या–२ । आकार–७ ७५×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–नगण्य । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–१२,९ । अक्षर–प्रतिपक्ति–२४–२६, २७–३२ । लिपि–पाठय । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि–सिवरो २ सिरजण हार । कलि जुगि कायम राजा आवीयो ।

अमेसर प्रगट ससार । भागि परापति भगना पावीयो । (–केसोजी)

अन्त–उपगार मारा विचार रे जीव जाण मन क्यों वीसर

अमर भगता भेद लाभ सेवा सतगुर की कर ४ (–अज्ञात)

२२३ नवण । देशी पत्र–१ । आकार–८ ५×४ २५ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इच । कुल (७+६) १३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति–२१–२३ । लिपि–पाठय । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९०० के आसपास लिपिवद्ध । प्राप्ति स्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि–श्री विष्णुजी उँ विष्ण २ तु भण रे प्राणी साधे सवते कुपरण

अंत-विष्णु हीं मन विष्णु भणीयों तेतीस कोड पार पोहु ता शाव सतगुर मत्र कहीयों
ईती मुरा सपुराम ।

२२४ साधा री वसावली । खण्डित । देशी पत्र-२ । आकार-६X४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३ । अक्षर-प्रतिपंक्ति ३२-३५ । अज्ञात लिपिकार द्वारा संवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ साधारी वशावली लिख्यत

जभ गुरु के शिष्य अनेक कहता लहु न पार ।

क भगवा वस्त्र रखिता काले सेती पार १

अंत-मानजो लू बड का चेला वलिजी गगारामजी वडहरीया जीवणजी माधोजी

४ वलिजी का चेला सामुजी सुखोजी हरनाथजी जीयोजी ४

२२५ शब्द वाणी श्री जाभजी री । सबद संख्या-१२० । पद्य प्रसग समेत । पुस्तक । खण्डित । देशी कागज । पत्र संख्या-७४ । आकार १० ५X५ ५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति २३-२६ । लिपि-सुन्दर एव सुपाठ्य । साधु गोविंदरामजी द्वारा संवत् १६३३ में लिपिबद्ध । प्राप्ति स्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास ।

आदि-॥ श्री गणेशायनम अथ शब्दा का प्रसग

दोहा-हासा लोहट ने कहै सुणो वात चित लाय ।

घनाक्षरी-नागोर मे बांभण है वात सब अ स कहै ईस्वरी की सेव गहै ताहि ल्याऊँ

आइ क । पुवार महो सुनाई वात मन माँहि भाई सहर मैं कहो जाई वोमन

हो सुनाई क ।

अन्त-ज्यों ज्यों लाज दुनी की लाज त्यों त्यों दाब्यो दाव

भलीयो होय तो भल बुद्धि आव बुरीयो बुरी कमाव १२० इति श्री "" वाणी श्री जाभजी की सपूरण प्रसगा सहत लिषित समत १६३३ तेतीमा रा वष मिती असाढ व" ८ वहस्पतिवार लिपिकृत साध श्री १०८ महत रतनदासजी तस्य शिष्य साध गोविन्दराम लियतु धाम जाभोलाव मध्ये लिषावतु साध मोनरामजी रा षवा साध गगादास शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

२२६ गुटका । फोलियो संख्या-२६१ । मशीन के बने कागज । आकार-६X३ ७५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१२-१४ । साधु नसिहराम द्वारा संवत १६३७ में लिपिबद्ध । लिपि-स्वच्छ एव सुपाठ्य । प्राप्ति स्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास । इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) अमावस री कथा, मयाराम रचित । (ख) सबदवाणी श्री जांभजी री । सबद संख्या-१२० । किंतु प्रमाण । भलीयो हाय ता भल बुधि आव ॥ बुरिया बुरी कमाव ॥ १२० ॥ (ग) विचार माल (रचयिता-अज्ञात, संवत् १७२६ में रचित) । (घ) विष्णु सहस्र नाम रुद्र शाप मोचन मत्र (संस्कृत) ।

आदि-उँ श्री गणेशायनम ॥ अमावस री कथा लिषते ॥ कुंडलीया
प्रथम बदू गुरु देव कों । दुतिये बदू सव साध ।
विष्णु बधु पुन्य तीसरें । जात मिट जु ब्याध ॥ १ ॥
अन्त-इति श्री गग सहिताया श्री विष्णो सहस्र नाम नाप माचन विमुक्ति विधि सम्पूर्णम । सवत ॥ १६३७ मिति कातिक सुदि ॥ २ ॥ वार वस्पत सुभमस्तु ॥ श्री गुरुवेनम श्री ॥

२२७ पोथी । फोलियो सख्या-२०४ । देशी कागज । अपूर्ण । जीर्ण, खडित । आकार-६ ५×८ ७५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इंच तक । अक्षर बडे एव छोटे होने से, पक्ति-प्रतिपृष्ठ-२४ स ३३ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१६ से ३४ तक । श्री परमानदजी वणिहाल द्वारा सवत १८३३-१८३८ म लिपिवद्ध । लिपि-साधारणत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणूतरामजी महाराज, रूडकली । इसम ये रचनाएँ हैं — (क) श्रव मुणि साषि, सख्या-६५५ । परमानदजी रचित । "श्री ६५५ । १०२ ॥ एती एक सौ दोय प्रसग सपुरण समापीत समत १८३८ ।" (ख) चत्र सीरलोक भागोत । इतीय सक्घे चत्र श्लोको टीका-साषि-६ । (ग) सपत श्लोकी गीता टीका-दोहा-८ । (घ) राम नाम-२ कवित्त और १३ दोहे । 'समत १८३८।'(ङ) नाव महातम नहचौ दीज पुत्री वाघात, अज्ञात कृत । (६ अध्याय), कुल छन्द-चौपई-दोहा-२६८ । (च) श्री महादेव पारबती सवादे सरोदो-अज्ञात कृत । दोहा-चौपई-१६६ । (छ) ग्रन्थ काफर बोध-गोरखनाथ कृत, छद स०-३० । (ज) मारकुडे पुराण-३० अध्याया मे सम्पूर्ण, भाषानुवादकता-दमोदर । छन्द, चौपई, दोहा-सख्या-१३०६ । सुमरण भजन कर कोउ । जोग ध्यान चित लाय । सो फल एह कथा सुन्य । दमोदर जस गाय ॥ ४२ ॥ १३०६ ॥ मारकुडे पुराण सपुरण समापिता लीपतु परमाणद वचनारथी काहा पोथी सुपजी की मा सु लीख्यौ गाव रासीसर मधे समत १८३३ भाद्रवा सुद ५ । (झ) सबद श्री वायक । गद्य प्रसग समेत । सवद सख्या-१२४ । (पुष्पिका के पश्चात ३ सबद और है जिनम—'विसन विसन तू भण रे प्राणी, साधा भगता उधरणो मत्र भी सम्मिलित है) ।

आदि-श्री विसनजी सत्य सही लिषतु सवद श्री वायक आदे सवद वाणी ब्राभण न परचो दाही रा ममै रो सवद श्री वायक गुर चीहो गुर चिन्ह पिरोहित गुर मुषि धरम वयाणी ॥

अन्त-झाभोजी कह माड की पहेली जाणी झाभजी कह्या जाण्यस्यो भाभोजी कह ॥
माडा सगते धरम कराइय ॥ जा धरमा उपरि आव ।
दोन्यों पथ बताइय ॥ मन मान जोह जाह १२४ ए पहेली उपरे वील्हजी ग्यानचरी कही सवद सपुरण ॥

(ञ) पजनांमु । (आरबी पारसी मा पजनामु हीदगी मा पजनमो) । (ट) मत्र । (१) विसन मत्र । (२) वीरज मत्र । (३) तारण मत्र । (४) सुजीवण मत्र । (५) सोघ

मत्र । (६) गुर मत्र । (७) अघोर मत्र । (८) गायत्री–२५ (संस्कृत) । प्रमग य गायत्री हैं —ब्रह्म, राम, विसन, वरा, रुद्र, लीछमी, नृस्यघ, लछमण, प्रसन, गोपाल, प्रसराम, तुलछी, हनुमान, गुरड, अगस्य, प्रथी, जल, प्रकास, सुरेज, चंद, गुर, पुवन, हस, गारी, सगत । (ड) सुषदेव लीला, अज्ञात कृत (अपूर्ण) । छद–दोहा, चौपई, डिंगलगीत–१३६ । यहा म १०–११ पत्र अप्राप्य हैं । (ढ) पदम पुराण सतोत्र टीका सजुगत्य विसन सहस्र नाम (पदम पुराणे उत्रखंडे उमा महेश्र सवादे । श्री विष्न नामे सतोत्र) । २५२ श्लोका पर गद्य टीका । (ण)–(१) हरिनाम माला (संस्कृत) १९ छंद । (२) सत्यनाम सतोत्र (संस्कृत)–१७ छद । (३) पचीस नाम । (४) विसन पिंजर । (५) गोत्राचार । (६) गीत–बासट्ठ नाम, ४ दोहले । (७) बसत नाम । (८) आदूय बसतवली । (९) विवरस्य । (१०) कलस । (११) पाहल । (१२) बालक री मत्र । (१३) ब्याह । पीया का सुरत्य । (१४) चौकुणो । (१५) सुरत्य । (१६) सदसी मुसलो भाष्या, दोहा–चौपई–२३ । (१७) बार फरज मोमण के । (त) असतोतर, बद्रीनाथ का–६ छंद । (थ) हरजस वील्हजी का । सख्या १६ । (द) हरिजस सुरजनजी का । सख्या ४८ । (ध) छुटक–हरजस स० ११ । ऊदोजी, वील्हाजी, कान्होजी, तेजोजी, आसानन्द, दुरगदास, और पदम कृत । (न) हरिजस केसजी का–सख्या १२ । (प) हरिजस आलम का–स० १२ । (फ) हरिजस छुटक–केसोजी, माण नजी, मोहनदास, देवोजी, और ऊदोजी कृत । (ब) हरिजस परमाणद का । सख्या–३९ । (भ) हरिजस गोरषनाथजी का । स० ८ । (म) फुटकर हरजस । मोहनदास, अज्ञात, मुकनदास, तानसेन, भगाल, कान्होजी, भगवान कृत । (य) रष्या । (र) हरजस बखनु, परमानन्दास, रामदास अज्ञात, तथा किसनानद कृत । (ल) साखी (जाम्भाणी) स० २ । (व) विसन असतोतर, २२ छंद । (श) अथर्वण वेदे नारायण पनिषद (संस्कृत) ।

आदि–श्री विसन जी सरय महो ॥ त्यपतु साथि ॥ नमसकार परसग ॥

पहली नुयण नीरजणा ॥ सब का सीरजण हार ॥
सीरज्यां कु बिसर नही ॥ पोषण कुगो दातार ॥ १ ॥
जाकु सोवरया अनत गुण ॥ पार न पावे कोय ।
आसा सबही पुरव ॥ अलय अजुनी सोय ॥ २ ॥

(परमानन्दजी की हस्तलिपि के अंतिम २ छंद, (व) स) —

सेस सुर नर जाकी सरण्य । सीव ब्रह्मा ध्यावत सोय ।
तीन्य लोक तारण तरण ॥ अवर न दुजो कोय ॥ ४ ॥ (३)
द्वत भाव अब्रम भ्रम ॥ हरयो येप असमरा ॥
भ्रम कर्म बधीया ॥ होत् मसेलमान ॥ ५ ॥ (४) ३४ ॥ असतोतर सपुरण ॥

अन्त–त्रिये दस भागेण षट भागेण च यति ग्रहे
चोपारेसु पोड भागेण करता कर्म न लिपते ॥ १ ॥
जला रयंत रयसा रयतू रयंतू सीयल वधना

मूप हस्ते न दातव्य एव वदति पुस्तक ।। २ ।।

२२८ बहीनुमा पुस्तिका । खण्डित, दीमक खाई हुई । अपेक्षाकृत पतल देशी कागज । ९ पत्रे । आकार-२१×४ २५ इच । हाशिया-नगण्य । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-३३ से ४३ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-११ से १७ । सवत १९०२-०३ म बिहारीदास द्वारा लिपिवद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणूतरामजी, रुडकली । इसमे ये रचनाएँ हैं --

(क) कवित्त-१, बिहारीदास कृत । (ख) गुरु नानक जप (अपूर्ण) । (ग)-(१) प्रात कालीन पूजा-पाठ विधि तथा आरती । (२) कलस थापण मत्र, पूजा विधि (अपूर्ण) । (३) पाहल मत्र । "इति श्री पाहलि करने का मत्र सपूरन मिति फागुन सुदी २, १९०२ ।"

(४) बालक के कान फूकवे को मत्र । (५) तिलक मत्र । (६) पेसव करने का मत्र । (७) विसा जवे को मत्र । (८) वतौन को मत्र । (९) अस्नान मत्र । (१०) भस्म धारन करवे को मत्र । (११) सध्या वदन । (१२) नवण मत्र ।

(घ) समया आरती, सख्या-५ । (ङ) आरती प्रथम मगलाचार, सख्या-४ । (च) विभिन्न मत्र-(१) भोजन पायवे के सम को मत्र । (२) भोजन कर चुके पर मत्र पढे । (३) अनत बाधिवे को मत्र (सस्कृत) । (४) जुर को मत्र (सस्कृत) । (छ) अवतार नाम । (ज) नमस्कार, (सस्कृत) । (झ) शिवपार्वती सवाद- सत्याण । (ञ) चौजगी । (ट) बिहारीदास कृत ५ दोहे, अभ सरोवर अस्तुति छन्द-१०, जभाष्टक, छन्द-१० । इति श्री सतगुर भावाजू की अस्तुति सपूरण स० १९०३ मु० कालपी । (ठ) आरती-२, मोतीराम कृत । (ड) दोहे-५, बिहारीदास कृत ।

आदि-कवित-दीनन के त्राता द्रुव्य दाता सिध्य दाता जाहि ध्यावत विधाता सिव सकट निवारी है । नाम के लिये त सकल सकट पराहि जाहि ध्यान के धरें ते करत वुध उजियारी है ।

अत- बार बार वर मागऊ सरन राखिय नाथ ।
बास बिहारी की सुनी तुव चरनन पर माथ ।। ५ ।।

२२९ मशीन के बने कागज । पत्र सख्या-७ । जीर्ण, खंडित । आकार-८ ५×४ २५ इच । हाशिया-नगण्य । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति २२-२३ । लिपिकार-सम्भवत गोविन्दरामजी । अनुमानत सवत १९१०-१२ के आसपास लिपिवद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणूतरामजी, रुडकली । इसमे ये रचनाएँ हैं --(क) साखी खेजडली री-गोकलजी कृत । (ख) श्री गोविन्दरामजी कृत-(१) जाम्भोलाव महात्म्य छन्द-६ तथा (२) साखी, ६ छ दो की ।

आदि-।।श्री विसनु जी लीपते साषी पेजडली री दो०
पण पालण पोसणा गजण रुषा रायण हार ।
जोयाणें जालम तप्यो अजमलजी अवतार १

अन्त-सुध जीव सोध्या सही दोनो कवल नीमाय

गोमदराम कहे जम कु सोवरो होत घोत लाय भरम न भुलो भाईयो ६

२३० पोथी। मशीन के बने पन्नों की। फोलियो ४१। आकार ५ ५X४ ५ इंच। हाशिया-आधे से पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर प्रतिपंक्ति १५-१६। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १६५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्ति स्थान साधु श्री कृष्णानंदजी, रडवली। इसमें ये रचनाएँ हैं —(क) कवित्त जांभजी के जन्म समय का संख्या-८। केसोजी, किशोर और अज्ञात कृत। (ख) निज धर्म उन्नीस का कवित्त-(१) ऊदोजी कृत-५ कवित्त, (२) तीस दिन सूतक पांच रतवंती न्यारा। (ग) रामसरण के कवित्त-सं० २। (घ) जन्मे सबधी कवित्त-१। (ङ) फुटकर छन्द। हरचन्द, ऊदोजी, केसौदास, गढ़, गिरधर कविराय, रामचरण, तत्ववेता तथा अज्ञात कवियों के। (छन्द संख्या १७ से ५३)। (च) अठार पुराणों की संख्या, निपट निरंजन, तत्ववेता, बालकराम, जगन्नाथ, रज्जब, सुन्दर, बखतराम, सिंह, मोर, भगवान, वील्होजी, खेमदास तथा अज्ञात कृत-छप्पय-कुंडलिया आदि, छन्द संख्या-५४ से ११३। (छ) श्लोक कवि कालवासजी के-५। (ज) फुटकर छन्द-ऊदोजी, तत्ववेता, सहजप्रताप तथा अज्ञात कृत। (छन्द-११४-१२८ और अंतिम दो दोहे)।

आदि-श्री जभगुर गुरवे नमः कवित्त श्री जाभजी के जन्म सम का ॥

आदि अनादि जुगादि को जोगी लोहट घर अवतार लीयो है।

धनहीं धन भाग बडो जिन हासल कु हर मात कह्यो है।

अन्त-दोहा-तृष्णा चितवन दोय बुध नर सग तृय मन दोय

मायक घायक मानसी दसु दोय तज मोय २

२३१ गुटका। अपूर्ण। दीमक खाया हुआ। फोलियो-२९। देशी कागज। आकार-१ २५X५ ७५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इंच। विभिन्न अज्ञात लिपिकारों द्वारा लिपिबद्ध होने से, पंक्ति-प्रतिपृष्ठ ९, ११, १७। अक्षर-प्रतिपंक्ति-क्रमशः १०, १५, तथा २५। अनुमानतः संवत १८०० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-साधु श्री कृष्णानंदजी, रडवली। इसमें ये रचनाएँ हैं-(क) सबदवाणी (अपूर्ण), सबद संख्या-३। (ख) संस्कृत श्लोक, गद्य टीका सहित। (ग) स्त्री-पुरुष तथा पशु आदि के लक्षण (संस्कृत श्लोक पद्य टीका सहित)।

आदि-तिरि गग होलोलेहे जाय सतगुर धोहे सहेले न्हाय

निरमल पांणी निरमल घाट निरमल धोबी बध्याहा पाट

अन्त-पर नारी सुरति कीय पर दोय जिय जानि जहू

जो मन चचल बसि नहो तोउ इनस केलि न मनीये ॥ ७८ ॥ नारी दोषण ॥ कुह ॥ निलज ~॥

२३२ गुटका। देशी कागज। अपूर्ण। जीर्ण और खंडित। बीच के कई पृष्ठ रिक्त हैं। आकार-६X४ ५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-साधारणतः पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-८-१०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१० से १५। ऊदोजी महीग तथा अन्य अनेक

लिपिकारा द्वारा लिपिबद्ध । लिपिकाल-सवत १८३६ से १८३८ (तथा इसके पश्चात् भी) । लिपि-कही कही पाठ्य, अधिकतर भद्दी और दुष्पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणूतरामजी, रुडकली । इसमें ये रचनाएँ है -(क) प्रसण सीणगार (पिसण सिंघार), सेवादास कृत (अपूर्ण) ७० छद । (ख) सिदां-घात पाटी । (ग) लघूचर्णायके राजनित सास्त्रे (सस्कृत) । (घ) एकावलि री पाटि । (ट) सबद-कबीर का । (च) सीवरात्तरी कथा-गद्य (अपूर्ण) । (छ) ऐकादशी री कथा-गद्य (अपूर्ण) । (ज) हरिरस गुण, बारहट ईसरदास कृत । (अपूर्ण) "स० १८३८ वर्षे शाके प्रवत्तमाने : मासे जेष्ट व्द १० बुधवारे विनोई मेसा अडीग तत पुत्र उदा लिया कृत विस० ॥ वमनो पुन सावत् पुवार पठनार्थे ॥ ग्राम रुडकली सुभ भवेतु ॥" (झ) जोगणी चक्र, गग के फुटकर कवित्त आदि । (ञ) साखी-जाम्भाणी । (ट) कबीर, मीरा, बषतावर तथा अज्ञात रचित भजन । (ठ) दसु अवतार । (ड) राजा भोज डोकरी री कथा (गद्य) । (ढ) गौडा विगनान । "स० १८३६ रा वर्षे वमाक सुद ९ ।" (ण) पावस रितरा दूहा । (त) चद्रायणा लालदासजी रा कह्या सख्या-७ । (थ) ऊदोजी अडींग की लूर । (अपूर्ण) । (द) मीरा के भजन, फुटकर सवए बाजिंद के चद्रायणे आदि । (ध) बारायरी (सुदामा की) ।

आदि- ॥ द० ॥ अथ प्रसण सीणगार गृंथ लीपते ॥

उनमन मेजा भ्रहर । अनहूद घुरे नीसाण

सहीत भोम्या उपर । चढीयो सबद दीवाण ॥ १ ॥

अन्त-लबावर गजबदन तु ॥ सीव सुत गवरी नद

तु + त प्रन हीरदे कर ताको हरो दुख दु ब ॥

+ भजन भगवान है सकट हरन गनेस ।

चौपती हरन श्री लछीमी माया बेन महेस ॥ श्री रामजु ॥

२३३ पुस्तिका । मशीन के बने कागजा की । अनेक पृष्ठ रिक्त हैं । आकार-७ ५×५ २५ इ च । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१४-१६ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१७ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९२५ के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-भिन्न हाथा की लिखावट म, कही पाठ्य, कही दुष्पाठ्य । प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणूतरामजी, रुडकली । इसम ये रचनाएँ हैं -(क) भाडली पुराण (गद्य म) । (ख) औषद । (ग) मत्र । (घ) साखी-सख्या-३ ।

आदि-श्री गणेशायनम अथ भाडली पुराणे लिष्येते प्रथम वर्षा रूप पुत्र हली जनम उतपत कहै काती महिन दिवाली सूय पद्य उगत आयमें तें भ्राम रातडा होव निका आगला बरसनि बरषा रूप अस्रिम रित आवी नहिज

अन्त-मीनपा तो देई दुलब ह जीव पडो सगट भारीये ।

पाप परासीत मेट जमराज हीरद हर न वीसारीये ॥

२३४ पोथी । फोलियो सख्या-५१ । अपूर्ण, खण्डित । देशी कागज । आकार-१० २५× ६ ७५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-डेढ इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ ११-१३ । अक्षर-

प्रतिपंक्ति-२४-२६। लिछमणदास गायणे द्वारा संवत १६३५ में लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। अनेक पन्ने आपस में चिपक जाने से फट गए हैं, ऐसे स्थल अपाठ्य हैं। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आयूणी जागा, जाम्भा। इसमें ये रचनाएं हैं —

(क) कथा मेडत की, केसौजी कृत। छन्द संख्या-१६३। समत १९४५ मीती प्रमाद बद २॥ वार शनीवार के दिन कथा सपूरण कीनी॥ नपीत गावणं लीछमणदास बेटा श्री आसारामजी का॥ पोथी लीयी गाव पडीयाल मधे। (ख) अहदावणी (कथा) ऊेल्ह कृत। छन्द संख्या-६५५।

आदि-श्री गणेशायनमो। श्री जंभेस्वरायनम॥ अथ कथा मेडत की लिख त॥ राम हुमा॥

दोहा-पार ब्रह्म पहली नऊं॥ जिहि सिवर्या सुष थाय॥
जंभ गुरु सिवरू सदा॥ सकट कर सहाय॥१॥

अन्त-कहो जोमा जोमण कुण जोमसो सो सुल कियो काल
मीठर बाभण बामणो प्रख्या सात अहमात
अरजन कहे उचर मीठर (-छन्द ६५५ वां)।

२३५ गोत्राचार आदि। अपूर्ण। देसी पत्र-२। जीर्ण। आकार-१० २५×४ २५ इन्च। हाशिया-नाम मात्र को। लिपिकार-अज्ञात। संवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२। अक्षर-प्रतिपंक्ति-४६-४८। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आयूणी जागा, जाम्भा। इसमें रचनाएं हैं —(१) गोत्राचार (महादेव पार्वती संवाद)। (२) बसंदर के नाम। (३) आव बसावणी। (४) कवत। (५) विवरस्य। (६) अस्तुति। (७) कलस (अपूर्ण)।

आदि-श्री विष्णजी॥ अथ गोत्राचार॥ श्री महादेव उ०॥ उं जदु वास स्पू। पुत्यत्र। स्याम निघू। गुणे निघू आकास पुत्र

अन्त-पांचा कोड्या के मुवी। गुष हलाद कलस थाप्यो॥ वह कलस जस धम हुव म इ ह कलस हुइयो। सुष सुवायन करी। दुष दुवायन पास टाली।

२३६ साखी। संख्या-३, वील्होजी, केसौजी कृत। सटिप्त। देसी कागज। आकार-८ ५× ४ २५ इन्च। हाशिया-नाम मात्र का। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२६-२४। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आयूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री विष्णु जा॥ साषी लिषते॥
साधो सांभलजस बागड़ देस जी यो पोमी पितबर आवियो
क हि पूरबल सं घम न रेसो जी यो रांक रतन घन पावियो

अन्त पार गरांये देव बामो मिस सुर नर कामणी
वह बेसो सुणो साधो मारी अरज सुणो मोटा धणीं॥ ५॥

२३७ साखी ७ तथा कुण्डर छन्द-४। जन हरजी कृत। अपूर्ण, किनारा से खण्डित।

देशी कागज। पत्र संख्या-५। आकार-६×४ इंच। हाशिया-नगण्य। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१२। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३३-३८। लिपिकार अज्ञात। अनुमानतः संवत् १८५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-महंत श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री विष्णुजी सहाय लीषतु साषी जाभाणी ॥

रे मन गहला सारा पहला कुद र काम मचाव
बुरो कहै सब कोई तोकु तोही सरम न आवे

अन्त-गिण न ठोड कुठोड मन सू कवे न धीजियें
मन क बोहत मरोड आय सतो इ द आपसू ४ ॥
सतो मन को कहा परतीत ब्रह्म देव सू

२३८ साखी-१, हरजी कृत तथा २ श्लोक, १ दोहा। पत्र-१। खण्डित। आकार-६×४ इंच। हाशिया-नहीं है। कुल ४३ पंक्तियां। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१४-१९। सतोपदास द्वारा संवत १६४३ में लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महंत श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि- ॥ श्री ॥ श्री गणेशायनम उ

साधो सही विरधा बीस साचौ गुरु सभरायल
कान कवर नदलाल किरपा कर आये मले २

अन्त-अर श्री हत्या भाग है गोहत्या मद जान
ब्रह्म हत्या तमाल है यह निश्च कर मान १

२३९ छप्पय-७ और ग्रंथ चिंतावणी, छन्द-१३३। ऊदोजी कृत। पत्र संख्या-१२। देशी कागज। अत्यन्त जीर्ण, खण्डित। आकार ६×४ इञ्च। हाशिया दाएँ, बाएँ आधे से पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ ६ १०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२५ ३०। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १८०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महंत श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री गणेशायनम श्री विसनजी सत्य सही ॥

नमो नमो गुरु अभ नमो गुर ज्ञान दिवाकर।
नमो गुरू उपदेस नमो गुर देव विद्याधर।
नमो नमो सिघ साध नमो रिप राज मुनिवर।
नमो नमो पित मात नमो अब देव पुरंद।
पाच तत ब्रह्म मडल नमो नमो अत्मात्मा।
कर जोडे उधव कहे नमो विष्णु प्रमातमा॥ १।

अंत-हर कृपा सु मनय तन गुर कृपा सु भक्ति।
उधव हरि कु सिवरलो बोहोड न असो जुगत।
हर सेवा गुर वदगी कर सतन सु भाव।

ऊधय बोहुरे न पायबो क सो उतम भाव ॥ इति श्री चितावणी सपूर्ण ॥

२४० सात वार, आठ पग, बारह राशि और कलियुग तथा जाम्भजी के अवतार लिये की विगति। देशी पत्र–१। खण्डित। आकार–६×३ इंच। हाशिया–नाम मात्र को। पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–९। अक्षर प्रति पंक्ति–२७ ३०। लिपि–सुपाठ्य। सवत १८३५ में लिपिबद्ध। लिपिकार–अज्ञात। प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड्दासजी, आयूणी जागा, जाम्भा।

आदि–श्री विसनजी सत्य ॥ अथ लिखते सात वार ॥ आदीतवार ॥ १ सोमवार २ मंगलवार ३

अन्त–अथ वील्हैजी सो वचत मैं चोरासी वरस देह रापी कही जामजी की ॥ अरु परमाणदजी लेखो करि पच्यासी वरस कही ॥ इति सवत १८३५ ॥

२४१ कथा अहमनी, ईसर कृत। छन्द सख्या–६९५। पत्र सख्या–३९। खण्डित। देशी कागज। आकार–९×४.२५ इंच। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इंच। पंक्ति–प्रतिपृष्ठ १०। अक्षर–प्रतिपंक्ति ३०–३२। लिपि–पाठ्य। साधु कनीरामजी द्वारा पुर में सवत् १८८१ म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड्दासजी महाराज, आयूणी जागा, जाम्भा।

आदि–श्री विष्णुजी सत सही ॥ लीपते अदावणी ॥

पणउ गुणीज गुणा गहीर ॥ सदीरो पीजर सरीर ॥ १
सुख चुड फरस ओ कर ॥ को को दोप वीयायक हर ॥ १ ॥
विघन हर लाबोदर देव ॥ गिर सुक सो सायर सेव ॥
पहुं माव नारायण तणो ॥ नास पाप ध्रम होय घणो ॥ २ ॥

अन्त–कथा सवारो सुणत सु ॥ भारय रो साया घरी ॥
गीता की सब रीत ॥ कथा सु ण जे अमनी ॥ नर नारी सब लोग ॥
जे नर तो सुष भोगव ॥ जाहू वीसन के लोक ॥ ६९५ ॥ कथा सपुरण समापीता ॥ समत ॥ १८८१ में पे मीती चत सुध १२ वार सोमवार ॥ लीपतु साध कनी रामजी ॥ सीप वलुजी की ॥ उदयार चीत सु लीपाय ॥ अहमनी सपुरण ॥ समापीता ॥ गाव पुर मधे ॥ सुथान वास परगट ॥ साथरी जामजी की सुथीत ॥ श्री वीसनजी छत छ जी।

२४२ विभिन्न मंत्र। पत्र सख्या–३। खडित। देशी कागज। आकार–९×४ इन्च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इन्च। पंक्ति–प्रतिपृष्ठ १०। अक्षर प्रतिपंक्ति ३२ ३४। लिपि पाठ्य। लिपिकार–अज्ञात। अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड्दासजी, आयूणी जागा, जाम्भा। इसम ये मंत्र हैं —(क) कलस। (ख) पाहल। (ग) बालक को मंत्र। (घ) स्तुति।

आदि–श्री विसनजी सत्य सही ॥ ॐ अकल रूप मनसा उपराजो ॥
ता मा पांच तत होय राजो ॥

अन्त–आइ बलाइ दरू करो ॥ वुर बालीयो वुर चोनीयो ॥ तिलक चक्र मारो ॥

त्रिलोकी नाथ भलो है स करो ॥ इति स्तुति सपूरण । ७ ।

२४३ पहलाद चरित्र, केसोजी कृत । छन्द सख्या–५९६ । पत्र सख्या–६७ । खडित । अप क्षाकृत मोटे देशी बादामी रग के कागज । आकार–८ २५×४ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–आधे से पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–६ । अक्षर–प्रति पक्ति साधारणत २८–३२ । लिपि–पाठय । प्रभुदास दादूपथी द्वारा अनुमानत सवत १९०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–श्री विष्णूजी शत्य अथ पहलाद चरित्र लिप्यते

नारायण पहलो नउ सामी सर्व सुजाण

आदि भगति कहस्यों कथा पहलाद चिरत वाण १

अन्त–दो० मो मत सारु बीनवों बिसन तणा वाखाण

कर कथणी के + + + + + + यों सत सुजाण ९५

मैं वावण पकडयो दिन को सतगुर कर सहाइ

+ + + + + वारिहा अबक मोहि मिलाइ ५९६ इति श्री पहलाद चरित्र

स + + + + + + त साद प्रभूदास दादू पथो ॥ वाच विचार ज्यानू नू ग मलाम ॥ श्री ॥

२४४ आदि वसावली । (आदि विष्णु से जाम्भोजी तक) । देशी पत्र–१ । खण्डित । आकार ६×४ इच । हाशिया–नाम मात्र को । कुल १२ पक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपक्ति–२५ २७ । लिपि–पाठय । अनात लिपिकार द्वारा सवत १८७८ मे लिपिबद्ध । प्राप्ति स्थान–महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–श्री विष्णु जी प्रथम आदि वसावली लिपत प्रथम आदि बिष्णु १ विष्णु को पुत्र ब्रह्मा २

अन्त–सेतराम रो रोलो २६ रोल को लोहट २७ लोहट को श्री झाभोजी २८ सवत १८७८ मिती आसोज सुदी ३ ।

२४५ भ्रमचिरी, सुरजनजी कृत । छन्द सख्या ७८ । पत्र सख्या ४ । खण्डित । देशी कागज । आकार १० २५×४ २५ इच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–लगभग पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपक्ति–४३ ४५ । लिपि–साधारणत पाठय । लिपिकार–अनात । अनुमानत सवत १८०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–श्री विष्णजी ॥ लिपत भ्रमचिरी ॥

दोहा–कहां कम जल कोयलो ॥ कहां तिसनां कहा तोर ।

रे मन कित पित मान ततु सपत बध्यो सरीर ॥ १ ॥

अन्त–दो०–चोरी पकडी चोहट । दूतो लागो दाय

मुशित विद्र के पूत न ॥ विदर न सिर पाव ॥ ७८ ॥

इति भ्रमचोरी सपूर्ण ॥

२४६ श्री विष्णुचिरत, ऊदोजी कृत । छन्द सख्या–११० । अपूर्ण । खडित । देशी कागज ।

प्राप्त पत्र संख्या–१० । ११ पत्रों में से पहला अप्राप्य । आकार–९X४ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इंच । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–२०–२४ । साधु रामदास द्वारा संवत् १८८१ में लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–तोय तारा अगन सूर चंद सोई ॥ सब में तेज विष्णु का होई । १२ ।

पुरष प्रकृत का सकल पसारा ॥ भक्त काज कीनों संसारा ।

अन्त–सोरठा–हरि अवतार अनंत अनंत चिरत अवगत तणा

गावै मुनी जन संत ॥ विमल जस भव जल तरण ॥ १० ॥ (११०)

इति श्री विष्णु चिरत संपूरण ॥ लिषतु साध रामदास श्री माधोदासजी रा शिष । समत १८८१ मिती पोह सुद १२ ॥

२४७ अवतार चीरत साभाजी का, वील्होजी कृत । छन्द संख्या–१४० । पत्र संख्या–११ । खंडित । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार–९X४ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएँ साधारणतः पौन इंच । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–११ । अक्षर–प्रतिपंक्ति २५–२७ । सदारामजी द्वारा अनुमानतः सं० १८५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–श्री श्री विसनजी लिषतु अवतार चीरत साभाजी का–

दोहा–नमनि करु गुर आपन नऊ निरमल भाव

कर जोडे यवु चरन सीस नवावय १

अन्त–धनि विल्हाऊ रण धनि गुर परगट संसार

वाल्ह कहै जां ओलख्यो ति उतरिस पार १४० । कथा संपूरण समापत हैतो श्री ओतार का चीरत संपूरण भेऐन लीषतु विसनोई साध श्री पराजजी का चेला सदारामजी लिषतु पुसतक ।

२४८ तलाव की कथा, केसोजी कृत । रूपक संख्या–१२ । पत्र संख्या–४ । देशी कागज । जीर्ण, खंडित । आकार–८.५X४ इन्च । हाशिया–नगण्य । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–१० । अक्षर–प्रतिपंक्ति–३१–३४ । लिपि–पाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानतः संवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–श्री विष्ण । लिष्यते तलाव की जत ॥ राग सोठ ॥

पारब्रह्म पहलो नऊ जगमरण जगदीस

रूप चोरासी दे घणो निष सांम नवांऊ सीस ।

अन्त–अड तीथ को गुण गायो केस गुण गुथि सुणायो

दिल म तर दूजि न आंणो जत मांहि कह्यो सत जांणों १२ ।

तलाव की कथा संपूरण ॥ य

२४९ पत्र संख्या–८ । खंडित । देशी कागज । आकार–९.७५X४ इंच । हाशिया–नग मात्र का । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ १० । अक्षर–प्रतिपंक्ति ४०, ४२ । लिपि–पाठ्य । लिपि-

कार अज्ञात । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा । इसमे ये रचनाएँ हैं –(क) औतार की विगत्य की अस्तुति-गोकलजी के कहे छद, सख्या-४७ । (ख)इद्रव छद-गोकलजी रा कह्या, सख्या-३२ । (ग) सवया-१, सुदरदासजी का (घ) सवया-१, पेतसी कृत ।
आदि-श्री विष्णजी सत्य लिपते औतार की विगत्य की अस्तुति ॥ गोकलजी के कहे छद । दोहा-रिपपति सिधपति सीलपति सुरपति सदा सहाय ॥
गतिदाता गोविंद सुमरि । गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥
अन्त-दूढत न पायो राम तायें भया ढूढोया
जोगी मै न जती मै न साध मै न सती मै न गद्य मैं न गती मैं न ज्ञान हीन मूढीया
पुन्य मै न दान मै न भसम सनान मै न सुधि मैं न ज्ञान मै न महा सठ दूढीया
सिव को न दास गहे जैन क न ठाठ रहे घरत न आव धाट घर को सो पूढीया ।
पेतसी कहत इम वकुठ मै ठोर्नाहि दू ढत न ०

२५० चितावणी,सुरजनजी कृत । छन्द सख्या २६ । पत्र सख्या ३ । खडित । देशी कागज । आकार-९×४ इन्च । हाशिया-दाऐं, बाऐं-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२४-२५ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी आयूणी, जागा, जाम्भा ।
आदि-श्री गणेशायनम लिपतु चितावणी ।
दोहा-कहा करम जल कोयलो कहा तिरणा कहा तीर
रे मन किस चित मात तो सपति अप्यो सरीर १
अन्त-दुहा-साध को घर छव सुरजन घर मुनि जन ध्यान
रहे नाव अलेख को क आपणों ईमान २६
इति श्री सुरजनजी की चितावणी समाप्त ॥ १ ॥

२५१ कथा दूणपुर की वीलहोजी कृत । छन्द सख्या-५६ । पत्र-सख्या-३ । देशी कागज । आकार-१० २५×४ २५ इन्च । हाशिया-दाऐं, बाऐं-पौन इन्च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३८-४१ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा ।
आदि-श्री विसनजी लिप्यते कथा दूणपुर की राग आसा
दोहा ॥ नविणि करू गुर आपण बदू चरण सुभाव
भजना तारण भो हरण तीन लोक को राव १
अन्त-सतगुर सेती वाद कर कदे न जीता कोइ
विल्ह कहे सेवा करो जीव जीव जोज भय होय ५९ । इति श्री दूणपुर की कथा सपूरणम ॥

२५२ आरती, सख्या ५ । ऊदोजी-२, प्रीतम-१, अज्ञात कृत-१ । मशीन का बना हल्के नीले

रंग का एक पत्र । खण्डित । आकार ६×४ इन्च । हाशिया–नगण्य । कुल २२ पंक्तियां । अक्षर–प्रतिपंक्ति–३४ ३६ । लिपि–पाठ्य । लिपिकार अज्ञात । अनुमानतः संवत् १९५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्रीरणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–श्री गणेशायनम उँ आरती कीज श्री जभ गुर देवा पार न पाव अलख अभेवा
अन्त–चौथी आरती अनु नवाऐ मूच लोक प्रभु पात कहाऐ ॥ ४ ॥
पांचमी आरती साधू जन गाव सोई या म मरा पव ।५।५।

२५३ नवण, संस्कृत श्लोक–१ एवम् मनहर छन्द–१ । देशी पत्र । खंडित । आकार–९×४ इन्च । हाशिया–दाऐं, बाऐं–पौन इन्च । कुल १६ पंक्तियां । अक्षर–प्रतिपंक्ति २४ २५ । लिपि–पाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानतः संवत् १६०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–उ स्वस्ति श्री विष्णवेनम ॥ उँ विष्णु विष्णू भण रे प्राणी साथे भवते उद्धरणी

अन्त–प्रसन्न वदन जाको निस दिन रहै सदा लछमी निरण ताकौं आनन्द भरत जु अ सो हम विष्णु को न्यारि त अरथ विघन कूं तिन प्रति चित महीं चितवो करत जु २

२५४ मयारामदास कृत अमावस्या कथा, छन्द १४४ और कवित्त–१ । अपूर्ण । जीर्ण, खण्डित । प्राप्त पत्र संख्या ७ । कुल ८ पत्रों म स प्रथम पत्र अप्राप्य । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार–८ ५×४ इन्च । हाशिया–दाऐं, बाऐं–एक इन्च । पंक्ति–प्रति पृष्ठ–१४ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–२९ ३२ । रचयिता द्वारा संवत् १८५१ म लिपिबद्ध । लिपि–सामान्यतः पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–तृभवन धनी ॥ ८ ॥ इहि व्रत करत पाप सब नास ॥ हृदे उजल ग्यान प्रकास ॥
अ सो मुनि + + + की बांनी । अजन मन आसका आनी
मधु न उ० । दीनदयाल दीन पत पारक ॥ संसय हरन ग्यान विस्तारक ॥१॥

अन्त–यादि यादि जो मैं लिखि सो छमियौं सब साध ।
मो मति अति ही तुछि है अमावस महिमा अगाध ॥२॥

संवत १८५१ श्रावण मास शुक्ल पक्षे तिथि सप्तम्यां शनिवासरे । लिषत मत श्री १०८ स्यामदासजी तस्य शिष्य मयाराम । अथ दस अवतार जन्म को कवित ॥
जेठ आदि रवि कछ ॥ मछ असित मधु बांनी ॥
कोन मधु पष आदि ॥ नृसिंघ माधव मोनु जाना ॥
भाद्रव सित निध वन ॥ फरसधर प्रगटे जांनु ।
मधु पष निनराम ॥ माह श्रावन सित मांनु ॥
कृस्न असित मधु माह मैं ॥ जेठ सित जुर बुध जानि ।
ता दिन निश्चय मयाराम ॥ व्रत कीजे अघ हानि ॥ १ ॥ २ ॥

२५५ पुँह और लूर । पत्र १ । देशी कागज । आकार–६×४ इंच । किनारे खण्डित हैं । हाशिया–नाम मात्र को । कुल २६ पंक्तियां । अक्षर–प्रतिपंक्ति–३५–३९ । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानतः सवत् १९०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि–पाठ्य । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा । इसमें ये कृतियां हैं —(क) पुँह पतीस की । (ख) लूर (२४ का) । (ग) सुगाइया की पुँह (२७ की) । (घ) छव राजवीया न पुँह । (ङ) प्रनाली (जाम्भोजी से लेकर सावतराम तक शिष्य-परम्परा)।

आदि– ॥ श्री विष्णु ॥ लिषतु पुँहे पतीस की ॥ हूं मे भादु की पु० बूड पिलेरी , की पु०

अन्त–सुजाणजी का चेला कंनीरामजी ११।२। कंनीरामजी का चेला भजबोजी ।१२।१ सांवतराम २ ॥

२५६ ब्याह (पद्धति) । अपूर्ण । प्राप्त पत्र सख्या–५ । ६ पन्नो म से प्रथम अप्राप्य । जीर्ण, खण्डित । देशी कागज । आकार–८ ५×४ २५ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–१ इंच । पंक्ति–प्रति पृष्ठ–१६ । अक्षर–प्रति पंक्ति–३२–३५ । लिपि–प्राय पाठ्य । सवत् १८४९ म साधु मयारामदास द्वारा अलाय मे लिपिबद्ध । कतिपय पंक्तियाँ भिन्न हस्तलिपि में भी हैं । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा । इसमें ये कृतियां हैं –(क) विष्णु महिमा । (ख) आदि वसावली । (ग) पचीस नाम । (घ) विवरस । (ङ) कलस । (च) सूरति । (छ) चौजुगी । (ज) सूरत मुसलमाणी । (झ) गजल ।

आदि–विसन सब सबत्रे ॥ विसन थान धन तरे आयो देयो सर्वा सरयी को धणी । ध्यांन धूपे मन पोहपे पच इन्द्री होतासणी । होम जाप समाधि पुजा पूजा देव निरजणी ॥

अन्त–ब्याह सम्पूरणम् ॥ स ॥ लिषतु साध मयाराम सामजी का सिष्य । पठनार्थ थापन । हरिकिसन । सवत १८४९ जेष्ट सुदि ४ वृहस्पति । स्थान अलाय में लिपी छ । श्री ॥

२५७ पूल्हैजी री कथा, वील्होजी कृत तथा बडी नवण । अपूर्ण । जीर्ण, खण्डित । देशी पत्र–१ । आकार–६ ७५×४ २५ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएँ एक इंच कुल १७ पंक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–३०–३६ । लिपि–पाठ्य । दो भिन्न हस्तलिपियों मे । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि–सेती सोप सुण पूल्हो चालण हार १७

चौपई–पूल्हो मतो करि सण हकारया नोवतो मांग्य वचन कहि सारया

केती एक गाय कितो एक मांणों कापड चौपड धन खांमांणो १८

अन्त–विसण भणियो विसण मन रहियां तेतीस कोड पार पहुता साचे सतगुर को मत्र कहोमो । इति श्री वडी नुवण ।

२५८ कथा अहदावणी–ऊदो कृत । अपूर्ण । आदि से ८८ छंदा तक । प्राप्त–पत्र सख्या ४

देशी कागज । जीर्ण, खण्डित । आकार ९×४ इन्च । हाशिया-दाएं, बाएं-एक इन्च पंक्ति-प्रतिपृष्ठ १३ । अक्षर-प्रतिपंक्ति ३४ ३५ । लिपि पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दास, आथूणी जागां, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णु जी सत्य ॥ ॥ श्री ॥ गणेशायनम ॥ अथ कथा अहदावणी लिषते ॥
　　राग धनाश्री ॥
　　प्रणउ गणपति गुणा गहीर ॥ सदूरो पिजरे सरीर ॥
　　मूस चड फरस कर धर । को को दोष विनायक हर ॥ १ ॥

अन्त-छपन कोड जादव बोलै ॥ सुण नारायण धास ॥
　　बारे बरस रो मोटो होयसी ॥ किण विध लांबां धांत ॥ ८८ ॥
　　बारे बरस रो मोटो होयसी । बाह''' ।

२५९ मन्त्र आदि । अपूर्ण । कुल १९ पत्रों से से अन्तिम ७ पत्र प्राप्त । चारों ओर से खंडित । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएं,बाएं-एक इन्च । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२६-३१ । लिपि-सुपाठ्य । मेघदास द्वारा संवत् १८७८ में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा । इसमें ये रचनाएं हैं —(क)-रामरक्षा, रामानंदजी की-(अपूर्ण) । (ख)कलस । (ग)पाहल । (घ)बालक को मन्त्र । (ङ)कवित्त तेजोजी कृत । (च)बालक को मन्त्र । (छ)चन्द्रायणा छन्द १, अज्ञात कृत । (ज)कवि गंद कृत कुंडली १ । (झ) दोहे-७, अज्ञात कृत । (ञ) मन्त्र मोहनी को । (ट)विछु को मन्त्र । (ठ) मन्त्र अठासिसी को ।

आदि-ले प्रात जाने ॥ ते नरा मोक्ष पावते ॥ इति श्री रामरक्ष्या रामानंदजी की सपूरणम् संवत ॥१८७८॥ पोह सुध ॥६॥ वार अदीतवार । लिप्यत बसनो श्री राम दासजी का बेटा मेगदास लिखत ।

अन्त-पापा वाली न पाव गुल वाली न सुरजी मानी फफ तीन गोली तीन दौन पाव वीरणजी रा साथ कनिरामजी रा सीष सावतरामी पठणारथे ॥ नगर जोधपुर मागामधे पोथी प्यारीराम की हर हीया को हार घणा जतन सु राषजा पोथी सती प्यार सुभमस्तु

२६० ऊदोजी कृत १ कवित्त और १ सवया । देशी पत्र-१ । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएं, बाएं पौन इन्च । कुल ९ पंक्तियां । अक्षर-प्रतिपंक्ति २५-२८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत संवत् १९०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोड़दासजी, आथूणी, जागा, जाम्भा ।

आदि-कवत गुर म्हमा को ॥ गुर देवन के देव गुरां सा अवर न कोई
　　　　　　　　　जग मे इवर जोत सतगुरु तारे सोई ॥

अन्त-निज अपराधि सेतो भ्रम गत ल्यायो लेतो
　　उधव विचार विडद सरण तोह आयो है ॥ २ ॥

२६१ प्रहलाद चिरत, ऊदोजी कृत। छन्द-२३२, (लिपिकार ने ३३० छन्द बताए हैं)। अपूर्ण। जीर्ण, खडित। देशी कागज। प्राप्त पत्र सख्या-१६। कुल २४ पत्रों मे से ८ पत्र, सख्या ३, ४, ५, ६, ७, १६, १७ और १८ अप्राप्य। आकार ६ ३५×४ इञ्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इञ्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३४। लिपि-सामान्यत पाठ्य। सवत् १८६६ मे स्वय रचयिता द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्ति स्थान-मह्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा।

आदि-श्री विष्णजी ॥ ॥ श्री प्रमात्मन नम- ॥ अथ प्रहलाद चिरत लिष्यत ॥

दुहा-प्रथम ब दु गुर देव कू ॥ दुतिय बदु सत सार ॥

त्रितिय बदु म्हाविष्णु कु ॥ कहु चिरत प्रहलाद ॥ १ ॥

अत-प्रभ गद मम इष्ट है सत सबै सिर मोड ॥

जन ऊधो की बीनती ॥ सीस न्याय कर जोड ॥ ३० इति श्री प्रहलाद चिरत सपूरणम् ॥ १ समत १८६६ रा असढ सुध ६ ॥ वार वसपतवार माघ माहाराज श्री सुदरजी का चेला लिख्यते ऊधोदास वाच जाकु जीवण वाचणी जी (दाएँ हाशिए मे-लाल स्याही से-॥ समसत चोपई दुहा छन्द कवत ३३० ॥)

२६२ इसकदर की कथा, केसोजी कृत। छन्द सख्या-१९२। अपूर्ण। जीर्ण, खण्डित। प्राप्त पत्र सख्या ७। कुल १० पत्रों मे से ३ पत्र सख्या १,७ और ८ अप्राप्य। देशी कागज। आकार-६×४ इञ्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ एक इञ्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर प्रतिपक्ति-३५ ३९। लिपि पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान मह्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा।

आदि-ईं सु णि लोग सहर की आई

साभलि सतगुर सुरवाणीं तहा धरम कथा मनि आणीं २०

दो० सत्र साहब का साभल्या बिवर बिचारी बात

दरजी चाल्या देव दिस प्रभ गुरू की जात २१

अत-ऐस कथा कही कर जोडि आवागवणि चुकावो षोडि

जो यहै कथा सु ण चित लाय सत करि मानें सुरगे जाइ १९२ इति श्री इस-कद(र) की कथा सपूरणम् श्री परमात्मन नम

२६३ साखी-सग्रह। अपूर्ण। साखी सख्या ३७ से ८४ तक पूर्ण। विभिन्न विष्णोइ कवियों द्वारा रचित। जीर्ण, खडित। प्राप्त पत्र सख्या-१६। आकार-८ ५×४ इञ्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ एक इञ्च। लिपि-पाठ्य। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६। अक्षर-प्रति पक्ति-३८-४१। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपि-बद्ध। प्राप्तिस्थान-मह्त श्री रणछोडदासजी, आयूणी जागा, जाम्भा।

आदि-वन हेड आयो ॥जो। काढे तेग मरदन वाई। सीस उतारि भुय थायो। ४॥

आपे पडोयो आपे पतरो ॥ आपे आप सिझायो ॥

अत घर मिंदर माता पितो ॥ भुवा भतोजा वीर ॥ तजि तीरथ नु नोसरो ॥

सकल चुकायो सीर ॥ ६ ॥ भतो करें मोमण मिल्या ॥ देह चल्या पुलाई ॥

कुण कितना दिना ॥ पोहो ॥

२६४ सड़यां की विगति-३५ पूह, २२ को छूटो, विगत लुगाइयां री, तथा राजा की पूह। अपूर्ण। देशी पत्र-२। खंडित। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२१-२४। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत संवत १८०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महंत श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।
आदि-१००००००० पेतु जाणों की पुनह मुधी कोडि को
अंत-राजा की पूह असकरर सोदो महमदवा सोदो सांतल राठोड़
जतसी भाटी सागा सीसोदीयो डूदो राठोड इति सरय

२६५ सूय स्तोत्र (संस्कृत) श्लोक १६ (अपूर्ण) तथा विगत बाईस अखार की। दो पत्रों में से दूसरा प्राप्य। खंडित। देशी कागज। आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच। कुल ११ पंक्तियां। अक्षर-प्रतिपंक्ति-२२-२४। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सं० १९०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महंत श्री रणछोड़दासजी, आथूणी जागा, जाम्भा।
आदि-एक भक्ति क्रता भावो पोसते रवि बीसरे व्याधि कुष्टि न दालिद्र
अंत-नगीणो १८ लोदीगोड १९ भीमासर २० कोसाणो २१ पांडवालो २२ अखारा बाईस

२६६ हिंडोलणो-हीरानंद कृत। देशी पत्र-१। जीर्ण, खंडित। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। कुल १३ पंक्तियां। अक्षर-प्रतिपंक्ति २८-३०। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत संवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।
आदि-हूदो देसोट चल्यो मन म घणा अधीर
कुव उपर ओलख्यो निरषीयो धुग तारण जभ पीर १
अंत-धनण रायचंद अता पचायण संवत के आचार
हीरानंद की आरज ऐति सगत पार उतार ॥

२६७ कुंडलिया-४, केसोजी कृत। देशी पत्र-१। जीर्ण, खंडित। आकार-९×४ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल २९ पंक्तियां। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१२-१६। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत संवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।
आदि-॥ श्री वीष्णुजी सपतु कवत कुंडलया
हेज न कर रे होया ॥ सजन न करही हेज ॥
मन भाग मेलो कर ॥ जामा याज न पेज ॥
अन्त-औवीणो ‍हामो ‍ही जोरम जप्यो न तप (कीया)
कहि केसो मुखोच्चारि करि हुडरको न करि रे होया ४

२६८ विगत बाईस अखार की, गूगल की विधि तथा औषधियों की सूची। देशी पत्र-१।

खण्डित । आकार-६X४ इंच । हाशिया-नहीं है । प्रथम पृष्ठ में १६ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१६-१८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-॥ श्री विष्णव नमः विगत आईम भडार की ॥ प्रथम श्री सभरायल १ पीपासर २ ईवारो ३

अंत-पाणी सेर पका चढाय दे जिसका छेटेका भर रहे ।

२६६ पत्री, अज्ञात कृत । गद्य पद्य मिश्रित । देशी पत्र-१ । आकार-१२ ५X६ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इंच । कुल १६ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३७-४० । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत १८७५ के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-भीयासर साथरी ।

आदि-श्री जाम्भूजी सीहाय छ जी ॥ प्रथम सति श्री स्वामी आदू ग्यांन भगति जिन त लही

अंत-श्री १०८ महंतजी तुलछीदासजी बाबाजी दयारामजी भगतरामजी बक्सीराम को सतराम तुए प्रणाम सहत बचज्यो जी ओर आपकी क्रपा सू आनंद हे आपका सदा आनंद चाहि जी ओर कृपा म्हरबानीगी रायो तिनसू वसेष गावज्यो जी ओर स्वामी जी श्री गशाय म उ नम सीध

२७० गोविंदरामजी कृत, विभिन्न छंद-१३ । देशी पत्र-१ । आकार-२४X२ इंच । हाशिया-नहीं है । कुल ७७ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति ६-८ । लिपिकार-अज्ञात । १९२० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-श्री विसनजी सत म कुडिलीया

उँ पूरण गुर प्रमात्मा अविगत अलष अभेव ॥
जभ गुर महाराज है देवां हीं अति देव २

अन्त-साथरी की साला बणी सोई समईयो जाण
साध गुमानीरामजी साल कीवी हित मांन ६

२७१ अल्लूजी का कवित्त-१ तथा सुन्दरदासजी के सवैये-२ । देशी पत्र-१ । खडित । आकार-४ ७५X२ ७५ इंच । हाशिया नगण्य । कुल १८ पंक्तियां । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१-२४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत् १८०० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।

आदि-कवित ॥ असी लाष कबाड ॥ पदम दस लोंग सुपेथो ॥
चावल पदम पचास ॥ घत षण पार अलेषो ॥

अंत-सुदर कहत ओर भुगत अनत दुष सतनि कों निंद ताको सत्यानास जाय है ।

२७२ वीलहोजी के कवित्त-११ तथा अल्लूजी के कवित्त-३ । पत्र संख्या-४ । देशी कागज । खण्डित । आकार-९X४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२१-२४ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-श्री विष्णुजी लिषते गवीया बीसजी महाराज १
अनत बेर यो जीव भुयो चोरासी भीतर
आवागवण फिरत सह्या सघट बहोली पर
अंत-आणंद थयो मन मांहर जीव तणों पायो जतन
नारांयण नाम मेलता नहीं अलु रंक हाथ पायो रतन ३

२७३ जम्भ महिमा विषयक अज्ञात कृत कवित्त-२ तथा सूरदास कृत भजन-१। देशी पत्र-१। खंडित। आकार-६X४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। कुल २१ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३२ से ३८। दो भिन्न हस्तलिपियां में। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्ति-स्थान-जागलू साथरी।
आदि-जभगुरु जगदीश ईस नारायन स्वांमी
निरपषक निरलेप सकल घट अंतरजांमी
अंत-सूरदास भगता के कारण हंस पषांवण आयो हेरी ॥ १ ॥

२७४ सूर-१, ढाल-१। क्रमशः ऊदोजी अडींग और ऊदोजी नण कृत। देशी पत्र, संख्या-२। आकार-८.२५X३.७५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रति-पृष्ठ-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१८-२२। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १६०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।
आदि-सोरठा लुहर की ढाल ॥ गिरधर गोकल आव गोपी सनेसा मोकले ॥
मोह दरसण का चाव। प्रेम पियारे कानजी। टेर॥
अंत-प्रेम मै पागी भइ अनुरागी। हरि सु नेह बधाणी ऐ माय। ५॥
उधोदासा प्रेम प्रगासा। हरि मै सुरत समाणी ऐ माय ६। १०॥

२७५ झगड़ो, पोहकर कृत। छन्द १६। देशी पत्र-२। त्रुटित। आकार-१०X२.२५ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल १०८ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१०-१२। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्ति-स्थान-महंत श्री भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेड़ा।
आदि-॥ अथ झगड़ो लिषते ॥ हरिजन साकट नारि वाता वहोत अडी
कूप षडी पणीयार दोनों झगड़ पडी टेक ॥
अंत-वद जीती मेला मयर पाहकर ख्याल विचार
राम नाम प्रताप ते ए जीती हरिजन न नार १६ ॥

२७६ साखी और हरजस, संख्या-४। जीर्ण और खंडित। देशी पत्र-२। आकार-९X४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-११। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३४-४१। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महंत श्री भोलारामजी, विष्णोई मंदिर, रावतखेड़ा। इसमें ये रचनाएँ हैं-(क) साखी-१, भरथरी संबंधी, कालू कृत। (ख) हरजस-२, क्रमशः भरथरी और गोपीचंद संबंधी, अज्ञात कृत। (ग) हरजस १, गोपीचंद संबंधी चतर-

दास कृत ।

आदि-॥ श्री गणेशायनम राग रामगरी

सुणि हो राजा रांणी कहै वगा महल पधारो

जिन जोगी भरमाईया वाका सग निवारो टेक

अन्त-शब्द सुनत भूपति चल्यो उभी मेलि बगाल

चतरदास अबला कहे कवन हमारा हवाल ७ (।) ४

२७७ साखी और हरजस, सख्या-४। काल्, अज्ञात तथा चतरदास कृत। अपूर्ण। पत्र स० ५। देशी कागज। आकार-८ ७५×३ ७५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-७, ८। अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२४। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १९०० के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।

आदि-राम सत्य ॥ रान धनाश्री ॥

आज नगर में एक जोगी देख्यो बीरा गोपीचद के उणिहार रे लो ॥

इसडा तो जोगी म जाण न दीज। आगणि मदी बधायले रे लो ॥ १ ॥

अन्त-अमर भया ससार में बहु कारिज सारया

कहि काल् पुरुषा तणा गुर ग्यान बिचारा १७।३

दोहा आदि है अन्तै-दह मध्य रहे इक्त ।

२७८ बिश्नोई साधुओं के निधन काल का उल्लेख। देशी पत्र-१। आकार-९×४ इच। हाशिया-नगण्य। कुल १२ पक्तियाँ। अक्षर प्रतिपक्ति १२-१४। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १९०० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी।

आदि ॥ दोहा ॥ समत अठार तेरासियो एकम चेत सुदि शनिवार।

गगारामजी तन त्यागियो पायो मोष दवार

अन्त-समत १९१०० रा आसोज बद ३ तीज ससीवार।

फरसरामजी तन त्यागीयो भेट्या बिसन दवार।

२७९ गोकलजी की रचनाएँ। पत्र सख्या-११। देशी कागज। आकार १२×६ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ १३। अक्षर-प्रतिपक्ति ३७-३९। श्री माहेश्वरामजी द्वारा सवत १९१० म लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री धोंकलराम विष्णुदत्त विश्णोई, दुतारावाली। इसम कवि की ये रचनाएँ हैं-औतार की विगत, छद-४७। (ख) परची, छन्द-३७। (ग) इदव छन्द-३२। (घ) अस्तुति होम की, छद-१०।

आदि-श्री गणेशायनम । लिपत औवार की विगत। गोकलजी के कहे छद।

रिषपति सिधिपति सिलपति सुरपति सदा सहाय।

गति दाता गोविंद सुमरि गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अन्त-आभ थभा किम ऊबरे ॥ जिण रह गिर सागर ओट तर ॥

गोकमजी ताहरो सबु ॥ अधर विराज्यो ईश्वर ॥ ८ ॥ इति श्री गोकलजी का

कह्या । कवत सपूरण । सवत । १९१० वृषे मिती पोह सुध । ४ । सोमेवारे लिखते साध श्री ॥ १०८ ॥ गोवि (द) रामजी का शिष्य साहबराम रामदास म ॥

२८०. साषी-१, छद २७ । केसोजी कृत । देशी पत्र १ । जीर्ण, खडित । हाशिया-नगण्य । आकार ६×४ इच । कुल २१ पक्तियाँ । अक्षर प्रतिपक्ति ४२ ४६ । लिपि-पाठय । सवत् १८७३ मे साधु व हीरामदास द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री भोला रामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा ।

आदि-। श्री विस्नजी । साषी । बरसण दीज देजी मीण तेतीसां भांन
मेलो करि मोटा धणी बोल्ल बिछोहा भांन ।

अन्त-बोलतो केसो कहू इला फरो जुग रेरि २७ ।
लिषतं साध व हीरामदास ॥ सवत १८७३ ।

२८१ जभाष्टक, (सस्कृत) श्लोक-६ । गोविन्ददास कृत, देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-१२×६ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-सवा इच । कुल १७ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति २६ २८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार अज्ञात । सम्भवत साहबरामजी द्वारा अनु मानत सवत् १९१० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-॥ ६ ॥ श्रीमन्महागणाधिपतये नम उँ मुखे, वाद क्षोभ महामन्द हास्य

अन्त-अ लक्षित पठेन्नित्य सब पाप प्रमुच्यते ॥ ९ ॥ इति श्रीमद्गोविन्ददासेन विर चिताया जभाष्टक सम्पूर्णम् ।

२८२ विष्णोई धर्म के कवित्त ३ । ऊदोजी कृत । देशी पत्र-१ । जीर्ण, खण्डित । आकार-८ ७५×३ ७५ इच हाशिया-नाम मात्र की । कुल ११ पक्तिया । अक्षर-प्रति पक्ति-३२-३३ । लिपि-पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, साथरी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णजी ॥ कवत ॥ प्रथम प्रभाते उठ ज जल छाण रे लीज
सजम सुच सिनान सुप हुय नाव् जपीज—

अन्त-आप मरत मरण न रहे हुर हैतात घडे सही
एह धम विस्नोइया तणां विस्न भक्त उधो कही ॥ ३ ॥

२८३ हरिनद के फुटकर छद । दो कवित्त और १ दोहा । देशी पत्र-१ । जीर्ण, खण्डित । आकार-६ ५×४ इच । हाशिया-नगण्य । कुल १३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२१ । लिपि-पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १८५० के आस-पास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि- ॥ कवित् ॥ प्रथम बदरा पवम अठार राम षेड रोसाण

अन्त-भाले कु अकरण रा आई तबवां तणां तमास । २ ॥

२८४ ऊदोजी के फुटकर छन्द । सख्या-२४ । पत्र सख्या-५ । देशी कागज । जीर्ण, खडित । आकार-९×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९-१० । अक्षर-प्रति पक्ति-२७-२८ । लिपि-पाठय । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७१ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-श्री विष्णजी । करणा को अग लिप्यत । सवईया । इक्तिसा । मनोहर छद ।
माया है अपार तोहि पार नही पाव कोय सुर नर नाग परं तु हि भगवान है ॥
अन्त-विडद विचार सुद लीजिय उघदास गुलाम को ॥
दावण पकडी दीन हुय ॥ प्रभु तेरे नाम को ॥ ३५ ॥ (२४)

२८५. जाम्भोजी की स्तुति-१ दोहा, २ श्लोक तथा सरस्वती अष्टक, ८ श्लोक । देशी पत्र-१ । खडित । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इन्च । पक्ति-प्रति-पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३२ । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत संवत् १९०० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-उ स्वस्ति श्री गणेशाय नम श्री सरस्वत्यनम श्री ऋषभदेवाय नम
श्री विष्णवे नम कर प्रणाम कहत हु अभ गुरु जगन्नाय
अन्त-भावातीत त्रिगुण रहित सदगुरु त नमामि ॥ १ ॥

२८६ हरिसद के फुटकर छद । २ कवित्त और १ दोहा । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-६×४ २५ इन्च । हाशिया-नगण्य । एक पृष्ठ म कुल १३ पक्तिया । अक्षर-प्रति-पक्ति-१८-२० । लिपि-पाठ्य । सवत १९५६ मे गणेसरामजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।
आदि- । कवीत ॥ प्रथम वदरा पदम अठार राम पेड रोसाण
अन्त-भलो कुंभकरण रा भाई लखुवा तणा तमासा ।३। इती कवीत सपुरणम् । लीपी गणेसराम माघ हुतारावाली म ॥ मी काती व्दी ४ स १९५६ साल ।

२८७ लूर, कवोजी कृत । छद-९ । मशीन का बना पत्र-१ । खडित । आकार-७ २५×५ इन्च । हाशिया-नगण्य । कुल १६ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-प्रभात । अनुमानत सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-श्री रामजी लीपत लूर टर गोरधर गोकल आव गोपी सनेसो मोकल ।
अन्त-कवो कह करे जोड बरसण दया कर दीजीमै ९ ।

२८८ श्री वीसनु सरुप, गोविन्दरामजी कृत । गद्य मे । मशीन का बना पत्र-१ । त्रुटित । आकार-११ ७५×७.५ इन्च । हाशिया-नही है । कुल २७ पक्तिया । अक्षर-प्रति पक्ति १७ २४ । सवत् १९५० मे लेखक द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि- ॥ श्री गणेसाय नमो ॥ श्री नारायणजी का सरुप ईस भात है स्यांम रग कमल नन
अन्त-तब सोनकादीक बकुंठनाथ को डडवत कर न ऊपरात विदा हो कर चले गये
ईती श्री विसनु सरुप स० १९५० असाढ व्द १३-विष्णु गोविंदराम ।

२८९. साखी, सख्या-५ । केसोजी, सुरजनजी, लालचद और अज्ञात कृत । पत्र सख्या-१० । देशी कागज । जीर्ण और खण्डित । आकार-५×४ ५ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । पक्ति प्रतिपृष्ठ ९-१० । अक्षर प्रतिपक्ति-१२-१३ । लिपि-पाठ्य । लिपि-

कार अज्ञात । अनुमानतः सं० १८५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लालासर साथरी ।
आदि- ॥ श्री जमगुरुदेवाय नमः लिपते सापी साचो सिंवरो सिरंजणहार पार वहर पहलो नऊ ।
अंत-जो हो हम गुर्‌हीं गुर म्हारो पूरो दाता म्हारो गुर्‌हो माफ करावो ।

२९० नवण तथा वील्होजो के २ छप्पय । देशी पत्र-१ । जीर्ण, त्रुटित । हाशिया-नगण्य । कुल २३ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२०-२२ । लिपि-पाठ्य । संकरदास द्वारा सं० १६०० (?) में लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-श्री विष्णु जी श्री रामजी अथ मर्याद लिक्ते ।
विष्ण विष्ण तूं भणि रे प्राणी ॥
अंत-आप सवारथ मन मुघो ॥ कीया कुवधो पापड़ा ॥
वील्ह कहं भव सागरी ॥ वहो आंहि रे बापड़ा ॥ २ ॥
लीपते साध सकरदास १६ ॥

२९१ साखी-२ । केसोजी और वील्होजी कृत । देशी पत्र-१ । खण्डित । हाशिया-नगण्य । कुल २५ पंक्तियां । अक्षर-प्रति पंक्ति-४३-४५ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः सं० १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-श्री विष्णुजी ॥ वुवे वार कोडि सूं कीयो बैकुंठे वास
अंत-वील्ह कहै गति साभलो साधा तणो वयाण १७ ॥
सुण पोहोता सासो गयो मिट गई आवागौण १७

२९२ गायणा सम्बन्धी कविता । छन्द ५ । मशीन का बना एक पत्र । खण्डित । आकार-१०×६.५ इंच । हाशिया-नगण्य । कुल ९ पंक्तियाँ । अक्षर- प्रतिपंक्ति-३०-३२ । लिपि-पाठ्य । (अनेक जगह अक्षर, मात्रादि छूटे हुए हैं) । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।
आदि-ओ३म् जम गुरवे नम दोहा-लिषण २ गुरु सन्त को गाईस गावण को कथा
अंत-दुख गये सुगाई गावण केशों मुख बोलाते हो ।

२९३ उतीस धम । छन्द-८ । मशीन का बना पत्र-१ । आकार-८.७५×५.५ इंच । मध्य कुष्टर । हाशिया-चारों, चारों-१.५ इंच । कुल १३ पंक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२४-२८ । लिपि-पाठ्य । प्रस्तुत रचना एक ही पृष्ठ में है, दूसरे में उसी हस्तलिपि में ६ फुटकर श्लोक लिखने के पश्चात् लिपिकाल का उल्लेख इस प्रकार है -संवत १९४४ मीती असाढ वदी १ लो० स० प० सा० म० शुभ भूयात उ तत्स हरीम । प्राप्तिस्थान-जांगलू साथरी ।
आदि-श्री गणेशायनम उ तीस दिन सूतक १ पाच रितुवती नार २
अंत-जाभजी कृपा करो जहां रो नाम विष्णोई होय । १ । इति गुणतीस धर्म समाप्त

२९४. प्रहलाद चौरत, केसोजी कृत, छन्द ५६६ । रथा यज पुयो रो विचार एवं हानी र

पुन रो विचार। गुटका। फोलियो स०-७४, किन्तु बीच के अनेक पत्र अप्राप्य। अपूर्ण, खण्डित। देशी कागज। आकार-५×६ ५ इन्च। हासिया-दाएँ, बाएँ-आधे से पौन इन्च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८-१०। अक्षर-प्रतिपक्ति-१४ से २०। दो भिन्न हस्तलिपियो मे। लिपि-सामान्यत पाठ्य। सवत १६२५ मे गायणे हणू तराम द्वारा लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री सोहनलालजी गोदारा, चक २६ बी० बी० (श्री गगानगर)।

आदि-दो-०सतर लाष सतजुग हुवो। ओर अठाईस हजार मछ रूपी मोवन ईल लीयो अवतार। ईतो श्री पहलाद चीरत सपूरण समत १६२५ रा वीरषे मीती सावण वदी १० वार बूध लीपतू गायणा हणू तराम वेटा मदरूपजी रा लीपा वतू हरूप वेटा दान रा गाव सीत मध्ये ।

अन्त-प्रथ होली मगाल जीण पुन रो विचार १ पुरव दीसा रो वायरो वाज तो राजा परजा सुप कर २ दीषण दीस रो पुन चाल तो देरभगे दुरभक्ष पड ३ पिछम दीस रो वायरो वाजे तो तीण सपत वढ उन दीस रो वायरो वाज तो धान वधतो होयजो होली रो घु वो आकास न चढ तो राजा गढ छुट जाय इती होली र पुन रो विचार ५

२६५. अल्लूजी के कवित्त-सख्या-३। देशी पत्र-१। जीर्ण, खण्डित। आकार-६ ५× ३ २५ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल १७ पक्तिया। अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२३। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-लालासर सायरी।

आदि-श्री विसजी सरय लीपतु कवत ॥ वैद जोग वराग ॥ योग दीठा नर निगम

अन्त-विसन देव जपत्य हुयो ॥ बल राजा जीमाडीयो ।३॥

२६६ रानो कृत १ भजन, तथा सुरतराम कृत १ हरजस। देशी पत्र-१। जीर्ण एव खण्डित। आकार-६×४ २५ इन्च। हाशिया-नगण्य। दो भिन्न हस्तलिपियो मे। पक्ति-प्रतिपृष्ठ ११,५। अक्षर-प्रतिपक्ति-२५-२६, ४०-४१। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १८८० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री शाकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाले।

आदि-राग भेरो-जा थलीया देवजी भवरा अवतरयो आ थलिया छे गाढो नूर

अन्त-सुरतराम श्री पति को महमा गाव सत पियारा ४। श्री भगवतेवासुदेवाय म।

२६७ वोल्होजी के कवित्त, सख्या-८। देशी पत्र-१। आकार-८ ७५×४ इन्च। हाशिया-नाम मात्र को। कुल ५८ पक्तिया। अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१७। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री शाकलराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली।

आदि- ॥ कवत ॥ वील्हजी ॥ पाप नि कर मति हीण हलति हारिसें जलमतरि

अन्त-वील्ह कहरे भाइयो ॥-वा भलो हो; कित,लाम्पसो ॥ ८ ॥

२६८ पत्रो, हरिकिसनजी री-चौपई ९ और-दोपाश गद्य मे। देशी पत्र-१। जीर्ण,

खंडित। आकार-१X४ इंच। हाशिया-नगण्य। ६६ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-१९। लिपि-पाठ्य। संवत १८७३ में साध हरिकिसनदासजी द्वारा लोहावट मे लिखित। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाला।
आदि-श्री विसनु जी सत्य ॥ लिष श्री सब ओपमां लाइक सत्य धम के सदा नहाइर
अन्त-श्री माहाराज तुम जोग्य ह नयण वाचजो साथ
मूल चूक जो है लिषी छिमा करो सब साध

२९९ गुटका। फोलियो संख्या-१५९। देशी कागज। आकार-४ २५X२ ७५ इन्च। हाशिया-आधा इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-२०। संवत् १९०९ मे किसनदास द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागतू सायरी। इनमे ये रचनाएँ हैं —(क) विष्णु पंजर स्तोत्र (संस्कृत ब्रह्माड पुराणे इंद्र नारद संवाद)। (ख) सबद वाणी। सबद संख्या-१२०, बिना प्रसंग। रतन काया बैकुंठ वासो तेरा जरा मरण भय भाजों १२० इति श्री शब्दवाणी श्री जांभजी की संपूर्ण। (ग) अस्तुत श्री जांभजी की, छन्द-४७, गोकलजी कृत। (घ) परची, छन्द-३७, गोकलजी कृत। (ङ) श्री विष्णु चिरत, छन्द ११०, ऊदोजी अडींग कृत।
आदि-श्री गणेशायनम उं अस्य श्री विष्णु पजर स्तोत्र, मत्रस्य नारद ऋषिनुष्टप छंद
श्री विष्णु परमात्मा देवता अहं बीज सोहं शक्ति
अन्त-सोरठा-हरि अवतार अनंत अनंत चिरत अवगत तणा
गाव मुनी जिन संत वि (म) ल जस भवजल तरण १० (११०) इति श्री विष्णु चिरत उधोदास विरचत संपूरण समत १९०९ रा विरषे मिती भादवा सुदि १३ लिषत साध श्री १०८ मावलदासजी रा चेला किसनदास लिषावतु ठाऊ सगरामजी वास रामडास रा गाव जांभोला मध्ये।

३०० कवित्त-२, अज्ञात कृत (विष्णोइयां को मी गई छूट के संबंध में)। देशी पत्र-१। आकार-८ २५X५ ७५ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल ११ पंक्तियां। अक्षर-प्रति पंक्ति-१८-२०। लिपि-पाठ्य किन्तु अशुद्ध। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।
आदि-श्री विसनजी क० पाट तिर जोधपुर जोधा टीकायत जाणो
अन्त-सूर अजा जसवंत गजा तिण पाट बीजा बगतेसरा २

३०१ पदम भगत कृत-१ आरती, छन्द १०। देशी पत्र-१। खण्डित। आकार-११X५ ५ इंच। हाशिया-बाएँ, दाएँ-एक इंच। कुल १२ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-३४-३६। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।
आदि-आरती। आरती हो जी द्वारका रो राव कृष्ण रुक्मण आरती जी
अन्त-मण पदमइयो जान आरतो आवा र गवण नीवार १० इती श्री आरती संपुरन।

३०२ हरजस-१, छन्द-५ । सुरजनजी कृत । देशी पत्र-१ । आकार-६ ५×३ २५ इन्च। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इन्च । कुल १२ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२१। लिपि-सुन्दर एव सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-लिषते हरीजस ॥ राग आसावरी ॥ अैसा गुर हमार अवधू हींदू तुरक दोया स पारा ॥ टेक ।

अन्त-सुरजनदास विसन क सरनै । सहज रूप समाना ॥ ५ ॥

३०३ भजन-२, नरसीजी और केसोजी कृत, । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-६×४ इन्च । हाशिया-नाम मात्र को । कुल २० पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-३०-३२ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत स० १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-॥ राग सुघरा रो वासो कान्हवो रह्यो दुवारका छाड (नरसीजी)

अन्त-कर करणी केसो कह जावीज उण देस ॥ ७ ॥

३०४ शकर स्तुति, कवित्त-१, अज्ञात कृत तथा वशावली और नवण । देशी पत्र-१ । आकार-८ २५×४ इन्च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-लगभग पौन इन्च । २२ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति २६ ३० । लिपि-सुपाठ्य । साधु हरिकृष्णजी द्वारा अनुमानत स० १८८० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-श्री विष्णु जी ॥ कवित ॥ जटा जूट सिर गग चद्र सेवर चप हुत वह ॥

अन्त-तेतस कोडि वकुठ पहुता साच सतगुर को कल्मों कहियो इति श्री वडी नवण सपूरण १ लिषत साध हरिविष्णु ।

३०५ कबीर कृत आरती-१, हरजस-१ तथा सुरजनजी कृत हरजस-१ । छन्द-७ । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-९×४ इन्च । हाशिया-नगण्य । कुल १६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-३२-३५ । लिपि-पाठ्य किन्तु अशुद्ध । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८५० के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदासजी, आथूणी जागा, जाम्भा ।

आदि-दूसरी आरती बावन सोवा वल धार पधारे हर दवा ॥ २ ॥

अन्त-मन विच करम चरण चित्त धरीय जन सुजन भो सागर तीरीय ७

रात को पाय अधाय क सोवत ॥ काला वस म ।

३०६ पदम भगत कृत ११ छद और विविध राग-रागिनियो म गेय ८ गीत । देशी पत्र-१ । जीर्ण, खण्डित । आकार-१२×६ इन्च । हाशिया-नगण्य । ६६ पक्तियाँ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२२ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८२५ के लगभग लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-॥ श्री विष्णुजी छन्द-पीता वर अर प्रीत ल्याये वसु कीजिय

राजा सवत थट के गावाल गुरु जोईये
अन्त-बजर दरमईया पु उठ बोल्यो कुल को धरम घटाव २
पदम भणे प्रणव पाय लागु भीतम सीता नवाय ३

३०७ ब्रदोदास के भजन, संख्या-५। मशीन का बना पत्र-१। अपूर्ण, खडित। आकार-१२ ५×७ ७५ इंच। हाशिया-नगण्य। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-२३-२५। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-२०। अपेक्षाकृत मोटे अक्षर। लिपि-पाठ्य किन्तु अशुद्ध। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः सं० १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।
आदि-श्री दोहा पुलहे पर्चो पायोया दीनो दीनदयाल
सुरग है दोपायो स्यामजी सता को प्रतपाल
अन्त-अयसो अरज सुणो गोरदारा भगतो पाऊ थारी
अनुपावनी भगती दोजे असी अरज हमारी ६
असी सुण जबसुर बोले सुणलो पीता हमारी सो वर मागो सोई दीनो

३०८ फुटकर छंद-८। अपूर्ण। मुरली-२, मयाराम-१, केसवदास-१ तथा शेष ४ अज्ञात कृत। मशीन का बना पत्र-१। आकार-१३×४ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल ४६ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-१६। लिपि-पाठ्य किन्तु अशुद्ध। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः सं० १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।
आदि-श्री रामजी ॥ राम गुन गायो जीन असे सुष पायो है (-मुरली कृत)
अन्त-जस हो सो कवीजनन म होती कछु न हान

३०९ वंशावली। देशी पत्र-१। खण्डित। आकार-४ २५×४ ५ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल ९ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१६-१७। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-साधु श्री हणूतरामजी, रुन्नली।
आदि-श्री विसनजी श्री जाभजी को चेलो रेडोजी १ रडजी को चेलो मायोजी
अन्त-मनरूपजी का चेला सावलजी पुरोजी ॥ श्री

३१० कवित्त-२, ऊदोजी कृत। मशीन का बना पत्र-१। आकार-६ २५×५ ८५ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल १४ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१३-१६। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-जांगलू साथरी।
आदि-क्वत जोव अ त जल माहे पार गीणती नहीं पावै
अन्त-उधव व अन उधर भवसागर को भय नहो ३

३११ कवित्त-४। गंद्द, रज्जब, ऊदोजी और अज्ञात कृत। देशी पत्र-१। अपूर्ण, खण्डित। आकार-६ २५×५ २५ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल २४ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१७-२१। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री भोलारामजी, विष्णोई मन्दिर, रावत-

खेटा।

आदि-श्री विष्णु मत सही ग्रथ कवित नव ढोक्लो तोय सर्वहि येत पिलाव (-गह्)

अन्त-यू साधु भक्त न छाड़हो जो दुप पड़ै अनेक २ (-ऊदोजी)

३१२ कवित्त, सवैए-२३। रचयिता-वील्होजी-१८, मधुसूदन-१, अज्ञात-१, ऊदोजी-३। मशीन के बने ६ पन्ने। आकार-८ २५×५ २५ इंच। हाशिया-नाम मात्र को। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पंक्ति १८-२४। लिपि-पाठ्य। लिपिकार अज्ञात अनुमानत सवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी।

आदि-ग्रथ कवत उ विष्णुवे नम उ धर्म कीया सुप होय लाछ लिछमी धन पावै ः

अन्त-उधव वं अन ऊपरै भवसागर भरमै नही ॥ २३ ॥

३१३ देसी कागज। प्राप्त पत्र सख्या-५। अपूर्ण। चौथा तथा छठे के पश्चात पत्र नही हैं। आकार-९×४ इंच। हाशिया-दाएँ बाएँ पौन इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-८। अक्षर-प्रति पंक्ति-२५-२६। लिपि-सुन्दर, सुपाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी। इसमे ये रचनाएँ हैं - (क) मगलाष्टक-केसोजी कृत, छन्द २८। (ख) दस अवतार (अपूर्ण)। (ग) कृष्णार्जुन सवादे विष्णु अठाईस नाम (सस्कृत)-७ श्लोक। (घ) पच्चीस नाम, विष्णु के। (ङ) चौजुगी (अपूर्ण)।

आदि-श्री जभेश्वरायनम ग्रथ मगलाष्टक लिषत श्री गुरनपति कुलपति देवन पति गोविंद देवतान पति ब्रह्मा सापन पति सकर १

अन्त- सभा तो रुपवां वरो तो रामचन्द्र कन्या तो सती सीता ब्राह्मण तो वासिसट मुनि वेद तो जुजरवेद पढते गुणते सामीजी हमे त ।

३१४ पुस्तिका। प्राप्त पन्नो की सख्या-१२१। मशीन का बना कागज। अपूर्ण, जीर्ण, खडित। आकार-८ ५×५ २५ इंच। हाशिया-नगण्य। पंक्ति प्रतिपृष्ठ ५ से १७ तक। लिखावट प्राय भद्दी, बहुत से स्थलो पर दुष्पाठ्य। सवश्री रामदासजी, गणेशराम जी, तिलोकदासजी तथा अनेक अज्ञात व्यक्तियो द्वारा समय समय पर लिपिबद्ध। लिपिकाल-सवत १९४४ से १९६०। प्राप्तिस्थान-जागलू सायरी। इसमे अनेक जाम्भाणी तथा अन्य कवियो की फुटकर रचनाएँ हैं, जिनमे ये उल्लेखनीय हैं - (क) गोविन्दरामजी के छन्द-७। (ख) साहबरामजी के भजन-१०। (ग) श्री रामदासजी का पत्र-सस्कृत व्याकरण नियम-लेखन, सवत् १९४४ मे। (घ) अमर चालीसो, छन्द ४३, साहबरामजी कृत। (ङ) आरती-१, साहबरामजी कृत। (च) पदम भगत कृत कृष्ण रुक्मिणी विवाह सबधी भजन। (छ) धुन, गगादास कृत।

३१५. रज्जबजी के कवित्त ४, केसोदासजी के सवये ५, तथा भजन १ अज्ञात कृत (अपूर्ण)। देसी पत्र-१। जीर्ण, खण्डित। आकार-११ ५×५ ७५ इंच। हाशिया-नगण्य। कुल ३१ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपंक्ति-४२-४६। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १८२५ के लगभग लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामड़ावास।

आदि–लीयतु कवत ॥ मत मुराल मदुरिस वाय वणराय पिछांण ।
अन्त–वहो वचन मोठाइ मेवा हसि हसि दे गोरषारो
म्हो राए कुण सुध कहिऐ ले ला मधकारो ॥ ८ ॥ आज

३१६ वील्होजी के कवित्त, संख्या–१४ । देशी पत्र–१ । जीर्ण, खंडित । आकार–११ ५X ५ ५ ३ च । हाशिया–नगण्य । कुल ३१ पंक्तियाँ । अक्षर प्रतिपंक्ति ४८–५० । लिपि–पाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानतः संवत १८०० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्ति स्थान–महन्त श्री रामनारायणजी, रामड़ावास ।
आदि–श्री विसनजी कवत–धम कीया सुध होय लाछ लीछमी धन पाव
अन्त–भलो वषाण आपको पराइ पु णी क्ह
वील्हा विरतो ना भलो सण कीयों बु णों दह ॥ १४ ॥

३१७ कलस, पाहल, विवाह पद्धति । अपूर्ण । देशी पत्र–१ । खण्डित । आकार–१० २५X ४ २५ इंच । हाशिया–नाम मात्र को । कुल २४ पंक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–४३–४५ । लिपि–सुपाठ्य । लिपिकार अज्ञात । अनुमानतः संवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–लालासर साथरी ।
आदि–तेरीर्जा करी ॥ संतान की वेर्जा करो ॥ आई बलाइ दफ करी ।१ । टेर ।
वार लाष छराणव हजार त्रेता जुग प्रवाण
अन्त–थिज नार जाय जादू । बीज नी कवि जनरा । मोरी क मोरा । नय षप
बोहो हलाली सुकर ।

३१८ रदास कृत साखी–१, (छन्द ४) तथा फुटकर दोहे–४ । देशी पत्र–१ । यह तीसरा पत्र है । आकार–८ ५X४ २५ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इंच । कुल १८ पंक्तियाँ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–३१ ३३ । लिपि–पाठ्य । लिपिकार अज्ञात । अनुमानतः संवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–साधु श्री हणुतरामजी, रड़कली ।
आदि–दास कहै विणजारा त जलम ल्योयो ससार वे १ कूज पहर रण क विणजारीया
अन्त–हुता न सरव (र) घणा वास घणी भवरा सुगणा न साजन घणा देस बसे गया ४ ॥

३१९ पुहू पतीस की, लूर तथा २७ सुगाइयां की पुहू, अपूर्ण । देशी पत्र १ । आकार ८ ५ X४ २५ इंच । हाशिया दाएँ, बाएँ–पौन इंच । कुल २२ पंक्तियाँ । अक्षर–प्रति पंक्ति–३२–३५ । लिपि–पाठ्य । लिपिकार–अज्ञात । अनुमानतः संवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–साधु श्री हणु तरामजी, रड़कली ।
आदि–श्री विसनजी सत्य ॥ लीष्यतु पुहू पतीस की ॥ हू मैं भावु की पुहू ॥ अथ पोल्हरी की पुहू
अन्त–धोरी गोदारी ॥ १७ । आल्हो जांघुव ॥ १८ ॥ चीयो सोहवो ॥ १९ लाहू वरी २० ।

३२० पत्र संख्या–१०, तीसरे से बारहवें तक । अपूर्ण । देशी कागज । अत्यन्त जीर्ण, खंडित आकार–५ २५X३ ७५ इंच । हाशिया–नगण्य । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–७–८ । अक्षर–

प्रतिपक्ति-१५-१६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानतः संवत् १९०० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-साधारणतः पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसम में रच नाएँ हैं —(क) साईदोन के सवये-१३ (सख्या ६ से १८)। आदि में कुछ छन्द अपाठ्य । (ख) दोन दरवेस की कुडलियां-६ । (ग) हींडोलणो, हीरानद कृत-छन्द ७ । (८ वा अपूर्ण ।
आदि-(जीव पे) ट के सुल भुल गय मु इ पेट के काज भटकता है (६ वा छन्द)।
अन्त-मुजा सुरजन आलम केसो ग्यान का परवेस
चवण रायचद जसा पचायण सबद का आचा ।
१२१ साखी-१५, केसोजी, सुरजनजी, भीमराज, रायचद, ऊदोजी, गुणदास एव अज्ञात कृत तथा प्रभु नामावली (सस्कृत)। पुस्तिका । प्राप्त पन्ना की सख्या-२३ (३ से २५)। अपूर्ण, खडित । देशी और मशीन के बने कागज । आकार-६ ५×५ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१७ । लिपि-सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १९२५ के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री गोपालदासजी, आमूणी जागा, जाम्भा ।
आदि-सत जांणो ३ रे मन जाई सहज (राहा) ई वथा पयी नहि कीजे । (-केसोजी)।
अन्त-जगनाथ जग जाड्य विनाशन आमदनि घत ज्योति स्तवये जल नापि ॥
१२२ ककरा बतीसी, ऊदोजी कृत । कुडलिया-३६ । पुस्तिका । मशीन के बने कागज । आकार-६ ७५×४ इच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इच । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१८ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९२५ के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।
आदि-ओं श्री जभ गुरुभ्यो नम अथ ककरा बतीसी कवीत कुडलीया ॥
कका केवल विष्ण भजो हुव धर विस्वास
अन्त-जभ गुर आधार उर मै सत सब सिर रे वेसू
सकीय लग सब भया सपूरणां कह्या कुडलीया कक ॥ । इती ।
१२३ साखी-४ । हरजी, साहबरामजी तथा अज्ञात कृत । पुस्तिका । मशीन का बना कागज । आकार-८ ५×५ २५ इच । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१९-२० । अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१६ । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-अशुद्ध और घसीटी, साधारणत पाठ्य । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री भोलारामजी, विश्णोई मंदिर, रावतखेडा ।
आदि-श्री परमेसरजी अथ साखी लीपतु मनो
मन सो वुरो न कोय सोच शकर सतावीयो,
पारबती पत सोय ॥ ध्यान अटारभ थापोयो २
अन्त-भभकार पकड पसारीयो चोक मे
नें जाण है जुग ससार रे सायर भम सग रमे सपुरण ।
१२४ गोत्राचार तथा होम के सबद-६ । १० पन्नो की पोथी । देशी कागज । आकार-

६×६ ७५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-१ इ च । पक्ति प्रतिपृष्ठ १२-१३ । अक्षर-प्रति पक्ति-१२-१३ । लिपि-पाठ्य । श्री गणेशरामजी द्वारा सवत् १६८० मे लिपिवद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री घोक्लराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली ।

आदि-लीपते गोतराचार उ जदु वास रपु पुजत र साम मीघु - गुणे नीघु आकार पुतरु

अन्त-रावण मत तो पडवे रायां ज्यू रावे पांन बनासपती ६ सबद सपुरणम सबद होम का पूरा हुवा लीपीकृत बाबा साहबरामजी का पुत्र गणेसराम पठणाअरथे सेर यापन म लीप्या सनद रहै मी० पोह सुनी १४ स० १६८० हाय पाव कर कुबरी नीच मुख अद नन इन कसटा पोथी लीखी नीके रयोयो सैन वाच जोस कु नीवण

१२५ गुटका । फोलियो सख्या-८१ । मशीन का बना कागज । आकार ६ ५×४ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२१ । लिपि-स्पष्ट एव सुपाठ्य । विष्णोई प्राणसुख द्वारा सवत १६१६ मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं -(क) नवण । (ख) विष्णु पजर स्तोत्र (सस्कृत, श्लोक-२५, ब्रह्माण्ड पुराणे इन्द्र नारद सवादे)। (ग) सबदवाणी, सवद सख्या-१२०, बिना प्रसग । भलीयो होय तो भल बुद्धि भाव ॥ बुरीयो बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शब्दवाणी श्री जाभजी की सपूरण ॥ १ ॥ सवत १६१६ रा वृपे मिती कातिक वदी ६ लीपी कृत विष्णोई प्राणसुख नगीने वाला ॥ (घ) मगल का ।

आदि- ॥ उ श्रीगणेशायनम ॥ लिपत नौरा ॥ उँ विष्ण विष्णु तू भण रे प्राणीं ॥ साधे भवते उपरणीं ॥

अन्त-भगवान भवतां भाजवा महर पधारे महमाण १ । इति मगल का सपूरणम १ ।

१२६ गुटका । फोलियो सख्या-४६८ । देशी कागज । आकार-६×४ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर-प्रति पक्ति-१६-१६ । लिपि-सुन्दर और सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध । बीच म कई पृष्ठ रिक्त हैं । प्राप्तिस्थान-जागलू सायरी । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) सबदवाणी । सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग । भलीयो होय तो भल बुधि भाव ॥ बुरीयो बुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शब्दवाणी श्री जाभजी की सपूरण ॥ (ख) पाडव गीता (सस्कृत), श्लोक १६३ । (ग) श्री भगवदगीता (सस्कृत), १८ अध्याय । (घ) एकादशी महात्म्य-२६ अध्याय । चौपद्या म । इति एकादशी री कथा सपूरण ॥ ॥ (ङ) जन्म अष्टमी की कथा, चौपई-३१ ।

आदि- ॥ द ॥ श्री गणेशायनम ॥ अथी शब्द वांणी श्री जाभजी की लिषत ॥ उँ गुर चीन्हों गुर चीन्हि पिरोहित गुर मुखि धम बखांणीं ॥

अन्त-एक जन्म अष्टमी व्रत करावे ॥ चोवीस ग्यारस को फल पावे । या विधि रांम कृष्ण ने कहे ॥ निरखे कु बनवर मे है ॥ ३१ ॥ इति श्री

ब्रह्म ड पुराण ब्रह्म नारद सवादे जन अष्टमी कथा सपूर्ण । यह पुस्तक साधु जीया रामजी री छ दसकत साधु मगलदास रा छ।

३२७ रुक्मणी मगल, पदम भगत कृत । प्रत्येक राग रागिनी के अ तर्गत आए छ दो की म० पृथक् पृथक् है । पत्र सख्या-८३ । अपेक्षाकृत मोटे देशी कागज । आकार-११×५ ५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१० । अक्षर-प्रतिपक्ति-२६-३० । लिपि-पाठ्य किन्तु बीच मे कई पत्रो के आपस मे चिपक जाने से अपाठ्य । श्री साहबरामजी द्वारा सवत १६३५ मे लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी ।

आदि-श्री विष्णजी श्री रामच द्रजी नम अथ श्री प्रदमईया कृत रुक्मणी मगल लिपत

दोहा-ससार सागर अथाग जल ॥ सूझत वार न पार ॥

गुर गोबिद कृपा करो ॥ गावा मगलचार ॥ १ ॥

अन्त- जो मगल कू सु न गाय गु नहै बाज अधिक बजाय

पूरण विष्ण पदम के स्वामी मुक्त भवत फल पाय ५ ॥ १९२ ॥ ईती श्री पदम ईया कृत रुक्मणी मगल सपूर्ण १ समत १६३५ रा वष मीती भाद्रवा व्द ४ वार आदितवारे लोपीकृत साध श्री १०८ श्री म्हतजी श्री आतमारामजी का सिष साथबरामेण गाव फीटकासणी मेघे विष्णुजी के मीदर म जीसी प्रीत देषी तसी लिषी मम दोस न दीजीये—हाथ पाव कर कुबडी मुष अरु नीचं नैन । ईंन कष्टा पोथी लीषी सुन मीके रापीयो सेन सुभमस्तु कल्याणमस्तु विष्णुजी । (भिन हस्तलिपि म) प्रीत ब्यावली श्री किसन रुक्मणी रो मगलाचार री पोथी साद गोबिंददास विष्णु बईरागी की कोई उजर करण पाव न्ही ॥ साद रुपराम बिसनोइया रा कना सु लीनी छ गाव रामडावास रा छ ।

३२८ हींडोलणो, हीरानद कृत । छ द-८ । देशी पत्र-१ । खण्डित । आकार-१० ७५× ५ ५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच । कुल २३ पक्तियाँ । अक्षर-प्रति पक्ति-३०-३३ । लिपि-सु दर एव सुपाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । डोली गाव (जोधपुर) से श्री महीरामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त ।

आदि-श्रीराम सत स कामण चली हीडोलण गाव आल आल । जभ अचभो न गावही

अन्त- चदण रायचद जसा पचाय(ण) सबद का उ आचार

हीरानद की अरज सेती सगत पार उतार ८ ।

३२९ कथा महदाणी, ऊेल्ह कृत । अपूर्ण । मशीन का बना कागज । प्राप्त पत्र सख्या-२२ । जीर्ण, खडित । आकार १= ५×५ २५ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ एक इ च । पक्ति प्रतिपृष्ठ-११ । अक्षर-प्रतिपक्ति--२८-३० । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १९५० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान डोली गाव (जाधपुर) से श्री महारामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त ।

आदि-श्री विष्णजी ॥ सत सही ॥ लिपत कथा महदाणी ॥ राग धनासी ॥

पणउ गुणोउ गुणों गहीर ॥ मुस चेड फरस जो कर ॥
को को दोष वि यांयक हूर ॥ १ ॥

अन्त– रे मंन जगत सुपनो जाणि ॥ ओ ससार विकार परहर सिवर सीरजणहार ॥
राग घोवल । चोयपहर रो विचार अणदकुवरो सुहणौं सह । नीस दीन अ धारो
रात ॥ ईंद्र भुवण औवचाट हुव ॥ ईंद्र देव ।

३३० पत्र सख्या–७३ । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । आकार–१० ७५×५ ५ इंच । हाशिया–दाएँ, बाएँ–सवा इंच । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–९ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–२६–२८ । लिपि–सुन्दर एव पाठ्य । सवत १९३६ म रावलदास द्वारा लिपिबद्ध । डोली गाव (जोधपुर) से महीरामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) कथा लोहापागल की, केसौजी कृत । छद १३२ । (ख) कथा सत जोषाणी का, केसौजी कृत । छद–१०६ । (ग) कथा जैसलमेर की, वील्होजी कृत । छद–१४६ । (घ) चत्रामणी, सुरजनजी कृत । छद–३१ । (ङ) ग्यान माहातम, सुरजनजी कृत । छद–२०१ ।

आदि– ॥ श्री विनजी सति सही लीपतु कथा लोहापागल की ॥ राग हसौ ॥ दुग-
नीरहारी पहली मीउ ॥ उरि मेटो अपराध ॥
सीधष सीरजणहार ने ॥ जीह सोमरे सुर साध ॥ १ ॥

अन्त– जन सुरजन की वीनती ॥ अरज कह लिव लाय ॥
पाच साता नव बारहा ॥ इन के मोही मिलाय ॥ २०१ ॥ ईति ग्यान महातम सपूरण ॥ समापत्ता ॥ समत १९३६ का मीती मीगसर सुद ५ पचमी वार वहस्पति । लिपिकृत श्रीमाली ब्राह्मणो रावलदास ॥ जोधपुर नगर ॥ पठनारथ ॥ सा गगा दासजी चेला मोतीरामजी का ॥ + + + यह वात इण मीरोष मे कही है के पुसतक सु इतनी चीज आगी रापणी एक तो तेल १ दुजो जल २ और मुरष के हात नही देवणी पुसतक ॥ १ ॥ वाचे जीण न राम राम वचसी ।

३३१ कक्का छतीसी, ऊदोजी कृत । कुडली–३७ । पत्र सख्या–९ । अपेक्षाकृत मोटा देशी कागज । खण्डित । आकार १४×५ ५ इंच । हाशिया दाएँ, बाएँ–डेढ इंच । पंक्ति प्रतिपृष्ठ–७ । अक्षर–प्रतिपंक्ति–३०–३३ । लिपि–सुन्दर एव सुपाठ्य । सवत् १९४० म साधु मतोषदासजी द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–जागडू सायरी ।

आदि–उ श्री गणेशायनम अथ कक्का छतीसी प्रारभे ॥
ऊँ कका केवल कृष्ण भजो हिरद धर विश्वास ॥
आन भरोसा छाड दे ॥ राख राम की आस । २ ।

अन्त– अक्षर पतीसो ऊपर ॥ कवित छत्तीस विचार ॥
उदय बरष चौरासियो । कहि सवत अठार । ३७ । इति । श्री । उदवराम कृत कका । छतीसा सम्पूर्णम् ॥ सवत् १९४० मिति आश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ दशम्याम् बुधवासर ॥ लिपाकृतम् । साधु । श्री १०८ । महाराज बालकरामजी का शिष्य सतोषदासजी लिखा ग्राम रलावडे मध्य श्री ॥

३३२ हरजस २८। मीरां–५, सूरदास–४, रामप्रताप–१, दयाल १, बखतावर–३, बखना १, अज्ञात–१, रदास–२, नामदेव–१, लाल्दास–३, कबीर–३, रामदास–१, सतदास–१ तथा ध्यानदास १। पत्र सख्या १४। देशी कागज। आकार–८ २५×३ ७५ इ च। हाशिया–दाएँ, बाएँ–पौन इ च। पक्ति–प्रतिपृष्ठ–८। अक्षर–प्रतिपक्ति–२१-२३। लिपि–पाठ्य। लिपिकार–अज्ञात। सवत १८८६ म लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान–पीपासर माथरो।

आदि–श्री विसनजी राग बहग ॥ एकर सु सुप बोल रे मेरे प्यारे हो जोगी टे० सौंतो नाव भमुत का बटवा मू द मलो दिरग बोल रे मेरे प्यारे हो जोगी (मीरा)

अन्त–वेद पुराण सास्त्र कह् हरजन कह्त वजाय

जती सती सिव सेस कह ध्यानदास लिवलाय १३ इति श्री ग्र थ हरजम सपूरण वर्षे मीती मगसर सूदी समत १८ रा ८६ गाव वावी मधे म वाच विचार जिसकु राम राम।

३३३ गुटका। फोलियो सख्या–१४२। बीच के कई पन्ने अप्राप्य। जीर्ण, खडित। देशी कागज। आकार–८×५ ५ इ च। अनेक लिपिकारा द्वारा लिखे जाने के कारण पक्ति प्रतिपृष्ठ और अक्षर–प्रतिपक्ति में एकरूपता नही है। हाशिया–किनारो पर–१ इ च। सवत १७१०० (१७००) (छ) से १६२३ (ञ) तक की लिपिबद्ध रचनाम्रो को एकत्र कर सिलाई किया गया है। लिपि–सामान्यत पाठ्य। प्राप्तिस्थान––श्री भागी (सुपुत्र श्री चोख्या वणिहाल), गाव ढाणी ग्वासा महाजनान, पो० किरमारा (तहसील फतहाबाद, हिसार)। इसमे ये रचनाएँ हैं –(क) लघु चणाइक्य राजनीत सास्त्र, ८ अध्याय (सस्कृत)। (ख) गरभ चितावणी–रामचरणजी कृत। छ द १२८। (ग) देवियो कृत १ सवया, फुटकर दोहे–४। (घ) लुकमान हकीम की कही न्याय नसीयत (अपना बेटा कू)। वर्चानका शली म ८५ नसीहत। (ङ) देवीदास रा कवत राजनीत रा। कवित्त–१६। (च) फरीदजी माहाराज को कह्यो काफर बोध। गद्य पद्य में। समत १९१५ रा वसाप सुदि ३ लिष्त माध मल्पदास (छ) सबद जोगारभ का। इसके अ तगत इन कविया के पद या भजन हैं–गिर–२, लालदास–४, कबीर पद–८, सदए–२, गोरख–१, रामदे–१, लिछमण–१, सोनी अयो–१, अज्ञात–१, लियमो १, अज्ञात सवए–२, कमाल–सवया–१, नामदेव की साषी–१, गुरुदेव परताप सु दास नामा कहै मुगत क दम की रीफ पाया ॥ १ समत १७१०० स (१७००) रा ग्रमाड छ १३ ॥ नीसाणी हरीया की सत की ॥ (ज) हरीया की नीसाणी–१ (लिपिकार के अनुसार सख्या २ है)। (झ) अज्ञात कृत ख्याल–१,–साषी–१। मोर की कु डलिया–३, धरमाल–अज्ञात कृत–४ छ द। (ञ) बमेक वारता री नीसाणिया, केसोजी कृत–नीसाणी–२९। इति श्री बीमेक वारता री नीसाणीया सपुरण समत १६२३ रा भादवा सुद १० वार बुध–पोथी वीसनोई पुमजी री छे सोमन मे लीपी छे। (ट) गिरधर की कु डली १। (ठ) उपदेस की नीसाणी १ कवि आलम कृत तथा अज्ञात कृत–१ पद। (ड) रामदास की साखिया। सख्या नही दी है। (ढ) बवुतो (भभूती) मन्त्र,

जालमगरजी का सवया–१। (ग) कमाल, बखेदास, तुलछीदास, साँईदीन के एक एक सवए। दीनदरवेस–कुंडली–२, लालगुलाम–१, कवित, कबीर का रेखता और दोहे, जन आतम, नाथूराम तथा अज्ञात कृत फुटकर दोहे। (त) गोतराचार, पाहल। (थ) विभिन्न मंत्र–नागफणी ल्योट कापीद का मंत्र, धूणी का मंत्र, बभुती का मंत्र। (द) करमरेपा की पहचाण। समत १९१६ रा वसाक ब्द ७। हरजस फुटकर अज्ञात कृत। (ध) भुल को लछन, अज्ञात विष्णोई कवि कृत तथा फुटकर दोहा सवया। (न) गुण-तीस धरम कथन। (अपूर्ण)। १८ दोष (सवद–के तू कारण किरीया चूक्यो––)। (प) मरसीजी का भजन–१, इन्द्रजाल तन विद्या मानस–(संस्कृत)। नीपोथन वाल-नोई पगारो-समत १९१५ रा मीती चत सुद १० गाव राणासर। (फ) कथा धूना री लावणी, भवानीसींग कृत, ६ छन्द। (ब) सरोदो, चरणदासजी कृत, छन्द–२४०। (भ) श्री रामचरणजी की वाणी अणभ–स्तुति का कवित, ग्रंथ गुर महमा, २५ छन्द। ग्रंथ नाव प्रताप (अपूर्ण), ५४ छन्द।

आदि–श्री गणेशायनम ॥ अथ चरणायका लिष्यते ॥
    प्रणम्य शंकर देव ॥ ब्रह्माण च जगदगुरु ॥ विष्णु प्रणम्य सिरसा ॥
    वक्ष्यामी सास्त्रमुत्तम ॥ १ ॥
अन्त–हिरदा सूं ले धरणी गई ॥ नाभ कंवल म चेतन भई ॥
    सबद गुंजार नाड सब जागै ॥ रूम रूम सीतल सो लागै ॥ ५४ ॥
    नौ स नारी मगल गाव ॥ सा मधि (–रामचरणजी कृत ग्रंथ नाम प्रताप)।

३३४ गुटका। अपूर्ण। फोलियो सख्या–१४२ (११६+२+१३+३+५)। किनारे खण्डित। देशी कागज। आकार–७ २५×५ इंच। हाशिया–किनारों पर पौन इंच। पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–६,११। अक्षर–लगभग प्रतिपंक्ति–१६–२१, १४–२०। बिहारी दास तथा अज्ञात लिपिकारों द्वारा संवत् १९३० में लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्ति स्थान–जागलू साथरी। इसमें ये रचनाएँ हैं –(क) सबदवाणी। सबद सख्या–१२०, बिना प्रसंग। भलीया होय तो भल बुध आव। बुरीया बुरी कुमाव ॥ १२० ॥ इति श्री सबदवाणी सपूर्ण। (ख) विष्णु सहस्र नाम। (ग) विष्णु पंजर स्तोत्र (संस्कृत)। (घ) रुकमनी मंगल–रामलला कृत। फो० ८५–११६। विविध राग-रागिनियों के अन्तर्गत छं० सं० पृथक-पृथक है। इति श्री रामलला कृत रुकमनी मंगल समाप्त सवत १९३० मिति पोह बदी ६ लिखत बिहारीदास। (ङ) फुटकर साखियाँ–जाम्भाणी (अपूर्ण)। (च) अमावस्या की कथा, मयाराम कृत। छन्द १४१। (छ) साखियाँ–६, जाम्भाणी। केसोजी–२, ऊदोजी–१, दामोजी १, मीवराज–१, और रिवदास कृत।

आदि–(तो) कन मोहा। अति सुरसांणी छोजत लोहा पांणी। छल तेरी लाल पंचाला। सतगुर तोड मन का साला ॥
अन्त–धन्यो मरसो पव बुरसो काहा सु कर सनेह वे
    जन रिवदास कहै (जिण) जारा तरो चाहर क्यों देह रे ४ (६)।

३३५ गुटका। प्राप्त फोलियो सख्या-६६। अपूर्ण, खडित। मशीन का बना कागज। आकार-८×५ ७५ इच। हाशिया-आधे से पौन इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-एकरूपता नही है किन्तु साधारणत ११। अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२४। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १९५० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-प्राय पाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी। इसमे इन कवियो के हरजस, भजन आदि हैं —कान्हडदास, चद्रसखी, मीरा, तुलसीदास, रामसेवक, कृपाराम, नानकदास, रामचरण, लालदास, विष्णुदास, सूरदास, खेमदास, हरिदास, पूरणदास, कबीर, बखतावर, रामसरण, तानसेन, हरिराम, सेवादास, कालूराम, गगादास, केवलदास, जन रिवदास, बुधरमल, चरणदास, जमलदास, सहज, रसिकनाथ, नागरीदास, साईदीन, सुरतराम, पोकरदास, (भजन १ तथा मुगरी मुगरो को अगडो), रामराय, औघड, दयाराम, मुरारीदास, नामदेव, माधोदास, नरसी, अनेक अज्ञात कवि तथा पदम भगत (कृष्ण रुक्मिणी विवाह सबधी)।

आदि-(फो० ७ के द्वितीय पृष्ठ के नीचे से)—

जल कसे भरू सरजू गहरी सनमुख राजा रामजी खडे (टेर)
अवधपुरी सों चली मेरी सजनी हाथ घडा सिर पर इडुरी १
अपने अपने भवन सू निकसी कोउ स्यामल कोउ गोरी वरी २। (-रामसेवक)

अत-कामण मिलकर कामण गाव करण कवर कु सुप उपजाव
सेस सहस मुप पार न पाव जगन हेत नर विरत दिपावे
पदम भगत तुमरो जस गाव बास बकु ठ, नहीं आव ६। (-पदम)

३३६ गुटका। देशी कागज। पत्र-सख्या-१०। आकार-६ २५×४ इच। हाशिया-नगण्य। कुल १७ पक्तिया। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-८। अक्षर-प्रतिपक्ति-१३-१४। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-ब्रह्मानदजी तथा अज्ञात। सवत १६५८ और उससे पूर्व लिपिबद्ध। डोली गाव (जोनपुर) से श्री महीरामजी धारणिया (सगरिया मडी) को प्राप्त। इसमे ये रचनाए हैं -(क) जाम्भोजी, विश्नोई पथ तथा २९ धर्म नियमों सबधी विशेष विशेष ज्ञातव्य। (ख) भगव रो जाप (मत्र)।

आदि-श्री जभ गरुभ्योनम ॥ ईस बीसनोईया के होन का नीमित ॥ और देसा और गावा ॥ मार अवतारी के माता पाना ॥ और ओतार लैने की अमुतरा ॥

अत-इड कमडल विरमा दोनी ॥ सदा सोव दोनी झारी ॥
भगवा वसतर विसनु दीना वीचरो वीरमा चारी इती मत्र सपूरण ॥ १६५८ माह वदी १३

३३७ श्री जभेश्वर जनम कथा, किसोरीलाल कृत। (अपूर्ण)। पुस्तिका। मशीन के बने ८ पन्नो का। आकार-८ ५×६ इच। हाशिया-नगण्य। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१६-१७। अक्षर-प्रतिपक्ति-१८-२२। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत् १९८० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-भीयाराम विश्नोई, सदलपुर (हिसार)।

आदि-श्री जभेश्वर जनम कथा दोहा नासे विघ्न समुल ते श्री गणपति को नाम

जां चितवन विन होत नां देवनहु का कांम
अन्त-नसि ने ध्यांन लगावे फल ईच्छा पुण पावे छद कहे कोसोरोल करे जजाल हे
पुसहाल म ति मोल भात भराये जो करे ॥ ४ ॥

३३८ पुस्तिका । फोलियो सख्या-१५ । मशीन का बना कागज । आकार-८ ५×५ २५ इ च । हाशिया-नाम मात्र को । भिन्न हस्तलिपियो म होने से प्रतिपृष्ठ म ६ से १२ तक पक्तियाँ तथा प्रतिपक्ति म १२ स २४ तक अक्षर । लिपि-प्राय पाठ्य । फो० ८ पर दसक्त तालोकन्सास र हाथ रा छ समत १९५८ मीत फगण सुन्त १४ लिखा है । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) पदम कृत कृष्ण-रुकमणी विवाह सम्ब धी पद । (ख) फुटकर रचनाएँ-कबीर, तुलसीदास, पदम के हरजस, साहबरामजी का १ छप्पय तथा रायचद कृत १ साखी । (ग) शकर कृत १ भजन ।
आदि-श्री जभगुरुवेनम दोहा-हरिबुध हरिदास सों ॥ कहो देस री बात
आनद थांरो राई रुकमण कहो कुसलात १
अन्त-तार पहु च गया धुर नदन में सब बसतु है इस फवन में ॥
कहेता ग्यान नीता के ॥ सक को टेक भोलसी है ५ ॥

३३९. रुकमणी मगल, पदम भगत कृत । विभिन्न राग-रागिनियों के अन्तगत छद सख्या पृथक पृथक है । पुस्तिका । अपूर्ण । जीर्ण, खडित । (पृष्ठ २५ से २३८ तक)। आकार-६×७ ७५ इ च । हाशिया-नाम मात्र को । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१७ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१९ । स्वामी ब्रह्मानदजी द्वारा सवत १९५८ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।
आदि-पाच सहस्र हस्ती श्रृ गारा सात सहस्र केकाणो
सोवण साज बणी अति सुन्दर हीरा जडित पीलाणो २ (पृष्ठ २५)
अन्त-दन २ पुत्र एव २ कन्या तरुणी यह चव दीनो
निराकार निरलेप निरजन यो रग माया भीना ३
अपनी २ पोल निरन्तर भजन करत हैं नारी पदम स्याम सुखदायक नायक ।
(पृष्ठ २३८)

३४० पुस्तिका । पृष्ठ सख्या-५८ । मशीन के बने कागज । आकार-५ ७५×६ ७५ इ च । हाशिया-नगण्य । पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१२-२५ । अक्षर-प्रतिपक्ति-१०-१५ । लिपि-पाठ्य । मगे गोदारे द्वारा सवत १९९३ म लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-साधु श्री मिठा रामजी महाराज, गाव गुडा (जोधपुर) । इसम ये रचनाएँ हैं —(क) वीष्णु चरीत, ऊधोजी कृत । छन्द सख्या-११० । ईती श्री वीसनुचरीत सपुरणम् ॥ समत १९९३ रा जेट व्द १२ ने । (ख) जभ स्तुति-अज्ञात कृत । छ द ५ । (ग) साखी-१, साहब रामजी कृत । (घ) वनानाथ के भजन-८ । (ङ) अचलुराम की कु डलिया-२ तथा हरिया, सुखराम और हरिराम कृत भजन ।
आदि-॥ उ ॥ श्रा वीष्णुवेनम ॥ अथ वीष्णु चरीत लीषते ॥

चौपाई ।। श्री गुरु सत चरण सीर नांउ ।। अज्ञा होय वीष्णु जस गाऊ
महावीष्णु के चरीत अपारा ।। सुर नर मुनी जन लहे न पारा । १ ।
अंत–नाभी नगर नागणी जाणी ।। जाकु देव सकल जग माणी ।।
असो नागण न सब जुग पाया ।। जा थां सतगुरु पुरा ही पाय ।। १५ ।। (धनानाथ)

३४१ हीमतराय की रचनाएं । अपूर्ण । पुस्तिका । प्राप्त पन्ने–१५ । मशीन के बने कागज । आकार–८×६ २५ इन्च । हाशिया–नगण्य । पंक्ति–प्रतिपृष्ठ–१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति–१७–२१ । लिपि–घसीटी किन्तु सामान्यत पाठ्य । श्री कनीराम गायणे द्वारा स० २००० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–श्री कनीराम गायणा, गाव जैसला (फलोधी) ।

आदि–कोरतार ।। दुदजी डेरा कीया कुव उग्र माय
सनवधी मेला कीया जाजम दई वीछाय ।।

अंत–केई गीनो के बाद लोहापागल वन म जाकर सेरनाथ अघोरी का चेला हो गया तपसा करन लाग्या फेर तपसा का घमड कीया अवर आसन वठ के कहा की मे लीछमण का अवतार हु ढाइ सो चेला लेकर समरायल आया ।

३४२ साधु जगदीशराम कृत साखियाँ–१०, भजन–३, आरती–१ और फुटकर छन्द तथा बच्चू, राजाराम गायणा, रिसीलाल, शकरदास, सूरदास और गोरख के फुटकर पद । पुस्तिका । अपूर्ण । मशीन का बना कागज । आकार–८ ५×७ इन्च । हाशिया–नाम मात्र को । प्रतिपृष्ठ मे पंक्तियों की एक रूपता नही है । अक्षर भी छोटे बडे हैं ।लिपि–पाठ्य किन्तु अशुद्ध । साधु श्री जगदीशराम द्वारा अनुमानत सवत् २००० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–मीयासर साथरी ।

आदि–आत्मा रुपी एक परवत है तिस ऊपर आकास रुपी वन है तिस विषे ससार रुपी वृक्ष लगे हुवे हैं

अंत–शकरदास कुज सन्त विचारी मृगा ने सिंह दबाया है
फलटा ग्यान समझे कर देखा जद ये मन पतियाया है ।। ४ । (३६ वा पन्ना)

३४३ जगमालदास कृत १ आरती तथा जगदीशराम कृत १ साखी । मशीन–बना एक पत्र । आकार–१३ ५×४ २५ इन्च । हाशिया–नगण्य । कुल ५७ पंक्तियां । अक्षर–प्रतिपंक्ति–१२–१३ । लिपि–पाठ्य । सवत् २००३ म जगदीशराम द्वारा लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान–मीयासर साथरी ।

आदि–आरती रामजी श्री जाभाजी की
ओं जे श्री जभ ओंकारा ब्रहमा सीव सनकादिक गावत है सारा
हरी हरी हरी जभ देवा टेर (–जगमालदास)

अंत–दुरयोधन को मान घटाये माल वीदुर के जावीयो
जगदीस गुरुजी आगी कर रे पुकार पार लगावियो (जगदीशराम) समत २००३ मीती सावण वद १४ यह साषी जगदीस लीखी छे

३४४ पुस्तिका । मशीन का बना कागज । आकार–६ ५×४ इन्च । हाशिया–नगण्य । प्रति-

पृष्ठ म पंक्तियो और प्रतिपंक्ति मे अक्षरा की, छोटे बडे होने से एकरूपता नही है। कई पृष्ठ अधूरे लिखे हैं। लिपि-सामान्यत -पाठ्य। अधिकाश अ श साधु श्री जग दीशराम द्वारा अनुमानत सवत् २००० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री भोलारामजी, विष्णोई मदिर, रावतखेडा। इसम रामानन्द के ५ भजन, सा ब्चार, पचीकरन, अनेक मत्र (सस्कृत), ३५ पृष्ठ तथा साधु जगदीशराम का १ छ और २ साखियाँ हैं।

आदि-ओ३म् हरये नम भजन कीतन (१)

गाय गाय नित गुण गोविन्द रा कलीमल हरसी रे

हरिगुण गाय ले। टेर। (-रामानन्द)

अन्त-दस धाम सोध लो नास हुवे सब ताप

जगदीशराम खुब देख लो घट ही मे गरू आप॥ २॥

३४५ साधु जगदीशराम कृत ३ भजन। मशीन के बने छोटे छोटे ३ पत्तो म। रचयिता द्वा सवत २००० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-भीयासर साथरी। इनम ये भ हैं —पद १-बिना विद्या के प्रताब मोक्ष पद केस पावे रे।

पद २-थे तो दरसन दीजो माने आयो गुरुजी माने तारो नी।

पद ३-द्वार गुरु सरण तुमार कृपा मो पर कीजो रे।

३४६ विवाह पद्धति। अपूर्ण, प्रथम पत्र अप्राप्य। पुस्तिका। मशीन का बना कागज आकार-८ ५×६ ७५ इन्च। हाशिया-नाम मात्र को। दो हस्तलिपियो म। पंक्ति प्रतिपृष्ठ-१६-१८, १०। अक्षर-प्रतिपक्ति-क्रमश १६-२३ और १२-१५। लिपि कार-अज्ञात। अनुमानत सवत् २००० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-प्राय पाठ्य प्राप्तिस्थान-भीयासर साथरी। इसम अनेक मत्र, वील्होजी, तेजोजी के कवित्त आशीवचन, नाम, तथा रामचन्द्र, राधाकृष्ण और मगल के शाखोच्चार हैं।

आदि-चतुदसे उत्पनो गनिवासरे अरध मुखे दृष्ट पतासे अगोचर पावस्युवाच

कवण से माता कवण से पीता कवण से गोत्रे के जीम्या प्रकासते

अन्त-सहर फतेपुर वास है जन्म मोसर कुल गाय

हरसुख सुत प्रताप ही साखा कही बनाय॥ ४१॥ (मगल की शाखोच्चार)

३४७ मीरा का भजन-१ तथा अज्ञात कृत जाम्भोजी सबधी भजन-१। देशी पत्र-१। प खडित होने से अन्तिम भजन अपूर्ण। आकार ४ ५×३ ५ इन्च। हाशिया-नही है कुल-२५ पंक्तियाँ। अक्षर-प्रतिपक्ति-११-१३। लिपि-पाठ्य। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी

आदि-देयो री सहेला मारो मोहन मायण लुटजो। टेर (-मीरा)।

अन्त-भगवों टोपो भगवों चोलो भलो सु रगो भेष ५।

३४८. उमाहो-वील्होजी कृत (अपूर्ण) तथा तेजोजी कृत १ कवित्त (युगल मत्र)। देशी पत्र १। खडित। आकार ८ ७५×४ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल १३ पंक्तियाँ। अक्षर प्रतिपक्ति-२८-३०। लिपि-पाठ्य। साधु परसरामजी द्वारा अनुमानत स० १८..

के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री सिमरथाराम थापन, लाम्बा (जोधपुर) ।

आदि-मन रातो साम सु गुदड्यो गुणा रो गहीर १६ निरधनीया धनवाल हो क्रि पण वाल्हो दाम विर्योमां न वाल्हो कामणी तेरा साथ विसन के नाम १७ (-वील्होजी)

अंत-क्व तेज पयप जोडि कर आसा पूरण अमेमण भगवान भगत भो भजबा महर पधारे महमाण १ ॥ (तेजोजी) लिप्यते सा॑य फरसरामजी स्वय

३४९ ज्ञानचिरी, वील्होजी कृत । छ द सख्या-१२९ । अपूर्ण । देशी कागज । प्राप्त पत्र सख्या-४ । आदि के ५ तथा ६ वाँ पत्र नही है । आकार-६×४ इ च । हाशिया-पौन इन्च । पक्ति प्रतिपृष्ठ-१० । अक्षर प्रतिपक्ति २८-२९ । लिपि पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी ।

आदि-री कहै कद करारी धार मुप स बोल मारो मार ६२
तिल तिल कर सौ काट पिंड काट कपट करे पड कुपड
याट बिहुच कर जूजूवा तोऊ जीव न छूटे मूवा ६३

अंत-सोर्ठा-सत सु धम विचार धर्मा उपर भाव है
दो यों पथ सवार मन मान जिह जावहू २९ (१२९) इति श्री ज्ञानचिरी सपूरणम् ।

३५० सध्या बदन मत्र । मशीन का बना १ पत्र । आकार-८×६ इ च । हाशिया-पौन इन्च । कुल १५ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-२०-२३ । लिपि-सुपाठ्य लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत १९४० के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी ।

आदि-श्री अभेगुरवे नम अथ सध्यावन्न मतर लिपते ॥
उँ विसनु विसनु तू भण रे प्राणी ॥ साधे भगते

अंत-तेतीस कोड बकु ठ पहु ता यू साच सतगुर को मतर कहियू
इति श्री जभ तातू सवादे स॑ध्या वदन मत्र सपूरणम्

३५१ साखी २, हरजी कृत । मशीन के बने २ पत्र । आकार ८ ५×५ २५ इ च । हाशिया नगण्य । कुल ६३ पक्तिया । अक्षर-प्रतिपक्ति-१५-१८ । लिपि-पाठ्य । दोना द्वारा अनुमानत सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-महन्त श्री भालाराम जी, विष्णोई मंदिर, रावतखेडा ।

आदि-राजा बल क दुवार जाचण आयो नरहरी
बावन रूप मुरार तीन पेड सब धर करी

अंत-हरजो हर की आस लोहट घरे बधावणो
कुल पुवार तण प्रगास पीपासर प्रगट्यो सही । ५ । साखी सपुरण छ द ॥
दोना रा छ

३५२ लिखत, लोहावट गाव के लोगों को । कतिपय धम-नियम पालन करने सम्ब धी ।

देशी पत्र-१। सं० १८६२ में फागुन सुदि १५ को लिखित। प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी।

३५३ लिखत, लोहावट गांव के लोगों की। धर्मनियम पालन-सम्बन्धी। देशी पत्र-१। थापन राउ द्वारा लिखित। लिपिकाल अनुमानतः सं० १८६२ के आसपास। प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी।

३५४ मेले मुकाम पर की गई, धर्म-नियम पालन संबंधी संवत १८७२ की लिखत की नक्ल। मशीन का बना कागज-१। उतारने का समय-संवत १९५०। प्राप्तिस्थान-लालासर सायरी।

३५५ दस्तावेज, पानी निकालने-पिलाने संबंधी। मशीन का बना कागज-१। संवत १९८६ फागुन सुदि ११ का लिखा हुआ। प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी।

३५६ वंशावली (आदि विष्णु से गिरधर का शिष्य परम्परा)। देशी पत्र-१। खंडित। आकार-२६×२.५ इंच। हाशिया-नहीं है। कुल ६५ पंक्तियाँ। अक्षर प्रतिपंक्ति-६-८। संवत १९०१ में दयाराम द्वारा लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी सीवड, भूलनिया (नाडोली)।

आदि-॥ श्री विष्णवेनम अथ प्रथम आदि वंशावली लिषत ॥

प्रथम आदि विष्णु १ को ब्रह्मा २ को मरीचि ३

अन्त-४१ रावलजी चेला ८ सजरामजी मयारामजी बालकिसणजी केसोदासजी ४१

संमत १९०१ रा वर्षे मिती आषाढ सुदि १४ लिषत दयाराम

३५७ जाम्भोलाव पर 'पढ़ेवडी फिराने सम्बन्धी उल्लेख। देशी पत्र-१। संवत १८११, चैत वदि ११ को दयारामजी द्वारा लिखित। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रणछोडदास जी, जाम्भा।

३५८ सूत फिराने पर 'पोछोवडी' बांटने सम्बन्धी उल्लेख। देशी पत्र-१। संवत १८२३ में लिखित। लिपिकार-अज्ञात। प्राप्तिस्थान-पीपासर सायरी।

३५९ लिखत, रडकली गांव में मुर्गे मारने संबंधी, सं० २००१, माघ सुदि ११, वार रवि वार की। मशीन का बना कागज-१। प्राप्तिस्थान साधु श्री हणूतरामजी, रडकली।

३६० लोहावट सायरी में मवाड के विष्णोइयों द्वारा सं० १९८३ फागुन सुदि ८ को लिये गए धर्मार्थ का उल्लेख। मशीन का बना कागज-१। लिपिकाल-यही। प्राप्तिस्थान लोहावट सायरी।

३६१ परवाना, जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी का। संवत् १८७८ मिगसर सुदि २ का। सावडाऊ गांव पर, खेजडी आदि न काटने संबंधी। देशी पत्र १। प्राप्तिस्थान-लोहावट सायरी।

३६२ परवाना, जोधपुर के महाराजा श्री विजयसिंहजी का। संवत १८२१, जेठ सुदि ५ का। जोधपुर परगने के समस्त गांवों के पटटायतों पर, विश्नोइयों से कर और बेगार न लेने संबंधी। देशी पत्र १। प्राप्तिस्थान-महन्त श्री रामनारायणजी, रामडावास (जोधपुर)।

३६३ परवाना, जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी का। सवत १८६०, पोह सुदि १४ का। विषय वही जो परवाने सख्या-३६२ म है। प्राप्तिस्थान-मह्न्त श्री रामनारायणजी, रामडावास (जोधपुर)।

३६४ परवाना, उदयपुर के महाराणा भीमसिंहजी का। सवत १८७४, ग्रापाढ वदि २ का। पुर के नायक मानसिंहजी को, छूट के सबध म। देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-मुखिया नायक श्री सुखलालजी मागीलालजी, पुर।

३६५ परवाना, उदयपुर के महाराणा जवानसिंहजी का। सवत १८८५, मिगसर वदि १३ का। पुर के नायक सिवलालजी का, छूट के सम्बन्ध म। देशी पत्र १। प्राप्तिस्थान मुखिया नायक श्री सुखलालजी मागीलालजी, पुर।

३६६ ताम्रपत्र-उदयपुर के महाराणा सरूपसिंहजी का। सवत १६०६, वैसाख वदि १२ का। विष्णोई साधु मनीराम मगनीराम को, दरीबा मे २॥ बीघा धरती और बावडी सरधी। प्राप्तिस्थान-श्री नाथूलालजी ओदिया विष्णोई, दरीबा (भीलवाडा)।

३६७ भजन-२, रामलला का-१, तुरसी का १। देशी पत्र-१। आकार-५×१ ५ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल २८ पक्तियाँ। अक्षर-प्रति पक्ति-७-१०। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १६०० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।

आदि-सांवरे सु प्रीति लागी रो हिवडा के बीचि। टेक।

अत-ताहू सिवर रिन दन तुरसी। मनसा वाचा क्रमना। ३॥

३६८ गोविन्दरामजी कृत साखी-१। देशी पत्र-१। जीर्ण, त्रुटित। आकार-७ ७५×५ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल २७ पक्तिया। अक्षर-प्रतिपक्ति-२२-२४। लिपि-पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १६५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्ति स्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।

आदि-॥ छद छप ॥ श्री जाभेश्वरधाम जाय जन भका ज याव

अत-अडसठ तीथ उपर न जभ सरोवर धाम

जभेश्वर की दया सों वरणत गोविंदराम श्री जाभेसुर ध्याईये सापी सपुरणम्

३६६ जाम्भोजी की आरती, सख्या ६। देशी पत्र-१। खण्डित। आकार ११×४ ७५ इन्च। हाशिया-नगण्य। कुल ५७ पक्तिया। अक्षर-प्रति पक्ति-१५-१८। लिपि-पाठ्य। श्री गणेशरामजी द्वारा सवत् १६४५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकल राम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली। इसमे ऊदोजी की ४, प्रीतम की १ तथा कबीर की १ आरती है।

आदि-श्री ॥ अथ आरती श्री जाभजी की ॥ सध्या समरण आरती भजन भरोस दास

मनसा वाचा करमना सतगुरु चरण निवास

अत-तुलछि को पात कहत मन हीरा हरय निरप जस गाव कबिरा ॥

आरती सपुरण भवेत गणेसजि म्हाराज की लिपत समाप्त

३७० बार मासी-वरामाह कृत। अपूर्ण। देशी पत्र-१। आकार-६ ५×४ इन्च। हाशिया

नगण्य। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-१०। अक्षर-प्रति पंक्ति-३१-३५। लिपि-प्राय पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत् १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली।
आदि-श्री विष्णु प्रमात्मनेनम अथ यार मामो परा साहु रो ॥
दोहा-असाढ सम धीनती कर। ॥ पैरासाहु अधीन ॥
तुम बिन व्याकुल मन है जस जल बिन मीन ॥ १ ॥
अंत-जल धार बरस मेघला अरु कोकुला कुलात है
जोहै सुहागन पिया पियारी लोक खेलन जात है ॥ तु पहन वसु मी वो ।
३७१ विवाह पद्धति-जाम्भाणी। अपूर्ण। देशी पत्र-४। जीर्ण, खंडित। आकार-१२×६ इंच। हाशिया दाएँ, बाएँ-गया इंच। पंक्ति प्रतिपृष्ठ १३। अक्षर प्रतिपंक्ति ३४ ३७। लिपि-पाठ्य। सम्भवतः श्री साहबरामजी द्वारा अनुमानतः संवत् १९४० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली। इसमें गोत्राचार आदि वंशावली, बसंदर के नाम, चौजुगी, सदाशिव महिमा, विवरण, कलश और पाहल है ॥
आदि-॥ ६ ॥ श्री विष्णुजी सत्य। लिषत गोत्राचार ॥ श्री महादेव उ०
उँ ॥ जहू यात रूपू-
अंत-मछ की पाहल। कछ की पाहल। बाराह की पाहल। बावन की पाहल।
नृसिंघ की पाहल-
३७२ प्रहलाद चरित-केसोजी कृत। अपूर्ण। छंद ८३ से ३८२ तक। आदि के ७ से २५ तक, १९ पत्र। देशी कागज। जीर्ण, खंडित। आकार-९ २५×४ २५ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-०न इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पंक्ति-२८-३१। लिपि-सुपाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानतः संवत १८५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलराम विष्णुदत्त विष्णोई दुतारावाली।
आदि-थ ■ आगी ॥ मुक्त माड नवाई ॥ ८२ ॥
समहि पाग आण्यो उर ऊपरि ॥ हिरण करै हाकारो ॥
मेरी चारी मोहि विणासो ॥ अबला मूलि न मारो ॥ ८३ ॥
अंत-अनड पहाड अनेरा ॥ जित बाघण बाघ बघेरा ॥
रींछ राकस रोझ रहाव ॥ हर डाकण भूत डराव ॥ ८२ ॥
३७३ महामाया की स्तुति, साहबरामजी कृत। अपूर्ण। पत्र संख्या-११। मशीन का बना कागज। आकार-६ ५×४ इंच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-आधा इंच। पंक्ति-प्रति-पृष्ठ-९। अक्षर-प्रति पंक्ति-१५-१७। लिपि-सुपाठ्य। श्री साहबरामजी द्वारा संवत १९४० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री धोकलरामजी विष्णुदत्त विष्णोई, दुतारावाली। अनुमानतः संवत १९४० के लगभग लिपिबद्ध।
आदि-श्री म्हामाया की अस्तु प्रारंभते ॥ दोहा० ॥
महामाया स्तुति शब्द की ॥ चाली चार ओढ

पुस जगाणे प्रीत सु ॥ रहे सुष सेज्या पोढ ॥ १ ॥

अन्त-इ ड कटाक्ष मए च छारा जाहा ताहा देषू तेज तुम्हारा

मार निरजन किया हु कारा ॥ जग रहे नैन जगन यानों ॥ २९ धि-

३७४ साहबरामजी की सापी, अगभ की-२ । मशीन का बना पत्र-१ । जीर्ण, खंडित । हाशिया-नगण्य । कुल ६६ पंक्तियाँ । । अक्षर-प्रति पंक्ति-१५, १६ । लिपि-पाठ्य । लिपिकार-अज्ञात । अनुमानत सवत् १६४५ के लगभग लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री धाक्लराम विष्णुदत्त विश्नोई, दुतारावाली ।

आदि-॥ उँ ॥ सापी साहबरामजी की सापी अगभ की

परमभक्ति प्रहेलाद होरणाकुस दूप है दयो घोल हलाहल सेंर

उन पायो इन पी लीयो

अंत-गुर किया भगवा भेस जेठ व्दी मौमो दिनें

हरि दियो नव उपदेस शाहब सतगुर है सही ॥ ५ ॥ श्री बाबा शाहबरामजी री २ सापी सपुरणम् ॥

३७५ परवाना, महकमा कौंसिल राज श्री बीकानेर का । सवत १९३०, मिति पोह सुदि १४ का । मुकाम गाव पर, मेडे सबधी । देशी पत्र-१ प्राप्तिस्थान-थापन बधु (सवश्री बदरीराम, बीरम, मालूराम, मोतीराम, काशीराम, श्योलाल एव नारायण),मुकाम ।

३७६ परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १९०७, मिगमर वदि ११ का, समस्त कसाइया के नाम, विष्णोइया के गावो मे से बकरा ल्कर न निकलन सबधी । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३७७ परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १८७८, फागुन वदि १२ का । राज्य की जनता के नाम, थापना से विना अपराध कुछ भी माग न करने सबधी । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३७८ परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १८७८, फागुन वदि १२ का । विषय-वही जो परवाने ३७७ म है । प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३७९ परवाना, बीकानेर अदालत का । ऊपर के (३७७, ३७८) परवान को पुन जारी करने सबधी । सवत १८८७, पोह सुदि १ का । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३८० परवाना, बीकानेर अदालत का । सवत १८६०, चत सुदि ७ का । मुकाम के थापनो पर । मुकाम-मंदिर के पुजापे को चार भागो मे बाँटकर लेने सबधी । देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३८१ परवाना, बीकानेर के महाराजा अनूपसिहजी का । सवत १७५२, जेठ सुदि ४ का । पवार जगरूप नाजर आनदराम की ओर । गाव तालवे के १० खेत थापनो को दिलाने और हरे वृक्ष न काटने सबधी । देशी पत्र-१ । प्राप्तिस्थान-थापन बधु, मुकाम ।

३८२ परवाना-बीकानेर अदालत का । सवत् १८६८, जेठ सुदि १ का । मुकाम के थापनो

री थोर। चढ़ावे री रहन रावर श्री जाम्भाजी की मूर्ति हेतु लिए गए रुपया की चकाते थोर घास न उठाने सबधी। देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-थापन बन्धु, मुकाम।

३८३ परवाना-बीकानेर के महाराजा सुजानसिंहजी द्वारा तालवे, मुकाम के थापनों को दी गई धरती सम्बन्धी। सवत १७५८, जेठ वदि १ का। देशी पत्र १। प्राप्तिस्थान थापन बन्धु, मुकाम।

३८४, लिखत, मुकाम-मेले की। सवत् १८७२, फागुन सुदि १ की। विष्णोइयां द्वारा धर्म-नियम पालन सबधी। देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-जांगलू साथरी।

३८५ लिखत, जांभोलाव के मेले की। सवत् १६०६, चैत वदि अमावस्या का। विष्णोइयों द्वारा धर्म-नियम पालन सबधी। देशी पत्र-१। प्राप्तिस्थान-जांगलू साथरी।

३८६, फुटकर छन्द-५। बारहठा सबधी, १ छप्पय तथा आनन्द एव अज्ञात कृत। देशी पत्र-१। आकार-६ × ४ इन्च। हाशिया-पौन इन्च। कुल-१६ पक्तियां। अक्षर-प्रति पक्ति २५ २६। लिपि-पाठ्य। लिपिकार अज्ञात। अनुमानत सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-कवित्। तरवर एक उतग तास दोय पेड बर्णाणू।
अथ साप जड बीस सिपर सोवन गढ थांण।

अन्त-कवण केरै पींजर काग म बीठा कोय २

३८७ विवाह पद्धति। पोथी। फोलियो सख्या-८२। मशीन का बना कागज। आकार-६×५ ५ इन्च। हाशिया-१ इन्च। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१४-१५। अक्षर-प्रतिपक्ति-७-६। लिपि-पाठ्य। साधु बिहारीदास द्वारा सवत १९७२, जेठ बदि ३० को लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान पीपासर साथरी। इसमे विभिन्न मत्र, नाम, ऊदोजी के कवित, कृष्ण और शिव से सबधित शाखोच्चार, मगलाष्टक आदि हैं।

आदि-श्री जभगुरुवेनम ॥ अथ विवाह पद्धती लिखते ॥ अथ कलस थापण कलम लिखते ॥ जो समरथ कथा सुणो सब कोई ॥ तासों पथवी उत्पन्न होई ॥

अन्त-विष्णु मत्र का जल छूया ॥ गुरु की कृपा स बालक सुध हुया ॥ इति श्री बालक मतर सपूरणम् ॥ लिखत साध बीहारीदास चेला विष्णु दासजी का गाव भगतासरी मैं बिसनोई बणीयाल लाभु के घरे सवत ॥ १९७२ जेठ बदी ३० अमावस निज पठनाथ ॥ उँ

३८८, माधवदास कृत भजन-१३। पुस्तिका। मशीन का बना कागज। आकार-७ ५×६ इन्च। हाशिया नगण्य। पक्ति प्रतिपृष्ठ-१४-१५। अक्षर प्रति पक्ति १९ २२। लिपि पाठ्य। लिपिकार-अज्ञात। अनुमानत सवत १९७५ के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी।

आदि-ऊ श्री जम्भेस्वरो जयति दा

कलिमल हरण अरु सुख करण मगल मुरति रूप
दुष्टदलन मनमथ मथन जम्भ गुरु सुर भूप

अन्त-अपरपार कलियुग की माया नहीं भेद कोसि ने पाया

कसा कुर जमाना आया माधव भज माईजो ॥ ४ ॥

३८६ पुस्तिका। अपूर्ण। पन्ने-२२। आदि का १ तथा २३ के पश्चात पन्ने नही हैं। देशी कागज। आकार-७ २५×५ २५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१०-१२। अक्षर-प्रति पक्ति-१५-१६। लिपि-पाठ्य। सवत् १९१५ मे बिहारीलाल विश्नोई द्वारा कालपी मे लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी। इसम ये रचनाएँ हैं -(क) विष्णु चरित-ऊधवदास कृत। अपूर्ण। छद-४-१०७। मिती अषाढ वदी ५ गुरो सवत् १९१५ दसख्त बिहारीलाल विश्नोई कमया के मौजे रहै श्रा कालपी-पोथी लिपी। (ख) आवला सरोवर अस्तोत, छद-१३। विहारीदास कृत। (ग) जाभा अष्टक, छद-१०। बिहारीदास कृत। (घ) लीलकठ विश्नोई की बनाई अस्तुत छप्य। अपूर्ण। छद ६।

आदि-लाल उष्ण नहि सीला ॥ ३ ॥

विष्णु क नहि रूप न रेखा ॥ लिखा न जाव विष्णु अलेखा ॥
विष्णु निकट नहि कुछ दूरा ॥ विष्णु पूरन है भरपूरा ॥ ४ ॥

अत-वैषुष सुकवि सरण जाके सबसे स भये छूटत भ्रम वद यह मेर मन आयो है ॥
कोई जिन भूलो साध भावो निज नाम ही को सोई पर ।

३९० वेलजी की कथा, अज्ञात रचित। खडी बोली गद्य म। पुस्तिका २। कुल पृष्ठ सख्या-३१३ (१-१७९ तथा १८०-३१३)। एक इच हाशिये वाली। मशीन के बन कागज की। आकार-७ ७५×६ २५ इच। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-१३। अक्षर-प्रति पक्ति-११ स १९। लिपि-प्राय अशुद्ध कितु पाठ्य। सम्भवत गणेशरामजी द्वारा सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध। यह कथा किसी अन्य प्रति से उतारी गई है, जिसके सकेत अनेक स्थानो पर मिलते है। आदि के प्रथम अध्याय म जाम्भोजी और २९ धम-नियमो सबधी उल्लख करके फिर असली कथा आरम्भ होनी है। प्राप्तिस्थान-श्री चाकलराम विष्णदत्त विश्नोई, दुतारावाली।

आदि-श्र सच्चिदानन्देश्वरायनमो नम १ श्रा गुरु श्री जम्भेश्वरायनमो नम श्री गुरु जम्भेश्वरजि म्हाराज का अवतरण

अन्त-इन तीन दिन म मृत्यु सख्या लाखो की गिनती मे हो गई और बचे वे सब दुखी जीवन म ही रहे अर्थात् जीय जितने तक २९ धर्मों को पालन करते गुरुजी को याद करते ही करते प्राणान्त हुए इति

३९१ गुटका। चारो ओर स खडित। देशी कागज। आकार-४×२ ७५ इच। हाशिया नगण्य। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६-७। अक्षर-प्रतिपक्ति-१४-१७। साधु मगनीराम तथा बुधराम द्वारा स० १९०० के आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-जगलू साथरी। इसम ये रचनाएँ हैं-(क) साईदीन के छद-१०। साधां जगदीस रामजी म्हाराज क चौपनो छ लिपत साधु मगनीराम। (ख) ग्रथ पिसण सिंघार, सेवादास कृत। छद-१०२।

आदि-श्रथ दीनजी का छद दोहा

मिनषा देही पाय कर ॥ जाण्यो नही जगदीस ॥
दीन कहे सुघर नही ॥ बिगडी बीसवा बीस ॥ १ ॥
अन्त-काल तणी सारी नहीं ॥ फिरसी रामराय की आंण ॥
सेवादास जग जीत कर ॥ परस्या पद निरबांण ॥ १०२ ॥ इति श्री ग्रंथ विसाग गपार समाप्त बाच विचार जिगमों साधु बुद्धराम को राम राम बाचजी घणा न घणा राम

३६२ गुटका। देशी कागज। अपूर्ण, खंडित। आकार-६ ३५×४ इंच। हाशिया-दाएं, बाएँ-१ इंच। पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-७-६। अक्षर-प्रतिपंक्ति-१४-१७। अनुमानतः बिहारीलाल द्वारा संवत १६२३ में लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। प्राप्तिस्थान-जागनू साथरी। इसमें ये रचनाएं हैं -(क) सबदवाणी, अपूर्ण। सबद संख्या १७०। भली यो होय तो भल बुधि आव यु (१२०)। (ख) विष्णु सहस्र नाम स्तोत्र (संस्कृत) श्लोक-१६३। (ग) अमावस्या री कथा, मयारामदास कृत। छंद-१४४।
आदि-का यर्पाणत ॥ उरध ढाक ले त्रिसूलों ॥ ॥ आद अनाद तो हम रे रचोलों ॥ हम सरजीलो स कोण।
अन्त-इति श्री महाभारते श्री कृष्णा अर्जुन संवादे अमावस्या महात्मे कथा मयाराम विचित संपूरणम संवत १६२३ मीतीं माह सुदी ४ गुरुवार को लिखतम बिहारीलाल

३६३ गुटका। मशीन का बना कागज। आकार-६×३ ५ इंच। हाशिया-एक इंच। पंक्ति-प्रति पृष्ठ-६-६। अक्षर-प्रति पंक्ति-१३-२०। लिपि-पाठ्य। भिन्न भिन्न लिपिकारों द्वारा संवत १६४२-५४ के बीच लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-जागनू साथरी। इसमें ये रचनाएं हैं —(क) श्री जाभोलाव महातम, गद्य में। (ख) जंभ स्तोत्र, सुरजनदास रचित। छंद-१७। (ग) सबदवाणी, सबद-१२०, पद्य प्रसंग समेत। रतन काया बैकुंठ वासो तेरा जरा मरण भौ भागो ॥ १२० इति श्री सबद बाणी श्री जाभजी की संपूरणम शुभ संवत १६४२ मिती जेष्ट वदि दूजा ११ वार बुधवार के लिखत लिख्यतं प्रागसुख विश्नोई बटा सिलदार का—। (घ) संध्या मंत्र-ओं विष्णु विष्णु तु भण रे प्राणी साधा भक्ता उधरणों ॥ (ङ) उनतीस धर्म। (च) जम्भाष्टक (संस्कृत) श्री गोविन्दरामजी कृत। (ज) मंत्र-२, (ओं शब्द गुरु श्रुत चेला—तथा भी शब्द सो बार श्राप-)। (ज) धर्म शास्त्र के श्लोक-२। (झ) मयारामदास कृत अमावस्या कथा के अंतिम छंद तथा आरती-६। ऊदोजी-४, कबीर-१, नामदेव-१।
आदि-श्री गणेशायनम ॥ श्री जाभोलाव महातम लिख्यते ॥ एक समै श्री गुरुजी महाराज जहा तहा उपदेश करते हुवे दर्शन के लिये पक्षम तीर्थ जंभ सरोवर अर्थात जाभोलाव तलाव के गये।
अन्त-पांचवीं आरती रामजी कुं भाव श्री रामजी की आरती नामदेजी गाव ।५।७ सा॰नराम सं॰ १६५४ दारानगर गज मंड मध्य साढ सुद ५

३६४ रुकमनी मंगल, रामलला कृत। छंद संख्या नहीं दी गई है। पत्र संख्या-११।

किनारे त्रुटित । देशी कागज । आकार ९×४ इंच । हाशिया दाएँ, बाएँ एक इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-९ । अक्षर-प्रति पंक्ति-२८-३० । संवत् १९०७ में रामलाल द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । डोली गाव (जोधपुर) से श्री महीरामजी धारणिया (सगरिया मठी) को प्राप्त ।

आदि-श्री गणेशायनम लिषते रुकमनी मंगल ॥

निगम जाको नीत गावै ध्यान सिव उर आनही

आदि अनादि पारब्रह्मजु के भकित नोक जानही

अंत-राज करो नग्र द्वारका को भक्त बछल श्री गोपाल

रामलला जन गाय मगल श्रवण सज जन होय नीहाल इति श्री रुकमनी मगल सपूरणम् १ समत १९०७ माघ सुदी १४ वार थावरवार लिषते साघ श्री धनरामजी का सीष रामलाल पु टयेडा मधे सब सुभ मगल ॥ श्री ॥

३९५. गुटका, सबदवाणी । सबद संख्या-१२०, बिना प्रसग । अपूर्ण, खडित, जला हुआ । प्राप्त फोलियो संख्या-७९ । ८७ फो० मे से आदि के ८ अप्राप्य । देशी कागज । आकार-६ २५×३ २५ इंच । हाशिया-सवा इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-८ । अक्षर प्रति पंक्ति-१५-१९ । लिपि-सामान्यत पाठ्य । सम्भवत प्राणसुख विश्नोई द्वारा संवत १९४० के आसपास लिपिबद्ध । प्राप्तिस्थान-श्री कानाराम गायणा, पोनास (मेड़ता सिटी) ।

आदि-यो माग । रे विनहीं गुर्हं जीव बघू मारो ॥

अंत-विष्णु तु भणि रे प्राणी । इस जीवण कं हाथ ।

तिल २ आव घटती जाव मरन दिने दिन आवै (१२०)

३९६ प्रहलाद चिरत, केसोजी कृत । छन्द-५९४ । पत्र संख्या-३२ । देशी कागज । कति पय पत्र खडित । आकार ९×४ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इंच । पंक्ति-प्रति-पृष्ठ ११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-३३-३६ । संवत् १८९० में साधु रामदासजी द्वारा लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-मवश्री सोहनलालजी गोदारा, भागीरथजी गायणा, चक २९ बी० बी० (तहसील पदमपुर, श्री गगानगर) ।

आदि-श्री विष्णजी राग मारू दोहा

नारायण पहली नऊ सांमी सर्ब सुजाण

आदि भक्त कहसू कथा पहलाद चिरत प्रवाण १

अन्त-में दावण पकड्यो दीन को सतगुर कर सहाय

पाच सात नव बाहरा अवक मोहि मिलाय ५९४ इति श्री प्रहलाद चिरत सपूरणम् ॥ १ ॥ समत १८९० रा वर्षे मिती भादवा सुद ५ वार मगलवार लिषते साध रामदासजी कानजी रो सिष्य गावं मलाय मध्ये । श्री उमाय नम

३९७ अमावस्या री कथा, मयारामदास कृत । छन्द १४६, पत्र संख्या-१४ । मशीन के बने कागज । किनारों से खण्डित, जीर्ण । आकार-८.५×४५ इंच । हाशिया-दाएँ, बाएँ -आधा इंच । पंक्ति-प्रतिपृष्ठ-९-१० । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२५-२९ । श्री सन्तोष-

दास द्वारा सवत् १९५० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-सवधी सोहनलालजी गोदारा, भागीरथ गायणा, चक-२९ बी० बी० (तहसील पदमपुर, श्री गगानगर) ।

आदि– ॥ श्री गणेशायनम अथ अमावस्या रा कथा लिष्यत कु डलीया

उ प्रथम बदु गुरदेव कौं दुतिय बदु सब साध ।

बिष्णु बदु पु नि तीसर जात मिट जु ब्याध २

अन्त– लिपाकृत सत श्री १०८ श्री बालकदासजी का शिष्य सतोषदासेन जेमनी मध्ये श्री पठनार्थ साध जीयाराम श्री जगरामदासजी का शिष्य उँ तत्सत हरी

३९८ गोकलजी कृत (क) अवतार की विगति, छद सख्या-४५ और (ख) इकब छद, सख्या-३२ । पत्र सख्या-१० । जीर्ण, खडित । देशी कागज । आकार-९X४ इ च । हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर प्रति पक्ति ३३ ३६ । श्री रामदास द्वारा सवत १८७५ के लगभग लिपिबद्ध । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया (नाडोणी) ।

आदि– ॥ श्री जभेस्वराय नम । लिष्यते ओतार की विगत्य की अस्तुति ॥ गोकलजी क कहे छह दाहा ॥

रिधपति सिधपति सोल्पति ॥ सुरपति सदा सहाय ॥

गति दाता गोविंद सुमरि ॥ गोकल हरि गुण गाय ॥ १ ॥

अन्त– रह्या थाकी तका बचन पालो विसन किरपा करो काज सारो

दास गोकल कह आस पूरो अरूप ऊबर आदि पुरप ओट थारी

इति श्री गोकलजी क छन्द सपूर्ण लिपत रामदास

३९९ वील्होजी क कवित्त, सख्या-४४ । पत्र सख्या-५ । जीर्ण, खडित । देशी कागज । आकार-६X४ इ च । हाशिया दाएँ, बाएँ एक इ च । पक्ति प्रति पृष्ठ १३ । अक्षर-प्रति पक्ति-३६-४० । अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के आस-पास लिपिबद्ध । लिपि-सुपाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया (नाडोणी) ।

आदि– ॥ श्री विष्णव नम लिपत कवत्त वील्होजी का ॥

धम कीया सुष होय लाछ लिछमो घन पाव

धम उत्तम कुलि अवतर जम दालद नहीं आव

अन्त– आप सवारय मुन सुधो कोया कुबधो पापडा

वील्ह कहै भव सागरो बह्यो जाहि रे बापडा ४४ इति श्री वाल्हजा का कवित्त सपूर्ण समाप्त ॥ १ ॥

४०० अमरपरी, सुरजनजी कृत । छन्द-१०८ पत्र सख्या-८ । खडित । मशीन का बना कागज । आकार ११X५.५ इ च । हाशिया-नाम मात्र का । पक्ति प्रति पृष्ठ-११ । अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३६ । साधु बालगोविन्द, तथा अज्ञात लिपिकार द्वारा लिपि-बद्ध । लिपि पाठ्य । लिपिकाल सवत १९५० होना चाहिए, क्योंकि यहा बना हुआ

प्रतीत होता है। प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड़, भूलनिया (नाढोडी)।
आदि-श्री गणेशायनम उ स्वस्ति लिपत्रु ध्रमचरो ॥
दोहा-कहा कम जल कोयली ॥ कहा लिसना कहा तोर ॥
रे मन कित पित मात तू ॥ सपति बध्यो सरीर ॥ १ ॥
अन्त- मनसा वाचा क्रमना ॥ सुनु पुरातन सापि ॥
जन सुरजन की वीनती ॥ वाने की पत रापि ॥ १०८ ॥ इति श्री धमचिरि समापत ॥ समत ॥ १९ ॥ ५ । महीना चत सुदि । पचोमी । लीपिकृत साधु बालगोविंद ॥ श्री चतरामजी के सिम ॥ वार रवि ॥

४०१ अमावस कथा, मयाराम कृत (छन्द सख्या नही दी गई है, पाठ मे काफी मिश्रण है)। शिवजी की आरती, सेवानद कृत तथा रामाष्टक (सस्कृत)। पत्र सख्या ९। खडित। मशीन का बना कागज। आकार-१२×५ ५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-एक इच पक्ति-प्रति पृष्ठ-१२। अक्षर-प्रति पक्ति-३५-३८। लिपि-पाठय। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १९५० के लगभग लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया (नाढोडी)
आदि- ॥ ६ ॥ श्री गणेशायनम अथ अमावस कथा लिखत ॥ कुडलिया ॥
प्रथम सिमरू गुर देव कु ॥ दुतिये सबै साध ॥
विष्णु बदु पुनि तिसर ॥ जात मिटत ज्यु व्याधि ॥ १ ॥
अन्त- श्री श्यामो पवित्त मनसा प्रतीत रागे न गीत बचने अतीत
श्री रामचद्र सतत मामि इति श्री रामाष्टक सपूर्णम् ॥ १ ॥

४०२ अमावस कथा, मयाराम कृत। अपूर्ण। प्राप्त पत्र सख्या-८। खडित। मशीन का बना कागज। आकार-११×५ ५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-पौन इच। पक्ति-प्रति-पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति-२८-३०। लिपि-पाठय। अज्ञात लिपिकार द्वारा सवत १९५० के आसपास लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया (नाढोडी)
आदि-श्री गणेशायनम अथ अमावस कथा लिखते कुडलिया
प्रथम सिमरू गुरदेव कु ॥ दुतिये सब साध ॥
विष्णु बदु पुनि तिसर ॥ जाते मिटत ज्यु व्याधि ॥ १ ॥
अन्त -प्रात समै आई ज्यों सब करो प्रणाम गयो है ज घरै
गुरो धाम भई जो राति सोई ॥ कथा सुनो देव प्रीती वडो पुत्र गुजरा क हुतो ॥

४०३ रुकमणी मगल, पदम भगत कृत। विभिन्न राग रागिनियो के अन्तर्गत छन्द सख्या पृथक पृथक् है। पत्र सख्या-४३। खडित। देशी तथा मशीन के बने कागज। आकार-१०×५ ५ इच। हाशिया-दाएँ, बाएँ-प्राय आधा इच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१४-१५। अक्षर-प्रति पक्ति-३६-४२। लिपि-साधारणत पाठय। बिहारीदास द्वारा सवत् १९३७ मे लिपिबद्ध। प्राप्तिस्थान-श्री रामनारायणजी खीचड, भूलनिया

(गाडागी) ।

आदि-श्री जम्भगुरु नम ग्रंथ परमानन्द कृत रुक्मणि मंगल लिख्यते दा०

संसार सागर अपार जल सूझ वार न पार ।

गुर गोबिंद कृपा करो गावों मंगलचार १

अन्त- हर री साधु कर कोसको सोभन शुभवरनाय

सोला सहस गोपी घर घर भोजन दसमन हाय ९

सोनो दीनो सालयो क्यो अ त न पार

भण परमह्यो जन आरती आवागमण निवार १०-१८३ इति श्री परमह्यो

कृत रुक्मणी मंगल विवाहना समाप्तम् १ सवत १९३७ मिति वगाप सुदी २

लिपत विश्नाराम

४०४ छमछरी (सवतसरी) ग्रन्थ, (सवत १८०० से १९००), श्री परमानन्दजी वणिहाल

कृत । पद्य गद्य मिश्रित । पाथी । मजूल, सजिल्द । प्राप्त पत्र संख्या-२० । दवी

कागज । आकार-८ ५×५ ५ इंच । हाशिया-ऊपर,नीचे-दाये व बाँये १ इंच । प्रति-

प्रति पृष्ठ-२५ । अक्षर प्रति पंक्ति १८-२५ । श्री परमानन्दजी वणिहाल द्वारा सवत

१८०० के आसपास लिखित । लिपि-पाठ्य । प्राप्तिस्थान-श्री मोहनलालजी

गोदारा रामनगर जा० गावणा नं०-२६ पो० ओ०, तहसील-पदमपुर, श्री गंगानगर।

आदि- ॥ एगी समत १८०५ पत्र ॥ ५ ॥ दूहा

[illegible] श सम कुप छमीमयां ॥ वरस बोह जल धार ।

नवोमूयां मोर यह घण ॥ घरि घरि मगलचार । पन वसाय म न ससता जेठ

याय वाज्यसी समाठ प्रपा गोजगी सावण वीरपा शारि वदीस राप भाख

मय घणा भाद्रवा दाय २

अन्त- एनी समत १९०० पत्र ॥ दुहा ॥

सो वरसे समत पालट ॥ नाव अक सघवाय

छमछरी अपर न पालट ॥ सु वी भुवें री थाय १

+ + +

साठी सइ कीसय गुर ॥ वले ज वरस वेचारि ॥

दुहा दुरस्य ज दयोया ॥ परमाणद विचारि ॥ ५ ॥

हरि परिसी सो होयसी ॥ होतिव हरि क हाय ॥

ए चतुराइ चातरी ॥ वेद गरय की वात ॥ ६ ॥

जोतग मा सब कुछय लोय्या ॥ ह सब जोतिग माहि ।

[illegible]गहार होत्यव की ॥ आगति लयी न जाय ॥ (७) ॥

वेद पढो जोतग पढो ॥ सब वार्तां समरय ॥

मेह मोत अर रीजक कौ ॥ कायद साइ हथि ॥ ८ ॥

साचो नाव विसन को ॥ अवर न सचा कोय ॥

आकास साचो अरय ॥ घरा म सचो होय ॥ ९ ॥

पडत नै झुठो कह ॥ मुरेप लोग मजुर ॥
दिणहे रावण क्यो नहो ॥ दाल्यद घर मा पुरे ॥ १० ॥
पचायत मा पुछीया ॥ राजा मान सोप ॥
साइ सेती सरप रू ॥ लीव्यो स साचो होय ॥ ११ ॥
इण ही पोहमी उपर ॥ परब न टाल कोय ।

४०५ पोथी । अपूर्ण, अनेक पत्र अप्राप्य । जीर्ण, खडित । देशी कागज । आकार–९ × ६ इच । हाशिया–आधे से पौन इच । पक्ति–प्रतिपृष्ठ–२४–२७ । अक्षर–प्रतिपक्ति–१७–२१ । श्री परमानदजी बणिहाल द्वारा सवत १८२० के आसपास लिपिबद्ध । लिपि–साधारणत पाठ्य । प्राप्तिस्थान–मवश्री सोहनलालजी गोदारा, रामलालजी गापगा, चक २६ बी० बी०, तहसील–पदमपुर, श्रीगगानगर । इसमे ये रचनाएँ हैं – (क) ध्रव गणी भाखी, छद ५६८ । अपूर्ण । परमानदजी बणिहाल कृत । बीच म अज्ञात रचित अन्य फुटकर छद भी हैं । (ख) डगव की कथा, अज्ञात कृत । दोहा, चौपद ३०८ । (डगव भीम अरजन सवाद उरवसी मोप) ।(ग) मद्रसेन की कथा, दोहा चौपई–१०८ । अज्ञात कृत । (घ) कथा भरथरी राज त्याग । अपूर्ण, प्राप्त दोहा, चौपद १ से ४३५ । अज्ञात कृत । (ङ)कथा गोपीचन्द, दोहा, चौपई ५२२ । अपूर्ण । प्राप्त छद–२६१ से ५२२ । मेरठ निवासी जोधीराम कृत । (च) मोहजीव की कथा (मोहमरद राजा की कथा), छद ११७ । जन जगन्नाथ कृत । (छ)विसन भगति महमा (कृष्ण और पाण्डवो से सबधित) । अपूर्ण, प्राप्त दोहा, चौपई, कवित्त–११० । अज्ञात कृत । (ज) ध्र म कथा, ४ अध्यायो म । हिन्दी सस्कृत मिश्रित श्लोक–३००(१०० + ७२ + ७३ + ५५) । अज्ञात कृत । (झ) कीसनजी रो ब्याहलो ।अपूर्ण, प्राप्त छद ५ । पदम कृत । (भिन्न हस्तलिपि म) । यत्र तत्र अनेक फुटकर छद भी लिखे हुए हैं ।

आदि–श्री किसनजी सति सही त्यपतु श्रवणु री साषी
ओ नमो नाथ निरजणा ॥ अवगति नाव अनत
परमानद तस वदना ॥ भगत बछल भगवत ॥ १ ॥
चौनउ नायक वील्हजी ॥ घनो नेतो सुरताण ॥
परमाणद गुर पावीया ॥ सतगुर क्षम सुजाण ॥ २ ॥
पिता आयर सुरताण गुर ॥ चलु गुर दासु दास ॥
रासोजी दिय्या गरू ॥ तसा सुषदेव व्यास ॥ ३ ॥
सेस महेस यमा सगति ॥ कवि सुरनेर केतान ॥
निहु जुगे रोय तापसो ॥ गुयया गेरष गोयान ॥ ४ ॥
केसो सुरेजन वील्हजी ॥ गुर मतगुर सामान्य ॥
एता वायक समरया ॥ अनत गुण ग्यान ग्रीयान ॥ ५ ॥

अन्त–ध्र म सवाद इद सुत ॥ ध्रव पाप प्रमुचते ॥
परलोके भवे त गत ॥ मुक्ते रव् न ससए ॥ ५४ ।
पठते हरते पाप ॥ सुरत्वा मोषु लभते ॥
ध्रम तीरथ मवे फल ॥ महाध्र म प्र वतते ॥ ५५ ॥

एती ध्र म कथा सपूरण समापेता (परमानदजी की हस्तलिपि मे)
गुर गोवद मोनउ म अभीनासी देव तन मन धन आगे धरु
करु गुर को सेव ।५। (ध्यातव्य से । भिन्न हस्तलिपि म)।

४०६ हरजस। अपूर्ण। प्रारम्भ के २ पत्र, किनारा से खण्डित। देशी कागज। आकार ९X ४ इ च। हाशिया-दाएं, बाएँ-पौन इ च। पक्ति-प्रतिपृष्ठ-६। अक्षर-प्रति पक्ति २४-३०। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत् १६०० क आसपास लिपिबद्ध। लिपि-पाठ्य। गाव डोली (जोधपुर) म श्री महीरामजी धारणिया (सतरिया मठी) को प्राप्त। इसम सुरतराम, तुलसीदास, मानददास, काजी महमद, वील्होजी तथा अज्ञात कृत एक एक हरजस ह।

आदि-राग गाडी श्री भागोत उधारी जग में र टेक श्री भागोत सुणी सनकादिक इमरत पीयो इकधारा ध्रु प्रहलाद अभीछण नारद सुमरत वाह वारा १

अन्त-मेल नहीं अमल ह चोखा ल्योह मेरे वीर मिट सब धोखा १
वील्हाजी अमल विसनु लिव लागी बहुत दिना की बायड भागी ४॥ ५॥
रे मन होय निरविरत भजि नरहरे छाडि।

४०७. गोपीचन्द का हरजस, अज्ञात कृत। देशी पत्र-१, जीर्ण और किनारा से खडित। आकार ६X४ इ च। हाशिया-दाएँ, बाएँ १ इ च। कुल १८ पक्तियाँ। अक्षर प्रति पक्ति-३२ ३५। अज्ञात लिपिकार द्वारा अनुमानत सवत १८५० के आसपास लिपि-बद्ध। लिपि पाठ्य। प्राप्तिस्थान-लोहावट साथरी।

आदि-राम सत्य राग धनाश्री आज नगर म एक जोगी देख्यो थोरा गोपीचद क उणिहार र लो टेक

अन्त-जलधी मणादे राजा गोपीचद बोले हम तुम एही विछोहा रे लो १२ १

४०८. पहलाद चिरत, केसोदासजी कृत। छ द सख्या-५२०। गुटका। फोलियो सख्या-१६७। मशीन के बने कागज। आकार-३ ३/४X५ १/२ इ च। पक्ति प्रति पृष्ठ-५। अक्षर-प्रतिपक्ति-१०-१२। रामचन्द गायणा द्वारा सवत १६७१ म लिपिबद्ध। अपेक्षाकृत मोटे अक्षर। लिपि सुपाठ्य। प्राप्तिस्थान-श्री सोहनलालजी गोदारा, चक २६ जी० बी०, (श्रीगगानगर)।

आदि-श्री गणेशायनम अथ पहलाद चीत केसोजि यानी लिखत। राग भास दोहा। नारायण पहिलि निऊ स्वांमी सब सुजांण। आद भक्त कहिसु कथा पहलाद चीरत पर्वाण ॥ १ ॥

अन्त में दांवण पकड्यो दास को। सतगुर करे सोहाय ॥ पांच सात नव बाहरों। सबके मोंही भीलाय ॥ २० ॥ ईति श्री पहलाद चीत केसोदास बीर्चीतायाम सपूरणम् ॥ लीपत गायण रामचन्द गाव रासीसर वास वहा म लीपावनु। समत १६ ७१ साल री बीरषे मीती माग्वा सुदी १ वार सनीसरवार रे दीन पुसतक सपुरण हुयो ॥ वाई वाच वीचार तो गायण रामचन्द री गुण परणाम वाचाजोजो।

कागल पोथा ना कुछि थोथा। ना कुछि गा'या गीयौं ॥ २५ ४।
वलि वलि कूकस काय दलीज। जिहमा कणो न दाणो ॥ ७१ ८।
वेद कुराण कु माया जालू । दत कथा जुगि थाई ॥ ९७ २,३।
भीज्या है पणि भेद्या नाही। पाणी माहि पखाणो ॥ १०५ ५।
विण रणायर हीर न नीरे,
गज न सोपे, तके न खोल्या तालू । २९ १३-१५।

—जम्भवाणी (सबदवाणी) से।

अध्याय २

जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य विषयक किया गया अब तक का कार्य

अध्याय २

जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य विषयक किया गया अब तक का कार्य

यह काय दो भागो म बाटा जा सकता है —

(१) विष्णोई लेखकों द्वारा किया गया काय और

(२) इतर लेखकों द्वारा किया गया काय।

पहले प्रकार की प्राय सभी सामग्री व्यक्तिगत प्रकाशनो के रूप मे सीमित लोगो के सामने आई थी। लेखक, सम्पादक या सकलनकर्ता ही प्रकाशक था। प्रकाशन के मूल मे धम या समाज-सुधार सम्बन्धी भावना विशेष रूप से रही थी। ऐसी पुस्तकें सीमित सख्या म और विशेषत मतानुयायियो के लिए ही छपाई गई थी। अत ये साधारणत सुलभ नही हैं। इनमे जितना भावना का प्राधान्य है उतना वज्ञानिक और शोधवृद्धि का नही। एकाध अप वाद को छोडकर मूल प्रति या स्रोत का उल्लेख किसी ने नही किया है। प्रकाशित और मूल पाठ म पर्याप्त भिन्नता है। अपनी अपनी रुचि के अनुसार बहुधा कवि-विशेष के कतिपय छद ही प्रकाशित किए गए। इनका आधार न बताने के कारण एक तो प्रामाणिकता पर सन्देह होना स्वाभाविक था और दूसरे कवि-विशेष की रचना के विषय मे केवल अल्प और आशिक जानकारी ही प्राप्त हो सकती थी। फिर, धार्मिक आवरण के कारण से भी ये अन्य लोगो का ध्यान आकृष्ट नही कर सकी। "सबदवाणी" का प्रकाशन अपेक्षाकृत अधिक बार और अनेक व्यक्तियो द्वारा किया गया। प्रत्येक की सबद सख्या और उनकी घटा बढ़ी का उल्लेख यथास्थान आगे कर दिया गया है। जहा तक इसकी टीकाओ का प्रश्न है, वे भ्रामक हैं और सन्तोषजनक तो कदापि नही हैं। इनमे खीचतान कर किसी न किसी प्रकार मनमाने अथ लगाए गए हैं। प्रत्येक टीकाकार ने अपनी-अपनी रुचि और सस्कार के अनुसार अथ करने की चेष्टा की है। मूल पाठ-विकृति, भाषा-दुरूहता और साम्प्रदायिक स्वरूप-अनता के कारण भी ऐसा हुआ है। वज्ञानिक दृष्टि से विचार करने वालो के लिए यह सामग्री कतिपय तथ्यों और चितन-सम्बन्धी दिशा तो बता सकती है, आधारभूमि प्रदान नही कर सकती। अन्य प्रमाणो के पुष्टि-स्वरूप इनका उल्लेख किया जा सकता है किन्तु स्वतत्र प्रमाण क रूप मे इसका उपयोग करने मे बहुत सतकता की आवश्यकता है। ऐसी रचनाओ का सबसे बडा महत्व परम्परा, विचार-भिन्नता, सम्प्रदाय और समाज को जाग्रत करन के प्रयास की दृष्टि से है। इसके अतिरिक्त इनसे कतिपय अन्य बातो का भी पता चलता है जिनका उल्लेख यथास्थान किया गया है।

दूसरे प्रकार की सामग्री के अन्तगत विभिन्न गजेटियर, रिपोट, जाति धम सम्प्रदाय, इतिहास और साहित्य विषयक ग्रन्थो मे आए प्रासगिक उल्लेख तथा एतद् विषयक निबन्ध आदि सम्मिलित हैं। इनम प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध म प्राय तो नामोल्लेख मात्र ही किया गया है। इस

सामग्री में विभिन्न गजेटियर और रिपोर्टें प्रमुख हैं। गजेटियरों और रिपोर्टों का आधार अधिकांश म क्षेत्र-विशेष में तत्कालीन कुछ लोगों से सुनी-सुनाई बातें और दंतकथाएँ मात्र हैं। सामाजिक दृष्टिकोण प्रधान होने के कारण इनमें समय-विशेष म प्रचलित अनेक बातों को आधार बना लिया गया है। फलत एक क्षेत्र से सम्बन्धित एतद् विषयक उल्लेख दूसरे क्षेत्र के एस उल्लेखों से भिन्न ह। इनके परवर्ती लेखकों ने पूर्ववर्ती लेखकों के कथनों का अन्धाधुन्ध अनुसरण किया है। इसलिये पूर्ववर्ती लेखकों की अनेक भूलें भी दोहराई जाती रही हैं। तत्सम्बन्धी प्रामाणिक सामग्री के उपलब्ध न होने, वैचारिक परम्परा और सम्प्रदाय के स्वरूप को समग्रता में भली-भांति न समझने के कारण इनकी अधिकांश बातें भ्रामक और गलत हैं। कहीं कहीं तो ऐसा लगता है कि व पूर्वग्रह से ग्रसित और दुविधाजनक स्थिति में लिखी गई हैं (द्रष्टव्य-आगे (२) सन्दर्भ संख्या ५ और २०)।

साहित्यिक धार्मिक दृष्टि से विचार करने वाले विद्वानों ने भी एतद् विषयक अप्रामाणिक सामग्री के आधार पर अपनी-अपनी बातें कही हैं, अतः उनका मूल्य भी विशेष रह नहीं जाता (विशेष द्रष्टव्य-'विष्णोई सम्प्रदाय' नामक अध्याय)। उनको यह साहित्यिक सामग्री उपलब्ध नहीं हो सकी थी। प्रस्तुत विषय का मूलाधार सबदवाणी है। इसकी भाषा १६ वीं शताब्दी की ठेठ ग्रामीण मरुभाषा होने से राजस्थानेतर विद्वान् को यह सहज रूप से बोधगम्य भी नहीं हो सकती। दूसरे, इसकी प्रकाशित प्रतियाँ भी साधारणतः प्राप्त नहीं हैं। तीसरे, इनका पाठ अनेक स्थलों पर विकृत है, अतः मूल मन्तव्य सही रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता।

इन्हीं सब कारणों से, अपवादों को छोड़कर, अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ होते हुए भी, प्रस्तुत विषय का क्रमबद्ध सम्यक् विवेचन और मूल्यांकन कहीं नहीं किया जा सका। प्रस्तुत अध्ययन की पूर्व-पीठिका के रूप में एतद् विषयक दोनों प्रकार के कार्यों की सूची, कालक्रमानुसार सम्बन्धित संक्षिप्त उल्लेखों सहित नीचे दी जा रही है। (पहले कालक्रमानुसार संदर्भ ग्रंथ म आदि का विवरण और बाद में तारक चिह्न (*) से प्रारम्भ नई पंक्ति में उनका संक्षिप्त कथनोल्लेख और सार दिया गया है)।

यहां इस कार्य का विवेचन नहीं किया गया है, जिसके प्रमुख कारण संक्षेप में ये हैं —

१-इनमें अधिकांश का आधार अप्रामाणिक या आंशिक रूप में ही प्रामाणिक है, अतः नामोल्लेख और ऐतिहासिक दृष्टि से अतिरिक्त इनका मूल्य विशेष नहीं है।

२-सम्प्रदायेतर विद्वानों ने केवल प्रासंगिक या पृथक रूप से उल्लेख मात्र ही किए हैं, सम्यक् और विशद रूप में क्रमबद्ध विचार विवेचन नहीं किया। इस अध्ययन द्वारा ही प्रस्तुत विषय में सम्बन्धित अनेक प्रकार की सामग्री पहली बार प्रकाश में आ रही है, अतः उनके लिए ऐसा करना सम्भव भी नहीं था। फिर, एसे कथन भी या तो सुने-सुनाए या/और लोक-प्रचलित कथाओं के आधार पर कहे गए हैं अथवा उनमें पूर्ववर्ती लेखकों की बातों को उसी रूप में दोहराया गया है।

३-अब तक इस सम्बन्ध में जो कुछ भी लिखा गया है, उसमें-(क) जाम्भोजी के जीवन की दो-चार घटनाओं का, उसी सन्दर्भ में सम्प्रदाय-प्रवर्तन और उनके २९ अथवा वर्ति

पय धर्मनियमो का नामोल्लेख है, या/और विश्णोई-समाज मे समय-विशेष म प्रचलित कुछ मान्यताओ और रीति-रिवाजो का उल्लेख भर है।

४-शायद ही कोई कथन ऐसा हो जिसमे किसी न किसी प्रकार की-तथ्य,व्याख्या, परम्परा, विचार और मूल्यांकन विषयक भूल न हो अथवा जिसम अप्रामाणिक बातें न कही गई हो।

५-इस प्रबन्ध मे यथास्थान प्रस्तुत विषय का सप्रमाण और सविस्तर विवेचन करने का प्रयास किया गया है जिससे उल्लिखित काय की भूला, शिथिलताओ और अप्रामाणिक बातों का स्वयमेव निराकरण हो जाता है। अत यहाँ ऐसा करना पुनरावृत्ति ही होती।

(१) विश्णोई लेखकों द्वारा किया गया काय

१-श्री जम्भसागर स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि रचित शब्दार्थ दीपिका टीका सहित, सवत् १९४९ (लीथो मे)।

* ११७ सबद और उन पर टीका। अन्त म "विज्ञापन" मे जाम्भोजी का परिचय और २९ धर्मनियम। ६ स्वीकृत सबद (सख्या-१०, १०१, १०२, १०३, ११५, और १२१) नहीं हैं।

२-जम्भसहिता स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि रचित धर्म्म बोधिनी टीका, सवत् १९५५।

* विभिन्न मत्रो और २९ धर्मनियमो पर टीका।

३-शब्दवाणी अर्थात् जम्भसागर सकलनकर्ता-स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि, सशोधनकर्ता-प० जगन्नाथ तिवारी, सवत् १९५५।

* पच प्रसग सहित १५१ सबद। २ स्वीकृत सबद, सख्या १०२, १२१ नहीं हैं। इस प्रकार १२१ स्वीकृत सबद हैं, जिनमे से १-'पवण स मोमण पाणी माण' (पृ० १२५, सबद ११५)-इसमे पृथक है जो स्वीकृत सबद १०३ का अर्द्धांश है। बाकी २९ अतिरिक्त सबदो का विवरण इस प्रकार है —

क्रम-सख्या	पृष्ठ-सख्या	सबद-सख्या	सबद
१	१२१	१०२	पडित जण जण वाद न होई। अणबोल्या अवधू नाइ
२	१२१	१०३	दूट पवणा छीज काया। आसण दृढ कर बसो गया।
३	१२१-२२	१०४	देवल यातरा शून्य यातरा। तीथ यातरा पाणी।
४	१२२	१०५	आऊ न जाऊ निरजण नाथ री दुहाई।
५	१२२	१०६	चहु दिशि जोगी सदा मल्ग। खेल वर कामनी के सग।
६	१२३	१०७	राज गए को राजा झूर। वैद गए को रोगी।
७-१२	१२३-२४	१०८-१३	ओ विष्णु विष्णु तू भणरे प्राणी। साधे भक्ति ऊधरणों (यह बृहन्नवण है, जिसके यहा ६ सबद माने गए हैं)।
१३	१३०	१२२	आ अक्ल रूप मनसा उपराजी, ता आ पाच तत्व होय राजी (यह कलश-पूजा मत्र है)।
१४	१३१-३२	१२३	ओ नमो स्वामी शुभ करतार। (यह पाहल मत्र है)।

१५	१३३	१२४	था शब्द सोह भाप । पन्तर जपे अजपा जाप । (यह तारक मंत्र है) ।
१६	१३४	१२५	था शब्द गुरु सुरत चेना, पांच तत्व में रहे अकेला । (यह गुरु मंत्र है) ।
१७	१३५	१२६	अवधू शब्द निरतर गहिये । जहाँ दिवस न रंगी कहिये ।
१८	१३५	१२७	मूल साचोरे अवधू मूल सीचो । ज्यां तरवर मेल्हत डारम
१९	१३६	१२८	मारिवा तो मन मस्त मारिवा । लूण्या पवरा भडारम ।
२०	१३६	१२९	मढ़ि न बांधिवा गती न प्रबोधिवा । भिशा न खायवा चूलम ।
२१	१३७	१३०	कोटि मध्ये कोई एकहि जूझे । कोटि मध्ये कोई एकहि बूझ ।
२२	१३७-३८	१३१	सत ऐगालो सत ऐगालो किस कर कथू गंभीरम ।
२३	१४५	१४३	गृहवासा नाहा निगिवा का रूप चन्द सूर विवरजित पस ।
२४	१४७	१४४	तीस दिन सूतक पांच ऋतुवन्ती न्यारो । (धर्मनियमों सम्बन्धी ये ऊदोजी नण कृत २ क्योड़े छप्पय हैं) ।
२५	१४८	१४५	हासवा खेलवा रहिवा रग । काम क्रोध न करिवा सग ।
२६	१४८-४९	१४६	ण्डी सो जो काया दण्ड भावन जानी सुध्धा खण्ड ।
२७	१४९	१४७	अवधू सयम अहार कदरप नही व्याप । वायु अहार सुधा न सताप ।
२८	१५०	१४८	अजप्पा जपो रे अवधू अजप्पा जपो । पूजो देव निरजन थानम् ।
२९	१५०	१४९	गगण हमारा बाजा बाज, मूल मंत्र भल हाथी ।

४-विश्नोई धर्म विवेक स्वामी ब्रह्मानदजी द्वारा सकलित, प्रकाशक-श्रीरामदासजी, प्रथम सस्करण-सवत १९५५, द्वितीय सस्करण-सवत् १९७१ ।

* प्रश्नोत्तर क्रम से "विश्नोई धर्म" का स्वरूप वर्णन ।

५-श्रीजम्भदेव चरित्र भानु स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक--लेखक, काट, सवत १९५८, (ता० १-९-१९०१) ।

* जाम्भोजी का जीवन-चरित्र, भूमिका म आंशिक रूप से सुरजनजी कृत कथा औतारपात ("अवतार-चरित्र") भी छापा है ।

६-विश्नोई नियमावली श्यामलाल आत्मज बद्रीप्रसाद वश्य विश्नोई कृत । प्रकाशक-बद्री प्रसाद वश्य, मुहल्ला रजीतपुरवा, कानपुर, सवत १९६७ ।

* जाम्भोजी का परिचय, २९ नियम, सस्कार -सूतक, पाहल, गुरुमत्र, अन्त्येष्टि ।

७-जम्भाष्टक प्रकाश ग्रन्थकर्ता-स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक-श्री रामदासजी, जमसरोवर धाम, सवत १९६८ ।

* गोविन्ददासजी कृत जम्भाष्टक और सम्प्रदाय का स्वरूप आदि।

८–जम्भदेव लघुचरित्र   श्रीरामदासजी रचित, प्रकाशक–लेखक, जम्भसरोवर धाम, सवत १६६९।

* पाताम्बरदासजी कृत जम्भाष्टोत्तर शतनाम, आरतियाँ, जाम्भोजी, सम्प्रदाय का परिचय, २९ धम–नियम।

९–विष्णोई मत व्याख्या   लाला मोहनलाल वश्य, प्रकाशक–लेखक, कसबा अजीतमल, इटावा, सवत् १९६९।

* जाम्भोजी का परिचय और काय, तत्कालीन दशा, २९ नियम, उनकी व्याख्या।

१०–मतक सस्कार निणय   स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक–श्रीरामदासजी, विष्णोई मदिर, गणेशगज, कालपी, सवत १९६६ (दूसरा सस्करण–स० १९७०)।

* शव का भूमि म गाडने की पुष्टि।

११–शब्दवाणी गुरु जाम्भेजी   सग्राहक प्रकाशक–साधु गगादास, विष्णोई मन्दिर, फलावदा, जिला मेरठ, सवत १९६६।

* कई पुस्तकों से सग्रह किए गए सबद हैं, जिनकी कुल सख्या १२६ दी गई है किन्तु २ (स्वीकृत सख्या २७, २८) आशिक रूप से दो बार लिखे और गिने जाने के कारण, यह सख्या १२४ होनी चाहिए। इनमे से ६ स्वीकृत सबद (सख्या–७, ८, ९, १०, ६७ और ११५) नही होने से ११४ ही स्वीकृत सबद आ पाए हैं। शेष १० सबद अतिरिक्त हैं, जिनका विवरण यह है —

क्रम-स०	पृष्ठ-सख्या	सबद-सख्या	सबद
१	१०३	९९	पडित जण जण वाद न होई। भणवीत्या अवधू सोई।
२	१०५	१००	चहु दिशि जोगी सदा मल्ग। खेल बर कामनी के सग।
३	१०५	१०१	राज गए को राजा भूर। धन गए को रोगी।
४ स ९	१०५	१०२	"गोत्राचारी शब्द"–आ विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी।
	१०७	१०७	साचे भक्ति उधरणो। (यह वहत्तवण है, जिसके ६ सबद माने हैं)।
१०	११७	१२४	तीस दिन सूतक पाच ऋतुवन्ती न्यारा। (धम नियमो सम्बन्धी ये ऊदोजी नण कृत दो ड्योढे छप्पय हैं)।

१२–"श्री महर्षि स्वामी वील्हाजी का जीवन चरित्र" तथा "श्री वील्हाजी का सक्षिप्त वृत्तान्त"   स्वामी ब्रह्मानदजी, प्रकाशक–श्रीरामदासजी, विष्णोई मन्दिर गणेशगज, कालपी, सवत् १९७०।

* वील्होजी का जीवन–चरित्र।

१३-साखी संग्रह प्रथम संग्राहक-प्रकाशक स्वामी ब्रह्मानन्दजी, संवत् १९७१ (११ मई, सन् १९१४ ई०)।

- अनेक विष्णोई कवियों की ७८ विभिन्न साखियां। किसी किसी साखी का भावार्थ भी दिया है।

१४-विद्या और अविद्या पर व्याख्यान स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक-श्रीरामदासजी, संवत १९७२।

- तत्सम्बंधी विवेचन के सन्दर्भ में विष्णोई सम्प्रदाय की महत्ता और विद्या प्रचार पर बल।

१५-गोत्राचार विधि संग्राहक-स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक-श्रीरामदासजी, कालपी, संवत् १९७३।

- "ब्रह्मस्वरूप", गोत्राचार मंत्र और उन पर टीका।

१६-श्रीस्वामी वील्हाजी कृत वाणी संग्राहक प्रकाशक-श्रीरामदासजी, संवत १९७४।

- वील्होजी के १८, सुरजनजी के २ कुण्डर छप्पय तथा ३ दोहे।

१७-ब्राह्मण वर्ण व्यवस्था, सटीक संग्राहक-स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि, प्रकाशक-श्रीराम दासजी, जागलू, संवत् १९७५।

- तद्विषयक अनेक धर्मशास्त्रों के वचनों का संग्रह और प्रसंगानुकूल सबदवाणी की पंक्तियों के उद्धरण।

१८-शब्दवाणी जम्भसागर (गुटका) प्रकाशक-श्रीरामदासजी, (द्वितीय बार), संवत १९७६।

- १२० सबद। ३ स्वीकृत सबद, संख्या १०२, १०३ और १२१ नहीं हैं।

१९-श्री विष्णु धर्म प्रकाश संग्रहकर्ता-कामताप्रसाद गुप्त, संवत १९७७, प्राप्तिस्थान-लाला शिवप्रसाद गुप्त, दुकान-गप्पीलाल नारायणदास, टरननगंज, कालपी, यू० पी०।

- वर्ण्यविषय इस प्रकार है —
  - १-भूमिका (विष्णु, लक्ष्मी और विष्णुधर्म शब्दों की व्याख्या)।
  - २-विष्णुधर्म के २९ नियम (अनेक उद्धरणों सहित व्याख्या और मंडन)।
  - ३-महात्मा जम्भेश्वर स्वामी और विष्णुधर्म।
  - ४-एकता तथा एका ("अविद्या की भूल-भुलइयों में विद्या के दीपक व परस्पर के मेल व प्रीति की आवश्यकता")।
  - ५-स्त्रीशिक्षा (उसकी आवश्यकता के कारण और पूर्णता के उपाय)।
  - ६-स्त्रीधर्म (श्रीमती कमला देवी कृत)।
  - ७-यज्ञोपवीत का प्रभाव।
  - ८-पंच महायज्ञ विधि।
  - ९-अन्त्येष्टि संस्कार।
  - १०-वर्णाश्रियों के कर्त्तव्य कर्म।
  - ११-अन्य उपयोगी विषय (ये सभी पद्यबद्ध हैं) —
    - (अ) योग, कवि अनन्यदास लिखित गृहस्थों और राजाओं के लिए।
    - (ब) धर्म का सार (तत्व)-कवि नरेश कृत।

(न) उपदेशसार–कवि रामदयाल लिखित ।

(ट) ईश्वर प्राथना के भजन, गजल आदि ।

(य) शान्तिपाठ ।

२०–ऊदाजी का कवित्त (जम्भसार) सग्राहक–प्रकाशक श्री रामदासजी, सवत १६७८ ।

* ऊदोजी नएा के ५६ छप्पय, वील्होजी के ४ छप्पय और वाणी, सुरजनजी के ६ छप्पय और १ हरजस ।

२१–श्रीजम्भसार (प्रथम और द्वितीय खण्ड) साहबरामजी द्वारा सकलित और रचित । प्रकाशक–श्रीरामदासजी, सवत् १६७८ ।

* प्रथम खण्ड म ६ प्रकरण (१ से ९) । द्वितीय खण्ड म ९ प्रकरण–(१२, १४, १७ से २३) । मूल ग्रन्थ के २४ प्रकरणो म से ये १८ प्रकरण आशिक रूप म ही प्रकाशित किए गए हैं ।

२२–श्री स्वामी वील्हाजी का जीवन चरित्र (जम्भसार–त्रयोविंशति प्रकरण) साहबरामजी । प्रकाशक–श्रीरामदासजी, सवत् १६७८ ।

* जम्भसार का २३ वा प्रकरण आशिक रूप से पृथक प्रकाशित ।

२३–सार शब्द गुजार (सारबत्तीसी, अमरचालीसी और महामाया की स्तुति समेत) श्रीसाहबरामजी कृत, प्रकाशक–गणेशराम लक्ष्मीनारायण, दुसारावाली, सवत १६७८ ।

* सक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण भूमिका सहित इन रचनाओ का प्रकाशन ।

२४–जम्भसागर (प्रथम खण्ड) शब्दवाणी स्वामी ईश्वरानदजी कृत भाषा टीका सहित प्रकाशक–स्वामी विद्यानदजी, ला० कन्हैयालाल मक्खूलाल बिश्नोई रईस, कानपुर की सहायता से (प्रकाशन–काल नही है) ।

* २० सबद, प्रसग और टीका सहित ।

२५–श्री स्वामी वील्हाजी कृत कक्का सतीसी सग्राहक–प्रकाशक–श्रीरामदासजी, प्रथम सस्करण–सवत् १६७६, द्वितीय सस्करण–सवत २००३ ।

* इस रचना के ३७ छन्द कतिपय सूचनाओ सहित ।

२६–श्री वील्हाजी कृत जम्भदेव जीवन–चरित्र (श्री जम्भसार दशम प्रकरण) प्रकाशक–श्रीरामदासजी, सवत १६७६ ।

* वा होजा कृत "कथा औतारपात" और "कथा दूणपुर की" तथा सुरजनजी कृत "कथा औतार की" (आशिक रूप म) ।

२७–जम्भसार (साहबरामजी कृत) प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक का सूचीपत्र सम्पादक–प्रकाशक सम्भवत श्रीरामदासजी, अनुमानत सवत १६७८–७६ म ।

* प्रति सख्या–१६३ (च) का सूचीपत्र । (सूची पूर्ण नही है) ।

२८–अखिल भारतवर्षीय विश्णोई महासभा, कानपुर के तृतीय अधिवेशन के सभापति स्वामी ब्रह्मानन्दजी का भाषण प्रकाशक–स्वामी ब्रह्मानदजी, सवत १६८१ ।

* विश्नोई–स्वरूप, एकता, २९ नियम–पालन, सम्प्रदाय का प्रभाव, सस्कार–पद्धति, शुद्धि–प्रेम–वील्होजी का उदाहरण और काय–जाम्भोलाव–मेला, विश्णोइया मे श्रद्धा–भक्ति,

४५-श्री जम्भसार-साखी संग्रह (तृतीय संस्करण) सम्पादक-प्रकाशक श्रीरामदासजी(?), संवत २०००।

- अनेक कवियों की ८२ विभिन्न साखियां, वील्होजी कृत कथा ग्रन्थ और १२ हरजस तथा १ हरजस सुरजनजी का। (वर्तमान में यही संग्रह सर्वाधिक प्रसिद्ध है)।

४६-जम्भदेव आरती संग्रह संपादक-संग्राहक मास्टर जगन्नाथ [illegible] 'सेवक', [illegible], प्रकाशक-श्री ओंकारजी पंवार, कडोला, द्वितीय संस्करण, संवत २००३।

- विभिन्न कवि कृत १६ आरतियां।

४७-श्री जाम्भोजी महाराज का जीवन चरित्र, महात्मा सुरजनदासजी रचित सम्पादक-प्रकाशक-श्रीरामदासजी, संवत २००७ (श्री महीरामजी धारणिया के सहयोग से)।

- सुरजनजी कृत 'कथा औतार की' (संक्षिप्त रूप में), २९ नियम, जाम्भोजी के कुछ जीवन प्रसंग, [illegible] की कथा, हुजूरी नामावली आदि।

४८-श्री विष्णु चरित्र, ऊदोजी अड़ींग कृत संग्रहकर्ता मास्टर जगन्नाथ [illegible], [illegible], प्रकाशक-श्री ओंकारजी पंवार कडोला, संवत २००७।

- विषय नाम से स्पष्ट है।

४९-बिश्नोई नित्यकर्म पद्धति संग्राहक-प्रकाशक स्वामी जगदीशानन्दजी, [illegible], श्रीगंगानगर, संवत २००९।

- विभिन्न मंत्र, २९ नियम, १३ सबद।

५०-जम्भसागर (सबद नियम टीका समेत) स्वामी रामानन्दजी गिरि विरचित। प्रकाशक बिश्नोई सभा, हिसार, संवत २०११।

- जाम्भोजी का परिचय। विभिन्न मंत्र २९ धर्मनियम, १२० सबद और इन सब पर टीका। [illegible] सबद संख्या १०२, १०३ और १२१ नहीं हैं।

५१-श्री जम्भदेव आरती व साखी (हरजस उनतीस नियम) सम्पादक-प्रकाशक श्री [illegible] [illegible], डाकखाना-[illegible], (जोधपुर) संवत् २०१[illegible]।

- [illegible] संख्या ४५ की नकल है।

५२-विवाह पद्धति बिश्नोई समाज संपादक-रामजस [illegible] प्रकाशक-श्री [illegible], [illegible] (पो०-सिरसा)। (प्रकाशन संवत नहीं दिया है)।

- नाम से स्पष्ट है।

५३-विवाह पद्धति बिश्नोई समाज संपादक पं० हरराम शर्मा, प्रकाशक-मुन्शी [illegible], [illegible], हिसार। (प्रकाशन संवत नहीं दिया है)।

- नाम से स्पष्ट है।

५४-श्री बिश्नोई जागरण महात्म्य-[illegible] संपादक-प्रकाशक [illegible] प्रकाशक-[illegible] [illegible], थाना [illegible], ग्राम [illegible] जोधपुर। (प्रकाशन संवत नहीं दिया है)।

- [illegible] कथा और पुस्तक [illegible]।

(२) अन्य लेखकों द्वारा किया गया काय

१–टाड कृत "राजस्थान", भाग २ (सन् १८३२ म प्रथम वार प्रकाशित ।

* सिंध के "ब्राह्मण विष्णवो" के मुर्दे गाडने आदि का ।

२–गजेटियर आफ दि बीकानेर स्टेट कप्टिन पी० डब्ल्यू पाउलेट, सन १८७४ ।

* जाटो के अन्तगत "विश्नवियो", उनकी प्रकृति, नियम–पालन और जाम्भोजी का ।

३–रिपोट आफ दि पोलिटिकल एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि राजपूताना स्टटस, सन १८७५–७६

* जाम्भोजी का जीवन चरित, राव दूदा का मिलना, सम्प्रदाय–प्रवत्तन, २६ धम–नियम, मुसलमानों के विरोध पर उनमे वढोत्तरी, पूजा–पद्धति, रीति–रिवाज का ।

४–गजेटियरस आफ मारवाड, मालानी एन्ड जैसलमेर मजर सी० के० एम० वाल्टर, सन १८७७

* धम और कृषकों के सन्दभ म "जाम्बा के अनुयायी विष्णवियो" का ।

५–स्टेटिसटिकल, डिस्क्रिप्टिव एन्ड हिस्टोरिकल एकाउन्ट आफ दि नाथ–वस्टन प्रोविन्सेस आफ इडिया वाल्यूम फिफ्थ, रुहेलखण्ड डिवीजन, पाट फस्ट, गजेटियर आफ दि नाथ वेस्टन प्रोविन्सेस, बिजनौर डिस्ट्रिक्ट एटकिन टी० एटकिन्सन, सन १८७६ ।

* धम के अन्तगत । विश्नोई भामाजी या शेख मखदुम जहान जहागश्त के अनुयायी ह । उन्होंने अपनी मत्यु के पश्चात किसी को इस धम का अनुयायी बनाने का वचन दिया था । फलस्वरूप अब यह कुलगत ही रह गया है । इसम हिन्दू और मुस्लिम रीति–रिवाजो का विचित्र मिश्रण है । अभिवादन म सलाम अलैक, मुर्दों को गाडने और गुलाम मुहम्मद और इस प्रकार के अन्य नाम रखन मे विश्नोई हाल तक मुसलमानों की नकल करते थ । अब वे हिन्दू रीति–रिवाज अपनाने लगे हैं किन्तु आदर सूचक सम्बोधन मे "शेखजी" कहे जाते हैं । कहा जाता है कि एक काजी की हत्या करने के कारण दण्ड–स्वरूप उन्होंने (जाम्भोजी न) इसलाम अगीकार किया था ।

६–दि राजपूताना गजेटियर, वाल्यूम फस्ट सी० के० एम० वाल्टर, सन् १८७९ ई० ।

(क) बीकानेर, पृष्ठ १६३ ।

* "विश्नवियो" के स्वभाव और रीति–रिवाज का ।

(ख) जसलमेर, पृष्ठ १७६ ।

* "विश्नवियो" के निवास का ।

७–दि पजाब सेन्सस रिपोट आफ १८८१

* विष्णोइयो के नियम–पालन, मुर्दे गाडना, पहनावा, विवाह आदि का ।

८–हिन्दू ट्राइब्स एन्ड कास्टस रेव० एम० ए० शेरिंग, वाल्यूम–थड, सन १८८१, पृष्ठ ७१ ।

* बीकानेर के जाटो के अन्तगत "बैष्णव" और उनके नियम–पालन की दृढता का ।

९–जनरल कोड आफ ट्राइबल कस्टम इन दि सिरसा डिस्ट्रिक्ट आफ दि पजाब जे विल्सन, सेटलमेन्ट–आफिसर, शिमला, २१ अक्टूबर, सन १८८२ (इन्ट्रोडक्शन–बागडी जाट, जन

रल कोड आफ ट्राइबल कस्टम, सक्सन-१ तथा "पार्टिशन", सक्सन ११ के अन्तर्गत)।

* विष्णोई-पृथक जाति, धर्म-पालन में दृढ़, जीव-दया विशेष रूप से पालने वाले किन्तु झगडालू। रीति-रिवाजों का उल्लेख।

१०-पंजाब कास्टस बीइंग ए रीप्रिंट आफ दि चेप्टर आन दि रेसेस, कास्टस एण्ड ट्राइब्स आफ दि पीपल "इन दि रिपोर्ट आन दि सेन्सस आफ दि पंजाब पब्लिश्ड इन १८८३ बाई दि लेट सर डेंजिल इबेटसन, लाहौर, सन् १९१६।

* (जाति संख्या-१०६)-विष्णोइयों की विभिन्न जातियां-सही रूप में यह जाति नहीं, सम्प्रदाय है-, ववाहिक संबंध आदि का।

११-वीरविनोद कविराजा श्यामलदास, सन् १८८६ (संवत १९४३) भाग १, पृष्ठ १३७, भाग २, पृष्ठ ४८०।

* "पटदान" के अन्तर्गत विभिन्न देवी-देवताओं के मन्दिरों के लिये धर्मादे की जमीन के सन्दर्भ में "झाभादव" का।

* "वरीशाल नक्कारे" का।

१२-तवारीख राज श्री बीकानेर मुन्शी सोहनलाल, सन् १८९० ई० (संवत् १९४७)।

* विष्णोई जाम्भोजी का फिरका, जाम्भाजी, रीति-रिवाज, लाश दफनाना, सती होना, नियम-पालन आदि।

१३-तवारीख जसलमेर (तीनों भाग) महता नथमलजी की सहायता से लेखक लखमीचन्द रईस, जसलमेर द्वारा सन् १८९२ में प्रकाशित, पृष्ठ १७३, १७५, १७६, २२३।

* इस राज्य में विष्णोइयों द्वारा अनेक स्थानों पर कुएँ बनवाये और गांव बसाये जाने का उल्लेख, परगने-सांचोर, नोख और मीठड़ियों, नगराजसर आदि में। विष्णोइयों के ऊंटों की मजबूती और सुन्दरता के सम्बन्ध में।

१४-इतिहास राजस्थान चारण रामनाथ रत्नू, सन् १८९२ ई०, पृष्ठ ११।

* बीकानेर राज्य के जाटों के अन्तर्गत-विश्नोइयों के धर्मनियम पालन की दृढ़ता और जाम्भोजी का।

१५-विलसन की सिरसा सटलमेंट रिपोर्ट पराग्राफ-१०७। सन् १८९३ में इसका उल्लेख किया गया है किन्तु यह रिपोर्ट का प्राप्त नहीं हो सकी। देखें-आगे संदर्भ संख्या १६।

१६-गजेटियर आफ दि हिसार डिस्ट्रिक्ट पी० जे० फागन, सन् १८९३ ई०, चेप्टर ३ बी, ३ सी और ३ डी (पृष्ठ ७४-७५, १०२-१०३, १०६, १०८, १३१-१३२)।

* "विष्णोई धर्म-'नरसिंह पुराण' के अनुसार जाम्भोजी विष्णु के अवतार, अवतार-कथा और प्रयोजन, जाम्भोजी का परम्परागत परिचय, प्रह्लाद और होलिका, होली मनाना, साधु-गायणा,-हवन-तीर्थ-यात्रा, सामाजिक-जीवन, ववाहिक रीति-रिवाज, मुर्दे गाड़ना, कतिपय सामान्य और विशिष्ट बातें, विभिन्न जातियां उनका गोत्र और और व्यवहार-सम्बन्ध, धर्म-नियम-पालन आदि।

१७-श्री बीकानेर के राव श्री बीकाजी और नराजी का जीवन चरित्र सचित्र मुन्शी देवीप्रसाद कायस्थ, सन् १८९३ ई०।

* पूजनीक चीजो मे जाम्भोजी प्रदत्त बरीसाल नगाडा भी, इनके लिए बीका की जोधपुर-चढाई ।

१८-दि कास्टस आफ मारवाड मारवाड दरबार, जोधपुर, सन् १८९४, पृष्ठ ४१-४२। "बिश्नोई" के अ तगत ।

* विष्णोइयो की सख्या-४००२३ । जाम्भोजी और सम्प्रदाय का । रीति-रिवाजो म हिन्दू और मुस्लिम धम का मिश्रण । सन् १८८१ की पजाब सन्सस रिपोर्ट का उद्धरण ।

१९-रिपोट ग्रान दि सेन्सस् आफ १९८१, वाल्यूम थर्ड, दि कास्टस आफ मारवाड मारवाड दरबार, जोधपुर, सन् १८९४ ई० ।

* जाम्भोजी का जीवन, उनकी मान्यता-विचार, सम्प्रदाय-प्रवत्तन, धम-नियम, सामाजिक रीति-रिवाज आदि । (विशेष द्रष्टव्य-सदभ सख्या-२०)

२०-रिपोट मरदुमशुमारी राज मारवाड, बाबत सन् १८९१ ई० तीसरा हिस्सा, पहला विभाग, सन १८९५, पृ० ९३-९९ ।

* "बिश्नोई" । जाम्भोजी-राव दूदा का मिलना-अकाल, सम्प्रदाय- प्रवत्तन, २९ धम-नियम, नागौर के शासक मुहम्मदखा के विरोध पर मुसलमानी मजहब की पाच बातें भार जोडना, जाम्भोलाव, स्वगवास मुकाम-वहा फागुन का मेला और पचायत द्वारा झगडो का निपटारा, साडिया छोडना, रोटू मे जाम्भोजी की तलवार और पाव के निशान का पत्थर, विष्णोई गाथा और मुकाम-मन्दिर म पूजा -पद्धति, नियम-पालन, नाता-विवाह, मुर्दे गाडना, छुआछूत-विचार, थापण, गायणा, झगडो के निपटारे की रीति, पाहल, कतिपय सामान्य और विशिष्ट बातो आदि का ।

२१-दि ट्राइब्स एण्ड कास्टस आफ दि नाथ वस्टन प्रोविन्सेस् एण्ड अवध डब्ल्यू-कुक, सन् १८९६ ।

* विश्नोइयो का उल्लेख ।

२२-रिवाइज्ड इन्स्ट्रक्शनस फार स्पोटसमैन अदर दन सोल्जरस इस्यूड अन्डर पजाब गवर्नमैन्ट आडरस कन्टेन्ड इन देयर सकूलर न० १-११५, डेटेड यड फब्रुअरी, १८९६ ए० एम० स्टा, डिपुटी कमिश्नर, हिसार डिस्ट्रिक्ट द्वारा ।

* हिसार के विष्णोई-गावा म शिकार न करने सबधी राजाज्ञा । हिसार जिले के ६, तहसील हिसार के १२, तहसील फतेहाबाद के २६ और तहसील सिरसा के १३ गावा के लिए (गावा के नामोल्लेख सहित) ।

२३ आडर-ता ८ माच, १८९९ ई० सी० एम० किग, डिपुटी कमिश्नर, फीरोजपुर द्वारा ।

* फीरोजपुर के १६ विष्णोई-गावों मे शिकार न करने सबधी राजाज्ञा (गावो के नामोल्लेख सहित) ।

२४-दबिस्ताने मजाहिब मुल्ला मोहसिन फानी, नवलकिशोर प्रेस, कानपुर, जनवरी १९०४ ई० (लेखक फानी बादशाह शाहजहा का समकालीन बताया जाता है) ।

* बिश्नोई मत को मानने वाले हिन्दू-मुसलमान दोनो, पूव की ओर मुह करके नमाज पढना, नियम-पालन, सुन्न और मिकाइल, इजराइल, जिबराइल, मुहम्मदाइल आदि

फरिश्ता का नाम जपना, मुर्दे गाडना–आदि ।

२५–संत–संदेश[1] जिल्द ६, नं० १ श्री शिवव्रतलाल लाहोर, पृ० ६५ ।

- मुनीन्द्र जम्भनाथ देवजी द्वारा ईश्वर भजन–प्रचार, लाखों का उद्धार विश्नोई मत आचार्य–शब्द–अभ्यासी और सुरत शब्द योगी ।

२६–(क) आर्य–समाज में शांति का उपाय–रामचन्द्रजी का सच्चा दर्शन[2] पं० लेखराम, सद्धर्म प्रचारक प्रेस, जालन्धर ।

- जाम्भोजी का मौलवियों से शास्त्रार्थ करके उनको और सैकड़ों आदमियों को दी इसलाम से नफरत दिलाकर वैदिक धर्मानुयायी बनाने का ।

(ख) कुल्लियात आर्य मुसाफिर पं० लेखराम, सन् १९०४ (उर्दू संस्करण) । हि सस्करण पहला भाग, सन् १९६३, पृष्ठ ११०–१११ ।

- "पुराण किसने बनाये" ? के अन्तर्गत अन्य मतवादी (सिक्ख गुरुओं के अतिरिक्त अधोजा (जम्भोजी नाम से तात्पर्य प्रतीत होता है) द्वारा तम्बाकू निषेध का "पतितोद्धार के अन्तर्गत" वैष्णवी (विश्नोई) बनियों (वैश्यों) के साहस का ।

२७–पंजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियरस, वाल्यूम–सेवेन्ड, हिसार डिस्ट्रिक्ट (पार्ट–ए) पी० जे फागन, रिवाइज्ड एण्ड ब्रॉट अपटूडेट बाई–सी० एम० किंग, सन् १९०७, पृष्ठ ६२, ७. १०२, ११०, और १४१ ।

- विश्नोइयों में विवाह–संस्कार, जनसंख्या–विभिन्न जातियां, रीति–रिवाज, विश्वास धर्म, जाम्भोजी का जीवन–परिचय, २९ धर्मनियम–उनका पालन विष्णु नाम जप पहनावा, खान और पाहन–संस्कार, हवन, साधु, मुर्दे गाडना, होली मनाने में भिन्न जनसंख्या तथा तीर्थ–मुकाम, समराथल, जाम्भोलाव, अपराध उनका निर्णय आदि

२८–पंजाब गजेटियरस, सन १९०८ ई० ।

- सम्प्रदाय की प्रमुख विशेषताएँ, विष्णु के अवतार जाम्भोजी की अवतरण–कथा, पूजा पद्धति, सामाजिक रीति–रिवाज आदि ।

२९–दि इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया, न्यू एडिशन, सन् १९०८ ।

(क) वाल्यूम–१७ मुरादाबाद, पृष्ठ ४२४ ।

- बिश्नोई मूलतः धार्मिक सम्प्रदाय, जन संख्या–१६००, यू० पी० में अन्यत्र नहीं ।

(ख) वाल्यूम–१४, जोधपुर पृष्ठ १८९ ।

- बिश्नोई–हिन्दू सम्प्रदाय, जन संख्या ३३०००, खान–पान, रीति–रिवाज आदि

(ग) वाल्यूम–२१, रतनगढ़, पृष्ठ ३०८ ।

१–विष्णु धर्म प्रकाश सम्पादक–श्री बामनाश्रमा पुत्र, कालवी, सन १९ ० प्राप्ति स्थान–माता निमाराम पुत्र, दुकान–गंगाराम नारायणराम, कालवा पृ० ७ दास–बिश्नोई ।

२–वही, पृष्ठ ७१ ।

* यहा विश्नोइयो के निवासी होने का।

३०-प्रोविन्सियल गजेटियरस आफ इन्डिया, राजपूताना वेस्टन राजपूताना स्टेटस् रसिडेन्सी मेजर के० डी० इर्स्किन, सन् १९०९, जोधपुर, पृष्ठ १८०-१८१।

* विश्नोइयो के रीति-रिवाज, नियम-पालन आदि का।

३१-राजपूताना गजेटियर, वाल्यूम थर्ड ए, दि वेस्टन राजपूताना स्टटस रैसिडेन्सी एन्ड दि बीकानेर एजेन्सी मेजर के० डी० इर्स्किन, सन १९०९।

(क) जसलमेर स्टेट, पृष्ठ २२।

* विश्नोइयो द्वारा मुर्दे गाडने का।

(ख) जोधपुर स्टेट, पृष्ठ ८३, ९०-९१, ९६, १००, १०१, १९७।

* बीकानेर, जोधपुर, जसलमेर और उदयपुर मे विश्नोइयो का निवास, जाम्भोजी, २९ धर्मनियम, नागौर के मुसलमानो के प्रतिरोध पर इनमे पाच इसलामी बाते और जोडना, मुर्दे गाडना, रीति-रिवाज-पहनावा, राव दूदा को लकडी की तलवार देना। मडौर-तनाम करोड देवताओ का स्थान मे एक प्रतिमा जाम्भोजी की।

(ग) बीकानेर स्टेट, पृष्ठ ३३७, ३३९

* विश्नोइयो द्वारा मुर्दे गाडने का, जन सख्या-८५९८।

३२-ए गजेटियर आफ दि जसलमेर स्टट एण्ड सम स्टेटिसटिकल टेबल्स मेजर के० डी० इर्स्किन, सन १९०९, इन्डेक्स-पृष्ठ ४५।

* इस "विलक्षण" सम्प्रदाय का उल्लेख।

३३-बीकानेर राज्य का इतिहास कु वर कन्हैया जू देव, खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, सन् १९१२ (सवत १९६९) पृष्ठ २७, पाद-टिप्पणी।

* जोधपुर से बीकानेर लाए गए राजचिह्नो मे जाम्भोजी-प्रदत्त बरीसाल नगारे का उल्लेख।

३४-अगरवाल अगरोहा की जागती जोत श्री ब्रह्मानदजी के शिष्य निभयानदजी रचित, खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई, सन १९१२, पृष्ठ ८७-पाद-टिप्पणी।

* अगरोहे के चारो ओर बहुत से ग्रामो मे विश्नोई कौम के हजारो घर, जाम्भोजी, उनकी गौभक्ति।

३५-कस्टमरी ला आफ दि हिसार डिस्ट्रिक्ट (एकसप्ट दि सिरसा तहसील) वाल्यूम-२५, रचित-सी० ए० एच० टाउनसेन्ड, पजाब गवनमेन्ट प्रेस, लाहोर, सन १९१३।

* इस जिले मे अन्य लोगो और जातियो के साथ विश्नोइयो के भी मान्य-रीति-रिवाजो, प्रथाओ और परम्पराओ का प्रश्नोत्तर रूप मे स्पष्टीकरण और निरूपण।

३६-दि ट्राइब्स एन्ड कास्टस आफ दि सेन्टल प्रोविन्सेस आफ इन्डिया (वाल्यूम सकेन्ड) आर० वी० रसल और रायबहादुर हीरालाल, मकमिलन एन्ड क० लि०, लदन, सन १९१६।

* विश्नोई निम्नलिखित शीर्षको के अन्तगत अपेक्षाकृत विस्तृत परिचय —सम्प्रदाय का

उद्‌भव, जाम्भोजी का जीवन, २-जाम्भोजी के उपदेश, शब्दवाणी, २९ धर्मनियम, ३-पंजाब के विश्नोइयों के रीति-रिवाज, ४-दीक्षा-संस्कार, ५-सम्प्रदाय का स्वरूप, ६-मध्यप्रदेश के विश्नोई, उनका परिचय, ७-विवाह, ८-मृतक-संस्कार, ९-सम्प्रदाय का सामान्यतः जाति में विकसित होना, कतिपय अन्य सामाजिक तथ्य।

३७-ए प्रोग्रेस रिपोर्ट आन दि वर्क डन ड्यूरिंग दि ईयर १९१६ इन कनेक्शन विद दि बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल सर्वे आफ राजपूताना डा० एल० पी० टैसीटरी, जनरल एण्ड प्रोसिडिंग्स, एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल (न्यू सिरीज), वाल्यूम-१३, १९१७ न० ४, १० नवम्बर, १९१७, पृष्ठ २०७।

* जांगलू में जाम्भोजी के मन्दिर, चोले और जाम्भोजी का।

३८-ऐन इन्साइक्लोपेडिया आफ रिलिजन्स मोरिस ए० कैन्ने, ई० पी० डटन एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क, सन १९२१।

* जाम्भोजी, सम्प्रदाय पंजाब में स्थापित, स्वरूप और कतिपय धर्म-नियम।

३९-मंडोर (अंग्रेजी) जोधपुर गवर्नमेंट, जोधपुर।

* 'तेंतीस करोड़ देवता का स्थान" की १६ प्रतिमाओं में एक जाम्भोजी की, जाम्भोजी का राव दूदा को लकड़ी की तलवार देना।

४०-मंडोवर का इतिहास जगदीशसिंह गहलोत, सन् १९२१ ई० (संवत् १९७८), पृष्ठ १९-२१।

* 'वीरभवन" की मूर्तियों में एक जाम्भोजी की जाम्भोजी का परिचय, सम्प्रदाय प्रवर्तन, नागौर के हाकिम मुहम्मदखां के विरोध पर मुसलमानी मजहब की बातें भी शामिल करना, जाम्भोलाव, मुकाम-फागुन का मेला, झगड़े निवारणार्थ पंचायतें, नियम-पालन, रहन-सहन, पहनावा।

४१-भारत का धार्मिक इतिहास वेयर निवासी पं० शिवशंकर मिश्र कृत आर डी बाहती एण्ड कं०, न० ४, चोर बगान लेन कलकत्ता, सन् १९२३ (संवत १९८०), पृष्ठ ३३१

* विष्णुरूप जाम्भोजी द्वारा दिल्ली में स्थापित, शव-गाड़ना, विवाह में कुरान और हिन्दू शास्त्रों के वाक्यों का उच्चारण।

४२-मारवाड़ राज्य का इतिहास (द्वितीयावृत्ति) जगदीशसिंह गहलोत, हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर, सन् १९२५, पृष्ठ ९२।

* मंडोर के 'वीरभवन की मूर्तियों में एक जाम्भोजी की, जाम्भोजी का परिचय, "विश्नोइयों" के नियम-पालन आदि का।

४३-तवारीख-टावरी महता महजना के खानदान की महता उमेदसिंह वल्द अजीतसिंह, विमा मूहणलाल जगन्नाथ, जसलमेर, सन १९२५ (संवत १९८२), पृष्ठ ६३-६४।

* नाचणे से कमरसिंघ द्वारा विक्रूपुर में महता विसनसिंघजी को लिखित पत्र-"विसनोइयां" से ऊंटा के लिए पांच रुपये लेने और उनसे तकरार के लिये उलाहना।

४४-ऊमर काव्य कवि ऊमरदान अचनूप्रताप न्यायी एण्ड कं०, जोधपुर, तृतीय संस्करण,

सन १९३०, पृष्ठ ७२, ३३३–पाद–टिप्पणियाँ ।'

* जाम्भोजी, "बिसनाई", नियम–पालन, पाहल से शुद्धि का, कविता म भी नामोल्लेख ।

४५–सेंसस आफ इंडिया, १९३१, वाल्यूम फस्ट, पार्ट फस्ट जे एच हट्टन, पृ० ४०२ ४१० ।

* टाड के आधार पर सिंघ के ब्राह्मण "बिश्नोइयों" तथा हिसार के बिश्नोइयो द्वारा मुर्दे गाडना ।

४६–सन्सस आफ इण्डिया, १९३१, वाल्यूम २७ ले०–कनल बी० एल० कोले, पृष्ठ १२४, १२६ ।

* पश्चिम म "बिश्नोई" (जनसख्या–६६८७३) पहले सम्प्रदाय था, अब एक पृथक जाति, प्रधानत जाट, बीकानेर, जैसलमेर, मारवाड म ।

४७–सन्सस रिपोर्ट आफ बीकानेर स्टेट, सन् १९३१ ।

* रणधीरजी को चने का जहर देकर मारना और दिल्ली भागना, मुसलमान बनना, काजी की लडकी से विवाह, मुकाम–मन्दिर और ग्रथो पर कब्जा करना, "बिश्नोइयो" द्वारा कतिपय मुसलमानी बातें मानने के बदले कब्जा छोडना, पाहल से स्वय की शुद्धि प्राप्ति ।

४८–जयमलवशप्रकाश गोपालसिंह मेडतिया, सन् १९३२ पृष्ठ ७१, पाद–टिप्पणी ।

* मेजर के० डी० इर्स्किन के आधार पर "वैष्णव" सम्प्रदाय के सस्थापक जाम्भोजी, उनका राव दूदा को लकडी की तलवार देना ।

४९–दि हाउस आफ बीकानेर गवर्नमेन्ट प्रेस, बीकानेर, सन १९३३, पृष्ठ ११० ।

* राजचिह्नों मे जाम्भोजी प्रदत्त बरीसाल नगारे (सख्या १२) का ।

५०–विजडम एन्ड वेस्ट इन दि पजाब विलेज लेखक–माल्कम ल्याल डार्लिंग, सी० आई० ई०, इण्डियन सिविल आफिसर, हम्फ्रे मिलफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, सन् १९३४, चप्टर ६, पृष्ठ १५०–१५२ ।

* सदलपुर गाव के बिश्नोइयो के सन्दर्भ मे जीवरक्षा, मुसलमानो को गाय न बेचना, २९ नियम, उनके पालन की दृढता, जाम्भोजी, मुकाम के दो मेले, सफाई का विशेष ध्यान, पचायत का आदर, उद्योगी और परिश्रमी किन्तु झगडालू ।

५१–बीकानेर की ऐतिहासिक गाथाएँ प० अयोध्याप्रसाद तिवारी, प० सत्यनारायण द्विवेदी, एज्युकेशनल बुक डिपो, बीकानेर, सन १९३४, पृष्ठ ४–५ ।

* जाम्भोजी का जीवन, २९ नियम, नियम–पालन, मुकाम म फागुन मेला ।

५२–योगाक, कल्याण – वर्ष–१०, सख्या–१, गीताप्रेस, गोरखपुर, अगस्त, १९३५, पृ० ८१७ ।

* जाम्भोजी का परिचय, बिश्नोई (वैष्णव) सम्प्रदाय–प्रवर्तन, तालवा म समाधि, मेले ।

५३–राजपूताने का इतिहास (प्रथम भाग) जगदीशसिंह गहलोत, सन् १९३७, पृष्ठ ७२, ९०, ६३३ ।

- निवासियों में 'बिसनोई' जाति का, जैसलमेर में बिसनोइयों की संख्या ३६४६।

५४-करनी चरित्र किशोरसिंह बार्हस्पत्य, राजस्थान रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता, सन् १९३८, पृष्ठ १८४, २४४-२४९।

- जाम्भोजी का परिचय, राव दूदा का मिलना, २९ धर्म-नियम, नागौर के सूबेदार के विरोध पर ५ बातें मुसलमानी की स्वीकार करना, मुकाम-मेला, राव जोधा को बरी साल नगारा देना।

५५-जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, सन् १९३८, पृष्ठ २५-२६, २६५।

- मंडोर के 'तेतीस करोड़ देवता' के देवालय की १६ मूर्तियों में एक जाम्भोजी की, जाम्भोजी का परिचय। पूजनीक चीजों में वरीसाल नगाड़े का नामोल्लेख।

५६-बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, सन् १९३९, पृष्ठ १६, २६, ५६।

- धर्म के अन्तर्गत। 'बिसनोई' मत के प्रवर्तक 'जाम्भा नामक सिद्ध' का परिचय, मुख्य धर्म-नियम, हिन्दू मुसलमानों में एकता के लिये मुसलमानी धर्म की कुछ बातें जारी कीं। मुकाम-मेला, झगड़े निपटाना, पुनर्विवाह। जांगलू में जाम्भोजी के मन्दिर और चोले का।

५७-बीकानेर के वीर नरोत्तमदास स्वामी, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर।

- जाम्भोजी का परिचय, बिसनोई पंथ, नियम-पालन, मुकाम-मेला।

५८-एसेसमेन्ट रिपोर्ट आफ दि फर्स्ट रेगुलर सेटलमेन्ट आफ गंग केनाल कोलोनी रायसाहब बिहारीलाल, सन् १९४६, पृष्ठ ३१।

- विष्णु के अवतार जाम्भोजी, उनके अनुयायी बिश्नोइयों की प्रवृत्ति, जीविका आदि।

५९-पंजाब प्रान्त सम्पादक-रामनारायण मिश्र प्रकाशक-भूगोल कार्यालय, प्रयाग, सन १९४६, पृष्ठ ४६।

- जनसंख्या के अन्तर्गत विश्नोई सम्प्रदाय की उत्पत्ति, जाम्भोजी का परिचय, धर्म-नियम, पाहल-दीक्षा-संस्कार।

६०-दयालदास की ख्यात, भाग २ सम्पादक-डा० दशरथ शर्मा, अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर, सन् १९४८ (संवत २००५) पृष्ठ २१।

- पूजनीक चीजों में जाम्भोजी-प्रदत्त वैरीसाल नगारे (संख्या ११) का।

६१-साधु संग्रह अथवा नूतन भक्तमाल (राधा स्वामी) संतदास माहेश्वरी, प्रकाशक—लेखक, स्वामीबाग, आगरा, सन १९५०, पृष्ठ २२४-२२५।

- 'गूंगा पीर-जाम्भाजी' का परिचय।

६२-उत्तरी भारत की संत परम्परा श्री परशुराम चतुर्वेदी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग।

(क) प्रथम संस्करण, सन् १९५१ ई०, पृष्ठ २५७, ३७०-३७२।

* संत जम्भनाथ या जाम्भोजी का संक्षिप्त परिचय, रचनाएँ, सिद्धान्त व साधना, 'सतमाल' से रचना के उदाहरण।

(ख) द्वितीय संस्करण, सन् १९६४, पृष्ठ ३३२-३३७।

* पूर्व मत में किंचित परिवर्तन, विश्नोई सम्प्रदाय-संक्षिप्त परिचय, जाम्भोजी का जीवन, रचनाएँ और विचार-धारा, समाधि तथा सम्प्रदाय।

६३-संत काव्य श्री परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद, सन १९५२ ई०।

* 'संत जम्भनाथ' का परिचय, उनकी प्राप्त फुटकर रचनाओं का वर्ण्य-विषय, १ पद और ३ दोहे उद्धृत।

६४-हिंदी साहित्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, अतरचन्द कपूर एण्ड संस, देहली, सन् १९५२ ई०, पृष्ठ १४७।

* विश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक जम्भनाथ-उनकी रचनाओं में योग, अजपा-जाप आदि बातों की प्रधानता का उल्लेख।

६५-भक्त चरितांक, कल्याण वर्ष २६, संख्या १, गीताप्रेस गोरखपुर, जनवरी, सन १९५२, पृष्ठ ४५६।

* 'सन्त श्री जाम्भोजी महाराज' का परिचय, विश्नोई-मत की स्थापना, २९ धर्म-नियम।

६६-राजस्थान की जातियां प्रस्तुतकर्ता एवं प्रकाशक-बजरंगलाल लोहिया, कलकत्ता, सन् १९५४ ई०, पृष्ठ ३३-३४।

* विश्नोई जाम्भोजी का परिचय, सम्प्रदाय-स्थापना, रीति-रिवाज, पेशा, नियम पालन।

६७-इनसाइक्लोपेडिया आफ रिलिजन एण्ड एथिक्स मन् १९५५, वाल्यूम ६, हिंदुइज्म-माडर्न हिंदुइज्म डिफाइन्ड, पृष्ठ ६९८।

पंजाब के विश्नोइयों के मुर्दा गाडने का उल्लेख।

६८-संतवाणी अंक, कल्याण वर्ष २९, संख्या १, गीताप्रेस गोरखपुर, जनवरी, सन् १९५७ ई०, पृष्ठ ३५९।

* संत जम्भनाथ (जाम्भोजी), उनकी ३ साखियां (दोहे)। ये दोहे वही हैं जो संदर्भ संख्या ६३ में उद्धृत हैं।

६९-सेंड ड्यूट एण्ड सायल-राजस्थान डाइरेक्टरेट आफ एग्रीकल्चर, राजस्थान सरकार, मई १९५८, पृष्ठ ३४।

* विश्नोई सम्प्रदाय-बीकानेर और मारवाड़ में-इनके रीति-रिवाजों में हिन्दू और मुसलमान-दोनों संस्कृतियों का सम्मिश्रण, जाम्भोजी, बीस और नौ से विश्नोई नाम।

७०-राजस्थानी भाषा और साहित्य (विक्रम संवत १५००-१६५०) डा० हीरालाल माहेश्वरी आधुनिक पुस्तक भवन, ३०-३१, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता ७, सन् १९६०, पृष्ठ २७६-२७९।

* जाम्भोजी का जीवन, विश्नोई सम्प्रदाय का स्वरूप, २९ धर्मनियम, कतिपय सबदों के मौलिक उदाहरण।

७१–संत परम्परा और साहित्य (धर्मेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ) धर्मेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ समिति, पटना, सन् १९६०, पृष्ठ ३१३।

* हिन्दी संत कवियों का तिथिक्रम, ज्ञानमार्गी संतों के अन्तर्गत, संख्या १४–संत जम्भनाथजी का जम्भो, समय–संवत् १५०८–१५८०, सम्प्रदाय–पुष्कर।

७२–गजेटियर आफ इंडिया, राजस्थान, बाड़मेर डी० सी० जोशी, सन् १९६२, पृ० ५५।

* विश्नोई जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर और उदयपुर में, जाम्भोजी नागौर के मुसलमानों के विरोध से उनकी ५ बातें स्वीकार कीं, मुर्दे गाड़ना, पहनावा आदि।

७३–क्षत्रिय जातियों का उत्थान-पतन एवं जाटों का उत्कर्ष कविराज योगेन्द्रपाल शास्त्री, प्रकाशक–ठाकुर समरसिंह, कन्या गुरुकुल, हरिद्वार, सन् १९६२ पृष्ठ ६११।

* 'जाट साधु संत' के अन्तर्गत 'महात्मा जम्भदेव' का परिचय, उनके विचार, नगीना के विश्नोइयों का हाफिज को मारना और दण्ड से बचने के लिए मुसलमानी बातें ग्रहण करने की बात असत्य, सामूहिक रूप से सम्पूर्ण विश्नोइयों के आर्यसमाजी होने का।

७४–राजस्थानी सबद कोस प्रथम खण्ड श्री सीताराम लालस, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर, सन १९६२, पृष्ठ १२३। 'राजस्थानी साहित्य का परिचय'–

* जाम्भोजी का परिचय, १ सबद (स्वीकृत संख्या ११) का उदाहरण।

७५–श्री महाराज हरिदासजी की वाणी सम्पादक–श्री मंगलदास स्वामी, निखिल भारतीय निरंजनी महासभा, दादू महाविद्यालय, मोती डूंगरी रोड, जयपुर, सन् १९६२ श्री परशुराम चतुर्वेदी लिखित प्रस्तावना, पृष्ठ १०।

* 'जम्भनाथ या जाम्भोजी' की विचारधारा का परिचय।

७६–हिन्दी संत साहित्य डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली, सन १९६३, पृष्ठ ५८।

* पंथ निर्माण का सूत्रपात (संवत् १५५०–१६००) फुटकर संत–विश्नुई मत के प्रवर्तक संत जम्भनाथ का उल्लेख।

७७–सेंसस आफ इंडिया १९६१, वाल्यूम–१४, राजस्थान, पार्ट सिक्स्थ–ए, विलेज सर्वे मोनोग्राफ्स–४ मुकाम सन १९६५।

* मुकाम–सर्वेक्षण, जाम्भोजी का जीवन, कार्य, यहां के लोगों का धार्मिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक जीवन, आरती, परिशिष्ट में कतिपय पट्टे परवानों की नकल और सबदों के कुछ अंश आदि।

७८–कास्ट एण्ड रेस इन इण्डिया जी एस घुर्ये, प्रथम संस्करण, सन् १९३२, पृष्ठ २९, ६५। तीसरा संस्करण–कास्ट एण्ड क्लास इन इण्डिया सन् १९५७, पृष्ठ ३३, पापुलर बुक डिपो, बम्बई।

* विश्नोई सम्प्रदाय के पृथक् जाति बन जाने का उल्लेख।

७९–भारतवर्ष में जातिभेद क्षितिमोहन सेन, अभिनव भारती ग्रन्थमाला, १७१–ए, हरिसन रोड, कलकत्ता, सन् १९४० पृष्ठ १५४।

* बम्बई प्रान्त में विश्नोई सम्प्रदाय के पृथक जाति बन जाने का उल्लेख।

८०-कास्टस इन इंडिया इटस नेचर, फन्क्शन एण्ड आरिजिन्स जे एच हट्टन, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई-१, चौथा संस्करण, सन् १९६३' पृष्ठ २३६, २५३ और २७८।

* सिंध के बिश्नोई ब्राह्मण, हिसार के विष्णोईया द्वारा मुर्दा गाडना, विभिन्न जातियों की।

८१-नाथ और संत साहित्य (तुलनात्मक अध्ययन) डा० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५, सन् १९६५, पृष्ठ ४०, ५१, ६६।

* नाथपंथ से संबद्ध पश्चिमी प्रदेश के जम्भनाथ, संतमत के २५ प्रमुख सम्प्रदायों में विश्नोई सम्प्रदाय, विश्नोई साम्प्रदायिक जाति का।

८२-"अध्ययन और अन्वेषण" में डा० हीरालाल माहेश्वरी का "पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ", निबंध। नेशनल पब्लिशिंग हाउस-दिल्ली-७, नवम्बर, १९६६, पृष्ठ १२८-१३१।

* "प्रथम" जाम्भोजी का विशेषण, कतिपय प्रसिद्ध विष्णोई कवियों की 'प्रथम जभ' प्रयोगवाली रचनाओं के उदाहरण, जाम्भोजी का काल।

८३-ब्रज साहित्य का इतिहास डा० सत्येन्द्र, भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९६७ (सं० २०२४), भूमिका, पृष्ठ १४-२२ तथा ७०३-७०५।

* विष्णोई सम्प्रदाय का स्वरूप और कतिपय कवियों की सूची।

८४-सोशल लाइफ इन मेडिएवल राजस्थान (अंग्रेजी) डा० गोपीनाथ शर्मा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा-३, सन १९६८, पृष्ठ २२९।

* 'साम्भा' उनके काव्य और कतिपय धर्म नियमों का उल्लेख, मुसलमानी प्रभाव की कल्पना।

पत्र-पत्रिकाएँ —

८५-मरु भारती, पिलानी, वर्ष ७ अंक २, जुलाई, १९५९। राजस्थान के प्रमुख संत सम्प्रदाय-एक परिचय पृष्ठ ४५-५१।

* संत जभनाथ, बिश्नोइयों का नियम-पालन।

८६-राजस्थान-भारती, भाग ७ अंक ४, सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट, बीकानेर, अगस्त, १९६१, पृष्ठ ५७-६३।

* "विश्नोई पंथ' का परिचय।

निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाओं में डा० हीरालाल माहेश्वरी के निबंधों में प्रासंगिक उल्लेख —

८७-"जागृत महिला" (साप्ताहिक), मातृ सेवा संघ, सीताबर्डी, नागपुर-१, ३०-३-६२, ६-४-६२ और १३-४-६२ के अंकों में।

* "जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय सामान्य परिचय"

८८-परिशोध, चौथा अंक, सन् १९६६, हिन्दी विभाग, पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़, पृष्ठ-११८-१२३-"राजस्थानी के विस्मृत कवि गंद्द और उनके कवित्त"

* गंद्द के विष्णोई कवि होने की सम्भावना, प्रसंगवशात सुरजनजी का भी उल्लेख।

८९ शोध-पत्रिका, उदयपुर, वर्ष-१८, अंक १, सन १९६७, "राजस्थानी ककको काव्य और चतुर नार की बारहखडी,' पृष्ठ ५७-६५।

* वील्होजी कृत ककका सतीसी का।

९०-वरदा, बिसाऊ, वर्ष-१०, अंक २, फरवरी अप्रैल, १९६७, "संत कानोजी और उनकी साखी"-"संत को अंग", पृष्ठ ४८-६६।

- जाम्भोजी के भाव-गुरु के सम्बन्ध में।

९१-कल्चरल फोरम, नम्बर-३६, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, सन् १९६७ "कृष्ण-इन गुजराती एण्ड राजस्थानी लिट्रेचर" (अंगरेजी)।

- विष्णोई सम्प्रदाय के कृष्ण-कवियों का भी नामोल्लेख।

९२-विश्वभारती पत्रिका, शान्तिनिकेतन, जुलाई सितम्बर, सन् १९६७-"राजस्थानी साहित्य कतिपय विशेषताएँ"।

- सम्प्रदाय के स्वरूप, कवि और उनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण।

दिल्ली सिक्दर साह, दे परचौ परचायो।
महमन्खा नागोरि, परचि गुर पाए आयो।
दूद मेडतियो राव, आय गुर पाय विलग्गो।
रावल जसलमेर, परचता सासो भग्गो।
सातिल सनमुखि आय, सुचील जित हुवो सिनानी।
साण राण मु णि सीख, जका गुर कही स मानी।
इव राजिंदर के के अवर, आचारे ओल्खियो।
वील्ह कहै मानों पुह, जाह मुक्ति नैं हाथो दियो॥
—वील्होजी कृत 'कथा जैसलमेर की' से।

कल्जुिग चारो घ्रम, एकठा फुरमाइया।
मुसल व भा जण, जोग जुगति दिखाइया।
—अज्ञात कवि (सख्या २५) कृत 'साखी' से।

जोगी जगम नाद डिगवर। सन्यासी ब्राह्मण ब्रमाचारी॥ ४५ ६ ७।
मनहठ पढिया पिंडत, काजी मुल्ला खेल आप दुवारी॥ ४५ ८ ९।
हाली पूछ पालो पूछ, आ कलि पूछणहारी॥ ८३ २४।
ठाकर पूछ चाकर पूछ, पूछ मीर महारी॥ ८३ ३१।
—जम्भवाणी (सबदवाणी) से।

अध्याय ३

तत्कालीन स्थिति

अध्याय ३

तत्कालीन स्थिति

जाम्भोजी का भ्रमण व्यापक था। यद्यपि उन्होंने देश के अन्य भागों में भी अपने उपदेश दिये थे तथापि उनका प्रमुख कार्य-क्षेत्र राजस्थान रहा था। सम्प्रदाय के अधिकांश पुराने स्थान यहां पर स्थित हैं। साहित्य-निर्माण भी अधिकांशतः यहीं के कवियों ने किया। इस कारण, जाम्भोजी, विष्णोई-सम्प्रदाय और साहित्य को समग्रता में सम्यक् रूपेण समझने और महत्त्व-दिग्दर्शन के लिए पृष्ठभूमि के रूप में १६ वीं शताब्दी राजस्थान की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति का परिचय देना आवश्यक प्रतीत होता है। आगे इसका सिंहावलोकन किया जाता है —

(क) राजनीतिक स्थिति –

(१) राजस्थान नाम-सारे राजस्थान या राजपूताने के लिए पहले किसी एक नाम का प्रयोग होना पाया नहीं जाता, उसके कई अंशों के तो प्राचीन काल में समय-समय पर भिन्न भिन्न नाम थे और कुछ विभाग अन्य बाहरी प्रदेशों के अन्तर्गत थे[1]। शासकों के परिवर्तन के साथ-साथ उनके द्वारा शासित प्रदेशों की भौगोलिक सीमाओं में भी परिवर्तन-परिवर्द्धन होता रहा है।

(२) जांगलू-राठौड़ों के अधिकार से पूर्व बीकानेर का दक्षिणी हिस्सा जांगलू नाम से प्रसिद्ध था। वह सांखले परमारों के अधीन था और उसका मुख्य नगर जांगलू कहलाता था। अब तक वह स्थान उसी नाम से प्रसिद्ध है। जांगल देश के उत्तरी भाग पर राठौड़ों का अधिकार होने के बाद जबसे उसकी राजधानी बीकानेर स्थित हुई तबसे उक्त राज्य को बीकानेर राज्य कहने लगे[2]। तब जांगलू के अन्तर्गत सांखलों के केवल ८४ गांव ही थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय तक पृथक् प्रदेश की प्रसिद्धि के रूप में जांगलू अपना महत्त्व खो चुका था और सुप्रसिद्ध नाम 'बागड़ देश' के अन्तर्गत माना जाता था। बीकानेर के राजा जांगल देश के स्वामी होने के कारण अपने को जांगल धर (जांगल देश) के बादशाह कहते हैं[3]।

(३) सवालक, माड, मेदपाट-साम्भर चौहानों की मूल राजधानी होने के कारण पीछे से उनके अधिकार का साम्भर, अजमेर आदि का सारा प्रदेश सपादलक्ष कहलाने लगा। इसी को सवालक या स्वालक कहते थे[4]। जाम्भोजी ने एक 'सबद' (६३ १४) में इसका उल्लेख किया है। पहले इसके अन्तर्गत जांगलू, जयपुर राज्य का शेखावाटी से लगाकर रण-

१-ओझा ओझा निबंध-संग्रह, प्रथम भाग, पृष्ठ १७, सन् १९५४ (उदयपुर)।
२-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४, सन् १९३९।
३-ओझा ओझा निबंध संग्रह, प्रथम भाग, पृष्ठ १८, १९।
४-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ३९, ४१, सन् १९३८।

थभोर से कुछ दक्षिण तक का प्रदेश जिसमे कोटा रियासत का उत्तरी भाग भी है, मेवाड का माडलगढ से लगाकर सारा पूर्वी हिस्सा, बूदी राज्य का पश्चिमी अश, किशनगढ का राज्य तथा अजमेर का सारा प्रदेश माना जाता था [1]। नागौर पट्टी को अब तक सवालख या 'सवा लख' कहा जाता है [2]। जैसलमेर राज्य का प्राचीन नाम माड है [3]। मेवाड का पुराना नाम मेदपाट और प्राग्वाट मिलता है।

(४) बागड, बागड देश—ओझाजी के अनुसार डूगरपुर और बासवाडा राज्यों का सम्मिलित नाम बागड मिलता है [4]। अन्यत्र उनका कथन है कि बीकानेर राज्य का दक्षिणी और पूर्वी भाग बागड नाम की विशाल मरुभूमि का और कुछ उत्तरी पश्चिमी भाग भारत की मरुभूमि का अश है [5]। ओझाजी का 'बीकानेर राज्य के एक अश को बागड' मानना आशिक रूप से ही मान्य हो सकता है। 'एक अश' ही नही राव बीकाजी द्वारा विजित इस प्रदेश की समस्त भूमि और पश्चात का पुराना बीकानेर राज्य तथा शेखावटी का समस्त प्रदेश सम्मिलित रूप से 'बागड' या 'बागड देश' कहलाता था। इसका बागड या बागड नाम इसलिए पडा प्रतीत होता है कि इस भूमि पर कभी सैकडो वर्षों तक बागडिये चौहानो का राज्य रहा था। बीकाजी के समय इस भूमि का नाम जहा अब बीकानेर राज्य स्थापित है 'बागडी देश' था [6]। जाम्भोजी इसी प्रदेश मे उत्पन्न हुए थे। विष्णोई कवियों ने उनके बागड देश मे अवतीर्ण होने का सोल्लास उल्लेख किया है [7]। अन्य उल्लेखों से भी इसकी पुष्टि होती है [8]।

(५) "बागडदेश" मे राजनीतिक उथल-पुथल राठौड—जाम्भोजी के प्रादुर्भाव से लेकर विष्णोई-सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन के समय—सवत १५४२ तक पीपासर और समराथल के आसपास ही नही, समूचे 'बागडदेश' मे एक महान राजनीतिक उथल-पुथल हो रही थी। इन्ही ३४-३५ वर्षों मे राठौडो ने यहा के जाटो, छापर द्रोणपुर के मोहिलो, पूगल के भाटियो,

---

१—ओझा ओझा निबध सग्रह, प्रथम भाग पृष्ठ २०–२१।
२—ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ ४१।
३—लखमीचन्द रईस तवारीख जैसलमेर (तीसरा भाग), पृष्ठ १२५, सन् १८९२।
४—ओझा निबध सग्रह, प्रथम भाग पृष्ठ २४–२६ और राजपूताने का इतिहास, जिल्द पहली, पृष्ठ २, तिसरी सन १९३७।
५—बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ ५।
६—पाउलेट—बीकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ २, सन १९३८।
७—(क) ओ गुर आयो बागड देस जग मा कियो चाव चान्णो।—साखी, ऊदोजी नैण।
(ख) एकल बाइ पर सिरि आदो बागड देस सुथाव॥—साखी, कवि सख्या—२८।
(ग) थावो गामलिज ध बागड देस, पोल्मी पातसर आवियो।—साखी, वीं होजी।
(घ) भगता काजि कियो परवेस भरत षड मा बागड देस।
समरथलि ऊभो साथरा, नवषडि जोति जुगनि परवरी॥ १२॥
—कथा ग्यानचरी, वील्होजी।
(ङ) सिवरो सिवरो मामसर देव, कलियुग कायम राजा आवियो।
आय अवतरयो बागड देस, सतगुर सुपह बताबियो॥ १॥—साखी, केसोजी।
८—अचलदास खीची री वचनिका, भूमिका, पृष्ठ ११, राज० पु० म०, जयपुर, सवत २०११।

जागलू के सांखलो तथा जोइयो से अनेक ठिकाने जीत लिए। परस्पर वमनस्य, आपसी फूट, यशोलिप्सा और अहंकार के कारण राठोडो के हाथो उनकी पराजय हुई[5]।

(६) जागलू के सांखले–राठोडो के बीकानेर राज्य पर अधिकार होने से पूर्व यह प्रदेश ई भागो म विभक्त था और इस राज्य पर उक्त लोगो का अधिकार था। मरुभूमि और आबादी कम होने के कारण विजेताओ का इस तरफ ध्यान कम ही रहा, जिससे यहा के शासक स्वाधीनता का उपभोग करते रहे। एक नए राज्य–स्थापन की कामना लेकर राव जोधा के पुत्र राव बीका अपने आदमियो सहित विक्रम सवत १५२२ के आश्विन सुदि १० को जोधपुर से प्रस्थान कर मडोर होते हुए देशनोक आए। वहा से उन्होंने चाडासर, कोडम देसर आदि स्थानों पर अधिकार किया और जागलू[1] पहुच कर नापा सांखला की मदद से सांखला के ८४ गाव, अपने अधीन कर लिए[2]। पहले सांखलो की एक शाखा का निवास रुण (जोधपुर राज्य) मे था। वे राणा कहलाते थे। १२ वी शताब्दी के लगभग साखले महीपाल का पुत्र रायसी इस प्रदेश मे आया और दहियो से जागलू ले लिया। बीकानेर से ३६ मील दक्षिण मे स्थित कवलीसर गाव मे साखले राणाओ की १४ वी शताब्दी पूर्वार्द्ध की दवलियां हैं। रायसी की वश परम्परा म नापा सांखलो म बडा प्रसिद्ध हुआ। उसके समय में यहा बिलोच जाति के मुसलमानो के आक्रमण होने लगे जिससे सांखले निबल हो गए। फिर नापा जोधपुर क राव जोधाजी के पास चला गया और कुवर बीका को नवीन राज्य स्थापित करने को उद्यत देख जागलू पर अधिकार करने की सलाह दी[3]। राव जोधा के समय तो जागलू म साखलो का ही राज्य बना रहा था[4] जिसको इस प्रकार, राव बीका ने, सवत १५२२ म अपने अधीन किया। तब से सांखले राठोडो के विश्वासपात्र बन गए। नणसी के अनुसार, नापा सांखला, राव जोधा की तरफ से राणा कुम्भा के दरबार मे भी रहा था[5]।

(७) पूगल के भाटी–बीकानेर राज्य की स्थापना से पूर्व, बीकानेर के पश्चिमोत्तर का सारा प्रदेश जो जसलमेर राज्य की सीमा से पजाब की सीमा तक मिलता है, भाटियों के अधिकार में था[6]। ये वहा लूटमार भी किया करते थे। इनके दो भाग थे–एक पश्चिम की ओर जसलमेर राज्य की सीमा से मिले हुए पूगल प्रदेश के भाटी राजपूत और दूसरे भटनेर (हनुमानगढ) के आसपास बसने वाले भाटी मुसलमान। राव बीका के जागलू पर अधिकार करने के समय भाटी राव शेखा पूगल का स्वामी था। एक बार वह मुल्तान की ओर

१–जागलू बीक जाणइ जगत्त। छत्रपति हूवो ताणाविद्धत्त।
नूर घन्न धल्हल धित्त। चउड रा जेम राव बीक चित।। ४०।।
–गीडू सूजा कृत छद राव जतसी रो, इ० प्र० स० ६६, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर।
२–ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ९९, ९१–९२।
३–वही, पृष्ठ ५३ ५५ ५८, ६९ ७२ ७३, २३८।
४–ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ २१५।
५–ख्यात, भाग १ पृष्ठ ३०–३१, ना० प्र० स० काशी।
६–पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २।

से कुम्भार कर जब मोड़ रहा था, तो वहीं के गुड़गार की सेना से मुठभेड़ हो गई। वह पकड़ा गया और मुलतान में कैद कर लिया गया। ओझाजी के अनुसार, राव बीका ने सेना की रानी की प्रार्थना पर उसको कैद से छुड़वा लिया। इस पर राणा की पुत्री का विवाह राव बीका से हो गया[1]। करनीजी द्वारा राणा को छुड़ाए जाने और उसका विवाह कराए जाने का उल्लेख मिलता है[2]। यह घटना संवत् १५३६ की है[3]। राव बीका ने कोडम-देसर के निकट अपनी राजधानी के लिए किला बनवाना चाहा, जिससे भाटियों को भय हुआ। उन्होंने कुलकरण भाटी के नेतृत्व में राठौड़ों से युद्ध किया। विजयी होने के कारण भाटियों से निरन्तर झगड़ा होने की सम्भावना देख कर राव बीका ने कोडमदेसर से दक्षिण पूर्व में विक्रम संवत १५४२ में किला बनवाया जो बीकानेर[4] नगर के भीतर है। राव शेखा ने भी बीका की अधीनता स्वीकार कर ली और इस प्रकार जांगलू के पश्चात् पूगल बीकानेर राज्य के अन्तर्गत हो गया[5]। मोरखाणा (बीकानेर से २८ मील दक्षिण) गाँव के समीप धाँधी सागर नामक कुएँ के पास एक कतार में २६ देवलियाँ लगी हैं। इनमें से एक को छोड़कर शेष सभी विक्रम संवत् की १६वीं १७वीं शताब्दी के बाद मृत्यु को प्राप्त होने वाले भाटी जागीरदारों की हैं।[6]

(८) भटनेर के भाटी—बीकानेर के उत्तर की तरफ के भाटी राजा दुलचन्द से विक्रम संवत १४४८ में तैमूर ने भटनेर लिया। इसके बाद यहाँ क्रमशः भाटियों, जोहियों और चायलों का अधिकार हुआ। विक्रम संवत् १५८४ में बीकानेर के चौथे शासक राव जैतसी ने यहाँ राठौड़ों का आधिपत्य स्थापित किया। इसके ११ वर्ष बाद बाबर के बेटे कामरां ने इसे जीता। भटनेर के चारों ओर भाटी, चायल और जोहिया जाति के लोग बसे हुए थे। ये लोग अधिकतर मुसलमान थे। विक्रम १६वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध में रैणी के आसपास का इलाका चायल और सीधिया के अधिकार में था।[7] राव बीका ने सीधीवाड़े के स्वामी देवराज सीधी को मारकर यह इलाका भी अपने राज्य में मिला लिया[8]।

१-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ ७४ ९४।
२-(क) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २-३।
(ख) किशोरसिंह बार्हस्पत्य करनी चरित्र पृष्ठ १४१-१४७।
३-किशोरसिंह बार्हस्पत्य करनी चरित्र पृष्ठ १४७।
४-छत्रपति उथारिय छत्र छाह् बताए आडी दीप वार ॥
बीक दुरग कजि कीधवत्त सोभाग दीप जाणी सपत ॥ ४९ ॥-वीठू सूजा कृत छन्द राव जतसी रो। ह० प्रति संख्या ६६, अनूप सं० ला०, बीकानेर।
५-(क) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ ३-४।
(ख) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ ७४।
(ग) वीठू सूजा कृत छन्द राव जतसी रो छन्द ४८, हस्तप्रति सं० ६६, अनूप सं० ला०, बीकानेर।
६-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १ पृष्ठ ५८।
७-(क) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २।
(ख) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ६५, ६६, १००।
८-कुंवर कन्हैया जू देव बीकानेर राज्य का इतिहास, पृष्ठ १८, संवत् १९९९।

(६) 'बागडदेश' के जाट, उनका विस्तार—भटनेर के चारों ओर वहां से लेकर दक्षिण में बीकानेर और उसके आसपास जाटों की आबादी थी। भटनेर विजय के सिलसिले में तमूर ने अपने जीवन-चरित में लिखा है कि जाट जाति बड़ी शक्तिशाली है और ये दुर्दांत जाट टिड्डियों और चींटियों की भांति असंख्य है, कोई भी यात्री या व्यापारी इनके हाथों पड़कर बिना चोट खाए जा नहीं सकता[1]। बीकानेर से ईशान, पूर्व और आग्नेय दिशाओं में तो जाटों का राज्य ही था। ये लोग मुख्यतः सात जातियों में विभक्त थे जिनका परिचय इस प्रकार है[2] —

जाति	गावों की संख्या	मुख्य स्थान	मुखिया का नाम
१ गोदारा	३६०	लाधड़ी, शेखसर	पाण्डू
२ सारण	३६०	भाडंग	पूलो
३ कसवा	३६०	सीधमुख	कंवरपाल
४ बनीवाल (वणियाल)	३६०	रासलाणा	रायसल
५ पूनिया	३६०	बड़ी लूंदी	कानो
६ सिहाग	१४०	सूई	चोखो
७ सोहुवा	८४	धाणसिया	अमरो

जाट लोग मरुभूमि में बहुत प्राचीन काल से निवासी थे। उपर्युक्त सूची से स्पष्ट है कि वर्तमान बीकानेर का बहुत सा भाग पहले वहां के जाटों के अधिकार में था। बीका के आक्रमण के दिनों में उनका शासन निर्बल पड़ गया था। आपसी फूट के कारण उनको राठौड़ों की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। आसपास की अन्य जातियों—मोहिला, जोहिया और जैसलमेर के भाटियों से भी उनकी शत्रुता थी। इसी समय गोदारों और सारणों में पूले सारण की पत्नी मिलकी के कारण आपस में झगड़ा हो गया, जिसमें राव बीका ने पाण्डू गोदार का पक्ष लिया। बीकाजी की शक्ति देख कर जाटों के अन्यान्य वर्ग भी धीरे-धीरे उनकी अधीनता में आ गये।

उपर्युक्त शासक जातियों के अतिरिक्त भी जाटों से सम्बन्धित उल्लेख यत्र-तत्र मिलते हैं जिनमें उनके महत्त्व का पता चलता है। जोधपुर से निकलने के बाद राव बीका को जांगलू लेने की सलाह देने में जाट निकोदर भी एक था[3]। राव जोधा को एक जाटनी द्वारा मंडोर

१—हिस्ट्री आफ इण्डिया एज टोल्ड बाई इट्स् ओन हिस्टोरियन्स, वाल्यूम-थर्ड, पृष्ठ ४२८-४२६, लन्दन, सन १८७१।

२—(क) दयालदास की ख्यात भाग २, पृष्ठ ७, बीकानेर, संवत् २००५।
(ख) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ ४।
इस सम्बन्ध में विभिन्न लेखकों में किंचित् मतभेद भी है। द्रष्टव्य—(१) कर्नल टाड—एनल्स आफ बीकानेर, (२) रामनाथ रत्नू इतिहास राजस्थान, (३) कुंवर कन्हैया जू देव बीकानेर राज्य का इतिहास, (४) देशराज जघीना जाट इतिहास, आदि।

३—विश्वेश्वरनाथ रेउ मारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ९८, पाद-टिप्पणी।

के आसपास की भूमि पहले हस्तगत करने की शिक्षा दिए जाने का प्रसंग बहु-प्रसिद्ध है[1]। राजपूतों और जाटों में परस्पर विवाह भी होते थे। आमेर के कछवाहा कुन्तलजी (जो संवत् १३३३ में वहां के राजा हुए) की एक रानी कश्मीरदेजी, चौहानराव जाट की बेटी थी[2]। शेखावतों के पूर्वज सुप्रसिद्ध शेखाजी बरवाड़े में जन्मे थे और खासोल जाट अमरा के घर ढाणी में धाय के पले थे[3]। जयपुर राज्य का सामोद नगर जो कभी नाथावतों के अधिकार में था, श्यामा नामक एक जाट की ढाणी थी[4]। बाँकीदास के अनुसार उनके समय में, जाखाणपट्टी के जाखड़ जाटों के गांव बीदावतों के पट्टे में, सीहागवाटी के सीहाग जाटों के १४० गांव महाजन के पट्टे में और गोदारों के १४४ गांव बीकानेर राजा के खालसे में थे[5]। बीकानेर राज्य के निवासियों में तीन चौथाई संख्या जाटों की है[6]। अब भी पुराने बीकानेर राज्य,-बीकानेर, चूरू और श्रीगंगानगर जिलों में जाट बहुत बड़ी संख्या में आबाद हैं। जाम्भोजी ने प्रमुखतः जाटों में ही अपने अनुयायी-विष्णोई बनाए थे जिसका उल्लेख 'सबदवाणी' में भी है (१४ ३-४)। विष्णोई बन जाने पर भी जाटों की जाति वही रही जो पहले थी। यही कारण है कि गोदारा जाट भी मिलते हैं और विष्णोई भी।

(१०) जोहियावाटी के जोहिये-जोहियों का मूल निवास स्थान पंजाब में था। इन्हीं के नाम पर सतलज नदी के दोनों तटों पर का पुराने भावलपुर राज्य के निकट का प्रदेश जोहियावाटी कहलाता था। बीकानेर राज्य का उत्तरी भाग पहले जोहियों के अधिकार में था। राठौड़ राव सलखा का छोटा पुत्र वीरम, मालाणी प्रदेश से निकाले जाने पर जोहियों के पास जाकर रहा था। वीरम के छल कपट करने पर उन्होंने उसको मार डाला[7]। राठौड़ों से पराजित होने से पहले उनका ६०० गांवों पर आधिपत्य था। इनका नेता शेरसिंह था जिसका मुख्य स्थान भूरुपाल था। गोदारों से संधि हो जाने के बाद राव बीका ने शेरसिंह पर आक्रमण किया किन्तु वे सफलता प्राप्त न कर सके। अन्त में विजय की कोई सूरत न देखकर उन्होंने षड्यन्त्र द्वारा शेरसिंह को मरवा डाला[8]। ओझाजी के अनुसार, बीका ने सिधाल

१-ओझा (क) उदयपुर राज्य का इतिहास, खण्ड २, पृष्ठ ६०३।
(ख) जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ २०७।
२-श्री हनुमान शर्मा जयपुर का इतिहास पृष्ठ १० सन् १९३७।
३-(क) चारण रामनाथ रत्नू इतिहास राजस्थान पृष्ठ ६३।
(ख) श्री हनुमान शर्मा जयपुर का इतिहास, पृष्ठ ३६।
(ग) पं० झाबरमल्ल शर्मा-खेतड़ी का इतिहास, पृष्ठ ८-९ तथा सीकरी का इतिहास, पृष्ठ २१ २२।
४-हनुमान शर्मा जयपुर का इतिहास, पृष्ठ ९४।
५-दयालदास री ख्यात पृष्ठ ८०, जयपुर, संवत २०१३।
६-[illegible]-राजस्थान, [illegible] आफ बीकानेर।
७-(क) वीरमायण, प्रति संख्या [illegible]-१ [illegible]-२३ ग, [illegible] [illegible] राजस्थानी [illegible] [illegible], [illegible]

पर चढाई की जहा का जोइया स्वामी उसके परो मे आ गिरा[1]। बीकानेर के छठे राजा रायसिंह के समय जोइयो ने उपद्रव किया था किन्तु राठौड सेना ने उनका भीषण सहार किया। फलस्वरूप जोइया राज्य सदा के लिए निर्बल और जनशून्य हो गया[2]।

(११) मोहिलवाटी के मोहिल-राठौडो के आगमन से पहले छापर, द्रोणपुर और चरलू क आसपास का प्रदेश मोहिल राजपूता के अधिकार मे था और मोहिलवाटी कहलाता था। मोहिल चौहानो की एक शाखा है, जिसके स्वामियो ने राणा का विरुद धारण कर उक्त स्थानो के आसपास के प्रदेश पर विक्रम की १६ वी शताब्दी के प्रारम्भ तक राज किया था[3]। नणसी के अनुसार, सवत् ६३१ में वागडियों से मोहिलो न धरती ली थी, नौ सौ बरसा तक छापर-द्रोणपुर का राज मोहिलो के अधिकार मे रहा और सवत् १५३२ मे उनसे राठौडो ने वह प्रदेश लिया[4]। राठौडा के आगमन से पूव बीकानेर मे जाटा के बाद सबसे प्रबल मोहिल राजपूत ही थे। प्राचीन काल मे बीकानेर के बहुत बडे भाग मे उनका आधिपत्य रहा था, यह अनेक देवलियो और शिलालेखो से सिद्ध होता है[5]। १६ वी शताब्दी के आरम्भ म मोहिलो का राजा अजीत था जो बडा वीर और प्रतापी था। वह राव जोधा का दामाद था। सवत १५२१ मे वह राव जोधा द्वारा मारा गया (द्रष्टव्य-तेजोजी चारण, कवि सख्या १)। तब से राठौडो और मोहिलो मे वैर हो गया तथा उनमे कई लडाइया हुइ। केवल चार पाच महीने ही राठौडो का वहा अधिकार रहा होगा कि कु वर मेघा बछराजोत ने अपनी धरती वापिस छीन ली। बछराज अजीत का भतीजा था। सवत १५२३ के लगभग वह भी राठौडो द्वारा मारा गया। उसके पश्चात छापर-द्रोणपुर का स्वामी उसका पुत्र मेघा हुआ। उसके जीते जी राठौड कुछ न कर सके। सवत १५३० म उसके मरने पर बरसल वहा का स्वामी हुआ। वह एक निर्बल शासक था। मोहिलो मे परस्पर फूट हो गइ और सवत १५३१ म राव जोधा न वह इलाका अपने अधीन कर लिया[6]। इस पर राणा बरसल, उसका छोटा भाई नरबद तथा बाघा बाघलोत बादशाह बहलोल लोदी के पास दिल्ली म गए। बादशाह ने हिसार के सूबेदार सारगखा का फौज दकर भेजा[7]। उन्होने अपने इलाके का राठौड बीदा से पुन वापिस ले लिया। इस पर राव बीका न मोहिलो पर चढाई कर उन्हे परास्त किया और मोहिलवाटी को विजय कर वह प्रदेश अपने भाई बीदा को द दिया। तब से वह बीदावाटी कहलाने लगा। बीदा ने अपने जीवनकाल में ही छापर-द्रोणपुर के दो भाग कर अपने पुत्र उदयकरण को द्रोणपुर और ससारचन्द्र को पडिहारा बाट दिया[8]। राव बीदा का उल्लेख जाम्भोजी के जीवन-वृत्त और जाम्भाणी साहित्य म अनेक वार हुआ है।

१-बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ १०१।
२-पाउ राजस्थान ऐनल्स आफ बीकानेर।
३-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ६०-६१।
४-नणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृष्ठ १६५-१६६ ना० प्र० स०, काशी।
५-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ५६-६२।
६-विश्वेश्वरनाथ रेउ मारवाड का इतिहास प्रथम भाग, पृष्ठ ९७-१००, जोधपुर।
७-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ २४७।
८-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ७१ तथा खण्ड २, पृष्ठ ६४६

(१२) शेखावाटी के कायमखानी—राव बीका के इस प्रदेश में आने के समय शेखावाटी कायमखानियों के अधिकार में थी[1]। शेखावाटी के खंडेला प्रदेश का स्वामी रिड़मल प्राय बीका के राज्य में लूटमार किया करता था। इस पर राव बीका ने उस प्रदेश को लूटा[2]। शेखावाटी-विजय का उल्लेख बीठू सूजा ने भी किया है[3]।

(१३) राजस्थान में मुसलमानों का प्रवेश-अजमेर—सबदवाणी के कई सबदों और प्रसंगों में मुसलमानों के मजहब और कार्यों आदि के उल्लेख हैं। इनमें नागौर के मुहम्मदखां और अजमेर के मल्लूखां के नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रचलित हैं। तत्कालीन राजस्थान में वस्तुत अजमेर और नागौर ही मुसलमानों के प्रधान स्थान थे। यहां मुसलमानों का प्रवेश विक्रम की तेरहवीं शताब्दी उत्तरार्द्ध से आरम्भ होता है। तेरहवीं शताब्दी के मध्य तक राजपूताने के प्रत्येक विभाग पर प्राय राजपूत राजा ही शासन करते थे। यद्यपि उससे पूर्व ही मुसलमानों के हमले इस देश पर होने शुरू हो गए थे और उन्होंने सिंध तथा उत्तरी सीमान्त प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया था, तो भी वहां के राजपूत अवसर पाकर उनको अपने इलाकों में से निकाल देते थे[4]। यह स्थिति शहाबुद्दीन गोरी से पलटी। संवत १२४६ में पृथ्वीराज चौहान कैद होकर कुछ महीनों बाद मारा गया। संवत १२५१ में अजमेर पर मुसलमानों का अधिकार हो गया[5]। तब से इसलाम का प्रवेश राजस्थान में होने लगा और उसके ठीक मध्य में मुसलमानों का अधिकार हो गया। अजमेर की ढाई दिन का झोंपड़ा नाम की मसजिद विक्रम संवत् १२५६ से १२७० तक चौदह वर्षों में बनी थी[6]। संवत् १२६६ में अजमेर मल्लिक इज्जुद्दीन के अधिकार में आया[7]। संवत् १४५७ से १५०२-५५ वर्षों तक अजमेर, मेवाड़ के महाराणा मोकल (मृत्यु संवत् १४६७) तथा उनके पश्चात महाराणा कुम्भा (शासन-काल संवत १४९०-१५२५) के अधिकार में रहा[8]। फिर वह संवत १५०३ में माण्डू के सुल्तान महमूद खिलजी के हाथ में चला गया किन्तु कुछ महीनों बाद ही राणा कुम्भा ने नागौर की लड़ाई के समय (संवत १४५६ में) पुन उसे विजय कर लिया। प्रतीत होता है, राणा कुम्भा की मृत्यु के पश्चात (संवत १५२५) अजमेर पुन माण्डू के सुलतान द्वारा ले लिया गया था और वहां उसका अधिकार संवत १५६१ तक रहा। पश्चात संवत १५६० तक यह मेवाड़ के महाराणा रायमल के कब्जे में रहा। माण्डू के सुलतान की ओर से अजमेर का सूबेदार मल्लूखां था[9] जो संवत १५३९ में नियामतुल्लाखां के स्थान पर नियुक्त

१-पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर पृष्ठ २।
२-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ १०७-१०८।
३-पुरसन साइ भाखण पाइ। राखिया वाह दे रोपिराद ॥ ४६ ॥
　　　　　　　　　　-छन्द राव जैतसी रो।
४-ओझा राजपूताने का इतिहास जिल्द पहला पृष्ठ २८०, ३०६ द्वितीय संस्करण।
५-(क) ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ १४१९।
　(ख) रेउ मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ९।
६-ओझा राजपूताने का इतिहास जिल्द पहला पृष्ठ २८।
७-रेउ मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग, पृष्ठ १५।
८-शारदा अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव पृष्ठ १४६, २२६।
९-वही पृष्ठ १४६ २२६-३१।

हुआ था[1]। मल्लूखां का उल्लेख जाम्भोजी के जीवन-वृत्त में किया गया है।

(१४) मुसलमान और नागौर-अजमेर पर मुसलमानों का आधिपत्य होने के कुछ समय बाद नागौर पर भी उनका अधिकार हो गया[2]। विक्रम संवत ११७६ में मुहम्मद बाहलीम ने नागौर का किला बनवाया[3]। संवत १२५२ से १३७२ तक यह तुर्की सूबेदारों के अधिकार में रहा[4]। मुहम्मद तुगलक के जो संवत १३८२[5] में दिल्ली के तख्त पर बैठा, नागौर से प्राप्त एक लेख से वहां उसका अधिकार होना सिद्ध होता है। तुगलक वंश के अन्तिम वर्षों में दिल्ली की बादशाहत कमजोर होने पर गुजरात का सूबेदार जफरखां, मुजफ्फरशाह नाम से, संवत १४५३ में वहां का स्वतन्त्र सुल्तान बना। उसने नागौर से जलालखां खोखर को हटाकर अपने छोटे भाई शम्सखां दंदानी को संवत १४६० में वहां का हाकिम नियुक्त किया। शम्सखां ने वहां अपने नाम से शम्स मसजिद और शम्स तालाब बनवाए। उसके बाद उसका बेटा फीरोजखां वहां का स्वामी हुआ। उसने भी वहां एक बड़ी मसजिद बनवाई, जिसको राणा कुम्भा ने विजय करते समय नष्ट कर दिया[6]। संवत १५१२ में फीरोजखां के मर जाने के बाद उसके छोटे भाई मुजाहिदखां ने नागौर पर अधिकार कर लिया। थोड़े ही समय बाद एक दूसरे शम्सखां ने, जो मुजाहिदखां का भतीजा और फीरोजखां का बेटा था[7], राणा कुम्भा की सहायता से नागौर पर अधिकार कर लिया[8]। यह घटना संवत १५१३ में हुई[9]। संवत् १५४१ में नागौर पर फीरोजखां द्वितीय का शासन था। शम्सखां के वंश का अंतिम नामक मुहम्मदखां था, जिसने दीर्घ काल तक शासन किया। संवत १५८५ तक वहां उसका शासन करना सिद्ध होता है। उसके बाद नागौर का शासन क्रमशः लोदी और सूर शासकों के हाथ में चला गया। संवत १५६० के एक शिलालेख से पता लगता है कि वहां शेरशाह सूरी के पुत्र इस्लामशाह के राज्य में एक मसजिद बनवाई गई थी[1]। मुहम्मदखां का उल्लेख जाम्भोजी के जीवन-वृत्त में किया गया है। बीठू सूजा कृत छन्द राव जतसी रो (हस्तप्रति संख्या ९९, अ० सं० ला०, बीकानेर) से मालूम पड़ता है कि राव बीका ने नागौर पर चढ़ाई करके उसे दो बार जीता था[11]। विक्रम संवत १५७० में मुहम्मदखां ने बीकानेर पर चढ़ाई की किन्तु वहां के राव लूणकरण के हाथों उसकी

१-ठाकुर गोपालसिंह राठौड़ मेड़तिया जयमलवंशप्रकाश पृष्ठ ६३ बदनौर।
२-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १ पृष्ठ ४१।
३-रेउ मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ १३, जोधपुर।
४-डा० कलाशचन्द जैन ऍशियण्ट सिटीज आफ राजस्थान, पृष्ठ २०६ अप्रकाशित शोध-प्रबंध राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय जयपुर।
५-मजुमदार रायचौधरी और दत्त एन एडवान्स्ड हिस्टी आफ इण्डिया पृष्ठ ३१७।
६-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास खण्ड १, पृष्ठ ४२ २०२ (पादटिप्पणी), २१२।
७-श्यामलदास वीरविनोद पृष्ठ ३२७-२८।
८-डा० कलाशचन्द जैन ऍशियण्ट सिटीज आफ राजस्थान -'नागौर'।
९-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, खण्ड २ पृष्ठ ६१३।
१०-डा० कलाशचन्द जैन ऍशियण्ट सिटीज आफ राजस्थान - नागौर'।
११-नागवर कोट बीकइ नडेय। वलिवड़ि राइ बिहु वार वेय ॥ ४७ ॥

पराजय हुई[1]। नागौर के खान पर राव गागा ने भी आक्रमण किया था किन्तु राव लूणकरण ने खान की सहायता की और दोनों का मेल करा दिया[2]।

संवत् १४५५ में तमूर ने हिन्दुस्थान पर चढ़ाई कर भटनेर का किला लिया था। लोदी खानखान के बहलोल और सिकन्दर लोदी ने राजपूताने पर हमले किए, परन्तु यहाँ पर उनका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा[3]। लखा से भी राव बीका का युद्ध हुआ था (बीठू सूजा कृत छन्द राव जैतसी रो)। सबदवाणी के 'तिमिर लिंगा' में सम्भवतः इन्हीं का ओर संकेत है (८६ १६–१८)।

(१५) राठौड़ मंडोर-जोधपुर–संवत १४८० में राव चूंडा के पश्चात मंडोर के शासक राव कान्हाजी और राव सत्ताजी हुए। संवत १४९५ में चूंडाजी के पुत्र राव रणमलजी चित्तौड़ में मारे गए। उनकी मृत्यु का पता लगते ही उनके पुत्र राव जोधा, (जन्म संवत १४७२) चित्तौड़ से मारवाड़ की तरफ आ गए और १५ वर्षों के बाद संवत १५१० में उन्होंने मंडोर हस्तगत कर लिया। संवत् १५१५ में मंडोर के किले में उनका राज्याभिषेक किया गया। संवत १५१६ में उन्होंने मंडोर के दक्षिण में ३ कोस दूर योगी चिड़ियानाथ के रहने की भाखरी पर जिसको चिड़ियाटूंक कहते थे, किला बनवाया और उसी के पास अपने नाम पर जोधपुर नगर आबाद किया[4]। राव जोधाजी की मृत्यु संवत १५४५ में हुई। जाम्भोजी के समय में उनके पश्चात वहाँ के शासक राव सातल (संवत १५४५–१५४८), राव सूजा (संवत १५४८–१५७२), राव गागा (१५७२–१५८८) और राव मालदेव (१५८८–१६१९) हुए।

(१६) राठौड़ों का विस्तार–राव जोधाजी के कई पुत्रों ने मरुभूमि में विभिन्न स्थानों पर अपने ठिकाने कायम किए। संवत १५१८ में राव जोधाजी ने अपने पुत्र वरसिंह और दूदा को मेड़ता की ओर भेजा इन्होंने मेड़ते को आबाद किया और माण्डू के ३६० गाँव अपने अधीन कर लिए। संवत १५७२ में, ७५ साल की अवस्था में राव दूदा का देहान्त हुआ। बीकानेर में राव बीका के बाद वहाँ के शासक, जाम्भोजी के समय में राव नरोजी, राव

१–(क) नागाणा अनिय बीकनेर। कासोघसि हुयी वहै वर।
ऊठिया कोपि आमन्यिा अ ग। आकासि अडाविय उतिमग ॥ ५७ ॥
महमन्द खान घाए मनाइ। आहण नर आथाि आइ।
सतरहो सनीछर राइ समथि। हाथी वरीसि गलहथि हथि ॥ ६१ ॥–वही।

(ख) महमदखा सउ भिडयउ, नयर सि द मरखाणइ।
जेसलमेर दुरग मल्यउ सहु कोई जाणईं–चारण गोरा।
–ज० आफ ए० सो० बगाल (न्यु सिरीज–१३) नम्बर ४ १९१७ पृ० २३७।

२–गगेवि राइ नागौर गढ साकड घाति भीडिय समढ।
दावाणि राव कोधी दुवारि आविय करन मोल उवारि ॥ ७४ ॥
–बीठू सूजा कृत छन्द राव जतसी रा।

३–ओझा राजपूताने का इतिहास, जिल्द पहली, पृष्ठ ३१० संवत १९९३।

४–(क) रेउ मारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ ८६–८८।
(ख) आसोपा मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ १८२–१८३।

लूणकरण और जतसीजी रहे। राव बीदा को छापर-द्रोणपुर का इलाका संवत् १५३१ के आसपास मिला था।

इनमें राव जोधा, राव लूणकरण, राव जतसी, राव बीदा, राव सातल और राव मालदेव जाम्भोजी के सम्पर्क में आये थे। (द्रष्टव्य—जाम्भोजी का जीवन-वृत्त)। राव लूणकरण तो कवि भी थे (द्रष्टव्य—कवि संख्या ४२)।

(१७) मेवाड़—मेवाड़ में राणा मोकल के पुत्र राणा कुम्भा विक्रम संवत १४९० में चित्तौड़ के सिंहासन पर बैठे। इन्होंने दो बार नागौर पर चढ़ाई की—संवत १५१३ में और संवत १५१५ में। दूसरी चढ़ाई इसलिए की थी कि नागौर के मुसलमानों ने हिन्दुओं का दिल दुखाने के लिए गोहत्या करनी शुरू की थी। महाराणा ने उनका यह अत्याचार देखकर पचास हजार सवार लेकर चढ़ाई की और किले को जीत लिया। इसमें हजारों मुसलमान मारे गए[१]। राणा कुम्भा की मृत्यु संवत् १५२५ में हुई। उनके बाद क्रमशः राणा उदयसिंह (१५२५-१५३०), राणा रायमल (१५३०-१५६६), राणा सांगा (१५६६-१५८४), राणा रत्नसिंह दूसरा (१५८४-१५८८) तथा विक्रमाजीत (१५८८-१५९३) मेवाड़ के शासक हुए[२]। इस प्रकार जाम्भोजी के स्वर्गवास संवत तक मेवाड़ में ६ शासक हुए। इसमें राणा सांगा और उनकी माता झाली राणी का उल्लेख विष्णोई साहित्य में मिलता है।

(१८) जैसलमेर के भाटी—जैसलमेर में भाटी राजपूतों का राज्य था, जिनमें जाम्भोजी के समय रावल देवीदास (संवत १५०५-१५३६), रावल जतसी (१५४१-१५८३) तथा रावल लूणकरण (संवत १५८३-१६०७) वहां के शासक रहे थे[३]। इन शासकों और उनके शासनकाल के सम्बन्ध में विद्वानों में कुछ मतभेद है। वीरविनोद के अनुसार, रावल लखमण के मरने के बाद विक्रम संवत् १४८९ में रावल बरसी, संवत १५०६ में रावल चाचा, संवत १५१३ में रावल देवीदास, संवत १५४९ में रावल जतसी और संवत १५८५ में रावल लूणकरण वहां के राज्य के स्वामी हुए। लूणकरण का देहान्त संवत १६०७ में हुआ[४]। श्री जगदीशसिंह गहलोत ने शासकों के नाम तो वीरविनोद के अनुसार ही दिए हैं किन्तु उनके शासन-काल के सम्बन्ध में भिन्न संवतों का उल्लेख किया है[५]। जो भी हो, रावल जतसी का सम्बन्ध जाम्भोजी से विशेष रहा था और उन्होंने अपेक्षाकृत दीर्घकाल तक शासन किया था (द्रष्टव्य जाम्भोजी का जीवन-वृत्त)।

(१९) आमेर के कछवाहा तथा अन्य राज्य—आमेर में कछवाहों का शासन था। जाम्भोजी के समय वहां पर उद्धरणजी (संवत १४९६), चन्द्रसेनजी (संवत १५२४), हरि-

१-(क) श्यामलदास वीरविनोद भाग १ पृष्ठ ३३१।
(ख) ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड २, पृष्ठ ६१८।
२-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड २, पृष्ठ ६३४, ६२६ ६३८ ६३९, ६५८ ६५९ ६९६ ७०० ७०५ ७०६ ७१३।
३-नैणसी की ख्यात, भाग २ पृष्ठ ४४१, ना० प्र० स०, काशी।
४-श्यामलदास वीरविनोद पृष्ठ १७६१-६२।
५-राजपूताने का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ६६७ ६७०।

भक्त महाराज पृथ्वीराजजी (सवत १५५६-१५८४), पूरणमलजी (सवत १५८४-१५६०), भीवजी (१५६०-१५६३) तथा रतनसिंहजी (१५६३-१६०४)-६ राजा क्रमश गद्दी पर बठे[1]। आमेर के शासकों से जाम्भोजी या विष्णोइयों के सम्पर्क का पता नहीं चलता। यही बात राजस्थान के अन्य राजघरानों-बूंदी, सिरोही आदि के सम्बन्ध में कही जा सकती है।

(२०) दिल्ली सयद, लोदी, सूर, मुगल-जाम्भोजी के जन्म से ३८ वर्ष पूर्व दिल्ली में तुगलक शासन का अन्त होकर सयदों का शासन आरम्भ हुआ। सवत १५०८ में मरदार बहलोल लोदी ने दिल्ली पर अपना शासन स्थापित कर लिया। सवत १५४६ में उसकी मृत्यु के बाद उसका दूसरा पुत्र निजामखा, सुल्तान सिकन्दरशाह के नाम से बादशाह बना। सिकन्दर की मृत्यु सवत १५७४ में आगरा में हुई। उसके बाद उसका पुत्र इब्राहीम सुल्तान हुआ, जिसको बाबर ने पानीपत के मैदान में सवत १५८३ में हराया था। तब से मुगलों का शासन आरम्भ हुआ किन्तु कुछ ही वर्षों बाद सवत १५९७ में शेरशाह के हाथों हुमायू पराजित होकर काबुल लौट जाने पर विवश हुआ। शेरशाह की मृत्यु सवत् १६०२ में होगई तथा दिल्ली का शासन निर्बल पड गया। सवत १६१२ में हुमायू ने काबुल से वापिस आकर लाहौर पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार पुन मुगल शासन आरम्भ हुआ[2]। जाम्भोजी का सम्बन्ध सिकन्दर लोदी से रहा था।

स्मरणीय है कि अभी तक जोधपुर-बीकानेर के राठौड़ों और उदयपुर के सीसोदियों का इतिहास तो कुछ लिखा भी गया है किन्तु जाम्भोजी के समय की अन्य अनेक शासक जातियों का इतिहास अन्धकार के गर्भ में ही है। ऐसी जातियों में जोइया, चायल, भाटी, जाट, साँखला, मोहिल और भाटी मुख्य है। विष्णोई साहित्य से कतिपय नवीन ऐतिहासिक बातों पर प्रकाश पड़ता है।

(२१) निष्कर्ष-जाम्भोजी के समय राजस्थान की राजनीतिक स्थिति ऐसी ही थी। परस्पर निरन्तर युद्ध होते रहते थे। युद्धों के कारण अनेक थे। नया राज्य स्थापित करने या पराई भूमि को जीतने का आकर्षण सर्वाधिक था। इसके अतिरिक्त अनेक छोटी छोटी और साधारण सी बातों पर भी युद्ध हो जाया करते थे। अपने या अपने पूर्वजों के वैर का बदला लेना भी इनमें से एक कारण था। शरणागतवत्सलता, मान सम्मान और आत्म-गौरव, वचन-पालन, धर्म-रक्षा, कर्त्तव्य-परायणता आदि की भावनाओं से प्रेरित होकर भी युद्ध हो जाते थे। एक शक्तिशाली जाति दूसरी निर्बल जाति का मौका देखकर दबा लिया करती थी। अत शासकों को हर समय जागरूक और युद्ध के लिए कटिबद्ध रहना पड़ता था। भूमि बल से ही अधिकार में रखी जा सकती थी, यह सभी जानते थे अत अपनी शक्ति को निरन्तर बनाये रखना भी शासक जाति आवश्यक समझती थी। राजस्थान के बाहर के दिल्ली

१-हनुमान शर्मा जयपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ ३२ ३६ ४१ ५६ ५७ ५८।
२-मजुमदार रायचौधरी और दत्त एन एडवान्स्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया लदन, सन १९४८ पृष्ठ ३३७, ३३८-३४०, ३४१, ४२७, ४३८, ४३९, ४४४, ४४५।

आक्रमणों ने राजस्थान पर विशेष प्रभाव नहीं डाला। राजस्थान की शासक जातियां तो आपस में ही उलझी रहती थीं और यही कारण इनके पतन का भी रहा। राजपूतों की यशलिप्सा, राज्यलिप्सा और महत्त्वाकांक्षा तथा ज्योतिष और शकुनों पर विश्वास रखने के कारण भी आपस में निरन्तर युद्ध होते रहते थे और अकारण ही परस्पर लड़कर निर्बल बन जाते थे। यह सब होते हुए भी देश पर आने वाली विपत्ति के समय प्राण देना राजपूत अपना पुनीत कर्त्तव्य समझते थे, इसी प्रकार शरणागत की रक्षा, वचन-पालन व प्राण देकर भी करते थे।

(ख) सामाजिक स्थिति

१-विभिन्न वर्ग हिन्दू समाज यद्यपि चार वर्णों में बंटा हुआ था तथापि जाम्भोजी के आविर्भाव से बहुत पहले ही इन वर्णों में अनेक जातियाँ, उपजातियाँ तथा कई नई जातियाँ बन गई थीं। जाति-मान्यता में कर्म प्रधान न रह कर जन्म प्रधान रह गया था। जम्भवाणी और विश्नोई साहित्य से यह पता लगता है कि जाम्भोजी के समय में 'बागड़ देश' में प्रधानतः निम्नलिखित वर्ग के लोग थे —

१-राज वर्ग।	२-खेतिहर वर्ग।	३-कारीगर और मजदूर वर्ग।
४-व्यापारी वर्ग।	५-आंशिक या पूर्ण रूप से राज्याश्रित तथा विद्वत वर्ग।	
६-कलाबाज वर्ग।	७-निम्न वर्ग तथा	८-साधु वर्ग।

२-राज वर्ग -इसमें राजा, ठिकानेदार, पटटेदार, भोमिए तथा राज-कार्य संचालन करने वाले मंत्री, सेनापति आदि सम्मिलित हैं। जाति की दृष्टि से इसमें राजपूत, जाट और मुसलमान प्रधान थे। इस वर्ग का प्रमुख कार्य युद्ध था। हिन्दू राजा धर्म-कर्म के मामलों में सहिष्णु होते थे। सभी स्मार्त मतानुयायी थे, धर्म या सम्प्रदाय-विशेष के पालन का आग्रह इनमें नहीं मिलता।

३-जाट, खेतिहर वर्ग -राजस्थान में जाति की दृष्टि से सबसे अधिक संख्या जाटों की थी। राजपूतों से भी इनकी संख्या अधिक रही है[१]। पेशे की दृष्टि से सर्वाधिक संख्या खेतिहर लोगों की थी। राजवर्ग के कुछ लोगों को छोड़कर समाज का प्रधान पेशा खेती करना और गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट आदि पशु पालना था। घी तथा ऊन का व्यवसाय होता था। जम्भवाणी (सबदवाणी) की वर्णन सामग्री और उसके अधिकांश उल्लेख दूसरे प्रकार इस वर्ग से संबंधित हैं।

४-सम्बन्धित उल्लेख -किसान, खेती और उससे सम्बन्धित सामग्री का वर्णन अनेक *सबदों में है।[२] 'अनाज निकाल लेने पर पीछे बची हुई "कूकस" (भूसी) को दलना बेकार है' इस उक्ति का उल्लेख सात बार किया गया है[३]। इसी प्रकार बिना रस के 'बाकस' (रस निकाले हुए गन्ने के छिलके, (६५ ४,७५ ७), 'गूणा गाहना' (७६ ५), (गवार निकाल लेने

१-बजरंगलाल लोहिया राजस्थान की जातियां, पृ० २२।
२-सबदवाणी-२०, २८, ७०, ८३, आदि। * सबदवाणी के उदाहरणों में पहले सबद संख्या और फिर विराम ( ) के पश्चात उसकी पंक्ति संख्या दी गई है।
३-२७ ५६, ४८ १८, ६५ ४, ७१ ८, ७५ ७, ७६ ६, ८६ ३।

पर गाही हुई वस्तु 'गूगा' कहलाती है) आदि को बिल्कुल व्यर्थ बताया गया है क्योंकि उन में तत्त्व वस्तु नहीं है। इसके लिए सुखेत में बीज बोना (५४ ५), भली भूल का सिंचन करना (२९ १, ६६ ३८) और खलिहान का गाहटन (२८ २०) करना चाहिए। कांकर जमीन में बीज बोने और टीले पर तालाब बनाने से कोई लाभ नहीं (७१ १०–११, १०५ ३)[1]। इनके अतिरिक्त ओर (मजरी) फटने पर किसान के दुखी होने (४६ ३), अपने खेत की ही कमाई खाने (११२ १–२) आदि उल्लेख इसी ओर संकेत करते हैं। किसानों (७० ११) और जाटों (११६ १) को सम्बोधन, वृक्ष, पान, फूल (९ ४–५, ७५ २), साग (८६ ५,३४) का उल्लेख, श्रेष्ठ खाद्य-पदार्थों में अन्न, दूध, दही, घी, मेवा (३२ ४) की गिनती, खेत में अच्छे बीज बोने की सलाह (१०९) आदि खेती से ही सम्बन्धित हैं। जाम्भोजी के पिता लोहटजी स्वयं एक सम्पन्न किसान थे (वील्हाजी कृत कथा औतारपात, छन्द १३,२४)। खेतिहर लोगों के सिंध में गहू लाने के लिए जाने और सावन निकट देखकर हल जोतने की तैयारी का वर्णन वील्होजी ने किया है[2]। उन्होंने कृष्ण को सबसे बड़ा किसान बताते हुए सुकृत खेती का उल्लेख किया है[3]। उनकी 'सच अखरी विगतावली' की अधिकांश वर्णन सामग्री किसान और खेती से ही संबंधित है। मरु प्रदेश का किसान 'भुरट' के कांटों से अपने पांवों को बचाने के लिए प्रायः चमड़े का बना 'पायचा' पहनता है। यह चोट से भी रक्षा करता है। 'पायचे' का उल्लेख भी जाम्भोजी (४८ १९) और हजूरी कवि ऊदोजी नैण (कवि संख्या ३७) ने किया है।

खेती के साथ साथ पशु-पालन एक आवश्यक अंग था। वील्होजी कृत 'कथा दूण-पुर की' में अनेक 'भांति' के दूध का उल्लेख है, जिससे कई तरह के दुधारू पशु-पालन का संकेत मिलता है। उनमें गाय श्रेष्ठ समझी जाती थी[4]। गाय का घी और भैंस का दही उत्तम माना जाता था[5]। मरुदेशीय वातावरण को चित्रित करने वाली सामग्री में भी खेती और खेतिहर समाज का उल्लेख मिलता है। आक, खींप, रूई, ऊन (२५), गहू, मूंग, बगरा, चदन्नेवों[6], मोथड़ियो, खरगोश, लोमड़ी, गूंद, (जड़) (९३), हिरण, हिरणी, रिण छाणा (जंगल में उपलब्ध गाय-भैंस का सूखा गोबर, ८६ २३), मशक (८४ ६), करड़,

---

१–धल माथ निवाण करि, नर बाय लोड नीर।
 नाले पोले न मिले, रीणायर वीणि हार ॥ ३६ ॥–वील्होजी, कथा महानंद।
२–भलो उपायो सिध को, किरषक चीयावा मोल।
 आव सावण ढुकड़ो, करा हला को मूल ॥ ३२ ॥–कथा गुगलिय की।
३–किसन बड़ो करसाण, जो जुग मंडल खती।
 किसन जपो संसारि, सारव ओपति एती ॥ ५ ॥
 सुकरत खती नीपजी, जा दीठा ताहा लक्षा।
 किसन जपो संसारि, र रा रह्या से इह विध रह्या ॥ ३■ ॥–किसन छतीसी।
४–घणी भांति का दूध कहाव, जिसो दूध थार मनि भाव।
 जग मा उतिम गउ कहावै, करो दूध म्हारै मनि भाव ॥ ३२ ॥
५–गावो घिरत मंगाऊ जो, म्हो मंगाऊं भैंस को ॥ ११ ॥–साखी, कवि संख्या २०।
६–बगरो अर चदन्नेवी जाय, भाण जीम कर रमाय। ६५ ।–वील्होजी, कथा गुगलिय की।

(भाक्ला, ओढने का वस्त्र-विशेष जो रूई और ऊट की 'जट' से बनाया जाता है,– (४७ ३, १२ १६), दोवड[1], ढेंकली और ढाबी (१११ ५) से पानी निकालने और ढोने तथा अकाल पड़ने पर अयत्र जाकर समय काटने–'गोवल्वासो' (५१ ३४-३५, ८४ १५) लेने के उल्लेख प्रधानत इसी वर्ग से सम्बंधित हैं।

५-तीसरे वर्ग (कारीगर और मजदूर) मे तेली, माली, कुम्हार, धोबी, लुहार, दर्जी, सुथार, नाई, सुनार, कहार, भाड, मोजी आदि थे। इनका तथा इनके विभिन्न कार्यों का उल्लेख अनेक प्रसगो म विष्णोई साहित्य म मिलता है[2]।

६-व्यापारी वर्ग –इसम व्यापार करने वाले वैश्य, बनजारे तथा अन्य लोग सम्मिलित हैं। इनम हीरे, मोती और मानिक आदि का व्यापार करने वाले श्रेष्ठ माने जाते थे। जाम्भोजी ने स्वय को हीरो का व्यापारी कहा है (५१ १,७२ ११-१२)। एक अज्ञात हुजूरी कवि (सख्या २४) ने जाम्भोजी को 'सराफ और 'विणजारा' बताते हुए कहा है कि लोगो को उनसे तो चुन चुन कर मोती लेने चाहिएँ। अन्य हुजूरी कवियो ने भी उनको 'सही सौदागर' और 'समरथसाह' बताते हुए उनसे 'विणज' करने का अनुरोध किया है क्योकि ऐसे साह के साथ व्यापार करने से लाभ होता है[3]। दीन सुन्दरदी (कवि सख्या ४९) के अनुसार जाम्भोजी वे बनिये हैं जो 'सहज' ही व्यापार करते और बिना 'डाडी और पालड' के तोलते हैं। दूसरा कवि रायचन्द अपने मन को विणजारा और सौदागर बताता है।[4]

इन उल्लेखो से यह स्पष्ट विदित होता है कि तत्कालीन समाज म बडे-बडे सेठ सराफ और साह थे। इनके स्थान-स्थान पर आढतिये होते थे। जिन वस्तुओ मे ये व्यापार करते थे उनके क्रय-विक्रय के लिए अनेक छोटी श्रेणी के व्यापारी भी होते थे। समाज मे बडे व्यापारियो की सच्चाई और ईमानदारी प्रसिद्ध थी। उनकी "साख" चलती थी। दीन सुदरजी (कवि सख्या ४९) की एक साखी (सख्या २) से इसकी पुष्टि होती है। मुख्यत जवाहर-व्यापारी, "सराफ" तथा रुपये पैसे की लेनदेन करने वाला "शाह" या सेठ कहलाता था। व्यापारी वर्ग म सराफ और साह बडे माने जाते थे। इनसे छोटे "विणजारे" और सौदागर थे जो बहुधा स्थान-स्थान पर अपने व्यापार सम्बन्धी चीजो का क्रय-विक्रय करते फिरते थ। एक ही स्थान पर हाट बनाकर बैठे हुए खरीद बिक्री करने वाले छोटे-मोटे व्यापारी भी होते थ। "सराफो" को खोटा माल देना और "साहो" से ठगाई करना आसान काम नहीं था[5]। अनेक लोग नकली माल बेचते और "खोटा विणज" करते

१-एक दावड दुज हडी, मुप मा सोर उपायो।–चोल्होजी कृत साखी।
२-२५ १२, ७१ ६, ६८ ७ ५९, ६०, ७६ २, ३५, १०७ ६, ९६ १-७, १४ १-४, ११ १६-१७ आदि।
३-(क) असो समरथ साह आयो, चेति करि जीव जागियो।–कुलचदजी, साखी।
(ख) औ गुर आयो पूरो साह, विणज करो वौपारियो।–ऊदोजी नण, साखी।
४-मेरा मन विणजारला, विणजत नेहडा कीजजी।–साखी।
मेरा मन सौदागर, देषि आपा समालि के।–साखी।
५-पाटे दिय सराफा हाथि, कर ठगाई साहा साथि।
पढिया ठगए मत गिवार, फिटा फिटा हुव पुवार॥ ५८॥–कथा औतारपात।

थे।[1] वील्हाजी ने इसलिए 'काच कथीर' का व्यापार छोड़ हीरा के व्यापार करने की सलाह दी है[2]। जाम्भोजी के अन्य उल्लेख्य हाट, "विणज वापर" (६५ १७–१८), पार्द-पर्द करके लाखों एकत्र होना (१२२ १) से भी इस वर्ग की ओर संकेत मिलता है। सच्चाई व्यापारिक सफलता के लिए अति आवश्यक है, उस समय भी यही बात थी। रुपये उधार दिये जाते थे[3]। ब्याज पर दिये गये रुपयों के एवज में कोई न कोई वस्तु बन्धक के रूप में रखी जाती थी[4]। बिना रुपया के व्यापारी की कुछ भी कीमत नहीं थी (कवि संख्या १८), धन पराई आशा पर न रह कर अपनी गाँठ के अनुसार ही व्यापार करने की सलाह कवियों ने दी है[5]। हिसाब किताब में होशियार होना व्यापारी के लिए आवश्यक था।

७–आंशिक या पूर्ण रूप से राज्याश्रित तथा विद्वद्वर्ग–इसमें चारण, ब्राह्मण पुरोहित ज्योतिषी संगीतज्ञ गायक वैद्य, शकुनी भाट आदि सम्मिलित हैं। विष्णोई साहित्य से पता चलता है कि चारण लोग कीर्ति और विरुदावली बखानते थे। इस हेतु वे घूमते-फिरते थे और धन पाते थे। हजूरी कवि कान्हाजी बारहट ने इसीलिए कहा है कि चारण वही चतुर है जो विष्णु की कीर्ति का "उच्चारण" करे और "चपलता" त्यागे (कवि संख्या १४, बावनी, छंद ६)। बहुत से चारण हठ या अनथ, जुल्म और पाप किया करते थे। वील्होजी कृत 'कथा जैसलमेर की" (छंद ६१–६२) में तेजोजी के कथन में इसका स्पष्ट उल्लेख है। बारहटों को राजपूतों से घोड़े, रुपया कपड़े तथा अनेकानेक वस्तुएँ भेंट स्वरूप मिलता था किन्तु तेजोजी चारण तो यह सब त्याग कर केवल हरि के ही ' बारहट" हुए (कवि संख्या १, सातवां गीत)। भाट विरुदावली गाते और पीढ़ियावली रखते थे। तेजोजी ने चारणों और भाटों के कार्यों का बड़ा यथार्थ वर्णन किया है। ये लोग पेट के लिए दूसरों की प्रशंसा करते, लोभ-वश उनको देवता और सुमेरु के समान बड़ा बताते उनके लिए गीत, कवित्त और छंदों की रचना करते और मीठे स्वर में गाते थे[6]। स्वार्थ के वशीभूत होकर ये लोग अनुचित निंदा–स्तुति करते थे और यह बड़े व्यापक रूप में प्रचलित थी। वील्हाजी की

१–परो र विणज वाधियो पोटो परो जनम गु वियो पहर ॥ २ ॥
—कान्होजी चारण, बावनी।

२–खवा विसन रतन छ, पाया दाम न रेस।
काच कथीर न विणजिय, विणज स हीरा जेस ॥ ३२ ॥–विसन छत्तीसी।

३–परो मिलो ससारि विणज–वोपारि करारो।–
परो मिलो ससारि टीक सिरि दिय उधारो ॥ २७ ॥–ऊदोजी नण, छप्पय।

४–वड अपरो गुफ कहा न कहीज, बघ वोलि धन ब्याज म दीज ॥–ऊदोजा, साखी।

५–(क) विणज न कीज आस पराई, आन्र विलि घर कही न जाई ॥ २८ ॥
गाठो सार विणज चलाई, काम अरम्यौ सो निरवाहि ॥ १० ॥
(ख) सेनी धम अन्य कीना, विणज करता रूप न भूलीज ॥ १५ ॥–हेल्हजी, साखी।

६–सुर भर सम वड मिनष लोभ पलाए। पट काजि पुलफत वोहत धन वोराण।
जे जीभ जगनाथ, विण अपरठा कथाव। गीत कवत छद ग्यान, सरस सरल सुर गाव।,
वीनना विसन वाचा प्रचल, सु गे साभि सारगधर।
ऊचर तम तीह वार नी राण रानि सुर मधर ॥ ८ ॥–प्रति संख्या २०१, पो० ७०।

"छुग्न साखियाँ" म इसका उल्लेख मिलता है[1]। वाल्होजी, तेजोजी, वील्होजी आदि कवियो के उल्लेख चारणो की उन निवलताओ को वताते हैं जो जाम्भोजी के समय म बहुत बडे रूप म प्रचलित थी।

पाठशालाएं हुआ करती थी[2] किन्तु प्रमुखत पढाई-लिखाई सम्पन्न, ब्राह्मण या उच्च वर्ग के कुछ लोग ही करते थे, शेष सारा समाज इस दृष्टि से प्राय शून्य था। विद्या की दृष्टि से ब्राह्मणो की दो श्रेणियाँ थी-पढे लिखे तो ब्राह्मण (वाभण) कहलाते थे और अनपढ भरसना के तौर पर "गुरडा" या "गरडा"। आज भी निरक्षर या अत्यल्प पढे-लिखे ब्राह्मण का ऐसा कहा जाता है। पदम भगत कृत हरजीरो व्यांवलो' म कृष्ण और शिशुपाल मे अन्तर वताते हुए इसका उल्लेख किया गया है[3]। हिन्दुओं म ब्राह्मण वेद, शास्त्र और पुराण (२५ १-३, ८३ १५) तथा मुसलमानो म काजी मुल्ला पढते-लिखते थे (२५ १-३ ८३ १५, ९३ १९)। हिन्दू समाज मे ब्राह्मणो का पद ऊचा समझा जाता था। वे "गुरु" माने जाते और धर्म वताते थे किन्तु ये अधिकाश मे लोभी, कुकर्मी, पापी, अज्ञानी और क्रिया हीन[4]। "लिखा करना" विशेष रूप से कायस्थो का काम था[5]। मुसलमानो म मुल्लाणियां घरों म पढाती थी (११५ ३)। वैद्य जडी-बूटी से इलाज करते थे (१६ १३-१४)। ज्योतिषी भविष्य वक्ता के रूप म प्रसिद्ध थे (कवि सख्या १९, साखी)।

८-शकुन और ज्योतिष—ज्योतिष और ज्योतिषियो पर लोगो का बहुत विश्वास था। राणा सागा तथा उनके भाइयो के आपसी विरोध और मारकाट की घटना के मूल मे ज्योतिषियो के कथन पर विश्वास करना ही था[6]।

शकुनों पर भी गहरा विश्वास और श्रद्धा थी। राजपूतो मे तो शकुन-अपशकुनो पर बहुत पुराना विश्वास चला आता है। आज भी यहा की प्राय सभी जातियों म शकुन मान्यता है। मीने, भील और बावरी तो शकुन विचार पर बहुत ही विश्वास रखते हैं[7]। साँखला

१-धीर धपारी हुवौ, सेभ पलटयो साड।
चारण मो मीठौ चव, भौंडी कर स भाड ॥ ४ ॥
चारण री हास्यौ घणो, कुजम कहे चोरेह।
ओन्दे दधी ओगणे, बल्तो वरल्क देह ॥ ५ ॥

२-तेणि पोसाल पढावियो, पावन पद पोसाल।
ओल्पियो आपर अपर, गुर मिल्यिो गोपाल ॥ —आवनी, वाल्होजी बारहट

३-अ तर काग हस म अर सायर, अ तर वाभण गुरडा।
इवडो अ तर हरि सिसपाल्हो, किनक कल्स काचा घडा ॥ ७ ॥ -प्रति सख्या २०१।

४-ब्राह्मण गुर सकल ज धरम वताव, कहता द दे धरम कह।
वर कलोभ अन्न म कमाव, वहता भवसागरि वहैं।
नियाहीण नतवे काचा दुप थ नेरा जीव दहैं ॥
अवतार अधम कम अति आयो लिपी न प्रापति कम लहैं ॥ ३ ॥ —तेजोजी कृत छद।

५-तुरिया तज ज सार पुरुष वोत परवाण।
कायथ लेप सार विपर ज्यों वेद पुराण ॥ १४ ॥ —ऊदोजी नण, छप्पय।

६-(क) श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ ३४३।
(ख) ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास खण्ड-२, पृ० ६४२-४३, प्रथम सस्करण।

७-रजरगलाल लोहिया राजस्थान की जातियाँ, पृ० ४०, ४६, २४३, सन १९५४।

मेहराज और उनके पुत्र हडबूजी (जो पाँच पीरों में से एक माने जाते हैं) दोनों ही मान्य शकुनी थे[1]। नापा सांखला और काल्हो (राव बीका के समकालीन), कल्याणमल (राव मालदेव का समकालीन) और नीबा महेशोत बड़े अच्छे शकुनी माने जाते थे[2]। विशेष कार्यारम्भ से पूर्व अच्छे शकुन देखे जाते थे। अणहिलवाड़ा[3] पाटण और बीकानेर[4] बसाने से पूर्व अच्छे शकुन देखे गये थे। शकुन लेने और शकुन देखकर उसके शुभाशुभ पर विचार करने के अनेक उल्लेख मिलते हैं। नणसी ने राव गांगा, खेतसी अरडकमलोत, नीबा, और रावत घडसी आदि से सम्बन्धित वर्णनों में इनका उल्लेख किया है[5]। बाँकीदास ने बीकमपुर की हद में अच्छे शकुनियों का होना बताया है[6]। डेल्हजी, मेहोजी, केसोजी आदि ज्ञात और अज्ञात कवियों ने अनेक प्रचलित शकुनों का यथावसर उल्लेख किया है। प्रतीत होता है कि साधारणतः समस्त समाज में और विशेषतः उच्च वर्ग में ज्योतिषियों और शकुन-पाठकों का अच्छा सम्मान था।

९–कलाबाज वर्ग–इसमें हाथ की सफाई, चमत्कार–प्रदर्शन या ऐसे ही कलाबाजी दिखाकर जीविका कमाने वाले नट, जादूगर, गीडबाजिया आदि की गणना है। तत्कालीन समाज में ऐसे अनेक लोग थे। वे भांति-भांति से लोगों को चमत्कृत और चकित करते थे। वील्होजी ने "कथा दूणपुर की" में ऐसे संकेत किये हैं[7]।

१०–निम्नवर्ग–भील (नायक), वधिक, कसाई, "हडकुटा", भीवर, बावरा, थोरी, अहेरी, मेघवाल (चमार), चंडाल आदि नीच जाति के माने जाते थे। भील निर्दयी होते (११ २४), भीवर जाल फैलाकर पशु-पक्षी पकडते (वील्होजी कृत कथा जसलमेर की) और बावरी प्रायः झूठ बोलते थे। हजूरी कवि ऊदोजी नैण के छप्पयों से इन बातों का पता चलता है[8] (द्रष्टव्य–कवि संख्या १७, संदर्भ ६६,६०)।

११–साधु वर्ग–इसके अन्तर्गत हिन्दू और मुसलमान–दोनों जातियों के गृहस्थाश्रम त्यागे हुए लोग, जोगी, संन्यासी, यति, पीर, फकीर आदि सम्मिलित हैं। साधुओं का मूल कार्य तो सत्कर्म करना, तत्त्व और अध्यात्म का चिंतन और मनन करना, तदनुसार जीवन व्यतीत करना तथा समाज में अध्यात्म, नीति का सदुपदेश देना था किन्तु उस समय अधिकांश साधु बने हुए लोग पाप कर्मों में लिप्त थे और धर्म के नाम पर पाखण्ड फैलाते थे। धर्म के

१–मुंहणोत नैणसी री ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृ० १०१, १२९, काशी, संवत १९९१।
२–वही, पृष्ठ २०४, १५६, ४१७।
३–वही, पृष्ठ ४७६–४७७।
४–(क) दयालदास री ख्यात, भाग–२, पृष्ठ ६–७, बीकानेर, संवत् २००५।
(ख) पाउलेट बीकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ ३–४।
५–ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ १७७–७८, १९२, २८६, ३१३, काशी।
६–बाँकीदास री ख्यात पृष्ठ २०९, राज० पु० म०, जयपुर, सन १९५६।
७–(क) भेली कहै देवजी नहा सोभा, थाव कर गोडिया देव भाभा ॥ २२ ॥
(ख) एक समा मा कहै अभेली, आ तो छ गोडिया री वदी ॥ २६ ॥
८–वधक कसाई हडकुटा, पर पिंड वाढै छुरी।
जे दयेवो पाप ता ऊंण, देखो भीवर बावरी ॥ ६ ॥

मूल तत्व के नाम पर केवल बाह्य वेश और क्रिया-कर्म ही धर्म का प्रतीक माना जाने लगा था। सबदवाणी और जाम्भाणी साहित्य में स्थान-स्थान पर धर्म के नाम पर प्रचलित पाखंड की भर्त्सना मिलती है।

१२-स्त्री, बहु-विवाह, विधवा-विवाह, आचरण-राजपूतों में तो बहु-विवाह प्रथा प्रचलित थी ही, समाज के अन्य वर्गों के लोगों में भी थी। जाम्भोजी ने 'सौक और दुहागण' स्त्रियों का उल्लेख किया है (८३ २९)। व्यभिचार बहुत होता था। जम्भवाणी में इसके संकेत हैं (२५ २२)। इस हेतु पुरुष और स्त्री पराये घरों में जाते थे। अनेक हुजूरी कवियों की रचनाओं में इसका पता लगता है[1]। पराये घर को नष्ट करने वाले व्यभिचारी लोग अपनी स्त्री का त्याग देते थे। वे कूएं में पड़ कर आत्म-हत्या भी करते थे[2]। यही नहीं, लोग "कुवात" कह कर भी पराये घरों को उजाड़ देते थे[3]।

समाज का उच्च वर्ग भी व्यभिचार से बचा हुआ नहीं था। मूला पुरोहित अपनी स्त्री और भानजे को व्यभिचार-रत देखकर अत्यन्त दुखी हो जाम्भोजी के पास जाम्भोलाव गया था। (द्रष्टव्य-जाम्भोजी का जीवनवृत्त)। परायी स्त्रियों का हरण करके लोग उनको अपने घर बठा लेते थे। इसकी प्रेरणा स्त्रियाँ भी देती थी। पूले सारण की स्त्री मिलकी के कहलवाने पर पाण्डू गोदारे ने उसका हरण करवाया था[4]। रुणा के स्वामी सीहड़ सांखले की बेटी सुपियारदे, जिसका विवाह जतारण के नरसिंह सिंधल के साथ हुआ था, के लिखने पर नर्बद सत्तावत उसको अपने गांव ले गया था[5]। व्यभिचार की भांति परायी नारी का हरण भी बहुत होता था। जाम्भोजी ने १८ दोषों में से एक दोष पराई नारी का हरण भी बताया है (सबद ५६,६०)। बाल विवाह प्रचलित था। बाल्यावस्था में विधवा होने का उल्लेख हुजूरी कवि कोल्हजी चारण (कवि संख्या ६) ने किया है[6]। विधवा विवाह होते थे।

१-(क) तजोजी चारण, कवि संख्या-१, गीत संख्या २।
 (ख) सोव न जल सबल मन बधो ममतो। विषियावन हाडतो, पालिय पर घरि जतो॥
 -उदोजी नण, छप्पय।
 (ग) मनो मैं चाले करे डफोलो, पर घरि हाढि न जीम्मत बोलो। -केल्हजी, साखी।
२-एक घर की नारी परहर, कुवा तवहि परघर भानणा।
 एक गुर नो वायक मेटि, रूप विरप वोट छागणा॥ २६॥ -ऊदोजी नण, छप्पय।
३-पोगो माह समार कियो उपगार न मान।
 पोगो मोह समार कुवात कह पर घर भान॥ २८॥ -उदोजी नण, छप्पय।
४-(क) पाउलट बीकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ ५, बीकानेर, सन् १९३२।
 (ख) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ९७-९९, सन १९३९।
५-मुहणोत नैणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड पृ० १२२-१२७, काशी, संवत १९९१।
६-नारायण हा देव जाण्य तज नेम गुदार।
 घडत भज काय, भजि घड वले सुधार।
 माय पूत बोछोडि बालका देह दुखाव।
 नेह काचा ही तोडि, पुलिता काय सुवाव।
 बाली दह रंडेपडो, बमि बालापमि क रहे।
 दया नहा तह देव न, नारायण कोल्हो कहै॥ १०८॥-हस्तप्रति संख्या २०१।

उनका 'नाता" होता था, 'चूडा" पहना कर उनको पत्नी रूप में स्वीकार कर लिया जाता था[1]। विवाह का मुहूर्त (सावा) चाहे जैसी भी परिस्थिति हो, अटल रहता था (सबदवाणी ११६ ३)। कन्यादान का महत्त्व था (१०० ६) तथापि लोग बहन, भानजिया के विवाह के बदले रुपये भी लेते थे[2]।

१३–गोठ, "जागर, जमला" चोरी, डाके–मनचले लोग गोठ करते, कुकर्मों से मूर्खों को भ्रमाते और उसमें हँसी–मजाक किया करते थे[3]। गोठ के अतिरिक्त 'जागर" और जमले" होते थे (दोनों में अन्तर के लिए द्रष्टव्य–विष्णोई सम्प्रदाय नामक अध्याय)। लोग "जमले" में न जाकर "जागर" में बडी प्रसन्नता से जाते थे। ऊदोजी नैण, सममदान,वील्होजी आदि कवियो ने "जमले" में जाने का आग्रह किया है। इनके उल्लेखो से यह भी स्पष्ट है कि लोग अपने मनोरंजनार्थ अनेक कुकर्म, पाप और जीव–हत्या करते थे। चोरी बहुत होती थी। लोग मौका देखकर हरे–भरे बाग और खेत में चोरी कर लेते थे (द्रष्टव्य–कवि संख्या २, ४०)। पशुओं की भी चोरी होती थी, खोजी (खोज देखकर) उनका पता लगाते थे (४६ १)। ठगी होती थी[4] और "धाडे' (डाके) भी पडते थे[5]। गरीब लोग मजदूरी करते थे किन्तु उनका पेट कठिनाई से ही भर पाता था। अकाल पडने पर जब अन्न महँगा हो जाता, तो वे "जीवारी" के लिए बाल–बच्चा सहित अन्यत्र चले जाते थे (ऊदोजी नैण, सम्भ–५५ तथा वील्होजी कृत कथा गुगलिये की)। भिखारियों की संख्या कम नहीं थी (सबद १५)।[6]

१४–आचार विचार, खानपान–तत्कालीन समाज में रहन-सहन और खानपान की शुद्धता नहीं थी। इस पहलू पर जाम्भोजी और विष्णोई कवियो के अनेक उल्लेख मिलते हैं। जाम्भोजी ने पवित्रता पर बडा जोर दिया है। लोग मद, मांस, अफीम और भांग का अबाध प्रयोग करते थे। जब से तम्बाकू इस देश में आई, उसका यहा भी प्रचलन हो गया। सम्प्रदाय के २९ धर्म नियमों में इन पांचो का प्रयोग वर्जित है।

१५–अफीम–राजस्थान के राजपूतों में प्राचीन काल से ही अफीम खाने का बहुत प्रचलन था, यहां तक कि अतिथि का आदर–सत्कार भी अफीम खिलाकर ही किया जाता था। आखातीज, होली, दीपावली आदि त्योहारों और सगाई विवाह के अवसर पर पानी

१–माल न बीज होय कूडी, सील बिणि नारी पहराय न चूडो ॥ २५ ॥ डेल्हजी साखी।
२–बहण भाणजिया री ल्य आडि ोर माहि पड ला धाडि ॥ ४ ॥–वील्होजी, साखी।
३–पांच सात कु मला मिल, मांड गोठ विचारि।
कर पिसण सू प्रीति, सीरा की कर पवारि।
मुरष का मन मोलव, पाति कुबधि की पासी।
पणी ठेक मसकरी, घरी बाजा घर हासी।
घरी उपगारी माष गुर, जिह को कह्यौ न मानहा।
वरजया पंथ भगति क, बोट कहे चाल्या सटी ॥ २२ ॥–वील्होजी।
४–एक जगि फिर ठग चोर ठग हड बसत पराई।
ठगि मोर पडि जानि जित चाल नवी ठगाई ॥ २६ ॥ –ऊदोजी नैण छप्पय।
५–माय मागे न हाई मोर। पेन्दो धाडि न लागे चोर ॥५८॥–वाल्होजी, कथा गुगलिय री।
६–श्यामलदास वीरविनोद पृष्ठ २०६।

में अफीम घोल कर मेहमानों को पिलाने की प्रथा थोड़े वर्षों पूर्व तक भी बहुत प्रचलित थी[1]। यहां की सैनिक जातियां-राजपूत, जाट और गूजर-में युद्ध के अवसरों पर पहले अफीम का प्रयोग औषधि के रूप में मलमूत्रावरोध के लिए होता था, बाद में बिना युद्ध के अवसरों पर भी इसका सेवन होने लगा और इस प्रकार इसका नशा धीरे धीरे अनिवार्य बन गया। समाज के अन्य लोगों में भी नशे के रूप में इसका प्रचुर प्रचार हो गया। यही कारण है कि राजस्थान में इसका प्रयोग बहुत अधिक है। इतिहास ग्रन्थों में इसके सेवन के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जोधपुर के राव गांगा अफीम बहुत खाते थे, अफीम की पिनक में ही उनकी मृत्यु हुई[2]। बूंदी का राव नारायणदास (संवत १५६० १५८४) अफीम का बहुत ज्यादा नशा करता था। इसके अफीम सेवन की अनेक दंतकथाएँ भी प्रचलित हैं[3]। इसका पुत्र रावल सूरजमल भी अफीम का बहुत नशा करता था। अफीम न मिलने के कारण मृत्यु होने के उल्लेख भी मिलते हैं। ईडर का गोपीनाथ जमल में अफीम न मिलने के कारण मर गया था[4]। अफीम खाकर आत्महत्या भी की जाती थी। विक्रम संवत १६६० में राजा भगवानदास की बेटी शाहजादे सलीम की बड़ी बेगम, अफीम खा कर मरी थी[5]। जब राणा रायमल का पुत्र जयमल बदनौर के सोलंकी राव सुरताण के पीछे चला, सो राव के साले रतने ने अमल का मावा चढा कर रात में अकेले ही बरछा मार कर जयमल को मार दिया था[6]। गुजरात के सुलतान ने जब चित्तौड़ पर हमला किया तो राणी करमेती ने सात सहस्र स्त्रियों सहित अफीम खाकर प्राण त्यागे थे[7]। ऊदा उगमणावत के प्रसंग में नैणसी ने लिखा है कि मेला सिखरा की स्त्री की चोटी काट कर वापिस गया, सो उसका अमल का पोता खुलकर गिर पड़ा था[8]। अकबर के साथ युद्ध करने से पहले राठौड़ राव जयमल ने अपने हाथ से सरदारों को अमल पान कराया था[9]। प्राचीन काल से राजपूतों में यह रीति चली आती है कि भिन्न वंश के साथ का बैर लड़कियां ब्याहने से मिटाया जाता था और एक ही वंश वालों का परस्पर अफीम पिलाने से[10]। अफीम प्रचलन का पता डिंगळाई कवियों की रचनाओं से भी लगता है[11]। बाहोजी के एक छप्पय से विदित होता है कि उस समय में अफीम का नशा जन साधारण

१-जगदीशसिंह गहलोत राजपूताने का इतिहास, भाग १, पृ० ८१ जोधपुर, सन् १९३७।

२-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० २८१, सन १९३८।

३-(क) जगदीशसिंह गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग पृ० ५३, सन् १९६०।
  (ख)-मुहणोत नैणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृ० १०८, काशी, संवत् १९८२।

४-श्यामलदास वीरविनोद, पृ० ९९६।

५-वही, भाग २, पृ० १८४।

६-मुहणोत नैणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृ० ४५, काशी।

७-वही, पृ० ५५।

८-वही, पृ० २२७।

९-ठाकुर गोपालसिंह जयमलवंशप्रकाश, प्रथम भाग, पृ० १३९-१४०।

१०-गहलोत राजपूताने का इतिहास, पहला भाग, पृ० ८५।

११-तुटी बीटी ताकलो, तापे फिरै तुखार।
  अमल पटो धोयो हुवो, काया करस हार॥ १०६॥-बीठूजी चारण, कवि संख्या ६। तथा भल्लूजी कविया (कवि संख्या ३८) भी द्रष्टव्य।

मे फल गया था। यहा तक कि अफीम न मिलने पर लोग अफीम के छिलको को ही कूट पीटकर नशा करते और दिनभर मस्त पडे रहते थे[1]।

१६–मद्य-मास, जीवहत्या–राजपूत, जाट, गूजर आदि मास मद्य खाते-पीते थे। क्षत्रिय जातियो के अतिरिक्त जन साधारण म भी इनका प्रयोग होता था। वामपथी शाक्तो मे पशु हिंसा और मद्य मास का प्रयोग था[2]। यहा के कलालो का तो व्यवसाय ही शराब बनाना था।[3] अफीम की भाति शराब भी मृत्यु का कारण हुई है। गुजरात के सुल्तान मुजफ्फरशाह ने अपने पुत्र तातारखा को शराब म जहर मिलवाकर मरवा डाला था[4]। अत्यधिक मदिरा पान के कारण सवाई राजा मानसिह का ज्येष्ठ पुत्र जगतसिह सवत १६५६ म मर गया था। इसी कारण सवत १६७८ म आमेर के शासक राजा भावसिह की जीवनलीला समाप्त हुई[5]। मेवाड के कु वर अमरसिह की भटियाणी राणी को शराब का शौक था[6]। नणसी ने अनेक स्थलो पर शराब के प्रयोग का उल्लेख किया है[7]। तत्कालीन समाज म जीवहत्या का अत्यन्त व्यापक रूप मे प्रचार था, जिसका बडे कठोर और प्रबल शब्दो म विरोध जाम्भोजी तथा विष्णोइ सिद्धो ने किया है। पीपासर के निकट नागोर म तो मुसलमान जीवहत्या करते ही थे, यहा तक कि जाम्भोजी की बाल्यावस्था म–सवत १५१५ म, हिन्दुओं का दिल दुखाने के लिए उन्होंने गोहत्या भी आरम्भ की थी। यह अत्याचार देख कर मेवाड के राणा कुम्भा को नागोर पर चढाई करनी पडी थी। राणा कुम्भा के अन्तिम दिनो मे उनके उन्माद रोग के सम्बन्ध मे किसी चारण द्वारा कहे गये एक प्रसिद्ध छप्पय मे भी इसका उल्लेख है[8]। जाम्भोजी ने स्पष्ट कहा है कि काजी और मुल्ला मोहम्मद के नाम पर जीवहत्या करते थ, वे "मुरदार" (सबद १०) थे। यही नही, वे गाय, बल (८ ३-४, १५ १६) तथा अन्य पालतू और निरीह जीवो की भी निममता से हत्या करते थे (सबद ८, ६८)। कविराजा श्यामलदास के अनुसार, काबुल की ओर जाते हुए हुमायू के जसलमेर के इलाके म गो-हत्या करने पर वहा के राजपूतो ने लडाई की थी[9]। मौका मिलने पर मुसलमान लोग गो-हत्या

१–मूढ मगध अग्यिान साथ मडली न सोहै।
नवगि जाप न कर वसि छोतरा कचोहै।
जाहा अयिग्र ग्यान ताहा ढुकडो न आव।
जे पीगि वमै आय ठग मगकरी चलावै।
कुमत कुनद्ध ग पावड या वरज्यो रहै न पानियो।
ततोमा सू तादि कर वोल्हा चोईमा दिन चालियो ॥ २१ ॥

२–श्यामलदास वीरविनोद पहला भाग पृ० १४३।

३–रजगवरान रोनिया राजस्थान की जातियाँ, पृ० २०८।

४–ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, द्वितीय खण्ड, पृ० ५८४–८५ प्रथम सस्करण १८

५–डा० रघुवीरसिंह पूर्व आधुनिक राजस्थान, पृ० ८७, ९३, उदयपुर, सन १९५१।

६–श्यामलदास वीरविनोद, द्वितीय भाग, पृ० ६७३।

७–ख्यात, प्रथम भाग, पृ० ८१ १०६ आदि, काशी सवत १९८२।

८–(क) श्यामलदास वीरविनोद प्रथम भाग पृ० ३३१ ३३३–३३४।
(ख) ओझा उदयपुर का राज्य इतिहास खण्ड–२ पृ० ६१८ ६३३।

९–वीरविनोद, द्वितीय भाग पृ १२९।

करते रहते थे[1]। गौ के अतिरिक्त अन्य जीवों—भेड़ बकरी आदि की भी हत्या होती थी (७ २-३)। मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य जातियों में भी इन जीवों को मारा जाता था। राजपूत भी जीव हत्या करते थे (वील्होजी कृत कथा गुगलिय की, छन्द ५, ६, और २०)। बकरा को मारकर खाने के अनेक उल्लेख नणसी ने किये हैं। गोठ में तो बकरों की हत्या अनिवार्य सी थी। राव रणमल ने अन्य वस्तुओं के साथ ४० ५० बकरे मार कर घूंडा के साथ गोठ की थी[2]। खेतसी चूंडावत ने गोठ के निमित्त बकरा को मारा था[3]। मोहिल पन्हिार ने १६ बकरे मार कर गोठ की थी[4]। इसी प्रकार के और भी अनेक उल्लेख मिलते हैं[5]। जाटों में गोदारा और सारणों की आपसी अनबन का उल्लेख कर आए हैं। सारण पूलो और उसकी चौधराइन मिलकी के आपसी मनमुटाव को मिटाने का सारण जाटों ने विचार किया और इस हेतु एकत्र होकर उन्होंने बकरे मारे, मदिरा मगवाई और गोठ की। राजपूत देवी पर बलि के निमित्त भी जीव हत्या करते थे[6]। यहां के ब्राह्मण और वैश्य मद्य मांस नहीं खाते थे[7]। हिन्दू और मुसलमान गृहस्थों के अतिरिक्त साधुवर्ग में भी बड़े रूप में जीवहत्या प्रचलित थी (१४ ११-१२, ४६)। वील्होजी कृत कथा जमलसेर की से प्रतीत होता है कि जाम्भोजी ने रावल जैतसी से चार वर पशुओं की रक्षा से सम्बन्धित ही मांगे थे। अफीम की भांति समाज में मांस और मदिरा का अबाध प्रचार था। यहां की अन्य जातियों में मीने मांस मदिरा खाते पीते हैं, यहां तक कि गौ-मांस भी खाते हैं[8]। कसाई केवल मुसलमान हैं जिसका व्यवसाय मांस बेचना और खटिक का खाल पकाना है[9]। ये परम्पराएँ एक दिन का परिणाम नहीं हैं, इनका प्रचलन बहुत पुराना है।

१७—भांग और तम्बाकू—इन का प्रचलन भी यहां खूब रहा है। गोरखवानी में भांग-प्रयोग की भर्त्सना की गई है (पृ० ६६, छन्द २०८, प्रयाग, संवत २००३)। नगर निवासी ब्राह्मणों में तो भांग पीने का रिवाज बहुत ज्यादा रहा है[10]। विद्वानों के अनुसार तम्बाकू सबसे पहले संवत १५५५ (सन १४६८) में कोलम्बस भारत में लाया था। जाम्भोजी की विद्यमानता में राजस्थान में इसका प्रचलन हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है (द्रष्टव्य-कन्ऊजी मरण, कवि संख्या ३७)। जाम्भोजी ने मानव और समाज की सर्वतोभावेन उन्नति को ध्यान में रख कर ही इन पाँचों के प्रयोग का सर्वथा निषेध किया था। वे समाज-सुधार,

---

१—श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ ४०१।
२—मुहणोत नणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृ० २४, काशी।
३—वही, पृ० ३७।
४—वही, पृ० २२२।
५—वही, पृ० २२५-२६ तथा द्वितीय खण्ड पृ० १४३, २०२ आदि।
६—श्यामलदास वीरविनोद, प्रथम भाग, पृ० ३४६।
७—वही, पृ० २०७।
८—बजरंगलाल लोहिया राजस्थान की जातियाँ, पृ० ४०-४१।
९—वही, पृ० २११-२१२।
१०—श्यामलदास वीरविनोद, प्रथम भाग, पृ० १०१।

उन्नति और आत्मोत्थान का संदेश लेकर आये थे। मादक पदार्थों के सेवन से मनुष्य की शारीरिक और मानसिक शक्तियों का ह्रास होता है, वह अयोग्य और अकर्मण्य बनता है। आपसी फूट, वमनस्य, कलह और अशांति इन्हीं मादकता का दुष्परिणाम है। वील्होजी ने भी इनका प्रयोग करने वाले को बुरी तरह धिक्कारा है[1]।

१८-जाटों का विशेष उल्लेख-विष्णोई अधिकांश जाट जाति में से बने हैं। विष्णोई-रचनाओं से जहां समूचे समाज की विभिन्न स्थितियों का पता चलता है, वहां जाटों से सम्बन्धित कतिपय विशिष्ट बातों का भी पता चलता है। वे शीघ्र ही उत्तेजित हो जाने वाले, लड़ाकू, झूठ, मूर्ख और अशालीन थे[2]। वे न पवित्रता रखते, न स्नान करते, न 'जीकारा' देकर बोलते और सुभाषण तो करते ही नहीं थे; "हो-हो" करके जोर से बोलते थे। वे बुरी-बुरी आदतों के शिकार थे और निर्दोष जीव हत्या करते थे। पुण्य, सत्य, शील, सन्तोष आदि गुणों से वे एकदम हीन और अपनी मस्ती में जीवन बिताते थे (ऊदोजी नैण, सम्भ ५८)। विष्णोई कवियों के ऐसे अनेक उल्लेख मिलते हैं। वील्होजी ने जाटों के "जीकारा" देकर बोलने में आश्चर्य प्रकट किया है[3]। केवल जाटों पर ही नहीं समाज के अधिकांश खतिहर और उनसे सम्बन्धित लोगों पर भी यह बात लागू थी।

१९-समग्रता में समाज और जाम्भोजी के कार्य-जाम्भाणी साहित्य के आधार पर सामूहिक रूप से तत्कालीन समाज के सम्बन्ध में कतिपय सामान्य बातें कही जा सकती हैं।

लोग केवल भौतिक सुख, शांति और समृद्धि की ही कामना और तदनुसार कार्य करते थे। ऐसे अनेक लोगों और कामनाओं का जाम्भोजी ने बड़ा यथार्थ उल्लेख किया है (सबद ८३, ८६)। सभी भौतिक सुख-समृद्धि ही चाहते थे, मोक्ष प्राप्ति का मार्ग कोई नहीं ढूंढता था। लोग आयु से बड़े और कुल से उत्तम माने जाते तथा गुरु-दर्शन से ही अपने को सिद्ध समझने लगते थे (२४ २-५)। वे आचार-विचार हीन और पतित थे, धर्म, शील, संयम आदि का पालन नहीं करते थे (२१ २१)। झूठ से डरते नहीं थे, कड़ककर बोलते थे, उनको ज्ञान तत्त्व का पता नहीं था और भूत की भांति 'भड़कते' थे[4]। भले बोल तो वे

१-वरज्या सतगुर साम्य, कु मल कुकरणी करता।
मद मास पीवती, भाग पाहि विसरदा।
वरज्या गोरष नाथ, वरज्या केवली तीथकर।
वरज्या किसन मुरारि, वरज्या अवलिय पकम्बर।
सूत कुराण पुराण मा, बोल साषि सु जा ल्मी।
अतना की सीष मानी नही, तरो कालो मुह रे आदमी ॥ २३ ॥
२-जाट सगो करि जीमण वसाला, तिणि रो भर्डाक विगावो ॥ १५ ॥
थूल मगाई मग लट किरिया नाजिया ह बल जोवो ॥ १६ ॥-रेडोजी, साखी।
३-पडऊ अचमो बात, जाटा जीकार वाणी।
जाट नासारी भण्यो, नर वोनता होका रि।
सुबुधि, माघ, सतोष व्यग्ना, पुरेष अथवा नारि।
पालटी कुपरि कुवाण्य मन्दी, हुआ सबभि सुजाण।-साखी।
४-रूड़ न डर कडकता वाले मव वीलि मार अयरवाण तोल।
भेद वेद विना भन्द ज्या भूता, जनम हारि वे दीन विगूता ॥ ५ ॥ -रायचन्द, साखी।

जानते ही नहा थे, सदा पाप की बातें ही सुनते थे[1]। जब बोलते थे तब कुवचन ही बोलते और संगति मूर्खों की करते थे (कवि संख्या ४०, साखी)। उनको ठीक और ढंग से बोलना भी नहीं आता था। वील्होजी कृत "सच अपरी विगतावली" और केसोजी कृत "कथा विगतावली" तो इसी विषय को ही लेकर लिखी गई हैं। और तो और अनेक लोगों को झूठ और सत्य तक का पता नहीं था,[2] न ही वे अभिवादन करना जानते थे। जीभ का "जीकारा" मीठा लगता था[3] किन्तु इसका लोगों में अभाव था[4]। वे मन-हठी, सदा वाद-विवाद में उलझे, संशय में डूबे और अपनी ही बात पर अड़े रहते थे (१५ १३, ८)। उनका मन-भावनी बातें तो बहुत पसन्द थी किन्तु खरी बातों का कोई विश्वास भी नहीं करता था (६ १४-१५)। गाने-बजाने से वे खुश होते थे (६६ १३)। वे व्यभिचार और जीव हत्या में रत रहते और परायी निन्दा करते थे (द्रष्टव्य-तेजोजी के गीत)। लोग खूब डटकर भोजन तो करते थे (११ १८,२४ १) किन्तु अधिकांश कुछ भी उद्यम न कर बेकार घूमते फिरते थे। बिना कोई कार्य किए दरिद्रता दूर होने का कोई उपाय नहीं था[5]। इसी कारण जाम्भोजी ने प्रत्येक परिवार को जीविका के लिए कुछ न कुछ अपने हाथ से काम करने का आदेश दिया है (६५ ५, ७५ ७)।

जाम्भोजी ने सोना, कपड़ा, घी, तेल, हाथी, घोड़ा तथा कन्या-दान आदि से भी बढ़कर पवित्रता रखना, नित्य स्नान करना और शील का पालन बताया है (१००, ११४ आदि)। समाज में सामान्यतः हिन्दू शास्त्रों और संस्कारों पर आस्था थी किन्तु व्यापक प्रचलन उनके विपरीत रूप का ही था। सूर्य के सम्मुख थूकना, ब्राह्मण को निमन्त्रित करके भोजन न खिलाना, उसकी जनेऊ तोड़ना, चरती पीती गायों को डराकर भगा देना आदि जाम्भोजी ने दोष माने हैं (५९,६०)। कहीं कहीं समाज में "कथा" कही सुनी जाती थी। कथा से तात्पर्य पौराणिक कथाओं से प्रतीत होता है। हिन्दू और मुसलमान धर्म का असली तत्त्व न समझकर आपस में लड़ते थे (द्रष्टव्य-वील्होजी)। लोग भ्रम की श्रृंखला में बंधे अपने कुल की लीक पर चलते थे। गलत हो या सही, कुल की लाज का उनको बड़ा ध्यान रहता था[6]। अना-

---

१-धरम न धरियो ध्यान, पाप कानें साभलियो।
मलो न जाण्यों बोल, कवो विष पारो अलियो ॥ २१ ॥ -ऊदोजी नरण, छप्पय।
२-साच झूठ की न लहै सत्य, मनसा रही पाप सू बध्य ॥ १० ॥
-वील्होजी, कथा गुगलिये की।
३-मीठो जीभ जीकारो, गाठि प्डतां की मीठी।
मान्व मीठी पाट, माहि मीठी अगीठी ॥ १०४ ॥-वील्हजी चारण, छप्पय।
४-विसन बीणि केवल ग्यान, अवर कुण दूजो त्याव।
अबूझ कुभाव कूण, कुण मुख जीकार कुलाव ॥ ४६ ॥-ऊदोजी नरण, छप्पय।
५(क) उदिम कर रे आदमी, उदिम दाल्यद जाय।
जीभ विसन को नाव ले, अहनिस साम्य धियाय।
(ख) भला क्रिया न छाडिय, कुकरम कल्ह नीवारि।
विसन भगति कोटि आदमी, कूण पहुतो पारि ॥ ६ ॥-वील्होजी, विरन छनीसा।
६-कन्ह ग्यानी आय मिल्यो भूला मुख अबोध।
वाया सकल भरम का, वहें ज कुल की लीक ॥ ७ ॥ (नेपाल आगे दखें)

नायकार और मोह म पड़े हुए भी लोग झूठी लोक-लज्जा का ख्याल करते थे। जाम्भोजी और अन्य कवियों ने इस तथाकथित दुनियादारी का त्याग कर हरि नाम जपने को कहा है। लोगो मे अतिथि-सत्कार तथा दान देने की भावना नहीं थी, जिसके लिए स्वय जाम्भोजी ने प्रयास किया था। राव, राणा राज तो करते थे किन्तु वे अधिकांश भ्रम म भूले हुए[1] लोग 'अभेद्' गाफिल और मूर्ख थे[2]। जाम्भोजी ने ऐसे मूर्खों को समझाया, उद्दण्ड पुरुषों को विनीत बनाया और सत्पथ पर लाने के लिए 'बहरा' के आगे भी ज्ञान कथन किया[3]। सबदवाणी से विदित होता है कि जाम्भोजी ऐसे मूर्ख और अज्ञानी लोगों को राह पर लाने के लिए व्यग्र और चिंतित थ।

समथ लोग जबरदस्ती दूसरों की मजदूरी मार लेते थे। जानबूझ कर वे पाप-कर्म करते, हरे वृक्ष काटते, बन जलाते और ऋतुमती स भी सभोग करते थ। शर्म वे किसी की नहीं करते थे और सच्ची बात कहने और समझाने पर कड़क कर बोलते थे[4]। अहंभाव बहुत था। "कोई पायचे" पहन और टेढ़ी पगड़ी बाधकर अपनी छाया को निरखते चलते थे। विद्वानो म पाखण्ड प्रचलित था। जाम्भोजी ने ज्योतिषियो को झूठा सिद्ध किया, पंडितों और काजियों का अहंकार चूर्ण किया[5]। ज्ञान-विचार बहुत कम लोगो के था। मुसल-

---

जड़्या भरम क सकल, वहै ज कुल की लाज।
दरब गु मांव इकरथो, सर न एको काज ॥ १२ ॥-वील्होजी, कथा गुगलिय की।

१-राव राणां भरम्य भूला, राज करता मालिय।
गरीब रूपी पहो पूरी सो गुर आमो भालिय ॥ ४ ॥-ऊदोजी नैण, साखी।

२-गाफिल भूल्य रह्या भोलाव, करण साथ चितायो ॥ ३ ॥
गाफिल मूल अभेद् मुरेपा, क्यो परच परचायो ॥ ४ ॥-ऊदोजी नैण, साखी।

३-बहरा आग ग्यान कथ्यो, गुर अबूझ बुझाया।
अ भला का गुर माण मल्यां, गुर भनू नु वाया ॥ ३ ॥
-सुरजनजी (कवि संख्या ६९), साखी।

४-लोह भकोड कर अनियाय, चाटी चुगली सू घणौं हियाव ॥ ३ ॥
बाह्मण भाणजिया री त्य भांडि, दोर माहि पडसी धाडि ॥ ४ ॥
वसत पराई पडी लहाय, छानि रहै मैला मन माहि ॥ ५ ॥
पूछो न कहै दिल रा चोर, सुरजा तरी सहैला ठोर ॥ ६ ॥
मुरडि मजूरी राप ताणि, विरिया माहि पड सी हाणि ॥ ७ ॥
मुप ता वोय भदा बुवाणि, पापी पाप कु माव जाणि ॥ ८ ॥
रूपा ताणी न पाल दया, वाढ बनी कु भी भ पया ॥ ९ ॥
लोप वायक मेट आण, पाप कीय म आवै हाण्य ॥ ११ ॥
सुभ्यागता न मेल तार थू ला सरसा हुव पवार ॥ १२ ॥
जाति जण री न करे काण, पापी पाप कु माव जाण ॥ १३ ॥
धासामोम घाल घणो, रडा न टाल रति आमोटणो ॥ १५ ॥
धाधाधू र रहै अचेन, ताह पापा ता हुव परेत ॥ १७ ॥
मोप न्या बोल कडकडी, दोर दुख सहिस्य बपडी ॥ १६ ॥-वील्होजी, साखी।

५-जबू दीप मा भ्रमजी, रच्यो परमट दीवाण।
हक साध सेयो साम्य पथ, के क थूत मोचरया अजाण।
दवज्ञी त जोयस धारया झूठ, मल्या पिन्ता का माण। (शेषांश आगे देखें)

मानी धम पर कोई मुसलमान और हिंदू धम पर कोई हिंदू नही चलता था। लोग लगोट और वचन के पक्के नहा थे। नीच कम करने वाली घूत और 'छिनाल' स्त्रियाँ तो घर-घर म थीं किन्तु पतिव्रता और सती स्त्रियाँ तो कोई कोई ही थी। अपनी जाति के अनुसार काम कम ही लोग करते थे। न एकादशी रखते थे और न रोजा। धम त्याग कर सब अपन ग्रह में रत और अमुखी थे। चारण, भाट, वनिये और ब्राह्मण-कोई भी अपने-अपने आचार और धर्म पर नही थे। अपनी राह त्याग कर वे अधर्मी हो गए थे' (द्रष्टव्य-तेजोजी, कवि सख्या ५, गीत सख्या ५)।

जाम्भोजी ने ऐसे समाज के सर्वांगीण विकास का प्रयास किया था।

धार्मिक स्थिति

(१) पीठिका-राजस्थान मे विक्रम की ७ वी से ११ वी शताब्दी तक राजपूत जाति के कई वश विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए और उन्होंने यहा अपने-अपने पृथक राज्य स्थापित किए। तत्पश्चात भी स्वतन्त्रता प्राप्ति तक यहा विभिन्न राजपूत घरानो का राज्य रहा। १० वी शताब्दी से यहा मुसलमानो के आक्रमण आरम्भ हुए और जो समय-समय पर होते रहे, किन्तु जोधपुर के राव मालदेव के स्वगवास (सवत १६१६) समय तक, धार्मिक-सामाजिक दृष्टि स मुसलमाना का प्रभाव यहा बिल्कुल ही नही पडा। इस प्रकार, एक दीघ काल तक राजपूतों का शासन रहने से, राजस्थान मे अनेक तत्त्वो के समन्वय, सार-सचयन और मिश्रण से एक विशिष्ट प्रकार की सस्कृति का विकास हुआ जिसे हम मोटे रूप से "राजपूत सस्कृति" कह सकते हैं। धार्मिक सहिष्णुता, प्रत्येक धम को प्रोत्साहन देना, वचन-पालन, स्वामि-भक्ति, आन मान मर्यादा और आदर्शों का पालन, स्वाभिमान, शरणागत और टेक की रक्षा, प्रतिशोध-भावना, युद्ध मे विजय अथवा मृत्यु एक की कामना, भागते हुए, घायल, पराजित, क्षमा-प्रार्थी और असावधान शत्रु पर सामान्यत प्रहार न करना आदि राजपूत सस्कृति की कतिपय उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। यहा की धार्मिक स्थिति का सही निदान राजपूत सस्कृति के सदभ म ही किया जा सकता है। यह कहन की आवश्यकता नही कि यहा की जनता के जीवन-दशन, पद्धति और निर्माण के मूल म धम और राजा-ये तत्त्व प्रधान रहे हैं। राजपूतों के शासन काल मे धम और पूजा-उपासना के क्षेत्र मे सबसे बडी दो बातें थी —(१) धार्मिक सहिष्णुता, प्रत्येक धम मत को प्रोत्साहन और सरक्षण, (२) विभिन्न मदिरो और देव-देवी मूर्तियो का निर्माण और जीर्णोद्धार। राजपूत राजाओ ने सभी धर्मों और मतो को सम्मान की दृष्टि से देखा और उनको पल्लवित-पुष्पित होने का सुअवसर प्रदान किया। एक ही राज-परिवार मे विभिन्न धर्मानुयायी सदस्य भी रहे, तथा पिता और पुत्र की धम-मान्यताओ मे भी अतर रहा किन्तु इस कारण उनके आपसी और जनता के सबधो म कोई फक नहा पडा। लोक म भी यही सहिष्णुता रही।

वाजी तो हार्‌या भगियान, देपि पहनि का कुराण।
धरम नेम जरणा जुगति, स भचार उतिम क्रिया।
सुरग मुषय वितना रल्या, कुगर कुपात दोर गया ॥ ४७ ॥-ऊदोजी नाण ,

(२) १६ वीं शताब्दी [के] बिश्नोई कवियों के धार्मिक स्थिति विषयक प्रासंगिक कथनों — जाम्भोजी के बाद और महत्त्वपूर्ण सम्प्रदाय के प्रमुख और मान्य कवियों ने प्रसंगवशात् तत्कालीन धार्मिक स्थिति के विषय में यत्र-तत्र महत्त्वपूर्ण जानकारी और सूचनाएं [illegible] हैं। इनसे ज्ञात होता है कि सम्प्रदाय में जाम्भोजी से पूर्व और बाद में चार मुख्य पंथ प्रचलित थे, मुसलमान, नाथ (जोग) और जैन [illegible] जिनका उल्लेख [illegible] उदाहरण इस प्रकार है —

१-मुल्ला कहा जोग जिनवर क्यारे ध्रम विस्तारण।
  रहे तिप तिप जोग बहु विध [illegible] ग्यान सवारण ॥ १२ ॥
  -जंभेश्वर स्तोत्र, अज्ञात कवि सं० २९।

२-कलियुग क्यारयो ध्रम [illegible] फुरमाण्या।
  मुसल ध्रम जण जोग जुगति [illegible]।
  जुगति जोगी की बताई गुरु [illegible]।
  [illegible] बैस [illegible] न पोर्हे, [illegible] भो पयो।
  [illegible] जोगी हुवा [illegible], अगम पंथ चलाइयो।
  सभरायलि गुर आप घाल्यो, च्यारि ध्रम फुरमाइयो।-साखी, अज्ञात कवि, संख्या २।

३-क्या ग्रुण धर्णो वेद तेरा, ग्यान हिन्दू तुरक चिताइया।
  उतर देही [illegible] कवि कवि ग्यान सुणाइया।
  कथ्यो ग्यान म्हार ध्रम ग्यानी बूझ कोइम न जोवियो।
  काजी कतेब वेद ध्रम जुगति जोगी चेतियो ॥-साखी, रायचन्द, कवि सं० ४०।

४-गोरष कह्यो सो जोग निवास, दताजी दाख्यो सन्यास।
  जैन धरम जिनवर की वांणी, महमद कह्यो सो मुसिलमांणी।
  भागोत कह्यो किसन गोपालि, सतगुर कह्यो [illegible] साच करि जांणि।
  सतगुर पायो मुकति म होय, कूड़ कथन जन रोसै कोय ॥ ७ ॥
  -कथा औतारपात, वील्होजी

५-कहियो साच सुगुर को सुणी, च्यारि ध्रम फुरमाया धणी।
  दांन सील तप भाव विचारि, सहज संतोष विर्मा दया धारि ॥ १५५ ॥
  जोग ध्यान मन मा दिढ़ रहै, सुप महमद की कलमू कहै।
  स्रुवि ब्रह्मांणी लोय सभालि, जैन ध्रम जीव दया पालि ॥ १५६ ॥
  -कथा विगतावली, केसोजी।

६-सुरजनजी, (संवत १६४०–१७४८) (कवि संख्या ६६) के निम्नलिखित कथन —

क-निराहारी आप आयो च्यारि ध्रम चलाइयो।
  नव षड षेत किरसांण जिहक, साच षेती कीजियो।
  जोग जिनवर साच इल मां ध्रम ग्यांन वितारियो।
  सुरजन जन की वीनती, गुर सरणि पारि उतारियो ॥ ४ ॥-साखी सं० ८।

ख-ध्रमा की किरिया कहो, जरणा जुगति बताय।

कलमा दास कतेब सुणि, जण दया ठहराय ॥ २०० ॥-कथा ओतार की ।

ग-सुगर मेघ पाप स कार्ड, भद्र मेघ कीज भलाई ।

स भ अण जोगी बुलाणा, मिल मीर काजी मुलाणा ॥ ५२ ॥-कथा परसिध ।

घ-स भा सुचि मुसल कलम मया, जोगारभ जरणा जीव दया ।

तप, सील, संतोष, खिमा जरणा, सुचील सम्र निहुच करणा ॥ १८ ॥-छंद ।

ङ-सुरजनदास विचारि कहै, गुर ब्यारि धरम को पंथ चलाई ।-सवैया ।

इनके अतिरिक्त सबदवाणी तथा विष्णोई साहित्य से विदित होता है कि लोक म अन्य अनेक इतर देवी-देवताओं, क्षेत्रीय लोक वीरों और देवताओं की पूजा-मान्यता भी बड़े परिमाण म प्रचलित थी। इसे सामान्यत 'पाषण्ड पूजा' (कल्ट वर्शिप) कह सकते हैं। नीचे इस पृष्ठभूमि पर हम तत्कालीन धार्मिक स्थिति का सिंहावलोकन करते हैं।

(१) हिन्दू धर्म-हिन्दू धर्म एक व्यापक नाम है जिसके अन्तर्गत वैदिक, औपनिषदिक और पौराणिक आचार-विचार, साधना, दर्शन और विशिष्ट 'धर्म-मान्यता सम्मिलित हैं। ईश्वरोपासना, यज्ञ करना, वर्ण-व्यवस्था आदि वैदिक धर्म के मुख्य अंग थे। कालान्तर मे यह अनेक शाखाओं म बट गया और उसके स्थान पर पौराणिक धर्म प्रचलित हुआ[1]। राजपूतों के विशेष उत्थान के साथ ही पौराणिक धर्म विशेष रूप मे पनपा। मध्ययुग म पुनर्जीवित हिन्दू धर्म की दो उल्लेखनीय विशेषताएँ थी -(क) शंकर का मायावाद तथा (ख) अन्य वैष्णव आचार्यों का भक्तिमार्ग। मरु-प्रदेश म १६ वी शताब्दी तक इन दोनों का ही प्रभाव नगण्य। जाम्भोजी की विचारधारा उपनिषदों और गीता से प्रभावित है।

हिन्दू धर्मान्तर्गत राजस्थान म विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश आदि की पूजा और सेवा-उपासना प्रमुख रही है। इनसे सम्बन्धित अनेकानेक मन्दिर, मूर्तियां और शिलालेख मिलते हैं। सामूहिक रूप से १६ वी शताब्दी तक यहा का लोक धर्म स्मार्त धर्म ही था जिसकी चर्चा आगे की गई है। इससे पहले उपयुक्त विभिन्न देवताओं की व्यापक मान्यता स्वरूप नीचे कतिपय प्रमाण दिए जाते हैं —

(क) विष्णु यहा विक्रम सवत पूर्व की दूसरी शताब्दी से भी पूर्व विष्णु-पूजा प्रचलन के प्रमाण मिलते हैं। नगरी (मेवाड) के शिलालेखों से सिद्ध होता है कि विक्रम सवत पूर्व की तीसरी शताब्दी के आसपास विष्णु-पूजा होती थी और उसके मन्दिर भी बनते थे[2]। मेवाड म विष्णु के प्राचीन मन्दिर चित्तौड, बाडोली, नागदा, आहाड आदि अनेक स्थानों म विद्यमान हैं, जिनम सबसे प्राचीन बाडोली का शेषशायी विष्णु का मन्दिर १० वी शताब्दी से भी पहले का बना हुआ है[3]। विक्रम सवत ७१८ के एक शिलालेख से अपराजित की स्त्री यशोमती द्वारा तथा चीरवे के मंदिर की दीवार मे लगे सवत १३३० के शिलालेख से उद्धरण द्वारा विष्णु-मन्दिर बनाए जाने का पता चलता है[4]। आबू के

१-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड पृष्ठ १४१३ सन १९३२।

२-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड पृष्ठ ५८-५९, सवत १९८२।

३-वही, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१३-१४ सवत् १९८८।

४-वही, प्रथम खण्ड पृष्ठ ४०४ ४०८।

अचलेश्वर मंदिर के पास मठ में लगे संवत् १३४२ के शिलालेख में वेद शर्मा द्वारा विष्णु मंदिर समूह की प्रशस्ति बनाए जाने का उल्लेख है[1]। महाराणा मोकल ने चित्तौड़ में जलाशय सहित विष्णु का मन्दिर बनाया था[2]। बदनोर के बड़े दरवाजे के पास संवत १५८८ का बना लक्ष्मीनारायणजी का मंदिर है[3]। देलवाड़ा के जैन मंदिरों के समूह के पीछे की ओर विष्णु की मूर्ति पर संवत् १४६८ का अभिलेख अंकित है[4]। मचूकला (प्रतापगढ) में १४ वीं शताब्दी के आसपास का बना विष्णु मंदिर है[5]। बड़ौदा (डूंगरपुर) के एक श्वेत पाषाण के शिवमंदिर के अहाते में विष्णु रूप सूर्य की खड़ी हुई चतुर्भुज मूर्ति है जिसकी लिपि अनुमानतः ११ वीं शताब्दी की है[6]। डूंगरपुर के महारावल सोमदास (विक्रम संवत १५०६-१५३६) के स्वर्गवास के पश्चात् उसकी एक राणी हुरखमदे ने करजी गांव में विष्णु-मन्दिर बनवाया था[7]। बांसवाड़ा के तलवाड़ा और चीच (छींच) में क्रमशः १२ वीं और १६ वीं शताब्दी के आसपास के बने लक्ष्मीनारायणजी के मन्दिर हैं[8]। यहां के कलिंजरा गांव में भी एक विनष्ट विष्णु मंदिर के बाहर संवत् १४४३ का एक शिलालेख है[9]।

बुचकला (बिलाड़ा, जोधपुर) में बड़े मंदिर को विष्णु के किसी अवतार का मन्दिर बताया गया है। इसके सभामण्डप के एक स्तंभ पर सम्भवतः विक्रम संवत ८७२ का एक लेख खुदा हुआ है। पीपाड़ का विष्णु मंदिर विक्रम की नवीं शताब्दी के लगभग का बना हुआ है[10]। किराडू (मालाणी) के प्राचीन मंदिरों में एक मंदिर विष्णु का है। खेड़ के रणछोड़जी के प्राचीन मंदिर के कितने ही स्तंभ १० वीं और १२ वीं शताब्दी के बने हुए हैं। जोधपुर के राव गांगा, सिरोही से गंगश्यामजी (विष्णु) की मूर्ति लाए थे, जिसके साथ उसका पुजारी भी आया था[11]। मंडोर के किसी विष्णु मंदिर का संवत् ८९४ का एक शिलालेख जोधपुर-कोट में लगा हुआ मिलता है[12]। बूंदी के हिंडोली गांव में १० वीं शताब्दी के लगभग की वराह अवतार की मूर्ति है[13]। बीकानेर के राव लूणकरणजी ने जाम्भोजी के शिष्य होते हुए भी लक्ष्मीनारायणजी का मंदिर बनवाया था[14]। कोड़मदेसर के भाटियों में भी

१-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४८०-८१।
२-(क) वही दूसरा खण्ड, पृष्ठ ५८७, संवत् १९८८।
   (ख) गहलोत राजपूताने का इतिहास, पहला भाग, पृष्ठ २०६, सन् १९३७।
३-गोपालसिंह मेड़तिया जयमलवंशप्रकाश, पृष्ठ ७, सन १९३२।
४-गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग, सिरोही राज्य, पृष्ठ २४, सन १९६०।
५-ओझा प्रतापगढ राज्य का इतिहास, पृष्ठ २६, संवत १९९७।
६-ओझा डूंगरपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ १५, संवत १९९२।
७-वही, पृष्ठ ७१।
८-वही, पृष्ठ १४, २१।
९-वही, पृष्ठ २४।
१०-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३१-३२, संवत १९९५।
११-आसोपा मारवाड़ का मूल इतिहास, पृष्ठ १२९, सन् १९३१।
१२-ओझा राजपूताने का इतिहास, जिल्द पहली पृष्ठ १६५-६६ सं० १९९३।
१३-गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग, बूंदी राज्य, पृष्ठ २७, सन १९६०।
१४-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४३, संवत १९९६।

१० वीं शताब्दी में विष्णु पूजा प्रचलित थी[1]। जैसलमेर के महारावल लखमणजी ने संवत् १४९४ में मरुस्थल प्रदेश से स्वयं आविर्भूत लक्ष्मीनारायणजी की मूर्ति को नवीन मंदिर बनवाकर प्रतिष्ठित किया था[2]। तब से राज्य के स्वामी श्री लक्ष्मीनारायणजी और महारावल उनके दीवान माने जाने लगे[3]। विष्णु के अवतारों का एक स्थान पर प्रदर्शन तथा उनके अवतार विषयक अनेक पृथक् मूर्तियाँ भी मिलती हैं। यही नहीं, वैष्णव मातृकाओं का भी प्रदर्शन प्राप्त है[4]। राजस्थान में विष्णु के अनेक नाम, रूप और अवतारों की प्रतिमाएँ बनी हुई हैं। अवतारों में नृसिंह, राम और कृष्ण-चरित पर राजस्थानी में सुन्दर काव्यों की रचना हुई है। सामान्यतः अवतार का अभिप्राय विष्णु के किसी विशेष रूप में प्रकट होने से लिया जाता है और वे जगत-पालक माने जाते हैं। विष्णु-पूजा की व्यापकता का एक बड़ा कारण यह भी है।

(ख) शिव— वैदिक देवता रुद्र शिव रूप में लोक पूजित हुए हैं[5]। शिव-पूजा भी राजस्थान में बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है और यहां कई प्रकार की शिव मूर्तियाँ मिलती हैं[6]। बाडोली, मूंगथला, कल्याणपुर, हरस आदि प्राचीन स्थलों के शिवालय काफी प्रसिद्ध रहे हैं। कल्याणपुर (मेवाड़) नगर के समूह से मिले हुए विक्रम संवत् की ८ वीं शताब्दी की लिपि के एक लेख में कर्दमदेव द्वारा शिव मंदिर बनवाए जाने का उल्लेख है[7]। माहेश्वर सम्प्रदाय चार हैं —पाशुपत, शैव, कालामुख और कापालिक। इनमें पाशुपत मत का केन्द्र गुजरात और राजस्थान था। पाशुपत मत के ऐतिहासिक संस्थापक का नाम नकुलीश या लकुलीश है[8]। भगवान शंकर के १८[9] अवतारों में लकुलीश आठ अवतार माने जाते हैं। यहां के मेनाल, तिलिस्मा, बाडोली आदि स्थानों के प्राचीन शिव मंदिर नकुलीश सम्प्रदाय के हैं। कई शैव सम्प्रदाय के मंदिरों के द्वारों पर लकुलीश की मूर्तियाँ बनी हुई हैं जो पद्मासन स्थित और जैन मूर्तियों की भांति सिर पर केशों से आच्छादित हैं। उनके दाहिने हाथ में बिजौरा और बायें में लकुट है। पहले इन मन्दिरों के पुजारी

१-डा० कैलाशचन्द जैन एन्शियेन्ट सिटीज आफ राजस्थान, पृष्ठ ३६४,-अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर।
२-हरिदत्त गोविन्द व्यास जैसलमेर का इतिहास, पृष्ठ ८१, सन १९२०।
३-(क) लखमीचन्द तवारीख जैसलमेर (तीनों भाग), पृष्ठ ४६, संख्या १२८, जैसलमेर, सन १८९२।
(ख) नैणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड पृष्ठ ४३७, काशी संवत् १९९१।
४-राजस्थान भारती, बीकानेर, भाग ८, अंक ४, सन १९५५, पृष्ठ ३-३९।
५-विशेष द्रष्टव्य-डा० यदुवंशी शैवमत, बिहार रा० भा० प्र०, पटना, तथा भण्डारकर वष्णविज्म, शैविज्म आदि।
६-ओझा निबन्ध-संग्रह प्रथम भाग, पृष्ठ २१८ उदयपुर, सन् १९५४।
७-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१४, संवत् १९८८।
८-बलदेव उपाध्याय भारतीय दर्शन, पृष्ठ ५४७-४८ बनारस सन् १९४८।
९-लकुलीश, कौशिक गार्ग्य, मैत्र्य, कौरुष, ईशान, पारगार्ग्य, कपिलाण्ड मनुष्यक, अपरकुशिक, अत्रि पिंगलाक्ष, पुष्पक बृहदार्य, अगस्ति सन्तान, राशीकर और विद्यागुरु।
—वही, पृष्ठ ५४८-४९।

कनफटे साधु होते थे। वे शरीर पर भस्म रमाते और आजन्म ब्रह्मचारी रहते थे। कालान्तर में इस सम्प्रदाय के साधु लकुलीश का नाम तक भूल गए और स्वयं को गोरखनाथ आदि के शिष्यों में मानने लगे[1]। माहेश्वर सम्प्रदाय की एक शाखा का नाथ पंथ में अन्तर्भुक्त होना यह जीवन्त उदाहरण है। हरसनाथ (शेखावाटी) का शिवालय लकुलीश सम्प्रदाय का ही था जैसा कि वहां के शिलालेख में प्रयुक्त 'पंचार्थलाकुलाम्नाय' से स्पष्ट है[2]। जोधपुर के चाटसू गांव में ११ वीं शताब्दी के आसपास का 'लकुलीश मन्दिर है'[3]। जैसलमेर के रावल विजयराजजी (गद्दी-संवत ११७६) ने विजयसागर तालाब और शिव का महलिंग मन्दिर बनाकर यज्ञ किया था। इस आशय का एक दोहा भी प्रसिद्ध है[4]। महारावल बरसीजी (गद्दी संवत् १४९६) ने भी रत्नेश्वर महादेवजी का मन्दिर बनवाया था[5]। राजस्थान में राजाओं, ठाकुरों एवं सन्तों के स्मारक स्वरूप बनी हुई बहुसंख्यक छत्रियों में भी शिव प्रतीक (लिंग) की ही स्थापना की गई है। अनेक पुराने पंचायतन मन्दिरों में शिव की मूर्तियां भी पाई जाती हैं।

लकुलीश रावल नाथपंथ–राजस्थान में लकुलीश शिव ही सर्वाधिक प्रसिद्ध रहे हैं। सबदवाणी में अनेक बार रावल जोगियों का उल्लेख आया है। रावल शब्द लाकुल, लकुल का रूपान्तर है। रावल नाम से प्रसिद्ध योगियों की समूची शाखा वस्तुतः लाकुलीश पाशुपत सम्प्रदाय की उत्तराधिकारी है[6]। राजस्थान के कतिपय नरेशों की उपाधि रावल रही है। इससे उनका लकुलीश सम्प्रदायानुयायी होना प्रमाणित होता है। यह रावल माहेश्वर, भागवत आदि के समान सम्प्रदाय का ही सूचक है, जिसकी पुष्टि में निम्नलिखित प्रमाण दिये जा सकते हैं —

१–मेवाड़ में शिवपूजा दीर्घकाल से चली आ रही है। यहां के स्वामी शिव को ही अपना उपास्यदेव समझते हैं। सुप्रसिद्ध उपास्य एकलिंगजी और मेनाल, तिलिस्मा, बाडोली आदि स्थानों के प्राचीन शिव मंदिर लकुलीश सम्प्रदाय के ही हैं[7]। बापा की रावल उपाधि उनको लकुलीश सम्प्रदाय का अनुयायी सिद्ध करती है।

१–(क) ओझा : उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड पृष्ठ १४१५।
   (ख) शोध-पत्रिका उदयपुर, भाग ७ अंक २, में श्री रत्नचन्द्र अग्रवाल का लेख।
२–वरदा, बिसाऊ श्रावण संवत २००२ अंक में श्री झाबरमल्ल शर्मा के 'हर्षनाथ के शिलालेख' निबन्ध की पाद-टिप्पणी।
३–ओझा : जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४७।
४–(क) लखमीचन्द : तवारीख जैसलमेर (तीनों भाग), पृष्ठ २७–२८ सन् १८९२।
   (ख) हरिदत्त गोविन्द व्यास : जैसलमेर का इतिहास, पृष्ठ २३–२४।
   पट सह हाल पागता भूप अनेसा भाल।
   आयो यज्ञ रचायसी विजेसागर री पाल॥
५–लखमीचन्द : तवारीख जैसलमेर पृष्ठ ४७।
६–डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी : नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १५९ इलाहाबाद सन १९५०।
७–ओझा : उदयपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३३७, ३६२, ३६४, ३६६, ४१५–१६, ४२६ तथा चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ–१४१४–१५।

२-लुद्रवा (जसलमेर) के भाटी राजा देवराज को योगी रतननाथ ने राजतिलक करके रावल की उपाधि दी थी। यह घटना सवत् ६०६ की बताई जाती है। इससे पहले इन यादव वशी नरेशों की उपाधि राय थी, किन्तु देवराज के पश्चात् वे रावल कहलाने लगे। रावल योगी रतननाथ वालों का मठ जसलमेर के बाहर है जिसको गणेशनाथ ने सवत् १३०७ म बनवाया था। जसलमेर के किले म भी रतननाथ का थान है। देवराज के समय से स्वतंत्रता-प्राप्ति तक जसलमेर के नरेश गद्दीनशीनी के समय सबसे पहले जोगी का वेश धारण करते थे तथा उत्सवो और गमी के कार्यों मे नाथों का सत्कार सबसे पहले होता था[1]।

३-रावल मल्लीनाथ जिनके नाम से मालाणी प्रदेश प्रसिद्ध है, सिद्ध जोगी रतन रावल के आशीर्वाद से रावल कहलाए थे। पहले इनका नाम माली था[2] (इनके विषय मे आगे भी लिखा गया है)।

लकुलीश सम्प्रदाय के नाथ पथ के अन्तर्भुक्त हो जाने में दो प्रमुख कारण थे -उनकी वेश-भूषा और रहन-सहन तथा साधना और आध्यात्मिक दृष्टिकोण म समानता। हमारा अनुमान है कि कनफटा नाथो ने अपना यह वेश लकुलीश सिद्धो से ही लिया है। यह सर्व-विदित है कि गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित और प्रचारित सम्प्रदायों म कनफटे जोगियो का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। यदि यह सत्य हो, तो गोरखनाथ पश्चिमोत्तर या उत्तरभारत के किसी प्रदेश के मूल निवासी होने चाहिएँ। दूसरे, योगी लोग शिव और गोरख मे कोई भेद नहा समझते। नाथ परम्परा म आदिनाथ शिव माने जाते हैं[3]। राजस्थानी लोक कथाओ म शिवपार्वती एक कथानक रूढि के रूप मे भी प्रकट हुए हैं। शिव की अनेक प्रतिमाएं अर्धनारीश्वर भाव की हैं[4]। शिव-पार्वती अनेक लोक गीतो मे भी चित्रित हुए हैं। राजस्थान म नाथपथ का जो विशेष जोर रहा उसके मूल म एक प्रधान कारण लकुलीश मतानुयायियो का कालान्तर मे कनफटे योगी समझा जाना था।

रसेश्वर दर्शन-शैव दार्शनिको का एक सम्प्रदाय रसेश्वर दर्शन का अनुयायी है। इसका मुख्य सिद्धान्त यह है कि जीवन्मुक्ति प्राप्ति का उपाय दिव्य शरीर का पाना है जो पारद की भस्म के सेवन से सम्भव है। पारद का दूसरा नाम रस है और यही रस ईश्वर है[5]। जसलमेर के रावल देवराज को जोगी रतननाथ से एक रसकुप्पी प्राप्त होने का उल्लेख मिलता है[6]। यह इस बात का द्योतक है कि सभवत लकुलीश सम्प्रदाय वाले रसेश्वर मत म भी

१-(क) लखमीचन्द तवारीख जसलमेर, पृष्ठ २२-२३।
(ख) हरिदत्त गोविन्द व्यास जसलमेर का इतिहास पृष्ठ २७-२८।
२-बाँकीदास री ख्यात, पृष्ठ ५ जयपुर, सन १६५६।
३-(क) हठयोग प्रदीपिका पहला श्लोक बम्बई, सवत, १६८१।
(ख) सिद्धसिद्धान्त पद्धति पहला श्लोक और टीकाएँ पूर्णनाथजी बोहर, सवत १६६६।
४-मरुभारती, पिलानी, वर्ष ६, अक २ में श्री रत्नचन्द्र अग्रवाल का निबन्ध।
५-बलदेव उपाध्याय भारतीय दर्शन, पृष्ठ ५६५-५६७, बनारस, सन् १६४८।
६-मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ २६४-२७४, काशी, सवत १६६१।

विश्वास रखते थे। चर्पटनाथ को रसायन सिद्धि का प्रणेता बताया जाता है[१]। वर्ण रत्नाकर में चौरासी सिद्धों की सूची में चर्पटि का नाम (पृष्ठ ५७, सप्तम कल्लोल) ध्यान से स्पष्ट है कि वे चौदहवीं शताब्दी के पहले अवश्य हो चुके थे[२]। रसेश्वर मत का प्रचार यहां विशेष नहीं रहा। जाम्भोजी के समय तक यह सम्प्रदाय नष्ट प्राय या विलुप्त हो गया लगता है। तत्कालीन साहित्य में इसका विशेष संकेत प्राप्त नहीं होता।

(ग) ब्रह्मा-खेड़, बसन्तगढ़ और चीत (ढोढ) में ब्रह्मा के तथा पुष्कर और बीठू में सावित्री और ब्रह्मा के पुराने मंदिर हैं। सेवाड़ी (जोधपुर), किराडू, बिजोलिया, आसिया आदि स्थानों से ब्रह्मा की मूर्तियां मिली हैं[३]। कान्हड़देप्रबन्ध के अनुसार जालोर में ब्रह्मा का मन्दिर था[४]। ब्रह्मा के मंदिर होते हुए भी उसकी पूजा-उपासना और विशिष्ट स्थान का पता नहीं चलता। राजस्थानी काव्यों में ब्रह्मा का 'बेहमाता' के रूप में चित्रण किया गया है (द्रष्टव्य-डेल्हजी (कवि संख्या ३) कृत कथा ब्रह्मनी)।

(घ) सूर्य-राजस्थान भर में काफी पुराने समय से सूर्य पूजा प्रचलित रहने के कई प्रमाण मिलते हैं। चित्तौड़गढ़ का प्रसिद्ध कालिका माता का मंदिर सूर्य का ही मन्दिर था। आहाड़, नादेसमा आदि स्थानों में प्राचीन समय के सूर्य के मंदिर और मूर्तियां मिली हैं[५]। चौहान राजाओं के समय में सूर्य पूजा पर विदेशी प्रभाव था। तब भिन्नमाल इसका सबसे बड़ा केन्द्र था। आसिया, पोकरण, किराडू, बीठू और पाली में भी सूर्य की मूर्तियां मिली हैं[६]। राणपुर, बामणेरा (मारवाड़), घाटार्सी (प्रतापगढ़), तलवाड़ा (बांसवाड़ा) वसन्तगढ़, वमाणा (सिरोही) आदि अनेक स्थानों में प्राचीन सूर्य के मन्दिरों का उल्लेख मिलता है[७]। सूर्य और उनकी पत्नी 'रणादे' (राज्ञी) के विषय में यहां अनेक लोकगीत प्रचलित हैं[८]। लोक में प्रत्यक्ष देव सूर्य के स्तुतिगान में वैदिक परम्परा का आभास मिलता है[९]।

(ङ) शक्ति-वीर भूमि राजस्थान के निवासियों का शक्ति के प्रति निष्ठावान होना स्वाभाविक है। शक्ति पूजा प्राचीन समय से प्रचलित है। राजपूत लोग ग्राम देवी के उपासक होते हैं और नवरात्र आदि अवसरों पर भैंसों तथा बकरों का बलिदान करते हैं[१०]। मेवाड़ के भ्रमरमाता के मंदिर में लगे विक्रम संवत् ५४७ के शिलालेख में गौरवणी क्षत्रिय

१-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १४३, इलाहाबाद, सन १९५०।
२-वर्णरत्नाकर, भूमिका, पृष्ठ १६, कलकत्ता, सन् १९४ ।
३-मरुभारती, पिलानी वर्ष २, अंक ३ में "राजस्थान के प्राचीन ब्रह्मा मंदिर तथा ब्रह्मा मूर्तियाँ" निबन्ध।
४-डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ २२६, दिल्ली, सन १९५९।
५-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१५।
६-डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ २३५।
७-शोधपत्रिका उदयपुर, वर्ष ६ अंक २ ३ 'राजस्थान की सूर्य प्रतिमाएँ तथा कतिपय सूर्य मंदिर' तथा वरदा बिसाऊ अंक ३ ४ में एतद् विषयक निबंध।
८-वरदा, बिसाऊ वर्ष २ अंक १ में "राजस्थानी लोकगीतों में सूर्य भगवान" निबन्ध।
९-म्हला ऊग्या भाण, भाण तुहारा भामणा।
मरण जियण लग मारा, राखो कासिब राव उत॥
१०-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड पृष्ठ, पृष्ठ १४१६।

राजा यागुप्त द्वारा देवी मंदिर बनवाये जाने का उल्लेख है। सामोली गाव के संवत ७०३ के एक शिलालेख से पता चलता है कि वहा के निवासी जेतक मेहतर ने अरण्यवासिनी देवी का मन्दिर बनवाया था। नागौर से २४ मील पूर्वोत्तर मे गोठ और मागलोद गाव की सीमा पर गाठ के निकट दधिमति माता का मंदिर है, जिसके संबंध का संवत ६६५ का एक शिला लेख मिला है[1]। हजूरी कवि (संख्या ३७) ऊन्नेजो नए इसी मंदिर के भोपे थे। ओसिया के सचियामाता के मंदिर मे १२ वी शताब्दी की गदभवाहिनी शीतला की प्रतिमा है[2]। ओसवालों की कुल देवी सचियामाता, महिषमर्दिनी का परिवर्तित रूप है[3]। शेखावाटी की सकराय या शाकम्भरी माता का पूरा नाम शकरा है, जैसा कि प्राचीन शिलालेखों से प्रकट होता है। वसंतगढ तो शारदा और शक्ति का प्रसिद्ध पीठ रह चुका है। यहा की त्रिपुरा-भारती विख्यात देवी मानी गई है[4]। यहा की शक्ति पूजा के संबंध मे यह उल्लेखनीय है कि इसमे मूल शक्ति पूजा के विधान का रंग गौण और प्रादेशिक रंग प्रधान है।

चारण-देवियाँ इस संदर्भ में परम्परागत शक्ति पूजा के अतिरिक्त चारणो मे उत्पन्न देवियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। चारणो का उल्लेख अनेक स्थानो मे प्राप्त है[5]। चारणो की गणना देवयोनि मे की गई है और सामान्य चारण को देवी पुत्र कहा जाता है। चारणो मे उत्पन्न लड़की को "माताजी की सुवासणी", (देवी की सहोदरा बहन) कहने की प्रथा है। देविया की स्तुति मे 'नौलाख लोवडियाल' तथा 'चौरासी चारणी' पद का व्यवहार किया जाता है। तात्पर्य यह है कि देवी के ९ लाख साधारण और ८४ असाधारण अवतार हुए हैं। इन चौरासी चारणियो मे पहली वाकलदेवी हैं। आवड, कामेही, बरवड, चाहणदे, महमाय, चाल्राय, करणी आदि अन्य नाम हैं। इनमे आवड की बहुत मान्यता है, जिनका हिंगु-लाज का अवतार माना जाता है। शक्ति सम्प्रदाय मे देवी के चार सिद्ध पीठ है। पूर्व मे कामाक्षा, उत्तर मे ज्वालामुखी, दक्षिण मे मीनाक्षी और पश्चिम मे हिंगुलाज। हिंगुलाज की मान्यता चारणो मे बहुत है। शक्ति के विभिन्न नामो पर अनेक चारण अपना नाम भी रखते हैं। राजस्थान मे चारणो की बहुत बडी आबादी है। इन कवियो ने अनेक प्रकार से देवी-महिमा-गान किया है। देवी की स्तुतियो मे चरजाओ का विशेष महत्व है। जाम्भाजी के समय मे चौरासी चारणियो मे करणीजी वर्तमान थी, जिनको आवड का अवतार माना

१-ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ४३।

२-शोधपत्रिका, उदयपुर वर्ष ६, अंक ४, "राजस्थान की प्राचीन मूर्तिकला मे गदभवाहना शीतला" निबंध।

३-मरुभारती, पिलानी वर्ष ३, अंक २, 'राजस्थान में सच्चिका देवी का वास्तविक स्वरूप' -निबंध।

४-मरुभारती, पिलानी वर्ष १ अंक ३, मे श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट का निबंध।

५-(क) कविराजा सूर्यमल्ल मिश्रण वंशभास्कर तृतीय राशि, ६२वा मयूख।
(ख) कविराजा भरवदान चारणोत्पत्ति मीमांसामार्तण्ड पृष्ठ ७८-१८०।
(ग) झवेरचंद मेघाणी चारणो अने चारणी साहित्य।
(घ) कविराजा श्यामलदास वीरविनोद।
(ङ) कालिकारंजन कानूनगो स्टडीज इन राजपूत हिस्ट्री पृष्ठ ३९-५० दिल्ली सन् १९६०।

जाता है। इन देवियों में अनेक की बहुत ही प्रतिष्ठा हुई और चार को तो तत्कालीन चार राजवंशों की कुलदेवियों का प्रतिष्ठित पद प्राप्त हुआ[1]। करणीजी का समय संवत् १४१४-१५९५ है। इनके पश्चात् भी आज पर्यन्त चारणों में अनेक देवियों के होने का उल्लेख मिलता है। राजस्थानी साहित्य का काफी अंश चारणों द्वारा रचित शक्ति काव्य के रूप में है। शक्ति पीठ में शक्ति के साथ भैरव का होना प्रकट किया गया है। भैरव पर भी रचनाएँ मिलती हैं। लोक में सात नारी मूर्तियाँ, जिनका शिशुओं पर विशेष प्रभाव माना जाता है, "महामाया", "जोगण्यां", "मावलियाँ" आदि के नाम से पूजी जाती हैं और इनके निमित्त टोने आदि भी किए जाते हैं।

(३) गणेश–प्रत्येक कार्य के आरम्भ में गणेश का स्मरण करने अथवा उनकी पूजा करने की परम्परा दीर्घ काल से चली आ रही है। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के आदि में "श्री गणेशाय नमः" लिखा मिलता है। ये विघ्नविनाशक, ऋद्धि सिद्धि दाता और विद्या बुद्धि के विधायक माने जाते हैं। राजस्थान में गणेश की अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ भी मिलती हैं[2]। राजस्थान की मूर्ति-कला में गणेश का सर्वप्रथम अंकन ईसा की ५वीं–६ठी शती से मिलने लगता है। उदयपुर क्षेत्रान्तर्गत तनेसर ग्राम के बाहर पारेवा पत्थर की गणेश प्रतिमा, मारवाड़ का सर्वतोभद्र गणपति स्तम्भ, घटियाला के अभिलेख भवन के स्तम्भ के ऊपर शिला-लेख में गणपति की स्तुति (नवीं शती) और सबसे ऊपर गणपति प्रतिमा आदि इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय हैं[3]।

(४) स्मार्तमत–यद्यपि राजस्थान के राजागण प्रमुखतः शैव या वैष्णव माने जाते हैं, तथापि वस्तुतः वे स्मार्त मतानुयायी ही थे। तीर्थ व्रत उपवास प्रधान, जाति वर्ण विश्वासी, सर्व-देवोपासक मत को एक शब्द में स्मार्तमत कहते हैं। स्मार्तमत अर्थात् स्मृति निर्दिष्ट धर्म व्यव-स्था को पालन करने में कल्याण मानने वाला मत। पुराण और महाभारत को भी स्मृतियों में गिना गया है[4]। राजस्थान के अनेक पंचायतन मंदिर इसी स्मार्तमत की व्यापकता और प्रचलन का परिचय देते हैं। विष्णु, शिव, सूर्य, शक्ति और गणेश की पूजा पंचायतन नाम से प्रसिद्ध है, और उसके उपासक स्मार्त कहलाते हैं। स्मार्त लोग पंचदेवोपासक हैं, वे शंकर को भी मानते हैं। इनमें नृसिंह और वराह की पूजा भी प्रचलित थी[5]। जावर, सीसारमा आदि स्थानों में विष्णु और शिव के पंचायतन मंदिर बने हुए हैं। ऐसे मंदिरों में जिस देवता का मंदिर मुख्य हो उसकी मूर्ति मध्य के एक बड़े मंदिर में और अन्य मूर्तियाँ बाहर के भाग में परिक्रमा के चारों कोनों पर बने हुए छोटे मंदिरों में स्थापित की जाती हैं[6]। ओसियाँ

१–आवड तूठी भाटियां, कामेही गौडाह।
श्री बरवड सीसोदिया, करणी राठौडाह॥
२–द्रष्टव्य–वरदा, बिसाऊ तीसरा और चौथा अंक।
३–मरुभारती, पिलानी, वर्ष १५, अंक ३, अक्टूबर, १९६७, "राजस्थानी प्राचीन मूर्ति-कला में गणेश"–निबंध।
४–डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी : मध्यकालीन धर्म साधना, पृष्ठ ६०, इलाहाबाद, सन् १९५६।
५–वही, पृष्ठ ३२, ४२।
६–ओझा : उदयपुर राज्य का इतिहास, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ १४१६–१७।

के मन्दिरो म हरिहर और ब्रह्मा, विष्णु, महेश के भाव व्यक्त किए गए हैं। किराडू, ओसिया, रायपुर, भालरापाटन और कामा की मूर्तियो मे ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सूर्य का सम्मिश्रण है। रामगढ से प्राप्त एक असाधारण मूर्ति में विष्णु, शिव तथा शिव का सम्मिलित रूप है[1]। १६ वी शताब्दी म इसका चरम प्रतीक महाराणा कुम्भा का अपने इष्टदेव विष्णु के निमित्त सवत १५०५ म बनाया गया विशाल कीर्तिस्तम्भ है। यह हिन्दुओं के पौराणिक देवी-देवताओ का अमूल्य कोष है। कुम्भा विष्णु भक्त था। यह इसी से प्रकट है कि उसने कीर्ति स्तम्भ के अतिरिक्त कुम्भस्वामी और आदि वराह के जो दोनो ही विष्णु मदिर हैं, बनवाए। उसके इष्टदेव एकलिंगजी होने पर भी वह विष्णु का परम भक्त था। उसकी प्रजा ने भी उसके समय म कई जन, शिव और विष्णु आदि के मदिर बनाए। वह सब मतो को समदृष्टि से देखता था[2]।

धार्मिक सहिष्णुता-निष्कर्ष —विभिन्न मत-मतान्तरो के अनुयायी भी एक दूसरे के इष्ट देव और पूजा-पद्धति के प्रति आदर भावना रखते थे। इस सम्बन्ध मे मेवाड के धूलेव कस्बे के केसरियानाथजी का उदाहरण अनुपम है, जहाँ सभी धर्ममतानुयायी स्नान कर समान रूप से मूर्ति का पूजन करते हैं[3]। इसी प्रकार डीडवाणा तहसील से प्राप्त ९-१०वी शताब्दी की योगनारायण मूर्ति द्वारा एक नूतन भाव व्यक्त किया गया है जिसमे धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय भावना का पता चलता है[4]। हिंगुलाज की यात्रा और उसकी कामना शक्ति उपासक तो करते ही हैं, नाथपथी योगी भी उसी भाव से करते हैं[5]। इन हिन्दू देवी देवताओ के मदिरो, मूर्तियो और शिलालेखो आदि का उल्लेख यह तो सिद्ध करता है कि राजस्थान मे उस समय म उनकी पूजा प्रचलित थी, एक शब्द मे स्मार्तमत प्रचलित था किन्तु देवता-विशेष की विशिष्ट पूजा उपासना पद्धति तथा दर्शन और धर्म के स्वरूप का इनसे पता नहीं चलता।

(५) जैन धर्म—जैन धर्म के दो मुख्य भेद हैं—दिगम्बर और श्वेताम्बर। विद्वानो ने लक्ष्य किया है कि इनकी बाह्य क्रियाओ मे तो कुछ भेद है किन्तु तात्त्विक भेद नहीं है[6]। राजस्थान के नरेशो ने जैन धर्म को प्रश्रय दिया था। इसका उत्कर्ष यहाँ चित्तौड के हरिभद्र सूरि (स० ८२७) द्वारा विशेष रूप से हुआ। उद्योतन सूरि और सिद्धान्त सूरि इनके शिष्य थे। प्रसिद्ध है कि उद्योतन सूरि ने किसी समय अपने पास मे रहे हुए ८४ शिष्यो को एक ही समय मे आचार्य-पद दे दिया। उन ८४ आचार्यो से ८४ गच्छो की स्थापना हुई। इनमे से किसी न किसी गच्छ के आचार्य को प्रत्येक जैन अपना कुलगुरु मानता है। गुजरात और

१-राजस्थान भारती, बीकानेर, भाग ४, अक ४, "राजस्थान मे विष्णु पूजा" निबन्ध।
२-ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ३५५,
खण्ड २ पृष्ठ ६२१-२२, ६३६।
३-वही, खण्ड १, पृष्ठ ३४४-४५।
४-राजस्थान भारती, वर्ष ४, अक ४ तथा राजस्थानी लोक सस्कृति की रूपरेखा, पृष्ठ २०-२१, विसाऊ, सन १९५९।
५-जी० एस० घुर्ये इंडियन साधुज, पृष्ठ १३६, बम्बई, सन १९६४।
६-डा० उमेश मिश्र भारतीय दर्शन, पृष्ठ १०२-१०४, लखनऊ, सन् १९५७।

पश्चिमी भारत में तपागच्छ और राजस्थान में खरतर गच्छ के साधुओं का विशेष प्रचार रहा। अणहिलपुर पत्तन में चत्यवासियों के साथ संवत् १०८० में शास्त्रार्थ में जिनेश्वर सूरि के विजयी होने पर उनका सम्प्रदाय खरतर गच्छ नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके पश्चात् इस गच्छ में अनेक आचार्य हुए। जाम्भोजी के समय में सं० १५८२ में इस आचार्य परम्परा में जिन माणिक्य सूरि (सं० १५४९-१६१२) पट्ट पर स्थापित हुए थे। उस समय इस गच्छ के साधुओं में शिथिलाचार बढ़ गया था[1]। राजपूत राजाओं द्वारा जैन मत को प्रोत्साहन देने के अनेक उल्लेख मिलते हैं[2]। विद्वानों ने लक्ष्य किया है कि ब्राह्मण धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्रों में जैन धर्म पर ब्राह्मण मत का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा था[3]।

ध्यातव्य है कि विक्रम की १४ वीं शताब्दी से जैन धर्म केवल वंश परम्परागत ही रह गया था और उसमें निश्चित रूप से वन्य जाति की प्रधानता थी[4]। बस्ती में भी यह ओसवालों और कुछ अग्रवालों तक ही सीमित रहा। यद्यपि राजस्थान में जैन धर्म को फलने फूलने का पर्याप्त अवसर मिला तथापि उसका क्षेत्र अत्यन्त सीमित प्रधानतः ग्रामवालों और व्यापारी वर्ग में ही रहा। लोक व्यापी धरातल पर वह कभी नहीं उतरा। जैन कवि लोक प्रचलित कथा कहानियों और देशी रागों को अपने रंग में रंग कर जैन दृष्टिकोण के अनुसार जन समाज के समक्ष रखते रहे। कतिपय अपवादों की बात दूसरी है। जाम्भोजी ने प्रसंग वश उस समय में प्रचलित अनेक मत मतान्तरों का उल्लेख-संकेत किया है, किन्तु स्पष्ट रूप से जैन धर्म का नहीं। इसमें इस धर्म की सीमित मान्यता और प्रचलन का भी पता चलता है। सत्रहवीं शताब्दी में स्वामी हरिदास निरंजनी ने जैन धर्म की कटु आलोचना की थी[5]।

(६) मुसलमान धर्म—जाम्भोजी के समय में मुसलमानों के दो केन्द्र थे—अजमेर और नागौर, जिनका उल्लेख अन्यत्र कर आए हैं। इनके सूबेदारों—कमाल मल्लूखां और मुहम्मद खां नागौरी से जाम्भोजी के सम्पर्क-सम्बन्ध की चर्चा 'जीवन-वृत्त' के प्रसंग में हो चुकी है। इन केन्द्रों को छोड़कर राजस्थान में संवत १६१५ (सन् १५५८) तक अन्यत्र न तो मुसलमानों की बस्ती ही थी और न ही उनके साथ विशेष सम्पर्क ही होता था। राजस्थान या उसके पड़ोस के मुसलमानों की संस्कृति में ऐसा कोई बल या नूतनता नहीं रह गये थे कि उनसे तत्कालीन राजस्थानी संस्कृति पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव पड़ सकता[6]। दर्शन के क्षेत्र में इसलाम की स्वतंत्र सत्ता नहीं ठहर सकती। इसलाम में दर्शन का जो कुछ भाग

१-(क) नाहटा बन्धु युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि, पृष्ठ १-१८, तथा प्रस्तावना-पृष्ठ ७० कलकत्ता।
(ख) डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज पृष्ठ २२१-२२६।
२-श्रीमद् राजेन्द्र सूरि स्मारक ग्रन्थ खुडाला (मारवाड़), संवत २०१३, पृष्ठ ५४५ से ५६३, डा० वासुदेव उपाध्याय और श्री कलाशचन्द जैन के निबन्ध।
३-वही, पृष्ठ ५४७, डा० वासुदेव उपाध्याय, -राजपूताना में जैन धर्म।
४-डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज पृष्ठ २२८।
५-श्री महाराज हरिदासजी की वाणी, मतह परीक्षा जोग ग्रन्थ अरस विघु स का ग्रन्थ प्रति।
६-डा० रघुबीरसिंह पूर्व आधुनिक राजस्थान पृष्ठ १९-२०, ३७ उदयपुर सन १९५१।

बहुत प्रचार हुआ, उसका अधिकांश श्रेय सूफियो को ही है[1]। दूसरी ओर मुसलमानो के अजमेर और नागौर पर अधिकार होने के बाद से प्राचीन मंदिरादि नष्ट किए जाने लगे[2]। उनका जीवन-दृष्टि, पद्धति, मान-मूल्य, आदर्श और साधन राजपूत संस्कृति से नितान्त भिन्न थे। मुसलिम विजेताओ ने लूट मार तथा युद्धो द्वारा देश को उजाडा और मंदिरो तथा राजकोषो से अपार धन लूटा। इस धन को उन्होंने बडी बडी सेनाएँ एकत्र करने और अपनी राजधानियो मे भोग विलास मय जीवन बिताने मे व्यय किया। वे अवस्था अथवा लिंग का भी कोई ध्यान न रखते और पुरुषो, स्त्रियो तथा बच्चो का समान रूप से सहार करते, उन्हे दास बनाते और इसलाम अंगीकार करने पर बाध्य करते थे[3]। इसलाम वास्तव मे शासन चाहता है, हृदय का अनुशासन नही[4]। उनकी युद्ध नीति भी राजपूतो के आदर्शों से भिन्न थी। ऐसी दशा मे यहा उनका विरोध होना स्वाभाविक था। वे यहा की कमजोरिया से लाभ उठा कर लूटमार और साम्राज्य स्थापित करने मे भी सफल हो जाते थे। मुहम्मद गोरी को भारत मे लाने वाले व्यक्तियो मे चिश्ती सम्प्रदाय के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का अभिशाप भी था जिन्होंने उससे पहले राजस्थान मे भ्रमण किया था और उसकी राजधानी अजमेर मे अपना अड्डा भी जमा लिया था। कहना न होगा कि सूफियो के शाप का अर्थ उस समय इसलाम का आक्रमण ही होता था[5]। भारत मे चार सूफी सम्प्रदाय विशेष प्रसिद्ध रहे चिश्तिया, कादिरिया, सुहरवर्दिया और नक्शबंदिया[6]। इनमे चिश्ती सम्प्रदाय का स्थान विशेष महत्त्व का है। सूफी मत के अध्येताओ का निश्चय है कि भारत मे इस मत का स्थूल स्थापन १२ वी शताब्दी से हुआ और मुगल शासन काल मे इसका अत्यधिक प्रचार, प्रसार हुआ। इसका पूर्ण उत्थान मुगल शासन काल मे ही हुआ[7]। इस प्रकार, जाम्भोजी के समय तक राजस्थान मे यद्यपि मुसलमानो के दो केन्द्र थे और चिश्तिया सम्प्रदाय स्थापित भी हो चुका था, तथापि न तो मुसलमानो का और न ही सूफियो का कुछ भी प्रभाव यहा पडा। उलटे, भारत मे मुसलमानों के अधिकार के कुछ दिनो बाद से ही हिंदू आचार-विचार, धार्मिक साधना आदि का प्रभाव मुसलमानो पर पडने लगा[8]। यहा के वातावरण का सूफी कवियो पर ऐसा प्रभाव पडा कि भावो के मिश्रण के साथ उन्होंने

१–चन्द्रवली पाण्डे तसव्वुफ अथवा सूफीमत, पृष्ठ २१४–१५ बनारस, सन १९४८।
२–ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १, पृष्ठ ४१।
३–एस० आर० शर्मा भारत मे मुस्लिम शासन का इतिहास, पृष्ठ १९९, आगरा, सन १९६१।
४–चन्द्रवली पाण्डे तसव्वुफ अथवा सूफीमत, पृष्ठ ८१।
५–चन्द्रवली पाण्डे तसव्वुफ अथवा सूफीमत, पृष्ठ २०९।
६–(क) रामपूजन तिवारी सूफीमत साधना और साहित्य, पृष्ठ ४३६, ४४३, बनारस, स० २०१३।
(ख) जोन ए० सुभान सूफीज्म इटस सेन्टस एण्ड श्राइन्स, पृष्ठ १९३–२०८, लखनऊ, सन १९३८।
७–डा० विमलकुमार जैन सूफी मत और हिन्दी साहित्य, पृष्ठ ८७–८८, दिल्ली, सन १९५५।
८–रामपूजन तिवारी सूफीमत साधना और साहित्य, पृष्ठ ४३३।

भाषा को भी अपनाया[1]।

। जाम्भोजी के समय में यहां मुसलमानों में सर्वत्र पाखण्ड और आडम्बर का प्रचलन और अत्याचारों का बोलबाला था। कुरान के आदर्शों को भी उन्होंने स्वेच्छा और स्वार्थ के अनुसार समझा और कार्य रूप में परिणत किया। धर्म के सामान्य लक्षणों में विहीन समझ कर ही जाम्भोजी ने मुसलमानों को फटकारा था।

(७) नाथ सम्प्रदाय विष्णोई साहित्य के आधार पर निष्कर्ष-जाम्भोजी के समय तक हिन्दू धर्म के पश्चात् राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय विशेष प्रचलित था। जाम्भोजी के जीवन प्रसंग में लोहापांगल, लक्ष्मणनाथ तथा अन्य नाथ जोगियों का उल्लेख किया गया है। सबदवाणी के २१ सबद तो नाथों के प्रति ही कहे गए हैं। जाम्भाणी साहित्य और विशेषत केसोजी और सुरजनजी की रचनाओं से नाथों के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों का पता चलता है —

१–नाथ जोगी गोदावरी तट पर 'जात' के लिए एकत्र होते थे जहाँ उनके सबंधित अनेक मामलों और प्रश्नों का निपटारा होता था। ऐसे ही एक अवसर पर लोहापांगल ने जाम्भोजी को परास्त करने का बीड़ा लिया था, क्योंकि राजस्थान में नाथों की प्रतिद्वंद्विता में विष्णोई सम्प्रदाय विशेष रूप से पल रहा था। उसके साथ अनेक जोगी भी वहां आये थे।

२–वहां पर अनेक प्रकार के जोगी एकत्र हुए थे। उनकी साधना-पद्धति, क्रिया-कलाप और वेशभूषा में भी अन्तर था।

३–सामान्यत वे और विशेषत राजस्थान के नाथ कनफटे जोगी थे। कई मौनी भी थे।

४–गृहस्थ और विशेषत नारी के प्रति उनकी घृणा भावना थी। राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार को समझने के लिए ये संकेत महत्त्वपूर्ण हैं।

दक्षिणकुण्डी पात्रदेवयात्रा-ज्ञातव्य है कि पूर्ण कुम्भ के महापर्व पर अवधूत योगी भेष बारह पंथ की प्रति द्वादशवर्षीय पात्रदेव यात्रा गोदावरी तट पर त्र्यम्बक योगी मठ से आरम्भ होकर कद्री पहुंचती है। कद्री मठ की यह मर्यादा युग-युग से प्रति बारह वर्ष के कुंभ मेले में त्र्यम्बक से सुव्यवस्थित होकर चली आ रही है। इसमें १२-१८ के अवधूत योगी भाग लेते हैं। १२-१८ के शिव-गोरख योगियों में यह यात्रा पात्रयात्रा पत्र यात्रा, दक्षिणकुण्डी या कजलीकुण्डी नाम से प्रसिद्ध है[2]।

पंथ-संख्या अनुश्रुतियाँ—नाथ पंथ के योगी १२ शाखाओं में विभक्त हैं जिनको बारह पंथ कहने की प्रथा है। इनके संबंध में कई अनुश्रुतियाँ प्रचलित हैं —

१–स्वयं गोरखनाथ ने परस्पर विच्छिन्न नाथ पंथियों का संगठन करके उन्हें बारह शाखाओं में विभक्त कर दिया था[3]।

२ शिव और गोरख दोनों ने ही १२-१२ पंथ चलाए थे। गोरख ने ६ अपने और

१–डा० विमलकुमार जैन सूफीमत और हिन्दी साहित्य, पृष्ठ ९०।
२–राजा चमेलीनाथ योगी श्रीपात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ २१, १२, काशी, स० २०१३।
३–डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १०।

६ शिव के पथा को तोड कर वर्तमान की बारह पथी शाखा की स्थापना की[1]।

३-शिव के १८ और गोरख के १२ पथ थे। पहले के १२ और दूसरे के ६ पथो को तोड कर गोरख ने आधुनिक बारह पथी शाखा रखी[2]।

४-१८ पथ शिव के और १२ पथ गोरख के थे। कालातर मे १८ के योगी अतर्हित हो गए और १२ के ६ पथी योगियो ने उन १८ का स्थान ग्रहण किया। इस प्रकार गोरख के १२ पथ के ६ शाखा वाले योगी ही शिव के १८ पथी कहे जाने लगे[3]। इस प्रकार योगियो की ३० शाखाएँ थी, जिसका प्रमाण दक्षिणकुण्डी योगी-प्रणाली मे पाया जाता है।

बारह पथ नो नाथ-विष्णोई साहित्य के विशेष सदर्भ मे तथा अन्य उल्लेखो के आधार पर अतिम अनुश्रुति अपेक्षाकृत अधिक सगत जान पडती है। इन १२ पथो का विवरण इस प्रकार है[4] —

	नाम	मूल पुरुष	स्थान
१	सत्यनाथी	ब्रह्मा	भुवनेश्वर
२	रामनाथी	विष्णु	गोरखपुर
३	पागलनाथी	ईश्वर	रोहितासगढ
४	पावपथी	जालन्धर	जालौर
५	धमनाथी	धमराज	सिरमाथा
६	मन्नाथी	महाराज रसालू	टाइया
७	कपिलानी (कपिलपथी)	कपिल	गोरखबसी
८	गगानाथी	कपिल	गगासागर
९	नटेश्वरी	लक्ष्मण	गोरखटिल्ला
१०	आईपथी	विमला	विमलादेवी
११	वैराग्यपथी	भर्तृहरि	रातादूडा
१२	रावलपथी	हम्मीरदेव (गला रावल)	बादरवाडा

अन्यत्र भी १२ पथो की यही सूची दी गई है[5]। इनमे से प्रथम ६ शिव योगी अर्थात् १८ के और शेष ६ गोरखयोगी अर्थात् १२ के कहे जाते हैं। इनके अतिरिक्त कन्थड, वन, गोपाल, दर्या, इत्यादि पथ के नाथयोगी मिलते हैं किन्तु दक्षिणकुण्डी मे गणना उपर्युक्त १२ पथो की ही होती है। १२ पथो की सूची भिन्न भिन्न रूपो मे मिलती है[6], जिनके

१-डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ १२।
२-जार्ज वस्टन ब्रिग्स गोरखनाथ एण्ड दि कनफटा योगीज, पृष्ठ ६३, कलकत्ता, सन १९३८।
३-राजा चमेलीनाथ योगी श्रीपात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ २२।
४-वही, पृष्ठ २३-२४।
५-पजाब डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, वाल्यूम थर्ड ए, रोहतक डिस्ट्रिक्ट, पृष्ठ ६४, सन १९१०।
६-विश्वभारती पत्रिका, शांतिनिकेतन, अक्टूबर-दिसम्बर, १९६६, श्री परशुराम चतुर्वेदी का "नाथयोगी सम्प्रदाय के द्वादश पथ" निबन्ध।

एक प्रमुख कारण तो उल्लिखित सूची से पृथक् १२–१८ की बनी हुई शाखाओं की गणना करना है और दूसरा, इन पंथों के लिए पर्यायवाची नामों का प्रचलित हो जाना है। माई, कुम्हाई, मुदनाई एक ही पंथ के नाम हैं। लक्ष्मणनाथ, नाटेश्वरी, टिल्ला के, हेतपंथ, गरि-यानाथी भी बालनाथ टिल्ला के नाथों के पर्याय हैं। उल्लिखित सूची अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक प्रतीत होती है जिसकी पुष्टि दक्षिणकुण्डी के मर्यादा महोत्सव में पंच, प्रधान-सदस्यगणों आदि के निर्वाचन से भी होती है। इसमें प्रत्येक पद तथा पात्रदेव के लिये यह पूर्व-परम्परा नियत है कि वह उक्त १२ शाखाओं में से किसी शाखा का होना ही हो सकता है। इसका कुछ विवरण इस प्रकार है[1] —

	पद	शाखा
१	कदली मठ के पात्रदेव और राजा	गंगानाथी, वैराग्यपंथी, नटेश्वरी, कपिलपंथी
२	त्र्यम्बक योगी मठ के पात्रदेव और पीर	सत्यनाथी
३	सोनहरी भैरव पीठ के पात्रदेव	नटेश्वरी, कपिलानी, गंगानाथी, वैराग्यपंथी
४	पात्रदेव के महन्त	माई पंथी[2]
५	बारह पंथ का कारबारी	धर्मनाथी
६	कोठारी और दो पंच	सत्यनाथी
७	भंडारी	वैराग्यपंथी
८	पात्रदेव का पुजारी	नटेश्वरी
९	रोट का भंडारी	रामपंथी

इनके अतिरिक्त १२–१८ के ६–६ पंच एक–एक रमतों के महन्त, १२ पंथों के १२ भण्डारी और १ औघड़ का महन्त निर्वाचित होता है।

नाथ ९ प्रसिद्ध हैं, पर इनकी भी कोई सर्वसम्मत परम्परा बची नहीं है। इनकी विभिन्न सूचियों में अन्तर है[3]

राजस्थान में नाथ पंथ

(क) बालनाथ कपिलानी पंथ–दक्षिणकुण्डी के यात्रा–विवरण के साथ राजस्थान में प्रचलित परम्परा और पुराने उल्लेखों के आधार पर हम कतिपय पंथों और नाथों का विशेष प्रभाव यहां लक्ष्य कर सकते हैं। इस यात्रा में त्र्यम्बक समेत ७३ मुकाम पड़ते हैं जो समयानुकूल घटते–बढ़ते भी रहते हैं। इनमें वालेबाडी मठ बालनाथ का है जिसमें उनका

१–राजा चमेनीनाथ योगी श्रीपात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ ५१–५२।
२–सदानाथ योगी गोरक्ष विकास, पृष्ठ १२८, ९०, जालंधर, जून, १९३५।
३–द्रष्टव्य–(क) डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सम्प्रदाय, पृष्ठ २४–३७।
(ख) डा० शशिभूषण दासगुप्त ओब्स्क्योर रिलिजियस कल्ट्स पृष्ठ २०६–२०९।
(ग) डा० कल्याणी मल्लिक नाथ सम्प्रदायेर इतिहास, दर्शन ओ साधन प्रणाली, परिच्छेद ३–७, कलकत्ता, सन १९५० तथा सिद्धसिद्धान्त पद्धति आदि–इन्ट्रोडक्शन।

और वाल भरवनाथ का मंदिर है। यहा का मठाधीश कपिलानी पथ का योगी होता है। ये बालनाथ प्रसिद्ध सिद्ध योगी थे और मारवाड के पोकरण मे १६ वी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों म रहे थे। पच पीरा म दो–रामदेवजी तँवर और हडबूजी साँखला इन्ही के शिष्य थे। पोकरण के ठाकुर राठौड खीवा की ठकुराणी ईदी भी बालनाथ की परम भक्त थी[1]।

(ख) हाडीभड ग पावपथी, सत्यनाथी–भुण्डी की पात्रदेव सवारी सिद्ध हाडीभड ग-नाथ मठ म भी पधारती है। प्राचीन परम्परानुसार यहा का मठाधिपति पावपथ का योगी होता है किन्तु सत्यनाथपथ के योगी को पीठाधिरूढ करते हैं। हाडीभड ग नियानुरूप नाम है, गुरुप्रदत्त नाम भूतकनाथ बताया जाता है। प्रसिद्ध है कि ये बलख–बुखारा के सुलतान थे। गोरखनाथ-प्राप्ति हेतु इन्होने तप करते हुए देह त्याग दी। ज्ञात होने पर गोरख ने पुनर्जीवित करके योग-दीक्षा दी तथा भूतकनाथ नाम रख कर एक मनोवाछित फलप्रद हाँडी दी। वह हाडा इस स्थान मे फूट गई। हाडीभड ग राजस्थान मे भी बहुत वर्षों तक घूमते रहे थे। राजस्थानी साहित्य मे इनका अनेक जगह उल्लेख मिलता है। विष्णोई कवियो म इन पर लिखा अल्लूजी कविया का डिगल गीत और नानिगदास की नीसाणी बहुत प्रसिद्ध है (कवि स० ३८ ३६)।

(ग) धूधलीमल, गरीबनाथ सत्यनाथी नाथो में प्रसिद्ध है कि पहले पहवा मठ (कुरुक्षेत्र) पर १२–१८ के योगियो का सम्मेलन और पात्र स्थापना विधि होती थी। यह सत्यनाथ ब्रह्मा का स्थान माना जाता है। इसके महन्त सत्यनाथी पथ के योगी होते थे। कालान्तर में इस मठ की लुप्त ख्याति को गरीबनाथ ने पुन प्रकट किया। पुष्कर भी ब्रह्मा का स्थान है और वहा भी पात्रदेव की पूजा होती थी[2]। ये गरीबनाथ धूँधलीमल के शिष्य थे और समवत सत्यनाथी शाखा के थे। धूँधलीमल का आश्रम धीणोद मे था और गरीबनाथ का लाखडी म। गरीबनाथ धूँधलीमल के शिष्य थे। उस समय लाखडी का राजा घोघाकरण था। गरीबनाथ के शाप से घोघाग्राम का नाश हुआ और धूँधलीमल के आशीर्वाद स जाडेचा भीम लाखडी का राजा हुआ। प्रभासपाटन के शिलालेख स इनका समय सवत १४४२ ठहरता है[3]।

(घ) जालधरनाथ पावपथी–पावपथ के प्रवत्तक जालधरनाथ का भी राजस्थानी साहित्य म नामोल्लेख मिलता है। जालौर के किले मे जालधरनाथ का मदिर था[4]। वीरमायण म गोगादेव को जालधरनाथ के दर्शन और वरदान–प्राप्ति का वर्णन मिलता है[5]। अन्यत्र गोरख द्वारा उसकी जघाएँ जोडे जाने का उल्लेख है[6]। जालधरपाद का पूरा का

१–मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ १३७,१४०।
२–राजा चमेलीनाथ योगी श्री पात्रदेव कदली यात्रा, पृष्ठ १२४–१२५।
३–(क) डा० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल योग–प्रवाह, पृष्ठ ७३–७४।
(ग) मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ २१५–१७।
४–श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ ८६०।
५–डा० हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ७४ ८३, सन् १९६०।
६–मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ ६६।

पूरा सम्प्रदाय बौद्ध वज्रयान से सबद्ध था[1]। राजस्थानी साहित्य में जो कदाचित्-कदाचित् बौद्ध-परम्पराओं का क्षीण सा आभास मिल जाता है, उसका कारण जालन्धर और उनके सम्प्रदाय का अवशिष्ट प्रभाव है। (विशेष द्रष्टव्य—गुरुवाणी, शब्द संख्या ६६)।

(ङ) हम्मीरदेव रावलपंथी—इन्होंने संवत् १३८३ के आसपास चित्तौड़ को हस्तगत कर सारे मेवाड़ पर अपना प्रभुत्व जमाया और गुहिलवंश की सीसोदिया शाखा का राज्य स्थापित किया। मत्स्येन्द्र मतानुयायी होने के कारण इनका पंथ रावल कहलाया[2]।

(च) गोपीचंद, भरथरी, चपट, बालगुदाई, लक्ष्मणनाथ, पृथ्वीनाथ पावपंथी, वैराग्यपंथी—गोरख की भांति गोपीचन्द और भरथरी यहां प्रतिष्ठित नाम हैं। गोपीचन्द जालन्धर (हाड़िपा) के शिष्य बताये जाते हैं[3] किन्तु बिश्नोई कवियों ने इन दोनों को ही गोरख का शिष्य माना है। सबदवाणी के प्रसंगों में दोनों का साथ-साथ रहना वर्णित है। चपटनाथ को रज्जबजी ने चारणी के गर्भ से उत्पन्न होना बताया है। यदि यह सत्य हो तो चपटनाथ राजस्थान ही के निवासी सिद्ध होते हैं। ये ब्राह्मणों के विरोधी थे और कनफटा सम्प्रदाय में रहकर भी उनकी बाह्य प्रक्रियाओं को व्यर्थ मानते थे। विद्वानों ने बाल गुदाई और लक्ष्मणनाथ को एक माना है[4] जो ठीक नहीं प्रतीत होता। सबदवाणी से ये पृथक् पृथक् व्यक्ति जान पड़ते हैं। सम्भावना यह है कि ये एक ही पंथ के दो व्यक्ति थे। सुप्रसिद्ध नाथ योगी पृथ्वीनाथ कुछ वर्षों तक जाम्भोजी के समकालीन थे। उन्होंने प्रकारान्तर से जाम्भोजी का उल्लेख भी किया है[5]।

(छ) गोरखनाथ—नाथों में गोरखनाथ का व्यक्तित्व सर्वाधिक व्यापक है। स्वयं जाम्भोजी ने उनको श्रद्धापूर्वक स्मरण किया है। अनेक प्रसिद्ध सिद्ध-संतों ने उनको अपना भावगुरु माना है। विद्वानों का विचार है कि यद्यपि नाथ मत गोरखनाथ के पूर्व भी था, तथापि उसको एक व्यवस्थित और संगठित रूप देने का कार्य गोरखनाथ ने ही सर्व प्रथम किया और बाद का विकास प्रायः उन्हीं की खींची हुई रेखाओं पर होता रहा। गोरखनाथ की दृष्टि योग और कायसिद्धि पर थी[6]।

बल पंथों की गणना उल्लिखित १२ सम्प्रदायों में नहीं की गई है। इसका प्रमुख मठ मारवाड़ के सोजत परगने में है। इस मठ के पीठाधिपति को सोना नरेश का पद प्राप्त है।

१—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सिद्धों की वानियाँ, भूमिका, पृष्ठ १८, संवत् २०१४।
२—ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड पृष्ठ ५०५–५०६ और टिप्पणी, द्वितीय खण्ड पृष्ठ ५४५–५५ वीरविनोद, भाग १, पृष्ठ २९०–३००।
३—डॉ० शशिभूषण दासगुप्त ऑब्स्क्योर रिलिजियस् कल्टस् पृष्ठ २१२–२१६, सन् १९६२।
४—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी नाथ सिद्धों की वानियाँ, पृष्ठ २३।
५—डा० हीरालाल माहेश्वरी पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ शोधक निबन्ध, (द्रष्टव्य–अध्याय २ (२), सन्दर्भ–८२)।
६—डा० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय नाथ और संत साहित्य, पृष्ठ ५७,८७, सन १९६५।

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि विक्रम की १६ वी शताब्दी मे राजस्थान मे नाथों के द्वादश पथों म से पाँच (क्रम सख्या १, ४, ७, ११ और १२) का यहाँ विशेष प्रचलन रहा तथा प्रसिद्ध नो नाथो म ५ नाथा (गोरख, जाल्धर, गोपीचद, भरथरी, धधट) का। शव सम्प्रदाय की लकुलीश शाखा भी कालान्तर म कनफटे नाथो के अन्तर्भुक्त हो गई थी। इस कारण नाथपथ और भी अधिक व्यापक दिखाई देने लगा।

इनके अतिरिक्त राजस्थान मे नाथो से सबधित अनेक उल्लेख मिलते हैं। आरम्भ म हरिभक्त राजा पृथ्वीराज (सवत् १५५९–१५८४ आमेर, जयपुर) के गुरु कनफटा योगी थे[1]। बूंदी से १६ मील पूव सटवड की पहाडी पर राव शत्रुसाल हाडा (सवत् १६८८–१७१५) न धूधला जोगी का (जो गोरख के शिष्य कहे जाते हैं) मदिर बनवाया था। मदिर में धूधला का मूर्ति है और उस पर विक्रम सवत् १८७३ अगहन सुक्ला ३ का लेख उत्कीण है[2]। राव जोधा ने विक्रम सवत १५१६ में चिडिया टूक स्थान पर जोधपुर का किला बनवाया था। यह स्थान योगी चिडियानाथ के रहन का था[3] जो राव गा से यहा आकर रहन लगा था। यहा से उठाये जाने पर वह पालासनी चला गया वहा उसकी समाधि बनी हुई है[4]। नोहर (श्रीगगानगर) से एक मील उत्तर मे गोरख टीला है। प्रसिद्ध है कि यहा पहले सिद्ध गोरख रह थे[5]। अरावली मे लखमीनाथ जोगी न तप किया था। उनकी कृपा से सिद्धराज जन्म थे[6]। राव सलखा के पुत्र रावल मल्लीनाथ, जोगी रतननाथ के आशीर्वाद से हुए थे[7]। रावल जोगियो की चर्चा पहले कर आए हैं।

इस प्रकार, जाम्भोजी के समय मे राजस्थान म नाथपथी जोगिया का काफी विस्तार था। उनम अनेक आडम्बर आ गए थे। जाम्भोजी न अनेक सबदो म उनके विभिन्न आडम्बरो का भत्सना की है। सबदवाणी म घोडाचोली, बालगुदाई और लखमणनाथ का उल्लेख है। इनम प्रथम दो तो जाम्भोजी से पूव हो चुके थे, लखमणनाथ उनके समकालीन थे।

यह विष्णोई कवियो द्वारा कथित यहा के चार प्रमुख 'धर्मो' का सक्षिप्त परिचय है। इनके अतिरिक्त लोक मे व्यापक रूप म पाषडपूजा (कल्ट वर्शिप) प्रचलित थी।

(८) पाखड पूजा (कल्ट वर्शिप)

पाखण्ड पूजा किसी भी धार्मिक सम्प्रदाय से नितान्त भिन्न है। धार्मिक सम्प्रदाय मे सिद्धान्त, साधना और व्यवहार–तीनों पक्षा का होना अनिवाय है, जबकि इस पूजा के पीछे एसा न होकर पूज्य इष्ट की चमत्कार शक्ति और केवल उससे प्राप्त सम्भाव्य लौकिक लाभ की कामना ही रहती है। सबदवाणी और विष्णोई साहित्य म अनेक स्थलो पर

१–श्यामलदास वीरविनोद, पृष्ठ १२८३।
२–गहलोत राजपूताने का इतिहास, द्वितीय भाग बूंदी राज्य, पृष्ठ २८ ६६।
३–आसोपा मारवाड का सक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ १८२–१८३।
४–नाहिया राजस्थान की जातिया, पृष्ठ १०३।
५–(क) मुन्शी सोहनलाल तवारीख राज श्री बीकानेर, पृष्ठ ३६, सवत् १९४७।
(ख) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ६४।
६–बाँकीदास री ख्यात, पृष्ठ १३३।
७–मुहणोत नणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ ६७, काशी।

इसका बड़ा अच्छा स्पष्टीकरण किया गया है।

वर्तमान में प्रसिद्ध पाँच पीर, सुप्रसिद्ध राजपूत वीर ही थे। इनमें से रामदेवजी तँवर, और हड़बूजी साँखला तो समय विशेष के लिये जाम्भोजी के समकालीन थे। शेष तीन गोगाजी चौहान, मेहोजी मांगलिया और पाबूजी राठौड़ उनसे पूर्व हो चुके थे। साहबरामजी की रचनाओं के अतिरिक्त जाम्भाणी साहित्य में इनका नामोल्लेख नहीं मिलता, जिसका कारण स्पष्ट है किन्तु ध्वनित होता है कि लोक में शनैः शनैः इनकी मान्यता भी फलने लगी थी। इसकी पुष्टि राजस्थानी की कविताओं, प्राचीन वार्ताओं और लोक गीतों से होती है। इनके अतिरिक्त जाम्भोजी से पूर्व तेजोजी जाट और मल्लीनाथजी भी हो चुके थे और जो क्षेत्र-विशेष में सिद्ध-पुरुष माने जाकर लोक-पूज्य होने लगे थे। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

✓ १-गोगोजी-ये ददरेवा (नोहर) के निवासी, चौहान जाति के राजपूत और महमूद गजनवी (११ वीं शताब्दी) के समकालीन थे[१]। ये असाधारण वीर, गाय-रक्षक और साँपों के सिद्ध देवता के रूप में प्रसिद्ध हैं। नोहर के पास गोगामेड़ी इनका मुख्य स्थान है, जहाँ प्रति वर्ष भादव वदि ९ को मेला लगता है। मुहणोत नैणसी की ख्यात और राजस्थानी वातों में गोगोजी और पाबूजी राठौड़ को समकालीन बताया गया है जो परवर्ती कल्पना ही है[२]। इनके अनुसार, पाबूजी के बड़े भाई बूड़ोजी की लड़की केलमदे से गोगोजी का विवाह हुआ था किन्तु राठौड़ों के वंशवृक्ष से यह कथन गलत साबित होता है। राजस्थानी में लोक-गीतों के अतिरिक्त मेहोजी, आसोजी बारहट आदि पुराने कवियों ने भी गोगाजी पर रचनाएँ की हैं[३]। गोगोजी पर डा० सत्येन्द्र द्वारा किया गया कार्य विशेष महत्त्वपूर्ण है जिसमें तद्विषयक पूर्ववर्ती कार्यों का उल्लेख भी है[४]।

२-तेजोजी-ये नागौर के गाँव खिड़नाल के धोल्या जाति के जाट ताहड़जी के पुत्र थे। उस समय नाग जाति के लोगों से इनके गोत्र के लोगों का झगड़ा था। इनका ससुराल पनेर (जयपुर) में बनास नदी के किनारे वहीं पर था। ससुर का नाम रूपाजी और पत्नी का पेमल था। किसी समय ससुराल में गाएँ छुड़ाते समय ये बहुत घायल हो गये। वापिस आते

१-(क) डा० सत्यकेतु विद्यालंकार अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास, पृष्ठ २६१-६१, सन् १९३८।
(ख) डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ २२७-२८।
२-(क) ख्यात द्वितीय खण्ड, पृष्ठ १६७-१८१, काशी।
(ख) राजस्थानी बातां, पृष्ठ १७६-१९५ २०६-२११, सम्पादक-सूर्यकरण पारीक, सन् १९३४।
३-(क) राजस्थानी लोकगीत दूसरा भाग पृष्ठ ५२७-५३२, सम्पादक-रामसिंह, पारीक और स्वामी।
(ख) डा० हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १०४-१०५ ११४-११५।
४-(क) जाहरपीर गुरु गुग्गा आगरा, सन् १९५६।
(ख) राजस्थान भारती, बीकानेर भाग ९ अंक ३ दिसम्बर १९६६, 'राजस्थान के लोक साहित्य पर कुछ दृष्टियाँ'।

समय बालू नामक एक नाग ने उनका रास्ता घेर लिया जिससे युद्ध करते हुए ये मारे गए। इनकी पूजा इनकी जाति और ससुराल में आरम्भ हुई, बाद में धीरे धीरे समस्त राजस्थान में फैल गई और ये नागों के सिद्ध देवता के रूप में माने जाने लगे। जोधपुर के पर्वत सर में भाद्रो में इनका सबसे बड़ा मेला लगता है[1]। अन्यत्र[2] कहा गया है कि ये संवत् १२७६ में विद्यमान थे। इनका विवाह किशनगढ़ के रूपनगर में हुआ था। एक सांप से वचनबद्ध होने के कारण गाएँ छुड़ाने में घायल होने पर उससे अपनी जीभ कटवा कर स्वर्गवासी हुए। जाटों में विश्वास है कि तेजोजी की 'तांत' बांधने पर सांप काटे का असर नहीं होता। अनुमान है कि जाम्भोजी के समय कृषक वर्ग में इस रूप में इनकी मान्यता हो गई होगी।

३-रावल मल्लीनाथ-ये राव सलखाजी के ज्येष्ठ पुत्र और पिता की मृत्यु के बाद अपने चाचा राव कान्हड़देव के पास रहने लगे थे[3]। संवत १४३१ में ये महेवा के स्वामी हुए। प्रसिद्ध है कि ये सिद्ध जोगी रतननाथ के आशीर्वाद से हुए थे और रावल कहलाए तथा उन्होंने इनको साक्षात् दर्शन दिया था। लोग इनको सिद्ध-पुरुष मानते थे। तलवाड़ा में लूणी नदी के तट पर इनका मंदिर है, जहां प्रति वर्ष चैत में मेला भरता है। इनका स्वर्गवास संवत् १४५६ में हुआ था[4]। इनके समकालीन उगमसी भाटी ने देवी-कृपा से एक पंथ चलाया था। मल्लीनाथ और उनकी स्त्री इसी पंथ में थे[5]। यह कोई शाक्त पंथ होना चाहिए जिसकी पुष्टि अन्यत्र भी होती है[6]। बम्बई प्रेसिडेन्सी गजेटियर (वॉल्यूम ९, पार्ट फर्स्ट) में लिखा है कि "उगमसी ने ५०० वर्ष पूर्व बनारस में बीजपंथ या मार्गपंथ चलाया था। ये लोग एक घोड़े की मूर्ति या दीपक की ज्योति की पूजा करते हैं जो रामदेव पीर कहलाता है।" इसमें ऐतिहासिक असंगति है, क्योंकि रामदेवजी तो रावल मल्लीनाथ के भी बाद में उत्पन्न हुए थे। इसी प्रकार मल्लीनाथ और रूपादे या हरजी भाटी के माध्यम से रामदेवजी का सम्बन्ध बताया जाता है, वह भी परवर्ती कल्पना मात्र है।

४-पाबूजी राठौड़-ये मारवाड़ के राव आसथानजी के दूसरे पुत्र धांधलजी के छोटे पुत्र थे। ये बड़े वीर और वचन-पालक थे। इनकी बहन पेमाबाई जायल के खीची जींदराव को ब्याही गई थी। इन्हीं जींदराव से देवल चारणी की गाएँ छुड़ाने में इनके और इनके बड़े भाई बूडोजी के प्राण गए। इनका बदला बूडोजी के लड़के झरड़ा ने लिया था[7]। पाबूजी

१-महाराज जघीना जाट इतिहास, पृष्ठ ६२३-६२६।
२-राजपूताना गजेटियर, वाल्यूम सेकिंड, सन् १८७९
लीजेंड आफ तेजाजी, पृष्ठ ३७।
३-रेउ मारवाड़ का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ५३-५४।
४-आसोपा मारवाड़ का मूल इतिहास पृष्ठ ८३-८४।
५-आसोपा-मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ ८२-८३ पादटिप्पणी।
६-राजस्थान साहित्य उदयपुर वर्ष १ अंक ४ मई सन १९५४,
'आदर्श भक्तिनिष्ठ रानी रूपादे' -लेख।
७-(क) रेउ मारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ४५ पादटिप्पणी।
(ख) ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ १६३ ६४, पादटिप्पणी।
(ग) मुहणोत नैणसी की ख्यात, द्वितीय खण्ड, १६७-१९१।

का समय सवत् १३८२ के आसपास है[१]। फलोदी के कोलू गांव म पाबूजी का देवरा है। डा० टसीटरी ने कोलू गांव के तीन शिलालेखो का परिचय दिया है जिनमे सबसे प्राचीन सवत् १४१५ के भादवा सुदि ११, रविवार का है। इसम धाधल गोम के पुत्र सोहड द्वारा पाबूजी के मदिर बनाए जाने का उल्लेख है[२] पाबूजी पर अनेक रचनाए मिलती हैं और 'पवाड' तो प्रसिद्ध हैं ही। भरडे पर भी डिंगल गीत लिख गए हैं[३]। ये लक्ष्मण के अवतार मान जाते हैं। प्रसिद्ध है कि पाबूजी के साथ ७ थोरी रहा करते थ। अब भी इनक पुजारी थोरी है।

✓ ५–रामदेवजी तँवर–ये अजमलजी के दूसरे पुत्र थे। इनके बडे भाई का नाम वीरम देव था। प्रसिद्ध है कि सवत् १५१५ के भादवा सुदि ११ को ४० साल की आयु म इन्होंने रुणीचा म जीवित समाधि ली थी। इस हिसाब से इनका प्रादुर्भाव काल सवत् १४७१ अनु मित होता है। ये सुप्रसिद्ध नाथ जोगी बालनाथ के शिष्य थे जो उस समय पोकरण म रहते थे। इनकी पत्नी का नाम नीतल और पुत्री का डाहलदेवी बताया गया है[४]। श्रद्धालुओं म ये कृष्ण के अवतार माने जाते हैं। रुणीचा इनका प्रसिद्ध स्थान है, जहा प्रति वर्ष भादवे म मेला भरता है। इसम दूर दूर भागों स लोग आते हैं। रामदेवजी के नाम से 'वाणी' भी प्रचलित है[५] किन्तु उसकी प्रामाणिकता नितात सदिग्ध है।

६–मेहोजी–ये मागलिया शाखा के राजपूत थे। यह शाखा चित्तौड के गहिलवश राजपूतो से निकली हुई है[६]। नैणसी ने गुहिलवश की २४ शाखाओं म इसका नाम गिनाया है[७]। ये जसलमर के राव राणगदेव भाटी के साथ युद्ध म जूझ कर वीरगति को प्राप्त हुए थे[८]। हडबूजी के पिता सांखले महराज को भाटी राणगदेव न मार दिया था इसका बदला लेने के लिए राव चूंडाजी ने उसका पीछा किया और जसलमर राज्य के सिरड गाव के पास उसको मार डाला। यह घटना सवत् १४६२ की है[९]। इस प्रकार, मेहोजी के जीवन की ऊपरी सीमा सवत् १४६२ सिद्ध होती है। विक्रम पन्द्रहवी शताब्दी पूर्वार्द्ध म मागलिया का शासन पोकरण फलोदी और उसके आसपास के प्रदेश म था, जिस कारण यह मागलियावाटी कहलाता था। फलोदी उसकी राजधानी थी। इन मेहोजी ने चारण मेहा

१–डा० दशरथ शर्मा अर्ली चौहान डाइनस्टीज, पृष्ठ ३२८, पादटिप्पणी।
२–जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बगाल (न्यू सिरीज), सख्या १२, सन १९१६ पृ० १०६–१४।
३–(क) टसीटरी डिस्क्रिप्टिव कटालाग अवमन सक्शिन, पार्ट–फर्स्ट, पृष्ठ ८–९।
(ख) डा० हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ११२–११४।
(ग) राजस्थानी वीर गीत, भाग १ पृष्ठ १०–१५ बीकानेर सन १९४५, आदि।
४–बम्बई प्रेसिडन्सी गजेटियर वाल्यूम ९, पार्ट–फर्स्ट, पृष्ठ १९०।
५–मान–पद्य–सग्रह तीसरा भाग, पृष्ठ ९३–१०६ रामगोपाल मोहता बीकानेर, स० २००७।
६–ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ ३९० तथा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खड, पृष्ठ २६, पादटिप्पणी।
७–ख्यात प्रथम भाग पृष्ठ ७७, काशी।
८–डा० मनोहर शर्मा राजस्थानी संस्कृति की रूपरेखा, पृष्ठ ३८।
९ रेउ मारवाड का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ ६७ पादटिप्पणी।

करणीजी के पिता मेहोजी चारण को सुवाप नामक गाव प्रदान किया था। मेहोजी चारण का विवाह सवत १४३८ के आसपास आढा गाव के स्वामी चकनू आढा की पुत्री देवलबाई के साथ हुआ था[१]। मेहोजी मांगलिया अत्यन्त दानी, परोपकारी, शूरवीर और वचन सिद्ध महात्मा थे। कुछ विद्वानों ने हडबूजी सांखला के पिता महराज और इनको अभिन्न माना है[२] जो भूल है। सांखला और मांगलिया दो भिन्न शाखाएँ हैं।

७–हडबूजी सांखला–ये नागौर के भूंडेल गाव के निवासी महराज सांखला के पुत्र थे। इन्होंने सवत् १५१० के आसपास राव जोधाजी को एक कटार दी थी[३] जो बीकानेर राजघराने की पूजनीक वस्तुओं में एक है[४]। ये अतिथि सत्कार करने में एक ही थे, इनके यहां से कोई भूखा नहीं जाता था। ये बड़े शकुनी, वचनसिद्ध और करामाती माने जाते थे[५]। अपने पिता की मृत्यु (सवत् १४६२) के बाद ये फलोदी के गाव हरभमजाल में आ गए। वहां रामदेवजी तँवर से साक्षात्कार होने पर इन्होंने अस्त्र-शस्त्र त्याग दिए और बालनाथ को अपना गुरु बना कर साधु हो गये। तब से ये बेगटी गाव में रहने लगे। सवत १५१५ में रामदेवजी के जीवित समाधि लेने के ८ दिन बाद इन्होंने भी उनके पास ही जीवित समाधि ले ली। राव जोधाजी ने बेगटी गाव हडबूजी को प्रदान किया था[६]।

८–निष्कर्ष विश्णोई सम्प्रदाय प्रवर्त्तन की भूमिका–ऊपर के विवरण का सारांश यह है कि जाम्भोजी के समय तक राजस्थान में मोटे रूप से चार 'धर्म' प्रचलित थे। पूर्व लिखित उद्धरणों से यह भी स्पष्ट है कि जाम्भोजी ने इनको चेताया था। इनके अतिरिक्त अनेक इतर देवी–देवताओं की मान्यता और 'पाषण'–पूजा भी प्रचलित थी। लोग अधिकांश में धर्म के असली तत्त्व को न जान कर चमत्कार को मानते थे। भौतिक लाभ–प्राप्ति उनका मुख्य प्रयोजन था, अध्यात्म लाभ के इच्छुक कम ही थे। सोलहवीं शताब्दी में राजस्थान में प्रचलित सभी धर्म मत या तो केवल बाह्य साधना–विधि से चिपटे हुए थे या केवल कथनी प्रधान हो गए थे। कथनी और करनी में बडा अन्तर था। जाम्भोजी ने सम्यक प्रकार से इसको लक्ष्य किया था। एक सबद (८३) में उन्होंने व्यापक रूप से प्रचलित इस भावना का बड़ा स्पष्ट और सारगर्भित वर्णन किया है। उन्होंने किसी भी 'धर्म', सम्प्रदाय या मत का बुरा नहीं बताया और न ही वेद, पुराण, शास्त्र और कुरान की निंदा की। उन्होंने तो धर्म के नाम पर प्रचलित और प्रचारित पाखण्ड बाह्य वेश और लोक दिखावे की निन्दा की है। धर्म के असली तत्त्व को जानने और आचार–विचार की पवित्रता पर बारम्बार जोर दिया है। सबदवाणी से पता चलता है कि उस समय इन चारों धर्मों से किसी न किसी प्रकार सबंधित अनेक प्रकार के लोग थे। बिना तत्त्व जाने वे स्वयं भ्रम में थे और दूसरों को भ्रमाते थे। वेश और

१–किशोरसिंह बार्हस्पत्य करणी-चरित्र पृष्ठ १७–१८, कलकत्ता, सन १६३८।
२–डॉ० मनोहर शर्मा राजस्थानी लोक संस्कृति की रूपरेखा पृष्ठ ३८।
३–ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृष्ठ २३८–३९।
४–बीकानेर गोल्डन जुबली (सन १८८७ १६३७) (अंग्रेजी में) बीकानेर राज्य प्रकाशन।
५–आसोपा मारवाड़ का मूल इतिहास पृष्ठ १०६, पादटिप्पणी।
६–महणोत नणसी की ख्यात प्रथम भाग, पृष्ठ २४२ ४३ तथा द्वितीय भाग पृ० १२६ १३०।

कुरान के नाम पर जाल फैला हुआ था (७२ १) और अनेक दन्तकथाओं का प्रचार था (६७ ३) । हिन्दू और मुसलमानों में ऐसो में जोगी, जंगम, सींगी बजाने वाले, दिगम्बरी, संन्यासी, ब्रह्मचारी, सूफी, दरवेश, पीर, जती, तपस्वी, तकिये में रहने वाले, जपिया, मुंडिया, आयस, ऋषि, फकीर पंडित, पुरोहित, मिश्र, व्यास, ज्योतिषी, काजी, मुल्ला आदि थे[1] , सिद्धि का मार्ग और आचार-विचार जानने वाले साधु विरले ही थे । तत्कालीन समाज में कर्म, धर्म और सिद्धि के नाम पर अनेक प्रकार के पाखण्ड प्रचलित थे । लोग जती तपस्वी खेचर, भूचर, क्षेत्रपाल नाथ, चौसठ योगिनी, बावन वीर, यक्ष, 'डाकणी-साकणी', वेताल, भूत-प्रेत, पितर और देवी की पूजा करते थे । तंत्र-मंत्र और जड़ी-बूटी का प्रयोग होता था । हिन्दुओं में मूर्तिपूजा बहुत प्रचलित था तथा मुसलमान मुहम्मद के नाम पर अबाध रूप से निरीह जीवों की हत्या करते थे । संन्यासियों और जोगियों में भी अनेक फिरके थे किन्तु उनमें लोक दिखावा मात्र रह गया था[2] ।

जाम्भोजी के अतिरिक्त तजोरी ऊदोजी, वील्होजी आदि कवियों की रचनाओं से तत्कालीन समाज में धर्म के नाम पर फैले पाखण्ड का भली-भांति चित्र सामने आता है । इस समय में जाम्भोजी ने बिश्णोई सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन के द्वारा एक निश्चित मार्ग लोगों को दिखाया । यह मार्ग जीवन-पद्धति भी है और 'धर्म' तो है ही ।

१–द्रष्टव्य–शब्द संख्या ८४, ४', ५५ ५६ ६६ ६७ ६८ ८२ ८६, ११८ आदि ।

२–द्रष्टव्य–शब्द संख्या ४, १०, ११, २६ २७, ६६ ७१, ९९ ११४ आदि ।

पनरास अवतार लियो, आठमि सोम अठानर।

× × ×

कातिग वदि हरि कळस थाप्यो, पथ वयाळ परगट्या।

—सुरजनदासजी कृत "साखी"।

साथरी गुरु की वन समरथळि, जहा खेल पसारिया।
तिराएव की साध्य पूगी, दे हरि मोख सिधारिया।

—रायचन्द कृत "साखी"।

वरस सात समारि वाळलीला निरहारी।
वरस पाच वावीस, पाळ एता न्नि चारा।
ग्यार और चाळीस, सवद कथिया अवनासी।
वाळ गुवाळ गुर ग्यान, साम तीन त्रस पच्यासी।
पनराम 'र तिराताव वदि मगसर नुवि आगले।
पालटे रुप रहियौ रिधू, इडग जोति समराथळे॥

—वील्होजी कृत "छप्पय"।

खण्ड २

प्रवर्त्तक, वाणी और सम्प्रदाय

अध्याय ४

जाम्भोजी का जीवन-वृत्त

पूर्वज रोलोजी, लोहटजी जाम्भोजी के पूर्वजो के इतिहास का विशेष पता नही चलता। नागौर से १५-१६ कोस उत्तर मे स्थित पीपासर गाव मे रोलोजी पवार हुए। प्रसिद्ध है कि रोलोजी महाराजा विक्रमादित्य की चालीसवी पीढी मे थे[१]। महलाणा गाव (जोधपुर) के विष्णोई भाटो की बहियो के अनुसार विक्रमादित्य के २६ वें वशधर प्रसिद्ध राजा भोज थे और उनकी ९ वी पुश्त पर पीपासर म रावलजी नामक परमार क्षत्रिय हुए। यहा रोल्होजी ३८ वी पीढी पर आते हैं। रोलोजी के पुत्र लोहटजी थे जो जाम्भोजी के पिता थे। 'साधु-परम्परा' (द्रष्टव्य-परिशिष्ट) मे 'आदि विष्णु' से लेकर जाम्भोजी और उनकी शिष्य-परम्परा मिलती है। साहबरामजी कृत प्रकाशित जम्भसार (प्रथम खण्ड, पृष्ठ ५-६) में दी हुई 'प्राचीन महात्माओ की वशावली' की सूची भी ऐसी ही है। इन दोनो सूचियों मे 'भोजपुत्र' को यदि सुप्रसिद्ध राजा भोज माना जाय, तो रोल्होजी उनकी १३ वी पुश्त पर आते हैं। इस प्रकार भाटो की वशावली और उक्त 'परम्परा' मे मेल नही है। परमारो की वशावली अन्य विद्वानो ने भी दी है किन्तु परस्पर मिलान करने पर इन सबमे कोई समानता नही पाई जाती[२]। रोल्होजी ऊमट शाखा के पवार थे। इन पीढियो के सत्यासत्य निर्णय करने का साधन हमारे पास नही है। हा लोहटजी के पिता रोलोजी से हम एक निश्चित और प्रामाणिक परम्परा पाते हैं। भाट लोग रोल्होजी को रावल्जी कहते हैं। वस्तुतः दोनो नाम एक ही हैं। रोल्होजी का विवाह मोहिल राणा के यहा हुआ था। उनकी मोहिलाणी धर्मपत्नी राजाधिदेवी से लोहटजी और पूल्होजी का जन्म हुआ। उनके एक कन्या 'तांतू' भी हुई। प्रसिद्ध है कि ये तीनो सगे भाई-बहन थे और लोहटजी इन सबमे बडे थे[३]। ऐसा प्रतीत होता है कि लोहटजी पवार का घराना अत्यन्त प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध था। सम्प्रदाय के उपलब्ध साहित्य से लोहटजी की सम्पन्नता का भली-भांति पता चलता है[४]।

पूल्होजी जाम्भोजी के जीवन-चरित विषयक प्रसगो म अनेक स्थलो पर पूल्होजी

१-(क) स्वामी ब्रह्मानदजी जम्भदेव चरित्र भानु, पृष्ठ १।
(ख) मोहनलाल वैश्य विष्णोई मत व्याख्या, पृष्ठ ६।
२-(क) नणसी की ख्यात, प्रथम भाग, पृष्ठ २३०-३१, काशी, सवत, १९८२।
(ख) सूर्यमल्ल मिश्रण वशभास्कर, प्रथम भाग, पृष्ठ ४७३-५०१।
(ग) सिरायच दयालदास पवार वश दर्पण, बीकानेर, सन् १९६०।
(घ) बाँकीदास री ख्यात, पृष्ठ १३६-१४१, जयपुर, सन १९५६।
३-महलाणा गाव के विष्णोई भाटो की बहियो मे भी ऐसा उल्लेख है।
४-लोहट हल् वाहे खेती कर, कोहर सीचण जाय।
भाग वडो पुवार को, घर वित छाली गाय ॥ २३ ॥
वित निरतो धरि छाली गाय, गाठी गरथ निरतो थाय।
वरसा वरसी निपज धन, भली टबाई घर जोगो धन ॥ २४ ॥
—वील्होजी कृत कथा औतारपात।

और तांतू का उल्लेख हुआ है। साहबरामजी के अनुसार पूल्होजी लाडणू गाव म रहते थ। अकाल पडने पर द्रोणपुर जाते हुए लोहटजी अपने आदमियो और पशुओ के साथ सन्ध्या के समय लाडणू पहुंच गए। पूल्होजी उनसे मिलन आए और गोठ हुई[1]। सवत १५४२ म अकाल के पश्चात् जाम्भोजी का धर्मोपदेश सुन कर सब प्रथम पूल्होजी ने ही शका प्रकट की थी। विश्वास होने पर सबसे पहले सम्प्रदाय म भी वे ही दीक्षित हुए तथा उनके साक्ष्य पर अन्य लोग भी सम्प्रदाय म आए (द्रष्टव्य–वील्हाजी कृत पूल्होजी की कथा)। इस प्रकार पूल्होजी तत्कालीन समाज के अगुआ के रूप म दिखाई देते हैं। इससे उनकी तथा उनके घराने की प्रसिद्धि एव प्रतिष्ठा का पता चलता है। जाम्भोजी के वकुण्ठवास का समाचार सुनकर उन्होने रिणसीसर म स्वेच्छा से प्राण त्यागे थे (द्रष्टव्य–अध्याय ७, १३ व शीषक के अन्तगत- रिणसीसर')।

तांतू जाम्भोजी की भूआ तांतू का उल्लेख भी सम्प्रदाय के साहित्य म कई बार मिलता है। तांतू का ससुराल जसलमेर के ननऊ गाव म था[2]। साहबरामजी ने लिखा है कि पलने पर लेटे हुए जाम्भोजी को उनकी भूआ तांतू नहीं उठा सकी थी, न ही लोहट और हासा उठा सके किन्तु दासी ने उठा लिया था[3]। सम्प्रदाय मे मान्य 'नवण मत्र' (वह नवण) जाम्भोजी न तांतू के प्रति कहा था। प्रसिद्ध है कि उ होने जाम्भोजी से अत्यन्त सम्पर्क म मुक्ति का उपाय पूछा तब जाम्भोजी न इसके द्वारा यह उपाय बताया था। 'सबदवाणी' के गद्य तथा पद्य प्रसगो म इसका उल्लेख मिलता है[4]। तांतू ने जाम्भोजी के वकुण्ठवास के पश्चात ननऊ गाव म देह-त्याग की थी[5]। '२७ जुगाइयो का पुरू" (द्रष्टव्य–अध्याय ७) तथा हीरानद (कवि सख्या ८६) के 'हिंडोलणा' म तांतू का नाम है।

लोहट-हासा जाम्भोजी का जन्म-लोहटजी का विवाह यादव वंशी भाटियो से निसृत खिलहरी कुल म उत्पन्न हासा देवी (अपर नाम केसर, स हुआ था। व द्वापर

१–प्रति सख्या १०३ जम्भसार, चौथा प्रकरण लोहट केसर की कथा, पत्र ५-६।

२–ननऊ तातू वस नगरी सरस सुघाट।
थटवाली तातू तणी चला चराव थाट ॥ ४५ ॥–केसोजी कृत कथा जती तराव की।

३–प्रति सख्या १९३ जम्भसार प्रकरण ६ पलणा परचो पत्र–५।

४–(क) प्रति सख्या ११२ २२७।
(ख) ईश्वरानन्दजी गिरि– 'सबदवाणी' पृष्ठ १२३, सवत १९५५।

५–(क) सात स मुकति सीधा ननेऊ। साथ तातू तणा अ ते मेऊ।
दोयस पच साथे टुरगी। सुरमती निकट सीधा सुरगी ॥ १७० ॥
–सुरजनजी कृत कथा परसिध।
(ख) पहलि मु हि तातू पडी उरयी उतारी थापि।
एक सहस अर च्यारिस, पडया सबीरी साथि ॥ ८ ॥–केसोजी कृत साखी।

६–(क) भाटी जादम वसावली, ताह निकी खिलहरी कुली।
तह वस उपनी हासा माय, भाग बडो सुकलीणी थाय ॥ २१ ॥
–वील्होजी कृत कथा औतारपात।
(ख) खिलहरा कुल वस निवास, हासा नाव घरे सुखवास।
साईं लोहट घरि वर नारि, सुकलाणी सोभा समारि ॥ २ ॥
–सुरजनजी कृत कथा औतार की।

गाव के मोहकमसिंहजी की पुत्री थी[1]। लोहटजी अत्यंत सम्पन्न व्यक्ति थे। जाम्भोजी उनके एक मात्र पुत्र थे और सम्भवतः दम्पत्ति की अधेडावस्था में उत्पन्न हुए थे। इनके जन्म के सम्बन्ध में कई बातें प्रचलित हैं किन्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उल्लेख वील्होजी का है। उनके अनुसार, लोहटजी एक दिन गायें चराने वन में गए। वहा उनको "अगम पुरुष" एक योगी के रूप में मिले और कहा कि तेरे घर में 'देवजी' अवतार लेंगे, तू शका मत करना, उनके 'इचरज' (आश्चर्यजनक कार्यों) को देखकर 'ओदरणा' (शंकित, उदास) मत होना और न ही मन में कोई शंका करना, दृढ मन रहना। कृष्णजी 'चिरत' करेंगे, वे बारह कोटि जीवों के उद्धारार्थ आएँगे[2]। इसकी पुष्टि सुरजनजी के कथन से भी होती है[3]। उस जोगी ने हासा को भी घर के दरवाजे पर दर्शन दिए। उस समय, ऋतुकाल के पश्चात वे कपडे धो रही थी। उनके पास अडोस-पडोस की अन्य स्त्रियाँ भी बैठी थी। जोगी ने आशीर्वाद दिया कि तेरे पुत्र होगा जो महान योगी और अवधूत होगा[4]। सुरजनजी के अनुसार, उस समय जोगी ने 'आदेस' किया, जिसको सुनकर हासा भिक्षा का थाल भर कर लाई किन्तु बाहर उनको उसका 'छाया-खोज' भी दिखाई नहीं दी। हासा ने मन में विचार किया कि 'आप अवतार लेंगे'[5]। कई दिन बीतने पर हासा को गर्भ का आभास हुआ, उनको लेश मात्र भी

1-(क) स्वामी ब्रह्मानन्दजी श्री जम्भदेव चरित्र भानु पृष्ठ १।
(ख) प्रति सख्या १६३, जम्भसार प्रकरण ४, लोहट केसर की कथा।
(ग) महलाणा गाव के विष्णोई भाटो की बहिया।

२-सुभ दिन एक सुकयारथ भयो। लोहट गऊ चरावण गयो।
पुरिष एक मिल्यो वन माय। दरसण दीठो सनमुष जाय॥ २५॥
जोग रूप बोले सुर वाणि। लोहट न समभाव आणि।
पुरष तेरे लेसी अवतार। सक न मानी करी करार॥ २६॥
किसन चिरत एक होयसी सही। बीह न मानी दृढ मनि रही।
इचरज देपि मत ओदर। मन भ्र दसो मत कोई कर॥ २७॥
समझायो लोहट न, आगम हुई अवाज।
देवजी आव जग मही, बारा मेल्हण काज॥ २८॥-कथा औतारपात।

३ लोहट हासा न कहै मन मा करो करार।
वन मा मढा पुरिष भटिया, तह की बाच, सार॥ १९॥
महा पुरिष जोगिदर वसि। सबद रूप कीयो आदेसि।
सबद रूप बोल हित लाय। इह बालक का चिरत सुणाय॥ २०॥
लोहट तेरे बालक होय। दुनिया की गति नाही सोय।
उदबुद रूप होयसी अवतार। दरसण देख अर करी करार॥ २१॥-कथा औतार की।

४-माता हासा हुई जवत। कपडा धोवे माझ रत।
आसि पासि ता आय वैठी नारि। जोगिंदर दीठो एक वारि॥ २६॥
दीठो जोगी नारी हसी। मुष सा वाच कही एक असी।
हासा तेरे होयसी पुत्र। बड जोगी होयसी अवधूत॥ ३०॥ वील्होजी, कथा औतारपात

५-सन्ज सीत समार समन सुष सताय घरे आणद।
रितिवह वार हुवे सनमान, कपडा धोय कर सानान॥ ३॥
मन पुरिष जोगिदर वस, सबद रूप कीयो आदेस।
भाछ्या थाल घाल्य जनि लेह छाया षोज न दीस देह॥ ४॥
गयो गयो अगज होय, मन मा कियो विचार। (शेषांश आगे देखें)

दुख का अनुभव नहीं हुआ[1]। गर्भ में बालक न हिलता-डुलता था और न पार्श्व-परिवर्तन करता था। हांसा सबके सामने यह भी कहने लगी कि मुझे तो यह दिखा है कि गर्भ में जीव निर्जीव है। महीने पूरे होने पर 'परम गुरु' प्रकट हुए, उन्होंने माता को जरा भी दुख नहीं दिया। पता लगने पर आसपास की स्त्रियाँ आगईं। वे बालक को नहलाती-धुलाती कहने लगीं—हांसा तो कहती थी कि गर्भ निर्जीव रूप में है, किन्तु यह बालक तो चैतन्य और 'सकल सरूप' है[2]। अन्यत्र भी ऐसा ही उल्लेख है। दस मास बीतने पर, एक दिन रात्रि में हांसा घर में सोई हुई थी। स्वप्न में उन्होंने देखा कि वे पुत्र-हेतु धर में जा रही हैं। जगने पर उन्होंने अपने सम्मुख बालक देखा[3]। इस कथन का तात्पर्य यही है कि प्रसव-काल में हांसा को किंचित भी कष्ट नहीं हुआ। रात्रि बीतने पर लोहटजी ने पंडित को बुलाकर बालक के जन्म-मुहूर्त के विषय में पूछा। उसने 'पतड़ा' (पंचांग) देखकर बताया कि संवत १५०८ के भादों बदि अष्टमी, सोमवार को कृत्तिका नक्षत्र में बालक उत्पन्न हुआ है। यह कुल-तारक होगा। "निसरावणा" (मुहूर्त आदि देखने के रुपए) लेकर पंडित गया[4]। लोहटजी और हांसा को जोगी द्वारा पुत्रोत्पत्ति के आशीर्वाद प्राप्त होने का उल्लेख अनेक कवियों और लेखकों ने किया है। परवर्ती रचयिताओं ने सम्भावनाओं का बढ़ावा देकर इस कथा में थोड़ा सा अंतर कर दिया है। साहबरामजी के अनुसार, वह जोगी लोहटजी को द्रोणपुर के जंगल में मिलता है, जब वे अकाल काटने के लिए वहां गए हुए थे तथा जोधो जाट द्वारा उनके 'निपूतेपन'

माता अंतरि ऊपजी, आप लीय अवतार ॥ ५ ॥—कथा औतार की।

१-केतक दिन हुवा परवाण्य, आसा गर्भ उपनी जाण।
दुख अहुष नहीं वीहार, पाक देह घटि प्राण अधार ॥ ६ ॥—वील्होजी, कथा औतारपात।

२-माता ओदरे उपनी आस। फुर फुरक फोर पास।
माता भए न देही दुख। भार नहीं अंग आछो सुख ॥ ३१ ॥
साथा आगी हांसा कहै। मन मा एक अंदेसो रहै।
ओदर आदेक उपनू जीव। जीव नहीं जाण नजीव ॥ ३२ ॥
माहीना पूरा हुवा। माय न दीन्हो दुख।
परगट हुवो परम गुर। जा जाण्या ताह सुख ॥ ३३ ॥
आसि पासि ता आई नारि। हाव धोव कर विचारि।
हांसा कहता नीरजीव रूप। जीव जाग सकल सरूप ॥ ३४ ॥
—वील्होजी, कथा औतारपात।

३-दस मास जदि पूरा हाय माता धरि सुख सूती साय।
अगम बात कु ण जाण अ जाण होयसी किसन चिलत परवाण ॥ ६ ॥
माता सुपन दीठ क पुत्र हेत पईठ।
हांसा जागी वाली वीगसि, सनमुख बालक दीठ ॥ १० ॥—सुरजनजी, कथा औतार की।

४-रीण घटी दिन प्रगटयो आय। लोहट पाडे न बुलाय ॥ १२ ॥
पाड़ पतड़ो देखि निवाजि। कु ण महूरति आयो बाल ॥१३॥
पनरा समत अठौतर किरत उपत परवाण्य।
सोमवार भाद्व वद, आठम तिथि परवाण्य ॥१४॥
पाडे पतड़ो वाच जोय, ओह बालक कुल तारक होय।
पाडे नीसरावण्य ले जाय, मात पिता सोच मन माहि ॥ १५ ॥
—सुरजनजी, कथा औतार की।

का अपशकुन मानने और उन पर व्यग्य किए जाने पर, मन म ग्लानि का अनुभव करते हुए जगल म देह-त्याग का सकल्प करते हैं। लोहटजी से बछडी का दूध निकलवा कर वह अपनी अलौकिक सिद्धि का परिचय भी देता है[1]। हिसार डिस्टिक्ट (सन् १९०७) गजेटियर म भी ऐसा ही उल्लेख है किन्तु वहा द्रोणपुर का नाम नही है और यह घटना लोहटजी की ६० वर्ष की आयु म घटती है (अध्याय २ म (२) के अन्तर्गत-सदर्भ-सख्या (२७)। जाम्भोजी की जन्म-तिथि और सवत के सम्बन्ध म सभी लोग एक मत है[2]।

जाम्भोजी का जीवन कालक्रमानुसार महत्त्वपूर्ण आयाम-जाम्भोजी के जीवन की विभिन्न कालो से सबधित प्रमुख बातो का उल्लेख वील्होजी न एक कवित्त (छप्पय) म किया है। यह छद उनके जीवन-वृत्त के लिए अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है —

बरस सात ससारि, बाल लीला निरहारी।
बरस पाच बावीस, पाल एता दिन चारी।
ग्यार और चालीस, सबद कथिया अवनासी।
बाल गुवाल गुर ग्यान, मास तीन वस पच्यासी।

१-प्रति सख्या १६३, जम्भसार, प्रकरण-४।
२-(१) (क) पदरास र अठोतर गुर आयो करि भाव।
कुपरि पलटण परे करण वापरा निरति नियाव ॥ ५० ॥
-वील्होजी, कथा धडाबध।
(२) (क) पनरा समत अठोतर, भादव वदि अवतार।
अठव तिथि अचभ गति, आवे सिरजण हार ॥ १ ॥
-सुरजनजी, कथा परसिध।
(ख) पनरास अवतार लियो आठमि सोम अठोतर।
द्वापर नीबी द्रूणपुर, आसा तीसना न कर।-सुरजनजी कृत साखी।
(३)-(क) पनरास अठोतर, आठम सोम सुवार।
हरि काया धर आवियो, सिर पर सोवन धार ॥ १२ ॥
-केसोजी, प्रति सख्या १६।
(ख) पनरास परवेस, आए अलप अठोतर।
सतगुर दीय सदेस, सुरग बताव साम्यजी ॥ ३ ॥
वदि भादव विचारि, तिथि आठम्य दिन अवतर्यो।
दुख भजण दातारि, समरि आयो साम्यजी ॥ ४ ॥
-केसोजी, प्रति सख्या २०१।
(ग) पनरास र अठोतरे हुआ, काय म ले परगटियो क्लर।
वदि भादव्य आठवि अवतार, करि किरपा आयो करतार ॥ ८८ ॥
-केसोजी कृत कथा विगतावली।
(४) 'कलजुग मा श्रवे [illegible] म बधे" हुवो। पाछ समत १५०८ अपे मौती भादवा वदे ८ वार सोमवार अतका नपत श्री किसनजी गाव पीपासर मधे लोहट पु वार रै घरे चरित रूपी प्रगट हुवा। पार कणी पायो नहीं'।
-परमानदजी लिखित 'साखा, प्र० सख्या २०१।

पनरास 'र तिराणव वदि मगसर नु वि आगल ।
पालटे रूप रहियो रिधू, इडग जोति समरायल [1] ॥ –प्रति सख्या ३८ स ।

इसके अनुसार, जाम्भोजी ने ७ वप बाललीला म बिताये, २७ वप (५+२२) तक पशु चराए, ५१ वप (११+४०) तक सबद–कथन किया। इस प्रकार तीना रूपा म पचासी वप तीन महीने बीते। सवत् १५९३ के मागशीष वदि नवमी को वकुण्ठवास हुमा। साहब-रामजी ने भी 'धूपमत्र' के ५ कवित्तो (छप्पयो) म से एक मे अपने ढग से ऐसा ही उल्ले किया है [2]। इस आधार पर जाम्भोजी के जीवनकाल को इस प्रकार से समझा ज सकता है —

१–जन्म स लेकर ७ वप तक 'बाललीला' काल, [illegible] वप (स० १५०८ से १५१५)।

२–८ वप से ३४ वप तक–'पाल–चारण' काल, २७ वप (स० १५१५ से १५४२)।

३–३४ वप की आयु मे–सवत १५४२ मे, विष्णोई सम्प्रदाय–प्रवत्तन तथा

४–उस समय से सवत १५९३ (वकुण्ठवास) तक ज्ञानोपदेश काल–५१ वप (स० १५४२ से १५९३)। आगे इसके अनुसार प्रामाणिक साम्प्रदायिक साहित्य के आधार पर उनक जीवनवत्त दिया गया है।

१–बाललीला-काल (सवत १५०८–१५१५)-सम्प्रदाय के बहुत से कवियो जाम्भोजी की बाल्यावस्था से सम्बन्धित अनेक रचनाएँ की हैं। इनमे यद्यपि उनकी अलौकि सिद्धि और चमत्कार-शक्ति के उल्लख विशेष हैं तथापि उनसे अनेक महत्वपूर्ण बाता क पता चलता है। ऐसी कतिपय घटनाओ का उल्लेख नीचे किया जाता है —

(क) जाम्भोजी ने उत्पन्न होने के पश्चात अनेक प्रयत्न किये जाने पर भी जन्म घूटी

१–प्रति सख्या २०१ म इसकी तीसरी और चौथी पक्ति का पाठ इस प्रकार है –

दस ऊपरि चालीस सबद कथिया अवेणासी ।
बाल गुवाल गुर ग्यान, सकल पूगा चवरासी ॥

इसम भूल स ज्ञान–कथन काल ५० (१०+४०) वप और आयु ८४ वप बताई गई है प्रतीत होता है सवत १८०० के लगभग यह छद इस रूप म भी प्रचलित था क्योंकि इस प्रति मे सबदवाणी के पुष्पिका रूप एक दोहे म परमानदजी ने 'चौरासी बरस सुरवाण्य लिखा है। पश्चात इस छप्पय के 'ग्यार और चालीस' पाठ प्राप्त होन प उन्होंने भी अपने उल्लिखित दोहे को सुधार कर या लिखा (प्रति सख्या २२७ म) –

अनत सबद सतगुर कह्या पच्चासी वरस परवाण्य ।
नायक कठि रहिया अता सेइ सीष्या श्रीरह सुजाण्य ॥

इस बात का उल्लेख प्रति सख्या २४० म भी मिलता है।

२–महाजोत गुर जम भक्त नित लीला धारी।
सप्त मौन रहे बाळ सप्तवीसों गोचारी।
इक्यावन वय ज्ञान नाद अगम अधिकारी।
पच्यासी त्रिय मास तज तप लाई तारी।
आउम सोम अठोनर पनराम अवतार।
त्रिराणव मिगश्र वदि नौमी साहब पहुच पार॥
–प्रति सख्या १९३ जम्भसार, प्रकरण–२४, पत्र २९।

महा सी[1]।

(ख) उनको पीढ़े पर लेटाया गया किन्तु वे घूम कर 'ईस' (पलंग की पटिया) के बल लेट गए। पृथ्वी पर उन्होंने पीठ नही लगाई[2]।

(ग) एक बार वे पीढे पर सोये हुए थे। पास ही लेटी हुई माता हासा को नींद की झपकी आगई। जगने पर वहां उनको बालक नही मिला। लोहटजी के आने पर वह वहीं मिल गया किन्तु सिर पूर्व से पश्चिम की ओर था[3]।

(घ) वे स्तन-पान नही करते थे। हासा ने 'सयाने' आदमियो से इसका कारण पुछवाया। मूल लोग 'आखा लेकर' भोपा के पास गए। उन्होने अनेक पाखण्ड रचे, 'टोने-टटमन' किए किन्तु कुछ उपाय न कर सके[4]।

१-(क) रोग माद दीस नही, दीस सकल सपोस।
गडसूती पीव नही, कहो कुण रो दोस ॥ ३८ ॥
-वील्होजी, कथा औतारपात।

(ख) नारि उचार विचार कर आय नीरमल नीर हुवाव।
घूटी क काज्य कहैं मुप को रप मोहन क मुपि हाथ न आव।
गाल्य क नाक टिक कर थोडी गोम्यद की गति नारि न पाव।
केसोदास उदास भई महरी धरती धरणीधर पीठ न लाव ॥-केसोजी, सवया।

२-पाढ पोढायो सुप वासाणि, फीरि हुवो इसकी क ताणि।
पामी भोम्य न देई देव, कुण जाण सतगुर को भेव ॥ ३९ ॥
-वील्होजी कथा औतारपात।

३-(क) पीढ ऊपरि बालक थाय। पास पोढी हासा माय ॥ ४१ ॥
हुणको एक नीद को लियो। जागी वेग सभाल्यो कियो।
पीढ उपरि फेर हाथ। बाल नही मन धसक्यो मात ॥ ४२ ॥
निरप पीढ को आसपास। बाल न लाधो धात सास।
मुपि बोल बरागी वण। मूझ नही अ धारी रण ॥ ४४ ॥
साद करि लोहट न कह्यो। बालक कोई स्यावज ले गयो।
भल पल करि उठियो पुकार। धम करि आयो तिणि वार ॥ ४५ ॥
लाधो बालक पूगी रली। सूझ नाही तू आधळी।
हासा मुप ता बोल भापि। साची नही दिराऊ साषि ॥ ४६ ॥
पीढ उपरि पोढावियो, सीस कवल पूरब दिस कियो ॥ ४७ ॥
इह बालक औडो बल काह। पछिम सीस पुरब दिस पाय ॥ ४८ ॥
-वील्होजी, कथा औतारपात।

(ख) पीढ तो पोढायो आय तन इसकी क ताय कहत पुरत मात अति अनराई है।
झक तक करत ऊजारि परयो जीवरो पल सू लागी पलक नेक नीद आई है।
सोवत डर सरीर इधक भई अधीर चूक चूक चीतवत मोहि मन भाई है।
कवि कहैं केसोदास नारि हू भई निरास, पीढ तो न पायो बाल मात मुरझाई है।
आवत धावत है जदि लोहट ढूढत ढाढत है ज गली।
मइया मुरझाय पुकारि परी तन तेज घटयो डिग नाहि छली।
पीढ इढ लह्यो जब लोहट पुकार भन नारि तू अधळी।
आय उठाए उचाय केस मन रग होत रली ॥-केसोजी, 'सवए'।

४-मात मुपि लेहचल देह। चूघ नही अचमो एह ॥ ५२ ॥
उरि उपरे पहूचो फेराय। पहूं आव औ हरि जाय। (शेषांश आगे देखें)

(ङ) एक बार वे हिंडोले में थे। घर में और कोई नहीं था। 'हारे' में 'कढावणी' में दूध गर्म हो रहा था। अब दूध उफनने लगा तो उन्होंने 'कढावणी' उतार कर पृथ्वी पर रख दी। हासा ने हिंडोले और 'हारे' के बीच जाम्भोजी के पैर के निशान देख कर उनको लोहे के तसले से ढाप दिया और लोहटजी को दिखाया। यह देख कर लोहटजी को वन में योगी से मिलने और पुत्रोत्पत्ति के आशीर्वाद की बात याद आई[1]।

(च) लोग जाम्भोजी को 'गहला-गहला' कहते थे। वे न दूध पीते और न भोजन करते थे। इस कारण मूर्ख लोग लोहटजी को भ्रमाते और बालक के सम्बन्ध में भोपों और ब्राह्मणों से उपाय पूछने का आग्रह किया करते थे। वे उनको भोपों के पास ले गए। भोपों ने १३ बकरे-बकरियों की हत्या इस निमित्त की। जाम्भोजी ने उनसे पूछा—तुमने आज कितने जीव मारे हैं और उनको मार कर कौनसा कार्य पूरा किया? उन्होंने उत्तर दिया ११ जीव मारे हैं और इनसे भूत-दोष-मोचन किया है। जाम्भोजी ने तब कहा—तुमने एक गर्भवती बकरी भी मारी थी, जिसके २ जीवित बच्चे निकले किन्तु बिना सहारे के वे भी मर गए। इस प्रकार, तुमने १३ जीवों की हत्या की है। यह अदृश्य कथन सुन कर भोपे स्तब्ध रह गये। जब जाम्भोजी ने 'पंथ प्रकट' किया तो ये लोग भी उनके अनुयायी बन गए[2]।

माता पूत पैयारो होय डाहो स्याणो पूछो कोय।
भु लाग भरमा वसि पया, आपा ले भोपा कै गया॥
माथा धू णै भोपड़ा, कूड़ा करै उपाय।
अण्यानी अचावणा मुष बोलै अनियाव॥ ५४॥
सेवग हू ता भोपा तणा, हू णा टटवस किया घणा।
वारा भूता रह्या मनाय, भोपा तणी न सरही काय॥ ५६॥
—वील्होजी, कथा औतारपात।

१—बालक हीडै हिंडोलणै, भू णै दूध कढै काढणै।
हासा गई ज कारज कही, देख पयो घर कोई नही॥ ६२॥
झटक बालक लियो समाहि, कर गहि ढकण लियो उचाय।
दूध रीढ़ सो राख्यो ठारि, भु य मल्ही काढणी उतारि।
हिंडोल धू णै बीच चौग निरषे हासा दीठो पाज।
निरषे तसटो लीयो तारि, पोज जतन करि राख्यो ढांकि॥ ६६॥
है गऊ चरावण गयो वन माहि एक पुरिष भेंट्यो उण ठाय॥ ७३॥
पुरिष पास हू का दा रह्यो एह बालक को आवण कह्यो॥
—वील्हाजी, कथा औतारपात।

२—नाहट हासा क तण्य दय वासो नियो थाय।
गहलो गहलो ज्यों कह्यो, अलप न लषणो जाय॥ ७८॥
मुग्ध लोग भरमाव घणा पूछ भोपा अर बामणा॥ ८४॥
लाग्य घाल्यो माता जाय बालको लियो आगली विस्माय॥ ८५॥
मा बालक दयो निरपाय बालक गति न जाणी जाय।
पाव उलक न टक अहार बालक तण न नाभ पार॥ ८६॥
वारू रूप बोलै सुर बालि भोपा न पूछ ह्व जाणि।
किता जीव मारिया आज मार्या जीव कुण मार्यो काज॥ ८६॥
भोपा कहै ग्यार किया भूत दोष करता राखिया।
सूमर छाला तारा ताहि जीवन बकरी निकली दोय॥ ९५॥ (अगले भाग में)

जाम्भोजी को 'भोपो' के पास ले जाने के यही कारण सुरजनजी ने बताए हैं। उनके अनुसार, जाम्भोजी की पलक नही पडती थी, वे पीठ के बल सोते नही थे, खाते-पीते नही थे, निराहारी थे[1]। इस कारण उनके उपचार हेतु लोहटजी भोपा के पास गए थे। उनके शेष कथन वील्होजी के समान ही हैं[2]।

(ख) एक श्मशान-सेवी तान्त्रिक ब्राह्मण अपनी सिद्धि दिखाया करता था। लोग उसको लाये। लोहटजी बोले-यदि इस बालक के आराम हो जाए, पाँच वक्त भोजन करने लगे, जैसे हम बोलते हैं, वैसे बोलने लगे, तो तुझे बधाई में एक गाय दूँगा। उसने अनेक प्रपंच रचे, ६४ छिद्रों वाला एक घडा और १०८ चौमुखे दीपक कुम्हार से बनवाए। शनि बीतने पर रवि की रात्रि को दीपकों में तेल-बत्ती डालकर जलाना आरम्भ किया किन्तु वे न जले। तब उसने बालक को नहलाना चाहा। इस पर जाम्भोजी ने कहा-झूठ क्या बोलते हो? अभी कुछ देर पहले तो नहलाया था! स्वयं झूठ बोलते हो, तो 'गहल' को क्या आराम करोगे? इस प्रतिवाद की शिकायत लोहटजी से करते हुए 'पाडे' ने कहा-यदि दीपक जल जाएँ, तो मेरे तन्त्र-मन्त्र सब सिद्ध होंगे, अन्यथा नही। इस पर जाम्भोजी बोले-यदि तू मेरा उपचार कर सके तो दीपक जल जाएँगे। उन्होंने चौमुखे दीपक और घडा अलग किया। मिट्टी का घडा बनाया, चौमुखे दीपकों में पानी डाला और दीपक प्रज्वलित हो उठे। यह देख कर, 'पाडे' हक्का-बक्का रह गया, उसका गर्व-गुमान मिट गया। उसने इस 'अगम पुरुष' की महत्ता लोहट-हांसा को बताई। जाम्भोजी ने पाडे को लोहटजी से एक गाय दिला-

---

माभळय भोपा गया ओकाय, ई बालक सूं बोलणो न जाय ॥
परगट पंथ कियो जगि धणी, गुर दिवाण्य मिली गति घणी ॥ १०० ॥
—वील्होजी कथा औतारपात।

१-(क) पलक न फुरक पूठि धर, उन्क न नींद अहार।
नर गुर भेद न जाणई नर दही निरहार ॥ ३ ॥—कथा परसिध।

(ख) सोव नही पूठि धर जोय, धरती अंग न लावे सोय।
नीर पीरि नहि लेहू अहार भूप नींद नही वीहार ॥ १६ ॥—कथा औतार की।

२-(क) लोहट पुत्र हेत करि, लीयो भ्रम्य लगाय।
भोपा का टकसाल्य ग्या दुष आपणों सु णाय ॥ २४ ॥
जदि ता बाल्क को अवतार तिल समाय न लियो अहार।
कमो दुध न थानक धार जीव जाग क्व ण विचार ॥ २६ ॥
दोस दूरि करा जे वीर थानक चुंघ पीव पौरि।
पुत्र सारो करि द्या तोहि कहा वधाई पावा मोहि ॥ २७ ॥
तदि सतगुर बोल सुर वाणि भोपा न समभाव जाणि।
पट काजि क्यों किया अकाज तरा जीव हत्या क्यों आज ॥ ३० ।
सूभर छाली मारी तोहि गरभ्यो जीव निकाल्या दोय।
सतगुर लेप सभ ही जीव मगला जीव पीछाण सीव ॥ ३२ ॥—कथा औतार का।

(ख) पूछ भोपा वामणा विरमोटी वीर तत।
विदियाघर वीरोटिया, चेला होय चालत ॥ ४ ॥
भरम तणी वमावली जागर कर अजाण।
तेर हंति ग्यार कहैं, गुर बोल्ये सुर वाण्य ॥ ६ ॥—कथा परसिध।

बाई[1] और प्रथम सबद कहा[2]। सम्प्रदाय में यह कथा अत्यन्त प्रसिद्ध और प्रचलित है, जिसके कई कारण हैं —

१-बाभण एक कटोज जाण, जाण मन मोटणी वखाण।
वस जाय पुगाणा सौर बीरोटियो समाय और ॥ १०९ ॥
पोर टांक जे जीम भ न सो र चमीजै म्हारो मन।
ज्यों म्हे थोला ऊ बोनाय, पाड ल्यो बधाई गाय ॥ ११२ ॥
घोगटि नाला एग वाहणो, कियो कु भारि पडायो घणो।
घटोगरिणी चोवडडी, कीयो कु भारि पडाई घडी ॥ ११६ ॥
बसदर तस रूई म णाय, व पणि पाण्य मस्हाा उ ण टोय।
पायर वरति माई रिच राति पाण तन मगावें पाणि ॥ ११७ ॥
तल हयो चोपोहिए पाति चोपडो नाला मांहि पाणि।
पाति पाति घगन्र देव दीवा न जग कर इन वय ॥ ११८ ॥
देव कहे गु णि बामण मूढ भतरो मांच थासान कूड।
थोडी सी दा तुडायो थयो तीह न दडु त्याग्यो कह्यो ॥ १२० ॥
कूडो बोल मुखि थायर, गहला मारो विणि विधि कर ॥ १२१ ॥
देव कहे तू गुणि पाडिया तल र रूई न जगे दीया।
तल न लाग मन न पुर गहला मारो विणि विधि कर ॥ १२५ ॥
पाडे लोहट न पूछाय और बाम्ब ऊ क्यों बोलाय।
आपर कहू अपूठो दीय तिह आपर को उत्तर दीय ॥ १२६ ॥
लोहट कहे म्हा आरति घणी, चिंता न लाभ बालक तणी ॥
तिह कारणि तू थाप्यो जाय सो यू पाडे गरी न थाय ॥ १२७ ॥
पाडे कहै जे दीवा जग, तल मन मोह म्हारा लग।
दीवा जग न दीस लाय म्हारो मन न लाग थाय ॥ १२८ ॥
देव कहे दीवा जग मारो करिस्य मोहि।
दीवा सजल जगायस्यों पाड यमय न होय ॥ १२९ ॥
चोपडी नाला मेल्ह्या दूरि मल्य माटी भाणी हजूरि।
भाणी माटी माडयो घाट, चोपडी नाला पाणी घाति ॥ १३० ॥
बसन्र न दीहू हुवो जग्य दीवा सबदग हुवो।
दीठो किसन चिल्त परवाण गरज गल्या पडे का माण ॥ १३१ ॥
लोहट घोपो मन निवारि मिनप न पूछो इण ससारि।
हासा मन्य उ णी मत जाह अगम पुरिष अवतरियो आय ॥ १३३ ॥
देवजी लोहट न कहे कियो बोल सभालि।
सक्लपि उदकि न रापिय हेव गाय दियो थे टालि ॥ १३४ ॥
पाच टाक तोहि भ न जीमाय तो बाभण न दीज गाय ॥ १३५ ॥
कारी तो कम सारी होय पाडे दोस न लोज कोय ॥
इह पाडे का भाव विचारा जाण्यों वालक होयसी सारा ॥ १३६ ॥
असो भाव करि आवै आस सो क्यो करि मल्हिय निरास ? । १३७ ॥
—वील्होजी कथा औतारपात।

२-(क) घेत विपर घरि धारलो सिध भेटियो समाध।
गुर कहै गति समली सतगुर सबद अग्याध ॥ १३ ॥ सुरजनजी, कथा परसिध ॥
(ख) सतगुर पिंडत न समभाय, मसकति तेरी दियो मगाय।
तदि हरि लोहट नवट ह्वारि, दया रूप होय सबद उचारि ॥ ५० ॥
—सुरजनजी कथा औतार की।

१–'बाललीला'-काल की यह अंतिम महत्त्वपूर्ण घटना है।

२–जाम्भोजी ने प्रथम 'सबद' इसी अवसर पर कहा।

३–इसके पश्चात् वे जंगल में पशु चराने लगे थे और

४–उनके उपचार के सब प्रयास इसके पश्चात् छोड़ दिए गए थे।

जाम्भोजी के जीवन के विषय में लिखने वाले प्रायः सभी लेखकों ने प्रकारान्तर से इस घटना का उल्लेख किया है। सुरजनजी इसकी पुष्टि करते हैं। उनके अनुसार यह पण्डित नागोर का है[1]। "सबदवाणी" के गद्य और पद्य प्रसंगों में भी इसका उल्लेख है[2]।

जाम्भोजी की बाल्यावस्था विषयक गलत धारणाओं का निरसन उपर्युक्त बातों और घटनाओं का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इनसे जाम्भोजी के सम्बन्ध में प्रचलित कति-

---

१–(क) नगरे ग्राम वारोटियो, लोहट ल्यावण जाय।
मरम्या भेद न जाणई, हृदय न आवै दाय ॥ ७ ॥
आवै रिजक उमंद करि, तल बाति करि त्यार।
विपर जगावै बासदे, करज सिरजण हार ॥ ८ ॥
काची माटी कारबी, छलिया जल्हर छाण्य।
विप्र वमन्दरि चादिणो, जगिया जेह परवाण्य ॥ ११ ॥–कथा परसिध

(ख) पिंडत एक बसै नागोर, तिस कूं पिंडत पूछ और।
नाम सु ण सुणाव लोय, बालक मारो करिसी सोय ॥ ३४ ॥
अठोतरि दीवा उतराय, करवा चौमटि नाल कराय।
बमन्दर मा परा कराय, दीतवार को नाव धराय ॥ ३६ ॥
करव जल पुरायो सोय पाडे मंत्र पढे सजोय।
का दा सतगुर न हुवाय दीवा दीज बाति चडाय ॥ ३७ ॥
तल बाति ता जोति न होय, एसो अचंभो सुण्यों न कोय।
जब लग दीवा जोति न होय तो लग मंत्र न लाग कोय ॥ ४० ॥
जदि सतगुर बोल सुरजाण्य पाडे घोम्यो मन न आण्य ॥ ४२ ॥
काची माटी लई मगाय अठोतरि करवा ठहराय ॥ ४५ ॥
ता मा जल पुरायो जास त सतगुर की वदू आस।
बालक हुकम कियो तिणि वार जग्य बसदर हुवो तयार ॥ ४६ ॥
वीरोटिया लोहट ममभाय, अगम पुरिष अवतरियो आय।
देह ता स्याणी नाही कोय जिह की वाच नीरोलरि होय ॥ ४८ ॥
–कथा औतार की।

२–(क) 'काच करव नीर राषो। काची माटी का दीवटीया कराय जा जा हि पाणी घतायो। हुकम सु दीया जगाया। जगाय बाभण न परचो दीपाल्यो। आवि सबदवाणी सतगुर की थी सतगुर वाच। गुरचीन्ह "। –

(ख) चौमुषा बनाय करि पलीतो दियो सवार।
वो जगावे व बुझे बुझत न लाग वार ॥ ४ ॥
सिरै धुन फू फू कर बहुता कर परयान।
भम गए तब बोलिया सुण रे मूढ अजान ॥ ५ ॥
काच करव जल रख्यो सबद जगाया दीप।
बाभण को परचो दियो ऐसो अचरज कीप ॥ ६ ॥
जो बूझ्यो सोई कह्यो अपप लषायो भेव।
धायो सब गमाय के जद सबद कह्यो भम देव ॥ ७ ॥ –प्रति संख्या ११२।

पथ गलत धारणाओं का निराकरण होता है। वे ये हैं —

१–जाम्भोजी हांसा के गर्भ से उत्पन्न नहीं हुए थे, वे उनको कहीं पड़े मिले थे।

२ वे प्रारम्भिक ३४ साल तक (कई लेखकों के अनुसार ७ साल तक) एक शब्द भी नहीं बोले, वे गूंगे थे।

३–उन्होंने प्रथम "सबद" ३४ वर्ष की आयु में कहा था तथा

४–प्रारम्भ में घोर काम करने के कारण उनका नाम प्रारम्भ या प्रचम्भा से 'जम्भ', जम्भा, जाम्भोजी' पड़ा। इन बातों का उल्लेख अधिकांश विभिन्न लेखकों और गजेटियरों में किया गया है[१]। परवर्ती लेखकों ने तो पूर्ववर्ती कथनों का अनुकरण मात्र किया है।

पहली बात के सम्बन्ध में वील्होजी, ऊदोजी, सुरजनजी आदि कवियों और वर्तमान लेखकों के उल्लेख ही पर्याप्त हैं[२] कि जाम्भोजी माता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। ३४ या ७ वर्षों तक मौन रहने वाली बात भी गलत प्रमाणित होती है। किसी भी हजूरी कवि ने ऐसा उल्लेख नहीं किया। वील्होजी की 'कथा औतारपात" से यह निश्चित होता है कि जाम्भोजी के साथ आचार-व्यवहार आदि अन्य समवयस्क बालकों से नितान्त भिन्न कोटि के थे तथा वे सर्वथा निराहारी थे। लोग इस कारण उनको "गहला" कहने लगे थे। इस संबंध में ध्यातव्य है कि –

(क) लोग उनको 'गहला' कहते थे गूंगा नहीं। वहां के आसपास के लोगों की दृष्टि में ही जो अन्ध-विश्वासी, आचार-विचार हीन और मूर्ख थे[३], वे "गहले" थे। कालान्तर में सम्भावनाओं को बढ़ावा देकर उनको "गहले" से 'गूंगा' बना दिया गया।

(ख) वील्होजी की 'कथा औतारपात" के अनुसार, लोहटजी दमगान-सेवी ब्राह्मण को कहते हैं कि यदि बालक पांच वचन भोजन करने लगे और "ज्यों म्हे बोलां ऊं बोलाय" अर्थात जैसे हम बोलते हैं वैसे यह बोलने लगे, तो बधाई में एक गाय दूंगा। तात्पर्य यह है कि बालक बोलता तो था, किन्तु वैसी बातें नहीं करता था जैसी अन्य लोग करते थे। कदाचित् उनकी बात दूसरों की बातों से भिन्न प्रकार की, आत्मज्ञान युक्त होती थी और वे मित-भाषी थे। स्पष्ट है कि वे बोलते थे, मौन नहीं रहते थे और गूंगे तो थे ही नहीं। 'लोग समझते थे कि वे गूंगे हैं, परन्तु वास्तव में वे गूंगे नहीं थे। वे जन्म से ही योगी थे और अपनी अलौकिक स्थिति में मस्त रहते थे'[४]।

(ग) इसी "कथा" में भोपों तथा दमगान-सेवी ब्राह्मण के प्रसंग में जाम्भोजी के बोलने का उल्लेख है। अतः ३४ वर्षों तक मौन रहने की बात तो अलग, वे सात वर्ष तक

१–द्रष्टव्य–अध्याय २ में (२) के अन्तर्गत संख्या ३, १६, २७। सेवादास (कवि संख्या ८०,–"इंदव छंद") के अनुसार हांसा को जाम्भोजी गायों के बाड़े में रोते मिले थे –
नव मास बीता जबू दीप में उजारो भयो, गवन के वार माहे, बाल रोवे आय के।
दुनिया सकल कहे, बाळ प्रभु दीनो तम, हासळदे माय गोद ले गई उठाय कै॥ ४॥

२–द्रष्टव्य–अध्याय २ में (१) के अन्तर्गत–संदर्भ संख्या १, ५, ८, ९, ३३, ४०, ५०, तथा (२) के–संदर्भ संख्या ४४, ५६, ५७ आदि।

३–द्रष्टव्य–वील्होजी कृत "कथा गुगळिये की" तथा अध्याय ३, –सामाजिक स्थिति।

४–योगांक, कल्याण, गोरखपुर, पृष्ठ ८१७, वर्ष १०, संख्या १, आश्विन, संवत १९९२।

भी मौन नही रहे थे। ३४ वर्ष की आयु (संवत १५४२) मे तो उन्होंने विश्नोई सम्प्रदाय की स्थापना की थी, मौन-भग नही किया था, जसा कि "गजेटियर" और "रिपोर्ट" लेखकों ने लिखा है।

"अचम्भे" से "जम्भ", "जाम्भा" नाम पडने की कल्पना भी निराधार है। विशेषण रूप म उनके अनेक कार्यों के लिए "उदवुद" (अद्भुत), "इचरज", "अचभ" आदि शब्दों का प्रयोग साम्प्रदायिक कवियो ने किया है। जहा तक "अचम्भ" शब्द का प्रश्न है, यह विशेषण रूप म उनके नाम जम्भ के साथ प्रयुक्त हुआ है। "अचम्भ जम्भ" के अनेक विशेषण-विशेष्य प्रयोग हुजूरी और परवर्ती कवियों के मिलते है जिनसे स्पष्ट है कि उनका वास्तविक नाम "जम्भ" (जाम्भोजी) ही था[1]।

२-"पाल-चारण"- काल (सवत १५१५ से १५४२)- श्मशान-सेवी ब्राह्मण वाली घटना के पश्चात जाम्भोजी जगल म "पाल" (पशु) चराने लगे। "धोरे" (टीले) पर बठे हुए वे अपनी आज्ञा से ही पशु चराया करते थे। पशु सहज भाव से आते-जाते, खाते-पीते और जाम्भोजी की आज्ञा मानते थे[2]।

(क) धाडवियों से 'सांढें' (ऊटनिया) छुडाना-सबदवाणी के 'प्रसगो' से विदित होता है कि वन म इस प्रकार पशु चराते समय कभी जाम्भोजी ने ग्वालो के कहने पर किसी राव (सम्भवत ऊधरण काहावत) की सांढें (ऊटनियां) "धाडविया" (डाकुओं) से छुडवाई थी। यह देख कर ऊधरण काहावत न जाम्भोजी से चार प्रश्न किए जिनका उत्तर उन्होंने चार "सबद" कह कर दिया[3] (स्वीकृत सबद सख्या २, ३, ४, ५)। ऊधरण काहावत शाखा

१-अध्याय-२ मे (२) के अन्तर्गत, सदर्भ सख्या ८२, इन पक्तियों के लेखक का 'पृथ्वीनाथ और उनकी रचनाएँ' निबन्ध।

२-(क) विणि रोटी विणि लाकडी, विणि पाणी विणि पाल।
परचौ पसु परेखा, थल्य बठो प्रतपाळ ॥ १७ ॥
हुकमे आव हुकम ज्य हुकम्य चराव बाल।
जगत्य धणि जीवा धणी, लघियो लील भ्रुवाल ॥ १८ ॥
-सुरजनजी, कथा परसिध।

(ख) गाय भस्य छाली सलवार, बन मा चर कर निति सार।
भूपा न भ न दीय अहार ध्यास्या न जल कर तयार ॥ ५६ ॥
धरि हुकमै हुव चुध जदि आय, नाहर चोर सताव नाहि।
हुकमे आव हुकमे जाय, वाल गुवाल रहैं सम्य आय ॥ ५७ ॥
-सुरजनजी, कथा- औतार की।

(ग) हरि औलख्यो जीवा मन माहि। सहजे आव सहजे जाय।
सहजे पीव सहजे चर। करताजी रो कहियो कर ॥ २१ ॥ -कथा बाळलीला।

३-एक सम देवजी थलिया राज कर। राव रा वरग धाडविये लीया। देवजी सू सलबा आय नीसरया। देव वन पाल रमे छा जका कह्यो-रावजी को साढि छुडाव तो तू सति दव। देवजी कहै-थे मेडी कावा सगला असवार हुवो। असवार हुवा। देवजी कहि सगला ललकार कीवी। धाडविया की नजरि कटक आयो। साढे छोडे न्हाटा। ग्वारी साढ्या लार छा तवा वाहर घाती। वाहरुवे टोला चरता दीठा। गुवालिया न कहै-रे मरदा साढ्या क छुडाई ? "म्हार साथे थो देवजी छ अणि छुटाई। और उमराव (शेषांश आगे देखें)

राठोड राजपूत थे जो मडौर मे राव का हाजी से चली थी। इस घटना का उल्लेख केसोजी ने भी किया है[1]।

(ख) राठोड राव दूदा जोधावत का मिलना—केसोजी के अनुसार, इस घटना के पश्चात वे पीपासर गए, जहा के कुएँ पर जोधावत राव दूदा ने भी डेरा कर रखा था। वहा वे अपनी आज्ञा से ही पशुओ को पानी पिलाने लगे। उन्होने बकरियो को पानी पीने का आदेश दिया, जिसे सुनकर वे तो पानी पीने के लिए उठी किन्तु बकरे बठे रहे। यह देखकर राव दूदा ने उनको 'आदेश' किया और अपनी इच्छा-पूर्ति की प्रार्थना की। वे मेडते से निकाल दिए गए थे और उसे पुन हस्तगत करना चाहते थे। जाम्भोजी ने उनको काठ-मूठ का तलवार और मेडता-प्राप्ति का आशीर्वाद दिया[2]। इसका उल्लेख (क) ऊदोजी नण, (ख) सुरजनजी, (ग) मुकनजी, (घ) परमानदजी, (ङ) सेवादास, (च) साकलजी आदि विष्णोई कवियो[3] के अतिरिक्त राजपूताना रिपोर्ट और जोधपुर स्टेट गजेटियर म भी सविस्तर

चढ्या ऊभा, के उतरया। उथरण का हावल कर जोग अरज कीवी—"देवजी! थाहर पेट पूठि दीस नही, छाया दीस नही आप कु ण बालक छो? श्री भाभाजी उवाच—"मोर छाया न माया' उथरण का हावल कहै—'राजि री उमरि थोडी दीस छ, बात बडी दीनी करो छो' 'भाभाजी! थे आप कु ण रो करो छो'? —प्रति सख्या २०१ से। (प्रति सख्या ११२ म यही प्रसग पद्य मे है)।

१—भोला ता टोला लिया, वन मा पहुता जाय।
 बालक कहै सुबर सुणो, मतगुर त्योह छुडाय ॥३७॥
 कर हाक कर तलवार, गेडा काम हुवा असवार।
 जाण न पाव कह्यो सुणाय, हजार लाप दल पहुता जाय ॥ ३८ ॥
 छाडया अग गया सै हास, बालक ऊभा दीस पास।
 बाहरू मन रलियाल्या थया, काठी नर लीवी साढ छुडाय ॥ ४० ॥
 बालक कहै सुणो एक बात अचभेसर कीवी एक घात।
 बाहरू माय विलग्या पाय वा जाण्यो तिहू लोकां राय ॥ ४१ ॥—कथा बाललीला।
२—पसुवा पाव पाल्ता, रामत रम ज रीत।
 पीपासर गोमद गया, पाल्तिया सू प्रीत ॥ ५० ॥
 निरजणहार कह्यो सुणाय, अजिया उठो पीवो जाय।
 अनि छाली हुती एकठी, अपरम्पर र कहिय उठी ॥ ५४ ॥
 पसव विमन पिछाणियो, भगवत भगव वेस।
 बठ्या रहिया बाकरा, दूदो कर आदेस ॥ ५५ ॥
 कर जोड दूदाजी कही, दूदैजी ओलखिया दई ॥ ५७ ॥
 मो अपरम्पर पूरी आस, पारब्रह्म कीज परगास।
 भाग्य कहै करी पाछो मतो, मया करि दीनौ मेडतो ॥ ५८ ॥
 जम्भेसर दगा जुगति, हरखी न आव हार।
 काठ मू ठि करता कर तब सूपी तरवार ॥ ६० ॥—केसोजी, कथा बाललीला।
३—(क) दूसरी आरता पीपासर आयै, दूदजी न प्रभु परचो दिखाए ॥ २ ॥
 (ख) दूद न गए मेल्हो परच पम लहन।
 मावा बीज मयक ज्यू दिन दिन कला चढ त ॥ २१ ॥—कथा परगिध।
 (ग) दूद मन मान वचन मान, निरन्तरी न आय तुठो।
 पीपासर पायो अनत सपायो उनरि पुवग अरज कियो। (क्रमश आगे देखें)

किया गया है[1]। "जोधपुर गजेटियर" मे पीपासर के स्थान पर "हरसर" गाव भूल से लिखा गया है। "रिपोर्ट" म मुसलमानो द्वारा मेंडता लिए जाने पर, सवत् १५४२ मे राव दूदा का वहा स भागना और इसी सवत मे उनका पीपासर के कुएँ पर जाम्भोजी से प्रथम बार मिलना लिखा है, जो गलत है। इस सवत् मे मडता पर मुसलमानो के किसी आक्रमण का उल्लेख इतिहास-ग्रन्थो मे नहीं मिलता। वस्तुस्थिति यह है कि इस समय तक तो राठौडो न मरुभूमि के विभिन्न प्रदेशो पर अपना शासन पूर्णरूपेण जमा लिया था। जोधपुर मे जोधाजी, बीकानेर म बीकाजी, छापर द्रोणपुर म बीदाजी तथा मेडता मे राव दूदाजी ने अपना-अपना शासन स्थापित कर रखा था। राव दूदा के दो युद्ध मुसलमानो के साथ हुए थे-सिरिखाखान और मल्लूखान के साथ और दोनो ही इस सवत के बाद हुए थे। दूसरी ओर, इस सवत म तो सम्भरायल पर जाम्भोजी ने सम्प्रदाय का प्रवत्तन किया था तथा इससे पूर्व ही वे इस "थल" पर रहने लगे थे (विशेष द्रष्टव्य-वील्होजी कृत "कथा गुगलिय की")। इस घटना का समय विक्रम सवत १५१६ होना चाहिए। हरिनन्द (कवि सख्या-७६) नामक बिश्नोई कवि ने एक "हरजस" मे लिखा है कि वरसिंह द्वारा दिए गए "देसौटे" (देश-निकाल) के समय राव दूदा को पीपासर मे जाम्भोजी ने उक्त आशीर्वाद दिया था —

> प्रथम प्रवाड दूदो मेडतियो, पीपासर परचायो।
> वरसग जु देसौटो दीन्हो, सतगुर पाछो पठायो॥ १॥

हीरानन्द (कवि सख्या-८६) ने अपने "हिंडोलणो" (परिशिष्ट मे उद्धृत) मे भी इसका उल्लेख किया है। बाँकीदास ने इस बात की पुष्टि की है कि वरसिंह ने दूदा को 'देसौटा' दिया था[2]। यह "देसौटा" सवत १५१८[3] के पश्चात और सवत् १५२५ (सन् १४६८)[4]

रूक करारे दान मुरारे रिध दीनी हरि राज दियो॥ ६॥-छद रोमकद।

(घ) हुक्म चराव पाल, हुकमे पाणी पीजिय।
बाला सगि जग बाप, कहियो बाला कीजिय।
कहियो बाला कीजिय, न कियो खेल करतार।
सोहटजी न चिरत दिखायो, मेह अखडी धार।
खेत निपायो साझ पहलू, उधरण परचो सार।
दूद न गढ मेडतो, हुक्म चराव पाल॥ ४॥-साखी।

(ङ) पीपासर वास कुप जल उपरा आन दूदजी की फौज परी है॥ ११॥
दूदोजी आप तुरग चढे जव चावका मार नर घोरो पर है।
पाडो वगस जद मेडतो दीनो दूदो जमेसर नावे घर है॥ १२॥-इन्दव छद।

(च) सुपेख्यो स्वामी सोवनधार। नमो निजनाथ जको निराकार।
नरापति निरप नर मन राव। पिछाण्यो दूद परस्या पाव॥ १॥-परची।

१-द्रष्टव्य-अध्याय २ मे (२) के अन्तगत-सदभ सख्या ३ तथा ३१।
२-बाँकीदास री ख्यात, पृष्ठ ५७, वार्ता-६३६ सन १९५६।
३-आसोपा मारवाड का मूल इतिहास पृष्ठ १०७।
४-डा० कलाचन्द जैन एन्शियन्ट सिटीज आफ राजस्थान, मेन्ता-'दिस प्लेस वाज टेकन ओवे इन १४६८ ए० डी० बाई दूनाजा, दि सन आफ राव जोधाजी' अप्रकाशित शोध, प्रबन्ध, राज० विश्वविद्यालय पुस्त०, जयपुर।

के बीच ही होना चाहिए। महलाणा गाव के श्री नारायणजी के पुत्र श्री जोगीराज भाट की वही मे, "सवत् १५१९ मे दूदाजी न परचो दियो" लिखा है, जो ठीक प्रतीत होता है। सम्प्रदाय मे भी यह बात प्रसिद्ध है कि ११ वर्ष की आयु म (१५०८+११) जाम्भोजी ने दूदाजी को "परचा" दिया था। स्वामी ब्रह्मानन्दजी भी इसका अनुमोदन करते हैं[1]।

(ग) गुरु–जाम्भोजी की शिक्षा-दीक्षा और गुरु के सम्बन्ध म विशेष पता नही चलता। 'सबदवाणी' म एक स्थल पर 'गोरख गरू अपारा" (९३ १९) कह कर उन्होने ससम्मान गोरखनाथ का उल्लेख किया है किन्तु इससे यह प्रकट नहीं होता कि वे गोरख को गुरु मानते ह। पुराने साम्प्रदायिक साहित्य म एतद् विषयक कोई सकेत नही मिलते। वतमान लेखकों म स्वामी ईश्वरानन्दजी[2], ब्रह्मानन्दजी[3], श्रीरामदासजी[4], मुशी रामलाल[5], कामता प्रसाद गुप्त[6], स्वामी सच्चिदानन्दजी[7] आदि के अनुसार जाम्भोजी का १६ वर्ष की आयु म जगल म गोरखनाथ ने गुरु-दीक्षा दी थी। ऐतिहासिक दृष्टि से यह बात प्रमाणित नहीं की जा सकती क्योंकि सुप्रसिद्ध गोरखनाथ तो जाम्भोजी से कई सौ वर्ष पूर्व हुए थे। सम्भवत गोरखनाथ उनके मनसा गुरु रहे हो। वे बहुश्रुत और अनुभव-ज्ञानी थे।

(घ) राव जोधाजी को बरीसाल नगाडा देना–सवत् १५२६ म जाम्भोजी ने राठौड राव जोधाजी को वरीसाल नगाडा दिया था। दुरगदास (सवत् १६००-१६८०, द्रष्टव्य-कवि सख्या ६३) ने एक हरजस म "कमधज राजा कारण, बरस अठारा देवि" कह कर इसका सकेत किया है। राव जोधाजी और उनके पुत्र बीकाजी जाम्भोजी क सम्पर्क म आए थ[8]। इतिहास-ग्रन्थो से पता चलता है कि सवत १५४४ मे राव जोधाजी न राव

१–विश्नोई धर्म विवेक पृष्ठ २४ सवत १९७१।
२–जम्भसागर,–'विज्ञापन' पृष्ठ ४३६, सवत् १९४९।
३–श्री जम्भदेव चरित्र भानु, पृष्ठ ३, पाद टिप्पणी पृष्ठ ४०
तथा विश्नोई धर्म विवेक, पृष्ठ २४।
४–जम्भदेव लघु चरित्र, पृष्ठ २९-३०, सवत १९९९।
५–विश्नोई धर्म वेदोक्त, पृष्ठ १८० सवत १९७५।
६–श्री विष्णु धर्म प्रकाश, पृष्ठ ७२–७३, कालपी, सन् १९२०।
७–श्री जम्भगीता, भूमिका, पृष्ठ ३, सवत् १९८५।
८–(क) इमरदर औल्पे, परचि लागो पहली परि।
सप सम्पो मारिपा, किया सुर भामेसरि।
मक्मीरा काजिया, हुवा राजी गुर भ्रम।
तिमर लिग वानरा, प्राण छन पंग लग।
मातिन जोध दूद मेल्त, माग राग मिधारिया।
जतमी भेट जगत गुर, जीव मीधार उधारिया॥ १२३॥–सुरजनजी, छप्पय।
(ख) परमान जा (कवि सख्या ८८) के ये कथन–
(१) जाधो बीको मू ग जनमी, बीकम प्रगट ताम।
थापन अक्र परपिया, माग्गे धाम मुकाम॥ ४॥–साखी।
(२) रायमल वरगत मामाल्यिा न दूदो मातिन राव।
वाजो वाजो हमीर वाघो जोध दवात्म जाव॥ ३॥–साखी।
(३) 'राजपा मेल्वाल' का सूची म भी दोनों के नाम हैं,
–प्रति सख्या २०१, पानियो २९९–३०१।

बीकाजी से एक तो लाडणू का परगना मांगा था और दूसरे जोधपुर के भाइयों से राज्य के लिए दावा न करने का वचन। बीकाजी ने इन बातों को स्वीकार करते हुए बदले में तख्त, छत्र आदि पूजनीक वस्तुएँ मांगी जिनको जोधाजी ने जोधपुर पहुंच कर भेजने का वचन दिया था। जोधाजी की मृत्यु के पश्चात् ये वस्तुएँ बीकाजी को जोधपुर पर चढ़ाई करके प्राप्त करनी पड़ी थी[1]। इनमें जाम्भोजी का दिया हुआ वरीसाल नगाड़ा भी एक है। वर्ष में दो बार-दशहरे और दीवाली के दिन बीकानेर नरेश स्वयं इनका पूजन करते रहे हैं[2]। इस संदर्भ में पाउलेट ने (बीकानेर स्टेट गजेटियर, पृष्ठ ९, पादटिप्पणी, बीकानेर, सन् १९३२) जाम्भोजी को 'याचन' बताया है, जो गलत है। वर्तमान में यह नगाड़ा बीकानेर के जूनागढ़ में सुरक्षित है। दुरगदास ने "कमधज राजा" निस्संदेह राव जोधोजी के लिए लिखा है, जिनके लिए १८ साल की आयु (संवत् १५२६) में गुरु ने "प्रवाडा" किया। "प्रवाडा" का तात्पर्य यहां विशिष्ट कार्य से है। अनेक साम्प्रदायिक उल्लेखों और वार्ता विपयक राव दूदा वाली घटना के संदर्भ में विचार करने से यह "प्रवाडा" उक्त नगाड़ा प्रदान करना ही प्रतीत होता है। इससे जाम्भोजी की प्रसिद्धि, सिद्धि और राठौड़-राज-घरानों में मान्यता का भलीभांति पता चलता है।

जाम्भोजी और उनके पश्चात् भी यह मान्यता बढ़ती ही गई जिसकी पुष्टि एक अन्य बात में भी होती है। सम्प्रदाय में खेजड़ा अत्यन्त पवित्र माना जाता है और उसकी रक्षा की जाती है। इसके अतिरिक्त हरे वृक्ष काटने की मनाही है। यह सम्प्रदाय के २९ धर्मनियमों में से एक है। जाम्भोजी के एतद् विषयक भाव को हजूरी कवि ऊदोजी नैण (देखें-कवि संख्या ३७) ने धर्म-नियम सम्बन्धी कवित्त में इस प्रकार व्यक्त किया है —

(क) करै रूंख प्रतिपाल, खेजड़ा रखत रखावै।

(ख) जीव दया पालणी, रूंख लीलो नहीं घावै।

इसको गुरुआज्ञा मान कर धर्म-रक्षा भाव से अनेक विष्णोई स्त्री-पुरुषों ने खेजड़ों और हरे वृक्षों के काटे जाने पर प्रतिवाद स्वरूप स्वेच्छा से प्राण दिए हैं जिसके अनेक उदाहरण मिलते हैं (द्रष्टव्य-'विष्णोई सम्प्रदाय' तथा 'विष्णोई-साहित्य' नामक अध्याय)। बीकानेर के राजकीय झण्डे में 'मोटो' (मूलमन्त्र) के सिर पर खेजड़े का वृक्ष रखा गया है[3]। यह बीकानेर के राजघराने में कालान्तर में हुई जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय की मान्यता का भी सूचक है।

१-(क) दि हाउस आफ बीकानेर, पत्र २१३, पृष्ठ ११०, बीकानेर, सन् १९०३।
(ख) बीकानेर गोल्डन जुबली (सन १८८७-१९३७) (अंग्रेजी), बीकानेर राज्य प्रकाशन।

२-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ १०६, पादटिप्पणी।

३-(क) श्री जगदीशसिंह गहलोत मारवाड़ राज्य का इतिहास, पृष्ठ ५४६, जोधपुर, सन १९२५।
(ख) मुन्शी देवीप्रसाद रजवाड़ों के झंडे और राजचिह्न। विद्याभूषण-ग्रन्थ-संग्रह सूची, पृष्ठ १२२, क्रमांक २९? सन १९६१।

(ड) जाम्भोजी का ब्रह्मचारी रहने का संकल्प लोहट हांसा का स्वर्गवास—

विवाह की बात उठने पर जाम्भोजी ने माता पिता को आजीवन ब्रह्मचारी रहने का अपना पूर्व निश्चय बताया। उनके इस दृढ़ संकल्प को देख कर कालान्तर में वे भी मान गए। संवत् १५४० में चैत सुदि नवमी को लोहटजी का तथा इसके पाँच मास पश्चात् इसी संवत् के भादों की पूर्णिमा को हांसा का स्वर्गवास हुआ[1]। जाम्भोजी अपनी समस्त सम्पत्ति त्याग कर समराथल पर रहने लगे।

३ सम्प्रदाय-प्रवर्तन (संवत् १५४२)-संवत् १५४२ में राजस्थान में भीषण अकाल पड़ा। विष्णोई कवियों[2] के अतिरिक्त इसका उल्लेख कविराजा सूर्यमल्ल मिश्रण और चारण रामनाथ रत्नू ने भी किया[3] है। जाम्भोजी इससे पूर्व ही समराथल पर रहने लगे[4] थे। उन्होंने अकाल-ग्रस्त लोगों की अन्न-धन प्राप्ति अनेक प्रकार से सहायता की। इसी साल में कार्तिक बदि अष्टमी को समराथल पर, स्नान कर हाथ में माला और मुख से जप करते हुए[5] उन्होंने कलश-स्थापन कर विष्णोई सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और लोगों को ज्ञानोपदेश दिया[6]। इसको सुनकर पूल्होजी के मन में उत्पन्न शंका का समाधान जाम्भोजी ने

१-स्वामी ब्रह्मानन्दजी श्री जम्भदेव चरित्र भानु, पृष्ठ ४१ से ४३।

२-(क) संमत कहाव पनरासयो, कुसमू सवल बयालै पयो।
जीवा जू णि सताई भूप, गउवा मिनखा इधको दुख ॥
—वील्होजी, कथा गुगलिये की।

(ख) काल बयालो कल्म गति, परत हीण पकान।
साह परचा भजिसी, पति राय प्रतपाल ॥ २२ ॥
—सुरजनजी, कथा परसिध आदि।

३-(क) वंशभास्कर तीसरा भाग, पृष्ठ १९६४-६५ छंद ३१ ,७,
जोधपुर, संवत् १९५६।

(ख) इतिहास राजस्थान, छठा अध्याय पृष्ठ २६१ संवत् १९४८।

४-जगत गरू जंगल बस थासो भक्ति बणाह।
भेद प्रगास भाव करि गुर तारिसी घणाह ॥ १ ॥
जगल थल्य देवजी रहै जे को पूछ तो गुर कहै।
पूछ नहीं लोग गिवार, सतगुर तणी न जाणे सार ॥ ६ ॥—वील्होजी कथा गुगलिये की।

५-करि माला मुख जाप करि सोह मेटियो कुधान।
पहली कलम परठियो, सझ्य ब्रह्मसाण सिनान ॥ ४८ ॥—सुरजनजी, कथा परसिध।

६-गुर उपदेस दीयो ते सुण्या। गर परगट आप गु ए घणा।
पहली परि फुरमाव दया। विसन नाव जपो सुचि कया ॥ ८२ ॥
क्रोध माण माया क्लोम। गुर वरज्या पाप का थोम।
सतगुर फरमाया भ्रम न्यारि। दान सील तप भाव विचारि ॥ ८३ ॥
अ नहट व्रत मानियो घरो। मांपियो माच मूठ परहरो।
वरज्या गरु कुसंग कुपात। जा त जीवको दोजकि जात ॥ ८४ ॥
काया निरमल जल्य माजणे। वाचा नमल मति वोलणे।
मन निरमलो ग्यान सू होय। पाचू इंद्री रहै समोय ॥ ८५ ॥
गुर निरमळ निकलंक गुर पर उपगार करत।
वील्ह कहै गुर दाखव्यो, मुकति खत को पथ ॥ ८६ ॥—वील्होजी, कथा गुगलिये का।

किया। तब सर्वप्रथम वे ही सम्प्रदाय में दीक्षित हुए[1]। लोगों को विश्णोई बनाने का कार्य इस अष्टमी से अमावस्या तक निरंतर चलता रहा। सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन और उसकी पृष्ठभूमि के सम्यक परिचय के लिये वील्होजी कृत "कथा गुगलिये की", "कथा पूल्होजी की", सुरजनजी का "कथा औतार की" आदि रचनाएं अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं जिनमें एतद् विषयक घटनाओं का सविस्तर वर्णन किया गया है। संवत् १५४२ में सम्प्रदाय-प्रवर्त्तन का उल्लेख अनेक कवियों ने किया है[2], केवल परमानन्दजी का कथन कुछ भिन्न है। उनके अनुसार, संवत १५४२ में जाम्भोजी ने अकाल पीड़ितों की सहायता की और संवत १५४३ के कार्तिक वदि अष्टमी को "विसनपथ" प्रकट किया[3]। इसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। वील्होजी ने लिखा है कि चार महीने सर्दी के बीतने के बाद ग्रीष्मऋतु आई। फिर सावन को निकट आता जान कर लोगों ने सिन्ध से बीज लाने का विचार किया[4]। सुरजनजी का कथन है कि जाम्भोजी ने आठ मास-नवें महीने आषाढ लगने तक अन्न दिया, उसके बाद दुष्काल दूर

१-(क) भाभेसर वाचा झूठ न होय। गुर का कह्यौ करो सोह कोय।
पुल्हे दीही साखि बताय। सोह को लागो गुर के पाय॥
पतराजा की परतीत ता। जाण्यो पूरब अंक।
पूल्हे की परतीत ता। अब पंथ चल्यो निसंक॥ ९५॥
गिणती कोय न जाणही। चाल्यो पंथ अपार।
पुल्हे की परतीत तें सतगुर वाचा सार॥ ९६। -सुरजनजी, कथा औतार की।
(ख) मैं मुरलोके सभली हुवे मिरजणहार॥
पहली पूल्ह परचियो, हरि पंथ चालणहार॥ ४७॥-सुरजनजी, कथा परमिध।
२-(क) का बयाळो कहत सही, अन्न दे जीव उबारिया।
कातिग वदि हरि कल्स थाप्यो, सतगुर जुगि जुगि तारिया।
सतगुर जुगि तरण तारण, अंम धारा कलिजुगे।
सुरताण राण वर्पाणि सुर नर परचि गुर लागा पगे।
अ यियार घर मा सूर ऊगो तीनि तत तावर घटयो।
कातिग वदि हरि कल्स थाप्यो, पंथ बयाले परगटयो॥ २॥ सुरजनजी, साखी।
(ख) समत बयाले माह काती वद कळस थप्यो,
मुक्ति को बुहार कीनो माची गुर जानिय॥ १८॥-सेवादास।
(ग) प्रति संख्या १६३, जम्भसार, प्रकरण ८,-साहबरामजी कृत।
३-(क)-परगट कीयो पंथ, बयाळ मा अन्न अपियो।
तयाळ कार्तिक मास, थिरनामी कलस थरपियो।
थिरनामी कल्स थरपियो, न प्रचिया सुरग देधि।
पहली पूल्ह परचियो, आलप्यो अलेखि।
ज्यों मनी माह घ्रत काढ्यो, सत सारग मथि।
परमाणद पूर धणी, प्रगट कीयो पंथ॥ ज्यारे चक परचाविया॥५॥३॥-साखी।
(ख) "समत १५४३ काती वदे आठम्य पहर दीन चडता कल्स थपना कीवी। ज्यारे चक मा परमोध कीवो। वीसन पंथ कायम कीयो'।-'साका' प्रति संख्या २०१।
४-च्यारि महीना सियाले गयो। ताती रुति उन्हाले आयो।
दस मतो कीयो लोकाह। नादो ऊठ बोसाहो जाह॥ ३१॥
मतो उपायो सिंघ को। किराव लियावा मोलि।
आव सावण ढूकडो। करा हलां को सूर॥ ३२॥-कथा गुगलिय की।

हो गया[१]। तात्पर्य यह है कि कार्तिक से ज्येष्ठ मास तक अन्न दिया गया। आषाढ के पश्चात् कार्तिक वदि में कलश-स्थापना की गई और संवत् १५४२ का था। स्पष्ट है कि ये दोनों कवि संवत् की गणना कार्तिक सुदि से करते हैं और परमानन्दजी चत्रादि से। राजस्थान में संवत का प्रारम्भ श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक और चत्रादि से माना जाता रहा है[२]। वील्हाजी ने 'वरस पांच बावीस पाल एता विन चारी" कह कर संवत् १५४२ का ही संकेत किया है। आधुनिक काल के सभी लेखक इसका समर्थन करते ही हैं।

सम्प्रदाय-प्रवर्तन के पश्चात जाम्भोजी की कीर्ति दूर-दूर तक फल गई। छोटी बडी सभी जातियां, वर्गों और पेशों के लोग अनेक कारणों से उनके पास आने लगे।

४-ज्ञानोपदेश-काल (संवत १५४२-१५९३)-संवत् १५४२ के बाद जाम्भोजी के जीवन संबंधी घटनाओं का क्रमबद्ध उल्लेख तो नहीं मिलता किन्तु साम्प्रदायिक साहित्य से इस सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश पडता है। उनके सम्पर्क में अनेक प्रकार के लोगों के आने के कतिपय प्रधान कारण ये थे —(१) उनका महिमामय व्यक्तित्व, (२) परोपकारी वृत्ति, (३) ज्ञानोपदेश सुन कर, (४) जिज्ञासा और शंका-समाधान हेतु, (५) सिद्धिपरिचय के लिये, (६) अन्य लोगों को अनुयायी बनते देख कर, (७) सम्प्रदाय को श्रेष्ठ समझकर, (८) काय विशेष की सिद्धि के निमित्त आदि। "सबदवाणी"-कथन तथा सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार और ह्दय की दृष्टि से जाम्भोजी का यह समय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था।

कालक्रम की दृष्टि से दो पक्ष जिन इतिहास या सम्प्रदाय प्रसिद्ध व्यक्तियों से जाम्भोजी या उनके अनुयायियों का सम्पर्क या मिलना रहा, उनसे सम्बन्धित बातों और घटनाओं का काल निर्धारण किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य प्रसिद्ध और सामान्य व्यक्ति भी किसी न किसी कारणवश उनसे प्रभावित होकर सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे। उनमें सम्बन्धित जाम्भोजी की जीवन-घटनाओं का विवरण कालक्रम से दिया जाना सम्भव नहीं है। मोटे रूप से एसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि वे इस दीर्घ काल में किसी न किसी समय उनके सम्पर्क में आए थे। इस प्रकार एतिहासिक दृष्टि से जाम्भोजी के इस जीवनकाल के दो पक्ष दिखाई देते हैं —

(क) वह-जिससे सम्बन्धित घटनाओं के काल का निश्चय या अनुमान किया जा सकता है,

(ख) वह-जिससे सम्बन्धित अनेक स्त्री-पुरुषों और घटनाओं का काल निर्धारण नहीं किया जा सकता।

आगे इस आधार से जाम्भोजी का जीवनवृत्त दिया जा रहा है।

(क) घटनाएँ या बातें जिनका काल लगभग निश्चित है -

(१)-ऊदोजी नण और कुलचन्दराय अग्रवाल (कवि संख्या ३७, ४१)-सबदवाणी के

१-(क) आठ मास इकातर। आणो अन न अमग ॥ ३० ॥
वीतो जेठ असाढ पप। इन मया आदेस ॥ ३३ ॥-कथा परसिध ॥
(ख) मेरी वाचा भग न होय। देस्यों अन नव लग तोहि ॥ ६२ ॥
जदि आग आयो वरसाल। वूठो मेह घट्यो जदि काल ॥ ७२ ॥-कथा औतार की।

२-श्यामलदास वीरविनोद, प्रथम भाग, पृष्ठ ११९ तथा द्वितीय भाग "भूमिका" आदि।

"प्रसगो"[1] तथा अन्य रचनाओं मे ऊदोजी नए का उल्लेख आया है। कुलचन्दजी की जमात के साथ सम्भराथळ पर जाकर वे जाम्भोजी के शिष्य हुए थे। प्रधान कारण यह था कि जिस देवी के वे भोपे थे वह मोक्ष प्रदान करने मे असमर्थ थी। जाम्भोजी ने एक "सबद" (सख्या ६६) कह कर उनको ज्ञानोपदेश दिया था। ऊदोजी नए बहुत बडे और प्रसिद्ध कवि हुए हैं। तेजोजी के पश्चात सम्प्रदाय के व्याख्याता व ही विशेष रूप से मान गये थे। दोना सवत १५४५-५० के आसपास जाम्भोजी से मिले थे। (विशेष द्रष्टव्य-कवि सख्या ३७ और ४१)।

२-नेतसी सोलकी, मल्लूखा, राव सातल-केसोजी की "कथा मेडते की" तथा सबदवाणी के गद्य-पद्य "प्रसगो" म अजमेर के सूबेदार मल्लूखा से नेतसी सोलकी को जाम्भोजी द्वारा छुड़वाये जाने का सविस्तर वर्णन है[2]। इस अवसर पर मल्लूखा को समझाने के निमित्त कतिपय "सबद" कहने का भी उल्लेख मिलता है (सबद सख्या ६४, ६७, ६८ और

१- 'मागळोद जमाती आया। ऊदो नए देवी को भोपौ कहै-जमातिया, इह महमाई देवी न पूजि, पाछा जावौ। देव कर छ सो देवी करिसि। बीसनाई कहै-देवी सुरग देसी? देवी ऊद क घटि आय बोली-सुरगा मा क्योइ नही। सुरगा मा सुरग मटामटि छ, पणि मेर नही। जमातिया साथी ऊदो देवजी क हजूरि आयौ। विसनोइ हुवौ। ऊनै कहै-देवजी, कहौ तो देवी का गीत गाऊ। श्री भाभोजी सबद कहैं "बीसन बीसन"। -प्रति सख्या २०१।

—पद्य-प्रसग के लिए द्रष्टव्य-प्रति सख्या ११२, पत्र १६, १७।

२-"तोड सोल्पी राज कर नेतसी। जिए नू चारए गीत कह्या। कूडा बिडदाव घणा दाहा। महलूखान निवाब अजमेर क थाए। जिसि सुण्या। मन मा अहकार कियौ। चढि अर तोने मार्यौ। बद कीवी। नेतसी न पकड्यौ। अजमेर आण्यौं। चारए कना सौं उलटा गीत कहाया। नेतसी राटोडा ने ओठी मेल्हया। मामा कागद बाच्या। जोधपुर टीक सातलि साथ भेळो कियौ। चौंडावत रिडमलोत जोधावत भेला हुवा। बार राव जोधपुर थी वार अ णी करि अव्या"-(प्रति स० २६, फोलियो २८ से)। "पीहियाबल थी नेडो काकोलाव तलाव डेरा किया। दूद जोधावत न भाभोजी मिल्या। यावलै भाभोजी प्रगट। सातेल राव ब्रवार कियौ। सातेल कहै-सतगुर मिल त सासो भाज। उमराव कह-रावजी क्यौं? सातेल कहै-रे भाई, सळे काई आव नही, लडाई करए रो तो बूता नहो। टका दिया तो आपणी काची हुवै। दूदो कह-भाभजी रे पाए हालौ, सौह भला होयसी। "हमैं भाभोजी कठ रहा?" दूदो कहै-अठ थावल छै। छडी असवारी कए पाए भाभजी रे पाए आया। सातेल मन मा अटक्ल -ऊभा ऊभा कारज सवार तो सतगुर। राठोड प्रदेषणा दे पगे लागा। जेस थान को असवारी आई। राठोडा न साथ का कों क्योई को क्योंई कहए लागा। सतगुर कहैं-डेरो पासाऊ करो। चता मत करो। थान साथ पातसाही फौज। थान आय कदम पोसी कीवी। श्री भाभोजी सबन्वाणी कहै-उमाज गुमाज (सबद सख्या ६४)।-थान कहै-नेता क्या है जान क्युन है। पीरजी, दद्रू गा पीछ, छोडू गा पहला। ऊभाऊभ मगायो। हथणी चाडि अर ल्याया। भाभजी क हजूरि आण्य बेडी काटी। महलूखान कहै-वे नेता, यौं जाएगा, मामा का जोर करिक छुटोहू। सो नही। पीर न छुडाया है। नेतसी मामा सौं मिल्यो। मामा कहै-किए तर छुटो? नेतसी कहै-भाभजी छुडायौ। राठोड पुभी हुवा'-प्रति सख्या २६ २०१। पद्य प्रसग के लिए द्रष्टव्य-प्रति ११२।

६१) जिनको सुन कर उसने गो-हत्या बन्द करवाई[1] और मांस खाना छोड दिया। इसी अवसर पर जोधपुर के राव सातल ने अपने राज्य में विष्णोइयों को सर्वथा कर-मुक्त करना चाहा किन्तु जाम्भोजी के अनुरोध पर उनकी आमदनी का पांचवां हिस्सा लेना स्वीकार किया[2]। रावजी ने जाम्भोजी से ज्ञान-चर्चा भी की। फलस्वरूप उन्होंने कई "सबद" कहे (संख्या ७० ७१)। राठोडों के पुरोहित मूला के प्रति भी उन्होंने एक "सबद" (स्वीकृत संख्या ७२) कहा। राठोडों ने जाम्भोजी के उपदेशों पर चलने का संकल्प किया।

ध्यातव्य है कि केसोजी की "कथा मेडत की" तथा सबदवाणी के "प्रसंगों" में अद्भुत साम्य है। इतिहास ग्रन्थों में ऐसी किसी घटना का संकेत नहीं मिलता किन्तु साम्प्रदायिक साहित्य में इसके अनेक उल्लेख मिलते हैं।

टोडारायसिंह पर संवत १५३० के लगभग सोलंकी राव सुरताण का शासन था[3] किन्तु नेतसी सोलंकी के राज करने का उल्लेख नहीं मिलता। इस घटना का समय संवत १५४५ और १५४८ के बीच है क्योंकि इससे सम्बन्धित सभी व्यक्तियों का इस बीच वर्तमान-रहना प्रमाणित[4] है।

३–द्रोणपुर के राठोड राव बीदा से मोतो मेघवाल को छुड़वाना–इसका विस्तृत विवरण वील्होजी ने "कथा दुणपुर की" में दिया है। सुरजनजी[5], दुरगदास (द्रष्टव्य-कवि

१–(क) "महलूयान गउ हतावणी वरजाई। गोसत खाणो छोड्यो। पीर कही सो मानी। चढि अजमेर चाल्यो"। -प्रति संख्या २०१।

(ख) खान अरज केर ऊ आय, कदा न करणी फुरमाय।
यों मुख सा बोल्यो सुरराय, मोजा मत मरावो गाय ॥ ८९ ॥
दूजा पीर नही तुम तूल, पीर कह्या सो किया कबूल।
होती बेढि जका अब रही, पेड अपेड हुई अब सही ॥ ९० ॥
फौज अपूठी चाली फेरि, खान पडया चाल्या अजमेरि।
करताजी री कहियो कियो, खान खुसी होय घरा दिस गयो ॥ ९१ ॥
–केसोजी कृत कथा मेडत की।

२–वल्य राठोडा ऊ कहो, साभल्य बूधर भेद।
बिसनोई करिस्या अकर, हुकम करो हरिदेव ॥ १०२ ॥
सतगुर कहै सातिल करि चीत बिसनोइया सू पाळो प्रीति।
देव कहै राठोड सुणों, बिसनोई गुरभाई गिणों ॥ १०३ ॥
अकर किया तो अवगण होय, फल कहै सामळियो सोय।
देव कहै थे ताणो मानू, पाचवों बाटो ल्यो आ कबू ॥ १०४ ॥
हक दीज हक लीज जाण्य, सिरजणहार कह्यौ सुवाण्य।
सातिल सू करता ऊ कही, सातिल हू शिष हुवौ सही ॥ १०५ ॥
–केसोजी, कथा मेडत की।

३–डा० कैलाशचन्द जैन एंसियन्ट सिटीज आफ राजस्थान,-'टोडा रायसिंह'-पृ० २१६।

४–(क) रामकरण आसोपा मारवाड का मूल इतिहास, पृ० ११४, ११७।
(ख) ओझा जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० २६१।
(ग) हरविलास सारडा अजमेर-हिस्टोरिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव, पृ० १५०।
(घ) श्यामलदास वीरविनोद, दूसरा भाग, पृ० ३३३।

५–(क) सहर दूणपुरि विसराम साथ एक मोतियो नाम। (शेषांश आगे देखें)

सख्या ६३), परमानन्दजी,[1] हीरानन्द (द्रष्टव्य-'परिशिष्ट' मे हिंडोलणो) आदि अन्य अनेक कवियो की रचनाओ तथा सबदवाणी के 'प्रसगो'[2] से इसकी पुष्टि होती है। इस अवसर पर "सुकल हस" सबद (सख्या ६३) कहने का उल्लेख मिलता है। घटना का समय सवत १५४२ और १५७० के बीच किसी समय-अनुमानत सवत् १५५०-१५५५ के आसपास होना चाहिए। प्रथम कारण तो यह है कि इस समय तक सम्प्रदाय की जडें काफी मजबूत हो गई लगती हैं जिसम कुछ समय भी लगा होगा। द्वितीय, सवत् १५७० तक इस घटना के काफी प्रसिद्ध हो जाने का प्रमाण मिलता है। इस सवत् मे जाम्भोजी "जत-समद" की प्रतिष्ठा कराने जसलमेर गए थे। वील्होजी की "कथा जसलमेर की" म रावल जतसी के कथन मे इसका सकेत मिलता है[3]। तृतीय, यह घटना राव बीदा के बीदासर बसाने से पूर्व, द्रोणपुर म रहते समय घटी थी। बीदासर उसने सवत १५६८ मे बसाया था[4]। इन पर विचार करने से प्रस्तुत घटना का समय उपयुक्त अनुमित है।

४-सवत १५५३-५४ के अकाल मे सहायता करना-इस समय पडे अकाल म जाम्भोजी ने लोगो की, विशेष रूप से पशुओ की रक्षा की थी[5]। इस अकाल की पुष्टि बीठू सूजा रचित "छन्द राव जैतसी रो" से भी होती है (छन्द सख्या ५४)।

५-अन्य मतानुयायी और विश्णोई सम्प्रदाय-जाम्भोजी की फलती हुई प्रसिद्धि के कारण दूसरे सम्प्रदायो के लोग भी विश्णोई सम्प्रदाय म आने लगे। सबदवाणी के "प्रसगो" म इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

नागौर का रामू सुरताणा विश्णोइयो को "करणी-क्रिया" से रोकता था। किसी समय सम्भरायल पर एक सबद (सख्या ३०) सुन कर उसने जाम्भोजी से जीव के जन्म-

---

विसनोई के धरम्म आचारि, क्रिया साभ सुसील ससारि ॥ १८० ॥
नीच जाति क्यों उतिम सारि पठव दूत लिया हकारि।
कहै राव करी कुल काम, क गरम्य मारू काढू धाम ॥ १८२ ॥
अटक्यो साध कियो अहकार, सतगुर जोय छुडावण हार ॥ १८४ ॥
—कथा औतार की।

(ख) मोतियो साध अग्याध मत, रग झाभेसर ग्यान रस।
सामळी वात बीद सकारी, थापि का जाति नियालि थारी ॥ ६५ ॥
राति एक बिच दूणराया, आप ले थाट जमाति आया।
सामळी वात बीद सकारी, आवियो मेछ पूछ अकारी ॥ ६७ ॥
बदिहू कढियो ठढि वाही, सपदा साध अग्याध साई ॥ १०८ ॥—कथा परसिध।

१-मोतिय की परतग्या राखी परचा दिया अपार।
हासिम कासिम साध उबार्‌या इसकदर की बार ॥ ५ ॥—साखी।

२-"मोतिय मेघ न रोकयो, त सम देवजी दूणपुरे आया।"—प्रति सख्या २०१।
पद्य-प्रसग के लिए द्रष्टव्य-प्रति सख्या ११२।

३-मीठ मिल्य पालटिय पारा गुर मिलिय रा अ उपगारा।
गुर पाणी हुंतो दूध पियाव, नौबडिया नाळेर निपाव ॥ ६५ ॥

४-राजस्थानी वाता, पृ० २०६ सम्पादक-सूयकरण पारीक, दिल्ली, सन् १९३४।

५-तेपन घात पूगी त काई उतरे जैठ असाढ आई ॥ १०८ ॥
जागियो काल असात जात, धास छुट थळे पाळ धात ॥ १०९ ॥

मरण और विष्णु-जप विषयक कई प्रश्न किये। इनका उत्तर उन्होंने दो सबद (३१, ३२) कह कर दिया। उस समय एक 'जोगी' भी वहां उपस्थित था। उसने पूछा—"क्या वेद-कतेब में कोई बात झूठी भी है ?" जाम्भोजी ने इस पर पांच सबद (संख्या ३३ से ३७) कहे, जिनको सुनकर वह विष्णोई हो गया। पश्चात् वह एक टीले पर गया जहाँ "बाला जोगी" लखमणनाथ के भंडारे पर अनेक "जोगी" एकत्र थे। उसने "जोगियों" के प्रसाद लेने से इन्कार कर दिया। "प्रसंगों" में इसके फलस्वरूप "जोगियों" की प्रतिक्रिया और उभय पक्ष के परस्पर प्रतिवाद एवं सिद्धि-प्रदर्शन का विस्तार से वर्णन किया गया है[1]। लोहापांगळ के विष्णोई सम्प्रदायानुयायी होने के अनेक उल्लेखों में भी इसकी पुष्टि होती है। लोहापांगळ

१-रामदास के परतीति थाई। सतगुर कही साच करि मानी। देवजी के दीवाण एक जोगी आयो। रामदास पूछया, देवजी कह्या। जोगी सबद सुण्या। जोगी कहै-गरू कोई वेद कतेब मां बोल झुठा बी है ? सबद सुणि जोगी बीसनोई हुवो। बीसनोई हुवा पछ टील गयो। टील जोगी बालो लषमण रहै। जह के भंडारो छो। भंडार जोगी भेला हुवा। बीसनोई न कहै-भुगति करि। बीसनोई भुगति नाकारी। जोगी रीसाणा। जोगी कहै-कुण तेरा पीर ? कुण तेरा राह ? तं नाथ के घर की भुगति नाकारी। बीसनोई कहै-मेरे भांभोजी पीर। सतपथ की राह। जोगी कहै-तेरे पीर की और हमारी बात। जोगी किते एक दिन भांभजी के हजूरि आया। जोगिये एक जोगी भांभजी कन मेल्ह्यो। जोगी कहै-भांभाजी, इहां बाळा लषमण आवता है, तम साम्हे चलि के आदेस करि के पाउ लगो। देवजी कहै-बाळ लषमण मां के आसति इथकार छ ? जोगी कहै-परभात तो बाळो वेस कर दोपरे तो जवान वेस कर, सांझ बुध वेस कर, ज्यों बाळो लषमण कहावै। बीसनोई कहै-घणा वेस तो वेस्या कर। थी देवजी कहै- 'लषमण (सबद ३८)। जोगी कहै-बाला लषमण है सो तया का भुष दष नाही। छोति नाहि। जोगिये सबद मान्यो नही। देवजी नाल्हिय बागडव नू मेल्ह्यो। नाल्हियो जोगियां कन गयो। कुलाछ मारि कूदयो। ताल एक आसण माडि रह्यो। लषमण है सो मेर पास आसण माडो। जोगी हारया। आदेस आदेस करि उठि चाल्या। का दूरि गया। कहै-भांभोजी निरहारी पुरिष कहाव है। आ बात झूठी। के काहाई जाय जीम्य आवै, के काई आण्य जिमावै। चलो-या ठीक करगे। भांभजी दोला गाडी पाली जोडि बैठा। तीन राति तीन दिन कही न नडो आवण दीन्हो नही। देवजी की कला घडदी दीसी। जोगी भूष भागा। के तो बसतिया न उठि चाल्या, के बैठा। जोगी कहै-भांभाजी-अतीतू कू भूष लगी है तीन दिन हुए कुछि दया भी आव है ? देवजी कहै-जी ही क्यों न कह्यो ? नफरा कनियो भुगति मगाई। जोगियां का पतर पुराया। जोगी कहै-"आग अ नत सिध हुवा तिणान भुगति जीमी। भुगति बिना कोई न रह्या। तम भी हमार पासे बटिके भुगति जीमू। काहे के वासत भुषे रहो हो" ? जोगी कहैं-तम निरहारी तो हम भी निरहारी। रे जोगियो ! मूठ पडिम्यो। भूषो होयसी सो आप ही नहोरा करिसी। थे जीमू। जोगिये भुगति जीमी। देवजी न कहै-तुम्हार कोई वरी दुसमण होय तो हमकू फुरमावो। हम पाल्। देवजी कहै-तू तेरा वरी पाळि। जोगी कहै-म्हार वरी कुण ? देवजी कहै-तेरे वरण पुष्या, तिसना, नींद दस-काम, क्रोध लाभ, मोह, राग मान। जोगी उठि गया। गोरखावरी जाय भेळा हुवा। भेष आगी फिरियादि कावी। पाचस चेला को गरू लोहापागळ बीडो भांभजी ऊपरि लियो। जोगी भेळा होय चाल्या चाल्या ट्रिमटसरि आया।"-प्रति संख्या २०१ से।

पद्य-प्रसंगों के लिए द्रष्टव्य-प्रति संख्या ११२।

का उल्लेख अनेक कवियों ने किया है[1]। केसोजी की 'कथा लोहापांगळ की' तो इसी से सम्बन्धित है। "प्रसंग" के अनुसार, जाम्भोजी ने उनके प्रति १२ सबद (संख्या ४२ से ५३) कहे थे।

इन सबका निष्कर्ष यह है कि उस समय राजस्थान में नाथ पंथी योगियों का व्यापक प्रभाव और प्रसार था तथा उन्होंने समय-समय पर अनेक प्रकार से जाम्भोजी और बिश्नोई सम्प्रदाय का बड़ा विरोध किया था। उनका विशेष सम्पर्क गोदावरी तट पर समय-समय पर एकत्र हुए विभिन्न नाथपंथी योगियों से रहता था। गोदावरी तट के त्र्यम्बक योगी मठ पर बारह पंथी नाथयोगी कुम्भ पर्व के समय प्रति द्वादशवर्षीय पात्रदेव-यात्रा हेतु एकत्र हुआ करते थे (विशेष द्रष्टव्य-अध्याय ३,-'धार्मिक स्थिति')। यदि रामू सुराणे के प्रश्नोत्तर के समय उपस्थित योगी के प्रश्न से लेकर लोहापांगल तक सब घटनाओं को सम्बन्धित करके देखें तो विदित होता है कि २१ सबद (संख्या ३३ से ५३) जाम्भोजी ने कनफटे नाथयोगियों के प्रति प्राय: एक जैसे प्रसंग में ही कहे थे। उपर्युक्त घटनाओं का समय संवत् १५६३ या इससे किंचित् पूर्व होना चाहिए। जनश्रुति लोहापांगल का सम्बन्ध सिद्ध जसनाथजी से भी जोड़ती है, जिनका स्वर्गवास २४ साल की आयु में संवत् १५६३ में हुआ था[2]। अत: यह घटना इससे पूर्व ही होनी चाहिए। महलाणा गांव के विश्नोई भाटों की वहियों में भी इस घटना का समय संवत् १५६३ बताया गया है।

६-मुहम्मदखां नागौरी-लोहापांगल संबंधी वृत्तान्त जान कर नागौर का शासक मुहम्मदखां अपने काजियों के साथ जाम्भोजी से मिलने आया था। उसने उनसे ज्ञान-चर्चा भी

१-(क) जोगी एक जटा उतराय, लागो वद्ध पराक्रम गाय।
दरसणिय मन कियो विचार जोगी कुण मूंड ससार ॥ १४३ ॥
लोहापांगळ कियो अहंकार, चेला साथे अरध हजार।
नाटिक चटक वीतर भूत सोगी नाथ जटा अवधूत ॥ १४४ ॥
—सुरजनजी, कथा औतार की।

(ख) जोग्यद एक उतराय जटा मोडि बध छाडे कपटा।
सुणी बात प्रापति सार, चेले हम मगति पाल चार ॥ ६४ ॥
जोग्यद मुंडि कुण मात जाया सोइ जोगिया महंत आग सुणायो।
पागलीलोह विपाय पडिया च्यारिस दूण चेटक चडिया ॥ ६५ ॥
—सुरजनजी, कथा परसिध।

(ग) महि मडण पडे पोज लहो, नरनाथ विरता वात कहो।
कुडिया गोदावरि जात जके, चडिया चोलाडी चाड तके ॥ २६ ॥
उलटी गत आयस एक तम, सप पूरया नाद परात सम।
हिमटसर आया हाव तके, कुडिया गोदावरी जात जके ॥ २७ ॥
करता कहियौ कुण घाट घडयौ, कहै काछ किसी विध लोह जडयौ।
जन्यो जिण वात विचार कही, भडमी लोह भेट्या आप दई ॥ ३२ ॥
अत आयस औसर आय अडयौ करता कर भटयौ लोह झडयौ।
जन भूला जाता घेर लिया, सिर मूंड जटा सह जेर किया ॥ ३३ ॥
—गोकलजी, परची।

२-सिद्ध रामनाथ : यशोनाथ पुराण, पृष्ठ ८८।

की थी[1]। शब्दवाणी के 'प्रसंगों' मे विदित होता है कि एक बार तो वह स्वयं उनसे मिलने गया था और एक बार उसने अपने काजी उनके पास शंका-समाधानार्थ भेजे थे। काजियों के साथ राव लूणकरण के पंडित भी गये थे। उनके भेजे जाने का कारण जाम्भोजी के विषय मे यह जानना था कि वे हिन्दुओं के देव थे अथवा मुसलमानों के पीर। काजियों और पंडितों को दृष्टांत देते हुए जाम्भोजी ने बताया कि वे दोनों में किसी के नहीं थे,-वे तो सच्चे हिंदू के देव और सच्चे मुसलमान के पीर थे। केसोजी ने लिखा है कि मुहम्मदखां जाम्भोजी को मानता था और उनके उपदेशों पर चलने लगा था[2]। गोकलजी के अनुसार भी वह जाम्भोजी से मिला था[3]। '६ राजवियां की विगत' (अध्याय ७, शीर्षक-११) तथा 'हिंडोलणो' में अन्य मतानुयायियों के साथ मुहम्मदखां का नाम है। 'कथा परसिध', 'कथा औतार की' (सुरजनजी कृत) तथा 'प्रसंगों' आदि से पता चलता है कि जाम्भोजी ने सात सबद (६ से १० २३ और २५) एक प्रकार से उसके प्रति ही कहे थे। इनसे यह ज्ञात होता है कि मुहम्मदखां जाम्भोजी के सम्पर्क में आया था। साथ ही इनसे जाम्भोजी के एक विशिष्ट गुण का भी पता चलता है। यह घटना संवत १५६३ या इससे कुछ पूर्व की होनी चाहिए। इसमें मुहम्मदखां और बीकानेर के राव लूणकरण के मेल-मिलाप का भी संकेत है जो संवत १५७० में हुई दोनों की लड़ाई[4] से पूर्व ही सम्भव था। सुरजनजी ने लिखा है कि उक्त बात सुनकर बादशाह सिकन्दर लोदी बहुत खीझा था[5]। जाम्भोजी ने दिल्ली में उसको प्रतिबोध कराया था। महलाणा गांव के जोगीराज भाट की बही में 'संवत् १५६३ में सिकन्दर लोदी ने परचो दीनो' लिखा है जिससे भी उक्त संवत की पुष्टि होती है।

७-बादशाह सिकन्दर लोदी-केसोजी ने 'कथा इसकन्दर की' मे जाम्भोजी और

१-(क) पागळीलोह नाव पटे घटहू चेटकी पाप घटे।
महमदखान नागोर मठी सामली वात लीळग सठी ॥ ७६ ॥
आवियो भेट पेटा अकारी साथि दे वात पूछ सकारी।
माहिलो ग्यान भीगो महले, चेतियो हृत ले साथ चले ॥ ७७ ॥
अपनी म य पूछ अकारी मन री वात लाधी मुरारी।
अज्यसी मोल आपाल भेला, पान नै तडय ले आव थला ॥ ७८ ॥
-सुरजनजी, कथा परसिध।
(ख) महमदखान जाति को पठाण, हुवा हकीकत पीर पिछाण्य।
वेद कतेब किया जिण्य थाट, जीव वड नासिका चाट ॥ १६१ ॥
जद्य सतगुर बोल्यो समभाय, इंड जीव किसो पर थाय।
हारया वेद कतेब ज दोय अ परचा सतगुर का जोय ॥ १९२ ॥
-सुरजनजी, कथा औतार की।
२-(क) अरोडी मान अर और महमदखा मान नागौरि ॥ २१ ॥-कथा चितौड की।
(ख) महमदखा नागौरि परच्यो, चाल्यो गुर फुरमाई।-साखी करण की।
३-जको जग पेख्यो जोति समान। मिल्यो मदसून्न महमदखान ॥३॥-'परची'।
४-(क) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृष्ठ ११४।
(ख) बीठू सूजा कृत छन्द राव जैतसी रो, छन्द संख्या-५७ से ६१।
५-दिलीसुर सांभळी बात दिले, खीजियो खान अग्यान खेले।
जीव सू घात अघात जत, रोकियो साध अग्याध रत ॥८२॥-कथा परसिध।

सिकन्दर लोदी के सम्बन्धों का विस्तार से वर्णन किया है। बादशाह द्वारा कैद किए गए हासिम और कासिम नामक दो मुसलमान विश्नोइयों को जाम्भोजी ने रणधीरजी के साथ दिल्ली जाकर छुड़वाया था। वहां उन्होंने बादशाह को 'चेताया' था। वील्होजी[1], केसौजी[2], सुरजनजी[3], गोकलजी[4], परमानन्दजी[5], मुकनजी[6], दुरगदास (द्रष्टव्य कवि संख्या ६३), सदानन्द[7], हीरानन्द (द्रष्टव्य-'हिंडोलणो'), हरिनन्द (द्रष्टव्य-कवि संख्या ७६), साहबरामजी,[8] स्वामी ब्रह्मानन्दजी[9] आदि के अनेकश कथनों से इसकी पुष्टि होती है। "६ राजविया का विगत' में सिकन्दर का नाम है। स्वयं जाम्भोजी ने सबदवाणी (सबद संख्या २७ १५-१८) में सिकन्दर को 'चेताने' और नामोपदेश देने का उल्लेख किया है। इसके औचित्य में सन्देह करने का कोई कारण नहीं है क्योंकि सबदवाणी की सभी प्रतियों में यही पाठ मिलता है। प्रसंगवश यह कहा जा सकता है कि फरिश्ता तथा अन्य विद्वानों के जिन साक्ष्यों पर कबीर और बादशाह सिकन्दर लोदी का जो सम्बन्ध बताया जाता है[10], वह

१-(क) दिल्ली सिकंदर साह दे परचो परचायो।
महमदषा नागौरि, परधि गुर पाए आयो ॥१८॥-कथा जसलमेर की।
(ख) इसकंदर परमोधियो, परच्यो महमदषान।
राव राणा नवि चालिया, सम्रलि केवल ग्यान ॥-'उमाहो'।
२-इसकंदर कीवी आ करणी, दुनिया फिरी दुहाई ॥ ६ ॥
महमन्दखा नागौरी परच्यो, चाल्यो गुर फुरमाई ॥ ८ ॥-साखी ॥
३-(क) दिल री बात प्रगास देय आविया आप आपे अलेप।
भेन्यियो गुर भाभेसर भदा दिलीसुर माय हुवो सयदा ॥ ८५ ॥
विल सिकंदर एक अरज सुणाय, देह छूटी कू मिल खुदाय।
पोर मुरीद मिली परतीत, इसकंदर चेतायो चीति ॥ १७७ ॥-कथा परसिध।
(ख) अकरयवत के परचो एक, दुनिया पूछ बात अनेक।
इसकंदर उठि लागो पाय, परचो पायो मिल्यो खुदाय ॥ १७५ ॥
—कथा औतार की।
(ग) इसकदर औल्ये परचि लागो पहली परि।
सेप सदो साखिया किया गुर भाभेसर ॥— छप्पय' की पंक्तियाँ।
४-मया कर दव छुडाया दाम, मिल्यो असकन्दर पूरी आस ॥ ३ ॥-परची।
५-जैमाण रावल जैतसी, अजमेर कमसी पवार।
महमदषा हारणषा सेप सदो, इसकंदर बावर पतिसाह ॥ ३ ॥-साखी।
६-समराथलि सामी अंतरजामी, इला महन करि आरंभियो ॥
पतिसाह पस्वर दिनी सिकंदर परच लाध पोह लहियो।
साचो देव दुनी सति मान, आन तजे हरि जाप हुयो।
बुघर आयो भगता भायो नवषड जोति निरत कियो ॥ ३ ॥-रोम छन्द।
७-वरहो वरक चोर पाछा ता आवाज सुनी, इसकंदर परचो पायो कामठी उठाय क।
हरजी निकस्या वार, पाछ ता मिलाप कीनो, हासम कासम का सिप भया चरणा म आय क। -इंदव छन्द।
८-प्रति संख्या १९३-जम्भसार, प्रकरण-७।
९-जम्भदेव चरित्र भानु पृ० १६१-१७०।
१०-डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल योगप्रवाह, पृ० ९८-१०३।

जाम्भोजी और सिकन्दर का होना चाहिए[1] । यह संवत १५६३ की बात है । इससे जाम्भोजी और विष्णोई सम्प्रदाय के व्यापक प्रभाव और प्रसार का निःसन्दिग्ध रूप से पता चलता है ।

८–कर्नाटक का नवाब शेख सद्दो और मुल्तान का सधारी मुल्ला सबदवाणी के 'प्रसंगों'[2] से ज्ञात होता है कि जाम्भोजी ने शेख सद्दो से गो-हत्या बन्द करवाई थी । सधारी मुल्ला भी उनसे ज्ञान-चर्चा कर प्रभावित हुआ था । दो सबद (क्रमशः संख्या १०२, १०३) इनको लक्ष्य कर कहे बताये जाते हैं । 'पद्य-प्रसंग' के अनुसार मुल्ला सधारी के प्रति जाम्भोजी ने दो भिन्न सबद (संख्या ११३, ११५) कहे थे[3] । इन दोनों का उल्लेख केसोजी[4], सुरजनजी[5], परमानन्दजी (द्रष्टव्य–पिछले पृष्ठ की पादटिप्पणी, संख्या ५) और हीरानन्द (हिंडोलणो में) ने किया है । हरिनन्द[6] के भजन में शेख सद्दो का नाम संकेतित है ।

९–जैसलमेर के रावळ जैतसी–रावळजी ने जैत समंद' की प्रतिष्ठा पर जाम्भोजी को बुलाया था । उन्होंने जीव-दया और पशुओं से सम्बन्धित चार बातें मानने का वचन भी जाम्भोजी को दिया था । उनके अनुरोध पर लखमण और पाण्डू नामक दो विष्णोई वहां के खरीगा गांव में बसाये गये थे । वील्होजी ने 'कथा जैसलमेर की' में इसका विस्तृत वर्णन किया है । सिकन्दर लोदी की कथा की भांति यह कथा भी सम्प्रदाय में बहु-प्रचलित

१–द्रष्टव्य–अध्याय २ में (२) के अन्तर्गत सबद–संख्या–८२ ।

२–'सेख सदो करणाटक देस को धणी, सात गाय सराय परायत करतो । देवजी के हजूरि आयो । गाय छुटाई, तद सम की सबद-'सुण रे काजी ' सधारी मुला मुलताण सा चाल्य, देवजी के हजूरि आयो । देवजी आगो कुराण मल्ह्यो । देवजी कुराण कह्यो । सधारी मुला पारसी मा कहे–'हुचे गारी लुलत ना दुरराह क' । श्री जाम्भोजी पारसी कहे–'हरेच दारो' " । सधारी मुला पाए लागो । परचो साचो आयो" ।

–प्रति संख्या २०१ ।

३–मुला सधारी आइया आय र बूझयो जुवाब ।
सर बिना महजन है झूठ सबा पुवाव ॥ १ ॥
–"नष"– जके पथ का भाजणा' –(११२) ।
मुला सधारी यों कहे महमन्द फुरमान ।
रोजे कर निवाज पढ, बन्गी कर सावत ईमान ॥–दाख–ईमा मोमणि (११३) ।
–प्रति संख्या ११२, पत्र १८ ।

४–(क) सेख सदो परचे पहि आण्या, मरतो गऊ छुडाई ॥ ८ ॥–साखी ।
(ख) सेख सदो नोवाज्योजी, करतो पाप अघार ॥ ८ ॥–सारो ।

५–(क) सेख सदो सारिपा कीया सुर झाभेसर ॥
मकमीरा काजिया हुवा राजी गुर अग ॥–छप्पय, पंक्ति २–३ ।
(ख) सेख सदो करणाटक माहि, परचो दे बकसाई गाय ॥ १९० ॥
–कथा औतार की ॥
आराव जोदो राखो, रतो कह्यो मुल्ताणि ।
गारथ अ भ गीयान मा, सो भाभसर जाण्य ॥ १९४ ॥–वही ।
(ग) मन्ताणी पीर अनेक मता, रापि लाज अवसाण रता ।
बेद वादेत पठाण चीता चाडिया आण्य दिली चगता ॥ ८ ॥–कथा परसिध ।

६–'सनि परणाम कह्या गुर मेर, मरतो गऊ छुडाई' ॥ ३ ॥

है और केसोजी[1], सुरजनजी[2], मुकनजी[3], परमानन्दजी[4] आदि कवियों ने अनेक रचनाओं में प्रकारान्तर से इसका उल्लेख किया है। '६ राजवियों की विगत' और 'हिंडोलणो' में रावळ जतसी का नाम है। सबदवाणी के 'प्रसंगों' में उक्त अवसर पर एक सबद (संख्या ८८) कहने का उल्लेख भी मिलता है[5]। रावल जतसी के राजत्वकाल के सम्बन्ध में इतिहासकारों में कुछ मतभेद है[6] किन्तु संवत् १५३० से १५८३ तक यह काल सभी

१-अजमेर पुंवार मान करमसी, जसळमेर रावल जतसी ॥ २१ ॥
                                                    -कथा चित्तौड़ की।

२-(क) जतसी राणा जेसाणा जग, लाष सोभा लीए पाय लग।
बोलदे वुधे ले बाह पाऊ, आप दे भेट दीदारि आऊ ॥ ८६ ॥
हूं कहूं वात सा करो हाथे, सदा जीन पुज्य आसान्य साथे।
मानीया राव जादम राया, आप ले साथ अनेक आया ॥ ९१ ॥
भले गुर जतसी विहै मेला, माडिया वाध सू रीध मेला।
आप से सीप अलेष आया, रीव लग राज जादम राया ॥ ९४ ॥-कथा परसिध।

(ख) जादम वसी जसळमेर, क्रम बुलायो जिगन सवेर।
रावल न सतगुर समझाय, जिग ता दीन्हा जीव छुडाय ॥ १९३ ॥
                                                    -कथा औतार की।

(ग) रावल्जी राख्या रूडा, कुवचन कहे न को किया।
विसनोई सुण्या विसन, रावल रोपा रोपिया ॥ ३३७ ॥
                                                    -छप्पय की अंतिम दो पंक्तियाँ।

(घ) जगि आयो जीवा धणी, आज उजवणो उजल।
जत सरोवर जत, फेरियो सूत लहे फल।
चोक्स वरा चियारि जीम जग मोहण जप्या।
दापविया जगदीस, साध ले सेई समप्या।
वरा समप्या जतसी, सीप सुणी सुगुर तणी।
आज उजवणो उजल, जक जिग्य आयो जीवा धणी ॥ ३३९ ॥-छप्पय।

(ङ) अ जिग तीन्य हुवा जुगे, लख घरचे लाहो लियो।
धन्य धन्य रावल जतसी, कलिजुग कन्या हल कियो ॥ ३४० ॥
                                                    -छप्पय अन्तिम दो पंक्तियाँ।

३-जसळमेर जतसी जादम, करता किरिया करि कुंभ दियो।
काट अगज अरियण सोह कप, अपरपर आरापवियो।
रूप रपाय अपा छाया, जीव छुडाया जिग कियो ॥ ८ ॥-रोम छन्द।

४-जमाण रावळ जतसी, अजमेर क्रममी पवार।"-साखी' तथा हरजस।

५-रावल जतसी जसलमेर उजवणो कीयो। त्यारे वरा गुर मुषे दीन्हा। त समै देवजी सवद कहै "गो रपलो "। मेल बीपरो रावल्ल सुथान सिधायो। देवजी सभरायल्ले आया"। -प्रति संख्या २०१ से।

६-(क) मुंहणोत नणसी की ख्यात, भाग २, पृ० ४४१, ना० प्र० स०, काशी।
(ख) रामनाथ रत्नू इतिहास राजस्थान, पाँचवा अध्याय, इतिहास जैसलमेर, पृ० २५०, संवत् १९४८।
(ग) ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ० ११६, पादटिप्पणी।
(घ) श्यामलदास वीरविनोद, "जयसलमेर की तवारीख", पृ० १७६२।
(ङ) जगदीशसिंह गहलोत राजपूताने का इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ६६८।

माना है। 'जैत समंद' का निर्माण उन्होंने संवत् १५७० में करवाया था[1]। स्पष्ट है कि इसी संवत् में जाम्भोजी जैसलमेर गए थे।

१०-मेवाड़ के राणा सांगा, मालो सांगो-केसोजी की 'कथा चितोड़ की' से पता चलता है कि संवत् १५७२ के आसपास जाम्भोजी और विश्नोई सम्प्रदाय का परिचय इन लोगों को भी मिल चुका था। इसका कारण पूर्व के कवाड़ारा विश्नोइयों का चितौड़ में सांग-रिनी पर मुक्ता दान स्वीकार करना था। कथा के अनुसार इस प्रसंग में वे लोग उन राजाओं का नामोल्लेख करते हैं[2] जो जाम्भोजी को मानते थे। इनमें बादशाह सिकन्दर लोदी, राव दूदा (स्वर्गवास संवत् १५७२[3]) राव हमीर[4] और रावल जैतसी के नाम हैं। इनसे उस संवत् का अनुमान होता है।

११-बीकानेर के राव लूणकरण और कुंवर जैतसी-सम्बन्धी एक "प्रसंग[5]" से पता चलता है कि नारनौल के युद्ध पर जाते समय इन दोनों का जाम्भोजी से सम्पर्क हुआ था।

१-(क) वीरविनोद, 'जयसलमेर की तवारीख' पृ० १७६२।
(ख) रामनाथ रत्नू इतिहास राजस्थान, पाँचवाँ अध्याय, इतिहास जैसलमेर पृष्ठ २५०।

२-विसनोई रो नामो करूं, ताम कहूं हूं सुणियो नरां।
विसनोई थी कहै विचारि, सो नामो परगट संसारि ॥ २० ॥
अजमेर सूं थार मांन करमसी जैसलमेर रावल जैतसी।
मरोठी मांन मर मोर, महमंदखां मांन नागोरि ॥ २१ ॥
थाना दोजा मिलका मीर, कोट पतोधी राव हमीर।
दूदो मेड़तियो सातिक राव, जग्य नामी पातसाह ॥ २२ ॥

३-गोपालसिंह राठौड़ जयमलवंशप्रकाश, पृ० ७०।

४-डा० टैसीटरी-जर्नल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल, (न्यू सिरीज) संख्या १२, पृष्ठ ८९, सन १९१६, कलकत्ता।

५- राव लूणकरण पड़ियार जिकता नै पूछ महूरत रै नारनोल ऊपर न कटक करै चढ़यो। बातोसर का जिना कापड़ीत की तलाइयां डेरा किया। उतरीताइ देवजी राव नू बोळावो देण गया। राव कहै-इण भरड़ैं नै न पूछा। सो गरज छै। कइ देव नूं पड़ावो करण री नहीं कोई गढ देस त्याग री नहीं। मालो बीजावत कहै-देवजी, रावजी कह्यो छ-म्हारा देवा रो कयों छ? श्री जाम्भोजी सबद कहै-"जह का' -(सबद ८५)। मालो सबद सुण रावजी चल गयो। रावजी! जाम्भोजी घणो बुरा कहै छ-वे जाजम्य के रिण मा रहिस्य। राव रीस करि कहै-हूं पाछो आयस्यूं तरां इण रा मोडिया माहे जो एजरा करूं। राव चढि नारनोल ऊपर पहुंचा। देवजी समराथळि आया। राव लूण-करण को कवर प्रतापसी घोड़ो नचावै। कणी एक कह्यो-घोड़ो कना सू पूरा नचावै है। श्री जाम्भोजी सबद कहैं- 'व कवराई '। राव जैतसी जाम्भजी के हजूरि आयो। आपरी अरज करण लागो-जाम्भाजी, एकण बाप रा बेटा। मैं एक घोड़ा मांगियो राव जी, मोनूं एक घोड़ो दीज आपरै साथे हालूं। रावजी सुन रासाय न कह्यो-तीन भाठा। श्री जाम्भोजी कहै-"मत्रि "। राव कहै-देवजी, आपरै सबद माहे को समधा को नही समधा। रावजी कह्यो-म्हानूं तिणर विचार लाधो नहीं। देवजी कहै-तीन भाठा दीन्हा। व पाछा आवै नही। राव जैतसी कहै-देवजी, बाहर जावतो घणो। छल बल घणो। देवजी सबद कहै- 'तउवा-"। रजपूत कहे-रावजी, क्यो सबद माहे समझा?

(शेषांश आगे देखें)

युद्ध म जाने स रोकने पर लूणकरणजी जाम्भोजी पर क्रुद्ध भी हुए थे। कुंवर जतसी के मागने पर भी रावजी ने उनको घोडा नही दिया था और न ही युद्ध म साथ ले गये थे। उनके दूसरे पुत्र प्रतापसी के पास घोडा था और वह युद्ध मे गया था। पीछे म जाम्भोजी न कुंवर जतसी को समझाते हुए बीकानेर-राज्य प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर कतिपय सबद कहे जाने का उल्लेख भी मिलता है (सख्या ८५, ८६, ८७ और ६५)। यह घटना सवत् १५८३ का[1] है। राव लूणकरण (कवि सख्या ४२) के कवित्तो से सिद्ध है कि वे जाम्भोजी के शिष्य थे। ऊदोजी नण (कवि सख्या ३७) न नारनौल के युद्ध मे काम आने वाले राठौड योद्धाओ का नामोल्लेख किया है। "रावजी भटवाला" की सूची मे परमानन्दजी ने रावजी का नाम गिनाया है (प्रति सख्या २०१, फोलियो २६६-३०१)। "प्रसगो" से अनेक महत्त्व-पूर्ण ऐतिहासिक बातो का पता चलता है। रावजी का नामोल्लख मुहम्मदखा नागौरी के प्रसग म भी हुआ है।

१२-मूला पुरोहित-इसका नामोल्लेख मल्लूखा और राव सातल के सन्दभ म कर आये हैं। "प्रसगो" के अनुसार, इन्होने अपनी पत्नी और भानजे को व्यभिचार-रत देख दुखी हो जाम्भोजी से जाम्भोळाव पर भेंट की। उन्होने इसको भली भाति समझाया (सबद सख्या १२)। पश्चात पुरोहित ने जोधपुर के राव गागा के दरबार मे जाम्भोजी की महिमा का बखान किया। यह सुनकर कुंवर मालदेव न लोहावट म जाम्भोजी से साक्षात्कार किया। कुंवर के कतिपय प्रश्नो का उत्तर भी उन्होने दिया (सबद ६३, ६४, ६५)। सुरजनजी ने "कथा परसिध"[2] मे इस घटना का समय सवत् १५८४ बताया है जो ठीक प्रतीत होता है। "राजवी भेंटवाळा" तथा 'हिंडोलणो" म मालदव का नाम है। मुहणोत नणसी ने भी मालदव के प्रसग म मूला पुरोहित का उल्लेख किया है (ख्यात, द्वितीय खण्ड, पृ० १५६-५७, ना प्र स काशी, सवत १९९१)।

(ख) घटनाएँ या बातें जिनका काल अनिश्चित है -

१-सौत गाव के रावण गोयद ओरड-इन्होने जाम्भोजी का शिष्यत्व तो स्वीकार कर लिया किन्तु उनकी सिद्धि का परिचय अपने पशु-चोरी करके पाया (द्रष्टव्य-वील्होजी कृत 'कथा ओरग की)। केसोजा की साखिया,[3] "चोईमा को सूरो' (द्रष्टव्य-अध्याय ७, सख्या सख्या १९) 'हिंडोलणो' आदि मे इनका नामोल्लेख है।

जतसी कह-जाम्भोजी साच कह छ। ई घर उपरि कोई राज रह्यो नही। माहर तो रूडा छ। राव लूणकरण र घर नू वा ही छ। म्हान तो कोट दीहो। राव जैतसी बीकानेर मा राज कियो। सुधि जामाणी चलावा"।-प्रति सख्या २०१।

पद्यप्रसग के लिए द्रष्टव्य प्रति सख्या ११२।

१-ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड, पृष्ठ ११७-१२३।

२-मामहा साथ मारू मूसगी। जोधाण राण देमाल जगी।
बाल गुवाल सू बध्य बेला। चोरासिय वास उगस अकेला ॥१२०॥-कथा परसिध।

३-(क) रावण सा सेऊ राह आण्या, गोयद सा गुर भाई ॥ ५ ॥
(ख) दोय रावण गोयदजी, साम्य किया सुविचार ॥ ११ ॥

२–नाथूसर का सैंसो जोखाणी–इसको भीकालो गाव म जाम्भोजी ने निष्काम भाव से दान देने और दान देकर अहंकार न करने का उपदेश दिया था। केसोजी की "कथा सैंस जोखाणी की" इसी से सम्बन्धित है। सबदवाणी के "प्रसंगो" स पता चलता है कि उक्त अवसर पर उसके प्रति तीन सबद कहे गए थे (सबद संख्या ५४, ५५,५६)। "३५ पुरुष" (अध्याय ७, सन्दर्भ संख्या १८) तथा "हिंडोलणो" म इसका नाम है।

३–मेड़तावाटी के पड़वाळो गाव के ऊदो और अतली–केसोजी कृत "कथा ऊद अतली की" म शुद्ध भाव से अतिथि–सेवा करने सम्बन्धी इनके प्रति जाम्भोजी के उपदेश का वर्णन है। "२७ लुगाइया की पुरुष" मे अतली का नाम है।

४–रिणसीसर का मगोवल और उसकी पत्नी लाहणी–केसोजी की "कथा मेटत की" मे इनका जाम्भोजी की महिमा सुनकर विष्णोई होना वर्णित है।

५–जागलू का वरसिंह वणियाल–"प्रसंगो" से विदित होता है कि ये जाम्भोजी के परम अनुयायी थे। इनकी सन्तति के सन्दर्भ म एक सबद (संख्या २०) कहने का उल्लेख भी मिलता है (अध्याय ७, सदर्भ संख्या १३ (४), 'जागलू' भी द्रष्टव्य)।

इनके अतिरिक्त अन्य अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति और कवि–अल्लूजी चारण, कान्होजी चारण, रिणसीसर का रावल आदि भी जाम्भोजी के सम्पर्क म आये थे जिनका उल्लेख यथा स्थान किया गया है।

वैकुण्ठवास–जाम्भोजी का वैकुण्ठवास संवत १५९३ के मार्गशीर्ष वदि ९ को हुआ था। उनके देहत्याग–स्थान के सम्बन्ध म दो प्रकार के उल्लेख मिलते हैं। एक के अनुसार, यह स्थान सम्भराथळ[1] है और दूसरे के अनुसार लालासर[2]। सम्प्रदाय मे दूसरी बात ही

१–(क) साम्य सिधार्‍यो चिल्त कियो, पनराम र तिराणव।
गु रा अ दक्ष मु निमर साम्य चाल्या, परगट पेल पसारियो।
परगट पेल म्हार साम्य पसार्‍यो, साथ चाल्यो मोमिणा।
कयौ रहू तेर याज दरसणि गोवल्य सू ना विन कन्हा।
सायरी गुर की वन सभरथलि, जहा पेल पसारियो।
तिराणव की साम्य पूगी द हरि साथ सिधारियो ॥ १ ॥–रायचद कृत साखी।
(ख) कल जुग देवजी को चिरत वधारि पनरास र तिराणव।
वदि मगमरि नु वि म्नि जाणि, सभरायलि परवाणियो।
सभरायलि परवाण कीयो, चिल्त सुरा दिपाइयो।
सव मोमिण जीव काज साह चोर चिताइयो।
केई चाल पडग धारा हीव केई हुकमे।
ससार आयो मम पायो चिल्त कियो कल्यजुगे ॥ १ ॥
अद जावा हुवा कवि मा अगम पथ चलाइयो।
सभराथलि गुर आय चाल्यो च्यारि ध्रम फुरमाइयो ॥ ३ ॥
–साखी अज्ञात कवि, संख्या–२५।
(ग) गजटियर–न्यार डिस्ट्रिक्ट, सी० एम० विग सन् १९०७ म भी ऐसा उल्लेख है।
२–(क) पनराम रि निरा णवं वदि मगमरि वमष।
तिथि नु नि निरधि निरमन्ो, ओ है हुवा ग्रन्थ ॥ २ ॥
नाल्हामर की साथरी, पार्हचि कियो परवाण।   (शेषांश आगे देखें)

प्रसिद्ध और प्रचलित है किन्तु प्रारम्भिक हुजूरी कवियों और वील्होजी आदि की रचनाओं से पहली बात की पुष्टि होती है। इस पर से हमारा अनुमान है कि सम्भराथळ पर ही जाम्भोजी ने देह त्यागी थी। "साथरियों" (अनुयायियों) ने उनके शव को जाम्भोलाव ले जाने के इरादे से दशमी के दिन ताळवा गाव के पास "मुकाम" किया। इसका पता लगने पर बीकानेर के राव जतसी लूणकरणोत ने वहा नही ले जाने दिया और एकादशी के दिन शव को उसी गाव के पास ही समाधिस्थ किया गया[1]। कालान्तर मे उस पर मन्दिर बनाया गया। जाम्भोजी का अन्तिम ऐहिक "मुकाम" होने से यह मन्दिर और उसके पास बसा गाव भी मुकाम कहलाया। जाम्भोजी के वकुण्ठवास की बात जान कर उनके अनेक अनुयायियो न भी स्वेच्छा से प्राण त्यागे थे। केसोजी (साखी सख्या १६), सुरजनजी (कथा परसिध), परमानदजी (वझ्धारी विगत), साहबरामजी (जम्भसार) आदि कवियो ने इसका उल्लेख किया है।

प्रभाव और महत्व–उपर्युक्त वृत्त से जाम्भोजी के व्यापक प्रभाव और मान्यता-महत्ता का पता चलता है। राजस्थान मे सवत १५८४ तक जसलमेर के भाटी, बीकानेर, जोधपुर, छापर-द्रोणपुर, मेडता और फलोदी के राठौड, चित्तौड के सीसोदिया, नागौर का खान, अजमेर का सूबेदार आदि किसी न किसी रूप मे उनके सम्पर्क मे आये और प्रभावित हुए थे। राजस्थान के बाहर भी उनके अनेक अनुयायी बने, यहा तक कि दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी को भी उन्होने ज्ञानोपदेश द्वारा सुपथ पर चलने की प्रेरणा दी थी।

जीवन म सच्चाई, ईमानदारी, सादगी, पवित्रता और कमठता उनके आदश थे। किसी का हक मारना उनको इष्ट नही था। वे कथनी और करनी म एकरूपता चाहते थे। व आडम्बरो से दूर और जातिगत बन्धनों से परे थे। उन्होंने कममय जीवन का उपदेश देते हुए आत्मसम्मान और लोकमगल का भाव दृढ किया। तत्कालीन मरु-प्रदेश म उन्होने सांस्कृतिक, वचारिक, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से क्रान्ति की थी। अन्तत मनुष्य ही उनका लक्ष्य था। उनको लेकर लिखी गई अनेकश रचनाएँ उनके महामहिम व्यक्तित्व का किंचित् परिचय देती हैं। उनकी वाणी का प्रभाव शोधक और स्थायी सिद्ध हुआ है।

इल मा अधिमारी हुवो, जाणि भोम्य वरत्यो भाण ॥ ३ ॥
–केसोजी गोदारा, साखो।

(ख) नाल्हासर की साथरी, चिरत कियो मुरारी।
दास मीठु वल्य जात है, छवि आई सारी ॥ ४ ॥–मीठुदास, हरजस।

(ग) सवत १५९३ मगसर वद नुय साम्ही अलोप हुवा। वासे लोक दीपाव न पु तेळो मेल्ह गया। ८५ बरस ३ माहीना १ दीन ३ घडी नीरहारी पुरस प्रगट रह्या। नाल्हासर थी तालव्य ल्याया।–परमानदजी वणियाळ, साका"। प्रति सख्या २०१।

1–साथरीया भाभोलाव रो मतो करि १० दसुय र दीन मुकाम कीयो। पछ राव जतसी लूणकरणोत आडो फिर्यो। माहर देस रो देव बीज देस लेजाण द्यो नही। सवत १५९३ मगसर वद ११ मुगट री नीय थरपी।–परमानदजी वणियाळ, "साका"।
–प्रति सख्या २०१।

वाणी (सबदवाणी) जाम्भोजी की वाणी "सबदवाणी" नाम से प्रसिद्ध है (विशेष द्रष्टव्य–विश्नोई सम्प्रदाय नामक अध्याय)। "सबदवाणी" का प्रधान प्रतिपाद्य शान्तरस ही है। उसमें यत्र-तत्र उत्कृष्ट काव्य के लक्षण भी मिल जाते हैं किन्तु वह उसका मुख्य स्वर नहीं है। उसका लक्ष्य आत्मज्ञान और लोकमंगल है। यथावधि जाम्भोजी के १२३ "सबद" और कतिपय मंत्र ही प्राप्त हुए हैं। राजस्थानी साहित्य सामान्यतः और विश्नोई साहित्य विशेषतः सबदवाणी से किसी न किसी प्रकार से प्रभावित है। साहित्य, धर्म, संस्कृति और विचारों के क्षेत्र में यह नये आयाम, मापदण्ड और भूमिका प्रस्तुत करती है। १६वीं शताब्दी के मरुप्रदेश की लोक-भाषा की धारणा उसमें सुरक्षित है। विश्नोई सम्प्रदाय उत्तरी भारत का पहला धार्मिक (संत) सम्प्रदाय है और सबदवाणी उसका मूलाधार है। पूर्ववर्ती और परवर्ती वैचारिक परम्पराओं को समझने का यह महत्वपूर्ण साधन है। इन्हीं सब धारणाओं से आगे सबदवाणी का सम्पादन और उसके आधार पर जाम्भोजी के दर्शन और अध्यात्म विषयक विचारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। मंत्र परिशिष्ट में उद्धृत किये गये हैं।

म्हे खोजी था विड होजी नाही, मोज लहा घुर खोजू ॥ ५ ३, ४ ।
रतनक्या साच वी ढोळी, गुर प्रसादे केवळ ग्याने, २१ १६, २० ।
भ्रम आचारे मोल्हे मजमे, सतगुर तूठे पाइय ॥ २१ २१ २२ ।
उतिम कुळी का उतिम न कहिवा, कारण किरिया माहू ॥ २४ ४ ।
पहलू किरिया आप कुमाइय, तो अवरा नै फुरमाइयै ॥ २८ ३१, ३२ ।
विसन विसन तू भणि रे प्राणी, वळि वळि वारोवारू ॥ ३१ १३, १४ ।
सुररत करता हरखति भाव, तो ना पछतावो करियो ॥ ३२ ७ ।
करण विणि कूकम रस विणि वाकम, विणि किरिया परवारू ॥ ७५ ७ ।
घर आगो अत गोकळवासो, कडी मायोवारी ॥ ८४ १५ ।
भाग परापति करमा रेखा, दरग जुवळा जुवळा मायू ॥ ८६ ३१ ।
हेक हक पावत अनोपाव मागू, अनव माग पाळि ले ॥ ९१ ६ ।
दिरद नाव विसन को जपो, हाये करो दवाई ॥ ६६ ५ ।

—जम्भवाणी (सबदवाणी) से ।

अध्याय ५

जाम्भोजी : दर्शन और अध्यात्म

इस अध्याय में स्व-सम्पादित जम्भवाणी (सबदवाणी, द्रष्टव्य-अध्याय ६) के आधार पर जाम्भोजी के दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

१-स्वयम्भू विष्णु-अनेक नाम -स्वयम्भू के महत्त्व नाम* हैं[१]। जाम्भोजी ने सबद-वाणी तथा मंत्रों में परमसत्ता को द्योतित करने के लिये अनेक नामों का प्रयोग किया है। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं —

विसन[२] (विष्णु), स्वयम्भू[३], सारंगधर[४], सुरराय[५], मुरारी[६], बिसमला, रहमान, रहीम, करीम[७], खुदावन्द[८], खुदा[९], अल्लाह[१०], 'ओम्'[११], गुरु[१२], सतगुरु[१३], राम[१४], कृष्ण[१५], हरि[१६], श्याम[१७], पारब्रह्म[१८], लक्ष्मण[१९], लक्ष्मीनारायण, मोहन, गोपाल[२०],

---

* आगे उदाहरण जम्भवाणी (सबदवाणी) से दिए गए हैं। संदर्भ संख्या के पश्चात् इनका क्रम इस प्रकार है —
पहले सबद-संख्या, विसर्ग ( ) के पश्चात् उनकी पंक्ति-संख्या, अल्पविराम (,) के पश्चात उसी सबद की अन्य पंक्ति-संख्या तथा अर्द्धविराम (;) के पश्चात पुनः सबद-संख्या है।

१-९३।
२-बाळक मंत्र ६ २०, ११ १९, २९ १० ३१ ११३, ३२ ८, ३८ ८ ५५ ५, ६३ २५ ६६ १८, ३०, ७६ ३, ८९ ३६, ९३ १८, १११ ६, ११९ १२०, १२१, १२२।
३-३ २१, ४ ९, ६३ १, ९५ १ १०४ ११
४-९५ ८।
५-६ १३, २३।
६-९३ १।
७-६७।
८-३९ ७ ७५ ६।
९-८ ५।
१०-६८ १०।
११-बाळक मंत्र, पाहळ मंत्र, ६४ १।
१२-१ ७२ ६, १०५ १, १०६ १३।
१३-१०७ ४।
१४-७६ ६।
१५-१ २१ १२, १४ ४, ३० ९ ४५ ४, ७० १, ९२ ३ १०५ ३।
१६-बाळक मंत्र; ७५ ८ ९६ १, १२० ३।
१७-११३ २।
१८-६ २४।
१९-३८।
२०-बहनवल मंत्र।

परमेसर[1], नारायण[2], परमराम[3] आदि। इनके अतिरिक्त परमसत्ता के विशेषण रूप में स्वयभू[4], अलख[5], अपरम्पर[6], निरह[7], अलील[8], निरालम्ब[9], अलाह, अलेख, अडाळ, अजानी[10] आदि शब्द कहे हैं।

सम्प्रदाय में जाम्भोजी और निराकार विष्णु एक ही माने जाते हैं। उन्होंने भी स्वयं को परमसत्ता स्वयंभू मानते हुए अनेक प्रकार से अपनी विभूतियों और शक्तियों का उल्लेख किया है[11]। इनसे अद्वैत भावना स्वयं सिद्ध है। अपने लिए निराहारी[12], शून्यमण्डल का राजा[13], कवल्य-भानी[14] सतगुरु[15] आदि शब्द कहे हैं।

जाम्भोजी परमसत्ता के अवतार में विश्वास रखते हैं। वे विष्णु के दसावतार मानते हैं जिनमें नौ तो पहले हो चुके हैं और भविष्य में दसवें—कल्कि की बारी है[16]। दसावतार के नाम ये हैं—मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, नृसिंह, परसुराम, राम-लक्ष्मण, कृष्ण, बुद्ध[17] और कल्कि[18]।

२-विष्णु नाम –

विष्णु का नाम उतना ही शक्तिमान है जितने कि स्वयं विष्णु या स्वयंभू। जैसे विष्णु सृष्टि का मूल तत्त्व है वैसे ही विष्णु का जप भी मूल तत्त्व है[19]। वहनवर्ण मन्त्र में सात उपमाओं के द्वारा इसकी महत्ता प्रतिपादित की गई है। विष्णु नाम तो सदा ही निर्मल है[20]। इससे आत्मतत्त्व की उपलब्धि[21], जरा-मरण से छुटकारा और बैकुण्ठ-वास

मिलता है[1]। जप में अनन्त गुण हैं क्योंकि इससे मृत्योपरान्त क्षण-मात्र में मोक्ष प्राप्ति होती[2] तथा अनन्त पुण्य मिलता है[3]। अतः आत्मोद्धार के निमित्त अपरम्पार विष्णु का जप करना चाहिए[4]।

३-स्वयम्भू विष्णु की विभूतियाँ स्वरूप-वर्णन –

निरंजन स्वयम्भू अनादि है। जब पवन, पानी, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्र आदि कुछ भी नहीं थे तब शून्य में केवल निरंजन ही थे[5]। परमतत्व सबका सृजनकर्ता है, उसका रहस्य नहीं पाया जा सकता, वह ताप और शीत से परे, तन, रक्त, धातु[6], रूपरेखा, चिह्न और वर्ण रहित, गहन, अथाह और केवल अनुभव का विषय है[7]। उसके स्वरूप का वर्णन अमृत के स्वाद की भांति वाणी से नहीं किया जा सकता और सागर में मछली के मार्ग की भांति उसका भेद नहीं पाया जा सकता[8]। वेदव्यास और ज्ञानी व्यक्ति इस कारण उसके सम्बन्ध में नेति-नेति ही कहते हैं[9]। उसके स्वरूप का वर्णन कर सकने का दम्भ भरने वाले लोग केवल झूठ-कथन ही करते हैं[10]। उसके विषय में जो व्यक्ति कुछ जानने की बात कहते हैं वे तो कुछ भी नहीं जानते किन्तु जो यह कहते हैं कि वे उसके विषय में कुछ भी नहीं जानते वे किंचित-मात्र अवश्य जानते हैं[11]।

४-विष्णु की व्यापकता –

विष्णु चारों योनियों में, अनन्त रूपों में, पवन की भांति सर्वत्र निरन्तर रूप से व्याप्त है। नदियों में नीर रूप में और सागर में रत्न रूप में[12]। सात पाताल, तीन लोक, चौदह भुवन, बाहर-भीतर सर्वत्र वही विराजमान है[13]। दूध में पानी[14] और फूलों में पराग के समान[15] वह भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होता है और सबके दिलों में मौजूद है[16]। वह सबका साक्षी है इसलिये सबको कृष्ण-मय ही देखना चाहि

१-१०५ ५ १२१, १२२।
२-१२१।
३-६५ ८, ६।
४-६ १ ३१ १३, ६६ ३७ ८६ १३, १५।
५-३।
६-४ १२।
७-१३ १०-१०।
८-२६।
६-३३ १-४।
१०-३३ ८, ३४ ६, ३५ ६ ३६ ८।
११-१६ १-४।
१२-११७ ५ ६।
१३-४३ ६३ ३३, ३४।
१४-१५।
१५-६४ ११।
१६-६७ १-५, १७।
१७-०२ ३।

करने वाला ही मोक्षलाभ करता है[1]।

५-विष्णु मूल तत्व है :-

वृक्ष के मूल की भांति आवागमन से मुक्ति का साधन विष्णु-जप है[2]। परलोक सुधारने के लिये विष्णु की ही खोज करनी चाहिए[3]।

६-अवतार धारण -

परमसत्ता विष्णु शुभ कर्म करने वालों के निस्तार और धर्म-रक्षार्थ अवतार धारण करता है[4]। जब-जब शैतान अहंकार के वशीभूत होकर अन्याय करते हैं[5], दुष्ट अनुचित काम करते और भगवद्-प्रेम रत साधु पुरुषों को दुःख देते हैं, तब-तब महान् आत्मा का प्रादुर्भाव[6] और भगवद्-महिमा फलीभूत होती है[7]।

७-मूर्तिपूजा की निन्दा -

जाम्भोजी यद्यपि भगवान् के अवतार में विश्वास रखते हैं तथापि किसी भी रूप में उनकी मूर्तिपूजा स्वीकार्य नहीं है, वे इसकी घोर निन्दा करते हैं[8]। इसी प्रकार तीर्थाटन भी बाह्य दिखावा मात्र है। अड़सठ तीर्थ तो हृदय में ही हैं[9] किन्तु कोई "गुरुमुखी" व्यक्ति ही इस तीर्थ में स्नान करता है[10]।

जाम्भोजी शास्त्र और पुस्तक ज्ञान की महत्ता स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार वेद, शास्त्र थोथे नहीं हैं किन्तु उनका सार-ग्रहण किया जाना चाहिए। पढ़ लिख कर उनका मर्म समझना चाहिए किन्तु निगुरे व्यक्ति काठ और पाषाण की मूर्तियों की पूजा में ही लगे रहने के कारण ऐसा नहीं कर पाते हैं[11]।

८-सद्गुरु :—सद्गुरु-प्राप्ति आवश्यक है, वह संसार-सागर से पार लगा सकता है[12]। बिना गुरु के मुक्ति सम्भव नहीं है[13]। उसको जाने बिना सुपथ नहीं मिलता और जन्म व्यर्थ जाता है[14]। परमार्थ-मार्ग में गुरु मूल तत्त्व है। "निगुरों" के मन में अज्ञानान्धकार छाया रहता है, ज्ञान-सूर्य तो "सुगरों" के हृदय में ही प्रकाशित होता है[15]। सद्गुरु ही

१-१८ १३।
२-२६ ३।
३-६६ ३८, ४३।
४-पाहळ मन्त्र।
५-८७ ३७, ३८।
६-६४ ७, ११।
७-८७ ३७, ३८।
८-६६ ६ ७, १०५ १०।
९-१३ ६, ६२ ५।
१०-१७ १०।
११-२५ १-४।
१२-१३ ७।
१३-९९ ७।
१४-११ ४, ५।
१५-६८ ३, ४।

ऐसा तत्त्व बता सकता है जिससे पूर्ण योग की स्थिति और आवागमन के बंधन से छुटकारा मिल सकता है[1]। कथन मात्र से गुरु का महत्त्व नहीं बताया जा सकता। व्यक्ति दुख-सुख अपनी करनी से पाता है[2] जिसका कारण आत्मतत्त्व की उपलब्धि न होना है। गुरु-कृपा से आत्मोपलब्धि सम्भव है[3]। गुरु-उपदेश से अनेक राजाओं, भोगी पुरुषों, साधु-संतों और नाथों ने आत्मतत्त्व प्राप्त किया था[4]। सन्त सहजावस्था में रहना, शील और नाद-बिंदु धारण करना गुरु के लक्षण हैं[5]। गुरु जीवन-मुक्त, कैवल्य-ज्ञानी और अनन्तगुण युक्त तथा "मेवों का मेवा" होता है[6]।

अन्यत्र जाम्भोजी ने गुरु (सद्गुरु) को परमतत्त्व का पर्याय भी माना है[7]।

९-जाम्भोजी विष्णु हैं—कहा जा चुका है कि जाम्भोजी स्वयं को विष्णु मानते हैं। अनेक स्थलों पर उन्होंने अपनी सर्वशक्तिमत्ता का अनेक प्रकार से उल्लेख किया है। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

मैं स्वयंभू सृजनकर्ता, निरंजन, बाल ब्रह्मचारी हूँ[8]। घट-घट में मैं सूक्ष्म रूप से व्याप्त हूँ[9]। मेरे आदि मूल का भेद कोई नहीं जानता[10]। अपनी माया का निर्माण मैंने स्वयं ही किया है[11]। यदि मैं चाहूँ तो एक शरीर से कोटि शरीरों की रचना कर सकता हूँ[12]। समस्त जीव-योनियों की सम्भाल मैं क्षण-मात्र में ही लेता हूँ[13]। मुझ पर माया की छाया नहीं पड़ सकती। दृश्य और अदृश्य रूप से मैं त्रिलोक में व्याप्त हूँ[14]। प्रत्येक भुवन में मैं समरूप से प्रकाशित हूँ[15]। जीते जी मैं किसी की रोजी नहीं मारता किन्तु मरने पर आत्मा की सम्भाल लेता हूँ। यदि कोई मुझसे मिले तो मैं उसका काम सँवार सकता हूँ[16]। मैं निराहारी हूँ, केवल वायु-भक्षण करता हूँ[17] और अपने ही

१-१०७ २०।
२-८५ ५, ६।
३-२१ ३, ६।
४-६१ ३४।
५-१।
६-१३ ६-१६।
७-१, ३९ १५, ५१ ६-११, १०५ ६, ७।
८-२।
९-१।
१०-८८ ४।
११-९३।
१२-२७।
१३-६२ ६, ६३।
१४-२, १७।
१५-५ १।
१६-८१ ५, ६।
१७-१०१।

आधार पर स्थित हूँ[1]। मैं सर्वशक्तिमान हूँ[2]। सत्ययुग में सृष्टि का सृजन मैंने ही किया था, मैं विष्णु "अपरम्पर" हूँ[3]। इससे पूर्व मैंने नौ अवतार धारण करके दानवों को नष्ट किया था[4], भविष्य में दसवें अवतार-कल्कि की बारी है[5]। मैं किसी "जाये-जीव" का जप नहीं करता, निरालम्ब, स्वयंभू, स्वात्म रूप का ही जप करता हूँ[6]।

१०-जाम्भोजी के यहाँ आने का कारण-सत्ययुग में भक्त प्रह्लाद के उद्धार के लिए भगवान ने नृसिंह रूप धारण किया था। उस समय तेतीस कोटि जीव प्रह्लाद के अनुयायी थे। इनमें से हिरण्यकशिपु ने पाँच कोटि अनुयायियों की हत्या की थी। हिरण्यकशिपु के मरणोपरान्त प्रह्लाद ने इन तेतीस कोटि अनुयायियों के उद्धार का वचन भगवान से मांगा। उन्होंने सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि-चारों युगों में ऐसा करने का वचन दिया। फलस्वरूप, क्रमशः पाँच कोटि जीव प्रह्लाद के साथ, सात कोटि जीव सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के साथ तथा नौ कोटि जीव धर्मराज युधिष्ठिर के साथ- कुल २१ कोटि जीव मुक्ति के अधिकारी हो गये। बाकी बारह कोटि जीवों के उद्धारार्थ कलियुग में जाम्भोजी का आना हुआ। जाम्भोजी के यहाँ अवतरित होने सम्बन्धी यह मान्यता नवीन है और प्रायः प्रत्येक विष्णोई कवि ने यथावसर इसका सोल्लास उल्लेख किया है। सबदवाणी में प्रकारान्तर से इसको अनेक बार कहा गया है[7]।

जाम्भोजी ने अपने निवासस्थल 'समराथळ' और कार्यों का उल्लेख भी यत्र-तत्र किया है।

नागौरगढ़ के अन्तर्गत (पींपासर में) जहाँ पानी अत्यन्त गहरा निकलता है मैंने अवतार लिया है[8]। भक्तों के उद्धार के लिए भगवी टोपी धारण करके 'थळी' पर आया हूँ, जहाँ हरे कंकहड़ी वृक्षों का मंडप है[9]। निगुरे व्यक्ति मुझे गालियाँ देते हैं[10] किन्तु मैं समराथळ पर हीरों का व्यापार करता हूँ। जिनको अन्तर्दृष्टि प्राप्त है वे ही इन्हें ग्रहण करेंगे[11]। मैं पाखण्डी हूँ और मैंने पाखण्ड रचाया है। पाखंडी इसलिये कि पूर्ण योगी हूँ, पाखंड यह कि लोगों के संचित पापों को खंडित करता हूँ। जो इस पाखण्डी को पहचानता है उसकी सहज में ही मुक्ति हो जायगी[12]। मैं अपने 'सुगणे' शिष्यों का दास हूँ, ऐसे

१-६२ १, ४।
२-४२।
३-६३।
४-६३।
५-८२ ३६।
६-४।
७-१० ३, ११२ ४-६ ६६ ८-१२ ५६ ६१ ६-२० १०४ ८१, २७।
८-६३ १ २।
६-२७ ५ ७३ १ २ ८२ ३, ४ ३५ ८, १४ ६८ ६ ७।
१०-६१ १०।
११-७२ ११-१५।
१२-७६।

व्यक्ति ही स्वर्ग जाएँगे, "निगुणे" व्यक्ति तो निराश ही रहेंगे[1]। मेरी बात पुस्तकों और शास्त्रों में न लिखी होकर अनुभव की है[2]। मैं वेद-तत्त्व का बखान करता हूँ[3]। संसार में भटकते हुए अनेक लोग गुरु के बताये मार्ग पर चल कर और सच्ची करनी से पार उतर गये हैं। ऐसे पुरुष तो मुझसे आ मिलेंगे किन्तु अहंकारी लोग दुख भोगते हुए नरक में जाएँगे[4]।

जाम्भोजी ने अधिकतर जाटों को ही सम्प्रदाय में दीक्षित किया था। अपने शिष्यों को चेतावनी देते हुए उनका कथन है कि गुरु-वाट भूल कर, ज्ञान प्रकाश त्याग कर अनाना-चार में क्यों चल रहे हो ? पानी के होते हुये घड़ा खाली क्यों रखते हो ? हीरा को हाथ में क्यों फेंकते हो[5] ? काजी, मुल्ले और पंडित मेरी निन्दा करते हैं किन्तु यदि स्वर्ग चाहते हो तो मेरी आज्ञा मानो[6], क्योंकि बिना गुरु-ध्यान के मुक्ति संभव नहीं है[7]। यह एक विडम्बना है कि लोग मुझसे आत्मज्ञान की बात न पूछ कर भौतिक सुख-समृद्धि की बातें ही पूछते हैं[8] किन्तु तुम लोग मूल में न चल कर तत्त्व पर विचार करो[9]।

११-आत्मा -

जाम्भोजी ने जीव तथा आत्मा को जीवड़ा, हंस[10] और 'रतनकया'[11] कहा है। जैसे तिल में तेल और पुष्प में वास है वैसे ही पाँच तत्त्वों से निर्मित देह में आत्मज्योति का प्रकाश है[12]। जैसे ऋतुएँ बदलती हैं वैसे ही आत्मा शरीर बदलती है[13]। जीवात्मा शरीर के माध्यम से प्रकाशित होती है। अतः शरीर खेत की भली भाँति रखवाली करनी[14] तथा प्रत्येक जीव में आत्म-ज्योति का दर्शन करना चाहिए[15]। आत्मोपलब्धि गुरु-कृपा से प्राप्त होती है, संसार और आवागमन के चक्कर से वह परे की वस्तु है। आत्मा स्वभाव से ही सुन्दर और निर्मल है। उसकी प्राप्ति कैवल्य-ज्ञान, गुरु-कृपा और धर्माचरण से होती है[16]। इस जन्म में ही ऐसा होना चाहिए[17]।

१-७३ १-४।
२-१२ १-३।
३-२४ ७।
४-८१ ४।
५-११६।
६-९३ २०-२२।
७-९९ ७।
८-८३।
-११७।
९८ ८ ६।
-२१ ५, १४, १९, २८, ४१, ·१ २२, १२२ २
-१०७ १४।
-२५ ६-१०।
१४-७०।
१५-१८ ५, ६।
१६-२१।
१७-५१ ३५, ३६।

१२-माया -

(क) जगत की नश्वरता -जाम्भोजी ने संसार को 'गोवळवास'[१] बताया है। यहाँ का 'माधोवार' झूठा है। पवन में झोंका से जैसा 'भवर' बिगर जाती है वैसे ही यह संसार नश्वर है[२]। जैसे बिना दानों के भूसी, बिना रस के गन्ना और बिना क्रिया-श्रम के परिवार व्यर्थ है वैसे ही संसार की उलझनों में पड़ना भी व्यर्थ है[३]।

(ख) पार्थिव वस्तुएँ मिथ्या हैं —पार्थिव वस्तुएँ मिथ्या हैं, इनसे पृथक रहना चाहिए[४]। दुनिया 'गाजे-बाजे' में रत है किन्तु यह बाजरे की भूसी के समान माया है। दुनिया के रंग में न रंग कर, स्वयं को धर्म के रंग में रंगना चाहिए। काच के समान दिखाई देने वाली सांसारिक वस्तुओं में नहीं रमना चाहिए[५]।

(ग) नाते-रिश्तों की असारता —माता पिता, भाई-बहन, परिवार जीव के वास्तविक साथी नहीं हैं। लोग भ्रम से इनको अपना समझते हैं[६]।

(घ) सांसारिक मोह माया-जाल है संसार का 'मीठा झूठा' मोह माया-जाल है जो नष्ट हो जायगा। इसलिये पार्थिव वस्तुओं की प्राप्ति का अहंकार नहीं करना चाहिए[७]। संसार माया जाल की श्रृंखला से बंधा है, वेद और कुरान के नाम पर जाल फैला हुआ है। वास्तविक ज्ञान के स्थान पर यहां केवल दन्तकथाएँ ही चल रही हैं[८]।

(ङ) दुनिया का स्वरूप —जाम्भोजी ने अनेक बार तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्थिति के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बातें कही हैं। ऐसा करने में उनका उद्देश्य वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए चेतावनी देना और समझाना था। उनके अनुसार, दुनिया वाद विवाद में रत है किन्तु इससे दानवों की भांति लोग नष्ट हो जाएँगे[९]। वेद और कुरान के नाम पर लोगों ने ढोंग फैला रखा है जिससे दूर रहना चाहिए[१०]। लोगों को प्रशंसा भरी मनभावनी बातें तो अच्छी लगती हैं किन्तु खरी बातों का कोई विश्वास नहीं करता[११]। ब्राह्मण वेदों को, काजी कुरान को और जोगी जोग को भुला बैठे हैं। मुण्डियों में तो अवल ही नहीं है। कलियुग में तत्व न जानने के कारण सभी भ्रम में हैं। माता पिता व्यर्थ ही अपने

१—मरु प्रदेश में अकाल पड़ने पर कृषक लोग अपने पशु लेकर प्राण रक्षार्थ अन्य स्थानों में चले जाते हैं और इनमें तब तक रहते हैं जब तक कि इनके मूल स्थानों में सुकाल न हो जाय। दूसरे स्थानों में इस अस्थायी रूप से रहने को 'गोवळवास' कहा जाता है। ५१ ३४ ८४ १४।
२-२२ १, ४।
३-७५ ७ ८।
४-११४ १-४।
५-६६ १२, १६।
६-३१ ९-२३, ९९ १३, १४।
७-२९ २३, २४ २३ १-४, ६६ १-३।
८-९७ १-३।
९-१९ १५, १६।
१०-७२ १-५।
११-६ १४, १५।

पुत्र-लम्ब या अनेक प्रकार की कामनाएँ करते हैं[१]। अभी लोग वाद विवाद में रत, आचार-विचार हीन, कीर्ति के लोभी[२] और मनभावनी बातों से प्रसन्न होने वाले हैं इसलिए यह इनकी बालक बुद्धि[३] ही है।

(च) मानव माया-जाल में है –संसार में प्रत्येक प्राणी किसी न किसी कारण से दुखी है[४]। ऐसे लोग हीरा के बदले पत्थर तोल रहे हैं[५]। ध्यान रखना चाहिए कि फल प्राप्ति कर्मानुसार ही होती है[६]। विचित्र बात है कि मनुष्य जगत को जीतने का तो उपाय करता है किन्तु उनसे अपनी देह तक भी नहीं जीती जाती[७]। वह भ्रम में पड़ कर व्यर्थ ही वीरान जंगल में भटक रहा है[८]। उसको अब और अधिक भूल में नहीं रहना चाहिए[९]। किसी भी क्षण इस संसार छोड़ना पड़ सकता है, इसलिए अपने शत्रुओं को छिपाना व्यर्थ है[१०]। शरीर नश्वर है संसार में अनेक झंझट हैं और अन्त समय में किसी की आशा नहीं, इसलिए गफलत में कदापि समय नहीं बिताना चाहिए[११]।

(छ) मृत्यु की अनिवार्यता –मृत्यु तो सबकी होगी, जड़ी-बूटी से उसको टाला नहीं जा सकता[१२]। अनेक बलशाली व्यक्ति यहां आकर चले गये[१३], फिर कलियुग के मनुष्य का तो विचार ही क्या किया जाय ? मृत्यु का मार्ग एक ही है और सबके लिये है। 'रिणछारो' के समान मानव-देह नष्टप्राय है और रक्तधातु के नाते-रिश्ते घास के समान कुम्हलाने वाले हैं[१४]।

११-शरीर, मन, इन्द्रियाँ –

(क) शरीर –मायामय संसार की असारता की उपपत्ति है-शरीर की क्षणभंगुरता किन्तु इस शरीर का महत्व बहुत ज्यादा है क्योंकि परमतत्व इस पिंड में ही प्राप्त किया जा सकता है, आवश्यकता केवल साधना की है[१५]। मानव देह पूर्वजन्म के पुण्य से प्राप्त होती है जो अहर्निश क्षीण होती जाती है[१६]। माली जैसे बाड़ी को सींचता है वैसे ही शुद्धाचरण

१-८३ १५-१६।
२-२८ ६६-६९।
३-६१ १-३।
४-१९।
५-४६।
६-३१ १५, १६।
७-६६ १-३।
८-५१ २६-३४।
९-७५ १।
१०-८४ १, २।
११-९९ १३, १४।
१२-१६ १३, १४।
१३-६६ ८६ १०-१३, ८७ ३९-४४ २३ ११, ६६ ।
१४-८६ २३, २५।
१५-४० १०६।
१६-११ १२, १३ ५७ ३ ४।

से शरीर की रक्षा करनी चाहिए[1] । जब तक शरीर ठीक है तभी तक उपाय कर लेना चाहिए । मृत्यु के समय तो कुछ करत धरत नहीं बनता[2] ।

शरीर की क्षणभंगुरता को बार-बार बताते हुए अनेक उपमाओं से जाम्भोजी ने समय रहते चेतने पर बल दिया है[3] । काया-रूपी अस्थिरगढ़ का राजा मन है[4] । काया कोट में पवन की 'कोटवाली' है और पाप का ताला लगा हुआ है[5] । गुरु-कृपा से काया-गढ़ की खोज करनी और काम, क्रोधादि चोरों को रोकना चाहिए[6] । संसार में आते समय क्षण भर तो लगा था किन्तु जाते समय उतना भी नहीं लगेगा[7] । काया को नष्ट होता देख कर "झूरना" नहीं चाहिए क्योंकि पिंड तो नष्ट होगा ही । मन की वासनाओं के साथ जीवात्मा स्वर्ग में जाती है[8] । इसलिए आयु, कुल और पद का विचार न करके अपने कर्मों को सुधारना चाहिए[9] ।

(ख) मन, इन्द्रियाँ—मन को यदि वश में कर लिया जाय तो मुक्ति का मार्ग खुल सकता है क्योंकि "कायानगरी" का राजा मन बहुत ही शक्तिशाली है । यदि उसको वश में और इन्द्रियों को विषयों से पृथक कर लिया जाय, तो जरा-मरण का भय दूर हो सकता है[10] । जोगी को लक्ष्य कर वे कहते हैं—तुम मूंड तो मुंडाते हो किन्तु मन नहीं मुंडवाते[11] । मन डोलना, ध्यान हटना नहीं चाहिए, ब्रह्माग्नि दिन-रात प्रज्वलित रहनी चाहिए[12] । वासनाओं और सांसारिक आकर्षण में मन को लिप्त नहीं होने देना चाहिए[13] । दुविधा-वृत्ति को सर्वथा त्याग कर मन को निश्चल और एकाग्र रखना चाहिए क्योंकि एकाग्र मन से ही कोई कार्य सम्भव है तथा ऐसे व्यक्ति ही अमृत-तत्त्व को पाते हैं[14] ।

अन्तःकरण शुद्ध होना चाहिए । यदि दिल साफ है तो अड़सठ तीर्थ और काबा उसी में हैं[15] । संसार की दस्तादस्ती और मनमानी नहीं करनी चाहिए[16] ।

१-८४ ५-९ ।
२-६ १६-१९ ११ ६-९ २९ २९-३२ ।
३-२९ २७, २८, ५१ २४, २५, ५२ ६, ७, ७१ ८-१२ ८४ ५-६, ९८ ५-१०, ६६ १५ १६ ४४ ५, ६,
४-७७ ।
५-९७ १-३ ।
६-८३ १ २ ।
७-८६ २६-३० ।
८-९१ १४, १८ ।
९-२४ ।
१०-९१ ।
११-५२ १-४ ।
१२-९१ ४, ५ ।
१३-५० २ ।
१४-४८ १-१४, २५ २३, ६ २ ।
१५-९ १ ।
१६-११० ।

पाँचों इन्द्रियों और नवद्वारों को वश में करना चाहिए[1]। स्वार्थ-भावना से दूर रहना, भोग खाना-पीना और पहनना, सदा सादगी और सदाचरण पूर्वक रहना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है[2]।

१४ सृष्टि क्रम –

सृष्टि के आदि में केवल "धन्धूकार"[3] या शून्य था। जाम्भोजी ने अनेक वस्तुओं के न होने का उल्लेख करके इसी स्थिति को दर्शाया है[4]। "धन्धूकार"[1] स्थिति में जब छत्तीस युग बीत गये[5] तो निरंजन[6] स्वयंभू ने मन में सृजन का सकल्प किया, जिससे आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी–पाँच तत्त्व बने। इन तत्त्वों से समस्त सृष्टि का निर्माण हुआ। आदि में एक अण्डा बना, फूटने पर वह धरती के रूप में स्थिर हुआ, उसमें जल की उत्पत्ति हुई, जल में विष्णु और उनके नाभि-कमल से ब्रह्माजी उत्पन्न हुए। हरि की इच्छा और विष्णु की माया से सृष्टि की उत्पत्ति हुई और शरीर भी उनकी कृपा से मिला[7]। अन्यत्र इसी बात को किंचित् अन्तर के साथ कहा है। सृष्टि से पूर्व केवल एक 'ओंकार' था[8]। जब चौदह भुवनों में पानी ही पानी था तब केवल "ओम्" शब्द ही गुंजायमान था। उस पानी में अण्डा उत्पन्न हुआ तथा ब्रह्मा और शिव प्रादुर्भूत हुए[9]। स्वयंभू ने सत्ययुग में समस्त सृष्टि का सृजन किया, ब्रह्मा, विष्णु और महारुद्र की स्थापना की, चन्द्रमा और सूर्य–दोनों को साक्षी बनाया तथा आकाश, पवन और पानी का निर्माण किया। वराह अवतार धारण करके दाढ़ पर चढ़ा कर पृथ्वी का उद्धार किया[10]। इस भाँति सृष्टि की स्थापना भगवान ने की है[11]।

१५-पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त –

जाम्भोजी पुनर्जन्म और कर्म-सिद्धान्त पर अटल विश्वास रखते हैं। चौरासी लाख योनियों का उन्होंने मान्यता पूर्वक उल्लेख किया है[12]। फल-प्राप्ति अपनी-अपनी करनी के अनुसार होती है, इसमें विष्णु का कोई दोष नहीं[13] है। जैसी खेती की जायगी फसल भी वैसी ही मिलेगी[14]। इन्द्र वर्षा करता है किन्तु धरती पर खेत और बीज के अनुसार ही पौधे, फसल

१-५४ ७, ८।
२-८६ ७, ८ ७४ ७१ १५-१७।
३-३ २२, ९५ २।
४-६५।
५-९३ १-४।
६-३।
७-आलक मन्त्र तथा कळशपूजा मन्त्र।
८-पाहळ मन्त्र।
९-६४।
१०-६३ १-८।
११-१ ६।
१२-३ १०।
१३-११ ३१, ३२।
१४-२८ १४-१८।

और फल पैदा होते हैं। पात्र और उसकी करनी के अनुसार फल मिलता है, पानी का इसमें कोई दोष नहीं है। यहाँ जाम्भोजी ने कर्मों की दोहरी महत्ता बताई है। अच्छा जन्म और जीवन पूर्वजन्म के पुण्य-कर्मों के कारण मिलता है और इस जन्म में किये गये सत्कार्य आगे अच्छा फल देते हैं। बीज की भाँति जीव भी अच्छे-बुरे होते हैं[1]। व्यक्ति कर्मों से ही ऊँच और नीच माना जाता है, कुल और आयु से नहीं[2]। स्वर्गप्राप्ति के भिन्न-भिन्न मार्ग हैं[3]। बुरा कर्म करने वाला यदि जन्म से नहीं तो कर्म से अवश्य चाण्डाल है[4]। जाम्भोजी ने कतिपय उदाहरणों के द्वारा भी इसका स्पष्टीकरण किया है[5]।

आवागमन -ओछी करनी करने वाले आवागमन के चक्र में उलझे रहते हैं, उनकी मुक्ति-कामना सूखे ठूँठ पर पान की भाँति दुराशा मात्र है[6]। सृष्टि क्रम तो चलता रहता है किन्तु भ्रम में भटकने हुये लोगों का अनुसरण नहीं करना[7] और जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा पाने का सतत प्रयास करना चाहिए[8]।

१६-स्वर्ग-नरक -

जाम्भोजी ने कैवल्यप्राप्ति या मोक्ष के अर्थ में स्वर्ग का प्रयोग किया है। अहंकारी और दुष्ट व्यक्ति नरक में जाता है, वहाँ यमराज उसको दण्ड देते हैं। उसकी पुकार वहाँ कोई भी नहीं सुनता[9]। एक 'सबद' में जाम्भोजी ने मृत्यु के पश्चात् यम के सामने होने वाली जीव की करुणाजनक स्थिति का चित्रण किया है। सार रूप में उनका कथन है कि साथ तो केवल सुकृत ही चलते हैं[10]। जब करनी का हिसाब लिया जायगा तो माँ, बाप, बहन, भाई, मित्र आदि कोई भी गवाह रूप में नहीं बोलेगा[11]। यमपुर और यमदूतों का भी सविस्तर वर्णन एक 'सबद' में किया है[12]। मृत्यु-समय तो कुछ भी करते-धरते नहीं बनेगा और बिना सत्कार्यों के पछताना ही पड़ेगा[13]।

१७-मुक्ति -

मुक्ति का तात्पर्य है सदा-सर्वदा के लिए आवागमन से छुटकारा। इसको जाम्भोजी ने स्वर्ग पाना, सुरों की पनाह पाना[14], सुर-सभा में समाना[15], देवों से मिलाप होना,

१–२० ।
२–२४ ३–५ ।
३–८६ ३१ ।
४–११३ ।
५–२५ १४, १५, १११ ।
६–७५ ६६ ३४, ३५ ।
७–८६ ३१–३५ ।
८–२८ १–३, ६८ ३८, ५२ १०–१५ ।
९–११३ ।
१०–२८ ।
११–६५ १०–१८ ।
१२–६६ ।
१३–६८ ५–१० ११३ ।
१४–५१ १६ ।
१५–२८ ६३ ।

पार पहुंचना, वकुण्ठ पाना, उद्धार होना[1] , 'भिसत' (बहिश्त) पाना[2] आदि शब्दो से द्योतित किया है। मनुष्य का चरम प्राप्तव्य मुक्ति ही है। विष्णु-नाम-जप, सदगुरु प्राप्ति[3] , निष्काम-कर्म[4] , अहकार-त्याग[5] , सदाचरण, इसके प्रधान उपाय हैं। यह आवश्यक नही है कि मरने के बाद ही मुक्ति हो, जीते जी मुक्ति, जीवन-मुक्ति प्राप्त करना श्रेयस्कर है और यह सम्भव भी है[6] । एक बार की मुक्ति सदा की मुक्ति है। जो हक और हलाल की कमाई खाता, मरण को प्रमाण मानता[7] और जीने की विधि जानता है वही जीवन-मुक्ति प्राप्त कर सकता है[8] ।

सुकृत के अन्तगत उन सभी कार्यों की गणना है जो किसी न किसी प्रकार आत्म-दर्शन और मोक्ष-प्राप्ति मे सहायक होते हैं। सुकृत व्यर्थ नही जाते[9] किन्तु सदैव निष्काम भाव से ही कर्म करने चाहिऐं। "सकाम कर्मों" से आवागमन का चक्कर जारी रहता है। जाम्भोजी ने कर्ण और विदुर के दृष्टान्तो द्वारा इसको स्पष्ट किया है[10] । मुक्ति के लिए हरि-कृपा आवश्यक है[11] ।

१८-ज्ञान, भक्ति और प्रेम -

ज्ञान के मुख्यत दो अर्थ हैं—एक विद्वत्ता, दूसरा तत्त्व-ज्ञान। जाम्भोजी दोनो का ही महत्त्व स्वीकार करते हैं। उन्होंने शास्त्रीय ज्ञान की भर्त्सना नही की है किन्तु उनका सही आशय समझने पर जोर दिया है। बिना ग्रन्थ पढे भी व्यक्ति अनुभव से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अनुभव-ज्ञान एक-दो दिन म अर्जित नही किया जा सकता उसके लिए सतत सचेष्ट रहना पडता है। उन्होंने अनेक 'सबदों' मे चेतावनी देते हुए अज्ञानान्धकार से दूर रहने और ज्ञान-प्राप्ति हेतु प्रयास करते रहने का आग्रह किया है।

भगवन्नाम जप और सत्सग भक्ति मार्ग के सभी वर्गों मे श्रेष्ठ माने जाते हैं। नाम भजन के दो प्रकार हैं - एक सस्वर नामोच्चारण तथा दूसरा अजपाजप। जाम्भोजी पात्र भेद से दोनों का ही उपदेश देते हैं। विष्णु नाम जप को वे मुक्ति का मूल मन्त्र मानते हैं। इसी प्रकार सत्सगति अवश्य करनी चाहिए। इससे आदमी सुधरता और उन्नति करता है। लुहार म से कारीगर की सगति से लोहा घडते-घडते सोना भी घडने लगता है और काठ के सयोग से लोहा पानी पर तरने लगता है[12] । जसे अच्छा रग चढने पर कपडे की कीमत बढ जाती

१-५६।
२-६७ १६।
३-६६ ७।
४-२८।
५-५६ १६।
६-६७ ४।
७-६७।
८-१०५ ६।
६-६७ ७।
१०-२८।
११-७५ ४५ ३-५।
१२-१४।

है, प्रेम ही सत्संग से पदोन्नति होती है। साधु लोग स्वच्छ सफेद रुई की भांति सब प्रकार के रंग ग्रहण करने वाले होते हैं किन्तु काली ऊन के समान दुष्ट पुरुषों पर दूसरा रंग नहीं चढ़ता[1]। साधु पुरुषों की संगति से चंचल मन भी शांत हो जाता है[2]। भगवद्-प्रेम के बिना भौतिक वस्तुओं का संग्रह-नमक-रहित भूसी के समान है[3]। सबके दिलों में भगवान का वास है, इसलिए क्रोध-मोह और "छोत" की भावना निस्सार है[4]। सुकृत करते हुए सदा भगवद्-प्रेम में रत रहना चाहिए[5]।

अध्यात्म-क्षेत्र में भगवद्-कृपा होना परमावश्यक है, यह कह आये हैं[1]। ध्यातव्य है कि जाम्भोजी को प्रेमाभक्ति या गलदश्रु भावुकता बिल्कुल ही स्वीकार्य नहीं है।

१६—साधना, योग, विश्व दृष्टि —

आत्मतत्व-प्राप्ति के लिए सबदवाणी में हठयोग साधना का उल्लेख मिलता है किन्तु सर्वाधिक बल उन्होंने मंत्र-योग या जप-योग पर दिया है। विष्णु नाम जप आत्मोपलब्धि का सर्वश्रेष्ठ साधन है। पाठ-भेद से हठयोग साधना के संकेत भी यत्र-तत्र मिलते हैं जिनके कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —प्राणवायु निरोध से परमात्मा पिंड में ही प्राप्त किया जा सकता है। इससे गगन-मण्डल से झरता हुआ अमृत-पान संभव है, जिससे भूख प्यास मिट जाती जाती है[7]। शरीर में प्राणायाम से सूर्य-चन्द्रमा का संयोग कराना चाहिए[8]। सूर्य-चन्द्रमा घट में हैं और अनाहतनाद हो रहा है, इसको समझना चाहिए[9]। पवन, पानी (रतस), दस इन्द्रियां नव द्वार, वश में करने चाहिएँ। "बंकनाल" साध कर त्रिकुटि पर ध्यान लगाना, माया के बंधन तोड़ कर सत्य की साधना करने वाला ही पूर्ण योगी है और वही "शून्य मंडल" में खेलता है[10]। ऋद्धि-सिद्धि पिंड में प्राप्त की जा सकती है[11] किन्तु इसके लिए योगाग्नि से विषय-वासनाओं को भस्म करना आवश्यक है[12]।

जाम्भोजी ने सहज-मार्ग पर ही चलने का आदेश दिया है। इसके लिए उन्होंने बौद्ध-सिद्धों द्वारा प्रयुक्त शब्द "औंजू की वाट"[13] का उल्लेख किया है। तत्त्वप्राप्ति के मार्ग पर विरले ही चलते हैं क्योंकि इसके लिए अपने आप को मारना पड़ता है, अतः 'निगुरे'

१—२५।
२—पाठ भेद।
३—७६ ६।
४—३६ १—७।
५—३७।
६—१२ १४ ३, ४, १, ३० ८, ६।
७—४०।
८—६६।
९—५७ ५—११, ८६।
१०—१०६।
११—१०९।
१२—६६।
१३—२२ ३, ११४ ४।

व्यक्ति यह "भूभ" नहा रचाते[1]। इसके लिए बाह्य वेश व्यर्थ है। तत्त्व सद्गुरु बता सकते हैं[2] और साधक उसको जान कर पूर्ण योगी बन सकता है[3]।

२०-आचार-व्यवहार, आत्मानुशासन के मुख्य नियम —

जाम्भोजी ने व्यावहारिक जीवन में कतिपय नियमों का पालन विशेष रूप से आवश्यक बताया है। सदाचरण पर वे बहुत ही जोर देते हैं, आचार-विचार सम्बन्धी शैथिल्य उनको कदापि मान्य नहीं है[4]। मुक्ति-हेतु भी इनका पालन परमावश्यक है। सम्प्रदाय में स्वीकृत २९ धर्म-नियमों का पालन इसी कारण है। आगे उन प्रधान नियमों का उल्लेख किया जाता है जिनका प्रतिपादन जाम्भोजी ने अनेक बार किया है। चार प्रकार से ऐसा किया गया है - एक तो सीधे विधि-निषेधात्मक रूप में, दूसरे किसी प्रसंग-विशेष के सन्दर्भ में, तीसरे प्रति-बोध रूप में और चौथे मुक्ति-प्राप्ति के आवश्यक अंग के रूप में। कहना न होगा कि २९ धर्म-नियमों की आधार-भित्ति ऐसे कथन ही हैं।

विष्णु मूल तत्त्व है इसलिए निरंतर विष्णु का जप जपना चाहिए[5]। वाद-विवाद[6], अहंकार[7], झूठ[8], निन्दा[9], द्वैत भावना[10], चोरी[11], क्रोध[12], मोह[13] और जीवहत्या[14] का सर्वथा त्याग करना चाहिए। बैल[15], गाय[16], भेड़-बकरी[17] आदि निरीह जानवरों की हत्या नहीं करनी चाहिए। इस सम्बन्ध में जाम्भोजी ने बड़े सबल तर्क दिए हैं। कमाई का दसवां हिस्सा तो दान[18] में अवश्य देना चाहिए किन्तु सुपात्र[19] को

१-८५।
२-१०७।
३-५२ १२-१५, ४९ १-८।
४-२८ ६७ ३० ७, ५२ १२।
५-११, १३ ७, २१ ८-१२, २३ ५, २५, १६, २ १२, २९ १०, १९, ३१ १३, १४, ३२ ८ ६३ ३०, ६६-१९, ७६ ३, ८६ ३६, ९९ ५, १०५ ४ ११९ १, १२०, १२१ १२२, वृहन्नवणमन्त्र, पाहळमन्त्र, बाळकमन्त्र।
६-१५ १३, १९ १४-१६, २८ ६६, ३० ८ ३२, १०, ३८ १०, ३९ ५, ८७ ७, ५१ २२, २३ ९८ १, २।
७-१८ १५, ३० ८, ५१ २२, २३, ५६ १५, १६ ६३ १८, ६६ ९, १९ ८३ १० ८६ ५, ९८ २ १०६ ४।
८-६ १० ११, १३ २ २८ ४२, ५२ ४, ६४ ८।
९-५१ ९ ८२ ३, ४ ,९३, ,२०१।
१०-१८ १३ १४।
११-८२ ४ ११२ २।
१२-६२ ९ १०।
१३-२३ १।
१४-८ २३, २४, ९ ८, ९, ३६ ,२, ४६ ८, ८६ ७, १०९=३४, ११३ ७८।
१५-८ ३, ४।
१६-८ १५, १६, ९ ११, १२, ६८ ३।
१७-७ २।
१८-२५ १५ ९० ५ २' ७२-७१ ५४ १-४, ९२ १-४।
१९-५४ ५।

और निष्काम भाव[१] से। ऐसा दान ही अमृत फल देता है। विनम्रता (नवणी)[२] क्षमा[३], सत्य[४], शील[५], तप[६], सन्तोष[७], दया[८] आदि धर्मों का पालन करना चाहिए। मन एकाग्र रखना[९] और "जरणा" (काम क्रोधादि) "जरनी" चाहिए[१०]। अच्छी कमाई करना[११] और हक की कमाई ही खानी चाहिए[१२]। अन्याय का त्याग[१३] तथा संयम[१४] और ईमान[१५] रखना चाहिए। सन्मति[१६], परोपकार[१७] और तन-मन दोनों की पवित्रता[१८] रखनी और स्नान सदैव करना[१९] चाहिए। निर्मल वाणी[२०] बोलनी और होम करना[२१] चाहिए। हरे वृक्ष नहीं काटने चाहिएँ, सोमवती अमावस्या और रविवार को तो बिल्कुल ही नहीं[२२]। रजस्वला स्त्री के साथ समागम नहीं करना चाहिए, ग्रहण "कुभा वसत" और निर्जला एकादशी को तो कदापि नहीं[२३]। मांस आदि अखाद्य पदार्थों[२४] तथा भांग[२५] का सर्वथा त्याग करना चाहिए। गुरु करना[२६], गुरुवाणी को मानना[२७], सहज भाव से रहना[२८] और सुपथ पर चलना[२९] चाहिए। संसार और व्यक्ति के लोभ में नहीं

१-२८ ६१-६३ ५४ ११, ६२ ३ ४।
२-२१ १६, २८ ५३, ८४ १२ १०५ ८।
३-२१ १६, २८ ५३ ८४ १२, १०५ ८।
४-२७ ६१, ६७ ११ ७० १०, ७२ ९, १०, १०१ ४।
५-१८, २१ २१ २७ १७, १८, २८ ३९, ४०, ३० ५ ३६ १५, ५२ १२-१३।
६-९ ८, ११ ३।
७-१०६ ३।
८-२ १२, १८ ७ ८ ४७ ७, ८२ ३।
९-६ २ २५ २३ ४८।
१०-१३ ७, २१ १६, १७ २८ ५३-५५, ५४ ८, १२० १।
११-६५ १२।
१२-९ १० ४ २७ १८ ७० १, ८३ २७।
१३-१५ १३, ३२ १०, ३९ ५।
१४-२१ २१, २२ ३९ १५ ५२ १३ ६६ १, ८४ ११।
१५-११५, १०१ ४।
१६-१४, ३७।
१७-६४ १०, ११।
१८-६६ ८४ ११, १०० ७ १०५।
१९-२८ ३५-३८, ३० ५ ५५ १, ८१ ७, ८।
२०-१५ १ ७६ ३।
२१-६ ८, ११ ३, ६३ ७।
२२-६ ३, ४।
२३-६।
२४-७ ४, १४ १२, ८६ ८, ११४ १०।
२५-१४ ११।
२६-१८, २१, २८ ५, ६४ ६, ७० १ ९७ ७ ९८ १०।
२७-१२ १-३ १५ ६, १९ २५, २७ १ ८४ १२ ९६ ८, ९।
२८-१०५ ७।
२९-३७, ६८ ६।

…ना चाहिए। मोटा पहनना, रूखा-सूखा जो प्राप्त हो जाय उसे खा लेना, शुद्ध पानी पीना, अपने हाथ से काम करना और अपने खेत की ही कमाई खानी चाहिए[2]। मन-हठ[3] और …र्यों से दूर रहना चाहिए[4]। बुरी चीज देख कर अनदेखी और बुरी बात सुन कर अनसुनी …रनी चाहिए[5]। सदा प्रसन्न[6] रहना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर मुक्ति और भग-…न के निमित्त अपने प्राण भी त्याग देने चाहिएँ[7]। ओछे काम न करके[8] सदा उत्तम …आचार-विचार-व्यवहार और करणीय कृत्य ही करने चाहिएँ[9]। पहले कोई काम स्वयं ही …रके दिखाना चाहिए तब दूसरों को उसे करने के लिए कहना चाहिए। कोई काम स्वयं … करके दूसरों को उसके लिए कहना अनुचित और बुरी बात है[10]। इनके अतिरिक्त दो …वदों[11] में राम-लक्ष्मण के प्रश्नोत्तर रूप में भी अठारह दोष गिनाये गये हैं।

२।-पाखंड —

जाम्भाजी ने तत्कालीन समाज में प्रचलित अनेक प्रकार के पाखंडों की कड़ी भर्त्सना और निंदा की है। ये पाखंड साधना, सिद्धि, योग, अध्यात्म और धर्म के नाम पर जोगियों, मुसलमानों और हिंदुओं में बहु-प्रचलित थे। इनका उल्लेख प्रधानतः तीन प्रकार से किया गया है —१ (क) जोगियों, (ख) मुसलमानों और (ग) हिंदुओं में प्रचलित विभिन्न पाखंडों का पृथक्-पृथक् उल्लेख, (२) अनेक प्रकार के प्रचलित पाखंडों का सामान्य रूप से सामूहिक वर्णन—जिनमें मूर्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा, बड़प्पन-भावना, कर्म-काण्ड, ऊपरी- दिखावा और कथित सिद्धि या/और "कलाबाजियां" सम्मिलित हैं तथा (३) भविष्य में होने वाले सम्भावित पाखंडों से चेतावनी। इनका उल्लेख नीचे किया जाता है —

१-(क) "जोग-पाखंड" —

नंगे रहने से जोग-प्राप्ति नहीं होती[12]। ऐसे व्यक्ति और अपेठी जीवहत्या करते हैं, इसलिये वे भूल में हैं[13]। जोगासन पर बैठकर कूड़, कपट का आश्रय लेने वाला जोगी नहीं हो सकता। सहज मार्ग को तो कोई विरला ही जानता है[14]। सिद्धि-प्रदर्शन, बाह्य वेश भूषा और बनावट में भी जोग नहीं है[15]। कान-फड़ाना, "चिरघट" पहनना, जटा बढ़ाये रखना और जीवहत्या करना निरा पाखंड है[16]। बिना जोग-मार्ग जाने घर-बार छोड़ना किंतु घर-बारी की भांति सूई-धागे से "करड" और 'मेखला" की सिलाई करना, झोली-कंथा लेकर कंधे पर बोझ ढोना, वीर-वैतालों का जप करना, मूंड मुंडाना किंतु माया और मोह का त्याग नहीं करना केवल लोक दिखावा ही है[17]। इसी प्रकार लोह-शृंखला धारण करना, नंगा रहना चतुर्दिक भटकते रहना भी व्यर्थ है। मूल बात परब्रह्म की सुधि लेना और तद् हेतु शुद्धाचरण जोगी का कर्त्तव्य है[18]। यह न समझ कर जो मूंड मुंडा लेते हैं वे गुरु और चेले दोनों ही पागल कुत्ते के समान हैं[19]। सबदवाणी के अनेकश

१-२८ ६८ ६९ ३०। २-९९ ५, ११२ १, २। ३-२८ ६८ ९८ २। ४-६९। ५-९२। ६-६९। ७-६ २६ ३२ ५। ८-७५ ५।
९-६ १८, २१ २७ ६ २८ ९२ १०५। १०-२८। ११-५९ ६०।
१२-६ २५। १३-१४ ११, १२। १४-२२। १५-४५ ६-११।
१६ ४६ ७, ८। १७-४७ १-६। १८-४८। १९-११८।

सबद नाथपंथी जोगियों, उनकी साधना, वेश-भूषा और कार्यों पर कहे गये हैं जिनसे इस सम्बन्ध में सम्यक जानकारी मिलती है।

(ख) "मुसलमान पाखण्ड" —जो खुदा को जानता नहीं, गाफिल है, मनमानी करता है, गायों को मारता किन्तु उनका दूध-दही-घी खाता है, पश्चिम की ओर मुँह कर 'उळवग' तो देता किन्तु जिसके मन में दया-भाव नहीं, वह कैसा मुसलमान है[1] ? यदि दिल साफ है तो काबा इसी में है, "उळवग" देने की आवश्यकता नहीं[2]। पशु का दूध पीना तो जायज है परन्तु उसको मारना और हीन कर्म करके नमाज पढ़ना व्यर्थ है क्योंकि ऐसे मुसलमान ने नमाज के तत्वार्थ पर ध्यान नहीं दिया है[3]। सुन्नत कराने से कोई लाभ नहीं, बिना अलख को लखे[4] 'मोहम्मद-मोहम्मद' कहना बेकार है क्योंकि 'मोहम्मद' तो हलाली पुरुष था, मुर्गे खाने वाले तो तुम्हीं लोग हो[5]।

(ग) हिन्दू-पाखण्ड —विष्णु के अतिरिक्त कोई भी पूजनीय नहीं है, अतः देवी देवताओं और पत्थर की पूजा निस्सार है[6]। मूर्ति-पूजा और तद् हेतु किये गये पाखण्डों में भगवान नहीं है। ऐसी पूजा करने वाले ब्राह्मणों से तो कुत्ते कहीं अच्छे हैं क्योंकि वे चोरों के आने पर घर वालों को भौंक कर जगा तो देते हैं। इसी प्रकार भूत-प्रेत और यक्ष-पूजा और इस हेतु साधना करना, "कालर" जमीन में बीज बोने के समान निरर्थक है। श्मशान में, नदी तट पर और अन्यत्र भी इतर देव-पूजा करने से कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती[7]।

(२) पाखंडों का सामान्य रूप से सामूहिक वर्णन —

हिन्दू होकर मूर्ति या तीर्थ, मुसलमान होकर काबा, जोगी होकर मूंड मुंडाना और "गोरपहटडी" घोकना सब पाखंड हैं। ऐसे लोग अज्ञानी हैं[8]। बिना गुरु-ज्ञान के तत्व प्राप्ति हेतु जोगी, जंगम, सींगी बजाने वाले, दिगम्बरी, सन्यासी ब्राह्मण, ब्रह्मचारी और पढ़े-लिखे पंडित आदि के प्रयास व्यर्थ हैं। ऐसे लोग मनहठी हैं[9]। तीर्थों पर भटकना केवल लोक-दिखावा है[10]। इतर देवों, यक्षों और भूत-प्रेतादि की साधना-उपासना पाखंड का सबसे बड़ा प्रमाण है[11]। दिखावा करके किये जाने वाले सभी कर्म और आचरण-हीनता किसी भी प्रकार मोक्ष-मार्ग में सहायता नहीं करते[12]।

(३) सम्भावित पाखंड —एक "सबद" में जाम्भोजी ने अपने अनुयायियों को भविष्य में होने वाले अनेक प्रकार के पाखंडियों और उनके द्वारा किये जाने वाले पाखंडों से सावधान और मना किया है[13]। इसमें संदेह नहीं कि उनके समय में इसमें वर्णित पाखण्ड किसी न किसी रूप में प्रचलित थे। जाम्भोजी की ऐसी चेतावनी और आदेश का फल है कि बिश्नोई समाज में साधना, अध्यात्म और धर्म के क्षेत्र में वर्तमान में भी किसी प्रकार का पाखण्ड या पाखण्ड-पूजा प्रचलित नहीं है। पाखंड और ढोंग के विरुद्ध कथित गुरुवाणी पर, उनके अनुयायियों का इतनी दृढ़तापूर्वक और आस्था से चलने का दूसरा उदाहरण शायद ही किसी मध्यकालीन उत्तरी भारत के मत सम्प्रदाय में मिले। जम्भवाणी की सच्चाई और ओज का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है।

१-८। २-७ १ ६ १। ३-६ १०। ४-६ २५ २६। ५-१०। ६-६६ ६, ७। ७-७१। ८-३६ १०-१३। ९-४१ ६-११। १०-६२ ५। ११-६६ ३३। १२-५५ २, ११४। १३-९०।

अनत सबद सतगुर कह्या पच्यासी वरस परवाण।
नाथ कठि रहिया अता, सीख्या वील्ह सुजाण ॥ १ ॥
वड पोथी मिण वील्ह की, दूजी सुरजनदास।
तीज सुकनू सुझ गुरू, सुरताण पिता सुझ आस ॥ २ ॥
ये वात सुणो साधा जना, ये पोथ्या मा परवाण।
परमाणद सुरताण र, लिखिया सबद सुजाण ॥ ३ ॥
मैं तो माड्या मोह करि, पुसतक देखि विचार।
सबदा अरथ अनत है, जाण सिरजणहार ॥ ४ ॥
चिरमी सोन एक तोल, रग मोल बराबरि नाहि।
भेष बराबरि एक सा, भेद बराबरि नाहि ॥ ५ ॥

—परमानदजी वणियाळ, प्रति सख्या २०१, २२७ से।

ग्यान दगधी गुर निंदणा, धानियळ आन उपास।
एता सबद न दीजिय, दाखै वीटळदास ॥ १ ॥
गुर निरमळ निकळक गुर, पर उपगार करत।
वील्ह कहै गुर दासयो, मुक्ति खेत को पथ ॥ २ ॥

—वील्होजी, प्रति सख्या २०१, २२७ से।

अध्याय ६

जम्भवाणी : पाठ–सम्पादन

[illegible]

[illegible] ॥ अगर [illegible]

[illegible] ही निश्चित। [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ वा[illegible]

[illegible] ॥ अगर [illegible]

[illegible] बार बादि निरो[illegible]

[illegible]

अध्याय ६

जम्भवाणी : पाठ-सम्पादन

भूमिका

(१) प्रतियाँ प्रतियों की बहिरंग परीक्षा

"सबदवाणी" की ४८ प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। "वाणी" के पाठ-सम्पादन मे इनमे से चुनी हुई सात प्रतियों का उपयोग किया गया है। इनका परिचय नीचे दिया जाता है –

१-जा० प्रति। प्राप्तिस्थान-महन्त रणछोड़दासजी, साथूणी जागा, जाम्भा। सबद सख्या-१२३, गद्य प्रसग सहित। पत्र सख्या-३६। अपेक्षाकृत पतला बादामी रग का देशी कागज। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दायें, बायें-१ इंच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३। अक्षर-प्रति पक्ति-३४-३७। लिपि-पाठ्य। परसराम द्वारा सवत् १८७९ के मार्गशीर्ष वदि १२ को लिपिबद्ध। प्रथम पत्र पर हाशियो म और द्वितीय के बीच मे अलकरण हेतु रगीन चक्र बनाये गए हैं।

आदि-॥ श्री विसनजी सत्यही ॥ लिपते सवद श्री जाभजी रा वायक ॥ काचै करव नीर राख्यो ॥ काची माटी का दीवटीया करामा ॥ जा माहि पाणी घतायौ ॥ हुकम सू दीया जगाया। बामण न परचौ दिपाल्यौ आदि सबदवाणी सतगुर की ॥ श्री वायक कहै ॥ गुर चीन्हीं गुर चीन्है पिरोहित ॥ गुर मुखि धरम बषाणी ॥

अन्त-॥ विमा विमन हु भणि र प्राणी ॥ प क लाप उपाजू ॥ रतन क्या वैकूठ वासो ॥ जुरा मरण भव भाजू ॥ १२३ ॥ इति श्री सवद श्री वायक सपूरणम ॥ भवेत ॥ अनत दान सतगुर कह्या ॥ भ्रम चौरासी वाणि ॥ नायेजी व कठ रह्या भता लिपीया वीव्ह सुजाण ॥ लिपते साध श्री हरिक्सिनजी रा सिष्य परसराम ॥ सवत १८७९ मिती मृगसिर वदि १२ वार बुधवार ॥ गाव लोहावट मधे ॥ श्री ॥ श्री ॥

२-रा० प्रति। प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी, पीपासर। सबद सख्या-१२०, बिना प्रसग। केवल प्रथम "सवद" का ही प्रसग पद्य म दिया है। पत्र सख्या-३६। किनारे यत्र-तत्र खण्डित। बादामी रग का देशी कागज। आकार-६×४ इंच। हाशिया-दायें, बायें-१ इंच। पक्ति-प्रति पृष्ठ-११। अक्षर-प्रति पक्ति ३१-३३। लिपि प्राय स्पष्ट और पाठ्य किन्तु स्याही फीकी पड जाने से बीच के कई पत्र किंचित अस्पष्ट। रामदास द्वारा सवत १८८६ के सावन वदि २ को लिपिबद्ध।

आदि-॥ श्री जभेस्वरायनम ॥ अथ लिपते सबद जाभजी का ॥ काच करव जल राख्यो ॥ सबद जगाया दीप ॥ बाभण कौ परचो दीयो ॥ असो अचरज कीप ॥ जा बूमयो सोई कह्यो ॥ अलप लपायो भेव। थोपो सव समाय क ॥ जद सबद कह्यो भमदव ॥ गुर चीन्हीं गुर चीन्हि पिरोहित ॥ गुर मुष धरम वषाणो ॥

अन्त-ज्यों ज्यों लाज दुनी की लाज ॥ त्यों त्यों दाब्यो दाव। भलीयो होय तो। भल वुद्धि

आव ॥ वुरीयो वुरी कमाव ॥ १२० ॥ इति श्री शवद वाणी श्री भाभजी की सपूरणम समाप्तम् ॥ १ ॥ समत ॥ १८ ॥ ८६ रा व्रिषे मिती श्रावण वदि २ वार थावरवार ॥ लिपते साध श्री १०८ कनीरामजी रो सिष्य रामदासजी । श्री गणेशायनम ॥ श्री रामजी श्री जभेश्वरायनम ।

३-गो० प्रति । प्राप्तिस्थान-जागलू साथरी, जागलू (बीकानेर)। सवद सख्या-१२०, बिना प्रसग । पत्र सख्या-२९ । देशी कागज । आकार-६¾×४¾ इ च । हाशिया-दायें, बायें-आधा इ च । पक्ति-प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर प्रति पक्ति-३१ ३५ । लिपि-स्पष्ट और सुवाच्य । साधु गोविन्ददास द्वारा सवत १६०७ के मागशीर्ष सुदि ७ को लिपिबद्ध ।

आदि-॥ श्री विष्णवे नम ॥ श्री गुर चीन्हो गुर चीन्हि पिरोहित ॥ गुर मुष धरम वषाणी ॥ जो गुर हैवा सहजे सीले शब्दे नाद वद । तिंहि गुर का आलीकार पिछाणी ॥

अन्त-विष्ण विष्ण तू भणि रे प्राणी प च लाप उपाजो रतन काया वकुठे वासो तरा जरा मरण भव भाजों १२० इति श्री शब्द वाणी श्री जाभजी की सपूरणम् १ सवत १६०७ रा वर्षे मिती मिगसर सुदि ७ लिपीकृत साध गोविदराम ।

४-म० प्रति । प्रति सख्या ६५ (ग) । पोथी । प्राप्तिस्थान-श्री मन्नूराम थापन मुकाम । सबद सख्या-११७ पद्य प्रसग सहित । विवरण के लिए द्रष्टव्य-अध्याय १, अध्ययन सामग्री, प्रति सख्या ६५ ।

५-ला० प्रति । प्रति सख्या २०१ । पोथा । लालासर साथरी की प्रति । प्राप्तिस्थान श्री महत रामनारायणजी, रामड़ावास (जोधपुर) । सबद सख्या-१२१, गद्य प्रसग सहित । विवरण के लिए द्रष्टव्य-अध्याय १, अध्ययन-सामग्री, प्रति सख्या २०१ ।

६-पी० प्रति । प्राप्तिस्थान-पीपासर साथरी, पीपासर (नागौर) । सबद सख्या-१२१, गद्य प्रसग सहित । पत्र सख्या-३६ । पतला बादामी रग का देशी कागज । आकार-६×४ इ च । हाशिया-दाय बायें-लगभग पौन इ च । पक्ति प्रति पृष्ठ-१३ । अक्षर प्रति पक्ति ३३ ३५ । लिपि-स्पष्ट और सुपाठ्य । पीताम्बरदास द्वारा सवत १८७८ के जेठ सुदि १२ को लिपिबद्ध । प्रथम पत्र पर अलकरण हेतु एक रगीन चक्र बनाया हुआ है ।

आदि ॥ श्री जाभोजी रा वायक प्रारभ ॥ वाव करव जल राख्यो ॥ साचो माटा का दीवा टीया कराया । जा मा पाणी घताया । हुक्म सौ दीया जगाया । बामण न प्रचो दिपायो । आदि सबद वाणी सतगुर की श्री वायक कहे ॥ गुर चीन्हो गुर चीन्हि पिरोहित । गुर मुषि धरम वषाणी । जो गुर होयवा सहजे सील नाद वद ॥ तिहि गुर का आलागार पिछांणी ॥

अन्त-विसन विसन तू भणि रे प्राणी ॥ प च लाष उपाजों । रतन काया वकुठे वासो ॥ तरा जरा मरण भो भागा ॥ १२१ ॥ इति श्री सबद श्री वायक सपूरण ॥ अनत नाद सतगुर कहया ॥ वरस चारासा वाण ॥ नाथजी के कठ रहया सता । लिपाया नाद मुर्जाण ॥ १ ॥ समतोब्धन भूयागिर सिधु नागरा लिपाये मासातम मास सर्व लिपासे शुक्ल पषे द्वादस्या लिपीकृत पीताबरदास श्री विष्णु दासजी रा सिष्य मगल मस्तु कल्याण मस्तु ॥ पत्र ३६ ॥

७–ब० प्रति। प्रति सख्या ८१ (त)। पोथी। प्राप्तिस्थान–श्री बदरीराम थापन, मुकाम, (बीकानेर)। सबद सख्या–११७, पद्य प्रसग सहित। विवरण के लिए द्रष्टव्य–अध्याय १, अध्ययन सामग्री, प्रति सख्या ८१।

(२) अन्य प्रतियाँ

निम्नलिखित शेष ४१ प्रतियो का उपयोग सम्पादन म उसी शाखा की अन्य प्रति/प्रतियाँ प्रयुक्त होन के कारण नही किया गया है –

अध्याय १, अध्ययन–सामग्री, प्रति सख्या–१६, २६, ८२, ८३, ८४, ८६, ९६, १११, ११३, ११४, १२४, १२५, १२६,१२७, १२८ १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १५३, २०२, २०४, २०९ २१३, २१४, २२०, २२५, २२६, २२७, २३१, २६६, ३५५, ३२६, ३३४, ३६२, ३६३, ३९५।

इनम–(क) प्रति सख्या ११३, १३४, म ब प्रतियो की शाखा की ओर

(ख) शेष सब प्रतियाँ रा गो पी तथा जा प्रति की शाखा की हैं।

सबम पाठ–मिश्रण और स्वतत्र पाठ–विकृतियो के उदाहरण भी मिलते हैं।

(३) प्रतियों की अ तरग परीक्षा

(क) जा० रा० गो० पी० म० ब० प्रतियाँ

१– २४ ७ स्वीकृत पाठ है

सतगुर मिलियो सत पथ बतायो वेद तरथ उदगारू।

इन प्रतियो म मोटे अक्षरो म छपे अ दा के स्थान पर 'विदगारा त उदगागारू" पाठ है। प्रतीत होता है इस स्थल पर जा रा गो पी म ब प्रतिया के आदश किंचित त्रुटित रहे हैं। 'वद" के स्थान पर 'विद", 'तरथ" के स्थान पर "गारा त" अनुमान स लिखा गया। "उदगागारू" म स्पष्ट ही दृष्टिभ्रम से "गा" प्रक्षेप है। श्रुतिदोष से भी ऐसा सभव है। स्वीकृत रेखाकित पाठ का अथ है –(म) वेद–तत्त्व का बखान करता हू। अथ की दृष्टि से 'विदगारा त उदगागारू" पाठ निरथक है।

२– ९५ १७ स्वीकृत पाठ है

कफ बिवरजत ह्वयो।

सेतू भातू बोह रग लेणा सब रग लेणा हुइयो।

जा रा गो पी ब प्रतियो म "कफ" के स्थान पर 'काफर और म प्रति मे 'काफ" पाठ है। प्रतीत होता है 'कफ' के अथ को ठीक से न समझने के कारण अथवा दृष्टिभ्रम से "काफर' और काफ" लिखे गए। 'कफ' अरबी शब्द है (द्रष्टव्य–मु० मुस्तफाखां मद्दाह उदू–हि दी शब्दकोष, पृष्ठ ९७ सन् १९५९) जिसका अथ है– सूखी हुई घास। स्वीकृत पाठ का अथ है– सूखी हुई घास से रहित स्वच्छ, सफेद हुई बहुत प्रकार के रग ग्रहण कर लेती है। "काफर" और 'काफ' दोनो ही इस प्रसग मे निरथक हैं अत वे विकृत पाठ हैं। यह भी सम्भव है कि 'काफर" शब्द अधिक प्रचलित होने के कारण ग्रहण कर

लिया गया हो।

३– ६३ २, ३ स्वीकृत पाठ है

तन्हि म्हे रह्या निरालभ होय करि उतपति यद्रारी।
ना मेर बस न बाप न माई, अपणी काया आप सवारी।

जा रा गो पो प्रतियो म "वस न" के स्थान पर "शव" और म व प्रतियों म "धायन" पाठ है। प्रथम पक्ति म रचयिता अपनी उत्पत्ति की बात बताते हुए द्वितीय पक्ति म कहता है–मेरे न वश है, न बाप है और न मां है, मैंने अपनी काया का निर्माण स्वय ही किया है। दावन (दायण) का अर्थ है–बधन, सहारा, लिए, बदले म, सम्बन्ध या राह जो जाम्भोजी के आजीवन ब्रह्मचारी होने के कारण उनके "वस" चलने की बात को अनुचित समझ कर साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से "वस" पाठ के बदल रखा गया है। वस्तुत यहा रच यिता अपने स्वयभूत्व के सदभ म अपने वश मा बाप आदि के न होने का उल्लेख करता है जो सवथा सगत है। सबदवाणी म अन्यत्र अनेक बार ऐसा उल्लेख किया गया है। अत "वस न" पाठ मूल का है।

४– ३१ ७–१० स्वीकृत पाठ है

जो जित हु ता सो तित नांहीं, भल खोटा ससार।
कह का पित माई कहण र भाई कह का पख परवारू।

जा रा गो पी म व प्रतियो म मोटे अक्षरो म छपे अश के स्थान पर "जो चित हु ता सो चित नाही" पाठ है। आरम्भ की चार पक्तियो म ससार की नश्वरता बताता हुआ रचयिता पाचवी छठी पक्तियो मे कहता है —

"अनेक अनेक चलता दीठा, कलि का माणस कवण विचारू"। फिर प्रस्तुत पाठ है जिसका अर्थ है –जो (पहले) जहा था, वह (अब) वहा (स्थिर) नहा है। इस भले–बुरे ससार म माता, पिता, बहन और भाई किसके हैं? "जित" और "तित" के स्थान पर "चित" पाठ स्वीकार करने से अर्थ होगा–जो चित्त (पहले) था वह चित्त (अब) नहा है, जो अप्रासगिक है। असगत होने से "चित" पाठ विकृत है।

५– ३० ४, ५ स्वीकृत पाठ है

गज हसतो दानू अति बलि दानू।
साध सभ सीरि सील सिनांनू।

जा प्रति म मोटे अक्षरा म छपे अश के स्थान पर "सव सानानु" पाठ है। रा गो पी म व प्रतिया म यह अश त्रुटित है। प्रतीत होता है इनकी आदर्श प्रतियो म यह अश अस्पष्ट या अशत त्रुटित था। जा प्रति म इस कारण स्वीकृत पाठ के केवल दो शब्द आ पाये—"सभ" के स्थान पर "सव" और "सिनानू"। शेष सब प्रतियों म यह अश त्रुटित रहा। इस सबद मे, प्रस्तुत पक्तिया तक अनेक प्रकार के दान का उल्लेख करते हुए उन सब से बढकर "शील स्नान" को माना गया है। शील और स्नान की महत्ता बताई गई है न कि केवल स्नान की। सम्प्रदाय म मान्य २६ धर्मनियमा म तीसरा स्नान और चौथा शील–पालन करना है। अन्यत्र भी प्रकारान्तर से यही बात कही गई है —

"तन मन धोइये, सजम होइये (६१ १)। स्पष्ट है कि जा प्रति मे स्वीकृत पाठ प्रशस्त और रा गो पी म व प्रतियों म पूर्ण त्रुटित है।

६-४२ १०-१३ स्वीकृत पाठ है

जाह बाणा म्ह रावण मारयो (१०)
मतू त कोवड सोखा हाथे साह (११)
कर पांडव जादम जोधा (१२)
मतू त गढ हथणापुरि आणि वसाऊ (१३)

जा रा गो पी म व प्रतिया में दृष्टिभ्रम के कारण मोटे अक्षरो मे छपा अश त्रुटित है। ग्यारहवी पक्ति के "मतू त" पाठ के पश्चात् लिपिकार मोटे अक्षरो मे छपा अश लिखना भूल गया क्योकि तेरहवी पक्ति म भी यही पाठ है। प्रस्तुत पक्तियो म राम-रूप सम्बन्धी अपनी सर्वशक्तिमत्ता के कथन के पश्चात् कौरव-पाण्डवों का उल्लेख है जो सगत है। अर्थ है- जिन बाणो से मैंने रावण को मारा था, यदि मैं चाहू तो हाथ मे धनुष लेकर (उन्हा बाणो से) (सागर) सुखा सकता हू। यदि मैं चाहू तो कौरव-पाण्डव और यादव-योद्धाओ को लाकर गढ हस्तिनापुर मे पुन वसा सकता हू। त्रुटित अश को यदि मूल पाठ न माना जाय तो अर्थ होगा-जिन बाणो से म ने रावण को मारा था, यदि (मैं) चाहू तो लाकर गढ हस्तिनापुर म बसा सकता हू या आकर गढ हस्तिनापुर बसा सकता हूँ। स्पष्ट ही यह उल्लेख प्रसग के विरुद्ध और असगत है क्योकि इसमे एक तो राम और कौरव-पाण्डव दोनों से सम्बन्धित उल्लेख अपूर्ण है, दूसरे राम का सम्बन्ध हस्तिनापुर से स्थापित होता है जो असगत है। इस प्रकार, इन प्रतिया मे मोटे अक्षरो म छपा अश मूल से त्रुटित है।

७-४६ ७ ८ स्वीकृत पाठ है

पै कान विरावी विरयट पहरी, पापड पोह न काई।
जटा वधारी जीव सिंधारी, आयसा । इहा पापडे जोग न होई।

दोनों मोटे अक्षरों में छपी अर्द्ध पक्तिया के स्थान पर विभिन्न प्रतियो मे क्रमश इस प्रकार पाठ है -

१-जा -ईह पापड तो जोग न होई।
ईह पापड तो जोग न होई।
२-रा गा पी -आयसा इह पापड तो जोग न कोई।
(रा मे "कोई" के स्थान पर "होई" पाठ है)।
इहि पापड तो जोग न कोई।
३-म व -इण पापड प जोग न कोई।
इण पापड प जोग न होई।

स्पष्ट है कि जा रा गो पी म व प्रतियों म जो पाठ मोटे अक्षरों मे छपी प्रथम अर्द्ध-पक्ति के स्थान पर है, वही दूसरी अर्द्धपक्ति मे भी है। दृष्टिभ्रम से स्वीकृत पाठ की प्रथम अर्द्ध पक्ति "पापड पोह न कोई" के स्थान पर स्वीकृत द्वितीय अर्द्ध पक्ति का पाठ प्रकारा-

स्तर से लिखा गया। अर्थ की दृष्टि से देखें तो मोटे अक्षरों में छपी स्वीकृत दोनों पंक्तियों के अर्थ क्रमशः इस प्रकार हैं—(१) पाखंड में कोई भी मार्ग (धर्ममार्ग) नहीं है या पाखंड कोई मार्ग (धर्ममार्ग) नहीं है। (२) हे आयसो! ऐसे पाखंडों में जोग नहीं होता या योग-मार्ग पाखंड में नहीं है, जो प्रसंगानुकूल और संगत हैं। इस प्रकार, इन सब प्रतियों में "पाषंड पोह न कोई" अंश त्रुटित है।

८-३२ १,२ स्वीकृत पाठ है

फुरण फुहार क्रिसनो माया घण वरसता
छलिया सरवर नीर।

जा रा गा पी म व प्रतियों में "छलिया" शब्द त्रुटित है। (छलिया=भरा हुआ, भरे हुए, भर गया, भर गए)। स्वीकृत पाठ का अर्थ है—कृष्ण की माया से फुहारों के रूप में जल प्रकट होता है और जब वह अधिक बरसता है तो सरोवर पानी से भर जाता है। यदि "छलिया" मूल पाठ का न समझा जाय तो "घण वरसता सरवर नीर" अंश निरर्थक होगा। अतः प्रसंग और अर्थ की दृष्टि से "छलिया" शब्द मूल पाठ का ही है। "छलिया" का इस अर्थ में प्रयोग अन्यत्र भी अनेक स्थानों पर हुआ है—

१-रतनकया द सूप्या छलत भंडारा (५६ १)
२-करो मजूरी पेट छलाई (८३ २७)
३-पवण पधारण कया छ काची, नीर छलो ज्यों पारी (८४ ६)
४-ववद भुवण रह्या छलि पाणी (१४ २)

६-१६ ८-१४ स्वीकृत पाठ है

अवर भी सचत बांणी (८)
जती तपी तक पीर रषेसर (९) सांयत सुर संभालों (१०)
जोधा महारथी वळाक भी जोयवा (११), तोलि रह्या सह पाणी (१२)
तऊ विणि खचि न सकी (१३), सिभू तणी बखाणी (१४)।

जा रा गो पी म व प्रतियों में मोटे अक्षरों में छपा अंश (आठवीं पंक्ति के "बांणी" शब्द के अतिरिक्त) दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। जती तपी तक पीर रषेसर" के पश्चात् "तोलि रह्या सह पाणी" अंश लिखा गया किन्तु मोटे अक्षरों में छपा अंश छूट गया। आठवीं पंक्ति के "बांणी" शब्द के ध्यान में रहने के कारण भी दसवीं पंक्ति पुनरुक्ति भय से लिपिकारों ने छोड़ दी क्योंकि इसके "संभालों" शब्द के कारण दृष्टिभ्रम हो गया। प्रसंग और अर्थ की दृष्टि से मोटे अक्षरों में छपे अंश का होना आवश्यक है। प्रसंग सीता के स्वयंवर से संबंधित है। अर्थ है—(सीता स्वयंवर के समय) यतियों, तपस्वियों, पीरों, और ऋषीश्वरों के समुख (सबने) सामन्तों, शूरों, धनुर्धारियों, योद्धाओं और महारथियों ने (शिव-धनुष पर) अपने अपने बल को आजमाया किन्तु उनमें से किसी से भी शिव-धनुष खींचा नहीं जा सका। मोटे अक्षरों में छपा अंश स्वीकार्य न होने पर "जती तपी तक पीर रषेसर, तोलि रह्या सह पाणी" का अर्थ होगा—यतियों, तपस्वियों, पीरों और ऋषीश्वरों—सबने अपने-अपने बल को आजमाया जो अस्पष्ट और असंगत है।

१०-२ १२ स्वीकृत पाठ है

दया धरम थापिल निरजण सो बाळो ब्रह्मचारी ।

जा, रा गो पी म व प्रतियों में मोटे अक्षरांश के स्थान पर "निज वाळा" पाठ है। सम्भवतः इनका आदर्श इस स्थल पर किंचित अपाठ्य था, इस कारण "निरजण" के स्थान पर 'निज' और "बाळो" के स्थान पर 'वाळा' लिखा गया, शेष 'र,' 'ण' और "सो" अक्षर छूट गए। स्वीकृत पाठ का अर्थ है—(जो) दया और धर्म की स्थापना करता है, ऐसा बालब्रह्मचारी (मैं) निरंजन स्वरूप हूँ। केवल "निज वाळा" पाठ निरर्थक है। इस सबद में जाम्भोजी अपनी शक्तिमत्ता का उल्लेख करते हुए अन्त में उपर्युक्त बात कहते हैं जो समग्र सबदवाणी और बिश्नोई साहित्य में आए तद् विषयक कथनों के सर्वथा अनुरूप है।

११-४२ १, २ स्वीकृत पाठ है

आयसा ! अगछाळा पावडी काय फिरावो ?

मडू त का दा उगवतो भाण ठमाऊ ।

जा प्रति में 'का दा' त्रुटित और रा गो पी म व प्रतियों में इसके स्थान पर "आयसा" पाठ प्रक्षेप है। ४२ वें सबद के अन्त में ये दो पंक्तियां पुनः आई हैं, वहां जा प्रति में 'का दा' पाठ है और रा गो पी म व प्रतियों में "का दा" त्रुटित है। इस प्रकार, स्पष्ट है कि रा गो पी म व प्रतियों में 'का दा' के स्थान पर 'आयसा' प्रक्षेप है जो प्रथम पंक्ति में सम्बोधन रूप में होने के कारण सम्भवतः दूसरी पंक्ति में "का दा" के स्थान पर रख लिया गया है और जा प्रति में पदान्त में "का दा" आया ही है, अतः प्रस्तुत पाठ में यह त्रुटित माना जायगा। निष्कर्षतः स्वीकृत पाठ 'का दा' जा प्रति में त्रुटित है और रा गो पी म व प्रतियों में इसके स्थान पर "आयसा" प्रक्षेप है। का दा=काई+दाळ (ताळ)=कुछ देर तक अर्थात् काफी देर तक। ये शब्द सबदवाणी में अन्यत्र भी इसी रूप में प्रयुक्त हुए हैं —

(१) ईन्दर कोट उजीणी नगरी, का दा सिध पुरी बिसराम लियो (६३ १७)

(२) कोट लंकागढ विषमा हूं ता, का दा वसियो रावण राणो (९६ ६)

अन्य अनेक बिश्नोई कवियों की रचनाओं में भी इसी अर्थ में इसका प्रयोग मिलता है —

पुरिष पाम हू का दा रह्यो, इह वाळक को आवध्य कह्यो ॥ ७४ ॥

थोडी सी दा नुगायो थयो, तीह न देहु न वाह्यो कह्यो ॥ १२० ॥

—वील्होजी, कथा औतारपात

का दा सतगुर न न्हवाय दीवा दीज वाति चडाय ॥ २७ ॥

—सुरजनजी, कथा औतार की।

१०-३२ ७ स्वीकृत पाठ है

सुररत करता हरवाि आव, ता ना पछतावो करियो।

विगन जपतां जाम जु थाय, तो जामहिदा विणि मरियो।

"सुररत" के स्थान पर जा रा गो पी म प्रतियों में 'हरि हरि' और व प्रति में "हर हर" पाठ है जो प्रक्षेप है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है—सुकृत करते हुए यदि

हैं तो पछतावा नहीं करना चाहिए, यदि विष्णु का जप करते हुए जीभ थकती है तो (ऐसी) जीभ के बिना ही काम चल सकता है। "हरि हरि" और "हर हर" पाठ एक दूसरे का पर्याय है। "सुकरत" के स्थान पर यदि "हरि हरि" पाठ स्वीकार किया जाय, तो उसके साथ "हरकति" (बाधाएँ) की सगति नहीं बठती। "हरि" नाम जीभ से जपा जाता है, उसके लिए बाधाओं का आना विशेष मूल्य नहीं रहता। सुकृत करते हुए बाधाएँ आ सकती हैं क्योंकि सुकृत या तो बाह्य जगत से सम्बन्धित होते हैं अथवा उनका प्रभाव किसी न किसी रूप में बाह्य जगत पर पड़ता है। इसलिए "सुकृत" के लिए "हरकति" प्रसग और अर्थ की दृष्टि से ठीक है। फिर, विष्णु या हरि जप की बात दूसरी पक्ति में आती ही है जिसके लिए "जीभ जु थाव" पाठ युक्ति-युक्त है। इस कारण भी "सुकरत" के स्थान पर "हरि हरि" पाठ निरर्थक है। हरि जप की इस प्रकार महत्ता बताना अत्यधिक साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण सम्भव है।

नीचे पाठ-विपर्यय के कतिपय उदाहरण दिये जाते हैं, यद्यपि इनसे अर्थ की असगति नहीं होती —

१३- ११ २२-२५ स्वीकृत पाठ है

जा जन मतर विसन न जप्यो, ना न वामी मोती वस द्रूक सूर सवारू।

जा जन मतर विसन न जप्यो, आडा क घरि पोहण होयसी पीठ सहै दुख भारू।

जा रा गो पी म व प्रतियों में प्रथम पक्ति के स्थान पर द्वितीय और द्वितीय के स्थान पर प्रथम पक्ति लिखी गई है।

१४- ६३ २२, २३ स्वीकृत पाठ है

दहसिर ने जदि वाचा दीन्ही, तदि म्हे मेल्ही अनन छळू।

दहसिर का दस मसतक छेद्या, ताणों बाणों लळू कळू।

जा रा गो पी म व प्रतियों में प्रथम के स्थान पर द्वितीय और द्वितीय के स्थान पर प्रथम पक्ति लिखी गई है।

१५- ६३ ३३ स्वीकृत पाठ है

निहू निलोर, चवदा भवण, सपत पयाले, जवू दीपे।

जा. रा गो पी म व प्रतियों में शब्दों के विपर्यय से प्रस्तुत पक्ति का पाठ इस प्रकार है - चवदा भवणे, तिहूं त्रिलोक, जांवू दीप, सपत पयाळे।

१६- ८५ ३ स्वीकृत पाठ है घई ऊध ओह बरसत मेहा।

जा रा गो पी म ब प्रतियों में "वोह बरसत" के स्थान पर "बरसत ओह" पाठ है।

१७- ७६ २ स्वीकृत पाठ है

रे वनमाळी काँयों सींच, ईह वाडी तो भेळ पडी।

जा रा गो पी म व प्रतियों में मोटे अक्षरों में छपे पाठ के स्थान पर "काँह रे सींचो वनमाळी" पाठ-विपर्यय है। इनमें प्रयुक्त "काँहे" शब्द "कायों" का पर्याय है।

१८- ९७ ६ स्वीकृत पाठ है केवळ ग्यांनी ब्रम गियानी सहज सिनांनी

चा रा गा पी म व प्रतियों म इस पक्ति का पाठ शब्दो के विषय से इस प्रकार मिलता है—सन्त सिनानी, केवळ यानी व म गियानी।

(ख) रा गो पी म ब प्रतियाँ

१- ८४ ६ स्वीकृत पाठ है

पवरण बधाण कया छ काची, नीर छनी ज्यों पारी।

रा गो पी म ब प्रतियो म "छ" के स्थान पर "गढ" पाठ मिलता है। "काची" स्त्रीलिंग क्रिया "कया" (काया) स्त्रीलिंग सज्ञा के लिए प्रयुक्त हुई है। अत "कया छ काची" पाठ ठीक है। "गढ" पुल्लिंग सज्ञा शब्द है। इसलिए यदि "कया गढ काची" पाठ स्वीकार किया जाय, तो "काची" क्रिया अशुद्ध सिद्ध होती है। "गढ" पाठ स्वीकार करने पर इन दो पाठों म से कोई एक पाठ मूल का होना चाहिए —"कया गढो काचो" अथवा 'कया गढ काचो'। रा गो पी म व, प्रतियो मे न "गढो" पाठ है और न "काचो"। स्पष्ट है कि "गढ" पाठ विकृत और निरर्थक है। इससे पूव के सबद म "कया" के साथ "गढ" पाठ आया है- "गर परमादि कया गढ खोजो, दिल भीतरि चोर न जाई (८३ २), अत हो सकता है कि लिपिकारो ने इस कारण भी यहा "गढ" शब्द लिख दिया हो।

२-३६ ४ स्वीकृत पाठ है घडी स' घड।

इसके स्थान पर विभिन्न प्रतियो मे भिन्न-भिन्न पाठ है —

रा, गो पी म-घडीय स'धमड्

म व म घगड स घ डों।

रा गो पी प्रतियो म "घड" के स्थान पर "धमड्" है स्पष्ट ही "म" प्रक्षिप्त है। म ब प्रतियों म लिपिजन्य भूल के कारण "घ" को "ध" समझा गया है, साथ ही सचेष्ट विकृति अनुकरणात्मक शब्दो को लाकर की गई है। इन प्रतियो मे "स" के प्रयोग को गलत समझने के कारण भी यह भूल सम्भव है। इसे "जीव" सज्ञा के बदले प्रयुक्त सवनाम भी माना जा सकता है। यह 'स' अव्यय न होकर स' है, जिसका अथ है—सब। नागरी लिपि म मारवाडी की इस उदात्त ध्वनि के लिए कोई चिह्न न होने के कारण स को अव्यय "स" समझा गया। कदाचित इसी कारण "घड का अथ लिपिकारो के लिए अस्पष्ट रहा। स्वीकृत पाठ का अथ है —(जसे तेरी देह) घडी है (वसे) सबकी घडी है। म व प्रतियों क लिपिकार भी स' को भूल से अव्यय ही समझने प्रतीत होते हैं। स्पष्ट है कि "घडीय स धमड्' या 'घगड स घडों" पाठ निरथक है। अन्यत्र भी स' का प्रयोग इसी अथ (सब) म हुआ है—निरति सुरति सा' जाणो (५ ८)।

३-४२ १,२ स्वीकृत पाठ है

आयसा भ्रिगछाळा पावडी काय फिरावो

मतू व का दा उगवतो माण ठभाऊ।

'का दा" के स्थान पर रा गो पी म व प्रतियो में 'आयसा विकृत पाठ है। विस्तार के लिए द्रष्टव्य-(क) ११।

४-२८ ५ स्वीकृत पाठ है सुकरत साथि सखाई चाल।
जा रा गो पी म प्रतिया म "सखाई" के स्थान पर "सगाई" पाठ है किन्तु व४ प्रति म "सखाई" पाठ ही मिलता है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(केवल) पुण्य-कर्म ही साक्षी के रूप म साथ चलते हैं। अर्थ की दृष्टि से "सगाई" पाठ प्रसंग-असंगत है।
५- १६ २६-२८ स्वीकृत पाठ है

दूरया दू त दूरि गुणाज
सो सबद गुणाराम्भ गुणापार
गुणातीत वर्ण अपार।

रा गो पी म व प्रतिया म मोटे अक्षरा म छपा पाठ दृष्टिभ्रम स त्रुटित है। इसका अर्थ है-(जो) सबद दूर से भी दूर सुनाई दे वह गुणकारी, गुणातीत, गुणों का सार और अपार शक्तिशाली है। शब्दब्रह्म की महत्ता बताते हुए "गुणापार" द्वारा उसके एक गुण का उल्लेख किया गया है, इसलिये यह पाठ सगत है।
६ -४२ १४-१७ स्वीकृत पाठ है

अति अंनेरा वाग स वायां, मनू त सोवन चिणा करि चराऊ।
अति अनेरा पावस पाणी, मनू त घण पाहण बरसाऊ।

रा गो पी म व प्रतियो मोटे अक्षरो म छपी पंक्तियाँ त्रुटित हैं। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-यदि (मैं) चाहूँ तो अन्य बहुत से बाग लगा कर स्वर्ण-भूमि का निर्माण कर उनम चरा सकता हूँ। वर्षाऋतु मे बादलो से पानी बरसता है किन्तु यदि (मैं) चाहूँ, तो उनस पत्थरो की वर्षा करवा सकता हूँ। मोटे अक्षरो म छपी पंक्तियो के बिना शेष पंक्तियो की अर्थ-असंगति स्पष्ट है। फिर इस सबद म लोक-मान्य या लोक-प्रचलित एक बात कह कर फिर "मनू त (यदि चाहूँ तो) से रचयिता ने स्वय की महत्ता और करनी का उल्लेख किया है। इस दृष्टि से भी "मनू त' से पूर्व मोटे अक्षरो म छपी दो पंक्तियाँ सगत हैं।
७- ७८ ५ स्वीकृत पाठ है

असट कुली गिरवर पणि लाज लाज वणी अठार भार।

रा गो पी म व प्रतियो म मोटे अक्षरो म छपा अ। दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। इन प्रतिया म अढार के स्थान पर 'अठार' पाठ है जो मारवाड़ी की अपेक्षाकृत नवीन प्रवृत्ति का सूचक है। 'ढ' को "ठ" समझने की लिपिजन्य भूल भी हो सकती है। "अष्ट कुली गिरवर' का उल्लेख विष्णोई कवियो की रचनाओ म अनेक बार हुआ है।
८-१०२ स्वीकृत सबद है हरचे दारी सरफ क (न) दर राह क (न)। (१)
लुकम ना लुक बेरह तात तुलफ क (न) (२)
रा गा पी म व प्रतियो म यह पूरा सबद त्रुटित है। प्रतीत होता है समस्त सबद अरबी, फारसी मिश्रित होने एव तज्जन्य अर्थ की दुरूहता के कारण नहीं लिया गया। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से भाषा म मुसलमानी प्रभाव लक्ष्य कर, अनुचित समझ, न लिया गया हो। एक सम्भावना यह भी है कि इनके आदर्शों मे यह सबद हाशिये म रहा हो और इसे प्रक्षिप्त समझ कर न लिया गया हो। प्रति संख्या

८६ में यह सबद १०३ वीं सन्या का है। इसका भावार्थ है–जो कुछ भी तेरे पास है उसको रास्ते म (जीवन म) खर्च कर। भुराव की ओर मत मुड़ (समार का जिस ओर भुराव है, उस ओर मत मुड़, समार म लिप्त मत हो)। (सांसारिक) सुखि और वियोग के दुख को नष्ट कर। हरच, हरचद्र (फा०)=हरचीज, जो कुछ। दार (फा०)=रखने वाला, दारी= रखता है तू। सरफ, सर्फ (फा०)=खर्च। अर राह (फा०)=रास्ते म। कुन्ना न (फा०)=कर। लुळन=भुराव। लुळना=भुकना, पक्ष म होना आदि (मारवाडी म यह प्रयुक्त है)। लुळ= मुड़। वर्ग=विरह=वियोग का दुख। तान=धूप, देगरेग, चिन्ता, कष्ट, पीडा, रुदन। तबाह (फा०)=नष्ट।

९- १०३ रा गो पी म व प्रतियों म यह पूरा सबद त्रुटित है। सम्पूर्ण सबद प्रश्नोत्तर रूप म है। पहली चार पंक्तियों म पांच प्रश्न और शेष चारों म उनके उत्तर हैं। अन्तिम प्रश्न और उत्तर यह है –मुसलमाणी कहा थी आई ?

महमद थी मुसलमाणी आई। इससे साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के कारण सम्भवत मुसलमानी प्रभाव या मुसलमानों की प्रशंसा समझ कर यह सबद ग्रहण नहीं किया गया। यह भी हो सकता है कि इन प्रतियों के आदर्शों मे यह सबद हाशिये मे रहा हो और इसे प्रक्षिप्त समझ कर न लिखा गया हो।

१०- ६५ १ स्वीकृत पाठ है व कवराई पार गिराई, अनत वधाई। रा गो पी म व प्रतियों म मोटे अक्षरों म छपा अंश दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है- कवराई तो वह है (जिससे समार-सागर से) पार उतरा जाय और जो (इस कारण) अपार आनन्ददायक हो अथवा जो अनन्त रूप से बढती ही जाय। 'पार गिराई' पाठ न होने से, 'कवराई' की महत्ता किस कारण से है, इसका पता नहीं चलता। अत मोटे अक्षरों म छपा पाठ मूल का है।

११- ७८ ■ स्वीकृत पाठ है

सिध साधक सुरनर मुनियर लाज, लाज सिरजण हारू।

रा गो पी म व प्रतियों म 'सुरनर' पाठ त्रुटित है। इस सबद मे रचयिता का कहना है कि उसकी निद्रावस्था मे यदि दिन भर बीत जाय, तो समस्त जगत की मर्यादा का लोप हो जाय। इसस जगत की अनेक वस्तुएँ अभाव रूप हो जाएँगी। उसी सम्बन्ध म प्रस्तुत पंक्ति है जिसका अर्थ है-सिद्ध, साधक, देवगण (या लोग) मुनि और सृजनकर्ता सब लया वस्था को प्राप्त हो जाएँगे। प्रसंग और प्रयोग की दृष्टि से "सुरनर" शब्द मूल पाठ का है। "सुर' के साथ "नर" का प्रयोग बहुवचन, लोग या श्रेष्ठ अर्थ मे हुआ है। सबदवाणी में ऐसे अन्यान्य प्रसंगों म 'सुरनर' शब्द का प्रयोग बहुत बार किया गया है। इसलिये यहा भी यही संगत है। अन्य उदाहरण ये हैं–

१–म्हा देखता देव दाणो सुरनर खीणा (२३ ६)।

२-सुरनर तणो सवेर (५२ ५)।

३–न तू सुरनर न तू सकर (६२ ११)।

४–कूण आण म्हे सुरनर देऊ (६३ ४२)।

५-सुरनर संकर को न उगाई (६५ १४)।
६-पया गुरवां सुरनर दवां (८६ १७)।
७-पाग सुरनर एगो मांग (६८ ६)।
८-सुरनर देव ज वदी खान (११२ ३)।
६-सुरनर तणा सनेगा ग्राया (११६ १)।

१२- ७ ३ स्वीकृत पाठ है बांध मार्ग मरक गुहेली, जायो जाय न पाई। रा गो पी म व प्रतियों म 'गुहेली' के पश्चात् 'तो है' पाठ मरता या है। साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण अपेक्षाकृत अधिक पूर्णतायुक्त भावाभिव्यक्ति के लिए यह प्रक्षेप हुआ प्रतीत होता है। एक कारण और भी हो सकता है। अन्यत्र यह पाठ है—न्य हय जायो जीय न पाई (८३ २८)। सम्भवत इसी साम्य पर प्रस्तुत पाठ म भी प्रक्षेप कर लिया गया हो।

१३- २४ स्वीकृत पाठ है सतगुर मिलियो, सतपथ बतायो, बद गरथ उदगार। रा गो पी म व प्रतियों म "बतायो" के पश्चात् "भ्रांति चुकाई" पाठ प्राप्त है। अन्यत्र भिन्न प्रसग म "सतपथ बतायो" के पश्चात् "भ्रांति चुकाई" पाठ आया है-सतगुर मिलियो सतपथ बतायो भ्रांति चुकाई (४३ ५)। इस कारण यहा भी प्रक्षेप हुआ है। प्रस्तुत प्रसग म "भ्रांति चुकाई" पाठ निरर्थक है क्योंकि रचयिता "सतपथ" और "बद गरथ" के सन्दर्भ म "भ्रांति चुकान"—भ्रम मिटाने की बात कहना है, न कि यह कि उसने ऐसा कर दिया है।

१४- ३६ १० स्वीकृत पाठ है हिन्दू होय क तीरथ धोक भूला रह्या इवाणी। रा गो पी म व प्रतियों म "धोक" के पश्चात् "पिंड भराव" पाठ प्रक्षेप है। प्रतीत होता है साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण "तीथ-पूजा" के अतिरिक्त हिन्दुओं के धार्मिक कर्मकाण्ड "पिंड भरने" को भी हेय बताया गया है। रचयिता ने सम्पूर्ण वाणी म तत्कालीन हिन्दू-समाज म प्रचलित धर्म के सामान्य बाह्याडम्बरों का तो यत्र-तत्र उल्लेख किया है किन्तु उनसे सम्बन्धित विशिष्ट क्रियाओं का नहीं।

१५- २ ५,६ स्वीकृत पाठ है लोई अलोई त्यौंह तिरलोई ऐसा न कोई
मोरी भांति न जाणत महियळ धूवा बखाणत।

रा गो पी म व प्रतियों म प्रथम पक्ति के पश्चात "जपा भी सोई जिहि जपिए आवागवण न होई" पक्ति प्रक्षेप है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है— (मैं) दृष्ट भी हूँ और अदृष्ट भी हूँ और वैसे ही त्रिलोक म (व्याप्त) हूँ, (मेरे) समान (और) कोई भी नहीं है। मेरी भांति को कोई नहीं जानता। (जिस प्रकार) पवत म धुएँ को देख कर अग्नि का अनुमान होता है (उसी प्रकार मेरी रचना देख कर मेरा अनुमान किया जाता है)। प्रक्षिप्त पक्ति का अर्थ होगा—हम उसका भी जप करते हैं जिसके जप से आवागमन नहीं होता। प्रस्तुत प्रसग म तो रचयिता स्वय को ब्रह्म मान कर, अपनी सब शक्तिमत्ता का बखान कर रहा है। अत यहा किसी दूसरी सत्ता के जप की बात असगत है।

१६- ६३ ३५-३८ स्वीकृत पाठ है

मइ दमार्गों पाट् परवार्गों, मइया उइया, निरजत सिरजत
न्हीं मोग जावा जूगी, एतीं मान फुरत माम्ह ।

"इमार्गों के परचात (र) रा मो पी प्रतियों म "तत समार्गों गुर फुरमार्गों एवं (म) म व प्रतियों में "गुर फुरमार्गों पाठ प्रवेश है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-ह लागो ! जो इस प्रकार से (ऊपर बताए गए प्रकार से) जानता है, वह निश्चित रूप से (सन्) पथ पर है। यहाँ से वहाँ तक (सबत्र) जड-चेतन, छोटी-मोटी (जितनी भी जीव-योनियाँ हैं, उन सबकी मन्मान मैं सत्य-नाम में देखा हूँ। "इमार्गों के पश्चात यदि "तत समार्गों गुर फुरमार्गों अथवा 'गुर फुरमार्गों' पाठ स्वीकार किया जाय, तो अर्थ की कोई सगति नहीं बटती। अत ये पाठ प्रक्षिप्त हैं।

(ग) रा गो पो प्रतिया

१- ६३ ६२-६४ स्वीकृत पाठ है रौद रूप करि राकस कडिया
बाण म हाथहि बनचर जुडिया
तदि पणि राखी कवण पती ?

रा गा पा प्रतियों म "रौद" के स्थान पर "राम" और "कडिया" के स्थान पर "हडिया" करके "राम रूप करि राकस हडिया" पाठ किया गया है जो अर्थ की दृष्टि से असगत है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(रामावतार के समय जब) रौद्र रूप धारण करके (रावण से) राक्षस युद्ध के लिए अडे, तब मेरी हाक पर, बाणों के आगे वनचर जुडे थे। उस समय पत किसने रखी ? यदि प्रथम पंक्ति का पाठ "राम रूप करि राकस हडिया" मानें, तो अर्थ होगा, राम रूप धरके (मैं) राक्षसों का वध किया। इससे द्वितीय पंक्ति निरर्थक हो जाती है। वास्तव में यहा रचयिता का मन्तव्य एक ओर राक्षसों और दूसरी ओर वनचरों के आपस में युद्ध करने का सकेत देते हुए राम की महिमा प्रदर्शित करना है। अत प्रसग और अर्थ की दृष्टि से "राम" और "हडिया" विकृत पाठ हैं।

१- ९६ ४ स्वीकृत पाठ है घडी स' घड ।

रा गा पी प्रतियो मे "घड" के स्थान पर "धमड" पाठ है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(अब तेरा दम) घडी है (बने ही) सबकी घडी हुई है। "घड" में "म" का प्रक्षेप करके "धमड" पाठ किया गया है जो अर्थ की दृष्टि से असगत है। (ख) (२) भी द्रष्टव्य।

३-१ ३ ६ १० स्वीकृत पाठ है भणी न भणिवा, गुणि न गुणिवा ।
सुणी न सुणिवा, कही न कहिवा खडी न खडिवा ।

रा गा पी प्रतिया म मोटे अक्षरों म छपा अश दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-(तून) पढने योग्य को पढा नहीं, मनन करने योग्य बातों पर मनन नहीं किया, सुनने योग्य बातों को सुना नहीं, कहने योग्य बातों को कहा नहीं (और) जोतने योग्य (भूमि को) जोता नहीं। "भणनो" और "गुणनो" के भिन्न अर्थ हैं किन्तु प्रयोग दोनों का प्राय एक साथ ही होता है। "भणने" की सार्थकता "गुणने" में ही है, केवल "भणना" ही नहीं बल्कि "गुणना" भी चाहिए। अन्यत्र भी ऐसे प्रयोग हैं -

ये पढि गुणि रहिया खाली। (७ ६ तथा ८ १४)

घायलो जोयणी भरणी गूंगणी (९६ ३१)

अत "गु गी न गु गिया" पाठ सगत है।

४– ११ १६ स्वीकृत पाठ है जो ज्न मतर विसा न जप्यो नगरे बीर बहाल।

रा गो पी प्रतिया म "जप्यो" के पश्चात् "त" प्रक्षिप्त है। अथ की दृष्टि स यह अनावश्यक है। इस सब्द म अन्यत्र भी इसका प्रयोग नहीं है।

५– ६० १० स्वीकृत पाठ है मो मैं थर विरोध घण हट सोइया।

रा गो पी प्रतिया म "हट" शब्द त्रुटित है। प्रस्तुत सबद म सम्मण ने उन प्रश्नों क क्रमश उत्तर दिए हैं जो इनसे पूव के ५६ वें सबद म श्री राम न उनस पूछे हैं। वहां पाठ है – क त थर विरोध घण हट साइया ? (५६ १०) और उसम "हट" शब्द रा गो पी प्रतिया म त्रुटित नहीं है। अत स्पष्ट है कि "हट" शब्द प्रस्तुत पाठ म सगत है।

६– ७६ ३,४ स्वीकृत पाठ है जिह न गादे विदे वाजत पू ए।

निह पारखी न चीन्हत कू ए।

रा गो पी प्रतियो म "जिह" के स्थान पर "जा पारखी" प्रतिलिपिकार द्वारा सचेष्ट रूप से किया गया प्रक्षेप है। "जिह के साथ "तिह" का प्रयोग सवथा उचित है। ऊपर की पक्ति में यदि "जा पारखी पाठ स्वीकार किया जाय तो ' पारखी" शब्द पुनरुक्ति के कारण व्यथ है, तथा दूसरी पक्ति म फिर "तिह ' के स्थान पर "ता" पाठ होना चाहिए, जो नहीं है। अत स्पष्ट है कि 'जा पारखी ' पाठ प्रक्षिप्त है।

७– ९३ ३५ स्वीकृत पाठ है अइ दमाणी, पोह परवाणी।

रा गो पी प्रतियो मे "दमाणी ' के पश्चात् "तत समाणी गुर फुरमाणी' पाठ प्रक्षप है। प्रसग और अथ की दृष्टि से यह प्रक्षेप असगत है। विशष द्रष्टव्य–(स) (१८)।

८– ९३ २७ स्वीकृत पाठ है

गुडक गाज से क्यों बीहे, जेभळ झागी सहस फणी।

रा गो पी प्रतियो म " गुडक गाज' के स्थान पर "गाज गुडक" पाठ-विपर्यय है।

(घ) म ब प्रतियाँ

१– १८ ९,१० स्वीकृत पाठ है जा जा पाल्या न सीलू।

ता ता भय कुचीलू।

म ब प्रतियो में दृष्टि-भ्रम से ' पाल्या" शब्द के स्थान पर "दया" पाठ है। इसस पूव पहली और सातवी पक्ति म जो "जा जा " से आरम्भ होती हैं, "दया" शब्द आ चुका है। प्रतीत होता है इस कारण "दया" पुन मूल मे लिखा गया। स्वीकृत पाठ म शील-पालन पर बल दिया गया है। अथ है–जो शील का पालन नहीं करत, उनके (सभी) कर्म उलटे हैं। अत यहां "दया शब्द प्रसग और अथ की दृष्टि से असगत है।

२– २४ ४ स्वीकृत पाठ है

उतिम कुळी का उतिम न कहिबा, कारण किरिया सारू।

म ब प्रतियो म "किरिया" के स्थान पर "करतब" पाठ-पर्याय है। अन्यत्र "कारण" के साथ सवत्र "किरिया" ही आया है, "करतब" नहीं –

१-क त कारण किरिया चूक्यो (५९ १)
२-ना हू कारण किरिया चूक्यो (६० १)
३-म्हे आप गरीबी तन गूदडियो, कारण किरिया देखा (११७ १)

न यहा भी "किरिया' पाठ अपेक्षाकृत अधिक सगत है।

४- १५ १४,२५ स्वीकृत पाठ है असध पुरष विपळीपति नारी
विण परच पार गिराय न जाई।

म व प्रतिया मे "असध" के स्थान पर "असिध' पाठ है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-दुष्ट पुरुष और व्यभिचारिणी स्त्री का बिना (गुरु-) परिचय के उद्धार नही हो सकता। (असध, असाधु=दुष्ट)। "असिध का अर्थ है जो सिद्ध नही है अथवा जिसे सिद्धि प्राप्त नही है। सिद्ध होना या न होना अथवा सिद्धि प्राप्त करना या न करना मनुष्य का सहज स्वाभाविक गुण या दोष नहा कहा जा सकता। भले ही कोई "सिद्ध' अथवा सिद्धि प्राप्त न हो किन्तु यदि भला काम और विष्णु-जप करता है, तो जाम्भोजी के अनुसार उसका उद्धार हो जाता है। प्रस्तुत 'असध" पाठ के अनुसार यदि गुरु-कृपा हो तो दुष्ट पुरुष का भी उद्धार समव है। अत "असिध" पाठ असगत है।

४- ३४ ३ स्वीकृत पाठ है काफर थूळ भयाणों।

'भयाणों' के स्थान पर म प्रति म "अपाणों" और व प्रति मे 'भयाणो पाठ है। प्रतीत होता ह इनके आदश इन स्थल पर सुपाठ्य न होने से "अपाणो' और 'भयाणों' पाठ लिखे गये। लिपिजन्य भूल के कारण भी य' का "प' लिखा जा सकता ह। स्वीकृत पाठ का अर्थ ह -(वह) काफिर भयभीत रहा।

५- ३६ ४ स्वीकृत पाठ ह घडी स' घड।

म व प्रतिया म इस पक्ति के स्थान पर "धगड स घडो" पाठ ह जो प्रसग और अर्थ की दृष्टि से निरर्थक ह। विशेष द्रष्टव्य-(ख)(२)।

६- ५६ ४६ स्वीकृत पाठ ह खाफरखानो बुध भराडो।

म व प्रतियो म अश्लीलत्व दूर करने के लिए "भराडो' के स्थान पर "विदारण" पाठ ह। स्वीकृत पाठ का अर्थ ह -बडे बडे नास्तिक और बुद्धि भ्रष्ट पुरुष। "बुध विदारण' का अर्थ होगा-बुद्धि को विदीर्ण करने वाले जो प्रसग और अर्थ की दृष्टि से असगत ह।

७- ६२ १,२ स्वीकृत पाठ ह
मोर अ ग न अळसी तेल न मलियो, न परमल पीसायो।

म व प्रतिया म "अळसी" के स्थान पर "आलस' पाठ ह। स्वीकृत पाठ का अर्थ ह-मेरे शरीर म न तो अलसी का (और) न ही (किसी प्रकार का अन्य) तेल मला हुआ ▮ और न ही उबटन लगा हुआ ह। स्पष्ट ह कि "आलस पाठ निरर्थक ह।

८- ६३ १७ स्वीकृत पाठ ह
पथ चलाया राह बताया, नव विरियां विष्न हमारो।

म व प्रतिया म मोटे अक्षरो मे छपे अशो के स्थान पर "नां बोलो वजगारी" पाठ ह। म व प्रतिया म मोटे अक्षरो मे छपे अशो के स्थान पर "नां बोलो वजगारी" पाठ ह। नवों ही इस सबद म प्रस्तुत पक्ति से ऊपर नौ अवतारों से सम्बन्धित प्रासगिक उल्लेख हैं। नवों ही

चार अवतार रूप की विजय हुई है, यह दिखाना रचयिता का मन्तव्य है। अतः प्रसग और अर्थ की दृष्टि से "तां चोतो बजगारी' पाठ असगत है।

९- ५६ १० स्वीकृत पाठ है ... क तै वर विरोध पण हट लोड्या ?

इस पक्ति के स्थान पर म प्रति में "वै विमूध धण क हिलोड्या" और व प्रति में "वर विलूध धन क ही लोड्या" पाठ है। इस सम्बन्ध में श्री राम १८ दोष गिनाते हुए सम्भवत मे उनके घायल होने का कारण पूछा है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है – क्या कि तूने वर विरोध (अथवा) जबरदस्ती (हठपूर्वक) किसी के धन को हरा? म प्रति में "वर" शब्द का "र" अक्षर स्पष्ट ही त्रुटित है। "विरोध" के स्थान पर म व प्रतियों में "विमूध", "विलूध" पाठ है जिसका अर्थ है–विक्षुब्ध। इसी प्रकार "हट" के स्थान पर "हि", "ही" पाठ है, जो निरर्थक है। अत म और व दोनों प्रतियों के ही पाठ असगत हैं।

१०- २ १०-१२ स्वीकृत पाठ है

त्यागी क ध्यानी क तिज कम धारी
लोली क पोली क जळ बिंब धारी
दया धर्म थापिलै निरजण सो बालो ब्रह्मचारी।

म व प्रतियों में मोटे अक्षरों में छपी पक्ति दृष्टि–भ्रम से त्रुटित है। सम्भवत प्रथम पक्ति के अंतिम शब्द "धारी" को द्वितीय पक्ति का "धारी" समझ लिया गया और यह पक्ति गिर जाने से रह गई। इसमें रचयिता अपना व्यक्तित्व प्रकट करता है।

११- ११ ८, ९ स्वीकृत पाठ है

विवे बळा विमन न जम्यो ताथ बोहत भई बगवाळ।

म व प्रतियों में 'ताथ' शब्द त्रुटित है। ताथ का अर्थ है–इसलिए, इस कारण। अर्थ की दृष्टि से प्रस्तुत पक्ति में 'ताथ" पाठ आवश्यक है।

१२- ११ १८ स्वीकृत पाठ है

जो जन मतर बिसन न जप्यो ते घण तण करैं अहाए।

म व प्रतियों में यह पूरी पक्ति त्रुटित है। इससे पूर्व १४ वीं पक्ति से प्रत्येक पक्ति "जा जन मतर बिसन न जप्यो" पाठ से आरम्भ होती है और आगे २८ वीं पक्ति तक, १५ पक्तियों में यही क्रम चलता है। इस कारण दृष्टिभ्रम से यह पक्ति त्रुटित रह गई प्रतीत होती है। केवल अपना ही पेट भरने वाले लोगों की भर्त्सना जाम्भोजी ने प्रकारान्तर से अन्यत्र भी की है–दुका जीम्या मगर मचाया, ज्यों हडियाया कुत्ता (११८ १)। अत प्रस्तुत प्रसग में यह पक्ति मूल पाठ की है।

१३- २० ११ स्वीकृत पाठ है

क्यों क्या भुय भाग ऊ रया, क्यों क्यों क म विहू रया।

म व प्रतियों में "भुय" शब्द त्रुटित है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है–अनेक अज्ञानी पुरुष तो ससार में यों ही भटकते (भागते) रहते हैं और अनेक तो (सत) कर्महीन ही रहते हैं। भुय= भूमि, ससार। अत अर्थ की दृष्टि से "भुय" पाठ आवश्यक है।

१४- ३७ २ स्वीकृत पाठ है उतिम सग सु सगू, उतिम रग सु रगू

उतिम लग सु लगू , उतिम ढग सु ढगू

म व प्रतिया म मोटे अक्षरों म छपा अ न दृष्टिभ्रम से त्रुटित है। भावार्थ है–उत्तम की सगति ही सगति है, हरि या गुरु प्रेम का रग ही रग है, ससार-सागर को पार लांघना ही लांघना है तथा मुक्ति का उपाय हा उपाय है। इस 'सबद' की भाति ससार-सागर से पार होने–"पार पिराय" का उल्लेख अनेक शब्दों म हुआ है।

१५- ४६ ७, ८ स्वीकृत पाठ है

नान्ही पवणी जीवा जू णी निरजत सिरजत
फिरि फिरि पूटा आव ।

म व प्रतिया म "निरजत सिरजत" पाठ त्रुटित है । स्वीकृत पाठ का अर्थ है -(पावडी लाग) ढोरा-मोनी, जड-चेतन, अनेक योनियों मे बार-बार वापिस आते रहते हैं। निरजत= जड। सिरजत=चेतन। अन्यत्र भी ये शब्द इस अथ म आए हैं -

१-मइया उइया, निरजत सिरजत (६३ ३६)
२-काठ का घोगा निरजीत ता सरजीत करिस्य (९० ९)

१६- ६७ १५, १६ स्वीकृत पाठ है

एते मसले चालो मीया, तो पावो भिसत ईमानू ।

म व प्रतियो म 'भिसत' शब्द त्रुटित है। 'भिसत' (बहिश्त) पाने की बात सबदवाणी में अनेक जगह कही गई है, विशेषत जीवन्मुक्त पुरुषा के लिए। इस सबद में भी १० वी पक्ति म जीवमुक्ति का उल्लेख है – "जे जीवता खाकी होयस्य'। बहिश्त पाने के लिए जीवमुक्ति आवश्यक है इमान के लिए नहा । अत 'भिसत पाठ इस प्रसग म सवथा सगत ह।

१७- ७१ ७ स्वीकृत पाठ ह

भूत परेती जाखा खाणी, अं पाखड परवाणों ।
वलि वलि कूकस काय दळोज जिह मा कणों न दाणों ।

म व प्रतियों म मोटे अक्षरा म छपा अ न त्रुटित ह। स्वीकृत पाठ का अर्थ ह – 'भूत, प्रेत, यक्ष आदि की पूजा करना पाखण्ड का प्रमाण ह। म व प्रतिया के त्रुटित पाठ–"भूत परेती जाखा खाणी" का अर्थ अपूर्ण ही रहता ह और न ही इसकी सगति इसके ऊपर की या नीचे की पक्ति से किसी प्रकार बठती ह। अत "अ पाखड परवाणों' पाठ सगत ह।

१८- ७८ ४ स्वीकृत पाठ है

नवस नदी निवासी नाळा लाजे, लाज सागर खारू ।

म व प्रतिया म यह पूरी पक्ति दृष्टिभ्रम से त्रुटित ह। इससे पूर्व दूसरी और तीसरी-चौथा पक्तियों का अन्तिम अर्द्धांग क्रमश इस प्रकार ह –' लाज घर धणारू , "लाज नव-लग तारू '। प्रस्तुत पक्ति के पश्चात भी सातवी पक्ति तक, सब पक्तियों म उनका अन्तिम अर्द्धांग "लाज" शब्द से प्रारम्भ होता ह। प्रसग की दृष्टि से प्रस्तुत पक्ति सगत ह।

१९- स्वीकृत सबद १०३ तथा १०४ ।

म० व० प्रतिया म ये दोनो सबद पूरे के पूरे त्रुटित हैं। ये दो सबद प्रश्नोत्तर रूप मे हैं, अतः

सम्भव है कि प्रतिलिपिकारों ने इन्हें प्रक्षिप्त समझ कर छोड़ दिया हो। १०३ वाँ सबद साम्प्रदायिक दृष्टिकोण के कारण भी सम्भवतः न लिखा गया हो।

२०– सबद १२२ ।–बिसन बिसन तू भणि रे प्राणी, प च लाख उपाजूं।
रतन कया बैकुंठ वासो, पुरा मरण भौव भाजूं।

म ब प्रतियों में यह पूरा सबद लुप्त है। इससे पूर्व "बिसन बिसन" शब्द से आरम्भ होने वाले तीन सबद लगातार आये हैं—११९ १, १२० १, १२१ १। इनमें से प्रथम दो सबद तो दो दो पंक्तियों के ही हैं। सम्भवतः इस कारण दृष्टिभ्रम से प्रस्तुत सबद लुप्त रह गया है।

२१– १५ ६ स्वीकृत पाठ है भूला प्राणी मर्हे स करणी।
म ब प्रतियों में "स" के पश्चात "बीज" अधिक है जो अर्थ की दृष्टि से अनावश्यक है।

२२– २५ १३ स्वीकृत पाठ है
ध्याने ध्यानें नादे विंद ज नर सगां सन भी सारी सीयो।

'ध्यान' शब्द के पश्चात म प्रति में "सील सजम भय' तथा ब प्रति में "साल सजम' पाठ प्रक्षेप है जो साम्प्रदायिक प्रभाव के कारण हुआ प्रतीत होता है। सम्प्रदाय के २९ धर्म नियमों में शील, शौच, सतोष की भी गणना है। अतः यहां भी "सीले', "सजम' (शील, संयम) पाठ का प्रक्षेप किया गया है जो प्रसंग की दृष्टि से अनावश्यक है।

नीचे पाठ-विपर्यय के कतिपय उदाहरण दिये जाते हैं यद्यपि इनसे अर्थ की असगति नहीं होती –

२३– १४ ११ स्वीकृत पाठ है नागड भागड भूला महियल
"भूला महियल के स्थान पर म प्रति में "महियल भूला", और ब प्रति में "महिल भूला पाठ-विपर्यय है। ब प्रति के पाठ में "य" लुप्त है।

२४– १६ १४ स्वीकृत पाठ है दुनियां राती बाद विवादूं।
"दुनिया राती" के स्थान पर म प्रति में 'राती दुनिया', और ब प्रति में "रीती दुनिया" पाठ-विपर्यय है। ब प्रति में "रा' के स्थान पर "रीती' का "री" नागरी-लिपिजन्य भूल का परिणाम है।

२५– ५७ ३ स्वीकृत पाठ है अहनिस आव घटती जाव।
म ब प्रतियों में "घटती जाव' के स्थान पर 'जाइ घटती" पाठ-विपर्यय है।

२६–८६ १२ स्वीकृत पाठ है विणि ढोलां डूं मां लावहिंयों।
म ब प्रतियों में 'ढोला डूं मा' के स्थान पर "डूं मा ढोला पाठ-विपर्यय है।

२७– १०७ १५–१८ स्वीकृत पाठ है
विजळी क चमक आव जाय, सहज सुंय मा रहे समाय (१५,१६)
न वो गाव न र गवाव, सुरगे जाता वार न लाव (१७, १८)।

म ब प्रतियों में प्रथम पंक्ति के स्थान पर दूसरी और दूसरी के स्थान पर पहली पंक्ति का विपर्यय है।

२८– ४९ १० स्वीकृत पाठ है हम राजा के गयो

म ब प्रतियां म "राजा" के स्थान पर लेखन–प्रमाद से "रजा" पाठ मिलता है।

(ड) ला म ब प्रतियां

१-२७ २२ स्वीकृत पाठ है

मोर घरतो ध्यान वणासपति वासो, उजूमडळ छायो।

'वणासपति' शब्द के स्थान पर ला प्रति में "वणासति" और म ब प्रतियों में "वणासत" निरर्थक पाठ है। "वणासपति" के स्थान पर "वणासति" या "वणासत" रचयिता का रूपान्तर नहीं हो सकता, क्योंकि अन्यत्र भी "वणासपति" प्रयोग ही मिलता है — राघव मना त पइन्दे राखा, ज्यों राखा पान वणासपती (६३ ७२, ७३)।

२-२७ ६१ स्वीकृत पाठ है जोग मारग सह डा'यो।

ला म ब प्रतियां म "मारग" के स्थान पर "जुगति" पाठ है। स्वीकृत पाठ का अर्थ है-सभी योग मार्गों म प्रवीण हूं। डा'यो=चतुर, प्रवीण। यहा "जुगति" पाठ भी ठीक है किन्तु इसमें अपेक्षाकृत सीमित अर्थ का द्योतन होने से "मारग" पाठ अधिक सगत है।

३-३७ ३,४ स्वीकृत पाठ है

खार समद पर पर रे चौखड खारू, पहला अ त न पारू।

ला म ब प्रतियों म मोटे अक्षरो म छपा पाठ त्रुटित है, जिसका अर्थ है-(जिसके) आदि-अन्त का पार नहीं है। इसम "खार समद" की विशेषता बताई गई है, जो प्रसग की दृष्टि से सगत है।

४-२८ ९, १० स्वीकृत पाठ ह ई ह खाव्यो जळमतर सामी।

इह निस तेरो नाव जपतो।

ला म ब प्रतियां म सम्बोधन रूप "सामी" शब्द त्रुटित है। लय की दृष्टि से भी 'सामी' पाठ आवश्यक ह।

५-२८ ६५ स्वीकृत पाठ ह जाण गीत विवाहे गाइय।

ला म ब प्रतियो म "गीत' शब्द त्रुटित ह। "गाइय" क्रिया "गीत" सज्ञा के लिए है, अत "गीत" शब्द सगत ह।

(च) जा म ब प्रतियाँ

१-२९ ८ स्वीकृत पाठ ह

रे मसवासो तीरथवासी किणि घटि पठा जीयो ?

जा म ब प्रतियां म "मसवासी" (=मासवासी) के स्थान पर "मिसवासी" पाठ ह जो अर्थ की दृष्टि से असगत ह।

२-४९ ७ स्वीकृत पाठ ह ना'ही पवणी जीवा जू णी निरजत सिरजत

जा म ब प्रतियां म "पवणी के स्थान पर 'मोटी पाठ-पर्याय ह किन्तु अपेक्षाकृत प्राचीन प्रयोग की दृष्टि से "पवणी पाठ स्वीकार्य ह। या "वाणी" मे "मोटी शब्द भी आया ह।

३-२५ १५ स्वीकृत पाठ ह

तारादे रोहितास हरीचद काया दसवध दीयो।

"दीयो ' शब्द के पश्चात जा प्रति म "धरि करण त्रिया सप मुग धन द दासव कीयो" तथा म व प्रतियो म "घा जोग मन कीया ' पाठ-प्रक्षेप है। अथ की दृष्टि म ये पाठ असंगत हैं। फिर, करण का उल्लेख इसस पूव १४ वी पंक्ति म हो ही चुका है, अत यहां अनावश्यक है।

(४) सबद प्रतीक तुलनात्मक संख्या-सूची

क्रम-संख्या	सबद-प्रतीक	स्वीकृत पाठ-संख्या	प्रतियाँ						
			ला	ब	म	पा	जा	रा	गो
१	प्रति वळ दानो सभ गिनाना	५५	५५	५७	५७	५६	५५	५७	५७
२	अइया लो अपरपर वाणी	४	४	५	५	५	४	५	५
३	अरण विहांणे, र रिव माण	५२	५२	५४	५४	५३	५२	५४	५४
४	अरधू गरधू साहुण थादू	११४	११४	१००	१००	११२	११५	१००	१००
५	अरधक धरा निरधक सून्न	८९	८९	८९	८९	८९	८९	८९	८९
६	अलख अलख तू अलख लख	८०	८०	८२	८२	८०	८०	८२	८२
७	आतरि पातरि राही रूपमणि	६१	६१	६३	६३	६२	६१	६३	६३
८	आप अलप उपनो सिभू	९५	९५	१०५	१०५	९५	९५	१०५	१०५
९	आयसा काहे काज खेह भकरूडो	४५	४५	४२	४२	४६	४५	४२	४२
१०	आयसा अगछाळा पावडी काय	४२	४२	११६	११६	४३	४२	११६	११६
११	आयो हकारो जीवडो बुलायो	२८	२८	३०	३०	२९	२८	३०	३०
१२	आसण बसण कूड कपट	२२	२२	२४	२४	२३	२२	२४	२४
१३	ईमा मोमिण चीमा गायम	११५	११५	११३	११३	११३	११६	११३	११३
१४	उतिम संग सु संगू उतिम रंग	३७	३७	३९	३९	३८	३७	३९	३[illegible]
१५	उमाज गमाज पंज गंज यारी	६४	६४	६६	६६	६४	६४	६६	६[illegible]
१६	एक दुख लक्ष्मण बंधू हण्यो	५८	५८	६०	६०	५९	५८	६०	६[illegible]
१७	ओ३म आदि सबद अनाहद वाणी	६४	६४	६३	६३	६४	६४	६३	६[illegible]
१८	कचण दानू कछू न मानू	१००	१००	१०४	१०४	१००	१००	१०४	१०[illegible]
१९	कवण न हुवा कवण न होयसी	३१	३१	३३	३३	३२	३१	३३	३३
२०	कवण स मोमिण कवण स माण	१०३	१०३	—	—	—	१०३ १०४	—	—
२१	काहे रे मुरिखा त जळम गुमायो	११	११	१३	१३	१२	११	१३	१३
२२	काजी कथ मुल्लाणी	३४	३४	३६	३६	३५	३४	३६	३६
२३	काया त क्या मन जोगू टो	५०	५०	४७	४७	५१	५०	४७	४७
२४	काया कोट पवन कोटवाळो	९७	९७	९२	९२	९७	९७	९२	९२
२५	कुपाता न दान ज दीयो	५४	५४	५६	५६	५५	५४	५६	५६

६१-गोर [illegible] गोर मर भाजी	६८	६८	६१	[illegible]	६६	४८	[illegible]	६१
६२-मरणा पूजे गाल्ण पूजै	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१	७१
६३-गरे पोळि मर ण्याखा	७६	७६	७८	७८	७६	७६	७८	७८
६४-मा हूं माल्म किरिण पूजतो	६०	६०	६२	६२	६१	६०	६२	६२
६५-किर को मावण किण मरणातो	१०७	१०७	१०९	१०९	१०८	१०८	१०९	१०९
६६-नदि मान्ज मा मामार-नदि	२०	[illegible]	२७	७	२६	५	७	७
६७-नदि मान्ह मङ्ग मामार-भुरा	५७	५७	५९	५९	५८	५७	५९	५९
६८-गुरण गु रार किण ा माल मल	३२	३२	३४	३४	३३	३२	३४	३४
६९-गारा गारि मव मर गार	७७	७७	७९	७९	७७	७७	७९	७९
७०-मर पूर भावो र धा गा	३०	[illegible]	३१	३१	३०	२९	३१	३१
७१-मरणि भवलि म्हारे ण्हा जोगी	५	५	६	६	६	५	६	६
७२-भूरा मा मळ भूना तो	७१	७१	७३	७३	७१	७१	७३	७३
७३-मोमि भना किरणाल भी भनो	८३	८३	८५	८५	८३	८३	८[illegible]	८५
७४-माग्रा मत किर जउ भागरि	२६	२६	२८	२८	२७	२६	२८	२८
७५-मवि दूरा माह गिरा गा	८६	८६	९४	९४	८६	८६	९४	९४
७६-मुघर गगर मा तालो हूंतो	१११	१११	११०	११०	१०९	११२	११०	११०
७७-माग्म मत्म र मरि काजो	१०	१०	१२	१२	११	१०	१	१२
७८-मू द मु दावो मा न मु दावो	८२	८२	८४	८४	८३	८२	८४	८४
७९-मोरा उत्पथान यदू मगा तन	१२	१२	१४	१४	१३	१२	१४	१४
८०-मोर म ग न मळमी तन र	६२	६२	३	३	३	६२	३	३
८१-मोर छाया र माया मोही	२	२	[illegible]	२	२	२	२	२
८२-मोर सहजे सु दरि लोनर बांगी	१५	१५	१७	१७	१६	१५	१७	१७
८३-मोहे मडप थापि थापन	४१	४१	५२	५२	४२	४१	५२	५२
८४-म्हे माप गराया तन गुरुहियो	११७	११७	११५	११५	११५	११८	११५	११५
८५-म्हे भन पारखी पागह मझ्या	७९	७९	८१	८१	७९	७९	८१	८१
८६-राज गय राजिंदर कुरव	४६	४६	४३	४३	४७	४६	४३	४३
८७-राज न भूली लो राजिंदर	२३	२३	२५	२५	२४	२३	२५	२५
८८-रिणघटिय क खोज फिरता	५३	५३	५५	५५	५४	५३	५५	५५
८९-रूप अरूप रमू प्यंड ब्रह्मंड्य	१७	१७	१९	१९	१८	१७	१९	१९
९०-रे रे पिंड स पिंड	३६	३६	३८	३८	३७	३६	३८	३[illegible]
९१-लखमण नखमण न कहि मायमा	३८	३८	४८	४८	३९	३८	४८	४८
९२-लो लो रे राज्यदर रायो	२०	२०	२२	२२	२१	२०	२२	२२
९३-लोहे लग लुहार	३५	३५	३७	३७	३६	३५	३७	३७
९४-लोहे हुता कचण घडियो	१४	१४	१६	१६	१५	१४	१६	१६
९५-वळि वळि भणत वियासू	३३	३३	३५	३५	३४	३३	४५	३५

९६-चेत विगत छिन करि प्राणी	९८	९८	९५	९५	९८	९८	९५	९५
९७-छिन छिन मगि अवर	११०	११९	१०२	१०२	११६	१११	१०२	१०२
९८ छिन छिन तू मगि—इह	११६	११८	११७	११७	११८	११०	११०	११७
९९-छिन छिन तू मगि—जै मन	९९	९९	९७	९७	९९	९९	९७	९७
१००-छिन छिन तू मगि प के नाम	१२२	१२१	—	—	१२१	१२३	११९	१२०
१०१-छिन छिन तू मगि बिन मरणा	१२१	१२१	—	—	१२०	१२२	—	—
१०२-छिनन्ता रहमान रहीम	६७	६७	१०	१०	६७	६७	१०	१०
१०३-कर कुराण कुमाया काछू	७२	७२	७२	७२	७२	७२	७२	७२
१०४-द जराग पार गिरादे मनत	६५	६५	६८	६८	६५	६५	६८	६८
१०५ मनत पाछ रखैं त्रिलोके	४३	४३	४०	४०	४४	४३	४०	४०
१०६-मनत पसाले बुध म वरि	४०	४०	५१	५१	४१	४०	५१	५१
१०७-मन्द साम महज रचाइ ला	१०८	१०८	१०७	१०७	१०६	१०९	१०७	१०७
१०८-मन्द नाव माइ मन मिमू	९३	९३	९४	९४	९३	९३	९४	९४
१०९-मोत मही मह कूच न कहिवा	१०६	१०६	९९	९९	१०४	१०७	९९	९९
११०-माहिया हुआ मरण मत भाणा	२१	२१	२३	२३	२२	२१	२३	२३
१११-मुनि गुणवता मुनि बुधिवता	९६	९६	९६	९६	९६	९६	९६	९६
११२-मुनि राजिन्द मुनि आगिदर	४४	४४	४१	४१	४५	४४	४१	४१
११३-मुनि रे काजा मुनि—कर कमाइ	७	७	८	८	८	७	८	८
११४-मुनि र काजा मुनि मुनियो लोग	१०१	१०१	१०६	१०६	१०१	१०१	१०६	१०६
११५-मुरा हुवो निमू आयो	१०४	१०४	—	—	१०२	१०५	११८	११६
११६-मुन्ना सना सनेमा आया	११६	११६	११४	११४	११४	११७	११४	११४
११७-मुर मा नीरा मीणा मवदू	१३	१३	१५	१५	१४	१२	१५	१५
११८-हुड म्नामू हर माच बिमनू	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०	७०
११९ मना ना मन पासी नो	१०९	१०९	१०८	१०८	१०७	११०	१०८	१०८
१२०-मा वगन्मे मन्य मगे	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३	७३
१२१-हरख नारी मरफ बु दर	१०२	—	—	—	—	१०२	—	—
१२२-मिट्टू नाय क हरि वयू न जम्पो	६	६	७	७	७	६	७	७
१२३-मन्द्र मजरा जारि ले अमरा	१२३	—	४६	४६	११६	—	४६	४९

(५) प्रतियों का प्रतिलिपि-सम्बन्ध —

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर प्रतियों का परस्पर सम्बन्ध इस प्रकार स्थिर होता है —

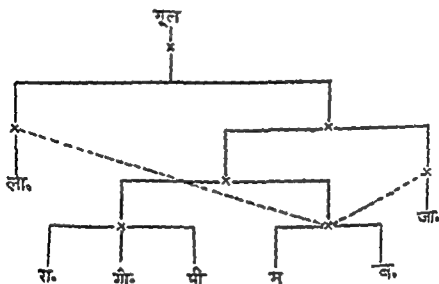
१- आ ग गा पो म ब प्रतियाँ एक समूह का निर्माण करती हैं।

२– इस समूह के [illegible] रा० गो० पी० म० व० प्रतियाँ तथा उप-समूह की प्रतियाँ हैं। जा० [illegible] समूह की प्रतियों में [illegible]–विशिष्टता भी मिलती है, [illegible] प्रति [illegible] समूह से [illegible] पृथक है।

३– इस उप-समूह में रा० गो० पी० तथा म० व० प्रतियों का अपनी-अपनी पृथक [illegible] विशिष्टता होने के कारण, [illegible] भी [illegible]–[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होते हैं। [illegible] म० व० [illegible] प्रति में [illegible]–[illegible] [illegible]-विशिष्टता मिलती है [illegible] प्रतिलिपि [illegible] प्रतिलिपियों में [illegible] समान [illegible] प्रतीत होती है।

४– जा० प्रति तथा म० व० प्रतियों का पूर्व [illegible] में कहीं [illegible] पाठ की तुलना करने के कारण [illegible]–[illegible] हुआ है। इसी प्रकार ला० तथा म० व० प्रतियों में भी [illegible] पाठ का [illegible] करने के कारण पाठ-मिश्रण के उदाहरण मिलते हैं।

प्रतियों के [illegible] रेखाचित्र में इस प्रकार [illegible] गये हैं —



(६) सम्पादन-सिद्धान्त

१–सभी प्रतियों में प्राप्त संगत पाठ,

२–ला० और जा० प्रतियों में प्राप्त संगत पाठ,

३–ला० तथा रा० गो० पी० प्रतियों के समूह में प्राप्त संगत पाठ,

४–ला० तथा म० व० प्रतियों के समूह में, पाठ-मिश्रण के उदाहरणों के अतिरिक्त प्राप्त संगत पाठ

–मूल प्रति का माना गया है।

(७) अपवाद

कुछ निम्नलिखित अपवाद हैं —

१-सबद ११ स्वीकृत पाठ है —जा जन मतर विसन न जप्यो।

इस पंक्ति की पुनरावृत्ति इस सबद में अनेक बार हुई है। ला ज प्रतियों में "जन" के स्थान पर श्रुतिदोष से "न" की ध्वनि को "ल" में परिवर्तित कर "जल" पाठ दिया गया है। इससे भ्रमभ्रम होने के कारण यहां शेष प्रतियों में प्राप्त "जन" पाठ स्वीकार्य है।

२-३१ ८, ३४ ६, ३५ ६, ३६ ८ स्वीकृत पाठ है को को बोलक थूळू।

जा रा गा पी म प्रतियों में "बोलक" के स्थान पर "बोल्त" पाठ है। "बोलक" (बोलने वाला, कहने वाला) पाठ अपेक्षाकृत अधिक संगत और प्रसंगानुकूल होने से ग्रहण किया गया है।। व प्रति में ३३, ३४, ३५, सबद में तो "बोल्त" पाठ है किन्तु ३६ ८ में "बोलक" होने से इसकी पुष्टि होती है। ऐसा प्रयोग अन्यत्र भी मिलता है —

गुर ध्याय रे ग्यानी तोड़िक मोहा (१ १६)।

३-६० २४ स्वीकृत पाठ है जदि को दोस न दोको होइयो।

सा जा प्रतियों में मात्र अक्षरों में छप अ दा के स्थान पर "अदोसा दइयो" पाठ है। ५९,६० सबद एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। पहले में राम के प्रश्न और दूसरे में लक्ष्मण द्वारा उनके क्रमशः उत्तर दिए गये हैं। प्रसंगानुसार 'अदोसा दइयो" पाठ विकृत होने से स्वीकार्य नहीं है।

४-६३ १० स्वीकृत पाठ है अजमे हू ता नागोवाड

सा जा रा गो पी व प्रतियों में "अजमे" के स्थान पर "अज म्हे" पाठ है। पाठ-प्रवाह के कारण "र" का लोप होने से "अजमेर" को "अजमे" लिखा गया है। मरुभाषा में "र" का लोप और आगम बहुधा होता है। इस सबद की आठवीं पंक्ति से विभिन्न स्थानों की नाम-गणना प्रारम्भ होती है अतः प्रसंगानुकूल होने से "अजमे" (अजमेर से तात्पर्य है) पाठ संगत है। "अज म्हे" का अर्थ है—"आज हम" जो यहाँ असंगत है।

५-७८ ३ स्वीकृत पाठ है जिहं क नादे विंदे वाजत पूरा।

सातों प्रतियों में "विन्द" के स्थान पर "वेदे" पाठ है जो प्रसंगानुकूल न होने से ग्रहण नहीं किया गया। प्रथम सबद की भाँति प्रकारान्तर से इस सबद में भी गुरु की विशेषताएँ बताई गई हैं। अन्तर इतना ही है कि वहां सामान्य रूप से 'गुरु' की विशेषताएँ वर्णित हैं और यहां व स्वयं के संदर्भ में हैं। कहना न होगा कि जाम्भोजी स्वयं को 'गुरु', परम गुरु 'विष्णु' मानते हैं। प्रथम सबद में स्वीकृत पाठ है —जो गुर होयबा सहजे सीले नादे विंदे (१ ३)। अतः यहां भी 'विंद' पाठ होना चाहिए। श्रुतिदोष में भी इकारान्त रूप का एकारान्त लिया जाना सम्भव है, क्योंकि इसके अनेक उदाहरण इन सभी प्रतियों में मिलते हैं।

६-८३ ७ ८ स्वीकृत पाठ है

तदि मैं रूप कियो मणावतियो, सतवन्त को ज्ञान उचारो।

तदि म्हे रूप रच्यो कामठियो, तेतासू कोड हकारी।

सा जा गो पी म व प्रतियों में मोटे अक्षरों में छपा अंश दृष्टिभ्रम से भ्रष्ट है। इस सबद में रचयिता ने पूर्व में हुए ९ अवतारों का उल्लेख किया है जिसकी पुष्टि आगे १७वीं

पंक्ति में वह स्वयं ही करता है—पंथ चलाया राह बताया, नव विरियां विज हमारा। यहाँ यदि 'कामठ' (कमठ, कच्छप) अवतार का नामोल्लेख मूल का न माना जाय तो ८ अवतारों का उल्लेख ही रहता है जो अपूर्ण है।

७-८४ ८ स्वीकृत पाठ है ल थाया कामदर होमू ला, दोष घड लो भारी।

जा रा गो पी प्रतियों में मोटे अक्षरों में छपे अंश के स्थान पर 'ओों ई धण का भारा' पाठ है। म व प्रतियों में यह पूरी पंक्ति त्रुटित है। विष्णोइयों में शव को भूमि में गाड़ने की परम्परागत प्रथा है जिसकी पुष्टि उपर्युक्त कथन से होती है। अर्थ है—"शव को यदि अग्नि में जलाओगे, तो भारी दोष लगेगा। परवर्ती लिपिकारों ने सम्भवतः साम्प्रदायिक आग्रह के कारण इसमें मुसलमानी प्रभाव की कल्पना कर यह पाठ-प्रक्षेप किया है जो अर्थ की दृष्टि से भी असंगत है। यह मूल साम्प्रदायिक परम्परा को न समझने के फलस्वरूप किये जाने के कारण अनुचित है। विशेष द्रष्टव्य-अध्याय ७ विष्णोई सम्प्रदाय—शीर्षक-६ (झ)।

८-११२ २ स्वीकृत पाठ है

किरत खेत की सींव मैं लीज, पीज ऊंडा नीर ।

"ऊंडा" के स्थान पर ला प्रति में "ऊंडा" और रा गो पी म व प्रतियों में 'ऊंडा" पाठ है। सम्प्रदाय के मान्य २९ धर्मनियमों में दसवां नियम पानी, ईंधन और दूध को छानबीन कर व्यवहार में लाना है। "ऊंडा" का अर्थ है—छानने का वस्त्र। यहाँ "ऊंडा नीरू" का भावार्थ वस्त्र से छाने हुए और साफ जल से है। "ऊंडा नीरू" का तात्पर्य "गहरे पानी से है जो कुएँ के पानी का द्योतक है। सीमित अर्थ का बोधक होने से "ऊंडा" शब्द ग्राह्य नहीं है। पानी कुएँ का हो चाहे तालाब का, मान्य नियम के अनुसार छान कर ही व्यवहार में लाना चाहिए। अतः 'ऊंडा' पाठ मूल का है।

९-सबद १२३ अवधू अजरा जारिले अमरा राखिले ।

ला जा प्रतियों में यह सबद त्रुटित है। प्रतिदिन हवन के समय इसका पाठ किया जाना परमावश्यक है। परम्परा से ऐसा होता आया है और अन्य प्रतियों में मिलता है। अतः यह मूल का है। विशेष द्रष्टव्य—अध्याय ७, विष्णोई सम्प्रदाय, १२वें शीर्षक के अन्तर्गत। सम्भवतः अत्यधिक प्रचलित होने के कारण भी यह इन प्रतियों में न लिखा गया हो।

नागरी-लिपिजन्य विकृतियों का उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर आगे सबदवाणी का पाठ-सम्पादन किया गया है। विभिन्न पाठान्तर और महत्त्वपूर्ण रूपान्तर यथास्थान दिये गये हैं।

---

(१)

गुर[१] चीन्ह[२] गुर चीन्ह[३] पिरोहित,
गुर मुखि ध्रम[४] वखाणी।
जो गुर होयबा[५] सहजे[६] सीले नावे खिंदे[७]
तिह[८] गुर का आलिंगार[९] पिछाणो[१०] ।
छह[११] दरसण जिहक[१२] रोपणि[१३] थापणि[१४]
समार[१५] वरतणि[१६] निज[१७] करि[१८] थरप्या
सो गुर परतकि[१९] जाणी।
जिहक[२०] खरतरि गोठि निरोतरि[२१] वाचा
रहिया रुद्र समाणी।
गुर आप सतोषी अवरा[२२] पोषी,

१-गो —गुर स पूव ऊ।
२-जा रा गो पी म व —चीन्हा।
३-रा गा पा —चीन्हि।
४-जा रा गो पी म ब —धरम।
५-गा —ह्वबा व —हेइबा।
६-गो —सहज सील के मध्य न दे प्रक्षिप्त।
७-जा रा गो पा म —न्हेंदे, व —न्हेंदे।
८-रा —जिहि गो पी म ब —तिहि।
९-जा गो —आलीवार।
१०-म —पिछाण।
११-जा रा गा पी व —छव।
१२-गा —जहक, गा पी —जिहिक म व —गुरक।
१३-रा गा म —रोपरा, पी —रोपिण।
१४-ला —मुन्ति है।
१५-जा —महमार रा —ससार।
१६-रा गो पी म व —वरतण।
१७-म —निझ।
१८-जा रा गो पी —कर।
१९-रा —प्रनिग गो पी —परतव, म —प्रत्यग, व —प्रतवि।
२०-ला —अहक गो पी म ब —जिहिक।
२१-रा —निरन्न पो —निरोतर, म —नरंतिर, व —निरोत।
२२-म व —वोरा।

सत[1] महारस[2] वांणी । (११)
के के अळिया वासण होत हीतासण[3] (१२)
तोहा मां[4] खीरि[5] दुहाज[6] (१३)
रसू[7] न गोरसू[8] घीय न लियो (१४)
तांहां[9] दूध न पांणी । (१५)
गुर ध्याय[10] र ग्यांनी[11] तोडिवा[12] मोहा (१६)
अति घुरसांणो छीजत लोहा (१७)
पांणी[13] छलि[14] तेरी खाल पखाला[15], (१८)
सतगुर तोड मन का साला । (१९)
सतगुर होई[16] सहज पिछांणो (२०)
किसन चिरत विणि काच करव[17] (२१)
रहो[18] न रहिसी पाणी ॥ १ ॥ (२२)

(२)

मोर[19] छाया न माया लोही न मासू[20] । (१)
रगतू[21] न धातू[22] मोरे[23] माई न बापू[24] । (२)

१–रा गो म —सत ।
२–रा —माहारस ।
३–म —हुतासण ।
४–जा —जाहामा रा गो —नामैं, म —निहामा, व —तिहिमा, पी —जामा ।
५–जा रा पी म व —पीर, गो क्षीर ।
६–जा रा पी —दुहीजू गो —दुहीजौ ।
७–रा —रसुव, म व —रसौ ।
८–ला —गुरसु ।
९–रा गो पा व —तहा म —त्यावा, ला —तावा ।
१०–जा धाय ।
११–गा म व —गानी ।
१२–जा गो पी म व —तो त रा —ताडित ।
१३–ला —पणी ।
१४–रा पी —छल ।
१५–गा म व —पपाला ।
१६–जा गो पी व —हैतू रा —है तो, म —है तौं ।
१७–ला —मे इस पंक्ति के स्थान पर काच करव किसन चिरत विणि पाठ है ।
१८–म —रह्या ।
१९–रा गो —मोर से पूर्व था है ।
२०–जा रा गो पी म व —मासौं ।
२१–रा म व —रगता, गा —रकतू ।
२२–रा म व —धाता ।
२३–म —मेरे ।
२४ रा गो म व वापौं ।

आपेणि[1] आप[2] रह्यो[3] न राप[4] । (३)
कोप[5] न कळाप[6] दुख[7] न सराप[8] । (४)
लोई अलोई त्यौंह तिरलोई[9], ऐसा न कोई[10] (५)
ओरी आदि न जाणत, महियळ धूवां वखाणत (६)
उरध[11] ढाकिल तिसूळ[12], आदि अनादि सो हम रचीलो (७)
हुवें[1] तिरजीलो स कवण[14] ? (८)
न्ह जोगी क भोगी क अळप अहारी । (९)
ग्यानी क ध्यानी क निज क्रम[15] धारी[16] । (१०)
सोसी क पोषी क जळ बिंब धारी[17] । (११)
इसा धरम[18] धारिल निरंजण सो वाळो[19] ब्रह्मचारी[20] ॥ २ ॥ (१२)

(३)

जदि[21] पवण[22] न हुंता[23] पाणी न हुंता, (१)
न हुंता धर गणाक[24] । (२)

१-म —आपणा ।
२-रा म व —आपों ।
३-गो म व —रोही, ना —रह्यो ।
४-रा गो म व —रापों ।
५-रा व —कापो, गो म —कोप ।
६-रा गो म व—कळापों ।
७-जा रा गो पी व —दुख, म —दुखों ।
८-रा म व —सरापों ।
९-गो पा —त्यूंह, म —त्यौंहि । रा गो पी म व —तिलोई ।
१०-इस पंक्ति के पश्चात् रा गो पी म व —में यह पंक्ति अतिरिक्त है —'जपा भी सोई जिंह अपिये आवागवण न होई' ।
११ जा —उरधदि ।
१२-जा म व —त्रिसूलों, गो पी —तिसूलो, ला —तिसुळ ।
१३-जा रा गो म व —हम ।
१४-रा पी म —कौण, गो —कुण, व —कौण ।
१५-रा गो पी म —क्रम ।
१६-व —में यह पूरी पंक्ति त्रुटित है ।
१७-म व —में यह पूरी पंक्ति त्रुटित है ।
१८-जा व —धरम रा गो पी म —धम ।
१९-जा रा गो पी म व —में 'निरंजण वाळो' के स्थान पर 'निज वाला' ।
२०-जा रा गो पी म व —ब्रह्मचारी ।
२१-जा —जो जद ।
२२-जा —पुवण ।
२३-जा —होता (जा प्रति में आगे 'हुंता' के स्थान पर 'होता' है, अतएव यहां बारबार यह रूपान्तर नहीं दिया गया है) ।
२४-रा गो पी म व —गणारों । (इन प्रतियों में स्वीकृत अन्तिम शब्दों के ऊकारान्त पाठ

(शेषांश आगे देखें)

घर न हुता पुर न हुता,
न[1] हुता गिगनवर[2] तारू ।
गऊ[3] न गोरू माया जाळ न हुता,
न हुता हेत पियारू ।
माय न बाप न बहण न[4] भाई
साखि न सैण न[5] हुता,
न हुता पख परवारू ।
लख चवरासी[6] जीया[7] जूणि न हुती,
न हुती पणी अठारा भारू ।
सपत पताळ[8] फुणिंद न हुता,
न हुता सागर खारू ।
अजिया सजिया जीया[9] जूणि न हुती,
न हुती कुडी[10] भतारू[11] ।
अरथ न गरथ न ग्रब[12] न हुता,
न तेजी[13] तुरंग तुखारू ।
हाट पटण बाजार न हुता,
न हुता राज दवारू[14] ।
चाव न चोह[15] न कोहक[16] बाण न हुता,
तदि हुता एक निरंजण[17] सिंभू[18],

के स्थान पर ओकारान्त या औकारान्त हैं जैसे पियारू —पियारो, भारू —भारौ, आदि । अत बारबार ये रूपान्तर नहीं दिए गए हैं) ।

१–जा —'न हुता' त्रुटित ।
२–जा —गिगर, गो —गगनर, पी —गगदर, म —गिगनरू ।
३–ला —गउव ।
४–जा —म त्रुटित ।
५–न —मैं त्रुटित ।
६–जा रा गो पी म ब —चौरासी ।
७–जा रा गो पी —जीया ।
८–जा ब —पयाळ ।
९–जा रा गो पी —जीया ।
१०–जा —कुलीय ।
११–जा रा गो पी म —भरतारू ।
१२–जा —'ग्रब न' के स्थान पर 'द्रब ने ग्रब ने गोरू न' है ।
१३–रा गा —तेजी से पूर्व 'होता' ।
१४–गो पी म —द्वारौं ।
१५–जा रा पी ब —चहन, गा —चेहन, म —चह ।
१६–जा रा गो पी —कोह का, म ब —कोहकन ।
१७–जा पी —निरालम ।
१८–[illegible]

क हुता यघूराह । (२२)
वान[1] कदो[2] की पुछ सोई, (२३)
हुा छनीस विचार । (२४)
ताहि परे र अवर[3] छतोसा[4], (२५)
पत्ला अ त न पार । (२६)
रह तदि पणि हुता, अब पणि अछा[5], (२७)
बलि बलि[6] हुयस्या[7], (२८)
कहि कहि[8] कदि का कहू विचारू ॥ ३ ॥ (२९)

(४)

अइया लो अरपरपर वाणी, (१)
म्हे[9] जपा[10] न जाया जीयों[11] । (२)
नव अवतार[12] नमो[13] नारायण, (३)
त पणि[14] रुप हमारा थीयों । (४)
क्ता तपी तक पीर रयेसर,
काय जपीज, ते पणि जाया जीयों[15] । (५)
खचर भूचर खेतरपाळा परगट गुपता,
काय जपीज, ते पणि जाया जीयों । (६)
वामिग[16] सेस गुणिद फुणिदा,
कांय जपीज, ते पणि जाया जीयों[17] । (७)

१-गा — वात स पूव वारो ।
२-म — कदे ।
३-आ — अव रा म व — और ।
४-व गा पा — छतीसों ।
५-ज म — आछा, रा गो पी व — आछै ।
६-ला — वल्य ।
७-ना — हुयस्या के वाद 'लाई अतिरिक्त ।
८-,९-ना — म त्रुटित ।
१०-म — जप ।
११-रा गा पा — जीऊ, ला — जीव ।
१२-रा पा म व — औनार ।
१३-ना — नमो से पूव उ अतिरिक्त, जा — निमो ।
१४-जा — पण ।
१५-रा गा पा — जीऊ ला — जीव ।
१६-पा — वागग म — वासगि ।
१७-ला — में य मन्मन्न पक्ति त्रुटित है ।

घोसटि[1] जोगणि[2] बावन बीरू[3],
भांय जपीज, ते[4] पणि जाया जीयों । (८)
जपां त एक निरालम[5] सिभू[6],
जिहके[7] माई न पीयो[8] । (९)
न तनि रगत न तनि धातू,
न तनि ताय न सीयों । (१०)
सरब सिरजत[9] मरत[10] वियरजत, (११)
तास न मूळि न लोणा[11] कीयों । (१२)
अइया लो अपरपर वांणी, (१३)
म्हे जपां न जाया जीयों ॥ ४ ॥ (१४)

(५)

भवणि भवणि[12] म्हार[13] एका जोती । (१)
चुणि चुणि लीया[14] रतनां मोती । (२)
म्हे खोजी थां[15] खिड़ होजो नांहीं, (३)
खोज लहां[16] धुरि[17] खोजूं । (४)
अलाह अलेख अडाळ अजोनी सिंभू[18], (५)
जिहका[19] किसा[20] विनांणी[21] ? (६)

१-रा गो पी म व—चौसठि ।
२-पी—जोगिण ।
३-रा गो पी म व—वीरों ।
४-ला—म इसके बाद 'सतेए गावे सहसेई ठावेससे नावे । ते परिए जाया जीव' प्रक्षिप्त है
५-गो—निरार ला—निराळव ।
६-ला म व—सभू ।
७-ला—जह, रा गो पी—जिहि, म—झिहि ।
८-रा गो पी व—पीऊ, ला—पीव (आगे की पंक्तियों के 'सीयों', जीयों' शब्दों भी इन प्रति समूहों में क्रमश सीऊ, सीव जीऊ, जीव पाठ है।
९-पी—रिज म—सिरमत ।
१०-गो—मरजत म व—मत ।
११-जा रा गो पी म व—लणां ।
१२-ला—भुवण भुव ।
१३-रा पी—म्हे, गो—म्हारी, व—म्हा ।
१४-म व—रस्या ।
१५-ला जा रा गो पी व—था ।
१६-ला—लीया ।
१७-रा गो पी म—धुर ।
१८-ला म व—समू ।
१९-ला—अहका, म—इहका ।
२०-ला—असा ।
२१-ला—वीनाण, म व—विनाणो ।

म्हे सर न बठा सीख न पूछी[१] ,
निरनि सुरति सा[२] जाणी[३] ।
उनिपुनि[४] हिंदू जरणा[५] जोगी,
श्रीया[६] ब्राह्मण दिल दरवेसा,
उनमन[७] मुल्ला अकलि निसलिमाणी ॥ ५१॥

(६)

हिंदू होय[८] क[९] हरि[१०] बयू[११] न जप्यौ[१२],
कांय[१३] दह दिस दिल[१४] पसरायौ ?
सोम अमावस आदितवारी,
काय काने बणरायौ ?
गहण गहत वहणि वहत,
निरजळ[१५] ग्यारसि[१६] मूळि वहतं ।
काय रे मुरिला[१७] पालग सेज[१८] विछायौ[१९] ?
जा[२०] दिन तेर[२१] होम न जाप न तप न[२२] श्रीया
जाणि क[२३] भागी कपिला गायौ[२४] ।

१-आ०—बूभी ।
२-जा रा गो पो म व —सव ।
३-ना —जाग, म व —नाणी ।
४-रा गा पा म व —उतपनी ।
५-, ६-ना —म 'जरणा' के बाद 'ते' एव 'श्रीया' के बाद 'ते' ।
७-ग्रा —उनमुन ।
८-रा य —हुं ।
९-जा०—करि ।
१०-ना —हरप ।
११-ला —म त्रुटित ।
१२-ना —मानी, म व —अपो ।
१३-ना —वायो दोह ।
१४-ना —मन ।
१५-रा —निरज ।
१६-म व —ग्यारमि ।
१७-सा —म त्रुटित ।
१८-सा —सेभ ।
१९-रा गो पो म व —विछाई ।
२०-ना जा —ता ।
२१-जा म —म त्रुटित ।
२२-म —न 'न श्रीया' के बीच 'कार' अतिरिक्त ।
२३-म —म ।
२४-सा —गायो, रा गो पो म व —गाई ।

कूड़ सांणि[1] ज[2] धतब कीयो,
ना त लाव न सा'यो ।
मूल[3] प्रांणी आळ वखांणी,
न जप्यो सुर रायो ।
छव कहां स[4] बोहता[5] भाव,
खरतर को[6] पतियायो ।
हिय की वेळां हिय न[7] लाग्यो[8],
सकि रह्यो बवरायो ।
{ठाढी वेळां ठार न लाग्यो[9]
{ताती वेळां तायो ।
मिथ वेळां विसन[10] न जप्यो,
ताय[11] काची[12] निवच[13] कमायो ।
अति आळस भोळाय भूला
न[14] चीन्हों सुररायो ।
पारब्र म[15] की सुधि न जांणी
ताय[16] नागे जोग न पायो ।
परसरांम क जरयि[17] न मूया,
ताहु[18] की निहच सरी[19] न कायो ॥ ६ ॥

१–जा रा गो व —तणों, पी —तण ।
२–जा रा गो पी व —जे, म — ऋ ।
३–म —भूला ।
४–जा —बहुता, रा गो पी म व —बहा तो ।
५–रा गो पी व —बहुता, ला —बोहत ।
६–ना —को को म —बोहत को ।
७–पी म त्रुटित, म — वल ।
८–म व —भागी ।
९–ला म व —भागी ।
१०–गो म —विसण ।
११–ला जा रा गों पी म —ताछ, व —तात ।
१२- १३–जा रा पी —वा चीहो वछु व —वाची कुछ न, म —वाची निकुछ, गो —
वा चीहो वछु वछु ।
१४–जा —ना ।
१५–जा रा गो पी म व — पारब्रह्म ।
१६–जा रा गो पी म ब—तो ।
१७–जा —हुकमि ।
१८–जा रा गो पी म व —ता की ।
१९–ला —परीय ।

(७)

सुनि रे काजी सुनि रे मुल्ला सुनि रे बक्र कसाई । (१)
किप री थरपी छाळी[1] रोसा किप[2] री गाडर गाई । (२)
का[3] माप करक दुहेली[4] जायो[5] जीव न घाई । (३)
प तुरका छूरकी भिसती दावौं[6] खायबा साज अलानू । (४)
परि फिरि आव सहजि दुहाव तिह[7] का खीर हलालो । (५)
तिह[8] गळ करद क्यों सा'रो ?
ये पनि गुनि रहिया खालो ॥ ७ ॥ (६)

(८)

नि सावनि हज कावो नेडो[9], (१)
क्या उळवग पुकारो ? (२)
माई नाऊ बळद पियारो, (३)
तिह[10] क गळ करद क्यों सा'रो ? (४)
विनि चीह[11] खुदाई तरस[12] विवरजत (५)
कहा मुसल्माणों ? (६)
काफर मुकर[13] होय[14] के[15] राह गुमाई[16], (७)
जो'य जो'य[17] गाफिल करै पिगाणों । (८)
ज्यों वे पछिम[18] दिसा उळवग पुकारो, (९)
सळ क ऊ चीन्हू[19] रहिमाणों । (१०)

१-म —छेना छेना व —छेनी छोना ।
-गा प. —किनि ।
३-आ रा —काट, गो—मुलि, पी व —मूल, म —सली ।
४-दुहेली' के पश्चात् आ —म ह्य ह्य', रा गो पी म व —मे 'वो है है' ।
५-म व —आया ।
६-रा —नाव ।
७-आ —जिह्का रा गो पी म व —तिसका ।
८ रा गा —जिहक, म —तिमक, व —जिमक ।
९-रा गो पी म व —नड ।
१०-रा पी —ताक ।
११ आ रा गो पी म व —चोहा ।
१२-आ रा गा पी म त्रुटित ।
१३-म व —मुरद ।
१४-रा गा पी —ह्य ।
१५-आ रा गा पी —करि ।
१६-आ रा गा पी व —गुमानो ।
१७ मा —ज्यों ।
१८-मा —पछम ।
१९-आ रा गा पी म व —यो चीन्हों ।

तो रह चलत पिड[1] पड़त, (११)
आय भिसत[2] वियाणों । (१२)
घड़ि घड़ि भीते मढ़ो[3] मसीते, (१३)
क्यू[4] उळवण[5] पुकारो ? (१४)
काहे काज गऊ[6] विणासो (१५)
तो करीम[7] गऊ क्यों चारी ? (१६)
कांही लीयो दूध दहियू ? (१७)
कांही लीयो घीयों महियू ? (१८)
कांही लीयो हाड़ मांसू ? (१९)
कांही लीयो रगतू[8] रूहियू ? (२०)
सुणि[9] रे काजी सुणि रे मुल्ला (२१)
या मां कूण[10] भया मुरदारी[11] ? (२२)
जीवां ऊपरि जोर करीज (२३)
अंति काळ हुयसी[12] भारी[13] ॥ ८ ॥ (२४)

(९)

दिल साबति हज काबो नेड़ो[14] (१)
क्या उळवण पुकारो ? (२)
सीने सरवर करो बदगी, (३)
हक[15] निवाज गुजारो[16] । (४)
ईंह हील[17] हर दिन की रोजी (५)

१–ला —पड़ ।
२–ला —विसत ।
३–ला — मढ़्य म —मढी ।
४–ला रा गो पी म ब —क्या ।
५–म —लवण ।
६–ला — गउव ।
७–ला —श्रीम ।
८–ला —रगतु म —रती ।
९–ला —म 'सुणि' से पूर्व 'ताछ' अतिरिक्त ।
१०–आ —कवण ।
११–ला —मुरदार, म —मुरदारी ।
१२–रा गो पी —हुसी ।
१३–ला—भार ।
१४–रा गो पी म ब —नेड ।
१५–म —हद ।
१६–आ रा गो पी म ब —गुदारो ।
१७–म ब -जिस रा गो पी —हैंड ।

तो इसहो[1] रोजो सारो । (६)
आप खुनायबद लेखो[2] भाग । (७)
रे तिनहीं[3] गुहें[4] जीव कयू मारो[5] ? (८)
प तकि जाणों तकि पीड न जांणों, (९)
तिणि परच वाद निवाज गुजारो[6] । (१०)
धरि सिरि[7] आव सहजि दुहावै, (११)
तिरक्का[8] खीर हलालो[9] । (१२)
तिहक[10] गळ करद[11] क्यों सारो ? (१३)
प पनि गु णि रहिया खाली । (१४)
चढि[12] चढि भींत मही[13] मसीत (१५)
क्या[14] उळबग पुकारो ? (१६)
कारण कोन करतब[15] होणा[16], (१७)
थारा खाली पडी निवाजू । (१८)
किह[17] ओजू[18] तम[19] धोवो आप ? (१९)
किह ओजू[20] तम[21] खडो पाप ? (२०)
किह[22] ओजू[23] तम[24] घरो धियान ? (२१)

१ जा म व—साइ ।
२-म—ग्वा ।
३ म—व गुनी ।
४ म—न त्रुटित ।
५ ना—म यह पूरा पंक्ति त्रुटित है ।
६ म—नगारो ।
७-म—परि ।
८-जा—जिह्वा, रा गो पी व—तिसका, म—तिहिका
९ मा—गीर ।
१०-व—तिम ।
११-ना—कर ।
१२-रा गा पी—म 'चढि' स पूर्व 'थे' अतिरिक्त ।
१३-जा—मइ व—मही ।
१४-ना—क्यों ।
१५ व—करत ।
१६-ना—म कारण" होणा तक त्रुटित है ।
१७-ना—क ।
१८ न व—उजू ।
१९ रा—य, पा म व—तुम ।
२०-न व—उजू ।
२१-रा—य म व—तुम ।
२२-ना—क व—किम ।
२३-न व—उजू ।
२४ र—य, म व—तुम ।

किहि[1] ओजू[2] धोवू[3] रहमान ? (२२)
रे मुल्ला मन माहीं मसीत निवाज गुजारिये[4] । (२३)
सुणता नाहीं[5] क्या खर पुकारिये[6] । (२४)
अलह न छलियो सब्द पिछाण्यो[7], (२५)
चाम[8] कट्या[9] क्या हुइयो[10] ? (२६)
हक हलाल पिछाण्यो[11] नाहीं[12], (२७)
निहच विन[13] गाफिल वो'र[14] कीयो[15] ॥ ९ ॥ (२८)

(१०)

महमद महमद न करि काजी महमद का तो विषम विचारूं । (१)
महमद हाथि करद जो होती लोहे घड़ी[16] न सारूं । (२)
महमद साथि[17] पयम्बर[18] सीधा एक[19] लख असी[20] हजारूं । (३)
महमद मरद हलाली होता तुमे[21] भया मुरदारूं ॥ १० ॥ (४)

(११)

काहे[22] रे रिला[23] त[24] जळम[25] गुमायो, (१)

१–ला —थ ।
२–म ब —उजू ।
३–जा रा गो पी म ब —धोहों ।
४–जा पी ब –गुजरीये, रा गो म —गुदरीये ।
५–जा रा गो पी म ब —ना ।
६–जा म —पुकरिये, रा गो पी ब —पुकरीये ।
७–गो —पिछाणों ।
८–रा गो ब —चाव ।
९–जा रा गो पी म ब —कटे ।
१०–ला —हूवा, म०—हूवो ।
११–ला —पिछाणों, पी —पीण्यो ।
१२–गो म ब म 'नाही' के पश्चात् 'तो' अतिरिक्त ।
१३–जा रा गो पी म ब —म त्रुटित ।
१४–म —गेरह ।
१५–ला —गेया ।
१६–ला —घडीय ।
१७–ला म ब —सगि ।
१८–म —पटबर ।
१९–रा गो पी म ब —इक ।
२०–ला —असीय
२१–म –तुभे ।
२२–रा गो —काय ।
२३–म ब —मनिषा ।
२४–ला —रय ।
२५–जा —जल, रा गो पी म ब —जनम ।

मुव[1] मारी ले भारू । (२)
आ ग्नि तेर[2] होम न जाप न[3] तप न[4] किरिया । (३)
गुरु[5] न चीन्हू[6] पथ न पायो, (४)
अहळ गई जमवार । (५)
ताता वेळा ताव न झाग्यो, (६)
ठाने[7] वेळा ठारू । (७)
सिव वेळां विसन न जप्यो, (८)
ताय[8] खोहन भई कसवारू[9] । (९)
लहिय[10] न खाटी देह विणाठी[11], (१०)
थिरि न पवणा[12] पारू । (११)
अहनिस आवा[13] जाय[14] घटती (१२)
तेरी[15] साम हो[16] कसवार । (१३)
जां जन मतर[17] विसन न जप्यो, (१४)
त मर[18] कुवरन कालू । (१५)
जां जन मतर विसन न जप्यो[19],
मगरे चौर कहारू । (१६)
जो जन मतर विसन न जप्यो[20],
राघ सहै दुख भार । (१७)

१-व —मुह।
२-ना म —म त्रुटित।
३-व —म त्रुटित।
४-म व — न' के पश्चात 'कारण' प्रक्षेप।
५-ना —गरव।
६-आ रा गो पी म व —चीन्हा।
७-म —ठाड़े।
८-म व —म त्रुटित।
९-ना कुमवार।
१०-आ —पराय रा —पही गो पी —धरी, व —पारी'
११-व —विएटी।
१ -ना —पुवणां।
१३-गो —भायु पी —भाव।
१४-पी —म त्रुटित।
१५-आ रा गो पी —नरे म व —म त्रुटित।
१६-आ रा गो पी म व —सवी।
१७-आ —जरमनर ना —जां जलमन (इसमे 'जन मतर' के यहो पाठान्तर इन प्रतियो म आगे मिलत हैं, पर बारबार उनका उल्लेख यहां नहीं किया गया है)।
१८-व —न।
१९-रा गो पी —म 'जप्यो' के पश्चात् 'ते' प्रक्षेप।
२०-म व — म 'जप्यो' के पश्चात् 'ते' प्रक्षेप।

जां जन मतर विसन न जप्यो,
ते घण तण कर अहार[1] । (१८)
जा जन मतर विसन न जप्यो,
तांह[2] का लोहो मास विकारू । (१९)
जा जन मतर विसन न जप्यो[3] ,
गाय गाडर[4] सहरे[5] सूवर । (२०)
जळम जळम अवतारू । (२१)
जा जन मतर विसन न जप्यो,
रा न घासो माती बसे (२२)
दूर्फ सूर सवारू[6] । (२३)
जा जन मतर विसन न जप्यो[7],
ओझा क घरि पोहण होयसी, (२४)
पीठ सह दुख भारू[8] । (२५)
जां जन मतर विसन न जप्यो,[9]
ज्यळ उठावत भारू[10] । (२६)
जां जन मतर विसन न जप्यो[11],
ते नर[12] दो'र घुप अधारू । (२७)
जा जन मतर विसन न जप्यो,
ते[13] ना ऊतरिया पारू[14] । (२८)
ताय[15] तत न मत न जडी[16] न बूटी, (२९)

१-म व —न यह पूरी पक्ति त्रुटित है।
२-जा रा गो म व —ताका, पी —ते का।
३-म —म जप्यो के पश्चात 'ते' अतिरिक्त।
४-ला —गडर।
५-ला —सहरे।
६-ना —सुवार रा गो पी म व —म 'जा सवारू' पक्ति से पूर्व 'जा
पक्ति है।
७-गो —म 'जप्यो' के पश्चात 'ते' अतिरिक्त।
८-ला —म 'ओझा भारू' पक्ति त्रुटित है।
९-रा गो पी—म 'जप्यो' के पश्चात ते।
१०-ला —म 'जा भारू' पक्ति त्रुटित है।
११-ला —मे 'जा जप्यो' तक त्रुटित है।
१२-ला —ताह न
१३-जा —म त्रुटित।
१४-ला —म 'ना पारू' पक्ति त्रुटित है।
१५-जा व —म त्रुटित।
१६-ना —जडीय।

ऊडी पडो[1] पहारू ।
विसन न दोस किसो[2] रे प्राणी,
तेरी करणी का[3] उपगारू ॥ ११ ॥

(१२)

मोरा[4] उपरयान वेदू[5] कण तत भेदू[6]
सामने पसतके लिखणा न जाई ।
मोरा[7] सबद खोजो[8] ज्यू[9] सबदे सबद समाई ।
हिरणा दोह[10] क्यों हिरण हतोलों, किसन चिरत[11] विणि,
क्यों बाघ विडारत गाई ।
सुणहीं[12] सुणहा का जाया मुडदा[13]
बघेरी बघेरा न होयबा[14] किसन चिरत विणि,
सींचाण[15] कबही न[16] सुजीऊ ।
खर का सबद न मधुरी[17] वाणी, किसन चिरत विणि,
स्वान न कबही गहीरू ।
मुंडी का जाया मुंडा न होयबा[18] किसन चिरत विणि,
राछा कबही न सुचीलू ।
बिलो की हद्री सतोष[19] न होयबा किसन चिरत विणि,
कारता न होयबा[20] सीलू ।

१-ला —प ेय ।
२-म —किमा ।
३-ला —क ।
४-म व —मरा ।
५-रा गो पी म व —वेदों ।
६-रा गा पी म व—भेदों ।
७-रा गो पी —मेरा ।
८-रा व —सब्द पोजो सबद पोजो ।
९-ला म —'ज्यू के पश्चात 'सु ।
१०-रा गा —द्रोह ।
११-ला —चीळत ।
१२-जा —सुणाही ।
१३-रा गो पी —मुरदा ।
१४-रा गो पी —ह्ववा म व —एक ।
१५-गो —मीचाणा ।
१६-ला —म मु्टित ।
१७-जा म व —मघरी ।
१८-रा गो पी —ह्ववा ।
१९-गो —तोप ।
२०-गो पी —ह्वया ।

मुरगो का जाया मोरा[1] न होयबा[2] किसन चिरत विणि,
भावला न होयबा चीए ।
दत वियाई जळम[3] न आई किसन चिरत विणि,
लोहै पडो न काठ की सूलू ।
मींवडिय नाळेर[4] न होयबा[5] किसन चिरत विणि,
छोलरै न होयया होरू ।
॥ वणि नागर येलि न होयबा किसन चिरत विणि,
धांवळी न पेळा[6] केळू ।
गऊ का जाया खगा[7] न होयबा किसन चिरत विणि,
घया न पाळत भोलू ।
सूरी[8] का जाया हसनो न होयबा किमन चिरत विणि,
औछा फवही न[9] पूरू ।
कागणि का जाया कोकिला न होयबा किसन चिरत विणि,
बुगली[10] न जणिवा हसु ।
ग्यानी के हिरदे परमोधि आव ।
अग्यानी लागत डासु ॥ १२ ॥

(१३)

सुर मा लीणा[11] झीणा सबदू,
मूलि न भायला फूलू ।
सेपति[12] विरचा सींच पिराणीं,
जिह्वा मीठा मूळ समूळू ।
पाते भूला मूळ न खोजो[13],
सींचो काय कमूळू ?

१–र —मार न त्रुटित है।
२–गो —ह्व ।
३–रा गो पी म व —जनम ।
४–रा गो पी म व —नारेळ ।
५–रा गो पी —ह्व वा (इन प्रतियो मे प्रागे भी 'होयवा' के लिए 'ह्व वा' है)।
६–जा रा गो पी म व —केली ।
७–ला —गधा ।
८–ला म —सूवरी ।
९–म व —में 'फवही न' के स्थान पर न फवही ।
१०–म —बगनी, व —बवली ।
११–रा गो पी म व —लगा ।
१२–रा पी म गो व —सोपति ।
१३–ला —पोो ।

विमन विमन भणि अजर जरीलौ[1],
अ जोवण का मूळू ।
सोजि रिराणी अमा विनाणी,
कवळ[2] ग्रानी ग्यान गहीरू ।
जिह क गुण[3] न लाभत छेहू
व गहर[4] गरया सीतळ नारू ।
मेवा ही अति[5] मेरू ।
हिरव मुक्ता कवळ सतोपी ।
टेवा ही अति[6] टेरू ।
घड़ि करि बोहिय[7] भय[8] जळ पारि[9] लघावै
सै[10] गुर खेवट[11] छेहा छेहू[12] ॥ १३ ॥

(१४)

लोहै[13] हुता कचण घड़िया[14],
घड़िया[15] ठांव सुठाऊ[16] ।
जाटा हूत[17] पात करीलो,
अ विसन विरत[18] परवाणों[19] ।
बेडो काठ सजोगे[20] मिळिया ।

१-पी —जरीज ।
२-ला —म केवळ से पूव की भी ।
३-ना —गुणेय ।
४-आ रा गो पी म य —म व गुहर के स्थान पर गुर गवर ।
५,६-रा गा पी म व —अति ।
७-आ —बोहियो, रा म व —बोहिता, पी —वहुता ।
८-रा पी व —भ, गो —भव म —भौ ।
९-ला —म 'भय जळ त्रुटित है ।
१०-आ रा गा पी म व —सो ।
११-ला —म 'गुर खेवट के स्थान पर विट' ।
१२-ला —छेव ।
१३-म —लोह ।
१४-आ रा गो पी म व —घडियो ।
१५-आ रा पी म व —घड़ियों ।
१६-ला —गुटांव ।
१७-आ —हुता ।
१८-ना —वीनत ।
१९-ला —परवांण ।
२०-म —सांजोगे ।

खेवट[1] खेवा[2] खेवू । (६)
लोहो[3] नीर[4] किसी परि[5] तरिवा, (७)
उतिम सग सनेहू । (८)
विणि थोया रयि वसला, (९)
ज्यू[6] काठ सगोणो लोहो[7] नीर तरीलो । (१०)
नागड भागड[8] भूला महियळ[9], (११)
जीव हत मड लाईलो ॥ १४ ॥ (१२)

(१५)

मोर सहने सुदरि खोतर[10] वाणी । (१)
असा भया मन ग्यानू[11] । (२)
तइया सासू तइया मासू । (३)
रगतू रहियू खीरू[12] नीरू । (४)
ज्यों करि देखू, ग्यान[13] अदेसू[14], (५)
भूला प्राणी कहैं स[15] करणों[16] । (६)
अई अमाणा[17] तत समाणों । (७)
पुरष[18] न लेणा नारी (८)
सोदत सागर सो सुभियागत, (९)
भु वणि भु वणि[19] भिखियारी[20] । (१०)

१–म —पेव ।
२–रा गो —पेहा, व —पेव ।
३–रा गो पी —लोहा म०—लोहै ।
४–म —नाव ।
५–म व —विधि ।
६–ला —ज्यौं ।
७–जा रा गो पी व —पोहा, म —लोहै ।
८–व —भ्रूगड ।
९– भूला महियळ' के स्थान पर म —म 'महियल भूला ' तथा व —म 'महिल भूला' ।
१०–रा गो पी म —मात्र ।
११–जा रा गो पी म व —ग्यानों ।
१२–गो —क्षीर ।
१३–जा रा गो पी —ग्यान म —नान ।
१४–व —भ्रनेसो ।
१५–गो —सो ।
१६–म व —कीज करणो ।
१७–ज —प्रमणों ।
१८–'पुरष से पूव गो०—म 'मईयालो म्हे,' म व —म 'मईयालो म भ्रनिरिव' ।
१९– जा रा गो पी म व —भवणि भवणि ।
२०–रा गो —त्रिपियारी, पी —विपिया । [—

भाया सो निगियारो मो (११)
मांहि[1] परम तत सायो। (१२)
चह वार विराम विरांसो[2] सांमो[3] सरसो,[4] (१३)
हूण वहमी सालहा[5] सायो॥ १५॥ (१४)

(१६)

मां बुढि मां बुढि सां[6] बुढि[7] म जांणो। (१)
नां बुढि मां बुढि सां[8] बुढि[9] बांणो[10]। (२)
नां बुढि नां बुढि अवय वहांणो। (३)
नां बुढि मां बुढि हयत[11] बांणो। (४)
ग्यांनी सो[12] तो ग्यांन रोवत, (५)
पंण्या रोवन साहे। (६)
कल करता मोरो मोरा रोवत, (७)
वाय बोय पणां दिसांहो[13]। (८)
वरयम[14] पणों[15] उ ममन[16] रोवत, (९)
मुरिया[17] रोवन पांहो[18]। (१०)
मरण त माय सधार त सेत[19], (११)
कह अवतारी रोवत राहो[20]। (१२)

1-आ रा गा पी म व—म 'मांहि' से पूर्व 'जे' अतिरिक्त।
2 मा—वारमी।
3-ना व—म त्रुटित।
4 रा गो पा म—म त्रुटित।
5-आ रा गो पी म व—साल्हीया।
6-आ रा गो पा म व—आ।
7-रा गा—बुद्धू, म व-बुध, सा पी—बधू।
8 आ—ना।
9-ला—बद्धु एत।
10-व—म यह तथा इससे आगे वाली दो पंक्तियाँ त्रुटित हैं।
11-रा गो पी म—प्रमृत।
12-ला – म 'सो त्रुटित म—म 'सो तो त्रुटित।
13-म—ि सागी व—दिसाहे।
14-आ रा गो पी म व—म 'ज त्रुटित।
15-म र—पग रा गो व—म 'धणों के पश्चात् मन अतिरिक्त।
16-व—ग्न।
17-ला—मुरगो।
18-व—धाह।
19-आ रा गो पी म व—पेती।
20-व—राह।

जड़िया बूटी जे जग[१] जीवै।
तो बदा क्यों मरि जांहीं[२] ?
खोजि पिराणी असा विनांणी,
निगुरा[३] खोजत नांही।
जा कुछि हुता[४] नां[५] कछि होयसी,[६]
बळि कुछि होयसी तांही॥ १६॥

(१७)

रूप अरूप रमूं[७] प्यंड ब्रहमंड
घटि घटि अघट रहायो।
अनत जुगां मां[८] अमर भणीजूं,
ना मेरे पिता न मायो।
ना मेरे माया न[९] छाया रूप न रेखा
बाहरि भीतरि अगम अलेखा।
लेखा आप[१०] निरंजण[११] लेखी
जा[१२] चीन्हो तां[१३] पायो।
अठसठि तीरथ हिरदै भीतरि,
को को[१४] गुर मुखि बिरळा न्हायो॥ १७॥

(१८)

जां जां दया न मया
तां तां विकरम कया[१५]।

१-जा —जुग।
२-ब —जाये।
३-ला —निगरा।
४-जा रा गो पी —होता, म ब —होता।
५-ला —नी।
६-ला —ोयस्य।
७-म ब —रमा।
८-पी म मैं।
९-म ब —ना मेर।
१०-रा गो पी म ब —एक।
११-पा म ब —जुग्यबद।
१२-जा —जिण, रा गो पी ब —म्हा
१३-पी ब —तहां।
१४-ला —कोइ कोइ।
१५-म —किया।

जां जां साव न बसी[1]
तां तां सुरग न जगी[2]
जां जां[3] ओय न ओनो
तां तां मोल न मुक्तो[4] ।
जां जां दया न धरमू
तां तां विक्रम करमू ।
जां जां पाड़या[5] न सोनू
तां तां कम सुधीठू
जां जां सोगना न मूठू
तां तां प्रतदि[6] पूठू ।
जा जां मेवा न[7] मेवू
तो सुरगे दिसो[8] उमेवू ।
जां जां घमड[9] स मडयो
ताक ताय म डायो ।
मून मास मसायो ॥ १८ ॥

(१९)

जिह प सार असार पार अपार[10]
पाप अपापू उमग्या स मापू
त सरवर रित[11] नीर ?
पाजालो भल पाजालो
पाजा बोय पहीर ।
एक[12] वाम मीर बरम
दूम महो विरोळत[13] सीर ।

१-जा रा गो म व —जगा, पी —वसू
२-जा रा गो पी म य —जमा ।
३-म —ना ।
४-पा०—मुगती ।
५-रा गो पी —पारे, म व —दया ।
६-पी —प्रयत, म —प्रत्यत्य ।
७-म —नि ।
८-ला —मुरगा कीसय ।
९-गो -घमड स घमड़ ' म —घडमड स मडों ।
१०-व —म पार अपार त्र टित ।
११-जा —तती ला —वच ।
१२-रा गो पी म व —एकरण ।
१३-गो —त्रिरोल ।

जिह प सार असाए पार अपाए (८)
थाघ अथाघू[1] उमग्या[2] स माघू, (९)
गहर गभीए । (१०)
गिगन पयाळे वा त नादू । (११)
माणिक पायो[3] फेरि लुकायो[4] (१२)
महीं लखायो[5] (१३)
दुनिया राती[6] वाद विवादू । (१४)
वाद विवादे दाणों खींणा (१५)
ज्यों पोहपे खींणा भवरी भवरा[7] । (१६)
भाव[8] जाणि म जाणि पिराणी[9] (१७)
जोल का रिप जवरा । (१८)
भेर बाजा तो एक जोजनू, (१९)
अथवा[10] तो दोय जोजनू । (२०)
मेघ बाजा तो पच जोजनू, (२१)
अथवा[11] तो दस जोजनू । (२२)
सो[12] उतिम लेह[13] पिराणी । (२३)
जुगा जुगाणी[14] सति करि जाणी[15], (२४)
गुर का सबद ज[16] बोलो[17] खींणी बाणी (२५)
दूरया[18] हीं त[19] दूरि सु णीज, (२६)

१-रा —अथों ।
२-म —उममगि ।
३-ला म —पाया ।
४-ला —हुकाया, म —लुकाया ।
५-ला म —लपाया ।
६-दुनिमा राती के स्थान पर म —म राती दुनिया, ब —मे रीती दुनिया ।
७-ला —भु वरी भु वरा ।
८-ला —भावगि ।
९-म व —म 'पिराणी के पश्चात इम' अतिरिक्त ।
१०- १५-ना —अथवाय ।
११-जा —मोर्ई ।
१२-ला —न्हे, व -लहि रा गो पी म व —म 'लेह' के पश्चात 'रे' अतिरिक्त ।
१३-म व —म 'जुगा जुगाणी' त्रुटित ।
१४-जा —र 'सति जाणी' त्रुटित ।
१६-रा —जु ।
१७- ला —म त्रुटित, ब —बोल ।
१८-जा रा गो पी म व —म 'दूरया' से पूर्व 'जिह्वा' अतिरिक्त ।
१९-रा गो पी म व —हूंत, ला —हीता ।

सो[1] सबद गुणा कारु[2] गुणापारु[3] (२७)
गणा[4] सारु, बक्रे[5] अपारु[6] ॥ १९ ॥ (२८)

(२०)

लो लो रे राज्यदर[7] रायाँ । (१)
वाज वाव सुवायो[8] आभ अर्मी जुगायो । (२)
कार्लरि करसण[9] कीया[10] नेप कछू न कायो । (३)
अइया उतिम खतो को को इमृत रा'यो (४)
को को दाख दिखायो[11] को[12] को ईख उपायो (५)
को को नींव निबाळी को को ढाक ढकोळी (६)
को को[13] तुमणि तु बणि वेलो को को अक[14] अवायो (७)
को को कडू कमायो ताका मूळ कमूळ (८)
डाळ कुडाळू ताका[15] पात कुपातू (९)
ताका[16] फळ बीज कुबीजू तो भीर दोस किसायो ? (१०)
क्यों क्यों सुप[17] भाग कऊणा क्यों[18] क्यों[19] कम विहूणां । (११)
को को चिडी चमेडी[20] को ओळू आयो । (१२)
तार यान म जोती मोख न[21] मुकती । (१३)
याका[22] कम असायो तो नीरे दोस किसायो ? ॥ २० ॥ (१४)

१-ना —मु ।
२-ना —गणाकम, म —म गुणाकारी गुणाकारो ।
३-रा गा पी म व —मे 'गुणा पारु' त्रुटित ।
४ व —म त्रुटित ।
५,-६-ना —म त्रुटित ।
७ म —राजिदरा ।
८-जा —मवायो ।
९-म व —किरमण ।
१०-व —काम ।
११-रा गो पी म —लिपायौं, जा —म 'नेप कछू दाख दखायो' म दा मूल से दुबारा लिखा गया है ।
१२-ना —म 'को को ईख ढकोली' अंश त्रुटित है ।
१३-ना —का का ।
१४-जा रा गो पा म व —आक ।
१५-गो म व —म त्रुटित, पो —म 'ताका कुपातू' त्रुटित ।
१६-जा —म त्रुटित ध —ता ।
१७-म व —म त्रुटित, जा —भव ।
१८-१९-म —म त्रुटित ।
२०-म —चमेडी ।
२१-म —म त्रुटित ।
२२-रा गो पा —आवे, म व —वांका ।

(२१)

साल्हिया हुया मरण[१] भव[२] भागा (१)
गाफिल मरण घणों डर। (२)
सतगुर मिलियो[३] सत पथ ज[४] पायो[५] (३)
मरण[६] बोह उपगार करै। (४)
रतन कया[७] सोभतो लाभ (५)
पार गिरांय जीव तर[८]। (६)
पार गिराय त[९] नेहो करणी, (७)
जपो बिसन न दोय दिल करणी। (८)
जपो विसन न निंद्या करणी (९)
माडो काय विसन की सरणी[१०]। (१०)
अतरा[११] बोल करो ने[१२] साचा, (११)
तो पार गिराय गरू की वाचा। (१२)
रवणा ठवणा चवदा भवणा (१३)
ताहि[१३] परे र रतन कया[१४] छ (१४)
लाभ किस[१५] विचार[१६] ? (१५)
तै नविय नवणी खु विय[१७] खु वणी, (१६)
जरिय जरणी[१८] करिय करणी (१७)
सीख[१९] हुई[२०] घरि जाइय। (१८)

१–म —मर।
२–गो म —भय।
३–म —मिनिया।
४–जा रा गो पी म व —म त्रुटित।
५–जा रा गो पी व —बतायो, म –बताया, 'पायो के पश्चात जा रा गो पी म व –म भ्रात चराइ अतिरिक्त।
६–म —मरणाह 'बोह' त्रुटित।
७–रा गो म —काया।
८–पी —म 'पार तर' पंक्ति त्रुटित।
९–जा रा गो पी म —म।
१०–जा रा गो पी म व —परण।
११–ला —अतना।
१२–म —नें।
१३–ला —ना है।
१४–रा गो पी म —काया।
१५,–१६–म —किसी विचारी।
१७–जा —म 'खु विय खु वणी' त्रुटित।
१८–म —करणी।
१९–रा पा —म 'सीख' से पूर्व 'तो' अतिरिक्त।
२०–रा गो पी म व —हुवा।

रतन क्या[१] साच[२] को ढोळी, (१९)
गुर प्रसादे[३] केवळ ग्याने, (२०)
घ्रम आचारे[४] सोले सजमे, (२१)
सतगुर तूठ[५] पाइय ॥ २१ ॥ (२२)

(२२)

आमण बसण कूड़ कपट[६], (१)
को को[७] को चीन्हत[८] अवजु वाट[९] । (२)
अवजू वाटे जे नर भया, (३)
काची काया छोडि कवळासे[१०] गया ॥ २२ ॥ (४)

(२३)

राज न[११] भूली लो राजिंदर दुनी न बधो[१२] मेरू, (१)
पुवणा[१३] झोल बीलरिजला घुवरि[१४] तणा ज लोरू[१५] । (२)
ओल[१६] स आभ तणा लहिलोरू । (३)
आडाडवर[१७] केती वार विळवण ओ ससार अनेहू, (४)
मूला प्राणी विसन जपो रे मरण विसारो केहू ? (५)
म्हा देखता देव दाणों[१८] सुर नर खीणां । (६)
जबू मझे राचि न रहिवा येहू[१९] । (७)

१–रा गो पी म —काया ।
२–रा पी व —सच ।
३–व —परसादे ।
४–जा रा गो पी व —अचारे ।
५–म —तूठे ।
६–रा गो —कपटण, पी—कपट्ट, म व —कपटों ।
७–म व —के के ।
८–म व —ची हैं ।
९–रा गो पी —वाटे, म व —वाटों ।
१०–जा व —किवलासे ।
११–गो —नि ।
१२–रा —बध, गो पी —बधो, व —बांधो ।
१३–जा रा गो पी म व —पवणा ।
१४–जा —धवर ।
१५–ला —भिनोरू, व —लहलोरो ।
१६–म व —कुल्हमि, ला —उलम ।
१७–म – आडोडवर ।
१८–ला —मे दाणो के पश्चात 'नर' अतिरिक्त ।
१९–म व —धीरों ।

नदियां[1] नीर न छीलरि[2] पांणी धुवरि तणा ज[3] मेहू । (८)
इंण उंदाणौं पथ पिळक्यो आसा सास निरास भईलो । (९)
ताय[4] होयसी रह[5] निरझो वेहू । (१०)
धुवणा धोल मोतारिजला गण पिळग्यो[6] रहू ॥ २३ ॥ (११)

(२४)

घण तण जीम्यां[7] को गुण नांहीं, मळ भरिया भंडार । (१)
आग पाछ[8] माटी मूल, मूला भय[9] ज[10] भार (२)
घणां दिनां का बडा न कहिया बडा न लंघिया पार । (३)
उतिम कुळी का उतिम न कहिया[11] कारण[12] किरिया[13] सार । (४)
गोरख दीठ[14] सिध[15] न होयबा पोह[16] उतरिया पार । (५)
कळि जुग बरत चेतो लोई, चेतो[17] चेतण हार । (६)
सतगुर मिलियो सतपथ बतायो[18], वेद गरथ उदगार[19] ॥ २४ ॥ (७)

(२५)

पढि कागळ वेदां सासतर[20] सबदा, (१)
पढि गुणि रहिया कछू न लहिया । (२)
निगुरा उमग्या[21] काठ पर्षांणो (३)
कागळ पोथा नां कुछि थोथा नां कुछि गा'या गीयौ (४)

१-रा व —नदीय ।
२-न — छील ।
३-गा —जे ।
४-सभी प्रतियां म —'ताछ है ।
५-ला म —राह ।
६-म व —विलगी ।
७-व —जाम्यें ।
८-म —पीछ ।
९-ला —भुव, रा गो पी व —नह ।
१०-म —म्फ ।
११ जा —हुहिवा, रा गो पी —होयबा, म —हवा ।
१२-ला —करणी ।
१३-म व —करतव ।
१४-जा रा गा पी व —दीष म —दीष
१५-म —सिधि ।
१६-ला म व —पह ।
१७-म —वेतौ ।
१८-रा गो पी म व —म 'आनि चुकाइ' अतिरिक्त ।
१९-जा रा गो पी म व —म 'वेद उदगार' के स्थान पर 'विदगारा त उदगागार"
२०-जा रा गो पी म व —सासत्र ला —मासत ।
२१-ला —उमग, म —उमग ।

किणि दिस आव किणि दिस जाय माई लर्ड न[१] पीयो (५)
इ दे मध जीव[२] उपनों[३] किणि दिस पठा जीयो[४] ? (६)
सुणि रे काजी सुणि रे मुल्ला पीर रखेसर (७)
रे मसवासी[५] तीरथवासी किणि[६] घटि पठा जीयो ? (८)
रमा सबदे कस[७] लहुकाई बाहरि गई[८] न रीवों[९] । (९)
किणि आव लिणि बाहरि[१०] जाव यति करि वरस त सीयों[११] । (१०)
सोवन[१२]लक मदोवरि[१३] काज जोय जोय भेद भबीषण[१४] दीयो । (११)
तेल लियो खळि चोप जोगो जिहको[१५] मोल थोडे रो कीयो । (१२)
ध्यान[१६]ध्याने[१७] नावे विवे जे नर लणा[१८] तत भी ताहरी लीयो । (१३)
करण दधीच[१९] सिव[२०] र बळि राजा हूई को फळ लीयो । (१४)
तारादे रोहितास हरीचद काया दस वध दीयो[२१] (१५)
विसन अजप्यां जळम[२२] दसधारथ[२३] आके डोडा खींपे फळियो । (१६)

१-म —म 'न पश्चात 'पन' अतिरिक्त ।
२-आ रा गो पी म ब —पिंड ।
३ उपनों के पश्चात जा रा गा —म 'पिंडे मधे विव उपना । पिंड मधे जीव उपनो', तथा पी म न —म 'पिंडे मधे विव उपनो' अतिरिक्त ।
४ म ब —म 'किणि जीयो' त्रुटित तथा पी —मे 'जीयो के पश्चात इ दा मधे जीव उपना अतिरिक्त ।
५-आ म ब —मिसवासी ।
६-ना —दूण ।
७-ना —घुम ।
८-ला —गइय ।
९-आ गा म —रीया ।
१० ला —बाहुडि ।
११ म —मी ।
१२-म —सार ।
१३ ब —मनोवर ।
१४ गा —विभीश्न ।
१५ रा गो पी म ब —तिहिको ।
१६-म —जाने ।
१७ ध्यान के पश्चात म —म सीले सजमे ममे तथा ब —म मीले सजम अतिरिक्त ।
१८-पी —लोणा ।
१९-म —दधीच ।
२०-म —समरि, ना —सेवरि ।
२१-म ब —मे 'काया दायो त्रुटित 'दोयो' के पश्चात अतिरिक्त म ग —जा —म धनि कारण किया तप सूरा । धन दे दासव कीयो, म ब —मे धन जोदा सब कीयों ।
२२-जा रा गो पी म ब —जनम ।
२३-[illegible]

फर[1] विवरजत रहयो[2] । (१७)
राहू भांहू मोह रग रोणां[3] रा म लणा रहयो[4] । (१८)
नन रे मोह रग न राव[5] फाळी कन कुजीयो । (१९)
पाहे[6] लाल मजीठ[7] राता[8] मोल[9] न जाको[10] रहयो । (२०)
मयही ओप्रह[11]ऊ फिरि थान सताणो[12] साय लीयो । (२१)
हाट गए विपळोपति नारी जदि[13] पक[14] जदि[15] थीयो । (२२)
इमत[16] पा फळ एन मन राखिया[17] मेवा[18] मीठ[19] समायो[20] । (२३)
असध[21] परय विपळोपति नारी, (२४)
विण परच पार गिराय न जाई । (२५)
देखत अ धा सुणता बहरा । (२६)
ताहू का[22] न वसाई ॥ २५ ॥ (२७)

(२६)

मछी मछ[23] फिर जळ तरि (१)
तिह का माघ न जोयबा । (२)
परम तत अ सा (३)

१-जा रा गो पी ब —वाफर, म —वाफ ।
२-जा —रहीयो। आगे भी जा —म 'रहयो' के स्थान पर 'रहीयो' है।
३-ला —लणा ।
४-पी —रहई ।
५-ला —राता ।
६-ला —पाहो ।
७-जा —मजीठी ।
८-म ब —रातो ।
९-म ब —मूल ।
१०-जा —जसका, रा गो पी म —जिहिका, ब —जहिका ।
११-ला —भ्रौप्र ।
१२-ला —सताने ।
१३-म —भदि ।
१४-जा रा गा पी म ब —श्रव ।
१५-पी —तपि, ब —तव ।
१६-गो म ब —अमृत ।
१७-रा गा पी —रहिवा, ब —रषवा ।
१८-जा —म त्रुटित ।
१९-जा रा गा पी ब —मिष्ट ।
२०-रा म ब —सुमायो ।
२१-गो —असुद्ध, म ब —असिध ।
२२-जा —कछू, गा —वाहा, म ब —कुछ ।
२३-म —मछा ।

माठ दरबार[1] न ताय[2] पाल
सौवह[3] धनड कोइय[4] न थोयो
निर्‌ का[5] यत ल्होवा कसा ।
क मा सो मल अ सा लो
क्हो[7] न क्हा गहोल
परम तत क रूप न रेखा
[illegible] न लेहू सोज न लेहू ।
बरन विवरजत
पे[9] सोजा बायन बोल ।
मीन का पथ मीन ही जाणत[10]
मार[11] स रग[12] मे रहियो
सिध का पथ को[13] को साधु जांणत[14]
बाबा बरतण वहियो ॥ २६ ॥

(२७)

गर क मवदि अमणि[15] परमोधी,
[illegible] समद परीलो ।
सार समद पर[16] पर रै[17] चोरांड साल,
पहुमा[18] यत न पाल ।

१-मा —म 'उर' अधिक ।
२-मन, अन्यिा म 'ताहं' है ।
३ म —[illegible], य —चोरह ।
४ [illegible] म व —कोई ।
५-म —म अधिक
६-मा —[illegible] —म 'सो' के पश्चात् 'मत' अतिरिक्त ।
७-म —बाट ।
८-म [illegible] म य —भाय ।
९-म —म पथ के पश्चात 'तो' अतिरिक्त ।
१०-म —[illegible] ।
११-म य —रग ।
१२-म [illegible] म य —गु ।
१३ [illegible] —को, य —को ।
१४-म —[illegible] ।
१५ [illegible] —[illegible] ।
१६-म — [illegible] ।
१७ म य —[illegible] ।
१८ [illegible] म य —[illegible] ।

अनत कोडि गुर क[१] दांवणि विलग्या[२],
करणी साच तरीलो।
साझ[३] जमू सवेर[४] थापणि[५],
गुर की नाथ[६] डरीलो।
भगवीं टोपी थळ सिरि[७] आयो,
हेत मेल्हाण करीलो।
अबाराय बधाई[८] बाज[९],
हिरद हरि सिवरीलो[१०]।
विसन[११] मया चौखड किरसाणो
जबू दीप चरीलो[१२]।
जबू दीप असो चरि आयो,
इसकदर[१३] चेतायो।
मार्यो सील हकीकय[१४] साग्यो,
हक की रोजी धा'यो।
ऊ नथ नाथि कुपह का पोह मां[१५] आंण्यां[१६],
पोह का धुरि पोहचायो।
मोर धरती ध्यान वणासपति[१७] वासो
उजू[१८] मडळ छायो।
गींदू मेर पगाण परबत,
मनसा सौडि[१९] तुलायो।

१–पी —री।
२–जा रा गो पी व —विलवी म —विलगी।
३–ला —म साझ' से पूर्व 'जीत'।
४–ला —सवेरइ।
५–ला —म थापणि' के पश्चात 'व गुर अतिरिक्त।
६–जा —नादि।
७–ला —रिरि।
८–ला —वधइ।
९–म —वाझ।
१०–म व —सुमरीलो।
११–रा गो पी म —विसन व —विसनी।
१२–पी –'जबू चरीलो' त्रुटित।
१३–ला —सीकदर।
१४–म व —हकाकत।
१५–व —म्हे।
१६–म —आण्यों।
१७–ला —वणासति, म व —वणासत।
१८–जा रा गो पी —मोजू।
१९–ला —सौवडि।

म[1] जुग च्यारि छनीसां अवर[2] छतीसां[3],
धमरां वहे अधारी
म्हां तो सदा विहायो।
तनोमां को वरग[4] यहां म्हे[5],
बांरा[6] राज आयो।
बांरा[7] बाजि[8] घणा ■ ठाहर
मनां त डाल्हे डील्हे कोडि रखायो।
म्हे उबु[9] मडळ का रायो।
समर विरोळयो वासिग[10] नेतै,[11]
मर मियाणी पायो।
सभा[12] अरजन मारयो, कारज सारयो
धरि म्हे रहसि[13] बमांमां वां'यो।
केरी सान लई जदि लका,
तदि[14] म्हे क्रोध[15] भायो।
रहीमर का दम मसतग[16] छेदया,
बांध मना[17] निरतायो।
म्हे सोको छां[18] चिड होजो नाहीं[19]
ज्यंहि ल'हि खेलत डायो।
कमाकुर मु खूब रमियां,
सहज न[20] हरायो।

१-आ —म्‍।
२-१-पा —युग्नि।
४-अ —नाम।
५-अ व —हां म्हे।
६-अ —बार।
७-अ —बार व —बारह।
८ पा बा —बाजि।
९ वा गा बा पा म व —ऊब।
१०-आ द —वासिग।
११-अ अ ग म व —नतो।
१२-अ —सभा।
१३-अ —रमि।
१४-अ म —अधि।
१५ अ ग प म व —क्रोधे।
१६-अ ग, गा पी म व —मसतक।
१७ म —मनो।
१८ अ अ अ गो व —छां।
२० -अ —और्‍ह।

की प्रबन्ध किया जाता था। रोहू म ऐसा अब भी है।

विष्णोई लोग बल को "वधिया" (खस्सी) नही कराते। पहले इनम अपने पशुओं पर पहचान हेतु "जाम्भाणी दाग" लगाने की प्रथा थी। दायें पुटठे पर त्रिशूल का और बायें पर सात किरण वाला गोल सूरज जाम्भाणी दाग कहलाता है। बकरे-बकरिया के कान बींध कर "मुरकी" पहनाई जाती थी। बहुधा पुण्यार्थ, मनौती स्वरूप या मृतक के निमित्त बछड़े को जाम्भाणी दाग लगाकर मुक्त छोड़ देते थे। छोड़ने के बाद भी विष्णोई-समाज उसकी सुरक्षा का ध्यान रखता था। अब भी ऐसा कहीं-कहीं होता है। इसको 'सागड दागना', 'सूरजजी का' या 'जाम्भोजी का साड' छोड़ना कहा जाता है। इस बात को न समझने अथवा गलत समझने के कारण "रिपोर्ट मर्दुमशुमारी राज मारवाड, बाबत सन १८९१ ई०" मे सर्वप्रथम "एक आदमी को जाम्भोजी का साडिया" बनाने की, लोगो से सुनी हुई बात का उल्लेख किया गया है। यह कथन सर्वथा असगत, निराधार, अज्ञता का द्योतक तथा विष्णोइयो की अपने नियम पालन सम्बन्धी दृढता के सदर्भ मे ईर्ष्या द्वेष वश कहा गया प्रतीत होता है जिसकी पुष्टि "रिपोर्ट" मे दिए गये अन्य विवरणों से भी होती है। उल्लेखनीय है कि स्वय इसके लेखक को भी "यह बात उनके (विष्णोइयों के) मजहब से भी खिलाफ मालूम होती है" (पृष्ठ ९६)।

केवल बछड़ा ही नही, गाय भी "देई" या 'जाम्भोजी की' गाय मान कर रखी जाती है। ऐसी गाय का दूध कभी बिलोया नही जाता, उसको केवल पीने या पीने के लिए बाटने के काम मे ही लिया जाता है। वील्होजी कृत "कथा जसलमेर की" मे जीव दया और जाम्भाणी पशुओं सम्बन्धी जाम्भोजी द्वारा रावल जतसीजी के आग्रह पर मागे गये चार वरो मे एतद् विषयक सकेत मिलते हैं।

२१– मत्र

सम्प्रदाय के नौ प्रमुख मत्र हैं जो भिन्न-भिन्न अवसरो पर प्रयुक्त होते हैं। ये निम्न लिखित[1] हैं —

(१) नवण ('बडो नवण', 'बहुनवण'), (२) कळस पूजा मत्र, (३) पाहळ मत्र, (४) विष्णु या गुरु मत्र, (५) तारक या गुरु मत्र, (६) बाळक मत्र, (७) धूप मत्र, (८) सुजीवण मत्र तथा (९) ध्यान मत्र।

सम्प्रदाय म 'नवण' का बहुत महत्त्व है। तांतूदेवी द्वारा मुक्ति प्राप्ति हेतु सक्षप मे कोई जप या मत्र पूछने पर जाम्भोजी ने 'नवण मत्र'[2] बताया था। नवण का ही दूसरा नाम 'सध्या पाठ' है। प्रत्येक सस्कार और विशिष्ट अवसरो पर "पाहळ" बनाने से पूर्व कलश-स्थापना के समय 'कलश पूजा" मत्र बोला जाता है। "पाहळ" कलश के अभिमत्रित जल को कहते हैं। पाहळ शब्द "पायल' से बना है। (पाय+ल। पाय=जल, ल मृदुता,

१–अध्ययन-सामग्री, प्रति सख्या २६, ५५ ६५, ६६, ६८, ८१, १४६, १५०, १६३, १६९, १७२, २०१, २१८, २२७, २२८, २४२, २५६, ३१७, ३२५, ३३३, ३५०।

२–अध्ययन-सामग्री, प्रति सख्या १६१, १६६, २०१, २२३, २५३, २५७, २६०, ३०४, ३२५।

कोमलता का वाचक प्रत्यय)। पाहळ लेने को "चळू लेना" भी कहते हैं जिसका तात्पर्य पवित्र या अभिमंत्रित जल लेने से है। चौथे व पांचवें दोनों ही मंत्रों को कभी-कभी गुरु मंत्र कहते हैं जो साधु-दीक्षा और गृहस्थ को शिष्य बनाते समय दिये जाते हैं। वर्तमान में दोनों में यह भेद प्रायः नहीं रखा जाता। विष्णोई माता पिता का बच्चा जन्म से विष्णोई नहीं होता, उसे ऐसा बनाया जाता है। जन्म के ३१ वें दिन हवन करके बच्चे के मुंह में पाहळ दिया जाता और कानों से छुवाया जाता है। ऐसा करते समय बाळक मंत्र पढ़ा जाता है। 'सुजीवण मंत्र' मृत्यु समय सुनाया जाता है। इसके साथ पृथक रूप में कभी कभी "कूंची का सबद" (संख्या २८) का पाठ भी किया जाता है। उल्लेखनीय है कि हवन की ज्योति में ही जाम्भोजी के दर्शन माने जाते हैं। परम्परागत विश्वासानुसार ज्योति में जाम्भोजी वर्तमान हैं। हवन-ज्योति विलयन के समय धूप मंत्र बोले जाते हैं। अधिकांश घरों में स्त्रियां हवन करती हैं। हवन समाप्ति पर वे तथा पुरुष भी "ध्यान" मंत्र स्मरण कर ध्यान करते हैं। मूल रूप में तो यह मंत्र कुछ बड़ा है किन्तु वर्तमान में इस रूप में प्रचलित है —

"भले हूं भेंटा देई कुमाणस हूं पाले टाळी।
आई बलाय दूर करो और सुख स्याति राखो।

२२-समाज

विष्णोई समाज में दो प्रकार के लोग हैं—गृहस्थ और साधु। गृहस्थ के अन्तर्गत सामान्य गृहस्थ, थापन और गायणों की गणना है।

(क) थापन संस्कार का काम थापन का है। कलश-स्थापन इनके द्वारा किए जाने के कारण ये थापन कहलाते हैं। सम्प्रदाय-प्रवर्तन के समय जाम्भोजी ने इनको यह काम सौंपा था[1]। थापनों की प्रमुख जातियां निम्नलिखित हैं —गोदारा, वणियाळ, लोळ, माम्मू, बैरवाळ, पवार, खोखर, दोकसिया, आरणी, ततरवाळ।

(ख) गायणे-गायणों का मूल काम वंशावली लिखना और "जम्मे"-जागरण आदि में गाने-बजाने का था। मृत्योपरान्त दिया गया दान भी ये ग्रहण करते थे। कालान्तर में इन्होंने वंशावली लिखना छोड़ दिया और थापनों की प्रतिस्पर्धा करने लगे। ऐसा बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से हुआ। एक अज्ञात कवि (संख्या ११६) ने गायणों की इस प्रवृत्ति पर रोष भी प्रकट किया है। गायणों के अनुसार उनकी ग्यारह जातियाँ ये हैं —सीवळ, वागड़िया, चवारा, लटियाळ, गूजर, बावरा, अगरवाल, दइव, तुंवर, पवार और सोना। इनमें तंवर के स्थान पर सीवर और गूजर के स्थान पर गूजर गौड नाम भी

१-(क) घूळय द लार मतान थाया, अमर गति सिंवरि करि सिद्ध आया।
थापना साव गुरु क्रम थापे आपहि आप सेवत आपे ॥१८२॥
—सुरजनजी, कथा परसिध।
(ख) बाळक का महलू करि भाळ, घर लीपरो कर समाळे।
थापन हुकम करि जदि आय, पंच लोग जदि लीय बुलाय ॥२०४॥
—सुरजनजी, कथा औतार की।

बताए जाते हैं तथा सींवर को सेंवर और बागडिया को बागडव या बांगडवा भी कहा जाता है।

(ग) भाट-वंशावली लिखने का काम भाट करते हैं जिनका परम्परागत मुख्य गांव महलाणा (जोधपुर) है। प्रसिद्ध है कि जाम्भोजी के हजूरी शिष्यों में गायणे तो मुख्यतः आलमजी और साल्होजी के और भाट भासनोजी के वंशज हैं।

(घ) सामान्य गृहस्थ-सामान्य गृहस्थ बिष्णोई के विवाह चार जातियाँ (मां, बाप, नानी, दादी की) को छोड़कर आपस में गृहस्थ बिष्णोइयों में ही होते हैं। इसी प्रकार थापनों के विवाह थापनों में तथा गायणों के विवाह गायणों में होते हैं। अब इन नियमों में शिथिलता भी आ गई है। जाटों की भाँति बिष्णोइयों में भी नाता (पुनर्विवाह) होता है। इसके भी दो रूप हैं-"नाता करना" तथा "चूड़ी पहराना"। नाते में विधवा का पुनर्विवाह होता है और "चूड़ी पहरने" में सगे देवर से।

(ङ) साधु-साधु दो प्रकार के हैं —रमत साधु और महन्त। महन्त स्थान विशेष की परम्परागत गद्दी के अधिकारी होते हैं। नाथोजी के दो शिष्यों-रिनदरोजी और बील्हाजी से बिष्णोई साधुओं की दो परम्पराएँ चली थीं (द्रष्टव्य-परिशिष्ट में-साधु-परम्परा)। साधुओं में कान तक आने वाली तीखी "जाम्भाणी टोपी" और चपटे मनकों की आबनूस की काली माला का व्यवहार प्रसिद्ध रहा है। महन्त प्रायः धोती, कमीज और सिर पर भगवा साफा रखते हैं।

(च) अभिवादन प्रणाली-परस्पर मिलने पर अभिवादन में 'नवण प्रणाम' और प्रतिवचन में 'विष्णु न', 'जाम्भोजी न' (विष्णु को, जाम्भोजी को) कहा जाता है।

(छ) जातियाँ-बिष्णोई समाज में अधिकतर जाट, क्षत्रिय, और वैश्य जाति के लोग हैं। इनमें भी सर्वाधिक संख्या जाटों से बने बिष्णोइयों की है। जाम्भोजी ने भी ऐसा उल्लेख किया है (१४ ३,४)। जाम्भोजी के समय इनके अतिरिक्त ब्राह्मण, चारण, शूद्र और मुसलमानों ने भी विष्णोई धर्म अंगीकार किया था। हजूरी भक्तों में अलीजी, सालोजी और केल्हजी ब्राह्मण, तजाजी, अल्लूजी, कान्हाजी चारण, समसदीन, अमियादीन, दीन महमद, रहमतजी मुसलमान तथा मोती मेघवाळ (चमार) था। सुरजनजी,[1] गोकलजी[2] आदि कवियों ने ऐसी कतिपय जातियों का उल्लेख किया है।

बिष्णोई होने के पश्चात् भिन्न-भिन्न जाति के लोगों के भोजन और आपसी व्यवहार में कोई भेद नहीं रहता। सम्प्रदाय के नाते से वे समान और एक ही कुल के समझे जाते

१-जाट, भाट जोगी सन्यास, बांमण सुदर करें गुर आस।
खान पीर परच्या सुरताण, राज वंस महाजन जांण ॥ ९६
चारण कायथ परच्या जांण, ऊंच नीच मह जात बखांण ॥९७॥
—कथा औतार की।

२-परच्या पात सुपात, परच्या छ बांमण बाणियां।
मोध्या जीव सुजीव, दे सुमति सुमारग आणियां। —साखी।

हैं। कालातर म सम्प्रदाय के सम्बन्ध से विष्णोइयो को जाति के रूप म भी अन्य लोग समझने लगे। वस्तुत विष्णोई शब्द सम्प्रदाय का ही बोधक है, जाति का नही।

२३–आबादी

विश्णोइयो की अधिकाश आबादी राजस्थान, मध्य प्रदेश, पजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश म है। बिहार[1] और नेपाल[2] म भी विष्णोइयो के होने का पता चला है। इनमे राजस्थान की पुरानी रियासतो–बीकानेर, जोधपुर, जसलमेर और उदयपुर म इनकी सर्वाधिक पुरानी आबादी है। उदयपुर के जिला भीलवाडा म पुर, दरीबा और समेला इनके तीन पुराने गाव हैं। यहा के अधिकाश विश्णोई राजपूतो से बने हुए हैं। उत्तर प्रदेश मे मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, देहरादून, कानपुर, जालौन, कालपी, कन्नौज, फर्रुखाबाद, औरया, अजीतमल, काट, खेरी, लखनऊ आदि स्थानो और क्षेत्रो म विष्णोई बसे हुए हैं। इलाहाबाद और बुन्देलखण्ड के आसपास के विष्णोई पुरवार और अवध के औधिया कहलाते हैं। दोनो को जाम्भोजी का मतानुयायी होने के कारण 'पुरवार भमया और औधिया–भमया' भी कहते हैं। यहा अग्रवाल वश्य विश्णोई बडी सख्या मे हैं। इनके अतिरिक्त जाट और दूसरी जातियो के भी हैं। मूलत जाम्भोजी के समय म ही यहा के लोग विष्णोई हुए थे। पुरवार और औधिया नाम तभी से चल आ रहे हैं। केसोजी ने 'कथा चितौड की' म इस क्षेत्र के विष्णोइयो का उल्लेख किया है[3]।

मध्य प्रदेश म मालवा के हरदा, होशगाबाद क्षेत्र मे इनकी सर्वाधिक आबादी है। यहा के अधिकाश लोग मारवाड से आकर बसे थे।

हरियाणा म जिला हिसार म और पजाब मे जिला फीरोजपुर म इनकी बहुत बडी सख्या है। स्वतन्त्रता से पूव भावलपुर रियासत मे भी ये बडी सख्या म थे और उसके बाद सुविधानुसार देश के अनेक भागो मे यत्रतत्र बस गये। इन स्थानो के अधिकाश लोग मूलत राजस्थान–वासी हैं।

२४–विष्णोई गावों की सख्या :

लगभग ४० साल पहले उपयुक्त प्रान्तो के उन गावो की सख्या अनुमित की गई थी जिनके निवासी अधिकाश मे विष्णोई थे[4]। इसका विवरण इस प्रकार है:—

१–विष्णोई महासभा के पाँचवें अधिवेशन के सभापति श्री रामनारायणसिंह का भाषण, फागुन वदि १४, सवत १९८३।

२–अमर ज्योति (मासिक पत्रिका) हिसार, दिसम्बर, १९५१, पृष्ठ ५, "कानपुर जिले के विश्नोई" लेख म।

३–लोक महाजन वणिया यांति, पुरवार औधिया उमरा जाति।
विसणोइ लोर हुवा जए तर, लोर लदणिया सोदो नर ॥५॥

४–(क) विष्णोई महासभा के चतुर्थ अधिवेशन के सभापति बाबू नन्दलाल का भाषण, पृष्ठ ६, नीमगाव, २६ दिसम्बर, सन १९२५।

(शेषांश आगे देखें)

(१) राजस्थान-६५३ गांव। बीकानेर में १५०, जोधपुर में ४००, अजमेर में १००, और उदयपुर में ३।

(२) पंजाब-१७६ गांव। फीरोजपुर में १६, भावलपुर में २५, लायलपुर में ४, सरगा में १ और हिसार में १३०।

(३) उत्तर प्रदेश-कांठ (मुरादाबाद) में १५, कानपुर में १० (उस समय की उत्तर प्रदेश के शेष क्षेत्रों की सूची उपलब्ध नहीं है)।

(४) सिंध-हैदराबाद की मीरपुर तहसील में ५ गांव।

(५) मध्य प्रदेश-नरसिंहपुर में १५, भूपाल में १, उज्जैन में १०, होशंगाबाद में ३० गांव। नागपुर में २० घर, बिलासपुर में २० घर, जबलपुर में २० घर, खडगपुर में १५ घर और सागर में ५ घर थे।

इसके अलावा पटना में १०० गांवों के होने का पता विष्णोई महासभा ने लगाया था। सभा को प्राप्त सूचनानुसार कराची, नेपाल, रंगून, काबुल, कंधार, गजनी और लंका में भी ये लोग बसे हुए थे। सुरजनजी, साहबरामजी आदि कवियों की रचनाओं से जाम्भोजी का भारत के बाहर इन देशों में जाने का उल्लेख मिलता है।

वर्तमान में गांवों की उल्लिखित संख्या में बड़ी मात्रा में बढ़ोतरी हुई है जिसके कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

बीकानेर डिवीजन के श्रीगंगानगर जिले में १४५ गांव,[1] मुरादाबाद जिले में ९० गांव[2] और भीलवाड़ा में ५ गांव[3]। कानपुर जिले के १८ गांवों में भी विष्णोई बसे हुए हैं[4]।

२५-जनगणना

विभिन्न जनगणना रिपोर्टों में सन् १९३१ तक[5] ही विष्णोइयों की जनसंख्या का उल्लेख किया गया था। यह तालिका इस प्रकार है —

(ख) विष्णोई महासभा के पांचवें अधिवेशन के सभापति श्री रामनरायण सिंह का भाषण।
(ग) विश्नोई समाचार (मासिक पत्र), नगीना, वर्ष ३, अंक ५, नवम्बर, १९४५।
१-अमर ज्योति (मासिक पत्रिका) हिसार, नवम्बर, सन १९६३, पृष्ठ १३ १५।
२-वही, दिसम्बर, सन १९६४, पृष्ठ १२।
३-वही, जनवरी, सन् १९६४, पृष्ठ २।
४-वही दिसम्बर, १९५१, 'कानपुर जिले के विश्नोई,' पृष्ठ २६।
५-"इन १९३१ सेंसस एण्ड अर्लियर सैन्सेसेज हिन्दूज वर क्लासिफाइड अण्डर सम वन हैण्ड्रेड फिफ्टी डिफरेन्ट कास्टस। इट इज इनडीड ए हैपी पोरटेन्ट फार इण्डिया आफ दि फ्यूचर दट फार १९४१ इट वाज डिसाइडिड टू अबण्डन दिस सिस्टम"- "दीज टन ईयरस" बाई ऐ० डब्ल्यू० टा० वव, (ए पापुलर एकाउन्ट आफ दि सेन्सस ओपरेशन इन राजपूताना एण्ड अजमेर-मेरवाड़ा) —राजपूताना सेन्सस् वाल्यूम-२४, पार्ट-फर्स्ट पृष्ठ ७३, १७ फरवरी, सन १९४१।

सन	जनसंख्या	विभिन्न प्रान्तो की विष्णोई जनसंख्या			विशेष विवरण *
		राजपूताना	पंजाब	अन्यत्र	
१८८१-	८,५७६[1]	—	—	—	ब्रिटिश भारत मे
१८९१-	—	५७,०६४*[2]	—	—	केवल पश्चिमी प्रदेश मे पाए जाते हैं।
१९०१-	६८,९६६[3]	४९,३०२[4]	१६,१४०[5]	१,६०८ यू० पी०, सी०पी०	यू० पी०, पंजाब और राजपूताना मे पाए जाते हैं।
१९११-	७३,३९२[6]	५२,८७९[7]	१९,४१६[8]	१,०९७ ३-अजमेर-मेरवाडा	
१९२१-	—	५२,८४३[9] + १६,७८०[10]		१४ (अजमेर-मेरवाडा)	समस्त खेतिहर लोगो मे विष्णोई ३ प्रतिशत हैं। मारवाड, बीकानेर और जसलमेर में बडी संख्या में पाये जाते हैं।
१९३१-	७०,४९१[11]	६६,८७३[12]	—	५८८सी०पी०	बीकानेर, जसलमेर और मारवाड में ही अधिकांशत पाए जाते हैं।

१-रिपोट आन दि सन्सस आफ ब्रिटिश इंडिया, १८८१, वाल्यूम फस्ट, पृष्ठ ३२१।
२-सन्सस आफ इंडिया, १८९१, वाल्यूम २६, राजपूताना, पाट फस्ट, पृष्ठ ६६।
*(रिपोट आन दि सन्सस आफ १८९१, वाल्यूम सकिंड (दि कास्टम आफ मारवाड), जोधपुर, सन १८९४, पृष्ठ १४ पर मारवाड राज्य के विष्णोइयो की संख्या ४०,०२३ बताई गई है)।
३-वही, १९०१, वाल्यूम फस्ट-ए, पार्ट-सैकिंड, पृष्ठ ५४७।
४-वही, १९०१, वाल्यूम-२५ ए, राजपूताना, पाट-सकिंड पृष्ठ २४६।
५-वही, १९०१, वाल्यूम-१७ ए, पाट-सकिंड, पृष्ठ ३४।
६-वही, १९११, वाल्यूम-फस्ट, पाट-सकिंड, पृष्ठ १८६।
७-वही, १९११, वाल्यूम-२२, राजपूताना एंड अजमेर मेरवाडा, पाट-फस्ट, पृष्ठ २५२।
८-वही, १९११, वाल्यूम-१४, पाट-सकिंड पंजाब, पृष्ठ २४१।
९-वही, १९२१ वाल्यूम-२४, पाट फस्ट, राजपूताना और अजमेर मेरवाडा, पृष्ठ २१८।
+(सन्सेस आफ इंडिया बीकानेर स्टेट (रायबहादुर जयगोपाल पुरी), पृ० २८ के अनुसार, बीकानेर में-१०, ९२१)।
१०-वही, १९२१, वाल्यूम-१५, पाट-सकिंड पंजाब, पृष्ठ २०५।
११-वही, १९३१, वाल्यूम-फस्ट, पाट-सकिंड, पृष्ठ १२।
१२-वही, १९३१ वाल्यूम-२७, पृष्ठ १२४, १२६।

२६–विभिन्न संस्कार, मान्य त्योहार, तिथियाँ, 'सूत, पछेवड़ों' फिराना और वेशभूषा आदि

(क) संस्कार—विष्णोई समाज में तीन मुख्य संस्कार हैं—जन्म, विवाह और अन्त्येष्टि। हवन, कलश-स्थापना और पाहळ प्रत्येक संस्कार में होता है। जन्म-सूतक ३० दिन तक रहता है। ३१ वें दिन बच्चे का सिर मुंडवा कर नहलाते और पाहळ करके बालक-मन से संस्कारित कर लेते हैं। बच्चे की माँ उसके पश्चात् ही कोई गृह-कार्य कर सकती है, पहले नहीं। विष्णोई बेटी का पहला 'जापा' पीहर में होता है।

विवाह बड़ी सादी रीति से होते हैं। सम्बन्ध तय होने पर वधु पक्ष की ओर से कच्चे सूत का एक डोरा भेजा जाता है। जितने दिन बाद विवाह होने को होता है, डोरे में उतनी ही गाँठें लगा दी जाती हैं। इसके लिए कोई मुहूर्त या महीना नहीं देखा जाता। विवाह में वर-वधु 'पीढ़ी'' बदलते हैं, फेरे नहीं होते। दोनों का उत्तर की ओर मुँह करवा कर पीढ़ों पर बैठाया जाता है और थापन या साधु (कहीं कहीं गायणे भी) विवाह-पद्धति का पाठ करते हैं। कुछ समय पश्चात् दोनों के पीढ़ (या आसन) बदलवा दिए जाते हैं। विवाह-पद्धति बड़ी सरल और संक्षिप्त है[1]। भीलवाड़ा और उत्तर-प्रदेश के विष्णोइयों में विवाह सनातनधर्मी हिन्दुओं की भांति फेरों से होते हैं।

शव को उत्तर-दक्षिण करके गाड़ा जाता है। इसका सूतक तीसरे, बारहवें या तेरहवें दिन उतरता है। मृतक-भोज करने की परिपाटी है। उत्तर-प्रदेश में शव को जलाने और मध्य-प्रदेश में जल में प्रवाहित करने की पद्धति है। साधुओं का अन्त्येष्टि संस्कार साधु ही करते हैं और उस समय सिवदास (कवि संख्या ८) कृत साखी गाई जाती है।

(ख) त्योहार—होली के अतिरिक्त शेष सभी हिन्दू-त्योहार उनकी भांति धूमधाम और उत्साह से मनाए जाते हैं। होली का दिन विष्णोइयों के लिए प्रसन्नता का नहीं, शोक का है क्योंकि इसी दिन प्रह्लाद को आग में जला मारने का उपक्रम किया गया था। इस दिन सूर्यास्त से पूर्व ही दलिया, "पळेवड़ी" (मेथी की कढ़ी) आदि खा लेते हैं। सूर्यास्त के पश्चात् सूतक लगना मानते हैं। दूसरे दिन प्रह्लाद के जीवित होने का समाचार जान कर आनंदित होते और 'प्रह्लाद वाचते' हैं। पहले केसोजी कृत "प्रह्लाद चिरत वाचते" की प्रथा थी। बाद में ऊदोजी अडींग, हरजी वुकिया, की ऐसी रचनाएँ भी संक्षिप्त होने के कारण प्रसिद्ध हुईं। वर्तमान में ऊदोजी का "पहळाद" विशेष प्रचलित है। पश्चात् गांव के एक निर्धारित स्थान पर हवन करते और पाहळ लेते हैं। यह पाहळ लेना सबके लिए अनिवार्य है। अन्य लोगों की तरह होली के दूसरे—"धूलँडी" के दिन रंग नहीं खेलते।

१–विवाह-पद्धति और गोत्राचार आदि की अनेक प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं जिनकी सूची इस प्रकार है–अध्ययन-सामग्री, प्रति संख्या ६३, ६५, ६६, ६७, ६८, ७५, ७६, ७८, ८१, १०९, १५२, २०३, २१३, २२७, २२८, २३५, २५६, ३१३, ३१७, ३२४, ३३३, २४६, ३७१, ३८७।

(ग) तिथियाँ-प्रति अमावस्या को गाव मे सामूहिक रूप से हवन करते हैं और प्राय व्रत रखते हैं, कोई व्यावसायिक काय नही करते। इसी प्रकार "चिरत नवमी" (मार्गशीर्ष वदि ६, जाम्भोजी की बकुण्ठवास-तिथि) और सूय, चन्द्र ग्रहण के दिन भी करते हैं। भादवा वदि अष्टमी (जाम्भोजी की जन्म-तिथि) को भी खूब मान्यता है।

(घ) "सूत, पछेवडी"-जाम्भोलाव और मुकाम पर पुण्याथ "सूत" (प्रति स० ३५८) 'पछेवडी' (प्रति सख्या ३५७) और "सोळती फिराने" की प्रथा रही है। जम्भ-तालाव या मुकाम-मन्दिर के चारो ओर डेढ़ हाथ चौड़ी सूत की बनी जितनी "डोवटी" आए, उसे साधुओ का दान म देना सूत फिराना कहलाता है। इतनी ही चौडी किंतु पाँच हाथ या सोलह हाथ लम्बी 'डोवटी' दान म देने को क्रमश 'पछेवडी' और 'सोळती' फिराना कहते हैं। प्रत्येक दान के पश्चात साधुओ को भोजन करवाया जाता है।

(ड) वेशभूषा-वतमान मे अन्य स्थानो पर तो नही किन्तु फलोदी और मारवाड क्षेत्र म बिश्नोई स्त्रियो का पहनावा अन्य स्त्रियो से किंचित भिन्न है। यहा बिश्नोई पुरुष सिर पर सफेद बटदार गोल पगडी (साफा) बाधते हैं। इसकी लम्बाई अपेक्षाकृत अधिक होती है। इन क्षेत्रो म ही अब पहनावे का वशिष्टय शेष रह गया है। सिर के बाल अब भी ज्यादा बडे नही रखे जाते। सामान्यत सफेद कपडे पहने और पसन्द किए जाते हैं। सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं। बिश्नोई साधु सफेद धोती, कुरता (कमीज) और सिर पर भगवी पगडी (साफा) बाधते हैं। कई साधु कमीज (झुग्गा) भी भगवें रग का रखते हैं।

२७-लोकगीत और हरजस

लोक म सामान्य रूप से प्रचलित गीत और हरजस बिश्नोई-समाज मे भी प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त इनमे अनेक ऐसे भावभरे गीत भी प्रचलित हैं जिनका इतर समाज मे विशेष चलन नहा है। ऐसे गीत मुख्यत तीन अवसरो पर गाये जाते हैं-(क) विभिन्न सस्कारो के समय (ख) सत्सग और (ग) जाम्भाणी मेलो पर। उदाहरण स्वरूप परिशिष्ट मे-(१) "हिंडोलो" (हर रो हिंडोळा), (२) "हालो सहियां ए", (३) "मुरली" और (४) "मिन्दर" गीत दिए जा रहे हैं। पहला वद्ध व्यक्ति के स्वगवास तथा शेष तीनो-सत्सग, और मुकाम-मेलो पर समवेत स्वरो मे तन्मयता पूवक गाए जाते जाते हैं। वस्तुत बिश्नोई लोकगीत" अध्ययन का एक पृथक् विषय है।

२८-कतिपय प्रमुख सामाजिक सस्थाएं

विभिन्न पचायतो के अतिरिक्त बिश्नोई समाज की कुछ सस्थाओ का उल्लेख नीचे किया जाता है।

(क) भारतवर्षीय बिश्नोई महासभा[1] (वतमान कार्यालय बिश्नोई मदिर, हिसार) :

१-ता० २२-४-१९३६ को सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट २१ (१८६०) के अन्तर्गत यह सभा "भारतवर्षीय बिश्नोई महासभा" के नाम से लखनऊ मे पजीकृत हुई थी। कालान्तर में इसका कार्यालय हिसार मे लाया गया जो अब वहीं है।

दिसम्बर सन १६१६ (संवत् १९७६) मे "सामूहिक शक्ति के संगठन, और जाति को उन्नत दशा म लाने के लिए जाति के विचारशीलो ने" एक सभा "विष्नोई (वैष्णव) सभा" नाम से नगीना मे स्थापित की थी जिसके सभापति श्री हरप्रसाद वकील और मंत्री रामस्वरूप कोठीवाल[1] थे। फरवरी सन् १९२१ मे प्रचारित एक परिपत्र के अनुसार इसी सन् मे, "अखिल भारतवर्षीय विष्णोई सम्प्रदाय" का पहला अधिवेशन नगीना म हुआ। तब से अब तक महासभा के ८ अधिवेशन हुए हैं, जिनका विवरण यथालिखित है —

क्रम	स्थान	तिथि	सभापति
१	नगीना	२६–२८ मार्च, सन् १९२१ (संवत् १९७७)	रायबहादुर हरप्रसाद, वकील
२	फलावदा	—	चण्डीप्रसाद सिंह
३	कानपुर	सन १६२४ (संवत १९८१)	स्वामी महानन्दजी महाराज, काट
४	हरणा	सन १६२५ (संवत् १६८२)	बाबू नन्दलाल इंजीनियर
५	मुकाम	२–४ मार्च, सन् १६२७ (संवत् १९८३)	चौ० रामनारायण सिंह, सीतोगुनो (इनकी अनुपस्थिति म तत्कालीन मध्य क्षेत्र दावां के जेलदार मामराज धारणिया न की थी)।
६	अबोहर	७–८ फरवरी, सन् १६४४ (संवत् २००१)	बाबू हरप्रसादजी
७	हिसार	१८ मार्च, सन् १६४५ (संवत् २००२)	चौ० हरिराम बोला, बिसनपुरा (श्रीगंगानगर)।
८	मुकाम	२१-२३ फरवरी, सन् १६५५ (संवत २०१२)	चौ० हरिराम बोला, बिसनपुरा (श्रीगंगानगर)।

सन १९५५ के पश्चात् अब तक सभा का कोई अधिवेशन नहीं हुआ है।

१-(क) मार्च-अप्रैल सन् १९२१ म होने वाले महासभा के वृहत अधिवेशन म सम्मिलित होने के लिए प्रतिनिधि भेजने संबंधी परिपत्र।
(ख) फरवरी, सन् १६२१ के प्रथम अधिवेशन सम्बन्धी परिपत्र।

(ख) क्षेत्रीय संस्थाएँ क्षेत्रीय संस्थाओं में चार उल्लेखनीय हैं —

(१) अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवक दल (रजिस्टर्ड, पंजाब-कार्यालय-विष्णोई मंदिर, अबोहर)। महासभा के अबोहर वाले छठे अधिवेशन के समय इसकी स्थापना हुई थी। दल ने समाज सुधार सम्बन्धी अच्छा कार्य किया है। सीमा-कमीशन को एक ममोरेंडम भी दल ने दिया था[१]।

(२) विष्णोई सभा, जिला फीरोजपुर (कार्यालय विष्णोई मन्दिर, अबोहर)। इसका विधान इस जिले के विष्णोइयों द्वारा ता० १५ जुलाई १९५० को विष्णोई मंदिर, अबोहर में स्वीकार किया गया था। इसी समय से संस्था की स्थापना माननी चाहिए[२]।

(३) विष्णोई सभा, हिसार (कार्यालय-विष्णोई मंदिर, हिसार)। यह सभा ८ फरवरी, सन १९४७ को "सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट, २१ आफ १८६०" के अन्तर्गत लाहोर में पंजीकृत हुई थी[३]। स्थापना-समय से लेकर अब तक यह सभा परोपकारार्थ अनेक प्रकार के समाज-उत्थान, सुधार और लोकहित विषयक कार्य करती आ रही है।

(४) श्री विश्नोई सेवा समिति (रजिस्टर्ड-कार्यालय-७४/२५६ लच्छी का बगीचा, धनकुट्टी, कानपुर)। इसका पंजीयन ३१, मार्च, १९६१ को हुआ था[४]।

इनके अतिरिक्त समय-समय पर क्षेत्र-विशेष में सभा-सम्मेलन भी होते रहे हैं।

२९-जम्भेश्वरीय संवत

सम्प्रदाय में "जम्भेश्वरीय" संवत् भी प्रचलित है। इसका आरम्भ जाम्भोजी की बैकुण्ठवास तिथि-मार्गशीर्ष वदि नवमी के दिन के तीसरे पहर से माना जाता है और शेष सब गणना विक्रम संवत् के अनुसार होती है। संवत १५९३ के इस दिन जाम्भोजी का बैकुण्ठवास हुआ था। प्रचलित विक्रम संवत में से १५९३ निकाल देने पर जम्भेश्वरीय 'गत' संवत आता है। स्वामी ईश्वरानन्दजी गिरि, साहबरामजी, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, श्रीरामदासजी, रामानन्दजी गिरि आदि की पुस्तकों और परिपत्रों पर "जम्भेश्वरीय गतान्दी" लिखा मिलता है।

ऊपर विष्णोई सम्प्रदाय के सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक और सामाजिक स्वरूप को सार रूप में स्पष्ट किया गया है।

१-(क) विष्णोई मन्दिर अबोहर का प्रथम विवरण, ता० २० जनवरी, १९४९।
(ख) विष्णोई मंदिर अबोहर और विष्णोई पंचायत का दूसरा विवरण, ३१ अगस्त, सन १९५०।
(ग) ममोरेंडम टू दि आनरेबल प्रेसीडेंट एण्ड मेम्बर्स बाउंड्री कमीशन, इंडिया, (कम्परोहेन्व) आन १९-४-५५।
२-विधान, विष्णोई सभा, जिला-फीरोजपुर, जम्भेश्वर संवत ४१५।
३-रजिस्ट्रार, ज्वाइंट स्टॉक कम्पनीज, पंजाब का 'रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट', ता० ८-२-१९४७।
४-समिति की वार्षिक रिपोर्ट एवम् आय-व्यय का लेखा, वर्ष १९६०-६१।

युग-परिवर्तन के साथ सम्प्रदाय में भी यत्र-तत्र सामाजिक परिवर्तन के लक्षण दिखाई देते हैं किन्तु परम्परागत मान्यताओं तथा संस्कारों के प्रति पूर्ववत् आस्था और निष्ठा बनी हुई है।

पूर्व पृष्ठों में इस जिल्द के दो खण्डों—(१) पृष्ठभूमि तथा (२) प्रवर्तक, वाणी और सम्प्रदाय के अन्तर्गत सात अध्यायों में एतद् विषयक प्रामाणिक विवेचन, प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के शेषांश—विष्णोई साहित्य का विवेचन, महत्त्व, देन और मूल्यांकन दूसरी जिल्द में तीसरे खण्ड के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा रहा है।

परिशिष्ट १

चित्र-सूची

(कुल चित्र संख्या ११२)

नजीराघ्रपांनमासत्रपुमतगनामपाघ्या।सपुर
तालीषतुंपरमांणएदसंतजातृवणसलापापंन
एजीरासुतरासजीराचेलादामजीरापोतासीष
देनवकोटीरांघापनांअतीतां गापाररात्र
गुनांपुसतकदेषणमहंतांरीपाथीदेषिक्रोफय
लीष्योछसंमतां१७०८पोषोकीयो संमत१८
दपोषोसपुरएलीष्योछ वारबुधवारविचव
गांवरासीसरसुलसुथांनेदांमजीरीपाघ

५। प्रति सख्या २०१। अन्तिम पृष्ठ पुष्पिका। (फौलियो ५६४)।

॥श्री कानैजीरावायकछस्ते ॥कारकरथेजनराम्यो॥कांवीमाटीकाद्यीघटीयांक
गाथाजामपावीघटथी। कुकमसोटीथाजगाथा। सतगुरकीश्रीवायककहे।
सबदवाणी सतगुरकीश्रीवायककहे।
जेमादिवेवे॥ सिधिगुरकाआदीग
निजकरप रहिया
...

१३। पी० प्रति। सबदवाणी का आरम्भिक पत्र।

१९

॥श्रीगणेशाय नमः॥ अथ सबदवाणी श्री जांभोजी की लिषते॥ गुरुचीन्हे
गुरचीन्हे पिरोहित गुरमुषि धर्म बषाणी जो गुरहोवा सदजेसी जेआवदेनादेनेदे
रवीन्हिपिरोहित गुरमुषिधर्मबषाणी जोगुरहोवा सहजेसीलेआवदेनादेनेदे
दिगुरवाआजागरपिछाणी सबदरसणजिहिके रोपणिथापणि ससारवर
ण निजकरथरप्या सोगुरपरतकिजाणी जिहिकेषरतरगोविनिरोतरि
या रहियारुद्दसमाणी गुरआपमतोषीअवरायोषी ततमहारसबाणी वे
फेअलीसावासण दोतहोतासण सबेहीरहतीजो रसनगोरखधीयनलीयो
वाहूअनपाणी गुरआयरेम्पांनी सोऊतमोटा अतिपुरसांणी छीजतलोटा
ाणीहजतेरीपालपषाला सतगुरतोडिमनकासाला सतगुरदेतसहजपिराण
कीमनावरतविनकाविकरवेरकोनरहिसीपाणी २ ओमोरेगायअनमायालो